Mukta July-Aug 1982 G.K.U.

अगस्त (द्वितीय) 1982

सुमन

लंदन का मोम की आकृतियों का अनोखा संग्रहालय

स्वाधीनता दिवस : एक और अवकाश दिवस, बस ?

3.00

विदेशों में रहने वाले भारतीय अब न्यू बैंक में जमा अपने धन पर 12% वार्षिक कर मुक्त ब्याज कमा सकते हैं.

न्यू बैंक में भारतीय मुद्रा में नान रेजीडेंट (एक्स्टर्नल) एकाउंट, विदेशी मुद्रा"—अमरीकी डालरों या पौंड स्टर्लिंग में नान रेजीडेंट एकाउंट खोलिए/नवीकरण कराइए/अवधि बढ़ाइए.

अपनी जमा राशि पर निम्न दर से ब्याज प्राप्त कीजिए.

	ब्याज की दर % प्रतिवर्ष (1.3.82 से शुरू)
3 वर्ष और उससे अधिक अवधि पर	12
2 वर्ष और उससे अधिक, पर 3 वर्ष से कम	11
1 वर्ष और उससे अधिक, पर 2 वर्ष से कम	10
9 महीने और उससे अधिक, पर एक वर्ष से कम	7
6 महीने और उससे अधिक पर 9 महीने से कम	6
91 दिन और उससे अधिक, पर 6 महीने से कम	5
46 दिन से 90 दिन तक	4
15 दिन से 45 दिन तक	3

वर्तमान जमा राशि की अवधि पूरी होने से पहले ही उसका नवीकरण कराने या अवधि बढ़वाने पर आपको उपर्युक्त दर से बढ़ा हुआ ब्याज मिलेगा.

अपनी जमा राशि आसानी से मंगा सकते हैं.

न्यू बैंक—तुरंत सेवा के लिए.

मुक्ता

सजग, सफल, सरस
जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

अगस्त (द्वितीय) 1982
अंक : 385

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए.
मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग** : एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001. **बंबई कार्यालय** : 790, मित्तल [illegible] नारीमन प्वाइंट, बंबई-400021. **मद्रास कार्यालय** : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31/2 ए, पैंथन रोड, सलील शिवाजी एस्टेट, मद्रास-600008.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

प्रकाशनार्थ [illegible] अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.
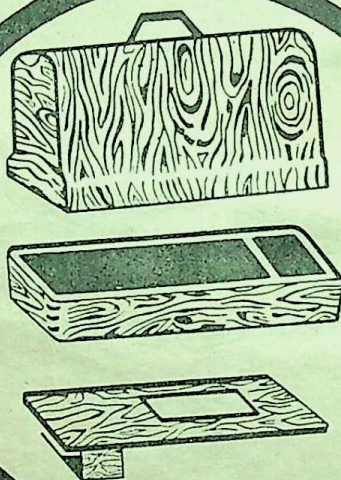
'महानगरों का जीवन' (मुक्त विचार/जुलाई/द्वितीय) में व्यक्त आप के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं. यह बात सत्य है कि महानगरों में अंधाधुंध बढ़ती आबादी के कारण स्वच्छ वायु में सांस लेना मुशकिल हो गया है. महाराष्ट्र सरकार ने जो नया नगर बसाया है निश्चय ही बंबई शहर को उस से राहत मिलेगी. परंतु दिन प्रति दिन बढ़ती आबादी के लिए आखिर कब तक नए नगर बसाए जाएंगे? —सुरेंद्र खुराना

*

'हिमालय को कैसे बचाएं?' (मुक्त विचार/जुलाई/द्वितीय) से मैं सहमत हूं. वास्तव में जंगलों की अंधाधुंध कटाई से हिमालय की शोभा खत्म होती जा रही है. पर सरकार, ठेकेदार और अधिकारीगण अधिक से अधिक आय अर्जित करने के चक्कर में हैं. उन्हें देश के भविष्य से ज्यादा अपने वर्तमान का खयाल है.

आप का पहला सुझाव— 'प्रतिष्ठित कंपनियों को पट्टे पर एक लंबी अवधि के लिए जंगल सौंप देना' निश्चय ही प्रशंसनीय है. इस से जहां एक ओर जंगलों का विनाश होने से बचेगा, वहीं उद्योगों की उन्नति भी होगी.

पर आप का दूसरा सुझाव हास्यास्पद लगता है कि हिमालय के कुछ इलाकों को बिलकुल बंद कर दिया जाए.

आप के पहले सुझाव के संदर्भ में यह उम्मीद बहुत कम है कि सरकार इस ओर जरा भी ध्यान देगी, क्योंकि एक तो सरकारी आय में कमी होने की संभावना से वह तिलमिला उठेगी, दूसरे उस का समाजवाद का तथाकथित आदर्श भी भंग होगा. अतः हिमालय के जंगल नष्ट हो जाएं, उस की बला से. —अशोक

*

इजराइल के बारे में (मुक्त विचार/जुलाई/प्रथम) व्यक्त किए गए आप के विचार सही दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं करते. बड़ी मछली छोटी को खा जाती है जैसे सिद्धांत से बड़ी मछली बहादुर नहीं बन जाती और न ही इस सिद्धांत पर चल कर कोई महानता हासिल की जा सकती है.

हिटलर कालीन जरमनी में यहूदियों के साथ हुए अत्याचारों के कारण सारे विश्व की सहानुभूति यहूदियों के साथ थी. जब यहूदी जरमनी के अलावा अन्य देशों में भी भागभाग कर अपने प्राचीन प्रदेश (उस समय जिसे फिलस्तीन कहा जाता था) में जा बसे और उन्होंने दो हजार साल बाद फिर वहां इजराइल के नाम से अपना राज्य स्थापित करना चाहा तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस का समर्थन किया था. संयुक्त राष्ट्रीय महा सभा के 29 नवंबर, 1947 के प्रस्ताव के अनुसार

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

फिलस्तीन का दो हिस्सों में विभाजन कर एक में इजराइल की स्थापना कर दी गई. किंतु इजराइल के विभाजन के बाद बचे हिस्से से फिलस्तीनियों को निकाल कर निंदनीय कार्य किया है. आज इसी लिए लाखों फिलस्तीनी शरणार्थी बन कर दूसरे देशों में पड़े हैं.

— रामेश्वरप्रसाद मौर्य

*

बैंकों में अनुशासन (मुक्त विचार/जुलाई/प्रथम) के संबंध में आप के विचार अक्षरशः सही हैं.

इन दिनों बैंकों में इस कदर अनुशासनहीनता फैली हुई है कि बैंकों से मन उचट सा गया है. पिछले दिनों मुझे जयपुर के चेतक सर्कल स्थित बैंक आफ बीकानेर में एक चैक भुनवाने जाना पड़ा. जब टोकन मिलने के एक घंटे बाद भी भुगतान नहीं हुआ तो परेशान हो कर संबंधित अधिकारी से पूछना पड़ा, "क्यों, साहब, आज के चैक का भुगतान आज ही होता है या दोचार दिन लग जाते हैं?" इस पर उन्होंने गुस्से में जवाब दिया, "काम तो काम के तरीके से ही होगा, इंतजार नहीं कर सकते तो खाता बंद कर दो."

जब भी किसी तरह की शिकायत करो एक ही रटारटाया जवाब मिलेगा, "खाता बंद कर दो."

— सुमति जैन

*

'काम नहीं तो नौकरी कैसी' (मुक्त विचार/जुलाई/प्रथम) में व्यक्त आप के विचार रोचक लगे. इंदिराजी ने स्पष्ट कर दिया है कि राजनीतिबाज उन्हें प्रसन्न कर के ही सुखी रह सकते हैं. जैसे हरियाणा के राज्यपाल गणपतराय देवजी तपासे ने संविधान, नियम आदि का सरेआम कत्ल कर के प्रधान मंत्री का हुक्म बजाते हुए ऐसी राजनीति का नमूना पेश किया कि देवीलाल सहित देश भर के अनेक नेता आश्चर्यचकित रह गए.

लेकिन इधर पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल भैरव दत्त पांडे श्री तपासे जैसा तप न कर सके. फलस्वरूप उन पर दिल्ली दरबार की महारानी कुपित हो गईं और श्री पांडे को दिनदहाड़े विधान सभा के इंदिरा कांग्रेसी विधायकों ने 'चोर' की उपाधि से विभूषित कर दिया. वैसे भी पश्चिमी बंगाल से वामपंथी मोर्चे को बाहर निकालना टेढ़ी खीर ही था. मगर दिल्ली दरबार की महारानी तो सिर्फ अपनी विजय चाहती हैं.

— मनोज आंचलिया 'टोनी'

*

राष्ट्रपति पद की गरिमा के बारे में (मुक्त विचार/जुलाई/प्रथम) व्यक्त किए गए आप के विचारों से मैं सहमत नहीं हूं. इंदिरा सरकार ने इस विषय में जो निर्णय लिया है वह बहुत अच्छा है, क्योंकि पहली बार सिख समुदाय के एक व्यक्ति को गरिमामय पद दे कर सम्मानित किया गया है.

— नरेंद्रसिंह नारंग

*

एक बार फिर प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत के राष्ट्रपति पद के लिए अपना मनपसंद उम्मीदवार चुनवाया है.

हमारी परंपरा तो राजेंद्रप्रसाद और सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे विद्वान एवं दार्शनिक नेताओं को राष्ट्रपति पद पर चुनने की रही है जो निर्भीकतापूर्वक इस पद को सुशोभित कर चुके हैं. अब ज्ञानी जैलसिंह को राष्ट्रपति बनाया गया है. नेहरू परिवार के प्रति उन की विश्वासपात्रता ही उन की सब से बड़ी विशेषता है, जिस का फल उन्हें हमेशा मिलता रहा है. गृह मंत्री के रूप में उन्होंने जिस तरह देश में कानून व्यवस्था को बनाए रखा तथा पंजाब की स्थिति का सामना किया, उसे पूरा राष्ट्र जानता है. श्रीमती इंदिरा गांधी को एक बार फिर राष्ट्रपति के रूप में कठपुतली मिल गई है.

श्रीमती इंदिरा गांधी को यदि इस पद के लिए सिख नेता ही चाहिए था तो सिखों में जैलसिंह से बढ़ कर कई योग्य नेता हैं. हां, यह बात और है कि वे चरणचुंबन नहीं पसंद करते.

यह बात भी बता देना आवश्यक है कि लंदन के एक समाचारपत्र के अनुसार राष्ट्र

जलन से सताती, खुजलाती घमौरियों की बेचैनी भूल जाइये।
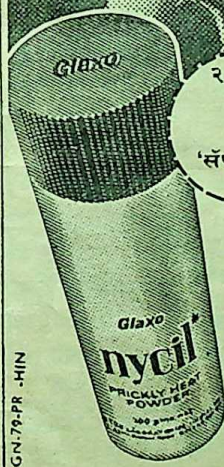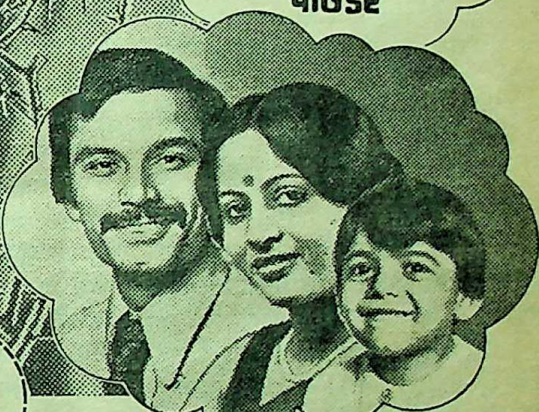
नायसिल
अपनाइये!
शीघ्र आराम दिलानेवाला घमौरियों का पाउडर

२ पैक–
'ब्लू'
और
'सॅण्डलवुड'

Glaxo
Glaxo
nycil
PRICKLY HEAT POWDER

नायसिल लाइये घमौरियों को भूल जाइये टॅल्कम पाउडर से भी कम क़ीमत में!

विशेष औषधियुक्त नायसिल हर दृष्टि से घमौरियों की रोकथाम करता है।

१. अत्यधिक पसीने को रोकता है।
२. पसीने को सोखता है।
३. दुर्गंध के कीटाणुओं को नाश करता है।
४. त्वचा को आराम पहुंचाता है।

GN.79-PR.-HIN
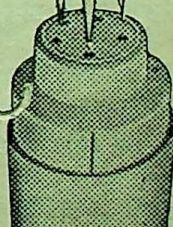
विरोधी सिख नेता जगजीतसिंह चौहान ने घोषणा की है कि चाहे सिख को ही राष्ट्रपति क्यों न बना दिया जाए, हम खालिस्तान ले कर रहेंगे. **— कृपालसिंह गिल**

*

'संपत्ति कर समाप्त हो' (मुक्त विचार/जून/द्वितीय) में आप ने जो विचार व्यक्त किए हैं मैं उन से पूरी तरह सहमत हूं.

आज व्यापारी व उद्योगपति के पास कर योग्य अपार संपत्ति बताई जाती है. तो ये लोग उस पर कर भी देते हैं, परंतु आजकल सरकारी अधिकारी व राजनीतिबाजों के पास भी कर योग्य संपत्ति कम नहीं होती, पर वे किसी प्रकार का कर अदा नहीं करते.

कर विभाग वाले छांपे मार कर सरकार तथा जनता को यह जताते हैं कि कर चोरी, जमाखोरी इत्यादि सारी बुराइयां इसी व्यापारी वर्ग में हैं. जब कि स्वयं सरकारी अधिकारी गुप्त रूप से और कोईकोई तो खुलेआम अपनी आय और संपत्ति अवैध तरीकों द्वारा बढ़ाते रहते हैं, जिस का हिसाबकिताब दिखाने की इन्हें जरूरत नहीं क्योंकि कर विभाग भी है तो सरकारी कार्यालय ही. **—सुशील अग्रवाल**

*

'जीवन बीमा योजनाएं : आर्थिक दृष्टि से कितनी हानिकारक?' लेख (जुलाई/द्वितीय) पढ़ा. यह जान कर आंखें खुली रह गईं कि जीवन बीमा योजना के लाभ खोखले और सीमित हैं.

लेखक ने जगहजगह उदाहरण दे कर जीवन बीमा की पोल खोल दी है. एकाधिकार होने की वजह से जीवन बीमा के पास मजबूरन जाना पड़ता है. सरकार को चाहिए कि अन्य निजी कंपनियों को इस क्षेत्र में आने दे या फिर जीवन बीमा निगम को चारपांच भागों में बांट दे.

लेखक ने एजेंटों को मिलने वाले भारी कमीशन की भी आलोचना की है. यह बात सही है कि बीमा करवाने वाले से ज्यादा लाभ एजेंट को होता है. यदि कमीशन में कटौती कर दी जाए तो निश्चय ही वे जीवन बीमा को छोड़ कर अन्य दूसरी जगह भाग खड़े होंगे.

जीवन बीमा की योजनाओं को सुधार कर जनता के अधिक से अधिक अनुकूल बनाना चाहिए. **—अशोक बजाज**

*

'आतंक मासिक टिकट यात्रियों का' लेख (जुलाई/द्वितीय) तथ्यों पर आधारित है. पर उस में मूल समस्या पर कतई ध्यान नहीं दिया गया है. लेख में कहा गया है कि मासिक टिकट यात्रियों के बैठने की पृथक व्यवस्था होती है. यद्यपि ऐसी व्यवस्था होती तो है किंतु ऊंट के मुंह में जीरे के बराबर.

जैसा कि लेखक भी स्वीकार करता है ऐसे अधिकतर यात्री सभ्य वर्ग के होते हैं. अतः यह बात विचारने की है कि क्या वे बिना किसी मजबूरी के असभ्यता का प्रदर्शन करते हैं?

लेख में शाहजहांपुर– लखनऊ मार्ग का उल्लेख नहीं है जिस पर बड़ेबड़े नेताओं या उन के ऐसे संबंधियों के साथ अभद्रता की गई है, जिन्होंने उस की शिकायत दिल्ली तक पहुंचाई है. फिर भी रेलवे प्रशासन ने बजाए समस्या पर ठंडे मस्तिष्क से गौर कर के पांचछः पृथक डब्बों की व्यवस्था करने के गुस्से में आ कर तानाशाही आदेश ही दिए.

उक्त मार्ग पर मासिक टिकट यात्रियों के लिए एक भी डब्बे की व्यवस्था नहीं है. लेकिन जहां तक डब्बों की कमी का प्रश्न है मुझे याद पड़ता है कि इंदिरा कांग्रेस द्वारा आयोजित किसान रैली में सैकड़ों विशेष गाड़ियां चलाई गई थीं, जब कि हमारे स्टेशन से हो कर निकलने वाली गाड़ियों में से एक भी गाड़ी को स्थगित नहीं किया गया था.

लेखक का यह कहना भी ठीक नहीं है कि इस समस्या का कोई हल नहीं. मेरा विचार है कि प्रशासन ही इस समस्या को हल नहीं करना चाहता. वरना मासिक टिकट यात्रियों की संख्यानुसार डब्बों की व्यवस्था कर के इस समस्या को सरलतापूर्वक हल किया जा सकता है.

जहां तक मासिक टिकट यात्रियों द्वारा मारपीट की बात है तो मासिक टिकट यात्री के

सिर्फ़
कॉम्प्लान® में ही
२३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्व हैं जिनकी उनको रोज़ाना ज़रूरत है

बढ़ते बच्चों की खास ज़रुरतें होती हैं, **कॉम्प्लान** उन्हें सर्वोत्तम प्रोटीन के साथ साथ २२ अन्य अत्यावश्यक पोषक तत्त्व भी देता है जिनकी बच्चों को बढ़ती उम्र में ज़रूरत रहती है. ध्यान रहे **कॉम्प्लान** ही वह नियोजित आहार है जिसकी डॉक्टर ज़्यादहतर सिफ़ारिश करते हैं.

कॉम्प्लान चॉकलेट, केसर-इलायची और स्ट्रॉबेरी के स्वादभरे जायकों में तथा प्लेन भी मिलता है.
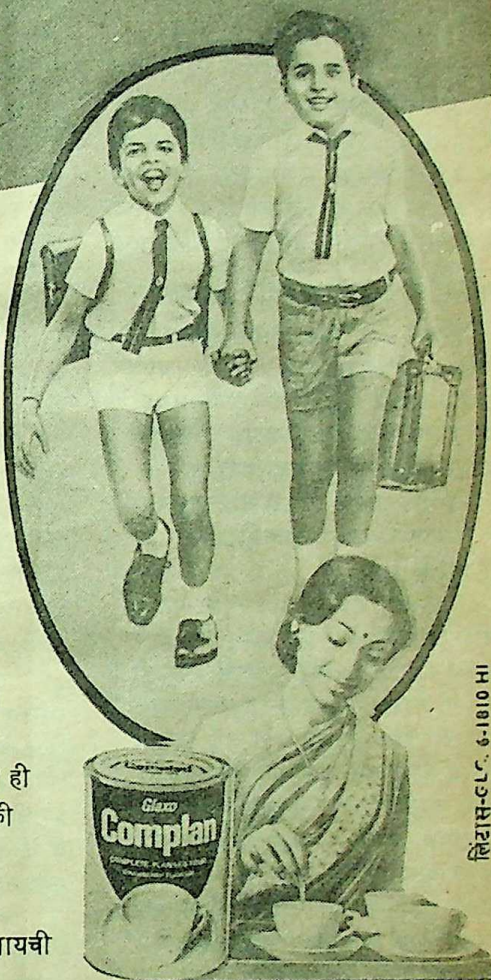
मुफ़्त! ३२ पृष्ठ की पुस्तिका

"सम्पूर्ण परिवार के लिए पोषाहार मार्गदर्शिका"
कृपया ४० पैसे के डाकटिकट सहित इस पते पर लिखें:
पोस्ट बैग नं. १६११६ (कॉम्प) जी-१०७
बम्बई-४०० ०२५.

कॉम्प्लान®
-परिपूर्ण | नियोजित आहार

पास न तो इतना समय होता है और न ही इतनी आर्थिक सामर्थ्य कि वह अपनी समस्या के लिए प्रशासन से उलझ सके. अतः फसाद और मारपीट कर के जगह बनाना उसे ज्यादा आसान लगता है. **—दिलीपकुमार गुप्त**

*

'दिल्ली में पांच तारा होटलों की बरसात' लेख (जुलाई/प्रथम) में केवल पांच तारा होटलों के निर्माण में व्यय धन तथा सुविधाओं आदि की ही जानकारी मिलती है, जब कि इस लेख का मुख्य मुद्दा— दिल्ली में इतने अधिक पांच तारा होटलों के होते हुए भी करोड़ों की लागत के अन्य नए पाच तारा होटलों का निर्माण किया जाना— समुचित तथ्यों के अभाव में फीका ही रह गया.

—अरविंदकुमार बंसल

*

'दिल्ली में पांच तारा होटलों की बरसात' लेख (जुलाई/प्रथम) पढ़ते ही आज से 54 साल पहले लखनऊ से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'सुधा' में कुमारी कौशल्यादेवी गोरोवाला के 'रायसीना' शीर्षक से छपे एक लेख की याद आ गई.

उस समय (1928) नई दिल्ली बन कर तैयार हो गई थी. यहां पाठकों की जानकारी के लिए उस लेख से कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं:

'दिल्ली, नहीं पुरानी दिल्ली की सड़ी बदबूदार गलियों के बाद रायसीना (नई दिल्ली) पहुंचने पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो मनुष्य नरक से निकल कर स्वर्ग में आ गया है.'

रायसीना के भवनों का वर्णन करने के बाद लेखिका पुनः दिल्ली के विरोधाभास को इन शब्दों में व्यक्त करती है:

'दो ही मील के अंतर में आप को दो विपरीत दृश्य दिखाई देंगे, एक स्वच्छ, सुंदर और जगमगाता व दूसरा गंदा, मलिन और अंधकारमय.'

देश की राजधानी में आज भी वही समस्या विद्यमान है, यह मुक्ता के उपर्युक्त लेख के इस उद्धरण से स्पष्ट होता है:

'क्या नई दिल्ली के सौंदर्य से निकल कर पुरानी दिल्ली के बेतरतीब यातायात, सड़कों व गंदगी से गुजरते विदेशी पर्यटकों का मन कुछ नहीं सोचेगा?'

आज 54 साल बाद भी नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली में सफाई और प्रगति का वही अनुपात है. यह वास्तव में आश्चर्यजनक और चिंताजनक है. **—उत्तमचंद श्रीवास्तव**

*

'टूटे सपने' कहानी (जुलाई/प्रथम) अत्यंत मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी लगी. कहानी को पढ़ कर आंखों में आंसू आ गए. क्या मरीज को नया जीवन देने वाले डाक्टर, डाक्टर सतीश की तरह निर्दयी भी हो सकते हैं

मुक्ता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सहसा विश्वास नहीं होता.

आज हर सरकारी हस्पताल में मरीज का सही इलाज तभी हो सकता है जब उस की पहुंच बड़े डाक्टरों या राजनीतिबाजों तक हो या वह काफी पैसे वाला हो. — **मनोहर**

*

'मारे गए गुलफान' व्यंग्य (जुलाई/प्रथम) पढ़ा. आप के व लेखक के हिसाब से यह व्यंग्य रचना है जब कि मेरे विचार से यह एक सीधीसादी कहानी है, जिसे व्यर्थ में ही व्यंग्य का नाम दे दिया गया है.

— **स.ल. मीणा**

*

'व्यापार और विज्ञापन' लेख (जुलाई/प्रथम) बहुत अच्छा लगा. व्यापार को बढ़ाने के लिए विज्ञापन का सहारा जरूरी है, पर विज्ञापन में नारी के अर्धनग्न शरीर का प्रदर्शन करना कहां तक उचित है? शराब, सिगरेट, जींस से नारी का कोई संबंध नहीं. फिर भी विज्ञापन में नारी के चित्रों का उपयोग किया जाता है. राज्य सरकारें भी लाटरी टिकटों पर नारी के आकर्षक चित्रों को छाप कर जनता को आकर्षित कर रही हैं. क्या नारी के चित्रों का प्रदर्शन जरूरी है?

— **गुरविंदरसिंह**

*

'जलयान और विमानों को निगल जाने वाला डरावना समुद्र बरमूडा' लेख (मई/प्रथम) पढ़ा. इस त्रिभुज के संबंध में भौगोलिक जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि त्रिभुज के बीच के समुद्र में और उस के ऊपर की वायु में अदृश्य भंवरक्षेत्र का निर्माण हो गया है.

इस का कारण है दक्षिण से समुद्र के भीतर बहने वाली गर्म जलधारा—गल्फस्ट्रीम और इस के ठीक विपरीत उत्तर दिशा से आने वाले उतराते, पिघलते बर्फ के भीमकाय पहाड़—आइसबर्ग.

टाइटेनिक नामक विशाल पोत ने आइसबर्ग से टकरा कर जलसमाधि ली थी, कोई भी यात्री या कर्मचारी बच नहीं सका था.

—**उत्तम** ●

मुक्त विचार

राष्ट्रपति पद सजावटी नहीं

राष्ट्रपति पद छोड़ने से कुछ दिन पहले श्री नीलम संजीव रेड्डी ने कुछ पत्रकारों को राष्ट्रपति भवन में भोजन के लिए बुलाया और पिछले पांच सालों में अपने राष्ट्रपतित्व काल में उठे कुछ विवादास्पद मामलों की चर्चा की. पद त्यागने पर जब उन के विचार प्रकाशित हुए तो स्वभावतः कुछ विवाद उठ खड़े हुए.

श्री संजीव रेड्डी ने मुख्यतः 1979 में जनता पार्टी के विघटन के समय के विवाद पर प्रकाश डाला. 1979 में मोरारजी देसाई, जगजीवनराम व चंद्रशेखर ने आरोप लगाया था कि राष्ट्रपति ने बिना उन्हें (जनता पार्टी को) अवसर दिए व वादे के खिलाफ प्रधान मंत्री चरणसिंह की सिफारिश पर संसद भंग कर दी तथा लगभग चार माह के लिए चरणसिंह को गलत तरीके से कार्यवाहक प्रधान मंत्री बना दिया. श्री संजीव रेड्डी ने अब तीन वर्ष बाद सफाई दी है कि वास्तव में उन्होंने जनता पार्टी के नेताओं से न कोई वायदा किया था, न कोई गलत फैसला ही किया, क्योंकि जनता पार्टी का उस समय सदन में बहुमत था ही नहीं और बाकी दल संसद को भंग करने के पक्ष में ही थे.

इतने समय बाद इस बात की सफाई देना न जरूरी था, न सही ही रहा. जब श्री संजीव रेड्डी ने अपना पक्ष बताया तो जगजीवनराम और चंद्रशेखर ने भी जवाब में बयान दिए और जातेजाते रेड्डी साहब एक और अनावश्यक विवाद में फंस कर कसैलापन छोड़ गए.

श्री संजीव रेड्डी ने राष्ट्रपति पद पर रहते हुए इस बात की चर्चा शायद इसलिए नहीं की कि वह राष्ट्रपति पद को आरोपोंप्रत्यारोपों से बचाने की कोशिश कर रहे थे.

यह नीति ही अपनेआप में गलत है. माना कि राष्ट्रपति संवैधानिक अध्यक्ष मात्र है और दलीय राजनीति से ऊपर है, पर इस का अर्थ यह नहीं कि यह पद ही राजनीति से ऊपर है. राजनीति राष्ट्रपति पद का अभिन्न अंग है और इसे इंगलैंड के राजा (या रानी) के समकक्ष समझना गलत है. वहां राजा मात्र ऐतिहासिक धरोहर रह गया है और वास्तविक वैधानिक शक्ति संसद के माध्यम से प्रधान मंत्री के हाथों में है.

हमारे यहां राष्ट्रपति पद जानबूझ कर बनाया गया है और राजनीतिक दलों का प्रतिनिधि ही राष्ट्रपति बनता है. आखिर उसे चुनते तो विधायक व संसद सदस्य ही हैं.

इसलिए वह आवश्यक राजनीतिक विवादों में न उलझे, यह गलत है. इस बहाने हमारे राष्ट्रपतियों ने बहुत से मामले वर्षों जनता से छिपाए रखे हैं और बहुत से कभी भी सामने नहीं आए.

जब प्रधान मंत्री का, जो वास्तव में शक्तिशाली है, हर निर्णय संसद के माध्यम से जनता के सामने आ सकता है तो राष्ट्रपति का निर्णय क्यों नहीं?

श्री संजीव रेड्डी को चाहिए था कि वह जगजीवनराम व चंद्रशेखर द्वारा 1979 में लगाए गए आरोपों का उत्तर तभी देते. इतने समय बाद ये बातें बताने और उन्हें पद से अलग होने पर ही प्रकाशित करने से उन्होंने

एक गलत परंपरा को जन्म दिया है.

नए राष्ट्रपति श्री जैलसिंह को चाहिए कि वह इस गलत परंपरा को तोड़ दें और जब भी जैसा भी विवाद हो, उन्हें उस की चर्चा जनता से तभी खुल्लमखुल्ला निडर हो कर करनी चाहिए ताकि जनता जान सके कि राष्ट्रपति पद पर आसीन व्यक्ति कितना प्रभावशाली व सक्षम है.

अंतुले की दंड प्रक्रिया चालू

श्रीमती इंदिरा गांधी ने आखिर अब्दुलरहमान अंतुले पर शिकंजा कसना शुरू कर ही दिया. महीनों तक उन्होंने उसे किसी न किसी बहाने बचाया, पर जब वह ज्यादा ही अकड़ कर बात करने लगा तो शायद यही उपाय रह गया था.

इंदिराजी के लिए सौ दो सौ करोड़ की बेईमानी कोई अहमियत नहीं रखती. महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री पद पर रहते हुए अंतुले ने अपने द्वारा कायम किए गए ट्रस्टों में जो पैसा जमा किया था, उस बारे में इंदिराजी कतई परेशान नहीं लगी थीं. आखिर मुख्य ट्रस्ट तो था ही उन के नाम से और वह जानती थीं कि मुख्य मंत्री को कोई दयावश तो दान देगा नहीं. यह तो 'इस हाथ ले, उस हाथ दे' वाला मामला था.

इंदिराजी को असली नाराजगी तो तब हुई जब अंतुले ने महाराष्ट्र के उच्च न्यायालय के निर्णय के बाद उस की तुलना इलाहाबाद उच्च न्यायालय के इंदिराजी से संबंध रखने वाले निर्णय से करनी शुरू कर दी. "मेरा नौकर मेरी बराबरी करे!" यह कौन सह सकता है?

तभी से इंदिराजी ने अंतुले के पर एकएक कर काटने शुरू कर दिए और अब विरोधी दलों के कुछ सदस्यों को महाराष्ट्र के राज्यपाल से अंतुले पर भ्रष्टाचार का मुकदमा चलाने की अनुमति भी दिला दी है.

यह मानना पड़ेगा कि इस मामले में इंदिराजी ने बहुत सहनशीलता दिखाई. अंतुले खुले आम उन के द्वारा नियुक्त मुख्य मंत्री बाबासाहब भोसले की जड़ें खोदता रहा, ट्रस्टों से त्यागपत्र देने से इनकार करता रहा, ट्रस्टों में जमा धन के अतिरिक्त पैसे को लौटाने से मना करता रहा. फिर भी इंदिराजी ने जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लिया और मामला ठंडा होने तक इंतजार किया.

अंतुले के मामले ने यह सिद्ध कर दिया है कि इस देश में भ्रष्टाचार क्षम्य है, उस से चाहे करोड़ों का नुकसान हो या सैकड़ों मरें या लाखों परेशान हों. पर राजनीतिक विद्रोह किसी भी हालत में सहन नहीं किया जा सकता.

फिर पाकिस्तान का हौवा

श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपनी अमरीका यात्रा के दौरान फिर पाकिस्तान का हौवा उठाया. उन्होंने मत व्यक्त किया कि अमरीका से पाकिस्तान को मिलने वाले जंगी हवाई जहाजों व दूसरे सैनिक साजसामान का इस्तेमाल और कहीं नहीं, भारत के विरुद्ध ही किया जा सकता है.

अमरीकी प्रशासन का कहना है कि वह पाकिस्तान को हथियार रूस से लड़ने के लिए दे रहा है, भारत से लड़ने के लिए नहीं. रूस अफगानिस्तान पर तो कब्जा किए बैठा ही है, वह किसी भी दिन हिंद महासागर तक अपनी सीधी पहुंच बनाने के लिए ईरान या पाकिस्तान पर भी कब्जा कर सकता है.

इंदिराजी का इस बारे में जवाब है कि पाकिस्तान रूस को कह चुका है कि ये हथियार उस के विरुद्ध इस्तेमाल नहीं होंगे, अतः ऐसी अवस्था में ये हथियार भारत के ही विरुद्ध इस्तेमाल हो सकते हैं.

वास्तव में अमरीका में इंदिराजी की अधिकांश बातचीत का मुद्दा पाकिस्तान ही रहा है. अमरीका में ही क्यों, भारत जब भी किसी महाशक्ति से बात करता है तो पाकिस्तान ही मुख्य मुद्दा होता है. वास्तव में हमारी पूरी विदेश नीति ही पाकिस्तान पर टिकी हुई है.

हम रूस का समर्थन ही इसलिए करते

हैं कि वह पाकिस्तान के मामले में हमारा समर्थन करे. इसी लिए हम उस के लाख गुनाहों को भी माफ कर देते हैं. वह कंपूचिया में नरसंहार का भागी हो, हम उसे नजरअंदाज कर देते हैं. वह पूर्वी यूरोप के देशों में कम्यूनिस्ट विरोधी आंदोलन कुचले, हम उसे उन देशों का आंतरिक मामला कह देते हैं. वह अफगानिस्तान में लाखों सैनिक भेजे, हम उसे सादर आमंत्रित मेहमान की संज्ञा देते हैं. वह हम से सस्ते दामों पर माल खरीदे और अपना माल महंगे भाव पर बेचे, हम उसे परस्पर सहयोग कहते हैं. वह कुछ लाख रूबल की सहायता दे दे, हम उस की सहृदयता के गुणगान में जमीनआसमान एक कर देते हैं. यह सब इसलिए कि वह पाकिस्तान से विवाद के समय हमारा साथ देता है.

इसी तरह हम अरबों के चरण चूमते रहे हैं. वे अपने देश में नरसंहार करें, हम उसे धार्मिक कृत्य मान लेते हैं. वे भारतीय मजदूरों के साथ बुरा सलूक करें तो हम अपने मजदूरों को ही डांट लगाते हैं. दुनिया भर में हम उन की पैरवी करते फिरते हैं, चाहे वे हमारे लिए कुछ करें या न करें. क्यों? सिर्फ इसलिए कि कहीं वे पाकिस्तान के साथ अपना भाईचारा जरूरत से ज्यादा न जताने लगें.

यह खेद की बात है कि हम ने पाकिस्तान जैसे छोटे देश को इतनी अहमियत दे रखी है. जनसंख्या में पाकिस्तान हमारे देश की जनसंख्या के आठवें भाग के भी बराबर नहीं है और औद्योगिक विकास में तो वह हम से कहीं पीछे है, फिर भी हमें रातदिन उस का खौफ सताता रहता है.

हम पाकिस्तान से तीन बार युद्ध कर चुके हैं. सरकारी दावों के हिसाब से तीनों बार हम जीते हैं. एक बार तो उस के टुकड़े भी करा दिए. फिर भी उस से डर क्यों?

अब समय आ गया है जब हमारे नेता इस हौवे से देश को डराना बंद करें. पाकिस्तान और भारत दोनों ही इतने सक्षम नहीं हैं कि एकदूसरे से लड़ कर नुकसान सह सकें. इंदिराजी जिस तरह पाकिस्तान का भय दिखाती हैं, उस से केवल भारत में ही असर डाला जा सकता है, विदेशियों पर नहीं.

कोर्ट फीस न हटाएं

यह संतोष की बात है कि राज्य सरकारों ने नए विधि मंत्री की अदालती काररवाई के लिए कोर्ट फीस हटाने की सिफारिश ठुकरा दी है. विधि मंत्रालय ने राज्यों से अपील की थी कि कोर्ट फीस समाप्त कर दी जाए क्योंकि कोर्ट फीस न्याय दिलाने में एक महत्त्वपूर्ण बाधा है. लोक सभा द्वारा कुछ समय पूर्व नियुक्त एक समिति ने कहा था कि न्याय दिलाना राज्य का प्रमुख कार्य है और उस की कीमत लेना नितांत अनैतिक है.

कोर्ट फीस की आलोचना इसलिए भी की जाती है कि बहुत से मामले केवल इस तकनीकी मुद्दे पर रद्द कर दिए जाते हैं कि पूरी कोर्ट फीस नहीं दी गई. कोर्ट फीस गरीबों द्वारा अपने अधिकार प्राप्त करने में भी भारी अड़चन मानी जाती है.

कोर्ट फीस की यह आलोचना सिद्धांत रूप में तो ठीक है, पर कोर्ट फीस समाप्त करना अव्यावहारिक है. जो लोग आपस में पैसे के लिए लड़ रहे हों, उन्हें फैसला करने वाले को कुछ हिस्सा तो देना ही चाहिए. जिन्हें पैसा देने में एतराज है वे अपने विवाद खुद ही सुलझा सकते हैं.

यदि वादी कोर्ट फीस दे कर मुकदमा करता है और हार जाता है तो उस को कोर्ट फीस की तो हानि होती ही है, दूसरे पक्ष को भी खर्चे का पैसा देना होता है. इसलिए वादी सोचसमझ कर ही अदालत में जाता है. यदि कोर्ट फीस न हो तो हर आदमी बिना अपने पक्ष की मजबूती की जांच किए अदालत में चला जाएगा और अदालत व प्रतिवादी का ही नहीं, अपना भी समय व पैसा बरबाद करेगा. यदि वह मुकदमा हार जाता है तो अदालत के बेकार गए समय का कौन जिम्मेदार होगा? राज्य की जिम्मेदारी सही विवादों को हल करने की है, गलत या झूठे विवादों को हल करने की नहीं.

जिन मामलों [illegible] कोर्ट फीस प्रतिवादी को देनी पड़ती है. वादी को पूरी कोर्ट फीस मिल जाती है. अतः यह कैसे कहा जा सकता है कि वादी को न्याय पाने के लिए पैसा खर्च करना पड़ा? रही प्रतिवादी द्वारा कोर्ट फीस देने की बात तो यह उस पर बिलकुल सही दंड है. आखिर उसे वादी का अधिकार या पैसा दबाने की जरूरत क्या थी? उस से सहानुभूति कैसी?

गरीबों को कोर्ट फीस देनी पड़ती है, इसलिए कोर्ट फीस समाप्त ही कर दी जाए, यह बिलकुल गलत होगा. गरीबों के मामले लाखों के तो होंगे नहीं. उन्हें तो कुछ हजार रुपए ही लेनेदेने होंगे. जिन मामलों में विवाद थोड़े से रुपयों का होता है, वहां कोर्ट फीस वैसे भी नाममात्र की होती है. जब अदालत में दावा दायर करने वाला वकील, कागज, आनेजाने पर सैकड़ों रुपया खर्च कर सकता है तो क्या वह कोर्ट फीस देने में कुछ थोड़े से रुपए खर्च नहीं कर सकता?

वैसे भी नितांत गरीब वादी के लिए कोर्ट फीस न लिए जाने का विधान पहले ही से मौजूद है. कोई भी वास्तविक गरीब व्यक्ति अदालत में मुकदमा दायर करते समय इस कानून का लाभ उठा सकता है.

न्याय को सस्ता व सुलभ बनाने के लिए आवश्यकता कोर्ट फीस समाप्त करने की नहीं, अदालती प्रक्रिया को सुधारने की है. अदालतों के भ्रष्टाचार पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है. विधि मंत्रालय को पहले उसे समाप्त करने के उपाय ढूंढ़ने चाहिए.

देश भर में अदालतों में मामले वर्षों तक लटके रहते हैं. उन्हें जल्द निबटाने के लिए नए न्यायाधीशों की नियुक्त करना ज्यादा जरूरी है. और सब से बड़ी जरूरत है कानूनों की भीड़ कम करने की ताकि नए विवादों का जन्म न हो.

हां, यदि विधि मंत्रालय बहुत ही उदार बनना चाहता है तो उसे पहले केंद्र व राज्य सरकारों तथा सरकारी कंपनियों के विरुद्ध किए जाने वाले मामलों में कोर्ट फीस को समाप्त करने का प्रयोग करना चाहिए, ताकि [illegible] जाए कि फीस समाप्त करने पर उस के विरुद्ध मामलों की बाढ़ कैसे आती है.

परदे के पीछे का घूंसा

वह दसदस को अकेले मार देता था. एक पिस्तौल से वह 10 राइफलधारियों को धराशायी कर देता था. उस के सीने पर से गाड़ियां गुजर जाती थीं. उसे घोड़ों और गाड़ियों के पीछे मीलों बांध कर घसीटा गया है. वह सैकड़ों फुट ऊंचे पहाड़ों से कूद कर भी हंसताखेलता रहा है.

पुलिस और सेना को उस की जरूरत रहती थी. उस का शारीरिक बल इतना था कि वह लोहे की मोटी जंजीरों को भी तोड़ सकता था. उसे जूडो, कराटे, कूंगफू आदि सब आते थे. उस के नाम से खूंखार से खूंखार व्यक्ति भी डरते थे. उस के लंबे कद और छरहरे बदन के कमाल देश के करोड़ों लोगों ने देखे थे.

पर जब उस बेचारे पर एक असली मुक्का पड़ा तो वह ऐसा बीमार हुआ कि उस के जीवन पर बन आई. उस के लिए दूरदूर से डाक्टर बुलाए गए. खलनायक के एक मुक्के से उस की अंतड़ियों में भारी जख्म हो गया. अंतड़ियों की कई कोशिकाएं बिलकुल नष्ट हो गई इसलिए नई लगानी पड़ीं. कई दिनों तक वह मौत व जीवन के बीच झूलता रहा.

ऐसे विलक्षण सुपरमैन के प्रति हमें पूरी सहानुभूति है, पर यह घटना यह दर्शाती है कि परदे के ऊपर और परदे के पीछे के जीवन में कितना विरोधाभास है. 'ऐंग्री यंगमैन'' वास्तव में हाड़मांस का एक साधारण पुरुष ही है जिस के पौरुष के कमाल निर्देशक की कुशलता व कैमरे की ट्रिकों के कारण हैं. सुपरस्टार की सेहत के लिए हम कामना करते हैं क्योंकि असली व नकली में चाहे जितना भी फर्क हो, वह एक नायाब कलाकार है, जिस ने करोड़ों लोगों को घंटों हंसाया है, घंटों रुलाया है, घंटों रोमांचित किया है और घंटों उत्तेजित किया है. •

15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस

सरकारी औपचारिकता तक सिमट रहा आयोजन

लेख • ज्योतिर्मय
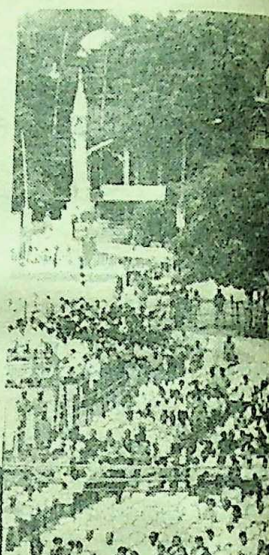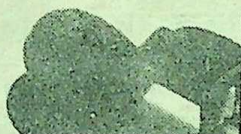
15 अगस्त का स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में गांव के पंचायत भवन पर ध्वजारोहण कार्यक्रम संपन्न होता है. पंचायत का मंत्री, जो पास के कसबे में रहता है, साइकिल से आता है और थैली में रखा तिरंगा निकाल कर डंडे पर लगाता है. पंचायत भवन के नाम पर बने दो या तीन कमरों के मकान की छत पर वह झंडा लगा कर चला जाता है.

न गांव के लोगों को यह मालूम है कि आज स्वतंत्रता दिवस है और न पंचायत के उस अर्धशासकीय कर्मचारी को ही इस बात में रुचि है कि वह स्वतंत्रता दिवस का आयोजन कराने गांव जा रहा है.

कर्मचारी होने के नाते वह अन्य सौंपे गए कामों की तरह पंचायत भवन पर झंडा लगाने के काम की खानापूरी कर घर पहुंचने की जल्दी में रहता है.

गांव की ही बात क्यों करें, कसबों और शहरों में भी स्वतंत्रता दिवस पर कितने लोगों के मन में उल्लास पैदा होता है? कितने लोग 35 वर्ष पहले मिली आजादी को एक ऐतिहासिक उपलब्धि मान कर हर्षित होते हैं? शुरू के कुछ वर्षों तक जरूर लोगों में इस दिन कुछ उत्साह दिखाई देता था. जिन लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में कुर्बानियां दीं उन के कारण या स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों में जमाई गई आशाओं की वजह से जनसामान्य हर्षित होता था. घरघर में तिरंगा फहराया जाता. स्कूलों, स्वायत्तशासी संस्थाओं और सामाजिक संगठनों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते. इन कार्यक्रमों में आम जनता भी सक्रिय हिस्सा लेती थी.

अब वह सब बंद होता जा रहा है. स्कूलों में एक दिन पहले ही झंडावंदन की

जगहजगह मात्र झंडा अभिवादन तक सीमित स्वतंत्रता दिवस के लिए लोगों में अब तीजत्योहारों जितना भी उल्लास नहीं रह गया है. जोशोखरोश से शुरू हुआ यह राष्ट्रीय पर्व धीरेधीरे किस प्रकार आज केवल एक उत्साहहीन व औपचारिक सरकारी मेला बन कर रह गया है...
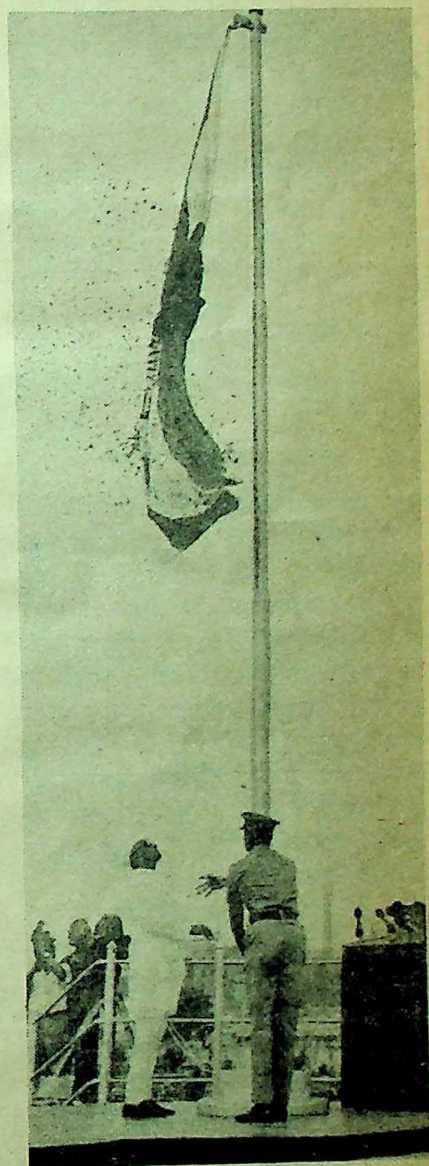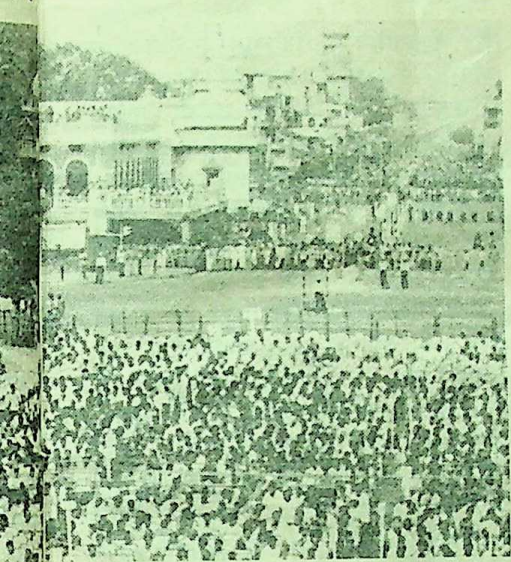
औपचारिकता पूरी कर ली जाती है, क्योंकि 15 अगस्त को छुट्टी रहती है. शिक्षण संस्थाओं के लोग स्वतंत्रता दिवस की औपचारिकता में छुट्टी बरबाद नहीं करना चाहते. अन्य स्थानों पर भी ध्वजारोहण के समय गिनेचुने लोग ही उपस्थित रहते हैं और उन्हें भी कार्यक्रम जल्दी निबटने का इंतजार रहता है.

इस अवसर पर आम जनता की ओर से कोई कार्यक्रम नहीं होता. राजधानी, जिला, तहसील कार्यालयों और सरकारी दफ्तरों में सरकारी कामकाज की तरह परंपरागत कार्यक्रम संपन्न कर लिए जाते हैं. दशहरा, दीवाली, होली और ईद आदि त्योहारों की तरह घर में या बाहर कहीं भी कोई उल्लास नहीं दिखाई देता. ज्यादा से ज्यादा लोग इस बात पर खुश हो लेते हैं कि 15 अगस्त को

छुट्टी है. एक और छुट्टी का दिन आने की निठल्ली खुशी के अलावा लोगों के मन में कोई भाव पैदा नहीं होता. वह खुशी भी तब काफूर हो जाती है, जब किसी साल 15 अगस्त के दिन रविवार आ जाता है.

क्या वजह है कि 15 अगस्त जनता का त्योहार नहीं बन सका? आरंभ में थोड़ाबहुत जो उत्साह दिखाई देता था, वह क्यों मर गया? इन प्रश्नों के उत्तर में बहुत से कारण गिनाए जा सकते हैं. जैसे यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता मिलने के बाद लोगों का मोह भंग हुआ है.

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों को आजादी के कई फायदे समझाए गए थे. अपने देश में अपना राजा होगा, खुशहाली, समृद्धि, न्याय और समानता के दिखाए गए सपनों ने सभी लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए तैयार भले ही न किया हो, उन में स्वतंत्रता के प्रति उत्सुकता भरी ललक तो जगा ही दी थी.

शासक बदले, चरित्र नहीं

स्वतंत्रता मिलने के बाद जैसेजैसे समय बीतता गया, वे सभी सपने टूटने लगे, जो लोगों ने 1947 से पहले संजोए थे. धीरेधीरे लोगों ने अनुभव किया कि शासक बदल गए हैं, किंतु चरित्र नहीं बदला है. बल्कि सत्ता में आए लोगों का चरित्र विदेशी शासकों की तुलना में और भी गिरा हुआ है. अब हालत यह है कि गांवों व कसबों के 50-55 साल से अधिक उम्र के लोग, जिन्होंने अंगरेजों का राज देखा है, आज की तुलना में उस समय की शासन व्यवस्था को बेहतर बताते हैं और अंगरेजी राज के गुण गाते हैं.

यह सच है कि स्वतंत्रता मिलने के बाद से अब तक जो लोग सत्ता में आते रहे हैं, उन्होंने जनता को निराश ही किया है. अपने दायित्वों को पूरा करने में शासन व्यवस्था बुरी तरह विफल रही है और उस के अंग बन कर काम कर रहे लोग शिष्ट और भ्रष्ट सभी तरीकों से अपने ही स्वार्थ पूरे करने में लगे रहे हैं. जन प्रतिनिधियों द्वारा चलाई जाने वाली व्यवस्था और सरकारी के संबंध में आम धारणा को एक शब्द में व्यक्त करना हो तो उसे 'गैर जिम्मेदार' कहा जा सकता है.

इस समय की शासन व्यवस्था जन आकांक्षाओं को पूरा नहीं करती. स्वतंत्रता मिलने के बाद सत्ता में आए लोगों ने जनता को निराश किया है तो सवाल उठता है कि व्यवस्थातंत्र किस के बलबूते पर टिका हुआ है? लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में सरकार चुनने और हटाने का अधिकार जनता के पास ही रहता है. अगर कोई सरकार या व्यवस्था जन आकांक्षाओं को पूरा नहीं करती तो चुनाव के जरिए उसे आसानी से हटाया जा सकता है.

हमारे देश में प्रचलित चुनाव प्रणाली और लोकतंत्रीय व्यवस्था इस ढंग की है कि 20-22 प्रतिशत मत पा कर भी एक ही दल सरकार बनाने की स्थिति में आ जाता है. अब तक हुए किसी भी आम चुनाव में जो दल विधान सभा या लोक सभा में सब से बड़े दल बन कर उभरे, उन में किसी को भी 50 प्रतिशत से ज्यादा वोट नहीं मिले. दूसरे शब्दों में सरकार बनाने वाला कोई भी दल सही अर्थों में जनता का व्यापक समर्थन पाए बिना ही बहुमत में आता रहा. ऐसा वर्तमान चुनाव पद्धति या प्रचलित लोकतंत्र की शैली की कमियों के कारण होता रहा.

व्यवस्था में कमियां क्यों हैं?

ये कमियां क्यों हैं? जब सरकार को सही अर्थों में लोगों का बहुमत से समर्थन प्राप्त नहीं होता और वह फिर भी बनी रहती है तो उन कमियों को दूर क्यों नहीं किया जाता? इस प्रश्न के उत्तर में प्रतिप्रश्न उठता है कि कमियां कौन दूर करे? वे लोग तो दूर करेंगे नहीं जो इन कमियों का फायदा उठा कर सत्ता में आते हैं या जिन्हें इस पद्धति का लाभ मिलता है.

ऊपरी तौर पर इस व्यवस्था के कितने ही दोष गिनाए जाएं, उन के लिए किसी को भी जिम्मेदार ठहराया जाए, पर गहन अर्थों में जनता ही जिम्मेदार होती है. जनता अगर किसी व्यवस्था या शासन को पसंद नहीं

छोड़ने का ताजा उदाहरण अमरीका का है. सन 1973 में निक्सन भारी बहुमत से अमरीका के राष्ट्रपति चुने गए थे. उन्हें पिछले सभी राष्ट्रपतियों से ज्यादा मत मिल थे. किंत उसी साल वाटरगेट कांड प्रकाश में आया, जिस में निक्सन ने लोकतांत्रिक परंपराओं पर कुठाराघात किया था. इस कांड के सामने आने पर निक्सन को जनमत के दवाव से राष्ट्रपति पद छोड़ना पड़ा.

भारत में इस तरह के जनमत के दवाव की कल्पना भी नहीं की जा सकती. यहां तमाम तरह की भ्रष्टताएं करने के बावजूद

हर साल जनता को भावुक बना कर खूबसूरत भुलावे में रखने का भरसक प्रयास किया जाता है.
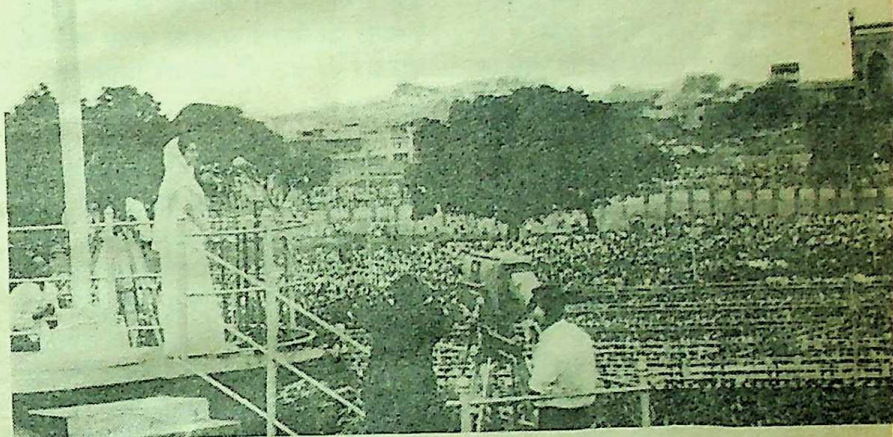
करती है तो उसे बदल सकती है. दुनिया के कई देशों में सामंतशाही के जमाने तक में जनता द्वारा व्यवस्था को पलटने की ऐतिहासिक घटनाएं घटी हैं. 18वीं शताब्दी में फ्रांस की राज्यक्रांति इस बात का सब से बड़ा उदाहरण है, जिस में लुई सोलहवें को हटा कर नई शासन व्यवस्था अपनाई गई थी.

व्यवस्था परिवर्तन के उस उदाहरण के अलावा शांतिपूर्ण ढंग से व्यवस्था में सुधार लाने और जनता द्वारा उस के सूत्रधारों को बदलने के ढेरों प्रसंग इतिहास में ढूंढ़े जा सकते हैं. लोकतंत्रीय व्यवस्था में ही चुने जाने के बाद जनमत का दबाव पड़ने पर कुरसी

लोग सत्ता में बने रह सकते हैं. उन्हें हटाने की बात तो दूर विरोध और आलोचना की हिम्मत भी बिरले ही कर सकते हैं. लोग ज्यादा से ज्यादा खीझ व्यक्त कर सकते हैं और पिछले जमाने की तारीफ कर अपने क्षोभ पर मरहम भर लगा लेते हैं.

प्रचलित व्यवस्था के दोष, उन से होने वाली परेशानियां और परेशानियों पर लोगों की नपुंसक खीझ का यही कारण है. भारत में राष्ट्रीय चेतना का अभाव है. राष्ट्रीय चेतना और राजनीतिक जागरूकता हमारे देश में कभी रही ही नहीं है. भारत के इतिहास में ढूंढ़ने पर भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा जब

जनता ने किसी अत्याचारी शासक को हटाया हो. राजाओं और सामंतों द्वारा एकदूसरे का राज्य हड़पने या रियासत में ही किसी सरदार के बागी बन कर राजा को हटाने के उदाहरण तो मिलते हैं, लेकिन लोगों ने कभी किसी परिवर्तन में हाथ नहीं बंटाया.

इस का सब से बड़ा कारण वर्णव्यवस्था रही, जिस के अनुसार ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण ही होता था, क्षत्रिय का बेटा क्षत्रिय और वैश्य तथा शूद्र की संतानें वैश्य और शूद्र ही होती थीं. कभी दूसरे वर्ण का कोई व्यक्ति किसी तरह राजा बन जाता तो उसे सामाजिक मान्यता नहीं मिलती थी, जैसे चंद्रगुप्त मौर्य एक दासी का बेटा था और वह सम्राट बना. उस ने कुशलता से शासन प्रबंध चलाया, किंतु सवर्णों ने चंद्रगुप्त मौर्य को वैसा सम्मान कभी नहीं दिया, जैसा वे क्षत्रिय राजाओं को देते थे. इतिहास में ऐसा उल्लेख भले न मिलता हो, किंतु शायद सवर्णों द्वारा मिली उपेक्षा के कारण ही वह जीवन के अंतिम काल में जैन साधु हो गया था.

राजनीतिक उदासीनता की जड़

हमारे यहां वर्णव्यवस्था इतने जड़ रूप में प्रचलित रही है कि सभी वर्णों के लोग अपने परंपरागत व्यवसाय से ही मतलब रखते थे. ब्राह्मण वर्ग राजनीति में थोड़ीबहुत रुचि लेता था क्योंकि उस के स्वार्थ राजा से जुड़े रहते थे. लेकिन ब्राह्मणों की रुचि राजा को अपने अनुकूल बनाने या रखने तक ही सीमित रहती थी. वैश्य और शूद्र तो 'कोऊ नृप होई हमें का हानि' की मानसिकता में जीते थे. कौन राजा बनता है और कौन सा राजा किस तरह हटता है, इस में आम जनता की कोई रुचि नहीं रहती थी.

सेनाएं युद्ध में जातीं, लड़ाइयां लड़तीं और रास्ते में, युद्ध के मैदान के पास खेतों में किसान खेती करते रहते थे. रूढ़ हो चुकी वर्णव्यवस्था के कारण सामान्य लोगों का राजा या राजव्यवस्था से कोई लगाव नहीं रह गया था. सभी सोचते थे कि कोई भी राजा बने, हमें तो खेती, मजदूरी, दस्तकारी ही करनी है, इसलिए क्यों परेशान हुआ जाए?

वैसे भी सामान्य लोगों को इन परिवर्तनों में रुचि लेना निषिद्ध रहा. रुचि ले कर कोई सेना में तो भरती हो नहीं सकता था. सिपाही का बेटा ही सिपाही बनता और किसान के बेटे या व्यापारी के बेटे के लिए इस क्षेत्र में कोई जगह नहीं थी. इसलिए भी आम जनता में राजा और राजव्यवस्था के प्रति निरीह उदासीनता का भाव घर करता गया. निरीह इसलिए कि राजा कोई भी बने, जनता को तो उस के हाथों उत्पीड़ित ही होना है. कर चुका कर, सिपाहियों की जोरजबरदस्ती और राजकर्मचारियों की मनमानी सह कर ही लोगों को जिंदा रहने की मजबूरी थी. राजकर्मचारी भी पैतृक परंपरा से ही बनते थे. कई राज्यों में तो आजादी से पहले तक पटवारी का बेटा ही पटवारी बनता था और कोटवार का बेटा ही कोटवार बनता था.

राष्ट्रीय चेतना का अभाव

परंपरागत व्यवसाय या वर्णव्यवस्था के इस रूढ़ स्वरूप ने भारतीय मानस की राजनीतिक चेतना को जड़ बना दिया और वह अभी भी जड़ है. इन्हीं कारणों से भारत में कभी राष्ट्रीय चेतना भी पैदा नहीं हो सकी, क्योंकि यहां सैकड़ों राज्य रहे, एक ही समय में सैकड़ों राजा हुए. लोगों की पहचान उन के क्षेत्रीय राज्यों के नाम से होती थी. 'कहां के रहने वाले हो?' इस प्रश्न का उत्तर गांव या क्षेत्र का नाम बता कर नहीं, रियासत या राज्य का नाम बता कर दिया जाता था. सिंध, पंजाब, मालवा, विजयनगर, चालुक्य से ले कर ग्वालियर, इंदौर, बीकानेर राज्य या रियासत के नाम से लोग अपने क्षेत्र का परिचय देते थे.

अभी भी लोग अपने को पंजाब, बिहार, केरल, मद्रास या बंगाल का निवासी ही बताते हैं, भारत का नहीं. भारत में तो फिर भी प्रदेशों के नाम से परिचय देना सभ्य हो सकता है, किंतु विदेशों में भी भारतीय, भारतीय रूप में नहीं, पंजाबी, बंगाली, मद्रासी और गुजराती के नाम से ही जानेपहचाने जाते हैं. वे

इन्हीं नामों से अपने समुदाय बना कर रहते हैं. 1969 में गांधी जन्म शताब्दी के दौरान भारत भर में दौरा कर सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां ने लगभग हर जगह यह बात दोहराई थी कि उन्हें इस देश में भारतीय कहीं नहीं मिले. कोई पंजाबी है तो कोई बंगाली, कोई मद्रासी है तो कोई गुजराती, कोई बिहारी है तो कोई राजस्थानी, लेकिन अपने को भारतीय कोई नहीं कहता.

यह बात हम दैनिक जीवन में भी चरितार्थ होती देख सकते हैं. वाराणसी के पास रहने वाला व्यक्ति कुछ समय के लिए अहमदाबाद जाता है तो घर के लोग उस के बारे में यही कहते हैं कि वह परदेस गया है. कहने का आशय यही है कि जब आम जनता के मन में अभी भारत के प्रति एकराष्ट्र की धारणा ही नहीं जन्मी है, तो राष्ट्रीय चेतना कहां से जगेगी?

स्वतंत्रता के महत्त्व से अनभिज्ञ

राजनीतिक जागरूता और राष्ट्रीय चेतना का नितांत अभाव होने के कारण ही 15 अगस्त जनता का त्योहार नहीं बन सका है. यह जागरूकता स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी पैदा नहीं हुई थी. उस समय थोड़े ही लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया. आम जनता प्रायः उदासीन ही रही. अपरिचय के अंधेरे में जी रहे एक स्वतंत्रता सेनानी ने कभी इन पंक्तियों के लेखक को बताया था कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय बेकार और निठल्ले लोगों को दैनिक मजदूरी की तरह पैसे देदे कर जेलों में भेजा जाता था, ताकि स्वतंत्रता आंदोलन की गरमाहट जिंदा रहे. कर्मठ और सक्रिय आंदोलनकारी तो पहले ही जेलों में चले जाते थे या भूमिगत हो जाते थे. इस स्थिति में आंदोलन का स्वरूप बनाए रखने के लिए यह जरूरी था.

स्वतंत्रता भी हमें बिना पूरी कीमत चुकाए मिल गई सो इस के महत्त्व को आम आदमी समझ नहीं पाया. यह भी एक कारण है, जिस से 15 अगस्त जनता का त्योहार नहीं बन सका. धीरेधीरे इस का सरकारी स्वरूप

स्वतंत्रता दिवस के दिन पहले गांवगांव, नगरनगर में प्रभातफेरियों का आयोजन होता था, मगर आज यह भी बच्चों के महज मनोरंजन का अवसर बनता जा रहा है.

स्पष्ट होता जा रहा है. सरकारी औपचारिकता में उल्लास या उमंग की आशा करना व्यर्थ है. कुछ वर्षों बाद तो मात्र औपचारिकता ही बची रहेगी और 15 अगस्त को, सुबह सूचना पट पर कोई सूचना चिपकाने की तरह तिरंगा लहरा देने का दृश्य दिखाई देने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए. ●

4 अप्रैल, 1982 [illegible] लोक अदालत की तारीख थी. दूरदूर के गांवों से आदिवासी खिंचे चले आ रहे थे. कुछ बैलगाड़ियों पर, कुछ साइकिलों पर तो कुछ पैदल ही आ रहे थे. कुछ बच्चों को लिए हुए थे तो कुछ अकेले ही. कुछ अपने झगड़ों को सुलझाने आ रहे थे तो कुछ महज मुकदमा सुनने के शौक से आ रहे थे. हरि भाई का मंडपनुमा दफ्तर खचाखच भर गया था. जमीन पर बिछा हुआ फर्श कम पड़ रहा था. लोग पीछे की छोटी दीवार पर या जमीन पर ही बैठ गए थे. युवा लोग धोती कुरता और लाल, पीली, नीली, हरी पगड़ी बांधे हुए थे, जब कि अधेड़ व वृद्ध [illegible] सफेद रंग की. कुछ मनचले अधेड़ भी रंगीन पगड़ी बांधे हुए थे. कुछ लोग कुरता, पायजामा भी पहने थे. औरतें छोटेछोटे बूटों वाली ओढ़नी, ब्लाऊज व कछोटा (मिनी स्कर्ट से भी ऊंचा वस्त्र) या फिर सूती धोती पहने थीं. चांदी के आभूषणों से सजी हुई वे वहां आई थीं.

महात्मा गांधी के सचिव महादेव देसाई के पुत्र श्री नारायण देसाई के नेतृत्व में संपूर्ण क्रांति विद्यालय का दल भी आया था. ये लोग हरि भाई के आनंद निकेतन आश्रम में कुछ सीखने आए हुए थे, जिस से अपनेअपने क्षेत्रों में लौट कर कुछ विशिष्ट कार्य कर सकें.

हरि भाई की लोक

मेहमानों के लिए हरि भाई के आसपास कुरसियां व सोफे पड़े थे. इस अदालत का आकर्षण ही ऐसा है कि इसे देखने शहरों से समाज के हर तबके के लोग आते ही रहते हैं. लाउडस्पीकर की व्यवस्था भी की गई थी.

श्री हरिवल्लभ पारिख, जिन्हें लोग आदर से 'हरि भाई' कह कर पुकारते हैं, गांधीजी व विनोबाजी के शिष्य रहे हैं. 1948 में वह अपने काम का माध्यम तलाशना चाहते थे. इसी तलाश में भटकते हुए गुजरात के फेनाई क्षेत्र में आ गए, जो वड़ोदरा से 125 किलोमीटर दूर आदिवासियों का जंगली प्रदेश है. आदिवासियों की शोचनीय स्थिति ने इन्हें इसी इलाके में कुछ कर गुजरने की प्रेरणा दी. आदिवासी साहूकारों व जंगल अधिकारियों द्वारा शोषित थे. कोई उन्हें सहयोग नहीं दे रहा था. पर उन्होंने भी वहीं जमने का निश्चय कर लिया. एक नीम के पेड़ के नीचे ही अपनी नववधू के साथ डेरा डाल दिया. उसी पेड़ के नीचे से आरंभ हुआ आज का आनंदनिकेतन आश्रम, जो आज वहां के आदिवासियों का तीर्थ बना हुआ है.

गांधीजी अपने शिष्यों से कहा करते थे कि स्थानीय मामलों में मत पड़ो नहीं तो आपस की दलबंदी में फंस जाओगे. लेकिन हरि भाई को शुरू से ही ऐसी परिस्थितियों ने घेर लिया कि उन्हें बापू के इस निर्देश के विपरीत जाना पड़ा. उन्होंने बांटा गांव के लोगों का विश्वास प्राप्त कर लिया. लोग उन के पास अपने छोटेछोटे झगड़े ले कर आने लगे. उन लोगों से ही उन्हें पता लगा कि यहां विवाह संबंधी झगड़े बहुत होते हैं, जिन का अंत अकसर हत्या में होता है. उस समय उन के पास अपने कार्य की स्पष्ट रूपरेखा नहीं थी. समय काटने के लिए उन्होंने इन झगड़ों

अदालत

लेख • नीलम कुलश्रेष्ठ

गुजरात के फेनाई क्षेत्र में हरिभाई की लोक अदालत अत्यंत लोकप्रिय हो रही है. वह आदिवासियों में जागृति लाने के साथसाथ उन्हें न्यायालयों की जटिल व खर्चीली प्रक्रिया में उलझने से भी बचाने में कामयाब रही है.

हरिभाई की सुप्रसिद्ध लोक अदालत का एक दृश्य (बाएं) और फेनाई क्षेत्र का एक आदिवासी (दाएं)

उस का चालान कर दिया व उस को मीमो दिया.

सजवा के देव भाई फत्तु भाई चार बच्चों के पिता हो कर भी गांव की दूसरी लड़की से इश्क करने लगे. उस की पत्नी मेंगड़ी बेन व उस लड़की में एक बार खूब झगड़ा हुआ. उस लड़की के लिए मेंगड़ी बेन के दिल में कितना गुस्सा भरा था, यह तो इस बात से ही पता लग रहा था कि वह अदालत में भी हाथ में पत्थर लिए बैठी थी. जरा उत्तेजित होती तो पत्थर पर कसाव बढ़ता जाता. प्रश्न चार बच्चों के भविष्य का था, इसलिए गांव वालों ने जिम्मेदारी ली कि वह देवजी भाई को उस दूसरी लड़की की तरफ देखने भी नहीं देंगे.

जब अदालत की काररवाई चलती है

अदालत की अवधि कईकई घंटे होती है. हरि भाई फैसला देने से पहले लोगों को समझाते हैं... कोई उतावली नहीं, अर्थात उन्हें कोई जल्दी नहीं है, दोनों पक्ष आराम से सोच लें. बीचबीच में ट्रांजिस्टर से समाचार भी सुनवाए जाते हैं. कभीकभी अदालत का काम करतेकरते आधी रात हो जाती है या फिर महीने की दूसरी कोई तारीख दे दी जाती है. अब तक यहां लगभग 40,000 मुकदमों का निर्णय किया जा चुका है. जाड़ों के दिनों में महुए के वृक्ष के नीचे यह अदालत चलती है.

मैं हरि भाई से कहती हूं, "मैं यहां देख रही थी कि जुरमाना 351 रुपए किया गया, पर देने वाले के पास हैं सिर्फ 200 रुपए. आप के कहने पर लेने वाला मान जाता है कि अगले महीने बाकी रुपया ले लेगा. लेनदेन का मामला है, क्या आप का इतना भय या प्रभाव है कि अगले महीने वाकई वह बाकी पैसा चुका देता है?"

"हां, सभी अपनी बताई हुई अवधि के अंदर पूरा हरजाना दे देते हैं. सिर्फ एक बार एक व्यक्ति ने स्त्री को हरजाना पूरा नहीं दिया था. मैं पचास हजार लोगों की रैली निकाल कर उस के गांव ले गया. तब से किसी की हिम्मत नहीं हुई कि ऐसा करे."

"कोई ऐसा मामला, जिसे आप हल न कर पाए हों?"

आदिवासियों के विचित्र नियम

"ऐसा तो कोई मामला नहीं है, किंतु एक बार एक मामले को हल करने में दो वर्ष लग गए थे. इन आदिवासियों का एक नियम है, विधवा होने के बाद यदि स्त्री के लड़का नहीं है या शादी करने के लिए देवर नहीं है तो उसे घर छोड़ कर जाना पड़ेगा. सदियों से यही रिवाज चला आ रहा है. कपराहली की मेंगी बेन के सामने ऐसी ही परिस्थिति आ गई. वह तीन लड़कियों की मां विधवा हो गई. इत्तफाक से उस के देवर भी नहीं था, जिस से विवाह कर लेती. उस के पति के परिवार में पति की एक बहन थी, जिस की शादी हो चुकी थी. वही उस जमीन पर अपना हक जमाने चली आई. पूरे गांव का समर्थन बहन के साथ था. मेंगी बेन ने लोक अदालत के सामने अपनी समस्या रखी. हालांकि वह ग्रामदानी गांव था, लेकिन इस विषय में कोई कुछ सुनने को तैयार नहीं था. मैं हर अदालत की तारीख पर एक भाषण इस विषय पर अवश्य देता कि यदि तुम्हारी बहनबेटियों के साथ ऐसा होता तो क्या होता. दो वर्ष में जा कर कहीं मैं अपने समर्थन में वातावरण तैयार कर पाया. अफसरों ने उस जमीन की लिखापढ़ी मृतक की बहन के नाम कर दी थी. मैं ने दोबारा लिखापढ़ी करवाई व मेंगी को इतनी स्वतंत्रता भी दिलवाई कि वह चाहे किसी से भी विवाह कर सके."

"इस मामले का कुछ व्यापक प्रभाव तो हुआ ही होगा?"

"हां हुआ. एक गांव था, वहां के लोगों से जब भी ग्रामदान की बात होती, एकएक कर के खिसक जाते. एक दिन देखा वे सब ग्रामदान करने चले आ रहे हैं. मुझे बहुत अचरज हुआ. मैं ने जब कारण जानना चाहा तो एक ने संकोच से बताया कि मेंगी बेन के मामले का निर्णय सुन कर गांव की सारी स्त्रियों ने खाना पकाना बंद कर दिया है और कहा है कि वे खाना तभी बनाएंगी, जब हम
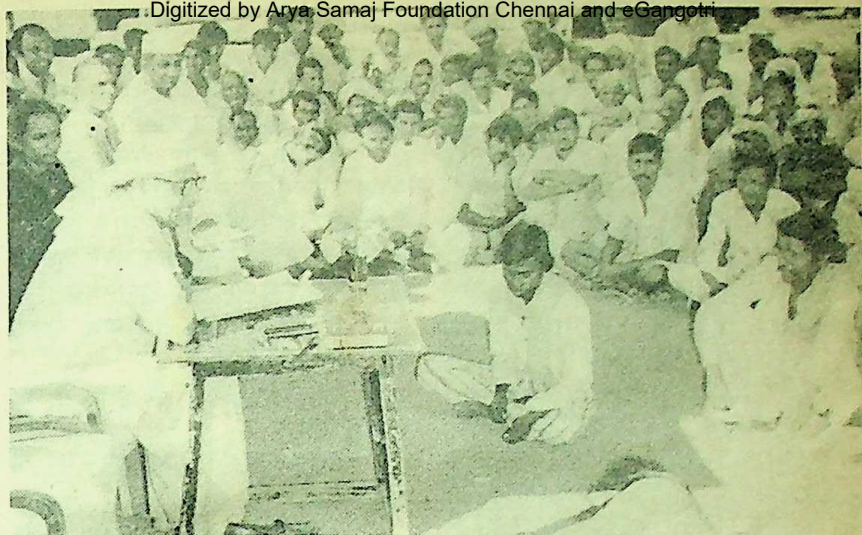
लोक अदालत में हरिभाई एक मुकदमा सुनते हुए : अदालत की काररवाई को ध्यान से सुनते आदिवासी जो अपने आप में अदालत की लोकप्रियता, उपयोगिता और महत्त्व के जीतेजागते प्रमाण हैं.

अब वह झगड़ी बेन की तरफ देखते हैं. "तू इस के साथ रहना चाहती है?"

"हां."

"यह तेरा कौन से नंबर का पति है?"

"तीसरा..." एक जोरदार हंसी मेहमानों की पंक्ति में लगती है. आदिवासी निर्लिप्त बैठे हैं. वहां यह सब आम बात है.

"ईश्वरसिंह, तुझे इस से क्या शिकायत है?"

"यह अपने ससुर, जेठ की कद्र नहीं करती. रोटी समय से बना कर नहीं देती. बिना बताए मायके चली जाती है. ऐसी औरत को कौन रखे. यह बहुत समय से मायके में ही रह रही है, इसलिए..."आगे वह शर्मा जाता है.

"अगर यह तेरी शिकायत दूर कर दे तो अब इसे रख लेगा?"

"कतई नहीं."

"अगर मुझे नहीं रखेगा तो मैं इस की बच्ची नहीं रखूंगी. मेरा अगला पति इसे प्यार नहीं करेगा. इस को मारेगा, पीटेगा तो मैं देख नहीं पाऊंगी."

ईश्वरसिंह को समझाने की कोशिश की गई. झगड़ी याचनाभरी आंखों से उसे देखती रही. शायद वह उसे अपना ही ले, लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ. दोनों पक्ष अपनेअपने पक्ष के दोदो व्यक्ति निश्चित करते हैं. वे चारों पीछे के कमरे में कोई रास्ता निकालने के लिए चले जाते हैं. तब अगला मुकदमा शुरू हुआ.

एक पुराना मुकदमा है. वाटंडा गांव में रावली को डाकिनी समझ कर गांव वालों ने मारापीटा. हुआ यह कि गांव में किसी रोग से बैल मरने लगे, कुछ मनुष्य भी मरे. गांव के लोगों ने भुआ (ओझा) को बुलवाया. उस ने अपने ऊपर देवी आने का अभिनय किया और झूमतेझूमते रावली के सामने आ कर खड़ा हो गया. नीम की झाड़ू से उसे मारते हुए कुछ मंत्र बोलतेबोलते कहने लगा कि 'दित्या की बहू' डाकिनी है. हमारे पशु व मनुष्य खा रही है. उस के इतना कहते ही सारे गांव वाले रावली पर पिल पड़े. यह अच्छा हुआ कि वे उसे मरी समझ कर वहीं छोड़ गए. बाद में चुपके से उस के पति व घर वाले उसे चारपाई पर डाल

कर हस्पताल ले गए. इस तरह वह बचा ली गई.

डाक्टर ने पुलिस को सूचना दे दी. गांव वाले व पुलिस पटेल पुलिस थाने में बुलाए गए. पुलिस का रुख भी दित्या के प्रति बदल गया. पड़ोस के गांव के मुखिया ने उन्हें लोक अदालत में रपट करने की सलाह दी.

लोक अदालत के सम्मन पर अदालत की तारीख के दिन वाटंडा के लोग नहीं आए तो हरि भाई की सलाह पर रावली व दित्या लोक अदालत का नोटिस और उन की नए सिरे से की गई शिकायत को ले कर पुलिस थाने पहुंचे. पुलिस अधिकारी दूसरे पक्ष से पैसे खा चुके थे, इसलिए उन्हीं दोनों को समझाया, "तुम्हारे साथ पुलिस तो हरदम रहेगी नहीं. गांव वाले भुआ (ओझा) का आदेश मानते हैं, इसलिए तुम दोनों गांव छोड़ कर भाग जाओ."

ओझा की पोल खुली

लोक अदालत ने एक दिन इस मुकदमे के लिए निश्चित किया. उधर पुलिस को भेजी गई लोक अदालत की सूचना पूरी तफसील के साथ अखबारों में छपी. शायद इस का पुलिस पर असर पड़ा हो. अब की पूरा वाटंडा गांव उमड़ पड़ा. बड़ेबड़े लंबे बालों वाले उंकाटियाभाई भुआ (ओझा) से सब के सामने हरि भाई ने कहा कि सामने प्याले में रखे पानी को वह खून में बदल दे. बस इतना ही काफी था, उस की पोल खोलने के लिए. वह बगलें झांकता रह गया.

जूरी ने बहुत बुद्धिमत्ता से अपना फैसला दिया. उन्हें जांच के बाद पता लगा कि गांव वाले पुलिस को 600 रुपए व वकील को 500 रुपए दे चुके हैं. गांव वालों ने तो यह सब अज्ञानतावश किया था. पहले ही वे बहुत रुपया खर्च कर चुके थे, इसलिए फैसला हुआ कि गांव वाले 125 रुपए रावली बहन की दवा इत्यादि पर जो खर्च हुआ है, मुआवजे के तौर पर उसे दे दें.

अगला मुकदमा. कितनी अजीब बात है कि झगड़ी पति के साथ जाने को उत्सुक बैठी थी, पर अमथी विद्रोही बनी पति व तीन बच्चों की मनुहार को तो अनसुना किए ही थी, हरि भाई व गांव के लोगों के समझाने पर भी पति के साथ नहीं जाना चाहती.

मूलजाला के कालू शुक्ल भाई के विरुद्ध आया ढूंगरी की अमथी की शिकायत थी कि वह दारू पी कर उसे पीटता है, इसलिए वह उसे व बच्चों को छोड़ कर अपने पिता के घर चली आई है और वहीं रहना चाहती है.

"शुक्ला पहले भी तुझे कभी पीटता था?" हरि भाई पूछते हैं.

"शादी के रोज से ही दारू पी कर पीटता रहता है."

"जब अब तक तू ने इसे नहीं छोड़ा, तो अब क्यों छोड़ रही है?"

"पहले मैं मजूरी कर के बच्चों का पेट भरती रही. यह अपना पैसा तो दारू में उड़ा देता है, मेरा भी छीनना चाहता है. एक बार मैं तुम्हारी अदालत में मुकदमा लाई थी. तुम्हारे कहने पर इस के पास चली गई थी, लेकिन कुछ वर्ष बाद यह फिर पीटने लगा. इस बार तो इस ने मुझे बहुत मारा है."

"क्यों रे शुक्ला, तु दारू पीता है?"

"मुझ से ज्यादा दारू तो अमथी पीती है," वह उत्तेजित हो कर कहता है. एक जोरदार हंसी.

अमथी उस की तरफ आंखें तरेरती है. "तू ने ही तो आदत डाली है."

"कहीं दोनों ही पी कर एक दूसरे को तो नहीं पीटते," हरि भाई मजाकिया मूड में कहते हैं. "अमथी, तू इस बार इस के साथ चली जा, अब की गांव वाले इस पर नजर रखेंगे. इस ने जरा भी हाथ उठाया तो इस को कड़ा दंड भरना पड़ेगा."

"मैं नहीं जाऊंगी." अमथी ऊंचे उठे घुटनों पर हाथ रख लेती है. एक खास बात है. तीनों बच्चे शुक्ला भाई से सटे बैठे हैं. न बच्चे मां को देख रहे हैं, न मां उन्हें. तीनों में लड़की समझदार है. शोक व लज्जा से उस का चेहरा उतरा हुआ है.

हरि भाई बच्चों से पूछते हैं, "मां के साथ जाना है या बापू के साथ?"

"बापू के साथ," लड़की कह तो देती है, किंतु फिर दुख व शर्म से लाल हो जाती है. अमथी फिर भी नहीं पसीजती.

अमंथी की जिद के कारण जूरी निर्णय के लिए चली जाती है. गांव की मुखिया की पत्नी उसे एक ओर समझाने ले जाती है लेकिन वह फिर भी अड़ी रहती है. स्त्रियों में एक फुसफुसाहट उभरती है. "औरत है या पत्थर." जो औरत बच्चों के लिए पत्थर बन जाए, उस के पीछे कोई ठोस कारण छुपा रहता है.

तभी झगड़ी के मामले का निर्णय हो जाता है. हरि भाई इस को लोगों को सुनाते हैं. "ईश्वर भाई को 351 रुपए झगड़ी को देने होंगे व हर माह बच्ची के भरणपोषण के लिए पंदरह रुपए. बच्ची के बड़ी होते ही झगड़ी बेन उसे ईश्वरसिंह को दे देगी." झगड़ी अपने पैर की चांदी की पायल उतार कर ईश्वरसिंह को दे देती है, क्योंकि शादी पर यह उस की तरफ से मिली थी. ईश्वरसिंह को निर्देश दिए जाते हैं कि उस की ससुराल का सामान-चारपाई, बक्स वगैरह झगड़ी के घर पहुंचा दे.

ईश्वरसिंह की तरफ से 15 व झगड़ी के पिता की तरफ से पांच रुपए गुड़ खाने के लिए मिलते हैं. जब तक गुड़ नहीं बंटता, आदिवासियों को लगता ही नहीं है कि निर्णय हो गया.

कभी बहुत पहले ईगरिमा हरि भाई से बहुत क्रोधित था, क्योंकि उस के बेटे को उस के कुकर्म के लिए हरि भाई के कारण सजा हो गई थी. दो महीने उन के पीछे बंदूक लिए घूमता रहा, लेकिन उन्हें मार नहीं पाया. बाद में जब उस का गुस्सा शांत हो गया तो हरि भाई ने पूछा कि तुम ने मुझे मारा क्यों नहीं. उस का उत्तर था, "आप कई बार मेरे निशाने पर आ गए थे, लेकिन पता नहीं आप को देख कर क्या हो जाता था कि घोड़ा दब ही नहीं पाता था."

अगला मुकदमा.

लावाकुई के झवेर भाई ने साहूकार नवनीत भाई बिट्ठलदास के विरुद्ध फरियाद की है. इन का कहना है कि कपास खरीदने के लिए नवनीत भाई से 4,000 रुपए लिए थे. उन्होंने काफी पैसा लौटा दिया है, जब कि वह अभी भी 4,000 रुपए की मांग कर रहे हैं. नवनीत भाई कहते हैं कि धीरेधीरे लौटाया गया रुपया ब्याज चुकता करने में ही समाप्त

फेनाई क्षेत्र की एक आदिवासी युवती : लोक अदालत से कोई भी निराश नहीं लौटता.
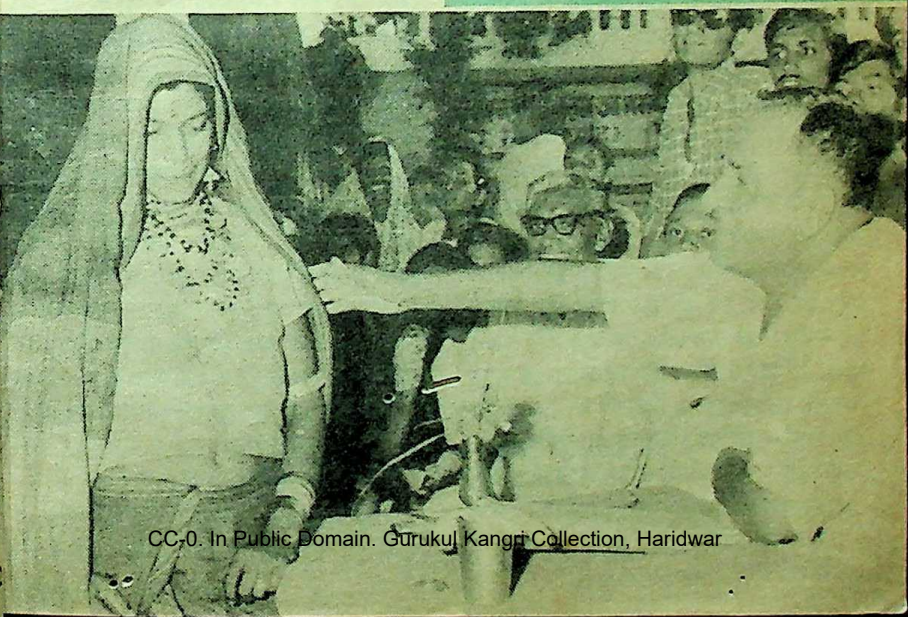
हो गया. आखिर हरि भाई के समझाने पर वह बकाया 800 रुपए लेना मंजूर कर लेता है. यह लोक अदालत का विलक्षण प्रभाव है कि जो साहूकार 4,000 रुपए मांगता था, वह 800 रुपए ले कर संतुष्ट हो चला जाता है. वह भी जानता है यदि शहर में मुकदमा चलाया तो इतना रुपया निकालने के लिए कम से कम एक तिहाई रुपया खर्च करना ही पड़ेगा. हो सकता है उस ने ब्याज के बहाने पहले ही काफी रुपए ऐंठ लिए हों.

तभी अमथी के मामले की जूरी का निर्णय हरि भाई बताते हैं, "अमथी को मारने के कारण शुक्ला भाई को 55 रुपया दंड भरना होगा."

अमथी पिता के घर जाने के लिए तैयार है. प्रभाबेन व योगिना बेन उसे अपने पास बुला कर एक और आखिरी कोशिश करती हैं. कुछ अन्य स्त्रियां भी उसे समझाबुझा रही हैं, लेकिन वह 'न', 'न' में सिर हिला रही है. किंतु जूरी के निर्णय के बाद अंतिम क्षणों में पता नहीं क्या चमत्कार होता है कि अमथी का घर टूटने से बच जाता है.

आप बीती मासूम लड़कियों की

इन आदिवासियों के समाज में एक अजीब सा रिवाज है, स्त्री चाहे अपनी जाति के कितने ही आदमी बदल ले, किंतु उन को समाज माफ कर देता है. किंतु यदि वह गैरआदिवासी के यहां एक रात भी बिता दे तो समाज उस का बहिष्कार कर देता है. कमजुड़ी व सुखी दो अविवाहित युवतियां हैं, उन के पिताओं की कुछ ऐसी ही परेशानी थी. लड़कियां मजदूरी करने गई थी, वहां से अचानक गायब हो गईं. मातापिता चिंतित हुए. हरि भाई उन के गांव वालों से पूछताछ करने गए. वहां पता लगा, जहां वे काम करने जाती हैं, वहां के पटेल का लड़का उन में रुचि लेता है. शक यही था कि उस के साथ ही तो कहीं नहीं चली गईं, किंतु वे 30 वें दिन लौट आईं. उन दोनों के पिता सारे समाज के सामने उन की आपबीती सुनवाना चाहते थे, जिस से समाज उन्हें स्वीकार कर ले.

दोनों लड़कियां धोती पहनें हैं. सुखी के साफ रंग के चेहरे पर लज्जा है. वह शर्माई सी कमजुड़ी से सटी बैठी है. वह बेवजह अपना आंचल अपनी अंगुली में लपेट रही है. सांवली, तीखे नाकनक्श वाली उस 17 साल की कमजुड़ी का साहस देख कर मैं दंग रह जाती हूं. वह बहुत आत्मविश्वास के साथ खड़ी हो कर कहने लगती है, "हम धर्मपुरी में मजूरी करने गई थीं. हमारे मांबाप में झगड़ा हो गया था, वे झगड़ा करतेकरते बस में बैठ कर चले गए. सुखी के पास थोड़े पैसे थे, इसलिए हम लोग डमोई रोड पर बैठ कर ट्रक का इंतजार करने लगे. ट्रक में बस से पैसा कम लगता है. एक ट्रक के आते ही कुछ और मजदूर व हम लोग चढ़ गए. रास्ते में जिन के गावं आते रहे, वे लोग उतरते गए. बस हम दोनों ही ट्रक में बैठी रह गईं. ट्रक वाला बहुत तेज ट्रक चलाने लगा. हम रोने व चिल्लाने लगीं, लेकिन कौन सुनता. हम सारी रात रोती रहीं, ट्रक चलता रहा. दो बजे ट्रक वाले का घर आया. वहां उस की मां थी. ट्रक वाले ने हमें एक कमरे में बंद कर दिया."

वह धाराप्रवाह बोलती जा रही है. "वह रोज हमें धमकाता. कभी गहने, कपड़े का लालच देता कि यदि हम उस की बात मान लें तो वह हमें रानी बना कर रखेगा, पर हम दोनों रोती रहतीं. कई दिन खाना भी नहीं खाया. जब उस की मां को पता लगा कि हम भील हैं तो उस ने हमारे खाना बनाने व खाने के बरतन अलग कर दिए. वह अपने बेटे से भी कहती रहती कि इन को छोड़ आओ. हम लोगों ने उसे बताया कि हमारी रक्षा करने वाले हरि भाई हैं. उन के आदमी हमें खोज रहे होंगे. कभी भी हमें खोज निकालेंगे. एक दिन उस का बड़ा भाई हमें समझाने आया. जब हम अपनी जिद पर अड़े रहे तो वह दूसरे दिन छोटे उदयपुर की ट्रेन में हमें बैठा गया. वहां से तीन बस बदल कर हम अपने गांव पहुंचीं."

"तुम ने अपना नाम व गांव का नाम सही बता दिया था?"

"नहीं, मैं ने अपना नाम तल्लिका व सुखी का पुष्पा बताया था. गांव का नाम भी

हरि भाई : इस क्षेत्र के तमाम निवासियों की नजर में किसी सम्माननीय व्यक्ति से कम नहीं.

गलत बताया था."

"वे लोग कौन सी जगह के रहने वाले थे?"

"यह तो खबर नहीं."

"कैसी बोली बोलते थे?"

"उस की मां .ऐसे बोलती थी, 'ये लड़कियां कहां से पकड़ कर लाया है?''' उस की इस नकल पर हंसी गूंज जाती है.

समाज उन की इस मौखिक अग्नि परीक्षा के बाद उन्हें स्वीकार कर लेता है.

जसी बेन उनकोई के वोंझी भाई के साथ भाग गई थी. बाद में दोनों लौट आए. वोंझी भाई ने जसी के पिता दलसुख भाई के सामने उसे पत्नी स्वीकार कर लिया था. किंतु पिता को डर लगना स्वाभाविक है कि कहीं वह बाद में उसे छोड़ न दे. इसलिए इस अदालत में दोनों की शादी की लिखापढ़ी करवाने आए हैं. दस्तावेज पर वोंझी भाई हस्ताक्षर करता है, जसी बेन अंगूठा लगाती है. एक दूसरे को माला पहनाई जाती है. सफ़ेद सूत में फूल पिरो कर आंटी (माला) बनाई गई है. जाहिर है दोनों पक्षों की ओर से 51-51 रुपए लिए जाते हैं.

झरोई के बुद्धिमा भाई चंपा को बिना किसी कारण छोड़ना चाहते हैं.

हरि भाई पूछते हैं, "क्या रोटी बना कर नहीं देती?"

"देती है."

"झगड़ा करती है?"

"नहीं."

"दूसरे आदमी से संबंध है या दारू पीती है?"

"ऐसा भी कुछ नहीं है."

...फिर भीं वह चंपा को छोड़ना चाहता है. जूरी चंपा व उस की बेटी को 2,025 रुपए हरजाना दिलवाती है.

सरकारी अधिकारी भी झुके

किस्सा पुराना है. एक बार जंगल अधिकारियों ने सरकार के जुरमाने की जितनी वसूली की, रसीद उस के आधे की भी नहीं दी. लोक अदालत ने संबद्ध अधिकारियों को पहले पत्र लिखे व लिखा कि स्पष्टीकरण देना चाहें तो लोक अदालत में आ कर स्पष्टीकरण दें, अन्यथा लोक अदालत को दूसरे कदम उठाने पड़ेगें. तीन अफसरों में से एक अफसर तो अदालत में आ गया तथा माफी मांग कर रुपया भी लौटा गया. जब अन्य दो अफसर नहीं आए तो लोक अदालत ने सारी जानकारी अखबारों में भेजी व संबद्ध अफसरों के दफ्तरों के सामने सत्याग्रह की घोषणा कर दी.

इस का परिणाम यह हुआ कि विभाग के सर्वोच्च अधिकारी दलबल सहित लोक अदालत के सामने पहुंचे व कहने लगे कि उन के अधीनस्थ ऐसा नहीं कर सकते हैं. तब लोक अदालत के सचिव ने फाइल नंबर छः से एक अफसर का माफीनामा निकाल कर मुख्य वन संरक्षक के हाथ में रख दिया. बड़े अफसर उसे देख कर चकित रह गए. बाकी दो अफसरों को जब किसानों के सामने खड़ा किया गया, तो किसानों ने लोक अदालत से मिली हिम्मत व्र आत्मविश्वास के कारण उन से अपने पूरे रुपए गिनवा लिए. उन में से एक ने लिखित माफी मांगी व रुपया भी लौटाया. तीसरे ने रुपया कम लिया था, किंतु लोगों की पिटाई अधिक की थी, इसलिए वन संरक्षक ने

को सुनना शुरू कर दिया. वह दोनों पक्षों से खुल कर बात करते थे. झगड़े वाले लोगों के घरों के बीच में जो पेड़ पड़ता था, वहीं वह दोनों पक्षों को बुलाते थे, ताकि किसी की नाक नीची न हो. हरि भाई जब तक अपनी चारपाई ले कर वहां पहुंचते तब तक दोनों पक्ष आपसी गालीगलौज से अपने दिल की भड़ास कुछ कम कर लेते थे. फिर शुरू होता था हरि भाई का काम.

उन्होंने इस तरह कई झगड़े शांतिपूर्वक सुलझाए, लेकिन गांव वालों का पूरा विश्वास वह तभी जीत पाए, जब गांव वालों को साहूकार के जुल्म से बचाने की उन की योजना सफल हुई.

जब लोक अदालत शुरू हुई

यहीं से 'लोक अदालत' या 'खुली कचहरी' का जन्म हुआ जो अपने आप में एक अनूठी अदालत है. अब तक शहरों के कानूनदां वकील इन भोलेभाले आदिवासियों की अज्ञानता का लाभ उठा कर भारी भरकम फीस वसूल कर अपनी जेबें भर रहे थे, पर इस तरह की अदालत की शुरुआत आदिवासियों के लिए सुखद वरदान साबित हुई. शहरों की अदालत में मुकदमे महीनों लटके रहते थे. कुछ बेसब्रे तो निर्णय के पहले ही जहर बुझे तीर से 'शत्रु' की हत्या कर स्थिति को और बिगाड़ लेते थे. अब 'लोक अदालत' में निर्णय कुछ घंटों में ही मिलने लगा.

लोक अदालत के माध्यम से हरि भाई ने लोकशक्ति को संगठित किया. उस की ताकत महसूस की. यही ताकत ग्रामदान का माध्यम बनी जो 1956 में यहां शुरू हुआ.

लोक अदालत में फरियादी अपने पक्ष की रपट लोक अदालत मंत्री के पास लिखवा देता है. तब दूसरे पक्ष को बाकायदा सम्मन भेज कर बुलाया जाता है. यहां हरि भाई के कारण ही प्रौढ़ शिक्षा का इतना प्रसार हुआ है कि गुजराती भाषा के सम्मन वहां के आदिवासी पढ़ लेते हैं. हरि भाई का यहां इतना अधिक प्रभाव है कि सम्मन मिलने पर दूसरे पक्ष का व्यक्ति अदालत की तारीख पर अवश्य हाजिर होता है.

फैसला ऐसे होता है

दोनों पक्षों की बात सुन कर पहले हरि भाई अपने आप फैसला सुनाते थे, लेकिन अब यह होने लगा है कि वह दोनों पक्षों से अपने दोदो जूरी तय करने के लिए कह देते हैं. इन चारों को एक कमरे में भेज दिया जाता है. जो भी दंड ये लोग तय करते हैं, वही दोनों पक्षों को मान्य होता है. इस का एक फायदा यह हुआ कि हरि भाई अनुपस्थित भी हों तो लोक अदालत के सचिव अदालत की काररवाई इसी तरह चलाते रहते हैं. अदालत की महीने में एक तारीख रखी जाती है. आवश्यकता हो तो दो या तीन तारीख भी रख लेते हैं. भारत में शायद ही ऐसी कोई और अदालत हो, जहां न्याय कुछ घंटों में ही मिल जाता हो.

उस दिन भी लगभग दो बजे लोक अदालत के सचिव श्री वनकर ने अदालत आरंभ होने की घोषणा की. पहला मुकदमा शुरू हुआ. मोटी टीकरी गांव की झगड़ी बेन की फरियाद है, अपना नाम पुकारे जाने पर थोड़ा सा घूंघट किए वह भीड़ में से आगे निकल आई. उम्र होगी कोई 18-19 वर्ष. चेहरे पर मासूमियत है, गोद में कुछ माह की बच्ची है. इस की फरियाद है अपने पति ईश्वर के विरुद्ध. ईश्वर भी पीछे बैठे हुए लोगों में से उठ कर हरि भाई के सामने जमीन पर आ कर बैठ जाता है.

झगड़ी बेन की शिकायत है कि उस के पति ने उसे और उस की बच्ची को छोड़ दिया है. वह आजकल मां के यहां रह रही है, लेकिन पति के घर जाना चाह रही है.

हरि भाई ईश्वरसिंह से पूछते हैं, "क्यों, दूसरी औरत पसंद आ गई है क्या?"

पायजामा कुरता पहने पतलादुबला, सांवला, छोटी उम्र का ईश्वरसिंह सिर झुका कर मुसकरा भर देता है.

"झगड़ी बेन तेरी कौन से नंबर की पत्नी है?"

"तीसरी है?"

ग्रामदान कर आएगी. उन्होंने समझ लिया था कि मेंगी ग्रामदानी गांव की थी, इसी लिए उस की सुरक्षा हो गई."

दिल्ली विश्वविद्यालय के विधि संकाय के डीन डाक्टर उपेंद्र बख्शी ने श्री लक्ष्मी मल सिंधवी की सहायता से इसी लोग अदालत पर एक बड़ा लेख 'तकरार से करार' शीर्षक के अंतर्गत लिखा था, जो 'जरनल आफ कांस्टीट्यूशनल एंड पार्लियामेंटरी स्टडीज 1966' में प्रकाशित हुआ था.

भारतीय सामाजिक विज्ञान एवं अनुसंधान परिषद के कहने पर कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य संस्थान के डाक्टर अवधप्रसाद ने इस संस्था का और भी गहरा अध्ययन किया. दुनिया भर के समाजसेवी यहां कुछ न कुछ सीखने आते रहते हैं.

आज जरूरत इस बात की है कि जब न्याय प्रक्रिया इतनी महंगी और जटिल हो गई है, तब लोक अदालत जैसी संस्था को सार्वदेशिक स्वरूप देने के बारे में क्यों न सोचा जाए, पर इस से पहले इस के गहन अध्ययन की आवश्यकता है और आवश्यकता है 'हरि भाई' जैसे त्यागी, तपस्वियों की, जिन पर जनता विश्वास कर सके. ●

सूटकेस चुराने वाला सिपाही गिरफ्तार

डोंगरगढ़ में रेलवे पुलिस ने शहरी क्षेत्र के संपतलाल नामक एक सिपाही को चोरी के आरोप में गिरफ्तार कर के जेल भेज दिया.

हावड़ा बंबई मेल में बंबई जा रहा एक व्यापारी जब यहां चाय पीने के लिए उतरा तो सिपाही पिछले दरवाजे से उस का सूटकेस ले कर फरार हो गया. पर रेलवे पुलिस द्वारा उसे सूटकेस सहित गिरफ्तार कर लिया गया.

—नवभारत, नागपुर (प्रेषक : चंद्रकांत वीरवाणी) (सर्वोत्तम)

*

पुलिस अधिकारी बन कर ठगा

सिवनी में छपारा पुलिस थाने के अंतर्गत उमरिया गांव के एक आदिवासी को पुलिस अधिकारी की वरदी पहन कर एक ठग व्यक्ति द्वारा ठग लिया गया.

इस आदिवासी ने सर्राफा बाजार से आठ हजार रुपए मूल्य के चांदी के जेवरात खरीदे थे. तीन दिन बाद एक आदमी पुलिस की वरदी में उस के पास पहुंचा और उस से कहा कि वह छपारा का थानेदार है और उस आदिवासी ने जो जेवर खरीदे हैं वे चोरी के हैं और उसे उन्हें जब्त कराना पड़ेगा. जांच होने के बाद वे वापस मिल जाएंगे.

भोलेभाले आदिवासी ने ठग की बातों में आ कर सारे आभूषण उसे सौंप दिए. बाद में कथित इंसपेक्टर ने कहा कि वह छपारा थाने में आए, वहां उसे जब्तीनामा मिल जाएगा.

आदिवासी जब थाने पहुंचा तो वास्तविकता का पता चला. पुलिस ठगी का मामला दर्ज कर के उस नकली इंस्पेक्टर की तलाश कर रही है.

—नवभारत, जबलपुर (प्रेषक : ब.क. धनानी)

*

वह रोजगार देने के बहाने ठगता था

महासमुंद में बेरोजगार युवकों को नौकरी दिलाने के बहाने 300 से अधिक युवकों को ठगने के आरोप में स्थानीय पुलिस ने वंशीधर महापात्र नाम के एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है.

इस व्यक्ति ने गत 20 अप्रैल को 10 हजार उड़िया शिक्षकों का विज्ञापन समाचारपत्रों में दिया था. इस प्रचार के लिए उस ने आकाशवाणी के कुछ केंद्रों व रायपुर, दुर्ग, भोपाल, राजनांदगांव के रोजगार दफ्तरों का भी सहारा लिया.

वह एक जाली संस्था के नाम से आवेदकों से दसदस रुपए की राशि वसूल कर के पांचपांच रुपए की रसीद देता था. जब इस की शिकायत एक युवती ने पुलिस से की तो पुलिस ने उसे पकड़ लिया.

—देशबंधु, रायपुर (प्रेषक : अभयकुमार धाबू) •

तुम मिले

तुम मिले!
ये हन्ना महकी
झुलसते दिन खिले.

वो बहुत अपनी दुपहरी
हर सुबह, हर शाम,
कल गली के मोड़ पर
लिख दी तुम्हारे नाम.
तुम मिले:
छू गए हैं
मोरपंखी सिलसिले.

कनखियों वाली हंसी का
इंद्रधनुषी रूप,
दे गया मन के अंधेरों को
सुनहरी धूप.
तुम मिले!
ढह गए
बोझिल उदासी के किले:

—हरीश निगम

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं कि[illegible] फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. [illegible] भी हजारों वर्ग मील भारतीय [illegible] विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पू[illegible] लिए बहुत बड़े पैमाने पर सा[illegible] सहयोग और सद्भाव की आवश[illegible] होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्था[illegible] पूंजीपति या राजनीतिक दल से सं[illegible] नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रक[illegible] सहायता स्वीकार करती है. यह [illegible] एक ही वर्ग की सहायता और बल[illegible] निर्भर है. और वह हैं सरिता के [illegible] इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्सा[illegible] सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ ले[illegible]

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी [illegible] सरकार का और देशी व [illegible]

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही हैं. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

लंदन का मोम की आकृतियां का संग्रहालय

लेख • अजयकुमार सिन्हा

शिल्प एवं इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण लंदन का यह संग्रहालय अपने आप में अनूठा है. यहां मशहूर और बदनाम दोनों प्रकार के लोगों की मोम की ऐसी मूर्तियां हैं जिन्हें देखते समय जिंदा व्यक्ति को देखने का भ्रम हो जाना मामूली बात है...

लंदन में मोम की मूर्तियां बनाने वाला एक कलाकार था. उस ने बहुत सी मोम की मानव आकार की मूर्तियां बनाई थीं और उन्हें अपने स्टूडियो में प्रदर्शन के लिए रखा था. उस के स्टूडियो का नाम 'हाउस आफ वैक्स' (मोम का घर) था. उस की बनाई मूर्तियां बिलकुल सजीव लगती थीं. जिस की भी मूर्ति वह बनाता था, देखने वाले

यह नहीं बता पाते थे कि यह मूर्ति मोम की है. लोग भ्रम में पड़ जाते थे और यह भूल कर कि वे मोम की मूर्तियां हैं, उन से बातें करने लगते थे.

हाउस आफ वैक्स शीघ्र ही एक लोकप्रिय और मनोरंजनपूर्ण स्थल तो बन ही गया. उस कलाकार की जीविका का एकमात्र साधन भी बन गया वह. कलाकार का एक दुश्मन भी था जो उस की उत्कृष्ट कला से ईर्ष्या करता था. एक दिन वह कलाकार से मिलने उस के स्टूडियो में आया. कलाकार से उस ने थोड़ी देर तक कुछ बात की और फिर बोला कि वह उस के स्टूडियो में आग लगा देगा ताकि उस की कला नष्ट हो जाए. वह अपने साथ छिपा कर एक बोतल में पेट्रोल और माचिस भी लाया था. उस ने तुरंत मूर्तियों पर पेट्रोल छिड़कना शुरू कर दिया. कलाकार उसे मना करने लगा और उस से

इस संग्रहालय की एक आकर्षक मोम की मूर्ति : इस में इंगलैंड के राजा हेनरी आठवें अपनी छः पत्नियों के साथ दिखाए गए हैं.

विनती करने लगा. पर उस ने उस की एक न सुनी. शत्रु ने मूर्तियों को दियासिलाई दिखा दी और खुद भाग गया.

कलाकार की लाख कोशिशों के बावजूद उस का सारा स्टूडियो खाक हो गया. मोम की मूर्तियों पिघल कर समाप्त हो गईं. कलाकार भी अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी मूर्तियों को बचाने के चक्कर में स्वयं जल गया. उस का चेहरा जल कर अत्यंत वीभत्स व डरावना हो गया. उस की दोनों टांगे जल कर बेकार हो गईं. किंतु वह मरा नहीं.

धीरेधीरे उस ने अपने स्टूडियो और काम को फिर से स्थापित करना शुरू कर दिया. पर उस के दोनों हाथ अब मूर्तियां नहीं बना सकते थे. उस ने अपनी जली हुई डरावनी शक्ल भी किसी को नहीं दिखाई. उस ने अपनी पुरानी पहचान के लिए अपनी पहले की शक्ल का मोम का एक मुखौटा बनाया और हमेशा वही लगाए रहता. किसी को मालूम नहीं था कि वह मुखौटा लगाए है. वह पहिए वाली कुरसी पर लोगों के सामने आता था.

रात को वह मुखौटा उतार देता. अपने जले हुए भयानक मुख के साथ दूसरों के घरों में घुस कर एक तेज धागे से लोगों के गले काट कर उन की हत्या कर देता. वह उन के शवों को भी ले आता था. उस के स्टूडियो में एक भूमिगत गुप्त कक्ष भी था, जहां आग पर एक बहुत बड़ा कड़ाहा था. उस में मोम उबलता रहता था. कलाकार शवों को उस कड़ाहे में डाल देता. शवों पर मोम की परत चढ़ जाती थी और वे मोम से बनी मूर्तियां लगने लगती थीं. वह उन्हें अपने स्टूडियो में प्रदर्शित कर देता था. इस तरह उस ने अनेक सुंदर स्त्रियों की हत्या कर अपने स्टूडियो में उन के मोम चढ़े शव रख रखे थे.

एक लड़की ने, जो उस का स्टूडियो देखने आई थी एक जानीपहचानी लड़की को, जो लापता हो गई थी, मूर्ति के रूप में वहां देखा. जब उस ने उस के असली बाल देखे तो उसे शक हो गया और उस ने उसे बारबार छू कर और टटोल कर देखा. कलाकार ने यह सब देख लिया. बात धीरेधीरे पुलिस को पता चली. तब तक कलाकार ने उस लड़की को भी शिकार बना डाला. लड़की उस के भूमिगत गुप्त कक्ष में पड़ी कराह रही थी. तभी पुलिस ने धावा बोल दिया. पुलिस से छुप कर भाग रहा कलाकार उस उबलते कड़ाहे में गिर गया.

यह कहानी 'हाउस आफ वैक्स' नामक एक अंगरेजी फिल्म की है, जो 1957 में भारत में दिखलाई गई थी. इस फिल्म की प्रेरणा लंदन में स्थित मोम संग्रहालय से मिली थी.

तोपों का धूमधड़ाका, युद्ध होने का शोरगुल, घोड़ों की टापें, सैनिकों की चीखपुकार, तलवारों की खनखनाहट. चारों ओर कानों को बहरा कर देने वाला युद्धनाद सुनाई पड़ता है.

यह है, ब्रिटेन के इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना—ट्रिफालगा के युद्ध का प्रभावशाली और अत्यंत नाटकीय प्रस्तुतीकरण. ट्रिफालगा का युद्ध साकार हो उठा है. यह युद्ध लगभग 150 वर्ष पहले हुआ था, जिस में ब्रिटिश एडमिरल नेलसन बहादुरी से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था.

यह दृश्य लंदन स्थित मैडम टूसाउड के वैक्स म्यूजियम (मोम की मूर्तियों के संग्रहालय) में दिखाया जाता है.

विचित्र संग्रहालय

मोम की मूर्तियों का यह संग्रहालय विचित्र है. इस में यदि मूर्तियां प्रदर्शित हैं तो कुछ विख्यात घटनाएं भी प्रदर्शित की गई हैं. सब से रोचक बात यह है कि यहां काल्पनिक मूर्तियां नहीं, बल्कि विख्यात व्यक्तियों की मूर्तियां प्रदर्शित हैं. इस से भी ज्यादा हैरानी की बात यह है कि मूर्तियां केवल महापुरुषों की ही नहीं बल्कि कुख्यात अपराधियों व हत्यारों की भी हैं. इस संग्रहालय की नीति है कि हर जानेमाने चाहे वह महापुरुष हो या बदनाम व्यक्ति, की मूर्तियां यहां रहें.

संग्रहालय में छः पीढ़ियों के ऐतिहासिक व प्रसिद्ध व्यक्तियों की मानवाकार मूर्तियां हैं.

संग्रहालय की संस्थापिका मैडम टूसाइउ की मोम की मूर्ति बनाने वाली मूर्तिकार जीन फ्रेजर— विश्व विखयात चित्रकार पिकासो की मोम की मूर्ति बनाती हुई.

इन में से अधिकतर जीवित व्यक्तियों को देख कर बनाई गई हैं. साथ ही कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं की झांकियां भी हैं. पंडित जवाहरलाल नेहरू व श्रीमती इंदिरा गांधी को संग्रहालय में देख कर भारतीयों को निश्चित रूप से प्रसन्नता होगी. इन लोगों की संग्रहालय में रखी गई मूर्तियां, इन्हें सामने बैठा कर बनाई गई थीं.

कैसीकैसी मूर्तियां

इस संग्रहालय में राजाओं, राष्ट्रपतियों, प्रधान मंत्रियों, लेखकों, दार्शनिकों, अभिनेताओं व अभिनेत्रियों और खिलाड़ियों की मोम की बनी मूर्तियां असली पोशाकों व चिन्हों के साथ देखी जा सकती हैं. साथ ही कुख्यात अपराधी, हत्यारों और जल्लादों की मूर्तियां भी यहां हैं.

इस संग्रहालय में 18वीं सदी की फ्रांसीसी क्रांति की भी झांकी है, जिस ने इतिहास को नई दिशा देने के साथसाथ स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व के नारे भी दिए.

इस संग्रहालय की संस्थापक एक फ्रांसीसी महिला मैडम टूसाउड थीं. मैडम का जन्म पेरिस नगर में सन 1761 में हुआ था. उन के पिता जर्मन थे, जो उन के जन्म से दो महीने पहले ही गुजर गए थे. वह अपने मामा डा. फिलिप कर्टिएस के, जो शरीर रचना विज्ञान के प्रोफेसर थे और जिन्होंने बर्न में जीवित व्यक्तियों की मोम से आकृति बनाने का पहला परीक्षण किया था, पास रहीं. डाक्टर कर्टिएस ने सब से पहले 1770 में पैरिस नगर में, फ्रांसीसी राजसभासद व दरबारियों की मूर्तियां बनाने के लिए अपनी मोम की कर्मशाला शुरू की थी. बाद में अपने मेडिकल छात्रों के सम्मुख शरीर रचना को स्पष्ट करने के लिए कर्टिएस ने मोम की जीतीजागती प्रतिमाएं बनाईं. तब मैडम टूसाउड यद्यपि केवल नौ वर्ष की थीं, किंतु वह उन के स्टूडियो में उन की सहायक का काम करती थीं. अपने मामा के संरक्षण में उन्होंने मोम की मूर्तियां बनाने की कला सीखी.

मामा के मरने के बाद, मैडम को वह स्टूडियो उत्तराधिकार में मिला. फ्रांस के

तत्कालीन फैशनपरस्त व बुद्धिजीवी लोग मैडम के स्टूडियो में आते थे और अपनी मूर्तियां बनवाते थे. दार्शनिक रूसो, जिस के विचारों ने फ्रांसीसी क्रांति को जन्म दिया, उन के स्टूडियो में आया और मैडम ने उसे देख कर उस की मूर्ति बनाई. इसी तरह बेंजामिन फ्रैंकलिन की मूर्ति भी उन्होंने बनाई. फ्रांस के राजा लुई सोलहवें की बहन राजकुमारी एलिजाबेथ की इन्हें कला प्रशिक्षिका नियुक्त किया गया. तब मैडम सिर्फ 18 वर्ष की थीं.

लेकिन उन्हें कला का कितने घृणित रूप में प्रयोग करना पड़ा, यह तथ्य और भी वीभत्स है. फ्रांसीसी क्रांति के दौरान रानी मेरीआंता और उस के सहयोगी राबसपियर का गला गिलोटीन से काट देने के बाद, उन के सिर मैडम के स्टूडियो में लाए गए, ताकि उन की मोम की प्रतिमाएं बनाई जा सकें. मैडम को जेल भी जाना पड़ा, क्योंकि क्रांतिकारियों को उन पर राजसमर्थक होने का शक था.

मैडम का विवाह सफल नहीं रहा. सन

लंदन में यह संग्रहालय 1884 में मैडम द्वारा शुरू किया गया. सन 1925 में 41 वर्षों का काम आग लगने से नष्ट हो गया, किंतु जो मूल माडल थे, वे किसी तरह बचा लिए गए. सन 1928 में संग्रहालय फिर से खुला. पुराने संग्रह के सभी माडल मैडम द्वारा बनाए हुए हैं.

यहां आप विश्वविख्यात साहित्यकारों को 'जीतेजागते' रूप में देख सकते हैं. चार्ल्स डिकेंस और जार्ज बरनार्ड शा भी यहां हैं. संग्रहालय में मूर्ति बनवाने के बाद जार्ज बरनार्ड शा ने कहा था, "इनकार करना मिथ्याभिमानपूर्ण होता." उन्होंने इस दिन को अपने जीवन का सब से गौरवपूर्ण दिन बतलाया था.

आजकल संग्रहालय के स्टूडियो में ही कलाकार प्रसिद्ध व्यक्तियों की मूर्तियां बनाते हैं. व्यक्ति विशेष के विशेष वर्ण, रंग का प्रभाव देने के लिए मोम को रंगा जाता है. आंख की पुतलियां शीशे की लगाई जाती हैं. असली जैसे बाल सिर में लगाए जाते हैं, फिर मूर्तियों को कपड़े पहनाए जाते हैं. मूर्तिकार, शिल्पकार, सांचा ढालने वाले और केश विन्यासकार सम्मिलित रूप में इन्हें बनाते हैं और मूर्तियों की मरम्मत करते हैं. स्टूडियो और कर्मशाला संग्रहालय में ही है.

इंगलैंड के राजा हेनरी आठवें अपनी छः

इंगलैंड के राजपरिवार की मोम की मूर्तियां : इस संग्रहालय के 'राजाओं के हाल' में इंगलैंड के सभी राजाओं की मूर्तियां प्रदर्शित दी गई हैं.

1802 में वह अपनी माम का 36 कलाकृतियों की प्रदर्शनी करने इंगलैंड आई. उसी बीच लड़ाई छिड़ गई और ब्रिटिश चैनल (समुद्री मार्ग) बंद हो गया. फलस्वरूप वह इंगलैंड में ही रह गई और फ्रांस वापस नहीं जा सकीं. 30 वर्ष तक ब्रिटिश द्वीपों में अपने संग्रह को प्रदर्शित करती रहीं और इसे बढ़ाती रहीं. अंततः वह 74 वर्ष की आयु में लंदन में बस गई. हाल ही में सन 1967 में उन के पांचवी पीढ़ी के वंशज बरनार्ड की मृत्यु हुई है.

पत्नियों के साथ दिखाए गए हैं. यह कलाकृति किंग्स (राजाओं के हाल) में है. इस हाल में इंगलैंड के सभी बादशाहों की मूर्तियां हैं, जिस में ज्यादातर ने यहां बैठ कर मूर्ति बनवाई थीं. वर्तमान ब्रिटिश राजपरिवार को भी, जिस में महारानी के पति भी हैं, मूर्ति रूप में दिखाया गया है.

अनेक मूर्तियों या माडलों की पोशाकें असली हैं, जिन्हें उन व्यक्तियों ने खुद भेंट

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें
संपादकीय विभाग
मुक्ता, दिल्ली प्रेस.
नई दिल्ली-110055

किया था, ताकि पहचान और भी ज्यादा हो सके.

संग्रहालय में 'चैंबर आफ हारर्स' (वीभत्सता का कक्ष) भी है. उस में धुंधला प्रकाश है. इस का वातावरण डरावना है. फ्रांसीसी क्रांति में (1793 में) 'आतंक के साम्राज्य' के दौरान इस्तेमाल किए गए शस्त्र यहां देखने को मिलते हैं. खून लगा हुआ वह गिलोटीन, जिस से राजसमर्थकों की गरदनें काटी गई थीं, यहां आज भी रखी है. इस के अतिरिक्त उन प्रसिद्ध राजद्रोहियों और हत्यारों की भी मूर्तियां यहां हैं, जिन्हें फांसी दे दी गई थी. इस में अमरीका के राष्ट्रपति कैनेडी के हत्यारे ओसवाल्ड की भी मूर्ति है.

आइने से सजाए हुए एक सैलून में बैठी मैडम टूसाउड की अपनी मोम की मूर्ति भी है. पिछले 50 वर्ष के विख्यात व्यक्तियों में प्रथम अंतरिक्ष यात्रियों, जो चंद्रमा पर चलने वाले पहले मनुष्य थे, की भी मूर्तियां हैं. इस उपविभाग का नाम है– जीवित वीर. इस में पाश्चात्य फिल्मों के मशहूर अभिनेता रिचार्ड बर्टन और अभिनेत्री एलिजाबेथ टेलर, फ्रांस के भूतपूर्व राष्ट्रपति जनरल दिगाल आदि की मूर्तियां भी हैं. हाल के बीच में ब्रिटेन के साम्राज्यवादी प्रधान मंत्री विंसटन चर्चिल को चित्रकारी करते हुए दिखाया गया है.

घटनाओं को इलेक्ट्रानिक तकनीक से दिखलाया जाता है. यहां मार्टिन लूथर, जान कालविन आदि धर्मसुधारकों और स्काटवासियों की लोकप्रिय रानी मैरी की भी मूर्तियां हैं.

टूसाउड वैक्स संग्रहालय अपने ढंग का पुराना, पहला व एकमात्र संग्रहालय है. इस में अनेक भारतीय नेताओं की भी मूर्तियां हैं. इस की मूर्तियों का क्षेत्र सारा विश्व है. इस के चयन की राजनीतिक व राष्ट्रीय सीमाएं नहीं हैं. किसी भी देश के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्ति की मूर्ति यहां प्रदर्शित हो सकती है. इसलिए यह संग्रहालय एक अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय कहा जा सकता है, जिस का आकर्षण विश्वव्यापी है. ●

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हमारे स्कूल का चपरासी बीमारी की वजह से छुट्टी पर था. कक्षा अध्यापक सभी छात्रों से कक्षा को साफसुथरा करने को कहते, लेकिन किसी पर कोई असर नहीं होता था. उलटे वे कागज के टुकड़े कक्षा में बिखेर देते थे.

एक दिन अध्यापक हाथ में झाड़ू ले कर आए और बोले, "यदि आप लोग कक्षा की सफाई नहीं करेंगे तो मैं स्वयं यह काम करूंगा."

इतना कह कर वह झाड़ू लगाने लगे. यह देख सभी छात्रों के सिर शर्म से झुक गए और सब उन के हाथ से झाड़ू लेने के लिए दौड़ पड़े. **—जफरखान पठान**

*

हमारे अंगरेजी के प्राध्यापक गंभीर स्वभाव के थे. उन के घंटे में एक उद्दंड छात्र तीनचार छात्रों के साथ छत पर जुआ खेलता था.

प्राध्यापक को जब इस की जानकारी मिली तो उन्होंने ऊपर जा कर ताश के पत्ते फाड़ दिए और पैसे निर्धन छात्र सहायता कोष में जमा करा दिए.

वह छात्र उन्हें भलाबुरा कहने लगा, इस पर वह बोले, "शिक्षक वह दीपक है, जो स्वयं जल कर दूसरों को प्रकाश देता है. मैं अपनी आंखों के सामने तुम लोगों को कुएं में गिरते नहीं देख सकता."

उस दिन के बाद उन छात्रों ने उन के घंटे में पढ़ना शुरू कर दिया.

—यशवंत सिघई

*

मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था. हमारे गणित के अध्यापक को बातबात में 'तू क्या, तेरा बाप भी करेगा' कहने की आदत थी. एक दिन हम लोगों को उन्होंने बीजगणित के दस सवाल हल करने के लिए दिए.

अगले दिन जब वह कापियां जांचने लगे तो एक विद्यार्थी ने सवाल हल नहीं किए थे. अपनी आदत के अनुसार वह उसे बिना देखे ही बरस पड़े, "तू क्या तेरा बाप भी करेगा."

लेकिन जब उन्होंने नजर उठा कर देखा तो वह उन्हीं का पुत्र था. इस पर उन के चेहरे का रंग उड़ गया और कक्षा में हंसी का फव्वारा फूट पड़ा. **—राजकुमार बापना** •

यदि आप दिल्ली, बंबई, मद्रास या कलकत्ता जैसे महानगर में रहती हैं और विभिन्न व्यवसायियों, उद्योगपतियों और विज्ञापन एजेंसियों से आप के संपर्क हैं या संपर्क बनाने की व्यावहारिक क्षमता है तो आप माडलिंग एजेंसी खोलने के बारे में क्यों नहीं सोचतीं?

यह काम उस स्थिति में भी किया जा सकता है जब आप के पास विशेष पूंजी न हो

महिला रोजगार

माडलिंग एजेंसी

लेख • प्रतिनिधि

और आप न कोई विशेष परीक्षा भी पास न की हो. एक व्यस्त गृहिणी रहते हुए या किसी नौकरी में रहते हुए भी आप खाली समय में 'माडलिंग एजेंसी' चला सकती हैं.

इस व्यवसाय के लिए सब से बड़ी योग्यता व्यावहारिक क्षमता है, क्योंकि आप को माडल और विज्ञापन एजेंसियों के बीच सेतु बन कर जनसंपर्क का कार्य करना होता है. यदि आप कमर्शियल आर्ट, फाइन आर्ट, फोटोग्राफी या माडलिंग जैसे कामों में दिलचस्पी या दखल रखती हैं तो 'माडलिंग एजेंसी' चलाना आप के लिए ज्यादा आसान होगा, क्योंकि तब आप में कलात्मक और सृजनात्मक समझ भी खूब होगी और ये कलाएं आप के व्यवसाय में भी सहायक सिद्ध होंगी.

आइए, आप को श्रीमती पद्मिनी से मिलवाएं. यह दिल्ली में पिछले तीनचार वर्षों से माडल एजेंसी चला रही हैं और अपने व्यवसाय में काफी सफल हैं. वैसे तो माडलिंग एजेंसी चलाना इन का अंशकालिक काम है पर इन की समूची दिलचस्पी इसी ओर है और इस व्यवसाय में ही तरक्की करना इन का प्रमुख लक्ष्य है.

इस व्यवसाय में वह कैसे आईं, इस सवाल के जवाब में उन्होंने कहा, ''मैं ने 'जे.जे. स्कूल आफ आर्ट, बंबई' से 'ग्रेजुएशन' किया है. शुरू से ही मुझे पेंटिंग में शौक रहा है. काफी पहले से कोई कलात्मक

व्यवसाय चुनने का विचार था. माडलिंग एजेंसी खोलने की राय मुझे मेरी मित्र श्रीमती शीला कृपलानी ने दी. वह भी माडलिंग एजेंसी चलाती हैं. उन्होंने कहा, 'तुम क्यों नहीं मेरी लाइन में आ जातीं?'

"'काम बहुत महत्त्वपूर्ण था. पर मुझ में भी लगन की कमी नहीं थी. मुझे लगा कि मैं यह काम कर सकती हूं. विभिन्न कंपनियों और उद्योग वालों से मेरे संपर्क थे ही. उन्होंने जब मेरी निष्ठा देखी तो काम दिलाने में मेरी मदद की. पहले तो शौक के तौर पर काम शुरू किया था, बाद में इस का व्यावसायिक पक्ष भी स्पष्ट और दृढ़ होता चला गया."

कलात्मक अभिरुचि और व्यवसायियों व विज्ञापन एजेंसियों से संपर्क बनाने की क्षमता रखने वाली महिलाएं इस व्यवसाय में खासी सफलता पा सकती हैं...

अपने काम करने के तरीके पर प्रकाश डालते हुए श्रीमती पद्मिनी ने कहा, "मैं घर पर ही अपनी एजेंसी का संचालन करती हूं. फिलहाल मैं ने दफ्तर का प्रबंध नहीं किया है. मैं अकेले ही सारा काम करती हूं.

"विज्ञापन एजेंसियों, विभिन्न उत्पादनों के फैशन शो आदि के लिए सही माडल का चुनाव और उन्हें उपलब्ध कराना मेरा प्रमुख कार्य है. फैशन शो के दौरान संगीत, प्रकाश व पृष्ठभूमि की व्यवस्था के लिए भी मुझे

निर्देश देने होते हैं, ताकि माहौल और मेरे माडल के बीच तालमेल स्थापित हो सके.

"मेरे पास व्यावसायिक और शौकिया माडलों की एक एलबम है. विज्ञापन या फैशन शो के लिए मुझे जिस प्रकार के माडल की आवश्यकता होती है, उसे मैं बुलाती हूं और उसे काम के लिए अनुबंधित कर लेती हूं. कई बार विज्ञापन एजेंसी या अन्य 'ग्राहक' हमें स्वयं निर्देश देते हैं कि इस प्रकार का माडल चाहिए और कई बार मेरे ऊपर ही छोड़ दिया जाता है कि विज्ञापन या 'शो' के अनुसार मैं स्वयं माडल का चुनाव कर लूं. मार्डलिंग और फैशन शो कराने का मुझे जो पैसा मिलता है, उस में से मैं कमीशन ले कर माडल को पारिश्रमिक का भुगतान करती हूं.

"स्त्री पुरुष, दोनों ही प्रकार के माडल हमें चाहिए होते हैं. कई बार हमारा उद्देश्य व्यावसायकि माडलों से पूरा नहीं होता और हमें किसी मामूली चेहरेमोहरे की आवश्यकता होती है. उस स्थिति में मैं बसों में सफर कर के, भीड़भाड़ वाले इलाकों में जा कर उपयुक्त चेहरों की तलाश करती हूं. कोई चेहरा जंच गया तो उस से पूछती हूं, 'भई, क्या आप मार्डलिंग करना पसंद करेंगे?' बहुतों को तो पता ही नहीं होता कि मार्डलिंग क्या बला है. उन्हें जब बताया जाता है कि उन की फोटो अखबार में छपेगी या दूरदर्शन पर जाएगी और इस का उन्हें पैसा भी मिलेगा तो ज्यादातर लोग तैयार हो जाते हैं.

"इसी तरह हमें अपनी एलबम के लिए नएनए माडल ढूंढ़ने होते हैं, क्योंकि इस व्यवसाय में हमेशा नए चेहरों की आवश्यकता रहती है. बहरहाल, मुझे अपने काम में बहुत आनंद आता है. मुझे इस बात का बड़ा शौक है कि मुझे नएनए लोग मिलें, मेरे संपर्क का दायरा बहुत बड़ा हो. कई बार तो बड़े अच्छेअच्छे लोग मुझे मिल जाते हैं. कई लोगों की सादगी और भोलापन मुझे बहुत प्रभावित करता है."

श्रीमती पद्मिनी का सीधे मंच पर प्रदर्शित होने वाले 'फैशन शो' से खास लगाव है. उन्होंने तीन वर्ष में आठनौ फैशन

शो आयोजित किए हैं. इन का कहना है, "फैशन शो में बड़ी संभावनाएं हैं. समस्या केवल यह है कि हमारे 'ग्राहक' प्रयोग करने का जोखिम नहीं उठाना चाहते और पूर्व प्रचलित 'स्टाइल' को ही पसंद करते हैं, जब कि मैं बहुत चाहती हूं कि इस क्षेत्र में नएनए प्रयोग करूं. 'ग्राहक' के साथ अनुबंधित हो कर तो नए प्रयोग संभव नहीं हैं, इसलिए अब मैं सोच रही हूं निजी तौर पर ही नमूने के तौर पर प्रायोगिक फैशन शो आयोजित करूं, जिन्हें देखने के लिए अपने ग्राहकों को भी बुलाऊं और इस में दिलचस्पी रखने वाले अन्य लोगों को भी."

"बंबई की अपेक्षा दिल्ली माडलिंग के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ क्यों है?"

"देखिए, जो प्रतिभा बंबई में है, वही दिल्ली में है. मैं तो कहूंगी दिल्ली में बंबई की अपेक्षा अधिक सौंदर्य है और प्रतिभाएं उत्तरी भारत से ही बंबई जाती हैं. बंबई में माडल प्रतिभाओं के जमाव का मुख्य कारण यह है कि वहां फिल्म उद्योग लगा हुआ है और अधिकांश माडल सोचते हैं कि शायद उन्हें फिल्मों में कोई अवसर मिल जाए. दूसरा कारण यह है कि दिल्ली की लड़कियां प्रायः अच्छे घरानों की होती हैं और बहुत सी उन स्थितियों से समझौता नहीं कर पातीं, जिन से बंबई की लड़कियां आसानी से कर लेती हैं. वैसे दिल्ली हो या बंबई या कोई और शहर, इस व्यवसाय के लिए काफी संभावनाएं हैं, क्योंकि रोज नईनई चीजों का उत्पादन हो रहा है, नएनए उद्योग लग रहे हैं और उन्हें विज्ञापन और प्रचार के बिना चला पाना संभव नहीं."

"माडलिंग एजेंसी चलाने वाली महिला में क्या खूबी होनी चाहिए?"

श्रीमती पद्मिनी ने कहा, "उसे चेहरों को समझना आना चाहिए. किस विषय और स्थिति के लिए कौन सा चेहरा और किस ढंग का शारीरिक गठन उपयुक्त रहेगा, यह निर्णय करने की उस में विलक्षण क्षमता होनी चाहिए. करीबकरीब उस का काम वैसा ही है जैसे एक फिल्म में निर्देशक का होता है."

अपना नहीं खयाल...

गिरगिर के फिर उठी हुई
उन की नजर तो है,
आखिर अभी अदाओं का
दिल पर असर तो है.

गर ये नहीं है प्यार का
जादू तो और क्या,
अपना नहीं खयाल पर
उन की खबर तो है.

छलका हुआ निगाह में
गुस्सा तो है बहुत,
लेकिन हंसी ये होंठ पे
जाती बिखर तो है.

गहरी हुई सी रात है
वैसे तो राह में,
उन के मगर खयाल से
होनी सहर तो है.

कश्ती तलाश लेगी ये
साहिल जरूर ही,
यादों की उन की साथ में
मेरे सहर तो है.

मंजिल मिले या न मिले
इस का किसे है गम,
उन की मगर तलाश में
अपना सफर तो है.

मासूमियत है चेहरे पर
बेगुनाह सी,
लेकिन दिलों पे देखिए
ढाती कहर तो है.

—रत्नदीप खरे 'मयंक'

राश
भी
अप
चौक
आभ
ही म
मांग
वाप
अप
हूं ले
निमं
नासि
बच्च
नई,
गुलि
ड़ा.
वंडी
संपन्न
मुक्त

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

राशनकार्डों में जानवरों के नाम भी

अलवर में बहुत से लोगों ने अपने राशनकार्डों में आदमियों के साथसाथ जानवरों के नाम भी लिखवा रखे हैं. यहां के एक व्यक्ति ने राशनकार्ड पर परिवार के सदस्यों के साथ अपने कुत्ते 'टोनी' का नाम भी लिखवाया है. राशनकार्ड के पत्रक में टोनी का व्यवसाय चौकीदारी और परिवार के मुखिया से उस का संबंध—कुत्ता लिखा है.

इसी प्रकार कुम्हारपाड़ी में कई राशनकार्डों में गधे और अन्य जानवरों के नाम भी दर्ज हैं.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : राधेश्याम गुप्ता) (सर्वोत्तम)

*

आभूषण पति से ज्यादा प्यारे

दहेज का मोह लड़कों को ही नहीं, लड़कियों को भी होता है. इसी तरह की एक घटना हाल ही में कोटा में घटी.

यहां के एक संपन्न परिवार की लड़की ने विवाह के समय जेवरों की मांग की. जब उस की मांग पूरी नहीं हुई तो वह अपनी मां के गहने यह कह कर ले गई कि छ:सात दिन बाद वह उन्हें वापस कर जाएगी. लेकिन मायके आने पर उस ने जेवर लौटाने से साफ इनकार करते हुए अपनी मां से कहा कि उस ने गहने दहेज के रूप में लिए हैं.

उस के पति ने जब उस से जेवर लौटाने को कहा तो लड़की बोली, "मैं तुम्हें छोड़ सकती हूं लेकिन जेवर नहीं."

—दैनिक अमृत प्रभात, लखनऊ (प्रेषक : पुरुषोत्तम कसेरा)

*

निमंत्रणपत्र की 14 वर्ष लंबी यात्रा

नासिक से 65 किलोमीटर दूर छिदवाड़ा से एक लड़की ने अपनी शादी का निमंत्रणपत्र नासिक में लक्ष्मणसिह नाम के व्यक्ति को भेजा. लेकिन वह उसे तब मिला जब लड़की चार बच्चों की मां बन चुकी थी.

यह निमंत्रणपत्र 22 जून, 1967 को भेजा था, जो 14 वर्ष, 10 माह और 28 दिन बाद 18 मई, 1982 को मिला.

—दैनिक जागरण, झांसी (प्रेषक : अमितकुमार सक्सेना)

*

पुलिस की गलतफहमी के कारण विवाह टला

सोनीपत में पुलिस की लपेट में आ जाने के कारण एक बरात को विवाह स्थगित करना पड़ा. जब एक ट्रेक्टर पर बराती जा रहे थे, पुलिस को संदेह हुआ कि वे प्रदर्शन में भाग लेने चंडीगढ़ जा रहे हैं. पुलिस ने उन्हें एक रेलवे क्रासिंग पर रोक लिया.

जब पुलिस ने उन्हें जाने की इजाजत दी तब इतना विलंब हो चुका था कि विवाह की रस्में संपन्न नहीं हो सकती थीं.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : सुनीलकुमार वर्मा)

सड़क के बीचोबीच बने मंदिर की वजह से कई बच्चों की जान चली गई थी, फिर भी जयचंद उसे तोड़ने के सरकारी आदेश को नजर-अंदाज करता रहा था, पर एक दिन वही जयचंद अपने हाथों से उसे तोड़ने क्यों जा पहुंचा?

एक कुआं अपने लिए

कहानी • महेंद्रकुमार मिश्र

दफ्तर के विशाल भवन के सामने कार हल्के से झटके के साथ रुकी तो कमलकांत की विचार शृंखला टूटी. अपना बैग उठा कर अनमने से वह अपने कार्यालय की सीढ़ियां चढ़ गए.

दफ्तर के कर्मचारी कुछ चकित से उन्हें देखते रह गए. समय के पाबंद कमलकांत आज कोई सवा घंटा देर से आए थे. किसी के अभिवादन का ठीक से उत्तर भी नहीं दिया था उन्होंने.

उन के कुरसी पर बैठते ही रामलाल चपरासी ने पानी का गिलास ला कर रख दिया. एक ही सांस में वह गिलास खाली कर गए.

'अगर इसे मामूली बात न मान कर गंभीरता से लिया जाता तो यह दुखद घटना नहीं घटती,' कमलकांत ने सोचा. ट्रक के भारी पहियों से दब कर पिचका हुआ उस युवक का खून में लथपथ शरीर आंखों में ठहर सा गया था. वह सिहर गए. हृदय एक अपराधबोध से दब गया.

"रामलाल," आवाज देने के साथ ही उन्होंने घंटी भी बजा दी.

"जी." वह फुरती से आ कर खड़ा हो गया.

"ओवरसियर जयचंदजी को बुला लाओ."

कुछ ही क्षणों में जयचंद उपस्थित गया.

"जयचंदजी," कमलकांत बो "गांधी मार्ग पर कुछ दिनों पहले एक दुर्घट हुई थी. उस में एक बालिका गंभीर रूप घायल हो गई थी. उस के पिता ने अप शिकायत में दुर्घटनास्थल पर एक मंदिर जिक्र किया था और उसे दुर्घटना का कार बताया था. मैं ने आप से मामले की जांच बताने को कहा था. आप ने जांच की?"

"जी हां, मैं ने जांच कर ली है. कई पहले वहां कालभैरव का मंदिर था. काला में वह ढह गया केवल कुछ मूर्तियां पड़ी उस के मालिक छदामीलाल ने उस पर अस्थायी टप्पर खड़ा कर दिया है. अब मंदिर के जीर्णोद्धार की अनुमति चाहता
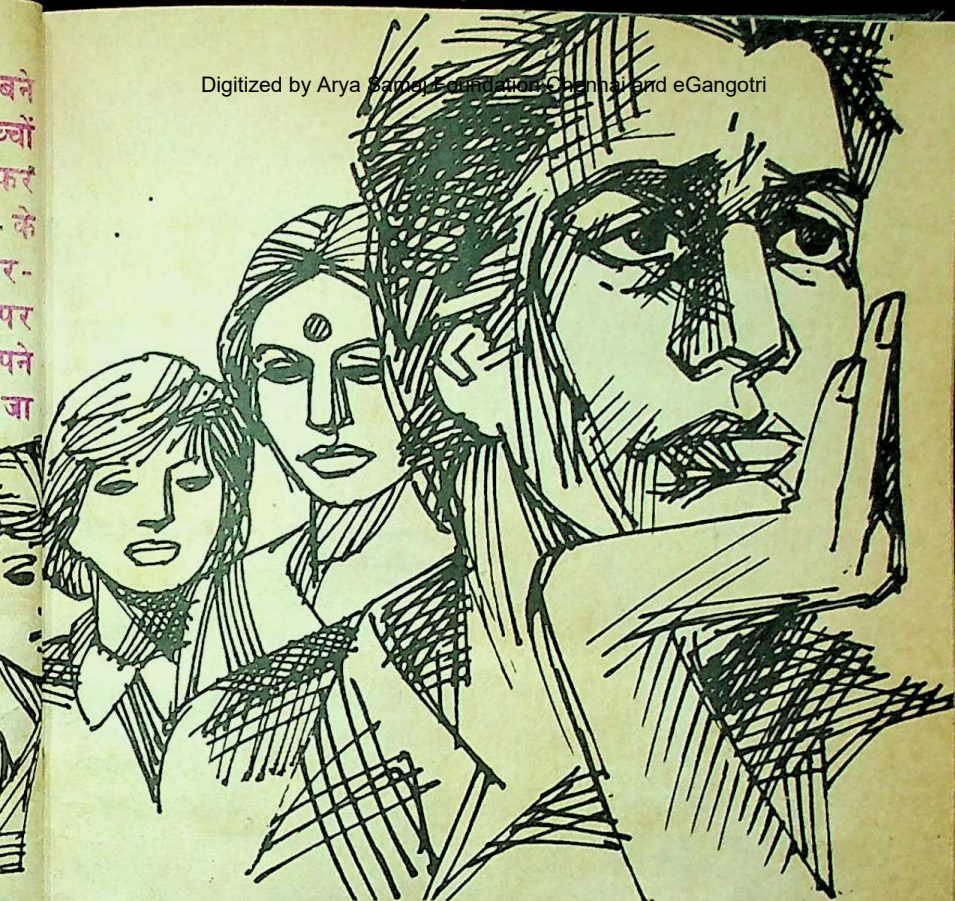
"नहीं, जयचंदजी, मैं ने आज वह स्थान देखा है. ऐसा तो नहीं लगता कि वहां कभी कोई मंदिर रहा हो. मेरे विचार से तो यह नया निर्माण करने की योजना है," कमलकांत बोले.

"पर, साहब, यह मंदिर हमारे नक्शे में दर्ज है. देखिए." कहते हुए उस ने दीवार पर लगे नक्शे को इंगित किया.

"यह तो नया नक्शा है, जो आप ने बनाया है. पुराना नक्शा लाइए," नक्शा देख कर कमलकांत बोले.

"यह पुराने नक्शे की ही नकल है, साहब."

"फिर भी पुराना नक्शा ला कर दिखाइए. आप को शायद पता नहीं है, आज वहां एक और दुर्घटना हो गई है." कमलकांत ने पूरा विवरण सुना दिया.

"मैं तो उधर ही रहता हूं, साहब. बचपन से ले कर कालिज में पढ़ने तक मैं ने वह मंदिर देखा है. ऐसी दुर्घटना कभी नहीं हुई. लोग सड़कों पर चलते भी तो लापरवाही से हैं," जयचंद ने कहा.

"जयचंदजी," कमलकांत गुस्से से बोले, "आप बगैर सोचेसमझे अपनी बात कह रहे हैं. मैं ने वहां आसपास के दुकानदारों से पूछताछ की है. किसी ने उस मंदिर को चारपांच वर्ष से अधिक का नहीं बताया."

जयचंद यकायक कोई उत्तर नहीं दे सका. आखिर कमलकांत ही बोले, "उस बच्ची के पिता की शिकायत वाली फाइल लाइए और आदेश ले कर कल तक उस जगह को साफ करा दीजिए. जाइए."

दफ्तर से छूटते ही जयचंद छदामीलाल के घर की ओर चल दिया. 'इस लड़के को भी आज ही मरना था. कुछ दिन और रुक जाता तो क्या बिगड़ जाता? छदामीलाल का काम नहीं हुआ तो मेरे तो हजारों रुपयों का नुकसान हो जाएगा,' रास्ते भर जयचंद यही सोचता रहा.

"आइए, साहब," जयचंद को देखते ही छदामीलाल बोला.

"पंडितजी, आज की दुर्घटना के कारण आप का सारा खेल बिगड़ गया है. साहब ने कल तक मंदिर वाली जगह साफ कराने को कहा है."

"अजी, हम ने तो उस लड़के को मारा नहीं, फिर हमारा मंदिर क्यों तोड़ देंगे? भगवान कालभैरव के चरणों में मृत्यु होने से उसे तो मोक्ष मिल गया, समझे आप?" छदामीलाल बोला.

"खबर देना मेरा कर्तव्य था, पंडितजी, मामला अब मेरे बस के बाहर हो गया है."

"तो आप कुछ नहीं कर सकते?"

"मेरा प्रयत्न जारी था कि यह घटना हो गई. वैसे कल से मैं एक महीने की छुट्टी पर जा रहा हूं. इस बीच आप कुछ कर सकते हों तो कर लें. नए नक्शे में तो मैं ने मंदिर बता दिया है."

"फिर क्या दिक्कत है?"

"पुराने नक्शे तो हैं न. आप रिकार्ड कीपर से बात कर लें तो शायद बात बन जाए."

"बजाए मेरे मिलने के आप ही रिकार्ड कीपर से बात कर लें. यह लीजिए पांच सौ रुपए,"

"पंडितजी," जयचंद रुपए ले कर बोला, "मैं प्रयत्न करता हूं. वैसे काम बहुत की कठिन है. हमारे साहब..."

"साहब भी कुछ भेंटपूजा लेते हों तो बात कर लीजिए. मैं उन को पांच हजार तक दे सकता हूं. सब झंझट ही खत्म हो जाएंगे."

"बहुत मुश्किल लगता है, पंडितजी. फिर भी मैं बात करूंगा."

जयचंद की निराशा भरा स्वर सु[न] कर छदामीलाल को झटका सा लगा. एक दिन चौराहे पर कुछ स्त्रियों [को] वटवृक्ष की पूजा करते देख उस ने कुछ सो[चा] था. योजनाबद्ध तरीके से उस ने वृक्ष का पू[जन] किया था. पहले वहां गोल पत्थर रख उ[से] सिंदूर से पोत दिया. फिर एक छोटी सी मू[र्ति] रख दी थी. फिर सुबहशाम वहां धूपब[त्ती] लगाई थी. कुछ ही महीनों में वहां एक छो[टा] सा मंदिर बना कर टीन की छत डाल [कर] नियमित रूप से आरती, पूजापाठ होने ल[गा] था. उस मंदिर का कोना ही विभि[न्न] दुर्घटनाओं का कारण बन रहा [था]. छदामीलाल का विचार था कि उस जमीन प[र] कब्जा होने से वह मंदिर की आड़ में उस [का] व्यापारिक उपयोग भी कर सकेगा [और] मुआवजे के रूप में हजारों रुपया और जमी[न] ले सकेगा. किंतु अब यह सारा परिश्रम औ[र] योजना उसे व्यर्थ जाती लगी.

"जयचंदजी, आप किसी न किसी तर[ह] यह काम करा ही दीजिए. मैं आप को बजा[ए] तीन के छः हजार रुपए दूंगा," कुछ सोच क[र] छदामीलाल बोला.

"काम बहुत कठिन है, पंडितजी, फि[र] भी आप ऐसा कीजिए..." धीमे स्वर [में] जयचंद छदामीलाल को कुछ समझाने ल[गा]. सुन कर छदामीलाल की बांछें खिल गईं.

"भगवान कालभैरव की..."

"जय."

"धर्म के दुश्मनों का..."

"नाश हो, नाश हो."

कार्यालय के अहाते में नारेबाजी [का] शोर सुन कर कमलकांत खिड़की पर खड़े [हो] गए. बाहर कोई 50-60 आदमी नारे लगा [रहे] थे. सब कर्मचारी बाहर आने लगे थे. उन्हों[ने] रामलाल को बाहर भेज कर पुछवाया.

"साब, वे कहते हैं साहब को ही भे[जो], हम उन्हीं से बात करेंगे," रामलाल ने [आ] कर कहा.

"क्या चाहते हैं आप लोग?" बाहर [आ] कर कमलकांत ने पूछा.

"भगवान कालभैरव की जय." उ[न्हों]...

मेें स... यह... निवे... वाला... प्राची... करन... एक... बीमा... कार... के लि... पर... दोचा... मुक्त

''जयचंदजी,'' कमलकांत गुस्से से बोले, ''आप बगैर सोचेसमझे अपनी बात कह रहे हैं.''

में सम्मिलित स्वर गूंजा.

''साहब, मैं पंडित छदामीलाल और यह मेरा लड़का मौजीलाल है. हम आप से निवेदन करने आए हैं कि गांधी मार्ग के चौराहे वाला कालभैरव का मंदिर न तोड़ा जाए. वह प्राचीन मंदिर है. हम उस का जीर्णोद्धार करना चाहते हैं,'' कहते हुए छदामीलाल ने एक कागज बढ़ा दिया.

क्षण भर में ही कमलकांत सारा माजरा समझ गए. जयचंद के एकाएक बीमार हो कर अवकाश पर चले जाने का कारण भी उन की समझ में आ गया. क्षण भर के लिए गुस्से से उन का चेहरा लाल हो गया, पर शीघ्र ही संतुलित हो गए.

''आइए, दफ्तर में बैठ कर बात करेंगे. दोचार आदमी आ जाइए.''

छदामीलाल जानता था कि अगर वह भीतर गया तो बाकी किराए के आदमी चले जाएंगे और बात नहीं बन सकेगी, इसलिए बोला, ''मुझे कोई अधिक बात नहीं करनी है, साहब. हमारा मंदिर तोड़ने के आदेश वापस ले कर उसे बनाने की अनुमति दे दीजिए, बस.''

''वह मंदिर प्राचीन नहीं बल्कि नया है और अनधिकृत है. उस की वजह से दुर्घटनाएं हो रही हैं. उसे क्यों न तोड़ा जाए?''

''नया मंदिर है? क्या बात कर रहे हैं, साहब? वह पचासों वर्ष पुराना है. उस का ऐतिहासिक महत्त्व है. हमारे पूर्वज वहां पूजा करते थे. किसी की मौत आई और वह मर गया तो हम क्या करें?'' छदामीलाल तैश में आ कर बोला.

''हमारे रिकार्ड में वह मंदिर नहीं है.

आप के पास कोई प्रमाण हो तो लाइए, देखेंगे."

"अब सैकड़ों बरस पुराना कबाला हमारे पास कहां रखा है, साहब? आप अपने ही दफ्तर में देखिए, शायद मिल जाए."

"हम देख चुके हैं. उस में कोई मंदिर नहीं है. आप ने यह अनधिकृत निर्माण किया है. उसे तोड़ा जाएगा. आप चाहें तो प्रमाण पेश करने के लिए मैं आप को एक सप्ताह का समय दे सकता हूं. आप आवेदन कीजिए."

"यानी आप फैसला नहीं बदलेंगे?" छदामीलाल ने गुर्राहट भरे स्वर में पूछा.

"नहीं."

"साहब, धार्मिक स्थान हमारी संस्कृति है. हमारे देश का इतिहास है. हमारी धरोहर है. अगर किसी ने मंदिर को हाथ भी लगाया तो हम खून की नदियां बहा देंगे," छदामीलाल चीख कर बोला.

"धर्म के दुश्मनों का..." मौजीलाल ने नारा दिया.

"नाश हो, नाश हो." भीड़ का स्वर गूंजा.

"शोर करने से कुछ नहीं होगा," कमलकांत बोले.

"हम शांत हो जाते हैं. हमें अभी मंदिर के जीर्णोद्धार का अनुमतिपत्र दे दीजिए."

"यह संभव नहीं है. उन पत्थरों की खातिर और आप के स्वार्थ के लिए मैं आप को लोगों के जीवन से खेलने की अनुमति नहीं दे सकता."

"भगवान को पत्थर कहते शर्म आनी चाहिए," छदामीलाल बोला.

"पत्थर को पत्थर ही कहते हैं, फिर कैसी शर्म? शर्म तो आप को आनी चाहिए, जो आप लोगों के प्राणों से खेल रहे हैं."

"मगर, साहब, भगवान का मंदिर बनाने से तो लोगों की धार्मिक भावना जाग्रत होगी," भीड़ में से एक युवक बोला.

"अच्छा, एक बात बताइए, उस चौराहे पर अगर आप उस चबूतरे से टकरा कर किसी गाड़ी से दब कर मर गए या अपंग ही हो गए तो आप के परिवार का पालनपोषण कौन करेगा? पंडितजी या वे पत्थर के टुक
वह जो बच्चा मर गया है, उस के प्राणों
क्या भगवान लौटा देगा? इस असामयि
मौत का जिम्मेदार कौन है, बताइए?"

वास्तविकता सामने आते ही वह युव
पीछे सरक गया. कमलकांत फालतू बहस
छोड़ कर वापस दफ्तर में चले गए.

एक सप्ताह में कमलकांत के पा
सिफारिशों का ढेर लग गया.
दबाव आए, मगर वह अविचलित र
जयचंद के एकाएक अवकाश पर चले जाने
काररवाई रुक गई थी. संबंधित फाइल वह
कर नहीं गया था.

"क्यों, भई, कैसे आना हुआ? छुट्टि
खत्म हो गईं?" एक सुबह जयचंद को अप
बंगले में देख कर वह चौंके.

"जी, छुट्टियां तो अभी बाकी हैं. आ
छदामीलाल मेरे घर आया था. उस के मंदि
वाला मामला..."

"छुट्टियों से लौट कर आप को ही
मंदिर हटवाना है. आदेश तो हो ही गए हैं,
बात काट कर वह बोले.

"दरअसल छदामीलाल का कहना
कि अनुमति तो वह राजधानी से ला सकता
उस की बड़ी पहुंच भी है. परंतु यदि आप
अनुमति दे देंगे तो वह आप को पांच हजा
रुपए दे सकता है," जयचंद ने साहस कर
ही दिया.

जयचंद की बात सुनते ही कमलकां
का पारा चढ़ गया. गुस्से से वह कांपने ल
उस युवक का खून में लथपथ शरीर एक बा
फिर उन की आंखों में ठहर सा गया.

"आप जानते हैं... आप क्या बक र
हैं?" गंभीर स्वर में उन्होंने पूछा.

"जी...जी...वह..." जयचंद का स्व
लड़खड़ा गया.

"आप की बात आप के लिए कित
घातक हो सकती है, आप ने सोचा?"

"जी, मैं नहीं, वह तो छदामीलाल
प्रस्ताव था," वह भयभीत स्वर में बोला

"सरकार आप को छदामीलाल

बात कहने और उस की परवा करने की वतन देती है?

"मैं जानता हूं आप इस मंदिर में रुचि ले रहे हैं. यह भी जानता हूं कि ऐसी रुचि मुफ्त में उत्पन्न नहीं होती. दोतीन हजार रुपए तो आप ने लिए ही होंगे. मुझे रिश्वत का प्रलोभन देने का आरोप लगा कर अगर मैं आप को मुअत्तल कर दूं, फिर नौकरी से निकाल दूं तो क्या होगा? आप की तीन लड़कियां हैं, एक लड़का और पत्नी. इन का पोषण कैसे होगा, जयचंदजी? अपने बारे में नहीं तो बच्चों के भविष्य के बारे में तो सोचा होता."

जयचंद सिर झुका कर चुपचाप बाहर निकलने लगा तो कमलकांत पुनः बोले, "मैं तीन दिन के लिए सरकारी काम से राजधानी जा रहा हूं, मंगलवार को लौटूंगा. आप भी उसी दिन दफ्तर में हाजिर हो जाना."

"जी." कह कर कांपते हुए कदमों से वह बाहर हो गया.

मंगलवार को कमलकांत लौटे. राजधानी की लंबी यात्रा से थक गए थे. घर पर भोजनादि से निबट कर दफ्तर जाने का विचार था. स्टेशन के बाहर ड्राइवर को देख उन्होंने राहत की सांस ली. आंखें बंद कर वह पिछली सीट की पुश्त से टिक गए.

"सीधे बंगले पर ही चलूं साहब?" ड्राइवर ने पूछा.

"हां."

"इधर से कहां जा रहे हो, मजीद खां?" कुछ देर बाद एकाएक उन्होंने पूछा, "मैं ने बंगले पर चलने को कहा था."

"इधर एक अनोखा काम हो रहा है, साहब. मैं ने सोचा, घर चलते हुए आप भी देख लें," कह कर मजीद खां मुसकरा दिया.

"ऐसा क्या है जो मुझे दिखाना चाहते हो?" वह तनिक आश्चर्य से बोले.

"अब तो पहुंच ही गए, साहब. आप खुद ही देख लीजिए," कहते हुए मजीद खां ने गाड़ी फुटपाथ से लगा कर खड़ी कर दी.

कालभैरव के मंदिर वाले चौराहे पर भीड़ देख कर उन्हें झटका सा लगा."क्या फिर कोई घटना हो गई?" कहते हुए वह कार से उतर पड़े. भीड़ को पार कर जब वह घटनास्थल पर पहुंचे तो एक बार और चौंक पड़े. सरकारी जमीन पर नाजायज कब्जे को हटाने वाले कर्मचारी कालभैरव का मंदिर तोड़ रहे थे. जयचंद खुद कुदाली से मंदिर को तोड़ रहा था. रंगीन पत्थर बिखर रहे थे. छदामीलाल और उस के साथी पास ही खड़े चिल्ला रहे थे, किंतु पुलिस वाले साथ होने के कारण वे कुछ कर नहीं पा रहे थे.

"जयचंदजी," सहसा ही उन्होंने आवाज दी.

जयचंद ने चौंक कर सिर उठाया. धीमे कदमों से चलता हुआ उन के सामने आ खड़ा हुआ. वह पूरी तरह धूल में सना था. आंखें लाल थीं, होंठ कांप रहे थे.

"साहब!" भर्राए कंठ से वह बोला.

यह क्या कर रहे हैं आप एकाएक यह कैसे?"

"साहब!" वह फूटफूट कर रो पड़ा.

"क्या हुआ? क्यों रो रहे हो?" उन्होंने उस के कंधे पर हाथ रख कर पूछा.

"साहब, आज...आज सुबह मेरा लड़का... मेरा इकलौता लड़का..." वह बोल नहीं पा रहा था. जारजार रो रहा था.

"क्या हुआ तुम्हारे बेटे को?" किसी अज्ञात आशंका से कांप कर उन्होंने पूछा.

"इस मंदिर से उस की साइकिल मुड़ते हुए टकरा गई. संतुलन बिगड़ गया और वह पास से गुजरती बस के नीचे आ गया. वह...वह... वहीं खत्म हो गया. साहब, मेरा पाप मुझे ही, हां, मुझे ही खा गया." वह फिर रोने लगा.

"ओह!" उन्होंने एक निश्वास छोड़ी. उस दिन की घटना पुनः आंखों में ठहर गई. एकाएक वह निर्णय नहीं कर पाए कि जयचंद को सांत्वना दें या उस की करनी का फल बता कर दुत्कार दें. ●

रोमांचक अभियान

लेख • र. क. मूर्ति
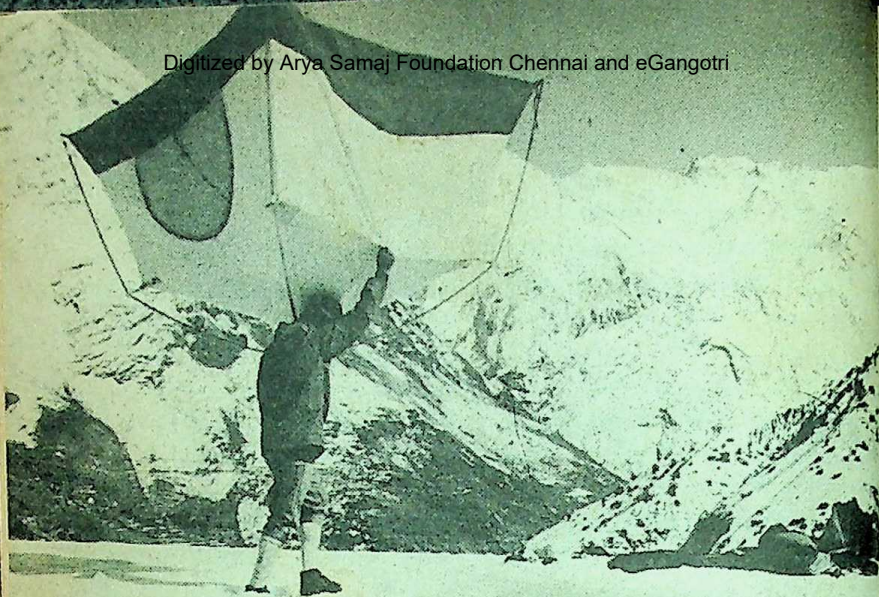
मनुष्य और जानवर में जो मूलभूत अंतर है वह यह कि मनुष्य में जोखिम भरे कामों से जूझने की अदम्य लालसा होती है, वह प्रकृति के कठोरतम अवरोधों का सामना करने के लिए तैयार रहता है तथा जीवन में आने वाली आपदाओं से घबराता नहीं है.

जोखिम से खेलने की इसी भावना से प्रेरित हो कर एक के बाद दूसरा पर्वतारोही दल एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचा, समुद्र की गहराइयों का रहस्य पाने के लिए गोताखोरों ने समुद्र में गोते लगाए, दुस्साहसी यात्रियों ने उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव की खतरनाक यात्राएं कीं.

इन्हीं साहसी व्यक्तियों की परंपरा पर चलते हुए पिछले दिनों चार व्यक्तियों का एक दल 8,000 किलोमीटर की पैदल पर्वतीय यात्रा पर निकला था. कैप्टन कोहली इस दल के नेता थे. दल के अन्य सदस्य थे—कैप्टन चौहान, नायक एन. डी. शेरपा और नायब सूबेदार नरबहादुर गुरुंग. मीलों ऊबड़-खावड़ भूमि पर चलते हुए, जहरीले सांपों तथा खतरनाक जानवरों से भरे जंगलों से गुजरते हुए, बर्फीली पहाड़ियों की जानलेवा ठंडक का सामना करते हुए, हिम स्खलन से
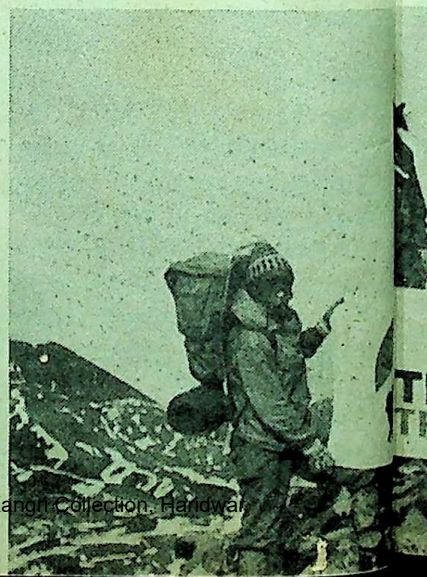
बचते हुए और बारबार मौत का सामना करते हुए 465 दिनों की 8,000 किलोमीटर की जोखिम भरी यात्रा के बाद यह दल 5 मई, 1982 को कराकोरम दर्रे में पहुंचने में सफल हो गया. इस अभियान की एक विशेषता यह थी कि यह अभियान दल हिमालय के कुछ ऐसे क्षेत्रों से गुजरा, जिधर से यदाकदा ही लोग गुजरते हैं. इस दल का यह अभियान सचमुच दल के सदस्यों के लिए एक रोमांचक अनुभव था.

15 जनवरी, 1981 को यह दल अरुणाचल प्रदेश के एक छोटे से गांव जीलिंग से कराकोरम के लिए रवाना हुआ. चारों यात्री अपनीअपनी पीठ पर 20 से 40 किलोग्राम तक का बोझा उठाए हुए थे.

मार्च, 1981 के अंतिम सप्ताह में यह दल भूटान पहुंचा. इस के बाद सिक्किम तथा भारत नेपाल सीमा को पार करते हुए 19 जून, 1981 को ये लोग कंचनजंगा के पास रोहतांग दर्रे पहुंचे. वहां से दक्षिण दिशा में बोरौन हिमनद को पार कर के ये मकालू के आधार

भारतीय अभियान दल की अरुणाचल से कराकोरम तक की 8,000 किलोमीटर की यह 465 दिन की पैदल यात्रा कितनी रोमांचक, साहसपूर्ण और अद्भुत रही...

यात्रा के बाद प्रधान मंत्री के साथ दल के सदस्य (ऊपर) और यात्रा के अंतिम चरण कराकोरम पर पहुंच कर भारत का राष्ट्रीय ध्वज व सेना ध्वज फहराते हुए दल के सदस्य (नीचे).
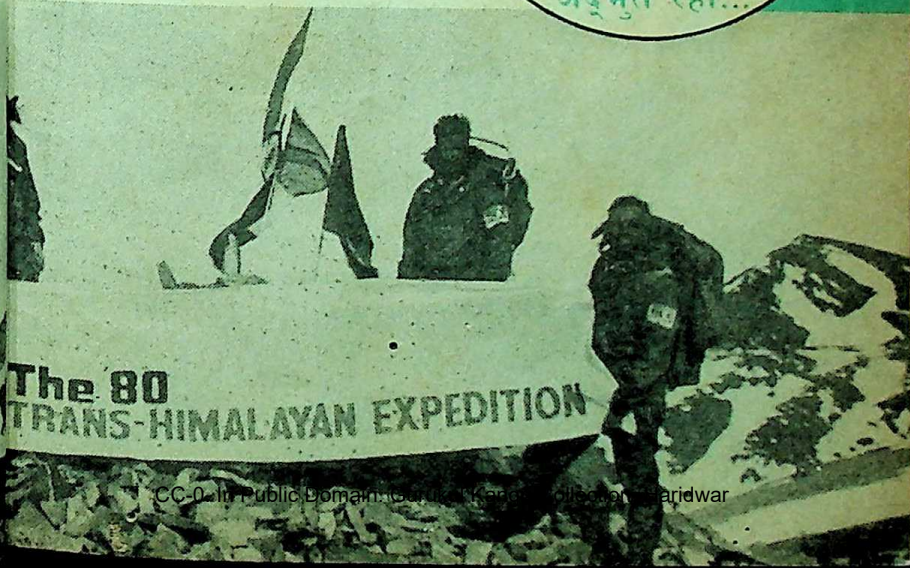
अपनी यात्रा के दौरान तरहतरह के अनुभव बटोरते दल के सदस्य (चित्र में) एक बौद्ध मठ में बौद्ध भिक्षुओं के बीच.

कैंप में पहुंचे. मकालू विश्व की चौथी सब से ऊंची पर्वतीय चोटी है. इन खतरनाक रास्तों तथा शेरपानी (7,060 मीटर), वेस्ट कोल (7,156 मीटर) तथा अंफूलाबस्तल (6,060 मीटर) के भयंकर दर्रों से गुजरते हुए वे माउंट एवरेस्ट के आधार कैंप पर तथा 8 अगस्त, 1981 को 7,750 मीटर ऊंची आइलैंड पीक पहुंचे.

मौत से कई बार सामना

फिर लाहौल व स्पीति के मीलों लंबे बर्फीले रास्तों से गुजरते हुए 5 मई, 1982 को कराकोरम दर्रे पहुंच गए. अपनी इस यात्रा के दौरान जहां ये कई बार मौत के मुंह में जाने से बालबाल बचे, वहीं इन्होंने प्राकृतिक सौंदर्य का भी बहुत आनंद उठाया. रास्ते में इन लोगों ने ड्रक नाम का एक तिब्बती पिल्ला भी अपने साथ ले लिया था.

अभियान दल के नेता कैप्टन कोहली उम्र में बाकी तीनों यात्रियों से छोटे थे. कैप्टन कोहली 28 वर्ष के, कैप्टन चौहान 30 वर्ष के, एन. डी. शेरपा 32 वर्ष के तथा गुरुंग 35 व[र्ष] के हैं.

इस दल की सब से बड़ी विशेषता य[ह] थी कि अन्य अभियान दलों की तरह इस द[ल] में काफी लोग नहीं थे. उन के पा[स] पर्वतारोहण से संबंधित आधुनिक सामान [भी] नहीं था और न ही सामान ढोने वाले आद[मी] थे. इस दल में सिर्फ चार आदमी थे, जिन[के] पास बहुत सीमित सामान था और किसी [भी] प्रकार के सहयोग के लिए कोई आदमी न[हीं] था. इसलिए यह अभियान बहुत ही चुनौ[ती] भरा था. अभियान पर निकलने से पहले द[ल] के सभी सदस्यों को काफी सोचविचार [कर] निर्णय लेना पड़ा था.

दल के नेता कैप्टन कोहली को पता [था] कि एल्प्स पर्वत पर चढ़ाई करने व[ाले] पर्वतारोही अपनी आवश्यकता का सा[मान] खुद अपने साथ ले कर चलते हैं. इसलि[ए] उन्होंने सोचा कि इस पर्वतीय यात्रा में क्य[ों न] वे भी अपना सामान खुद ही ले कर जाएं. [इसी] भावना के तहत उन्होंने सामान खुद अ[पने]

साथ ले जाने का निर्णय लिया.

इन लोगों को हिमालय के काफी लंबे क्षेत्र से हो कर गुजरना था. इन क्षेत्रों में कौनकौन सी परेशानियां आती हैं, यह जानने के लिए कैप्टन कोहली ने बहुत सी पुस्तकों का अध्ययन किया. इन पुस्तकों के अध्ययन के फलस्वरूप उन्होंने महसूस किया कि वह अपने अभियान में सफल हो सकते हैं.

कैप्टन कोहली के अनुसार इस दल में सिर्फ चार सदस्यों के रखने का कारण यह था कि इस से यात्रा सुविधापूर्वक हो सकती थी. एक कारण तो यही था कि रात में सोने के वक्त तंबू में सिर्फ चार आदमी ही सो सकते थे. पांचवां नहीं. इसलिए इस दल में हर हालत में चार या उस से भी कम आदमी रखे जा सकते थे.

नेता होने के बावजूद कैप्टन कोहली ने इस अभियान के दौरान आने वाली समस्याओं पर विचारविमर्श के समय सदस्यों पर अपना निर्णय नहीं थोपा, बल्कि सब निर्णय सामूहिक रूप से मिलजुल कर लिए गए. विचारविमर्श के समय कैप्टन कोहली स्वयं को अलग रखते और बाकी तीनों सदस्यों को विचारविमर्श करने देते. जब उन्हें लगता कि कोई

दिन भर की कठिन यात्रा के बाद रात्रि को विश्राम करने की तैयारी में जुटे दल के सदस्य.

महत्त्वपूर्ण बात उन के सदस्यों के दिमाग से छूट रही है तो वह सदस्यों से इस संबंध में बातचीत कर के कोई निर्णय लेते. लेकिन अंतिम निर्णय सामूहिक रूप से ही लिया जाता था.

योजना को अंतिम रूप

इस अभियान की योजना 1980 में ही बन गई थी. कैप्टन कोहली ने अगस्त, 1980 में जब अपनी इस योजना को सैनिक अधिकारियों के समक्ष रखा तो उन्होंने तुरंत अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी.

465 दिनों की इस यात्रा में सिर्फ बोमडिला, थिंपु, गंगटोक, काठमांडू, पूह, जोशीमठ तथा धारबुक में ही इन का सेना से संपर्क रहा.

अभियान दल के इन चारों सदस्यों ने जब अपनी पत्नियों को इस अभियान के विषय में बताया तो वे घबरा गईं. उन्होंने इन से कहा कि वे इतना बड़ा जोखिम क्यों ले रहे हैं. लेकिन जब इन लोगों ने उन्हें ठीक से समझाया तो वे बाद में उन से सहमत हो गईं.

लगभग सवा साल की इस लंबी यात्रा के दौरान इन्हें अपने प्रियजनों की याद भी आई. लेकिन ऐसे क्षण बहुत कम आए क्योंकि इन बातों पर सोचने के लिए इन के पास वक्त ही नहीं था.

यात्रा के दौरान इस दल को 10 दिन तक काठमांडू में रुकना पड़ा. इस का कारण यह था कि जाड़े का मौसम करीब आ रहा था. इस के लिए आम बीमारियों जैसे पेट की गड़बड़ी, सिरदर्द व बुखार आदि के लिए दवाएं खरीदनी पड़ीं व ठंडक से निबटने के लिए अन्य सामान का भी बंदोबस्त करना पड़ा.

हेनली से लोमा (लद्दाख) की 6[illegible] किलोमीटर की दूरी इन्होंने मात्र एक दिन में तय की, लेकिन कभीकभी ऐसे भी रुकावट भरे रास्ते आए कि पूरे दिन में ये केवल 1[illegible] किलोमीटर ही चल सके. लेकिन पूरी यात्रा के दौरान इन का औसत लगभग 28 किलोमीटर प्रतिदिन था.

हिमस्खलन की चपेट में

अपनी इस यात्रा के दौरान इन्हें कभीकभी ऐसे निर्जन स्थानों से भी गुजरना पड़ा जहां इन्हें 15-20 दिन तक एक भी आदमी नजर नहीं आया. कभीकभी दूरदराज

आगे बढ़ने के लिए नया उत्साह जुटाने का एक ही उपाय—कुछ देर सुस्ता लें.
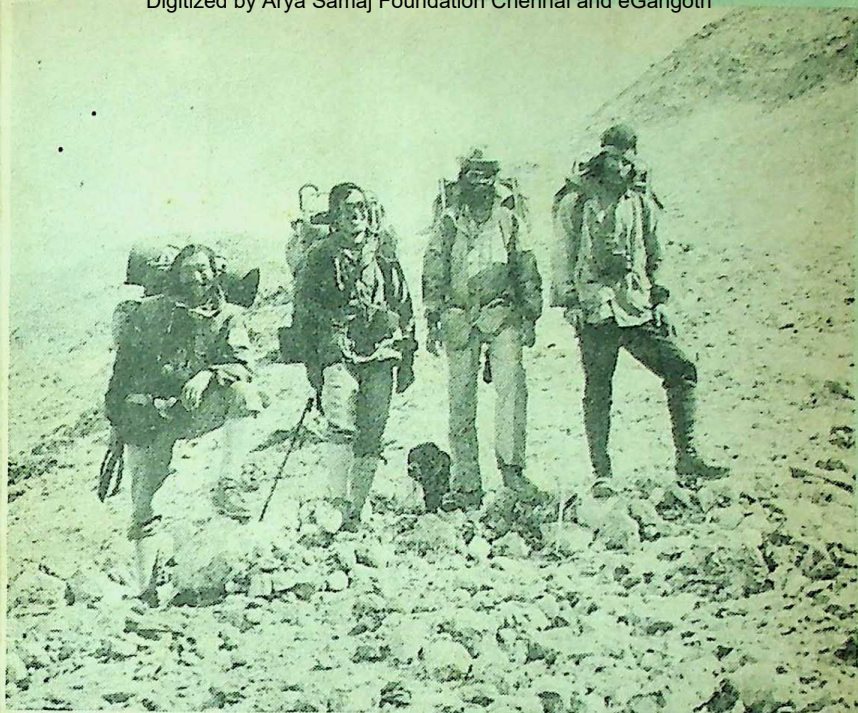
जब दल नायक कैप्टन कोहली दल के सदस्यों को कुछ समझाते तब भी उन का सहयोगी डूक कुत्ता दल के सदस्यों के पास ही मौजूद रहता.

के गांवों में ये लोग चावल, दाल, दियासलाई, सिगरेट आदि खरीदने जाते तो बस उसी समय आदमियों से इन की मुलाकात होती.

कभीकभी ऐसे संकटों का भी सामना करना पड़ा जब जीवन और मौत के बीच अधिक फासला नहीं रहा था.

यात्रा के दौरान एक बार इस दल ने स्पीति घाटी में बर्फ पर फिसलते हुए नीचे उतरने का निर्णय लिया. गुरुंग जैसे ही नीचे उतरने को हुए, उन्होंने बड़े जोर की आवाज सुनी. उन्होंने मुड़ कर देखा, बर्फ का एक विशालकाय टुकड़ा कैप्टन कोहली और कैप्टन चौहान को अपने साथ घसीटता हुआ ले जा रहा है. कैप्टन कोहली बर्फ के ढेर में हाथपांव मार रहे थे. उन की नाक और मुंह में बर्फ घुस गई थी. वह लगातार नीचे गिरते जा रहे थे. उन्हें लगा जैसे नीचे न जाने कितनी गहराई में वह फिसलते जाएंगें. लेकिन 300 फुट की गहराई में फिसलने के बाद हिमस्खलन रुक गया. कैप्टन कोहली का सारा शरीर बर्फ में दबा हुआ था. सिर्फ सिर बाहर निकला हुआ था. उन्हें कैप्टन चौहान कहीं नजर नहीं आ रहे थे.

कैप्टन कोहली को देख कर गुरुंग तुरंत भागेभागे उन के पास आए और उन्हें बर्फ से बाहर निकाला. डूक आसपास सूंघ कर चौहान का पता लगाने लगा. तभी चौहान ने बर्फ के ढेर से अपना सिर बाहर निकाला. उन्हें देखते ही बाकी सदस्यों ने उन्हें बर्फ से बाहर खींचा. उस दिन कोहली और चौहान मौत के मुंह में जाने से बालबाल बचे.

एक बार शेरपानी दर्रे में हिमस्खलन के खतरे से बचने के लिए इस दल के सदस्यों ने काफी घूम कर अपना रास्ता बनाने का निर्णय

लिया. सदस्यों ने अपनी पीठ के सामान को नीचे रख दिया और रास्ता देखने के लिए निकल पड़े. अचानक ही हिमस्खलन शुरू हो गया. ये लोग स्खलन के रास्ते से बच कर भाग सकते थे, लेकिन उन का सारा सामान स्खलन के रास्ते में था, इसलिए वे स्खलन की चपेट में आ गए. सभी सामान बर्फ के साथ नीचे चला गया. इस सामान में कैमरा, सोने के बिस्तर, छाते तथा जूम लैंस थे. उन्होंने इस की तलाश की तो वह दर्रे में ही पड़ा मिला. बड़ी मुशकिल से वे नीचे गए और अपने सामान को इकट्ठा किया. कैमरा और जूम लैंस पूरी तरह टूट गए थे. कैप्टन कोहली का चाकू टुकड़ेटुकड़े हो गया था. यदि उन में से कोई भी आदमी उस हिमस्खलन की चपेट में आ जाता तो जीवित नहीं बचता.

ड्रक अच्छा मददगार साथी

इस दल को अभियान के दौरान 48 दर्रों तथा 24 हिमनदों से हो कर गुजरना पड़ा. इस में सब से खतरनाक अंफूलाबस्तल दर्रा था. ड्रक हमेशा इन के आगेआगे चलता था. ज वह इस दर्रे के पास पहुंचा तो नीचे 80 डिग के कोण की फिसलन देख कर पीछे लौ आया. वह जल्दी से इन लोगों के पैरों के नी से गुजर कर सब से पीछे खड़ा हो गय रस्सियों के सहारे इस घाटी के नीचे उतरने इस दल को बड़ी परेशानी हुई.

अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य

जब यह दल दजोंग्री क्षेत्र में पहुंचा वहां का प्राकृतिक सौंदय देख कर अभिभ रह गया. वहां चारों ओर तरहतरह के सुं रंगीन फूल खिले हुए थे. उन्हें लगा जैसे उ का अभियान सफल हो गया.

इस अभियान दल के सदस्य अपने सा पिस्तौल या इस तरह का कोई हथियार न ले गए थे, यह भी एक आश्चर्य की बात क्योंकि कोई भी अभियान दल हिमालय रास्ते में मिलने वाले संभावित हिंसक जंतु से अपनी रक्षा की बात पहले सोचता है. इ कमी के कारण इस दल को एक जगह का

दल के सामने अनेक कठिनाइयां आईं, पर कोई भी कठिनाई उन्हें रोकने में कामयाब न हो सकी.

च

वि

गां
आ
आ
मवे

ऊह
सम

का
पास
घन
वाद
छा
लगे
नही

करा
अभि
आंख

दिल
उदा

मुक

चारों तरफ और नीचे बर्फ ही बर्फ: ऐसे रोमांच का आनंद ही अलग है.

विकट समस्या का सामना करना पड़ा.

जब यह दल नेपाल के मानेबानजंग गांव से आगे बढ़ा तो इस गांव के लोगों ने इन्हें आगाह किया कि इस क्षेत्र में एक चीते ने आतंक फैला रखा है. यह चीता गांव में आ कर मवेशियों को उठा कर ले जाता था.

जटिल समस्या का सामना

यह पता चलने पर दल के लोग ऊहापोह में पड़ गए. इन के सामने अब यह समस्या आ गई कि ये आगे बढ़ें या पीछे हटें.

दिन के दो बजे इन लोगों ने आगे बढ़ने का निर्णय ले लिया. ये लोग बिलकुल पासपास चलते हुए आगे बढ़ने लगे. अचानक घनघोर घटाएं छा गईं. बारिश शुरू हो गई. बादलों के कारण जल्द ही चारों ओर अंधेरा छा गया. ये अपनेआप को कोसने लगे. डरने लगे कि कहीं चीता न आ जाए, लेकिन चीता नहीं आया.

अंत में वह समय आया जब यह दल कराकोरम दर्रे पर पहुंच गया. अपनी अभियान की सफलता पर कैप्टन कोहली की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए.

लौटते वक्त दल के सदस्यों के दिलदिमाग में एक उदासी छाई हुई थी. यह उदासी थी एकदूसरे से बिछुड़ने की. ये चारों सदस्य सवा साल तक हर पल साथ रहे. परिवार के सदस्यों से भी ज्यादा इन में मेल रहा. अब अलग हो रहे थे. अलग होने का दुख उन्हें सता रहा था.

दल नायक के विचार

कैप्टन कोहली का कहना है कि यात्री दल में चाहे सात सदस्य हो या 70, उन्हें हिमालय की पवित्रता को बनाए रखना चाहिए. उन्हें कागज के पैकेट या अन्य तरह के कागज के टुकड़े या कोई और सामान इधरउधर नहीं फेंकना चाहिए. ऐसी चीजों को बर्फ में एक गड्ढा खोद कर दबा देना चाहिए. इस संबंध में उन्होंने बताया कि एक बार एक अमरीकी यात्री दल के सदस्य ने चाकलेट खाने के लिए ऊपर का कागज खोला तो वह कागज उड़ कर लगभग 20 फुट नीचे चला गया. वह अमरीकी नीचे गया और उस ने वह कागज मोड़ कर अपनी जेब में रख लिया. इस से जाहिर है कि वह वहां की स्वच्छता को बनाए रखने के लिए कितना चिंतित था. पर्वतों की पैदल यात्रा करने वालों के लिए यह एक आदर्श उदाहरण है.

उन्होंने बताया कि हिमालय की शोभा अक्षुण्ण है, पर्वतारोहियों के लिए वहां चुनौती की कमी नहीं. •

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.
भेजने का पता: शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण युवक द्वारा हरिजन कन्या से विवाह

गोड्डा (बिहार) में एक ब्राह्मण छात्र ने एक हरिजन नर्स से विवाह कर के अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया है.

गोड्डा कालिज के छात्र प्रदीप ने हरिजन नर्स लाल वीणा के साथ यह विवाह अदालत में किया. युवक के पिता एक महाविद्यालय में प्रधानाध्यापक हैं. उन्होंने इस विवाह पर कोई आपत्ति नहीं की. **—रांची एक्सप्रेस, रांची (प्रेषक : नरसिंह महतो) (सर्वोत्तम)**

*

उस ने शेर से लड़ कर उसे भगा दिया

जबेरा (ग्वालियर) से तीन किलोमीटर दूर बड़ेरा जंगल में चेतूराम नामक एक युवक अपने दो मित्रों के साथ महुआ बीनने गया था कि अचानक एक शेर ने उस पर हमला कर दिया. वह घायल हो गया, लेकिन उस ने हिम्मत नहीं हारी और शेर का जबड़ा पकड़ लिया. वह काफी देर तक शेर से संघर्ष करता रहा. अंत में शेर भाग खड़ा हुआ. चेतूराम को घायलावस्था में हस्पताल में भरती कराया गया. **—दैनिक स्वदेश, ग्वालियर (प्रेषक : राकेश गुप्त)**

*

जहां ग्रामवासियों का आपसी मेलजोल एक आदर्श है

गुना जिले में एक ऐसा गांव भी है जहां किसी को किसी से न कोई शिकायत है, और न वहां का कोई मुकदमा अदालत में ही गया है. सभी लोग आपस में मिलजुल कर प्रेमभाव से रहते हैं.

मध्य प्रदेश के कृषिमंत्री दिग्विजयसिंह जब इस गांव में गए तो यहां कोई समस्या न पा कर आश्चर्य में पड़ गए. **—दैनिक ज्ञानयुग प्रभात, जबलपुर (प्रेषिका : चंद्रा वैश्य)**

*

बालिका की जान बचाने वाला बालक पुरस्कृत

वाल्टरगंज (बस्ती) के पांच वर्षीय बालक आशीष सेठ को तीन वर्षीया बालिका की जान बचाने के लिए पुरस्कृत किया गया.

बालिका छः फुट गहरे गड्ढे में गिर गई थी. तभी उक्त बालक ने उस के सिर के बाल पकड़ कर खींचे और जोरजोर से चिल्लाना शुरू किया. उस की आवाज सुन कर आसपास के लोग वहां आ गए और बालिका को बचा लिया गया.

—दैनिक जागरण, कानपुर (प्रेषक : रवींद्रकुमार सिंह)

*

गाय ने डाकुओं को मार भगाया

मुरादनगर के गांव खुरादपुर पुसा में मूलचंद के घर पर हमला करने वाले आधा दरजन डकैतों को एक गाय ने मार भगाया.

डकैतों ने उस के घर पर धावा बोला और आतंकित करने के लिए उस के युवा पुत्र पर पिस्तौल से गोली चलाने की कोशिश की, लेकिन जब गोली नहीं चल पाई तो उस युवक ने एक डकैत को जमीन पर गिरा लिया, लेकिन अन्य डकैतों ने उस पर हमला कर के उसे बेहोश कर दिया.

इसी बीच खूंटे में बंधी गाय ने रस्सी तुड़ा कर डाकुओं पर हमला कर के दो को गंभीर रूप से घायल कर दिया.

शोरगुल सुन कर गृहस्वामी की पुत्रवधू भी जाग गई. उस ने बाहर आ कर एक डकैत को धरदबोचा और उस पर घातक प्रहार किए जिस से उस की मृत्यु हो गई. यह देख कर डकैतों का साहस टूट गया और वे जान बचा कर भाग निकले.

—अमृत प्रभात, इलाहाबाद (प्रेषक : रामदास गुप्त)

*

कोयला लूटने की कोशिश नाकाम

कलकत्ता में पूर्व रेलवे के लालगोला सवारी गाड़ी के चालक की तत्परता से कोयला लूटने की कोशिश करने वाले पांच बदमाशों में से एक को पकड़ लिया गया.

उन बदमाशों ने होज पाइप काट कर इंजन से कोयला लूटना चाहा था और इसी कोशिश में दो फायरमैनों को घायल भी कर दिया था लेकिन इंजन चालक श्री घोष ने एक बदमाश को पकड़ लिया और रेलवे पुलिस को सौंप दिया.

सियालदह मंडल ने इस चालक को पुरस्कार देने की घोषणा की है.

—सन्मार्ग, कलकत्ता (प्रेषक : बल्लभदास बिन्नानी)
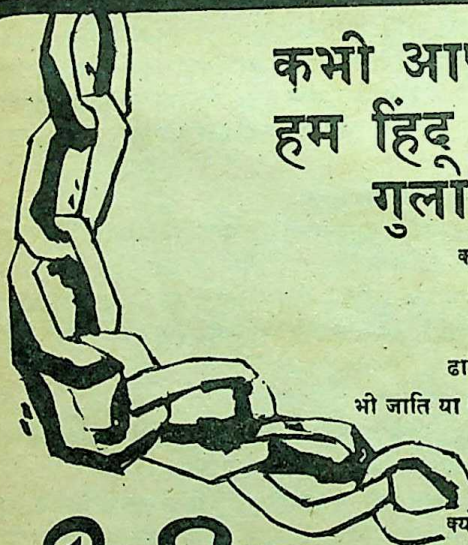
नाटक के दर्शक और अभिनेता में तादात्म्य कैसे हो?

मध्य प्रदेश के रंगमंच की अभिनेत्री ज्योत्सना मेहता से विनय झैलावत की बातचीत

नाटक के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन जो 'ग्लैमर' (चमकदमक) छाता जा रहा है, उस ने नाट्य जगत का फायदे की जगह नुकसान ही अधिक किया है. अधिकाधिक नए प्रयोगों—मसलन घूमते रंगमंच, प्रकाश के विभिन्न उपयोगों आदि—ने रंगमंच की तुलना फिल्मों से करने की मनोवृत्ति दर्शकों में जगाई है. दर्शकों की यह मनोवृत्ति नाटकों के लिए खतरनाक है, क्योंकि हम रंगमंच पर कितने ही प्रयोग कर लें, फिल्मों की बराबरी नहीं कर सकते. नाटकों को फिल्मों से अलग ही होना चाहिए. हमारे समाज के नाट्य दर्शक अधिक समझदार हैं तथा वे इस विधा को काफी हद तक समझते भी हैं. अतएव बगैर अधिक तामझाम के प्रतीकात्मक तरीके से भी हम रंगमंच से अपनी बात आसानी से अपने दर्शकों तक पहुंचा सकते हैं.

ये विचार श्रीमती ज्योत्सना मेहता ने हाल ही में एक साक्षात्कार में व्यक्त किए.

ज्योत्सनाजी ने अपने पति प्रोफेसर सतीश मेहता के साथ मिल कर अपनी नाट्य संस्था 'प्रयोग' के माध्यम से 15 अगस्त, 1976 से अब तक 14 नाटकों के 90 प्रदर्शन किए हैं. इन नाटकों में 'दुलारीबाई' के 24, 'बकरी' के 10, 'जुलुस' के 21 प्रदर्शन हुए. इन के अलावा 'गुडबाई स्वामी', 'खामोश... अदालत जारी है' व 'अंधों का हाथी' आदि नाटकों के भी कई प्रदर्शन हुए.

जीवंत माध्यम

ज्योत्सना मेहता से मेरा पहला प्रश्न था कि "आमतौर पर नाटकों को फिल्मों के बजाए अधिक जीवंत माध्यम माना जाता है. सच पूछें तो सिर्फ शुरू की पांचछः कतारों के दर्शकों के लिए फिल्म से अधिक जीवंत होता है. पीछे वाले दर्शक तो अभिनेता के सूक्ष्म भाव देख ही नहीं पाते

"जब कि फिल्म के क्लोजअप में सब कुछ दिखा सकते हैं?"

ज्योत्सना अपने पति प्रोफेसर सतीश मेहता और अपनी नाट्य संस्था 'प्रयोग' के एक अन्य कलाकार सुशील जौहरी के साथ नाटकीय मुद्रा में.

श्रीमती ज्योत्सना मेहता का कहना है कि "यह बात कुछ मायनों में सही है, कि पीछे वाले दर्शक अभिनेता के सूक्ष्म हावभाव नहीं देख पाते, जब कि फिल्म के क्लोजअप से अभिनेता के ऐसे हावभाव भी सभी दर्शकों को दिखा सकते हैं. किंतु नाटकों की तुलना फिल्मों से करना मूलतः गलत है. दोनों ही अभिव्यक्ति के अलगअलग माध्यम हैं, जिन की अपनीअपनी विशेषताएं हैं. नाटकों में सब कुछ सामने होता है, इस कारण दर्शकों एवं कलाकारों में एक सहज तादात्म्य होता है. इसी कारण नाटक अधिक जीवंत व प्रभावशाली लगते हैं. यह बात फिल्मों में नहीं हो सकती. वैसे भी आजकल की अधिकांश फिल्में बनावटी तथा नकली लगती हैं. जहां तक पीछे वाले दर्शकों का सवाल है, हम मंच पर काम करने वाले अभिनेता आंखों, हाथपैरों के हावभाव के माध्यम से इन तक अपनी बात पहुंचाते हैं. इसी लिए रंगमंच पर आवाज व शरीर की हरकतों का अधिक किंतु प्रभावशाली उपयोग किया जाता है."

ज्योत्सना मेहता का यह भी कहना है कि "इसी वजह से हम अपने नाटकों में दर्शकों की संख्या सीमित रखते हैं." उन्होंने यह भी कहा कि अधिकांश अच्छे नाट्य थियेटरों, जैसे पृथ्वी आदि में सीटों की संख्या 250 से 300 तक की ही रखी गई है.

समानता का व्यवहार

ज्योत्सना मेहता ने यह भी दावा किया कि "हम अपने दर्शकों के साथ समानता का व्यवहार करते हैं. हमारे नाटकों में टिकट की दर एक ही रखी जाती है तथा उन पर सीटों के नंबर नहीं होते हैं. जो दर्शक पहले आते हैं वे आगे तथा जो बाद में आते हैं. वे पीछे अपनी पसंद की जगह पर बैठते हैं. इस के अलावा हमारे नाटकों में न तो निश्शुल्क पास बांटे जाते हैं और न ही किसी को प्रमुख अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है. हमारे दर्शक ही हमारे प्रमुख अतिथि होते हैं."

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में ज्योत्सना मेहता ने यह स्वीकार किया कि "कभीकभी

नाटक चलते चलते एक दो अभिनेता दर्शकों के चहेते बन जाते हैं. यह बात इस पर निर्भर करती है कि पात्र का चरित्र किस किस्म का है तथा उसे अभिनीत करने वाला अभिनेता उसे कैसे निभा रहा है. बकरी नाटक में उन के साथ ऐसा ही हुआ. वह जिस पात्र को अभिनीत कर रहीं थी. उसे दर्शकों द्वारा बेहद पसंद किया गया, जब कि उस पात्र की तुलना में इस नाटक के अन्य चरित्र महत्वपूर्ण थे, किंतु उन्हें अपेक्षाकृत कम पसंद किया गया."

कम दर्शक

हाल में दर्शकों की कम संख्या हो तो अभिनेता के अभिनय पर इस का क्या प्रभाव होता है?

ज्योत्सना मेहता ने इस प्रश्न के उत्तर में बताया कि "जहां तक मेरा प्रश्न है, दर्शकों की संख्या का मेरे अभिनय पर कोई फर्क नहीं पड़ता है. मंच पर आने के बाद उपस्थित दर्शकों को मैं भूल जाती हूं, किंतु दर्शक किस किस्म के हैं, इस का प्रभाव एक अभिनेता के अभिनय पर अवश्य पड़ता है."

ज्योत्सना मेहता के पति प्रोफेसर सतीश मेहता ने जो कि 'प्रयोग' के नाटकों के निर्देशक हैं. उन से अपनी असहमति व्यक्त की. उन का कहना था कि दर्शकों की संख्या एवं किस्म दोनों का प्रभाव अभिनेता के अभिनय पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है. उन्होंने अपने एक नाटक का उदाहरण देते हुए बताया कि नाटक के एक प्रदर्शन में कलाकारों को यह मालूम था कि यहां दर्शकों को ठहाका लगाना है, किंतु वहां दर्शकों की ओर से कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की गई. नतीजा यह हुआ कि वह प्रदर्शन बहुत ही कमजोर रहा.

घर का माहौल

ज्योत्सना मेहता ने आगे बताया कि "समान अभिरुचि के कारण ही अन्य महिला कलाकारों के साथ जो असुविधा होती है, वह भी मेरे साथ नहीं है. पूरे घर में नाटक का माहौल रहता है. मेरे और श्री मेहता के मध्य सामंजस्य होने के कारण पारस्परिक सुझावों के आदानप्रदान से नाटक अधिक प्रभावशाली

'खामोश, अदालत जारी है' नाटक के एक दृश्य में ज्योत्सना तथा अन्य कलाकार.
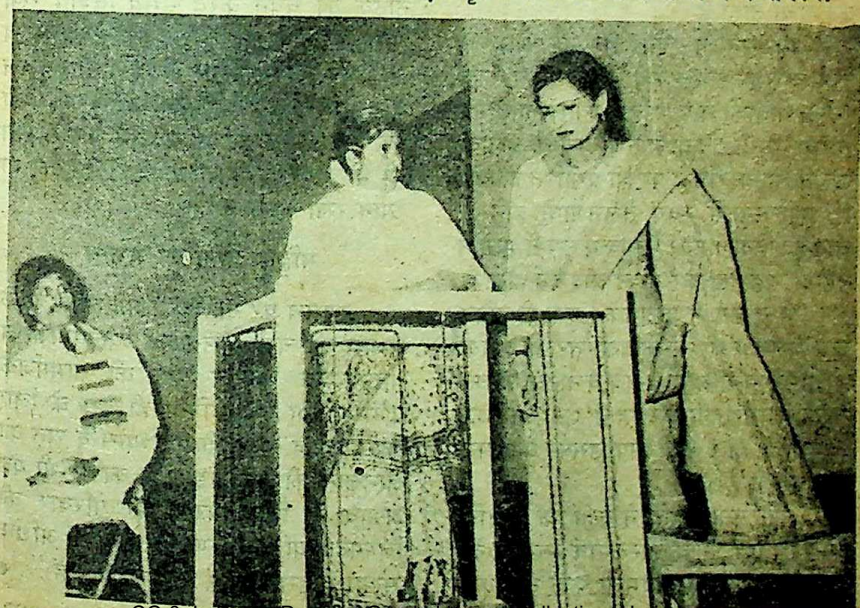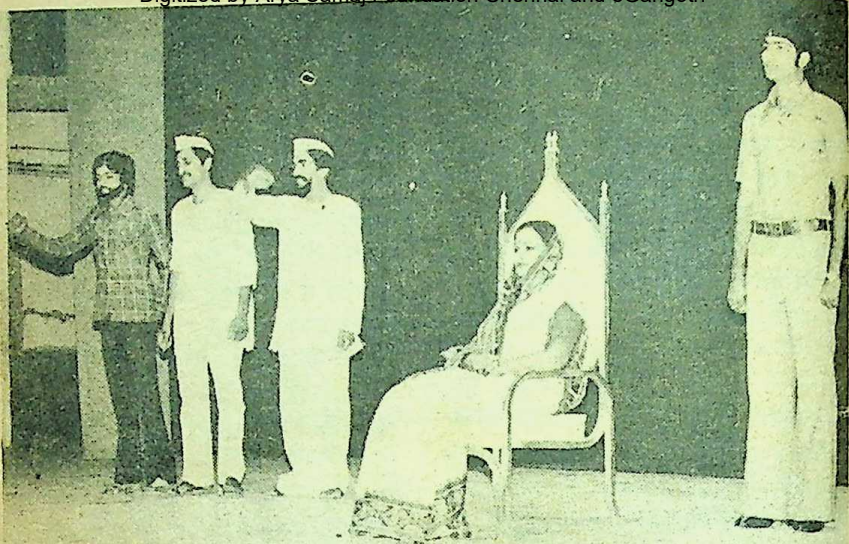
ज्योत्सना मेहता : 'अंधों का हाथी' नाटक के एक दृश्य में.

होते हैं." उन्होंने यह भी बताया कि "हमारे नाट्य मंडल 'प्रयोग' का प्रत्येक सदस्य अपने सुझाव दे सकता है. और सभी सुझावों पर खुल कर चर्चा होती है."

ज्योत्सनाजी तीन वर्ष की आयु से रंगमंच से ही संबद्ध रही हैं. उन्हें यह रुचि अपनी माताजी से प्राप्त हुई. ज्योत्सना मेहता ने एम.एससी. किया है तथा मंच के अलावा उन के नाटक रेडियो पर भी प्रसारित हो चुके हैं. ज्योत्सनाजी स्वयं तेलुगूभाषी होने के बावजूद हिंदी नाटकों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं, यह देख कर सुखद आश्चर्य होता है.

मैं ने उन से पूछा कि "एक ही नाटक जब अलगअलग सांस्कृतिक स्तरों के दर्शकों के सामने खेला जाता है तब वे नाटक के किन तत्वों की सराहना कर रहे हैं, ऐसा आप कैसे जानती हैं. और क्या आप उसमें कुछ फर्क पैदा करती हैं?"

ज्योत्सना मेहता ने कहा कि "दर्शकों की रुचि एवं उन के सांस्कृतिक स्तर को देख कर नाटक में कुछ मामूली फर्क कभीकभी करने पड़ते हैं, किंतु हम इस बात का सदा ध्यान रखते हैं कि इस से नाटक का मूल स्वरूप नष्ट न हो. वैसे इस बात का ध्यान नाटक का चयन करते समय विशेष रखा जाता है कि नाटक स्तरीय होने के साथसाथ आम जनता की रुचि का भी हो, क्योंकि केवल बुद्धिजीवियों के लिए नाटक कर के इस कला की जड़ें नहीं जमाई जा सकतीं. आम जनता को भी इस से मनोरंजन प्राप्त हो, इस का भी ध्यान रखा जाना चाहिए."

महिला पात्रों का अभाव

रंगमंच पर नाटकों में महिला पात्रों के अभाव की चर्चा चलने पर ज्योत्सनाजी ने बताया कि "हमारे यहां की सामाजिक परिस्थितियां एवं रूढ़ियां ही इस के लिए जिम्मेदार हैं. साथ ही पूर्वाभ्यास व रात के आनेजाने की कठिनाइयों के कारण भी यह अभाव है. विवाहोपरांत घर परिवार की जिम्मदारियों के कारण भी महिलाएं अधिक संख्या में इस क्षेत्र में नहीं आ पाई हैं." ●

ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए व अन्य संस्मरणों पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
ये लड़के, ये लड़कियां, मुक्ता,
रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

एक दिन कुछ लड़केलड़कियां कालिज प्रांगण में बैठे थे. तभी एक लड़की ने एक लड़के का जूता कहीं छिपा दिया.

फिर उस ने लड़के से पूछा, ''तुम्हारा जूता कहां गया?''

लड़के ने मुसकरा कर उत्तर दिया, ''मेरी किसी साली ने चुरा लिया होगा.''

लड़की यह सुन कर पानीपानी हो गई.

—धर्मवीरसिंह

*

संस्कृत का घंटा था. मेरी सहेली के कान में अचानक दर्द होने लगा, इसलिए वह बारबार कान को सहलाती और हिलाती जा रही थी.

प्राध्यापिका यह बहुत देर से देख रही थीं कि उस का एक हाथ बहुत देर से कान पर है. उन्होंने पूछा, ''इतनी देर से कान क्यों पकड़े हो, क्या मेरी बात सुनने का इरादा नहीं है?''

सहेली ने तुरंत कहा, ''मैं सोच रही थी कि कहीं आप की बातें इस कान से बाहर न निकल जाएं, इसी लिए कान पकड़े हूं.''

उस का जवाब सुन कर प्राध्यापिका सहित पूरी कक्षा हंस पड़ी. —नीलम जौहरी

*

एक दिन मैं अपने जूतों पर पालिश करवा रहा था कि दो लड़के आ कर पास बैठे एक अन्य मोची से पालिश कराने लगे. उसी समय दो लड़कियां भी आईं और वे अपनी सैंडिल ठीक करवाने लगीं.

उन लड़कों में से एक ने छेड़ने के उद्देश्य से कहा, ''कमाल है, इन कोमल पैरों में भी सैंडिल टूटती हैं.''

इस पर एक लड़की ने झट ही जवाब दिया: ''ये पैरों में नहीं, तुम जैसे बेशर्मों के सिर पर टूटती हैं.''

—संजय गोयल

*

बात उन दिनों की है जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था. हमारे एक शिक्षक कक्षा में आगे बैठी लड़कियों से धीरेधीरे सवाल पूछते थे जिस से हमारी समझ में कुछ नहीं आता था. अगर कोई लड़का इस की शिकायत करता तो वह जवाब देते, ''यह हमारी व्यक्तिगत बात है.''

एक दिन वह पढ़ा रहे थे तो एक लड़के ने पीछे बैठी किसी लड़की से कुछ कहा, इस पर उन्होंने नाराज हो कर पूछा, ''क्या बात है?''

''कुछ नहीं, यह हमारी व्यक्तिगत बात है,'' लड़का तपाक से बोला.

पूरी कक्षा में हंसी के ठहाके गूंज उठे और उस दिन के बाद से उन की यह आदत छूट गई.

—दिनेशकुमार अग्रवाल •

विश्व सुलभ साहित्य

बेतवा की कसम :
ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित बदलते हुए परिवेश, व मान्यताओं का दस्तावेज.

प्रमोद मूल्य : 3.00

कार में हत्या :
कार में लाश मिलने पर देशपांडे उस हत्या को सुलझाने में और अधिक उलझता गया. असली अपराधी को पकड़ने में कैसे सफल हुआ ?

जनमित्र मूल्य : 3.00

ईर्ष्या का ज्वालामुखी :
देशपांडे रहस्यपूर्ण हत्याओं को सुलझाने में कैसे उलझता गया. रहस्यरोमांच से भरपूर उपन्यास.

कुसुम गुप्ता मूल्य : 3.00

इंसानों का व्यापार :
इंसानों के व्यापार के रहस्य का परदा जब देशपांडे ने उठाया तब सभी आश्चर्यचकित रह गए.

जनमित्र मूल्य : 3.00

पूरा सेट लेने तथा धन अग्रिम भेजने पर डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी. द्वारा.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

लालच

राजू के बाल संवारने के बाद मल्लिका उस की ओर देख कर मुसकराई.

उस की मीठी मुसकान देख कर राजू भी मुसकराया और उस ने उसे अपने पास खींच लिया.

मल्लिका ने राजू की टाई की गांठ ठीक करते हुए कहा, "अब तुम्हें देर हो रही है. जल्दी जाओ नहीं तो बस छूट जाएगी."

सभी डाक्टरों को विश्वास था कि मल्लिका स्वस्थ हो जाएगी, मगर डा. नरेश की वजह से न केवल मल्लिका बल्कि उस के पति राजू का भी जीना दूभर हो जाएगा, यह तो किसी ने सोचा भी न था...

कहानी • क.न. रामचंद्रन
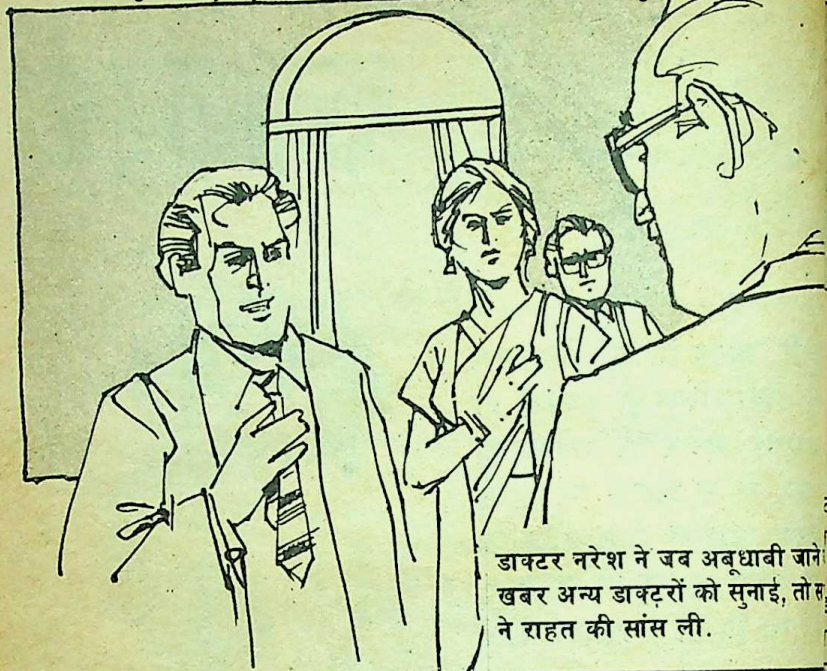
"बस छूटने में अभी दो मिनट और बाकी हैं," राजू ने मल्लिका को अपनी बांहों में जोर से भींचते हुए कहा. मल्लिका ने राजू की गरमगरम सांसों को अपने चेहरे के बहुत करीब महसूस किया और उस की आंखें खुमारी से बंद हो गईं.

कुछ पलों के बाद राजू ने अपनी बांहें ढीली कीं और मल्लिका के चेहरे की ओर देख कर बोला, "सचमुच, तुम बहुत सुंदर हो."

मल्लिका ने प्यार से अपना सिर राजू के कंधे पर रख दिया. राजू ने प्यार से मल्लिका की ठोड़ी पकड़ कर उस का चेहरा ऊपर उठाया और फिर दोनों के होंठ मिल गए.

अचानक मल्लिका के बाएं घुटने में बड़ी जोर का दर्द उठा. वह तड़प उठी.

राजू ने तुरंत उसे अपने से अलग किया और भय से उस के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा, "क्या हुआ, मल्लि?"

मल्लिका ने राजू के भय को दूर करने के लिए हंसने की कोशिश करते हुए कहा, "कुछ नहीं, बस घुटने में थोड़ा दर्द हो रहा है. घबराने की कोई बात नहीं है. अभी थोड़ी में ठीक हो जाएगा."

लेकिन घुटने में इतना तेज दर्द हो था कि वह दर्द को छिपा नहीं सकी. उस चेहरा दर्द से तमतमा उठा और सिसकसिसक कर रोने लगी.

राजू ने उसे एक कुरसी पर बैठा और उस का घुटना सहलाने लगा.

"तुम जाओ, नहीं तो तुम्हारी बस जाएगी," मल्लिका ने दर्द से कराहते कहा.

"मैं आज दफ्तर नहीं जाऊंगा," रा दृढ़ स्वर में कहा, "चलो, अभी डाक्ट यहां चलो."

डाक्टर उमा एक बहुत नम्र स्व की महिला थी. जब उ मल्लिका के घुटने का निरीक्षण किया तो का चेहरा उतर गया. उस ने पूछा, "क्या दर्द पहले भी हो चुका है?"

"हां, लगभग ... महीने पहले

टने में यहीं ठीक इसी तरह का दर्द उठा
।." मल्लिका ने बताया.

यह सुन कर डाक्टर उमा सोच में पड़
ई. अचानक उस ने अपने चेहरे से उदासी
। भाव झटक दिया और मुसकराते हुए
ली, "परेशान होने की बात नहीं है. हम
ग बस इसे दो चुटकियों में ठीक कर देंगे.
। भूल जाओगी कि तुम्हारे घुटने में कभी
भी था."

मल्लिका मुसकराने लगी.

डाक्टर उमा ने कहा, "कल सुबह आठ
ो यहां आओ. हम लोग तुम्हारे घुटने का
सरे लेंगे और बायोप्सी करेंगे. बिलकुल
श्चित रहो. हां, नाश्ता हलका कर के
ना."

घर वापस लौटते समय मल्लिका ने
ू से पूछा, "क्या हम लोग किसी और
पताल में एक्सरे और बायोप्सी नहीं करवा
कते?"

"मल्लि, इस हस्पताल में हमारे अपने
चित डाक्टर हैं. यहां हमें सुविधा रहेगी."

मल्लिका कुछ नहीं बोली. उस की
खों में आंसू भर आए.

दूसरे दिन डाक्टर उमा ने मल्लिका के
ने की एक्सरे फिल्म और घुटने के दर्द से
धित रिपोर्ट डाक्टर गोपाल को दिखाई.
रिपोर्ट देखने के बाद डाक्टर गोपाल ने

पूछा, "इस रोग के संबंध में पैथोलोजिस्ट
(रोग के कारणों का पता लगाने वाला
विशेषज्ञ) की क्या राय है?"

"वह इसे मैलिगनेंट मेलानोमा (एक
प्रकार का बहुत ही खतरनाक ट्यूमर) बता
रहे हैं."

"यह हो सकता है. यह बहुत ही
खतरनाक ट्यूमर होता है. इस की कोशिकाएं
बड़ी तेजी से फैल सकती हैं. यदि वास्तव में
मैलिगनेंट मेलानोमा ही है तो इस का तुरंत
आपरेशन करना पड़ेगा. यह एक ऐसा रोग है
जिस में यदि जान बच भी गई तो पैर तो
काटना ही पड़ेगा."

इसी समय डाक्टर सुंदर वहां आ गया.
"हा हा, आप लोग कोई खास बात
कर रहे हैं क्या? मेरे आने से बातचीत में कोई
व्यवधान तो नहीं पहुंचेगा?"

डाक्टर उमा ने लापरवाही से डाक्टर
सुंदर की ओर देखा.

डाक्टर गोपाल ने कहा, "डाक्टर सुंदर,
जरा यह एक्सरे और यह रिपोर्ट देख कर मुझे
अपनी राय तो दो. देखूं सचमुच तुम डाक्टरी
की डिगरी के लायक योग्यता रखते हो या
नहीं."

डाक्टर सुंदर तुरंत गंभीर हो गया और
एक्सरे फिल्म को ध्यान से देखने लगा. फिल्म
को और स्पष्ट देखने के लिए उस ने खुर्दबीन
का सहारा लिया. बाद में अपनी राय व्यक्त
करते हुए बोला, "इस में एक नीले रंग का
निवस ट्यूमर (जन्मजात ट्यूमर) है जो कोई
हानि नहीं पहुंचाता."

"अच्छा," डाक्टर उमा ने कहा, "फिर
मैं क्या करूं? यदि मैं तुम्हारी यह बात मान लूं
कि यह निवस ट्यूमर है इसलिए यह कोई
हानि नहीं पहुंचाएगा और यदि तुम्हारी बात
गलत निकलती है तब बिलावजह रोगी को
जान से हाथ धोना पड़ेगा."

"ठीक है. डाक्टर नरेश को आने दो,"
डाक्टर गोपाल ने कहा.

"वह कब तक आएंगे?" डाक्टर उमा
ने पूछा.

"एक हफ्ते के अंदर आ जाएंगे. वह अपने मित्रों के लड़केलड़कियों को मेडिकल कालिज में प्रवेश दिलाने के चक्कर में गए हैं. मेरे खयाल से प्रवेश दिलाने के इस धंधे में वह कम से कम 15 लाख रुपए तो कमा ही लेंगे."

"अपने से वरिष्ठ लोगों के बारे में ऐसी अपमानजनक बातें मत किया करो," डाक्टर गोपाल ने सुंदर से कहा.

"मैं डाक्टर की योग्यता और ज्ञान की तहेदिल से तारीफ करता हूं, लेकिन मैं उस के लालची स्वभाव से घृणा करता हूं," डाक्टर सुंदर ने कहा.

"मैं नहीं समझता कि डाक्टर नरेश जैसा बड़ा और मशहूर डाक्टर प्रवेश दिलाने के नाम पर लोगों के सामने पैसे के लिए हाथ फैलाएगा. उस के रोगी खुद उसे बहुत अधिक पैसे देते हैं," डाक्टर गोपाल ने कहा.

"वह स्वयं को प्रभावशाली बनाना चाहता है. यह उस की बीमारी है. पैसे के बल पर उच्च अधिकारियों से संपर्क बनाने में उसे सुविधा होती है. मैं सच बताता हूं, ध्यान से सुनो, वह एक विद्यार्थी को प्रवेश दिलाने के लिए 50,000 रुपए लेता है." यह कह कर डाक्टर सुंदर हंस दिया.

डाक्टर उमा ने बात का रुख मोड़ते हुए कहा, "मल्लिका एक गंभीर रोगी है. इसे ठीक करने के लिए हमें एक हफ्ते के अंदर इस के घुटने का आपरेशन करना होगा."

"जब तक बड़े डाक्टर नहीं आ जाते तब तक हम कुछ नहीं कर सकते," डाक्टर गोपाल ने उसे समझाया.

"इस ट्यूमर को ले कर इतना चिंतित मत होओ, उमा. यह हानिकारक नहीं है," डाक्टर सुंदर ने कहा.

"मूर्ख मत बनो. यह बहुत ही खतरनाक ट्यूमर है," डाक्टर गोपाल ने काफी ऊंची आवाज में कहा.

डाक्टर उमा ने यह सुन कर अपना सिर थाम लिया.

डाक्टर नरेश ने दो हजार से अधिक सफल आपरेशन किए थे. वह सचमुच एक माहिर शल्य चिकित्सक थे. अब लंबे... भरते, मुसकराते हुए वह हस्पताल आ...

डाक्टर सुंदर ने धीरे से उमा से... "देखो, डाक्टर नरेश के चेहरे पर मुस... है. मैं शर्त बदता हूं कि इस ने पांच... अधिक रुपए कमाए हैं."

"तुम क्या कह रहे थे, सुंदर?" नरेश ने पास आ कर पूछा.

"आप बहुत स्वस्थ और खुश दि... रहे हैं. मैं यही कह रहा था."

"धन्यवाद. मेरी अनुपस्थिति... लोगों ने यहां कोई गड़बड़ी तो नहीं की..."

"नहीं डाक्टर साहब, हम लोग... अच्छे लोग हैं. हम लो... कैसे कर सकते हैं."

"हमारे सामने एक समस्या आ... डाक्टर साहब," डाक्टर उमा ने कहा...

"अच्छा, बताओ क्या समस्या..."

उमा ने मल्लिका की एक्सरे फिल्... रोग से संबंधित रिपोर्ट उन को देखने... वह बड़े ध्यान से रिपोर्ट देखने लगे... मिनटों के बाद बोले, "उमा, इस... संबंध में तुम्हारा क्या निर्णय है?"

"एक्सरे से पता चलता है कि... संबंधी रोग है. मरीज के घुटने में ब... होता है और घुटने के नीचे एक लंब... रोक) है. या तो यह नीला निवस ट्यू... सकता है या फिर मैलिगनेंट मेलानोमा... तो जानते ही हैं कि दोनों इतने मिलते... दोनों में फर्क कर पाना मुशकिल है."

डाक्टर नरेश ने कुछ क्षण तक... किया फिर बोले, "डाक्टर सुंदर, तुम... निष्कर्ष निकाला है?"

"मैं समझता हूं कि यह आस्टियो... सार्कोमा (अस्थि जनक सार्कोमा) है."

डाक्टर गोपाल ने कहा, "सभी... को देख कर लगता है जैसे आस्टियो ब्ला... (अस्थि कोरक) क्रियाशीलता बढ़ र...

इन सभी डाक्टरों की राय सुनने... डाक्टर नरेश ने कहा, "इस रोग के... सभी कुछ बिलकुल अस्पष्ट सा है. त...

ताओ कि अब हमें क्या करना चाहिए."

डाक्टर गोपाल ने कहा, "मेरी समझ से तुरंत आपरेशन किया जाना चाहिए."

डाक्टर नरेश ने भौंहों पर बल दे कर कहा, "मेरे पास बिलकुल समय नहीं है. आपरेशन कक्ष 15 दिन तक के लिए बिलकुल खाली नहीं है. बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्ति आपरेशन के लिए इंतजार कर रहे हैं."

"लेकिन डाक्टर साहब, इस लड़की की जिंदगी खतरे में है," डाक्टर उमा ने कहा.

"अभी हम लोग यह निर्णय नहीं कर पाए हैं कि वास्तव में उसे कौन सा रोग है, इसलिए हम कैसे कह सकते हैं कि उस की जिंदगी खतरे में है. और फिर मैं इस लड़की का आपरेशन नहीं कर सकता."

'इस ने अपने धनी मरीजों से पैसे ले रखे हैं,' डाक्टर सुंदर मन ही मन बड़बड़ाया.

डाक्टर उमा की आंखों में आंसू आ गए. उस ने कहा, "डाक्टर साहब, वह एक गरीब लड़की है. उस की उम्र भी अभी बहुत कम है, उसे अभी नहीं मरने देना चाहिए."

डाक्टर नरेश का चेहरा सख्त पड़ गया. बोले, "क्या तुम ने स्वयं निर्णय ले लिया है कि उसका आपरेशन करना आवश्यक है?"

डाक्टर गोपाल ने कहा, "हम लोगों ने आपस में विचारविमर्श कर के आपरेशन करने का निर्णय लिया है और यह समस्या आप के सामने रखी है."

इस पर डाक्टर नरेश का चेहरा कुछ नरम पड़ा, बोले, "ठीक है, इस संबंध में अभी निर्णय लेता हूं," यह कह कर उन्होंने अपनी जेब से एक सिक्का निकाल कर उछाला, फिर उसे हथेली में ले कर बोले, "हेड. हस्पताल से इस रोगी को मुक्त कर दो."

यह देख कर डाक्टर उमा आश्चर्य में पड़ गई. उसे डाक्टर नरेश के शब्दों पर सहसा विश्वास ही नहीं हुआ. उस के दिल को धक्का लगा, बोली, "डाक्टर साहब, किसी के विषय में इस तरह निर्णय लेने का यह कोई तरीका नहीं है. यह किसी की जिंदगी और मौत का सवाल है."

यह सुनते ही डाक्टर नरेश का चेहरा गुस्से से तमतमा गया. बोले, "इस मरीज ने आपरेशन के लिए तुम्हें कितने रुपए घूस में दिए हैं?"

डाक्टर नरेश की यह बात उमा को तीर की तरह चुभी. उस ने तीखी आवाज में जवाब

दिया, ''डाक्टर, पैसे ले कर मरीजों को भरती करने की मेरी आदत नहीं है. यह युवती अभी बहुत कम उम्र की है और गरीब है. वह एक क्लर्क की बीवी है. उस के लिए मेरे दिल में सहानुभूति है, इसी लिए मैं उस का जीवन बचाना चाहती हूं.''

डाक्टर नरेश कुछ क्षणों तक उमा की ओर गुस्से से देखते रहे. फिर बोले, ''तुम मेरे सामने इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करो कि यह रोगी सचमुच मैलिगनेंट मेलानोमा से पीड़ित है. सभी स्लाइडों को मद्रास भेजो और उन की रिपोर्ट का इंतजार करो. देखो, वे क्या कहते हैं.''

उमा ने अपने आंसू पोंछे और एक्सरे फिल्म व रिपोर्ट ले कर चली गई.

थोड़ी देर बाद वह मल्लिका के पास गई. उस ने मल्लिका के घुटने को छुआ तो राजू उन्हें बड़ी चिंतित नजरों से देखने लगा. डाक्टर उमा के चेहरे पर वह ताजगी या होंठों पर वह मुसकराहट नहीं थी, जिस से उसे ढाढ़स बंधता. उस का दिल बुरी तरह घबराने लगा. उस ने बोलने की कोशिश की, पर एक भी शब्द उस के मुंह से नहीं निकला.

डाक्टर उमा ने कहा, ''मल्लिका, हम तुम्हें हस्पताल से मुक्त कर रहे हैं. एक हफ्ते बाद आना. तब तक उम्मीद है कि तुम्हारी बीमारी के विषय में कुछ पता चल जाएगा.''

मल्लिका ने खुश हो कर कहा, ''कोई गंभीर बात नहीं है. बस, हलकी सी मोच आ गई थी. यहां पर थोड़ा आराम किया तो दर्द गायब हो गया.''

डाक्टर उमा ने भी एक फीकी हंसी हंसते हुए कहा, ''मुझे खुशी है कि तुम आराम महसूस कर रही हो. लेकिन हमें इस बीमारी के विषय में आश्वस्त होना पड़ेगा. हम लोगों ने हड्डी के कुछ नमूने जांच के लिए मद्रास भेजे हैं आशा है वहां से एक या दो दिन में कोई जवाब आ जाएगा.''

लेकिन डाक्टर उमा की तमाम आशाएं निराशाओं में बदलती गईं, क्योंकि मद्रास से कोई जवाब नहीं आ रहा था. वहां की प्रयोगशाला में तकनीशियन हड़ताल कर रखी थी. उमा ने वहां के संबं अधिकारियों को तार भेज कर जल्द से जांच की रिपोर्ट भेजने का अनुरोध लेकिन वहां से कोई संतोषजनक उत्तर आ रहा था कि कब तक वे जांच की भेजेंगे. इंतजार करने के सिवा उन के और कोई चारा नहीं था.

डाक्टर गोपाल धीरेधीरे काफी थ था. कैंटीन में भीड़ नहीं थी. वह कुछ प सा था.

वह सोच रहा था कि मल्लिका कि सुंदर है. अभी तो उसे बहुत समय तक चाहिए. लेकिन इस गंभीर बीमारी के बेचारी का जीवन खतरे में पड़ गया है

''क्षमा करना, डाक्टर गोपाल.''

गोपाल ने सिर उठा कर देखा तो को खड़ा पाया. बोला, ''कहो भई, कैसे बैठो.'' फिर उस ने कैंटीन के लड़के से कप काफी लाने के लिए कहा.

सोमू बैठ गया. कुछ क्षणों बाद ''मैं ने डाक्टर नरेश के वार्ड में अपनी को भरती किया है, उसे एपेंडिसाइटिस

''इस में घबराने की कोई बात न यह तो बहुत ही मामूली आपरेशन है. लोग तुम्हारी पत्नी का ध्यान रखेंगे,'' डा गोपाल ने कहा.

''गोपाल, मैं चाहता हूं कि डा नरेश स्वयं यह आपरेशन करें,'' सोमू ने

डाक्टर गोपाल काफी का प्याला पर रख कर बोला, ''डा नरेश यह आपरेशन करने के लिए दो ह रुपए लेंगे.''

''क्या?'' सोमू चौंक कर बोला. समझता था कि यह सरकारी हस्पता इसलिए यहां मुफ्त में आपरेशन होता एक सरकारी कर्मचारी हूं, इसलिए हस्पताल से चिकित्सा संबंधी सेवा नि प्राप्त करना मेरा अधिकार है.''

''मैं ने कब कहा कि तुम्हें यह हस्पताल को देने हैं. चूंकि डाक्टर

आपरेशन करेंगे इसलिए ये रुपए उन्हीं को देने हैं."

"लेकिन यह तो बहुत अधिक फीस है," सोमू ने परेशान हो कर कहा.

"मैं ने तुम्हें फीस के विषय में बता दिया है. अब तुम जैसा ठीक समझो करो. यदि तुम दो हजार रुपए देने के लिए तैयार हो तो डाक्टर नरेश स्वयं यह आपरेशन करेंगे. आपरेशन सफल होगा, इस की गारंटी रहेगी. यहां तक कि आपरेशन का निशान भी नजर नहीं आएगा. यदि तुम उन्हें एक हजार रुपए दोगे तो वह अपने किसी सहायक से यह आपरेशन करवाएंगे और आपरेशन के सफल होने की गारंटी नहीं रहेगी. यदि तुम 500 रुपए दोगे तो हस्पताल का सब से जूनियर डाक्टर यह आपरेशन कर के अपना हाथ आजमाएगा, और तुम्हें यह मालूम है कि आज के ये जूनियर डाक्टर किस तरह के होते हैं."

इतना सुन कर सोमू आश्चर्य से गोपाल की ओर देखता रहा. फिर थोड़ी देर के बाद बोला, "गोपाल, क्या तुम इस में मेरी मदद नहीं कर सकते?"

"सोमू, तुम मेरे दोस्त हो, इसलिए मैं तुम्हें सारी बातें स्पष्ट रूप से बता रहा हूं. डाक्टर नरेश इस तरह के आपरेशन के 2,500 रुपए लेते हैं. इस में से 500 रुपए मुझे मिलते हैं और बाकी उन की जेब में जाते हैं. तुम मेरे दोस्त हो, इसलिए मैं यह पांच सौ रुपए नहीं लूंगा, लेकिन डाक्टर नरेश की जेब में जब तक दो हजार रुपए नहीं पहुंच जाएंगे, वह आपरेशन नहीं करेगा."

"गोपाल, डाक्टर नरेश पैसे ले कर इस तरह का काम करते हैं. ऐसे में तुम उन का विरोध न कर के क्या बढ़ावा नहीं दे रहे हो?"

"सोमू, मैं तुम्हें साफसाफ बता रहा हूं. मैं डाक्टर नरेश की देखरेख में एम.एस. (मास्टर आफ सर्जरी) कर रहा हूं. इस के लिए मुझे उन की निगाह में अच्छा बना रहना होगा. यदि मैं ने ऐसा नहीं किया तो मुझे यह डिगरी जल्दी नहीं मिल पाएगी. उन के लालची स्वभाव से मैं उन से घृणा करता हूं, लेकिन मजबूरी है, इसलिए उन की चापलूसी करनी पड़ती है. आजकल दुनिया में यही हो रहा है."

यह सुन कर सोमू ने परेशानी की हालत में अपने हाथों से अपने चेहरे को ढक लिया. कुछ पलों के बाद बोला, "मुझे दो हजार रुपए जुटाने के लिए अपना घर गिरवी रखना पड़ेगा."

"मैं क्या करूं, सोमू, मैं मजबूर हूं. मुझे इस बात का बहुत दुख है कि मैं तुम्हारी मदद नहीं कर पा रहा हूं. मैं तुम्हें अभी एक लड़की के विषय में बता रहा हूं. इस लड़की का नाम मल्लिका है. बेचारी की शादी हुए अभी कुछ ही समय हुआ है. उस के घुटने में दर्द था, इसलिए वह यहां आई थी. हम ने जब उस के घुटने का निरीक्षण किया तब पता चला कि वहां एक खतरनाक ट्यूमर है, जो अब कैंसर में बदल रहा है. यदि वह तुरंत आपरेशन करा ले तो उस का जीवन बच जाएगा, पर पैर काटना पड़ेगा. लेकिन जब डाक्टर नरेश को यह पता चला कि वह उन की फीस नहीं दे सकती है तो उन्होंने उसे हस्पताल से निकाल दिया. वह सिर्फ धनी मरीजों की ही चिंता करते हैं. बेचारी मल्लिका मरने की स्थिति में है."

यह सुनते ही सोमू अचानक उठ कर खड़ा हो गया. बोला, "चाहे जैसे भी हो, मैं आपरेशन के लिए पैसे का इंतजाम कर के रहूंगा. मैं अपनी पत्नी का आपरेशन केवल डाक्टर नरेश से ही करवाऊंगा. मैं पत्नी का जीवन दांव पर नहीं लगा सकता."

डाक्टर गोपाल के पीछे राजू बैठा था. वह गोपाल और सोमू की बातें

सुन रहा था. मल्लिका के विषय में यह [illegible] कर भय से उस का चेहरा फक पड़ गया [illegible] उस का दिमाग काम नहीं कर रहा था. [illegible] गोपाल और सोमू वहां से चले गए तो वह उठ कर चल दिया.

कुछ हफ्ते के बाद एक दिन डाक्[टर] उमा ने हस्पताल के अपने कार्यकक्ष में प्रवे[श] किया. उस के साथ काम करने वाले अन्य डाक्टरों ने जब उस का चेहरा देखा [तो] आश्चर्यचकित रह गए. उस का चेहरा का[फी] उतरा हुआ था.

"क्यों, क्या बात है, उमा? तुम्हा[रा] चेहरा इतना उतरा हुआ क्यों है?" डाक्[टर] गोपाल ने पूछा.

उमा ने भर्राई हुई आवाज में क[हा], "मल्लिका मर गई और उस के पति ने आ[ज] सुबह आत्महत्या कर ली." यह सुनते [ही] दोनों डाक्टर स्तब्ध रह गए.

"यह...यह...यह... क्या हुआ? ओह" डाक्टर सुंदर ने धीमे से दुख भरे स्वर में क[हा].

"यदि डाक्टर नरेश के अंदर थोड़ी [सी] भी मानवता होती तो दोनों का जीवन ब[च] सकता था," डाक्टर गोपाल ने कहा.

"उस राक्षस का नाम मत लो," डाक्[टर] सुंदर गुस्से में बोला.

तभी अचानक दरवाजे को धक्का दे क[र] डाक्टर नरेश ने कमरे में प्रवेश किया. बो[ला], "अरे भाई, आज एक बहुत बड़ी खुशी [का] समाचार है, अबूधाबी के एक बहुत ब[ड़े] हस्पताल में मुझे मुख्य शल्य चिकित्सक [के] रूप में नियुक्ति मिल गई है. वेतन 25,0[00] रुपए महीने है और साथ में तमाम सुविधा[एं] हैं. मैं अगले हफ्ते वहां जा रहा हूं. लेकिन तु[म] लोग इस तरह मुंह लटकाए क्यों खड़े हो? तु[म] लोग मेरी इस सफलता पर मुझे बधाई [क्यों] नहीं दे रहे हो. क्या बात है?"

डाक्टर सुंदर ने गुस्से में अपने दां[त] किटकिटाते हुए कहा, "हम लोगों को ब[ड़ी] खुशी है डाक्टर नरेश कि तुम यह हस्पता[ल] छोड़ कर जा रहे हो. इस हस्पताल को तुम [से] मुक्ति मिल रही थी, यह हमारे लिए सब[से] बड़ी खुशी की बात है."

इस स्कूल में आखिर ऐसी क्या विशेषता है जो एशिया ही नहीं, तमाम विश्व के युवक यहां प्रशिक्षण पाने की कोशिश करते हैं...

लेख • विवेक सक्सेना

भारतीय वायुसेना का सिगनल्स और नेवीगेशन स्कूल

जहां नेवीगेटर तैयार किए जाते हैं...

देश की सुरक्षा में भारतीय वायु सेना ने प्रारंभ से ही बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है. भारतीय वायु सेना का श्रेष्ठता के अनुसार विश्व में तीसरा स्थान है. हमारी वायु सेना न केवल युद्ध के दौरान अपने पराक्रम व रण-कौशल से दुश्मन को पराजित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है, बल्कि शांति के समय बाढ़, सूखा व विभिन्न प्राकृतिक विपदाओं में भी राहत कार्य करती है. विश्व में किसी भी देश की वायु सेना यह कार्य नहीं करती.

वायु सेना के पास दो तरह के विमान
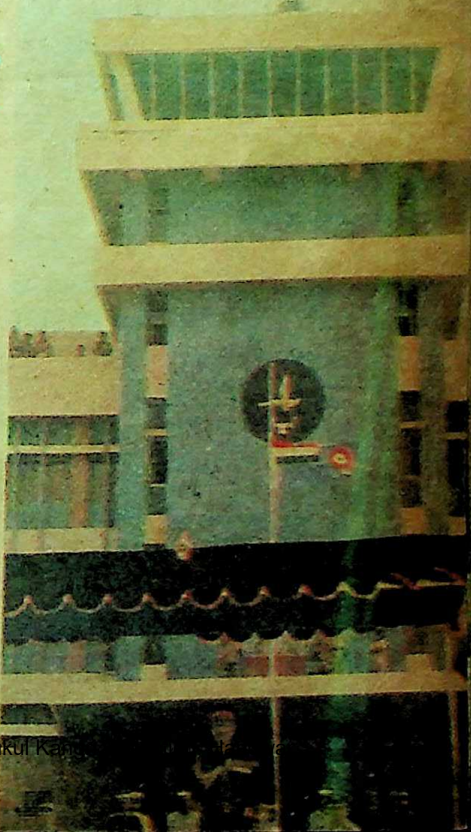
होते हैं. पहली तरह के विमान वे होते हैं जो केवल युद्ध में हिस्सा लेते हैं और राकेट, बम या गोलियां चला कर हमला करते हैं. दूसरे प्रकार के विमान परिवहन के काम आते हैं. लड़ाकू विमानों को छोड़ कर अन्य सभी विमानों में दो व्यक्तियों का सब से ज्यादा महत्त्व होता है. वे हैं चालक व नेवीगेटर.

जहां चालक चलाने का कार्य करता है, वहां नेवीगेटर की जिम्मेदारी विमान में ईंधन की जांच करने से ले कर उड़ान खत्म होने तक विमान चालक को बराबर निर्देश देते रहने की होती है. चूंकि पूरे विमान का संचालन नेवीगेटर के निर्देशों पर निर्भर करता है, इसलिए उस का योग्य एवं अनुभवी होना बहुत आवश्यक होता है.

नेवीगेटर का विमान चालन में बहुत अधिक महत्त्व होता है. नेवीगेटर का काम विमान चालक का मार्गदर्शन करना होता है. उस के निर्देशों के अनुसार ही विमान चालक विमान चलाता है. ऐसा इसलिए किया जाता है, क्योंकि विमान के विभिन्न उपकरण काफी अधिक जटिल होते हैं व अकेले व्यक्ति के लिए उन को संभाल सकना संभव नहीं होता.

अपने ढंग का अकेला स्कूल

बेगमपेट (हैदराबाद) में भारतीय वायु सेना का नेवीगेशन एंड सिगनल्स स्कूल है, जहां नेवीगेटर व उन के प्रशिक्षक दोनों ही तैयार किए जाते हैं. यह प्रशिक्षण केंद्र न केवल देश में बल्कि पूरे एशिया में अपने ढंग का अकेला केंद्र है. यहां भारतीय वायु सेना के अलावा विभिन्न देशों से आने वाले छात्र भी नेवीगेटर का प्रशिक्षण लेते हैं.

देश में नेवीनेशन का प्रशिक्षण देने वाला पहला संस्थान जनवरी 1949 में जोधपुर में खोला गया था. बाद में इसे 7 जनवरी, 1968 को वहां से हैदराबाद ले जाया गया. इस स्कूल में न केवल कुशल नेवीगेटर तैयार किए जाते हैं, बल्कि उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए योग्य एवं अनुभवी प्रशिक्षक भी तैयार किए जाते हैं. अतः यह अपने आप में एक ऐसी विशिष्ट संस्था है जहां छात्र व अध्यापक, दोनों को ही प्रशिक्षण दिया ज[illegible]

संस्था के मूल उद्देश्य

इस संस्था की स्थापना के मूल उद्दे[illegible] दो थे. पहला उद्देश्य वायु सेना के लिए योग्य नेवीगेटर तैयार करना था जो विश्व [illegible] किसी भी कोने में किसी भी मौसम में वि[illegible] चालक का मार्गदर्शन कर सकें. इन्हें वैसा प्रशिक्षण दिया जाता है जैसा कि इंगलैंड [illegible] रायल एयरफोर्स व अमरीकी वायु सेना [illegible] अपने नेवीगेटरों को दिया जाता है. यह वि[illegible] भी विमान का मार्गदर्शन कर सकते हैं [illegible] भविष्य में यह कार्य छोड़ने पर सि[illegible] आपरेटर या इलेक्ट्रानिक्स आफिसर के [illegible] में भी काम कर सकते हैं.

इस का दूसरा उद्देश्य इस संस्था [illegible] प्रशिक्षण देने या विभिन्न स्क्वैड्रनों [illegible] प्रशिक्षण देने अथवा अनुसंधान एवं वि[illegible] कार्यों के लिए अनुभवी प्रशिक्षक तैयार क[illegible] है.

इस संबंध में वहां के कमां[illegible] आफिसर व विशिष्ट सेवा पदक विजेता [illegible] कमांडर शाहुल तथा विंग कमांडर मि[illegible] हमें विभिन्न जानकारी प्रदान की. उ[illegible] बताया कि एशिया के किसी भी देश [illegible] नेवीगेटरों के लिए इतने अच्छे प्रशिक्षण [illegible] सुविधा उपलब्ध नहीं है. यही कारण है [illegible] अफ्रीका, मिस्र, इराक, जांबिया आदि दे[illegible] वहां की वायु सेनाओं के नेवीगेटर [illegible] प्रशिक्षण लेने आते हैं.

नेवीगेटर बनने के लिए न्यू[illegible] योग्यता विज्ञान में स्नातक होना है. इ[illegible] भौतिक विज्ञान, गणित एवं रसायनश[illegible] विषय होना आवश्यक है. इस के लिए [illegible] राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की परीक्षा पास [illegible] चुके उम्मीदवारों के अलावा सीधे भी हो[illegible]

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी से आने वा[illegible] उम्मीदवार, 'पायलट एप्टीट्यूड टेस्ट' [illegible] विमान चालन की अभिरुचि संबंधी प[illegible] पास नहीं कर पाते हैं, उन के लिए नेवी[illegible] बनने का विकल्प होता है. पायल[illegible]

नेवीगेटर के वेतन में किसी प्रकार का कोई अंतर नहीं होता. ये प्रशिक्षार्थी 6, 12 या 24 की संख्या में लिए जाते हैं. इस समय वहां 12 छात्र हैं. इन में से छः भारतीय व छः विदेशी हैं.

यह पाठ्यक्रम एक साल का होता है व छः छः माह के दो भागों में बंटा होता है. पहले छः माह उन को प्रारंभिक जानकारी प्रदान की जाती है व अंतिम छः माह में उन्हें विस्तृत व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है. विदेशी छात्रों को उन की सरकार अपनी तरफ से यहां भेजती है. भारत सरकार द्वारा विभिन्न देशों से राजनीतिक संबंधों के आधार पर ही उन्हें यहां बुलाया जाता है. ये छात्र प्रशिक्षण तो यहां प्राप्त करते हैं, पर उन्हें कमीशन उन के अपने देश में प्रदान किया जाता है.

विदेशी छात्रों के यहां आने के पीछे दो कारण हैं. पहला कारण तो यहां की विशिष्ट प्रशिक्षण सुविधाएं हैं. दूसरा मुख्य कारण यह है कि ब्रिटेन की रायल एयर फोर्स की तुलना में भारत द्वारा लिया जाने वाला प्रशिक्षण शुल्क काफी कम है. विदेशी छात्रों से इस प्रशिक्षण के लिए 18.5 लाख रुपए लिए जाते हैं. केन्या, जांबिया, इराक, मिस्र के अलावा इंडोनेशिया, बांग्लादेश व अफगानिस्तान आदि के वायु सेना अधिकारी भी यहां प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं.

विदेशी छात्रों की समस्या

विदेशी छात्रों के साथ अकसर एक मुख्य समस्या भाषा की होती है. इस के लिए यहां के प्रशिक्षकों को उन के साथ अतिरिक्त मेहनत कर के उन्हें अंगरेजी सिखानी पड़ती है.

यह पूरा प्रशिक्षण दो हिस्सों में बटा होता है. पहले हिस्से में उन्हें उड़ान का प्रशिक्षण दिया जाता है व दूसरे भाग में उन्हें कक्षा में उड़ान से संबंधित विभिन्न विषयों की जानकारी प्रदान की जाती है. इस के अलावा उन्हें व्यायाम व खेलकूद भी खिलाए जाते हैं. भारतीय कैडेटों को वायु सेना संबंधी नियम कानून की भी जानकारी प्रदान की जाती है.

उड़ान संबंधी प्रशिक्षण उन्हें पूरी तरह से भारत में निर्मित विमान एवरों में दिया जाता है. यह विमान हिंदुस्तान ऐरोनाटिक्स लिमिटेड, कानपुर द्वारा तैयार किया गया है. इस विमान में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए काफी परिवर्तन किए गए हैं. इस परिवर्तन में 1.6 करोड़ रुपए खर्च आया था.

नेवीगेटरों की कक्षा : उड़ान भरने से पहले नेवीगेटरों को उड़ान संबंधी विभिन्न विषयों की जानकारी दी जाती है.
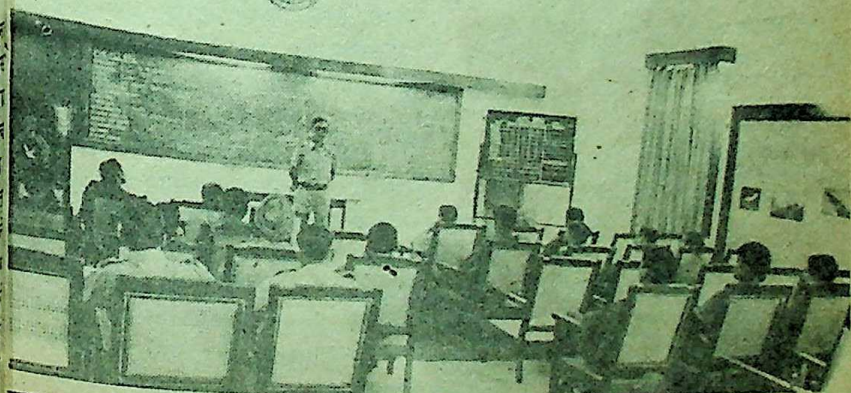
इस विमान में उन्हें प्रशिक्षण देने से पहले कक्षा में प्रशिक्षण दिया जाता है. कैडेटों की मेज के सामने एक बड़ा सा बोर्ड होता है, जिस पर विमान में काम आने वाले विभिन्न यंत्र जैसे ऊंचाई, गति, दिशा आदि बताने वाले यंत्र लगे होते हैं. कैडेटों को हर दिन विभिन्न मार्ग दिए जाते हैं, जिन पर उन्हें उड़ान भरनी होती है. वे मेज पर ही बैठेबैठे नक्शों व विभिन्न उपकरणों की सहायता विमान चालक का निर्देशन करते हैं. लगता है जैसे वे सचमुच विमान चालक निर्देश दे रहे हैं. उन के साथ खड़े प्रशिक्ष उन की सहायता करते हैं.

यहां नेवीगेटर अपने मार्ग बनाते हैं एस्ट्रोडाटा इंडिकेटर, कंपास, ड्रिफ्ट रिका एयर पोजीशन इंडिकेटर आदि की सहाय से चालक को निर्देश देते हैं. इस कक्षा इंस्ट्रूमेंट डिमांस्ट्रेशन रूम यानी उपकरणों प्रदर्शनों का कक्ष कहते हैं.

दीक्षांत समारोह में भाग लेते भारत के थल सेनाध्यक्ष क.व. कृष्ण राव.

प्रशिक्षण के लिए विशेष विमान

इस के बाद उन्हें एवरो विमान प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है. विशेष रू परिवर्तित किए गए इस विमान में एक स छः कैडेटों को प्रशिक्षण दिया जाता है. कैडेट के सामने एक पूरा बोर्ड होता है, जिस सारे उपकरण लगे होते हैं. इस में दो पायल व एक नेवीगेटर भी बैठता है. यह परिव विमान पूरे एशिया में इस तरह का प्रशिक्ष प्रदान करने वाला एकमात्र विमान है. इन कैडेटों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षक होते हैं.

कैडेट को वास्तविक उड़ानें भरने पहले इस बात का विस्तृत प्रशिक्षण प्र किया जाता है कि किस प्रकार से उसे नक्श को समझना चाहिए, किस प्रकार से विभि उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए व विभि परिस्थितियों में कैसे निर्णय लेने चाहि पहले सभी नेवीगेटरों को एक साथ प्रशिक्षण दिया जाता है. उस के बाद हर कैडे को अलगअलग यह सब कुछ सिखाया जा है.

इस समय उन्हें वही प्रशिक्षक अल समझाता है जो उन्हें विमान में उड़ते स प्रशिक्षण प्रदान करता है. हर कैडेट उड़ा पहले एक उड़ान कार्यक्रम (फ्लाइट प्ल तैयार करता है. उस की उड़ान से प डाक्टरी जांच होती है. उड़ान कार्यक्रम में उड़ान की दूरी, अवधि, मार्ग, सुरक्षा प्रबं विमान के बारे में जानकारी होती है
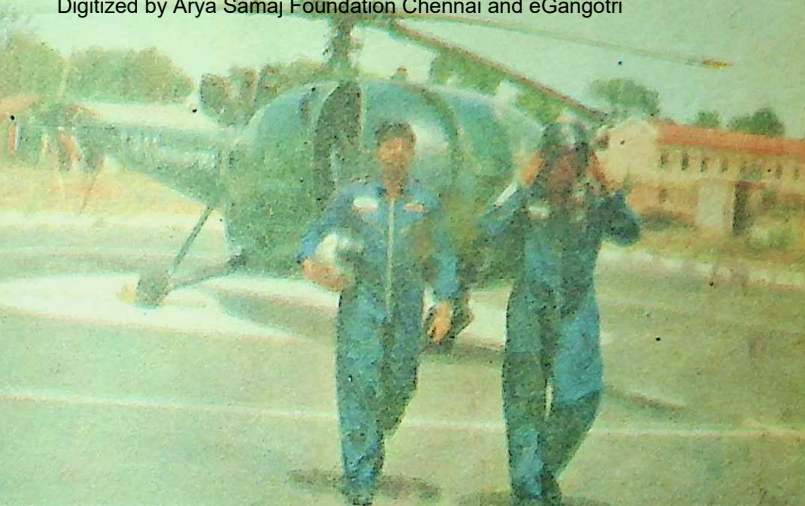
परीक्षण उड़ान के बाद लौटते पायलट और नेवीगेटर.

इस उड़ान के दौरान प्रशिक्षक उन पर पूरी तरह से नजर रखते हैं कि वे किस तरह से विमान चालक को निर्देश देते हैं और इसी आधार पर कैडेटों की योग्यता के बारे में अपना निर्णय लेते हैं. वे कैडेट को उस के द्वारा की जाने वाली गलतियों के बारे में विस्तार से बताते हैं और उन्हें यह भी समझाते हैं कि उन्हें उस समय क्या करना चाहिए था.

बिना प्रशिक्षक के स्वतंत्र उड़ान

यह पूरा प्रशिक्षण लगभग 20 से अधिक अभ्यासों में बंटा होता है. लगभग 70 घंटे तक प्रशिक्षक के साथ उड़ान भरने के बाद वह अवसर आता है जब कैडेट अकेले अपने जीवन की उड़ान भरता है, जिस में वह पूरी तरह से विमान चालक को निर्देश देता है.

यह उड़ान अधिकतम चार घंटे की होती है. एवरो विमान की ईंधन क्षमता 8,800 पौंड होती है. आमतौर पर इस में 4,800 पौंड ईंधन भरते हैं. यह प्रति घंटे 1,500 पौंड ईंधन खर्च करता है व एक घंटे की उड़ान का खर्च लगभग 4,000 रुपए आता है.

उड़ान भरने से पहले कैडेट को पूरी जानकारी प्रदान की जाती है. सब से पहले उसे मार्ग के बारे में बताया जाता है. उसे उस मार्ग के मौसम के बारे में विशेष तौर पर बताया जाता है व पूरे देश के मौसम के बारे में भी जानकारी दी जाती है.

उसे यह बताया जाता है कि यदि अचानक विमान उतारना पड़ जाए तो किनकिन स्थानों पर क्याक्या सुविधाएं उपलब्ध होंगी और उस के सामने क्याक्या समस्याएं आ सकती हैं. इंजीनियरिंग अधिकारी उसे विमान के बारे में पूरी जानकारी देगा कि कहां उसे कितना ईंधन भरवाना होगा. किस प्रकार से उसे पक्षियों से बचना होगा. पूरी उड़ान में कितना समय लगेगा, किस जगह कितनी ऊंचाई पर कितनी गति से उड़ना होगा, कहां कितना तापमान होगा. उन्हें ऐसा क्यों करना होगा, इस के कारण भी बताए जाते हैं.

शुरू में उन्हें लैंड मार्क या चिह्न भी बताए जाते हैं कि कितनी देर बाद कौन सा शहर, नदी, टीला, आदि आएगा व वहां पहुंचने में उन्हें कितना समय लगेगा. पर बाद में जब कैडेट को पूरी तरह से प्रशिक्षण मिल जाता है तो वह कभी उन संकेत चिह्नों का उपयोग नहीं करता.

विमान की भी पूरी तरह से जांच की
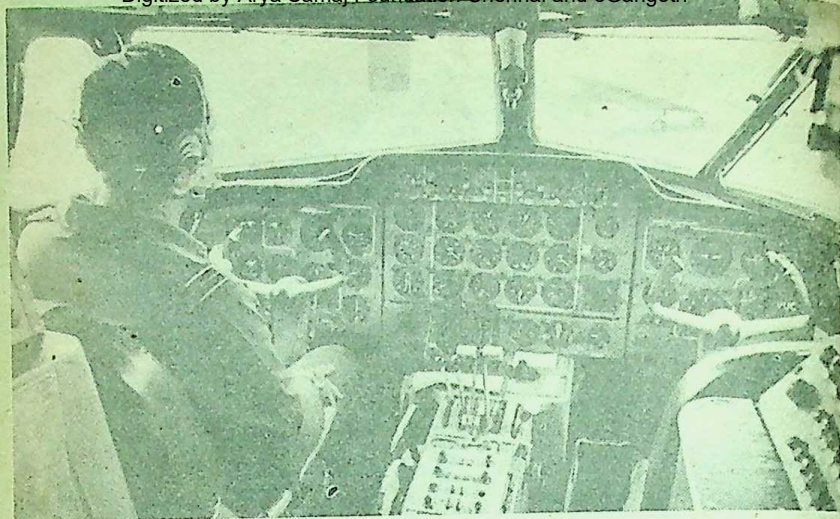
विमान चालक का सही मार्ग निर्देशन करने के लिए नेवीगेटरों को कड़ा प्रशिक्षण दिया जाता है.

जाती है. उड़ान से पहले व उड़ान के बाद उस की जांच होती है. उस के हर उपकरण व पुरजे की अवधि निर्धारित होती है और वह अवधि पूरी होते ही भले ही वह पुरजा या उपकरण पूरी तरह से ठीक क्यों न हो, उसे बदल दिया जाता है. किसी भी तरह का कोई जोखिम मोल नहीं लिया जाता.

प्रशिक्षकों का पाठ्यक्रम छः माह का होता है. ये सभी प्रत्याशी प्रशिक्षित पायलट होते हैं. एक पाठ्यक्रम के लिए छः प्रशिक्षकों का चयन किया जाता है. दो प्रशिक्षक भारतीय वायु सेना से, दो जल सेना से व दो विदेशी होते हैं. इस के लिए चार से आठ वर्ष तक उड़ान भरने का अनुभव व कम से कम 1,600 घंटे विमान चलाने का अनुभव होना जरूरी है.

प्रशिक्षार्थी कैडेटों को हिंदुस्तान ऐरोनाटिक्स लिमिटेड, लखनऊ में उड़ान के काम आने वाले विभिन्न उपकरणों की जानकारी प्रदान की जाती है. उन्हें उड्डयन से संबंधित संपूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है. इस पर वे कक्षाओं में बहस भी करते हैं. उन्हें कितनी मेहनत व लगन से तैयार किया जाता है, इस का जीताजागता उदाहरण यह कि पिछले सात सालों में वहां एक भी कैडे फेल नहीं हुआ, जब कि डिडीगुल स्थि एयरफोर्स अकादमी में केवल एक बार ऐ हुआ था जब कि वहां के पायलटों क परीक्षाफल शतप्रतिशत रहा था.

इन कैडेटों की दिनचर्या काफी व्यस होती है. सुबह 5-30 बजे से ले कर रात के । बजे तक ये लोग बेहद व्यस्त रहते हैं. सुब उठ कर उन्हें आधे घंटे शारीरिक व्याया करना पड़ता है. उस के बाद वे नहाते हैं औ नाश्ता करते हैं. 7-30 बजे वे अपनी कक्षा में पहुंच जाते हैं. उन्हें छः घंटे तक विभि विषय पढ़ाए जाते हैं जो उड़ान से संबंधि होते हैं. 1-30 बजे वे भोजन करने जाते हैं दोपहर में आराम करते हैं. शाम को चार ब उन्हें खेलने जाना पड़ता है. आम तौर पर वालीबाल, टेनिस, स्क्वैश आदि खेलते हैं

6-30 से 8-30 तक उन्हें खुद अ आप पढ़ना होता है और फिर रात का भोज कर के वे 10 बजे तक सो जाते हैं. छुट्टियों दिन वे आराम करते हैं. इस तरह क परिश्रम व लगन से वे विमान चालन

संबंधित उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं जो उन के व देश के हित के लिए बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण साबित होती है. उन की प्रतिभा को और अधिक विकसित करने के लिए महीने में एक बार उन की सभा होती है और प्रतिभावान कैडेटों को और भी अधिक प्रोत्साहित किया जाता है.

यह सब प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए कमांडिंग अफसर के साथ अनुभवी, योग्य एवं प्रतिभावान प्रशिक्षक व विमान चालक को हर महीने 50 से 60 घंटे तक की उड़ान भरनी पड़ती है जो सामान्य कार्य नहीं है.

प्रशिक्षकों की गतिविधियां

इसी तरह स्कूल के प्रशिक्षक मुख्य नेवीगेशन प्रशिक्षक से सलाह लेते रहते हैं. इस के अलावा मौसम विभाग, ऐरोनाटिक्ल इंजीनियरिंग एवं अन्य अधिकारी गणित, भौतिक विज्ञान, इलेक्ट्रानिक्स, मौसम विज्ञान आदि की कक्षाएं लेते हैं. मुख्य ग्राउंड इंस्ट्रक्टर उन के शारीरिक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देते हैं.

विभिन्न टेक्नीशियन जो इंजन, विमान के ढांचे, उपकरणों, रेडियो, राडार आदि का रखरखाव करते हैं, हमेशा यूनिट इंजीनियरिंग अधिकारी की देखरेख में फुरती से काम निबटाते रहते हैं. यह उन की ही मेहनत का परिणाम है कि हमेशा विमान पूरी तरह से उड़ान भरने योग्य बना रहता है. 1975 से ले कर आज तक किसी तरह की कोई दुर्घटना नहीं हुई.

कैडेटों के लिए वहां एक पुस्कालय भी है, जहां नेवीगेशन से संबंधित हजारों पुस्तकें उपलब्ध हैं. यहां की एक विशेषता यह भी है कि उन्हें जमीन पर ही उड़ान के हर तरह के अनुभव कराने वाला सिमुलेटर भी है. विदेशी सिमुलेटर की कीमत 16 करोड़ रुपए है, जब कि यहां स्थिति एक अन्य सिमुलेटर नेवीगेशन सिंथेटिक ट्रेनर को पूरी तरह से भारत में ही तैयार किया गया है.

इस संस्थान द्वारा समयसमय पर वायु सेना मुख्यालय से प्राप्त निर्देशों के अनुसार उड़ान संबंधी कार्य भी किए जाते हैं. आवश्यकता पड़ने पर यह संचार संबंधी कार्यों में भी अपना योगदान देता है. इस के अलावा, बाढ़, सूखा, दुर्घटनाओं आदि में भी

कमीशन प्राप्त करते नेवीगेटर : कुशलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा करने और पड़े परीक्षण के दौर से गुजरने के बाद ही कोई नेवीगेटर बन पाता है.

स्कूल में प्रशिक्षण ले रहे विदेशी प्रशिक्षार्थी : प्रशिक्षण शुल्क काफी कम होने से अधिक यहां की विशिष्ट प्रशिक्षण सुविधाएं विदेशियों को आकर्षित करती हैं.

राहत कार्य कर के यह विशिष्ट योगदान देता है.

इतना सब होने के बावजूद लोग विमान चालक बनने में ज्यादा रुचि लेते हैं. इस का मुख्य कारण यह है कि उन के मन में यह भावना भर चुकी है, जो किसी सीमा तक सही भी है कि आगे चल कर विमान चालक के लिए पदोन्नति की संभावनाएं काफी अधिक होती हैं.

नेवीगेटर बनने से अरुचि क्यों?

इस के अलावा एक विमान चालक की तुलना में नेवीगेटर को कहीं अधिक कठिन प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है.

उन की उपेक्षा का दूसरा कारण यह भी है कि विमान चालक के लिए वायु सेना छोड़ने के बाद कहीं भी नौकरी प्राप्त करना आसान होता है जब कि नेवीगेटर को व्यावसायिक विमान कंपनियों में उतनी जल्दी नौकरी नहीं मिल पाती. वैसे वायु सेना में नेवीगेटरों को बाद में प्रबंध संबंधी कार्य सौंपे जाते हैं और वे भी काफी अच्छा वेतन पाते हैं.

एक विशेष बात यह भी है कि आजकल जितने भी आधुनिक लड़ाकू विमान हैं, उन में केवल एक ही व्यक्ति होता है. उन मे नेवीगेटर की आवश्यकता नहीं होती चालक को ही सारा कार्य खुद करना पड़ता है अकेले व्यक्ति के लिए इतने जटिल उपकरण को संभालना बेहद कठिन हो जाता है विशेषकर गंभीर स्थिति में दो व्यक्तियों द्वार उस स्थिति का हल खोजना अपेक्षाकृत आसान हो जाता है.

नई संभावनाएं नए कार्यक्षेत्र

अमरीका व इंगलैंड इस विषय पर गंभीरता से अध्ययन कर रहे हैं कि क्या लड़ाकू विमानों में नेवीगेटर का होना आवश्यक है. वास्तव में कोई भी विमान या उस का उपकरण कितना भी प्रभावी क्यों न हो, उस की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि क्या अकेला व्यक्ति उसे संभाल या उस का संचालन कर सकता है. खास तौर पर फाकलैंड युद्ध में ब्रिटेन के एकमात्र चालक वाले हैरियर विमानों की असफलता ने यह साबित कर दिया है कि नेवीगेटर का महत्त्व केवल व्यापारिक उड़ानों एवं यातायात संबंधी उड़ानों तक ही सीमित नहीं रह गया है.

"पाकिस्तान और भारत मिल कर फिल्म बनाएं"

राज बब्बर

राज बब्बर और सिपल कपाड़िया : एक ही अभिनेत्री और एक ही तरह की भूमिकाएं पसंद नहीं.

फिल्मों में आने से पहले तक रंगमंच का एक सफल कलाकार होने के बावजूद फिल्मों में सफल क्यों नहीं हो पा रहा?

भेंटवार्ता • स. खान

हिंदी फिल्म प्रेमियों के लिए राज बब्बर का नाम अब कोई नया नहीं रह गया है. अपने दोएक साल के फिल्मी जीवन में ही उस ने जो ख्याति अर्जित की है वह अपने आप में एक उदाहरण है. 'इंसाफ का तराजू', 'सौ दिन सास के', 'जजबात', 'आप तो ऐसे न
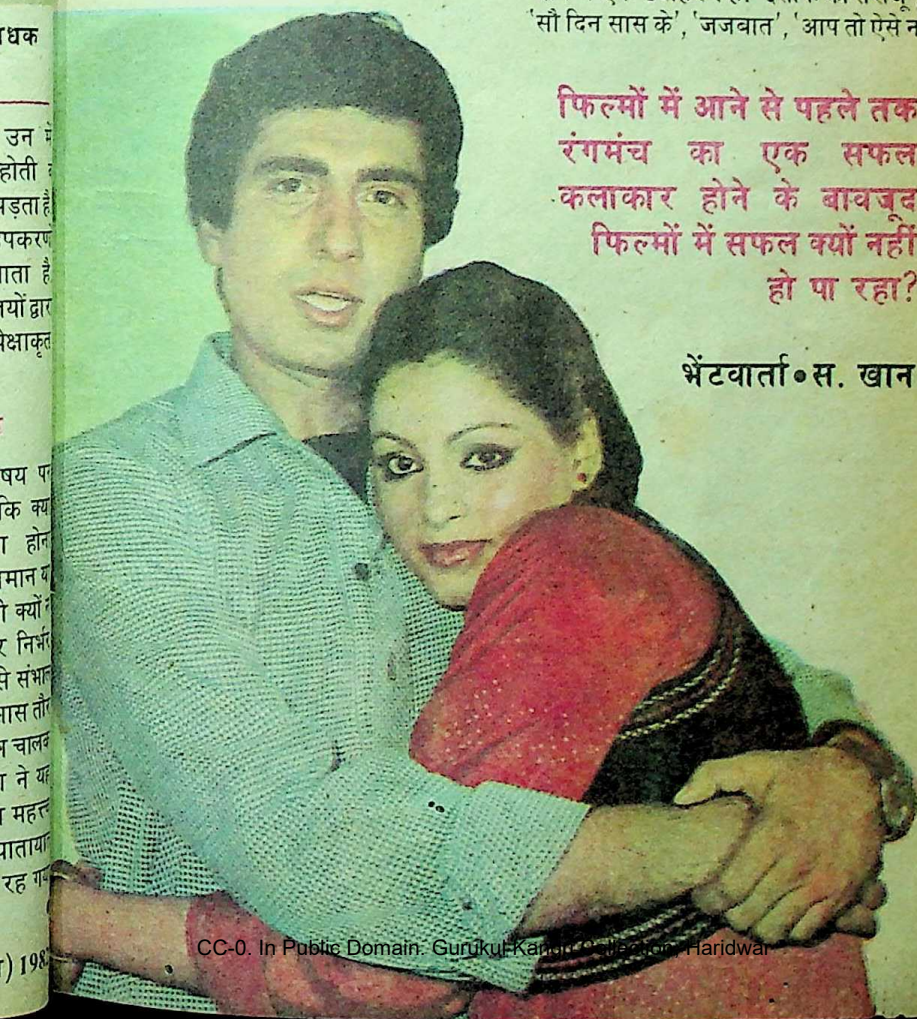
थे', 'नजराना प्यार का', 'पूनम', 'हम पांच', 'साजन मेरे मैं साजन की', 'ज्वालामुखी', 'तजुर्बा', 'शारदा', 'आपस की बात', 'अरमान', 'यह रिश्ता न टूटे', 'प्रेम गीत' और 'जीवन धारा' आदि फिल्में थोड़ेथोड़े समय बाद ही प्रदर्शित होती रही हैं जिन के कारण राज बब्बर ने दर्शकों में अपनी एक अच्छीखासी पहचान बना ली है.

फिलिमस्तान स्टूडियो में फिल्म 'रिश्ता कागज का' की शूटिंग में राज बब्बर से भेंट हुई. गरमी के कारण वह लान में कुरसी डाले बैठे थे. पूछने पर वह अपनी और अपने संघर्ष के दिनों की कहानी सुनाने लगे.

राज बब्बर कहां से कहां

"पाकिस्तान में पांच हजार फुट की बुलंदी पर बसा कोयटा शहर हमारे बुजुर्गों का शहर है. यह शहर आज भी हमारे बुजुर्गों को बहुत याद आता है. वैसे मेरा संबंध आगरा से है. आगरा ही में 23 जून, 1952 को मेरा जन्म हुआ. मुझे बचपन ही से अभिनय में रुचि रही है. पटियाला विश्वविद्यालय से बी. ए. करने के बाद मैं ने दिल्ली के नेशनल स्कूल आफ ड्रामा में प्रवेश लिया. यहां मैं ने 'यासमीन', 'तुगलक' और 'रजिया सुलतान' नामी ड्रामे किए, जो बेहद लोकप्रिय हुए नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के बाद मैं दिल्ली दूरदर्शन पर भी ड्रामे करने लगा. 'उस बस्ती में' और 'मिस्टर अभिमन्यु' में मेरे बेहतरीन किरदार थे, जिसे दर्शकों ने बेहद सराहा. परंतु मेरा अभिनेता मन इस से भी संतुष्ट नहीं हुआ और मैं फिल्मों में जाने का विचार करने लगा.

"उन्हीं दिनों दिल्ली में 'यूनायटेड फिल्म प्रोडयूसर्स काऊंसिल' की तरफ से नए कलाकारों का चुनाव किया जा रहा था. मैं भी उस में शामिल हो गया. चुनाव करने वालों में मोहन सहगल, बलदेवराज चोपड़ा और फकीरचंद मेहरा जैसी जानीमानी हस्तियां थीं. उन्होंने मेरा अभिनय देख कर मुझे पास कर दिया और बंबई बुला लिया. मगर यहां किसी ने भी मुझे अपनी फिल्म में काम नहीं दिया. मजबूर हो कर मैं दिल्ली वापस चल[ा] गया. उस के बाद दिल्ली में एक दिन लेखक जावेद (सलीम जावेद) से मुलाकात हो गई उन्होंने मुझे बंबई आने के लिए कहा. बंबई में उन्होंने कई लोगों से मेरा परिचय करा[या] मगर काम न मिलना था और न मिला और मैं पहले की तरह एक बार फिर वापस चल[ा] गया.

"बंबई से लौट कर कुछ ही दिन हुए थे कि बलदेवराज चोपड़ा मुझ से मिलने आ गए उन्होंने मेरे ड्रामे देखे थे. सो उन्होंने मुझे अपनी एक फिल्म के लिए अनुबंधित कर लिया. मगर दुर्भाग्य ने यहां भी पीछा नहीं छोड़ा. वह फिल्म किसी कारण शुरू न हो सकी. इसी दौरान प्रकाश मेहरा ने 'ज्वालामुखी' की एक छोटी सी भूमिका के लिए मुझे प्रस्ताव भेजा. जिसे मैं ने स्वीकार कर लिया. उस के बाद बलदेवराज चोपड़ा ने मुझे ले कर 'इंसाफ का तराजू' शुरू की. परं[तु] मेरी सब से पहले प्रदर्शित होने वाली फिल्म थी 'सौ दिन सास के'." राज बब्बर अप[ने] संघर्ष के दिनों की कहानी कहतेकहते कहीं खो गए थे.

संघर्ष के बाद

"संघर्ष के दिनों की कहानी याद कर[के] आप क्या सोचते हैं?"

"यही कि जीवन का ही दूसरा नाम संघर्ष है. संघर्ष किए बगैर कहीं भी कुछ नहीं हो सकता. संघर्ष से घबराने वाले या संघर्ष [न] करने वाले दूसरों से हमेशा पीछे रहते हैं. [मैं] बंबई से दोतीन बार वापस लौट गया था. अगर मैं ने निराश हो कर फिल्मों में संघर्ष करने का खयाल छोड़ दिया होता तो लो[ग] आज न मुझे जान रहे होते और न आज आ[प] मुझ से भेंटवार्ता करने आते. कहने का मतलब यह है कि संघर्ष ही सफलता है. संघर्ष कीजि[ए] और सफलता पाइए."

"आप को काम करने का सब से ज्या[दा] मजा कहां आया—फिल्मों में या स्टेज पर?"

"अभिनय के हिसाब से मुझे स्टेज [पर] काम करने में ज्यादा मजा आता है. इस[...]
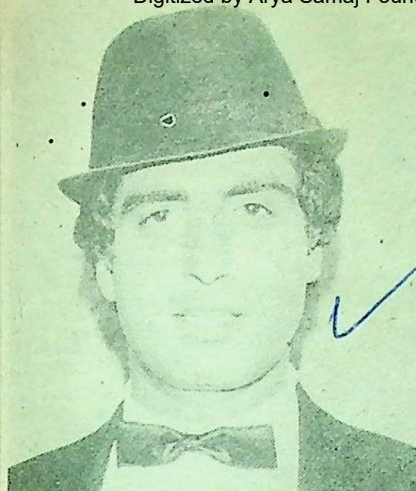
राज बब्बर : मंच पर काम करने में ज्यादा मजा आता है.

वजह शायद यह है कि स्टेज पर अभिनय में आप का दिमाग और आप की सोच कहानी के साथसाथ चलते रहते हैं. आप चरित्र के हिसाब से अगर सही अभिनय कर रहे हैं तो इस का अंदाजा आप को उसी समय हो जाता है जब दर्शक तालियां बजाने लगते हैं और अगर अभिनय खराब है तो उसी समय लोग 'थूथू' भी करने लगते हैं. जब कि फिल्मों में अभिनय का एक दूसरा रूप है. यहां एकएक शाट अलगअलग समय और अलगअलग दिन में फिल्माया जाता है. अलबत्ता स्टेज के मुकाबले में फिल्म का दायरा काफी बड़ा है".

"फिल्मों में आने के लिए क्या आप ने किसी इंस्टिट्यूट वगैरह में दाखिला लिया था?"

"बुनियादी तौर पर भारत के फिल्म उद्योग में तीन इंस्टिट्यूट हैं– दिलीपकुमार इंस्टिट्यूट, देव आनंद इंस्टिट्यूट और राज कपूर इंस्टिट्यूट. और तीनों अपनीअपनी बुलंदियों पर खड़े हैं. तीनों का अपनाअपना एक ढंग है. हमारे फिल्म उद्योग में इन के बाद जितने भी कलाकार आए हैं, वे किसी न किसी रूप में इन में से किसी से प्रभावित जरूर हुए हैं. मैं ने इन तीनों से केवल सीखा है और अभी भी सीख रहा हूं आइंदा भी मेरी यह कोशिश रहेगी कि इन तीनों से ज्यादा से ज्यादा सीखूं. इस के अतिरिक्त मैं स्टेज पर भी अभिनय करता रहा हूं. इसलिए फिल्मों में आने के लिए किसी इंस्टिट्यूट की जरूरत महसूस नहीं की."

"फिल्मों में आने वाला हर कलाकार किसी न किसी हीरोइन के साथ जोड़ी जरूर बनाना चाहता है. फिर आप ने अब तक किसी के साथ जोड़ी क्यों नहीं बनाई?"

"मैं किसी खास हीरोइन के साथ काम करने का इच्छुक नहीं हूं, क्योंकि मैं अगर किसी खास हीरोइन के साथ फिल्मों में बारबार आता रहूंगा तो दर्शक एक ही जोड़ी और एक ही जैसे अभिनय को बारबार देख कर उकताहट महसूस कहने लगेंगे और मैं भी उस हीरोइन के अभिनय और उस के काम के ढंग से इस कदर परिचित हो जाऊंगा कि फिर मुझे अभिनय में भी कोई नयापन और कोई अछूता रंग पैदा करना मुशकिल हो जाएगा. इसलिए मैं चाहता हूं कि किसी एक हीरोइन के साथ काम न कर के तमाम हीरोइनों के साथ काम करूं. ताकि अभिनय में कुछ नई बात पैदा हो सके."

"आप को किस तरह की भूमिकाएं निभाने में अधिक रुचि है?"

"किसी खास प्रकार की भूमिकाओं को निभाने की ख्वाहिश नहीं है. मगर हां अपनी भूमिकाओं में भिन्नता जरूर चाहता हूं. और चाहता हूं कि हर प्रकार की भूमिकाएं मिलें. मैं अपनी तरफ से हमेशा यह कोशिश करता रहूंगा कि अच्छे से अच्छा काम करूं और जो भी भूमिका मुझे मिले, मैं उस के साथ पूरापूरा न्याय करूं. मैं अपने प्रशंसकों को निराश नहीं करना चाहता."

"पिछले दिनों आप फिल्म 'दूर देश' की शूटिंग के लिए कनाडा गए थे. सुना है उस फिल्म में आप के साथ पाकिस्तानी अभिनेता नदीम भी हैं?"

"जी हां, 'दूर देश' में मेरे साथ पाकिस्तानी अभिनेता भी हैं. वह एक अच्छा

मुक्ता।

राज बब्बर और स्मिता पाटिल : सभी अभिनेत्रियों के साथ काम करने की कोशिश.

तजरबा है. नदीम के साथ काम करने में बेहद मजा आया. नदीम बहुत अच्छे फनकार हैं. अगर पाकिस्तान और भारत मिल कर फिल्म बनाएं तो यह दोनों देशों के लिए बहुत अच्छा होगा. पाकिस्तान में भी सुना है बहुत अच्छेअच्छे फ़नकार हैं. खास तौर पर मुहम्मद अली, वहीद मुराद और नदीम के बारे में तो काफी कुछ सुना है. जेबा, बाबरा शरीफ, शबनम और रानी का भी नाम सुनते हैं. फन को सीमा में कैद कर देना अच्छी बात नहीं है. मैं चाहता हूं कि वहीद मुराद के साथ भी काम करूं, मुहम्मद अली के साथ भी काम करूं, बाबरा शरीफ व दूसरी अभिनेत्रियों के साथ भी काम करूं. यह बात हम सभी के लिए बहुत अच्छी होगी. मैं ने पाकिस्तानी टेलीविजन के कुछ प्रोग्राम देखे हैं. बहुत ही दिलचस्प होते है और मैं वाकई उन से बेहद प्रभावित हूं. मेरा खयाल है कि दोनों देशों को टी. वी. और फिल्म दोनों क्षेत्रों में सहयोग करना चाहिए."

"अपनी घरेलू जिंदगी के बारे में हमारे पाठकों को कुछ बताएंगे?"

"जी हां, जरूर बताऊंगा बल्कि मुझे यह बताते हुए बेहद खुशी होगी. मेरी पत्नी का नाम नादिरा जहीर है और वह उर्दू के प्रसिद्ध लेखक सज्जाद जहीर की बेटी है. नादिरा को भी स्टेज से बेहद लगाव है. देखा जाए तो स्टेज ने ही हम दोनों को मिलाया है. उस से मेरी मुलाकात दिल्ली के नेशनल स्कूल आफ ड्रामा में हुई थी. हम दोनों स्टेज पर साथ ही काम किया करते थे. वहीं से हम ने एकदूसरे को जाना और फिर शादी कर ली. शादी के बाद भी हम दोनों ने कई ड्रामों में साथ काम किया. हमारी दो बड़ी प्यारी और खूबसूरत सी बच्चियां हैं. मै खुद को बड़ा खुशनसीब समझता हूं कि मेरी घरेलू जिंदगी बड़ी हंसीखुशी से गुजर रही है. मेरी पत्नी एक समझदार और जहीन औरत है. वह घर और स्टेज की तमाम जिम्मेदारियां समझती है. शादी के बाद भी वह स्टेज से जुड़ी हुई है. हम दोनों एकदूसरे को अच्छी तरह समझते हैं और एकदसरे का परापरा खयाल रखते हैं.

कमल हासन विवाद.

फिल्म 'एक दूजे के लिए' में लोगों ने कमल हासन की काफी तारीफ की थी. यहां तक कहा था कि वह अमिताभ बच्चन को पीछे छोड़ जाएगा. लेकिन बाद में उस की दो फिल्में 'दो दिल दीवाने' और 'प्यार का तराना' कब आईं, कहां गईं, कुछ पता ही नहीं चला.

हाल ही में कमल हासन और रीना राय की एक फिल्म 'सनम तेरी कसम' प्रदर्शित हुई है. फिल्म काफी चलेगी, ऐसा लोगों का अनुमान है, लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि कमल हासन ज्यादा दिन नहीं चल सकेगा. उन की दलील यह है कि एक तो कमल हासन की गुच्छेदार मूंछें बहुत बुरी लगती हैं. (जिसे वह किसी भी फिल्म में कटाने से मना कर देता है) दूसरे उस का अभिनय भी ऐसा है जैसे सरकस का कोई जोकर हो. इस के बावजूद 'सनम तेरी कसम' की सफलता से कमल हासन को काफी फिल्में मिलने की

कमल हासन : ज्यादा फिल्म मिलना क्या फिल्म जगत की भेड़चाल का नतीजा है?

उम्मीद की जा सकती है. इस की वजह यह है कि हमारे फिल्म जगत की भेड़चाल मशहूर है. किसी की एक फिल्म सफल होने पर उसे 20 फिल्में मिल जाती हैं.

किशोरकुमार की सनक

फिल्म जगत में किशोरकुमार सनकी के नाम से मशहूर है. इन दिनों वह अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी मारने पर तुला हुआ है. कुछ दिनों पहले वह महबूब स्टूडियो के मालिक इकबाल खां से उलझ पड़ा था और ...ली थी कि आइंदा महबूब स्टूडियो में अपने गीतों की रिकार्डिं... नहीं करेगा. हाल ही में किशोरकुमार ने ... और कसम खाई है कि जो संगीतकार अन... शब्बीरकुमार, महबूब चौहान ... पार्श्वगायकों को मौका दे रहे हैं, उन... निर्देशन में किशोरकुमार कभी नहीं गाए...

इस का नतीजा यह हुआ कि ... खन्ना, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, कल्याण... आनंदजी आदि संगीतकार किशोरकुमार... बहिष्कार कर रहे हैं. अब हालत यह है... किशोरकुमार भप्पी लाहिड़ी और राहुल... बर्मन को मसका लगाने में लगा है, क्योंकि... दोनों बंगाली बंधुओं ने भी अगर किशोर... हरी झंडी दिखा दी तो फिर वह कहीं का... रहेगा.

किशोरकुमार : संगीतकारों व गीतकारों के प्रति अक्खड़ मिजाजी कहीं ले न डूबे.

राजेंद्रकुमार की परेशानी

इन दिनों राजेंद्रकुमार अपनी एक फिल्म 'लवर्स' के कारण काफ़ी परेशान है. हुआ यह कि उस्मान गनी काजी नामक एक निर्माता ने भी इसी नाम से एक फिल्म शुरू कर दी है जिस में जूनियर महमूद, तारिक शाह और नीता मेहता काम कर रहे हैं. मजे की बात यह है कि उस्मान गनी काजी ने 'लवर्स' का नाम वेस्टर्न इंडिया प्रोड्यूसर एसोसिएशन में उस दिन रजिस्टर्ड कराया था, जिस दिन राजेंद्रकुमार ने इस नाम का रजिस्ट्रेशन इंडियन मोशन पिक्चर्स एसोसिएशन (इंपा) में कराया था.

दोनों फिल्मों की शूटिंग जोरशोर से चल रहा है और इसी पर मामला भी 'इंपा' में चल रहा है. पिछले दिनों 'इंपा' के सदस्य रामदयाल, श्रीराम बोहरा और अन्य लोगों की बैठक में इस मामले पर काफी बहस हुई, लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला. अगर आगे भी इसी तरह की बैठकें होती रहीं और फैसला न हो सका तो एक ही नाम की दो फिल्में एक साथ लोगों को देखने को मिलेंगी, हां हीरोहीरोइन बदल जाएंगे.

परवीन बाजी मार गई

फिल्म 'नमक हलाल' में स्मिता पाटिल और परवीन बाबी दो हीरोइनें हैं. कला फिल्मों की हीरोइन के रूप में स्मिता ने अपने

राजेंद्रकुमार : नई फ़िल्म 'लवर्स' सिर-दर्द साबित हो रही है.
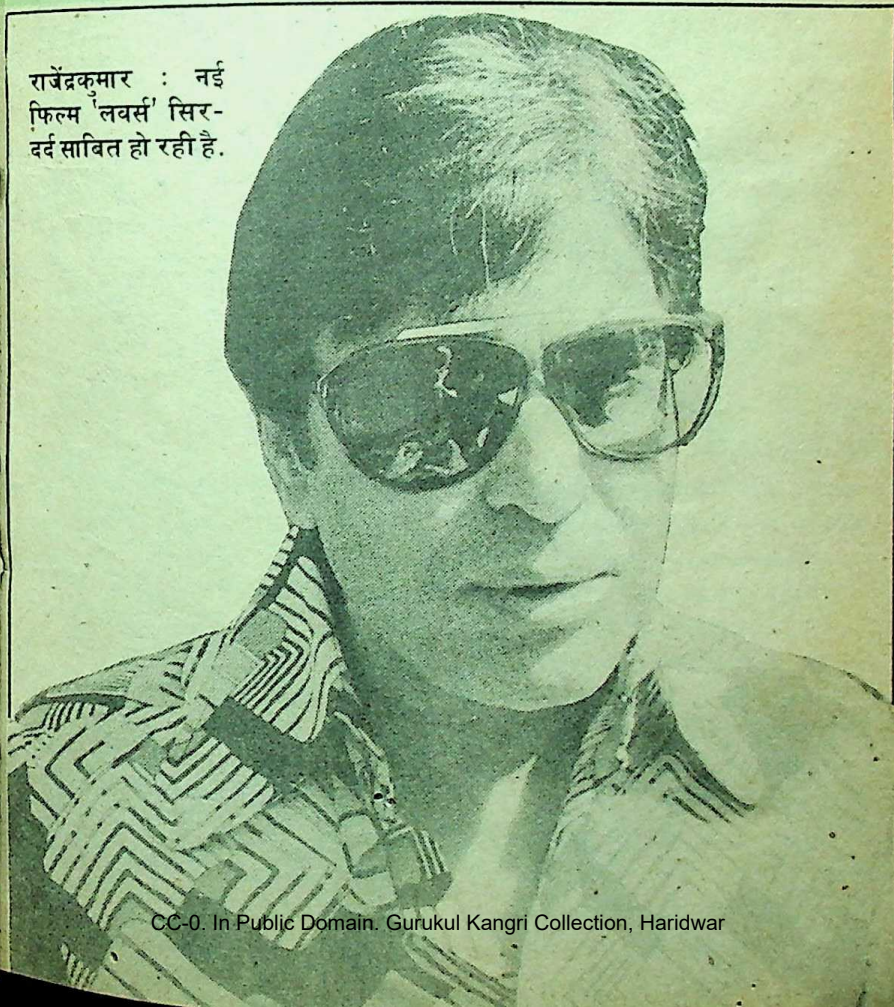
परवीन बाबी : व्यावसायिक फिल्म निर्माताओं की नजर में परवीन में वह सब कुछ है जो फार्मूला फिल्मों की सफलता के लिए जरूरी है.

आप को इस रूप में मनवा रखा है कि उस से अच्छी अभिनेत्री फिल्मी दुनिया में दूसरी कोई नहीं है. वह हर भूमिका में जान डाल देती है. लेकिन व्यावसायिक फिल्मों में जबजब भी स्मिता आई है उस के अभिनय से दर्शकों को मायूसी ही हुई है. स्मिता का यही हाल फिल्म 'नमक हलाल' में हुआ है.

स्मिता पाटिल के लिए यही बेहतर है कि वह कला फिल्मों में ही काम करती रहे. गलैमर से भरी भूमिकाओं में न तो वह खुद अच्छी लगती है, न भूमिका में सजीवता [illegible] सकती है. वैसे भी फिल्म जगत वाले स्मि[illegible] को व्यावसायिक फिल्मों में लेने से [illegible] कतराने लगे हैं, क्योंकि आखिर उन्हें [illegible] कमाना है और उस के लिए उन्हें कला [illegible] ज्यादा व्यवसाय की अहमियत नजर आती [illegible] इसी नजर से देखने वाले निर्माता निर्देशकों [illegible] स्मिता में कुछ नजर नहीं आता. उन्हें परवीन बाबी और जीनत अमान [illegible] लड़कियां ही पसंद आती हैं.

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.
इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

गरमी की छुट्टी के बाद जब कालिज खुला तो एकदो दिनों तक छात्रों एवं छात्राओं की संख्या लगभग नगण्य ही रही. धीरेधीरे इस में वृद्धि होने लगी. मैं भी लगभग पांचछः दिन बाद ही पहुंच सका. अब तक छात्रों के अलावा छात्राओं की संख्या भी काफी बढ़ गई थी. मैं ने देखा कि सभी लोग मेरी तरह स्वतंत्र वातावरण में फिर से आने का मौका मिलने से खुश थे. सब एकदूसरे से प्रायः यही पूछ रहे थे, "कहो, भई, गरमी की छुट्टियां कैसे बिताईं? पूरी छुट्टियां घर में ही रहे या कहीं सैरसपाटे के लिए बाहर गए?"

कोईकोई अपने घनिष्ठ मित्र से यह भी पूछ बैठता, "यह छुट्टी अकेले ही बिताई या कहीं मौजमजा भी किया?"

मेरे साथ पढ़ने वाले छात्र तो कुछ ज्यादा ही चहक रहे थे. आखिर प्रसन्न भी क्यों न हों? एम.बी.बी.एस. की प्रथम वर्ष की परीक्षा का परिणाम जो निकला था.

लेकिन कालिज के इस हंसीखुशी के माहौल से अलगथलग हमारे ही साथ वाला अक्षय नाम का एक लड़का एक को गुमसुम बैठा कुछ सोचे जा रहा था. यह लड़का था, जिस की शरारतपूर्ण हरक कालिज के सभी अधिकारी परेशान रह कालिज में कोई भी दिन ऐसा नहीं जा जिस दिन अक्षय की किसी हरक शिकायत न की गई हो. पर एम.बी.बी की इस साल की परीक्षा में अनुत्तीर्ण वाला एकमात्र छात्र होने के नाते अक्षय उदास है. जिस के आगेपीछे झूठी प्र करने वाले चमचों की भीड़ रहती थी, उसे इस असफलता पर सांत्वना देने वा कोई नहीं है.

अक्षय की यह पीड़ा मुझ से ज्या तक देखी नहीं गई. मैं धीरेधीरे उस के पर आजा रहे भावों को पढ़ने की को करने लगा. मैं ने देखा कि अक्षय सिसक कर रो रहा था. उस की यह हालत देख किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया. बड़ी

देर आयद दुरुस्त आयद

कहानी • रवींद्रकुमार वर्मा

नए अंकुर
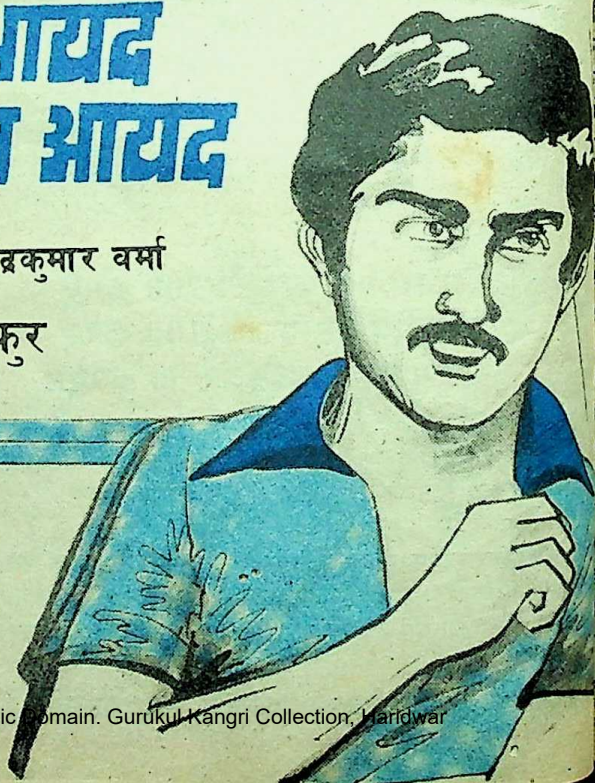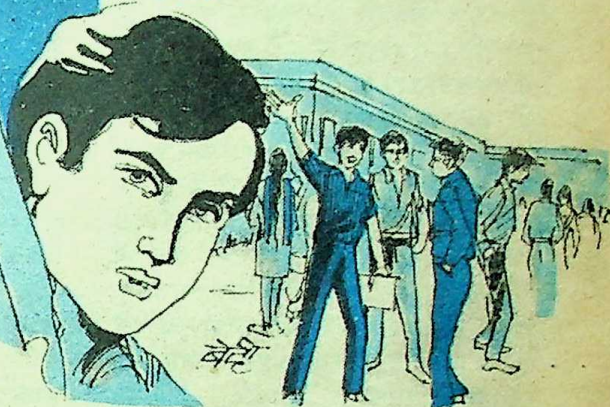
रिस्थिति थी. पिछले दो सालों में अक्षय को भी रोते हुए मैं ने नहीं देखा था. कठिन से ठिन परिस्थिति का मुकाबला भी वह मेशा हंसते हुए करता था. मेरी समझ में छ भी नहीं आ रहा था कि उस से बातों का लसिला कैसे आरंभ करूं. चुपचाप उसी कार खड़ा रहा. कुछ देर बाद अक्षय ने ही ब अपनी नजर उठाई तो मुझे देख कर चौंक या. भरे गले से वह बोला, ''अरे, तुम कब ए?''

''आज ही सुबह तो आया हूं. लेकिन क्षय, आज मैं यह क्या देखसुन रहा हूं? इतनी टी सी असफलता पर तुम को रोते हुए देख र मुझे काफी दुख हो रहा है. रोरो कर खुद परेशान हो ही रहे हो, साथ ही साथ मुझे परेशानी में डाल रहे हो.''

थोड़ी देर के लिए रुक कर मैं ने यह ना चाहा कि मेरी बातों का असर उस पर रहा है अथवा नहीं. मैं ने देखा कि अक्षय रोना धीरेधीरे कम होता जा रहा है. ता

मौके का फायदा उठाते हुए उसे ढाढ़स बंधाते हुए मैं बोला, ''अरे, यार, इतनी छोटी सी असफलता से इस प्रकार घबरा जाओगे तो आगे की जिंदगी कैसे कटेगी? जीवन में फेलपास तो लगा ही रहता है. तुम्हारी यही असफलता तुम्हारे भविष्य में आने वाली सफलताओं की आधारशिला साबित होगी. असफलता ही तो वह चीज है जो अपने अंदर छिपी कमजोरियों से हमें अवगत कराती है, ताकि भविष्य में उन्हें दूर कर सफलता की मंजिल तक पहुंचा जा सके.''

''बस करो, यार, यह भाषणबाजी. जो भी आता है, बस इसी प्रकार का भाषण दे कर मेरा दिमाग खाना शुरू कर देता है.'' फिर मेरी ओर देख कर माफी मांगते हुए अक्षय बोला, ''माफ करना यार, इस प्रकार की बातें कह कर तुम्हारा दिल दुखाया. लेकिन यार, मुझे इन बातों से एकदम चिढ़ हो गई है. कुछ काम की बातें करो. अरे, हां, तुम से तो मैं यह पूछना भूल ही गया कि गरमी की छुट्टी कैसे

काटी? अकेले या किसी और के साथ?''

''काफी मजे में बिताई, लेकिन अकेले. अपन को तो कोई लड़की लिफ्ट ही नहीं देती. तुम बताओ, तुम्हारी छुट्टी कैसे कटी?''

मेरे इस प्रश्न पर अक्षय फिर थोड़ा उदास हो गया और गंभीर मुद्रा में बोला, ''क्या बताऊं, यार, मेरे लिए तो यह छुट्टी अभिशाप साबित हुई. गरमी की छुट्टी के पहले ही मुझे मालूम हो गया था कि मुझे तीनों विषयों में जानबूझ कर अनुत्तीर्ण कराया जा रहा है. पूरी छुट्टी मैं यही सोचसोच कर परेशान रहा कि अगर फेल हो गया तो कहीं का भी नहीं रहूंगा. मेरा सोचा सही साबित हुआ. आखिरकार बापबेटी ने मुझे फेल करवा कर अपनी इच्छा पूरी कर ही ली. कभी मन करता है कि जिस प्रकार इन दोनों ने मेरी जिंदगी बरबाद की है, उसी तरह इन्हें भी गोलियों से भून कर सदा के लिए सुला दूं. गुस्सा प्राचार्य साहब पर भी आता है. वह मुझे इतना मानते थे, फिर भी अपने विषय में मुझे अनुत्तीर्ण कर दिया.''

''अक्षय, बुरा न मानो तो एक बात कहूं?'' उस की बात को बीच में ही काट कर मैं बोल पड़ा, ''बिना मतलब के अपनी असफलता का दोष दूसरों के ऊपर मढ़ रहे हो. क्या वह लड़की तुम्हारे पीछे पड़ी थी या तुम उस के पीछे? तुम ने तो उस के पीछे परछाईं की तरह लग कर उस का जीना हराम कर दिया था. उस का ही क्यों, उस के पूरे परिवार को अपनी हरकतों से परेशान किए रहते थे. शुरू में वह कितनी खुश रहा करती थी. तुम्हारे ही कारण इन दो वर्षों में वह हंसना भी भूल गई थी. उस की सारी इच्छाओं, आकांक्षाओं, अरमानों को तुम ने कुचल कर रख दिया था. अब उलटे उसी को तुम दोषी ठहरा रहे हो कि उस ने तुम्हारी जिंदगी बरबाद कर दी? तुम्हारा यह भी कहना गलत है कि उस के पिता ने तुम को जानबूझ कर फेल करवाया है. तुम ने मौखिक परीक्षा में बाहरी परीक्षक द्वारा पूछे गए एक भी प्रश्न का उत्तर संतोषजनक ढंग से नहीं दिया और न ही लिखित परीक्षा में प्रश्नपत्र पूरी तरह हल किया. तो फि होने की उम्मीद तुम कैसे करते हो?

''देखो, यार, तुम्हें तो मैं अपना समझता था, लेकिन तुम ने मेरी आशा पानी फेर दिया, इन बातों से.'' इतना अक्षय चुप हो गया. अचानक मेरे नजदीक आ कर रोमांटिक अंदाज भरते हुए बोला, ''हाय, क्या आंखें पाई ने. झील सी गहरी उन आंखों में अब लगाने को मन करता है. आंखें ही क्यों हर एक अंग सांचे में ढला है. इतन लड़की कभी नहीं देखी. कभी सोचत उस को उस के घर से जबरदस्ती उठा आऊं और किसी मंदिर में शादी कर के लिए अपनी आंखों में बसा लूं.'' इत कर अक्षय चुप हो गया और मेरी ओर देखने लगा.

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहूं. यदि अक्षय मेरा होता तो अभी उठा कर पटक देता. विवश था. अपने ऊपर संयम र बोला, ''अक्षय, तुम्हें इतनी ठेस लगी भी तुम्हारी आंखें नहीं खुलीं. फिर तरह उलटीसीधी, बहकीबहकी बातें हो. अपने पिता के खूनपसीने की क इस प्रकार बरबाद करने पर क्यों तुले क्या तुम ने यह समझ लिया है कि तुम इसी तरह फेल होते रहोगे और पिताजी हमेशा पैसा भेजते रहें तुम्हारा भ्रम है, अक्षय, एकदो बार वे असफलता को सहन कर सकते हैं. लाचार हो कर वे पैसा भेजना बंद तब तुम्हें आटेदाल का भाव मालूम कोई पूछने वाला भी नहीं मिलेगा. दा लिए तरसोगे, तब मेरी इन बातों को के रोवोगे, पर तब कुछ नहीं बचेगा

मैं ने देखा कि मेरी इन बातों असर उस पर नहीं पड़ रहा है. अतः रुख बदलते हुए उसे दूसरी तरह से लगा.
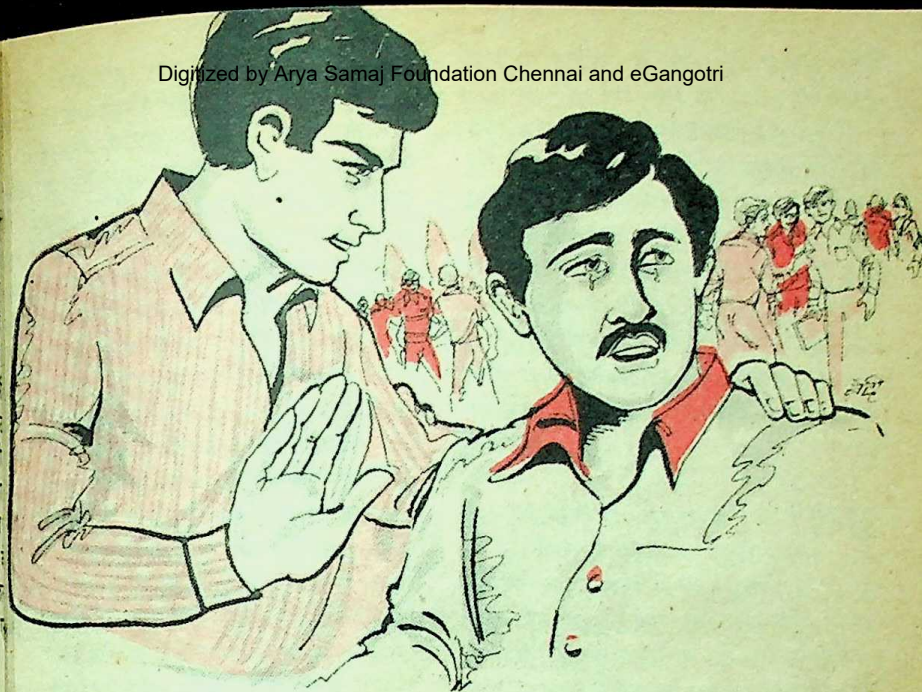
अक्षय को ढाढ़स बंधाते हुए मैं ने कहा, "अरे यार, अगर इतनी छोटी सी असफलता से इतना घबरा जाओगे तो आगे की जिंदगी कैसे कटेगी?"

"अक्षय, यदि तुम चाहते हो कि अमिता हमेशा तुम्हारी आंखों के सामने रहे, तो तुम्हें यह रास्ता बदलना होगा. सब से पहले तो तुम्हें उस का दिल जीतना होगा. यह काम तुम जबरदस्ती नहीं, बल्कि उस की सहमति से कर सकते हो."

मेरी बात को बीच में ही काट कर अक्षय बोल पड़ा, "तो, तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूं? मेरी तो समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है." यह कहतेकहते उस की आंखें सजल हो गईं.

"अगर सचमुच तुम उस का दिल जीतना चाहते हो, तो इधरउधर की बातों से अपना ध्यान हटा कर पढ़ाईलिखाई की ओर केंद्रित करो. दिनरात एक कर दो. तीन महीने बाद प्रारंभ होने वाली पूरक परीक्षा में सफलता हासिल करो. तुम्हारे लिए यह अंतिम मौका है. इसे अगर अपनी बेवकूफी से गंवा दोगे, तो जिंदगी भर पछताते रह जाओगे."

मैं और कुछ बोलता, इस से पहले ही अक्षय वहां से उठ कर थोड़ी दूर पर एक कोने में जा कर खड़ा हो गया. उस की सिसकियों की आवाज धीरेधीरे अब भी सुनाई दे रही थी. मैं ने उसे चुप कराना उचित नहीं समझा, क्योंकि रोने से मन हलका हो जाता है, ऐसा मैं ने कहीं पढ़ा था.

मैं भी वहीं बैठेबैठे दो साल पुरानी स्मृतियों में खो गया.

कठिन परिश्रम से प्री मेडिकल एंड डेंटल टेस्ट (पी.एम.डी.टी.) की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर इस मेडिकल कालिज में प्रवेश मिला था. मुक्ता व सरिता में रैगिंग से संबंधित प्रकाशित विभिन्न लेखों व कहानियों को पढ़ कर रैगिंग की जो भयानक तसवीर मानसपटल पर अंकित थी, उस का एकचौथाई भी इस कालिज में देखने को नहीं मिला. फिर भी थोड़ीबहुत हलकी-फुलकी रैगिंग तो हुई ही थी. लगभग दो महीने बाद होस्टल में रह रहे छात्रों के दो गुटों के

बीच झगड़ा हो जाने के कारण कालिज अनिश्चित काल के लिए बंद हो गया.

लगभग तीन महीने बाद कालिज खुला तो मैं ने देखा कि बहुत से नए चेहरों का आगमन हमारी कक्षा में हो चुका है. इन में से कुछ छात्र ऐसे थे जो रैगिंग के डर से शुरू के दिनों में कालिज ही नहीं आए थे. कुछ ऐसे भी थे, जिन का प्रवेश देर से हुआ था.

बी.एससी. (आनर्स) की परीक्षा देने के कारण अक्षय भी इस कालिज में देर से आया था. अक्षय से मेरी मुलाकात प्रयोगकक्ष में हुई थी.

उस दिन सभी लड़के अपनीअपनी मेज पर छ:छ: लड़कों व लड़कियों के समूहों में प्रयोग करने में मशगूल थे. लेकिन अक्षय एक मेज पर प्रयोग कर रही कुछ लड़कियों की ओर निर्निमेष दृष्टि से देखे जा रहा था. उस के पास जा कर मैं बोला, "माफ करना भाई साहब, आप किस मेज पर प्रयोग कर रहे हैं? क्या आप मेरे साथ प्रयोग करना पसंद करेंगे?"

"ओह, तुम ने तो आ कर सब मिट्टी में मिला दिया. अरे यार, दो साल तक प्रयोग ही करने हैं," फिर मुझे अपने पास बैठाते हुए एक लड़की की ओर इशारा करते हुए बोला था, "उस लड़की को देख रहे हो न? कितनी सुंदर आंखें हैं उस की. चंचल है, क्या चाल है. मैं तो उसे देखते ही होश खो बैठा. अपने पास तो उस की सुंदरता का वर्णन करने के लिए शब्द ही नहीं हैं. काश, मैं शायर होता, तो अब तक कितने ही शेर उस की सुंदरता पर लिख चुका होता."

"लेकिन, यार," उस की बात काटते हुए मैं बीच में ही बोल पड़ा, "सुना है कि वह बहुत ही खतरनाक लड़की है. किसी को पास तक फटकने नहीं देती, तुम तो अभी नएनए आए हो. उस के बारे में मैं अच्छी तरह जानता हूं. उस का बाप इसी कालिज में प्रोफेसर है और इसी घमंड में वह फूलीफूली रहती है. अपने आगे किसी को कुछ समझती ही नहीं. शायद तुम को पता नहीं होगा कि इस के बाप ने हमारे एक बहुत सीनियर साथी को के[illegible] इसी लिए डांटा था कि उस ने रैगिंग के दौ[illegible] इस का परिचय जानना चाहा था. मेरे वि[illegible] में उस ओर से तुम अपना ध्यान हटा लो[illegible] ज्यादा बढ़िया रहेगा."

मैं ने सोचा था कि मेरी इन बातों[illegible] अक्षय डर जाएगा और उस आफत की पु[illegible] की ओर से अपना ध्यान हटा लेगा, पर[illegible] इस आशा पर तुषारापात करते हुए वह बो[illegible] "इतनी जानकारी देने के लिए बहुत[illegible] धन्यवाद. मैं तो ऐसी ही लड़की को तला[illegible] था. इसी को तो फांसने में मजा आएगा[illegible] भी देख लेना, फिल्म 'आन' में दिलीपकु[illegible] जिस तरह नादिरा को अपने वश में किया[illegible] और 'धर्मवीर' में धर्मेंद्र ने जीनत अमान[illegible] जिस तरह सीधा किया था, ठीक वैसे ही[illegible] इसे मैं एकदम सीधी कर के गाय न बना[illegible] मेरा नाम भी अक्षय नहीं."

पता नहीं, अक्षय और क्याक्या[illegible] हांकता, तभी शिक्षक महोदय उधर[illegible] आए. अक्षय को छोड़ कर मैं अपनी मेज[illegible] चला गया.

इस के बाद अक्षय अपनी पढ़ाईलि[illegible] छोड़ कर उस लड़की के पीछे हा[illegible] कर पड़ गया. मना करने पर उलटे हम[illegible] पर ही गुस्सा करने लगता.

वैसे अक्षय उस लड़की के साथ न[illegible] किसी प्रकार की छेड़खानी करता था औ[illegible] ही उस पर फिकरे कसता था. बस, उ[illegible] पीछेपीछे परछाईं की तरह लगा रहता[illegible] कारण वह अक्षय को डांट भी नहीं सकती[illegible] पहले तो अक्षय की यह हरकत कालिज[illegible] ही सीमित थी. पर जब उस ने देखा कि[illegible] पर भी अमिता कुछ नहीं कर रही है, तो[illegible] उस के पीछेपीछे घर तक जाने ल[illegible] सुबहशाम उस के घर के आसपास भी च[illegible] लगाने लगा.

यह क्रम लगभग दो महीने तक च[illegible] रहा. अक्षय ने जब देखा कि इतने पर भी[illegible] कुछ नहीं कर रही है, तो उसे थोड़ा[illegible] मिला. इसी से प्रेरित हो कर उस ने उ[illegible]

वह हरकत कर डाली जिस से वह पूरे कालिज में विख्यात हो गया.

उस दिन अन्य छात्रछात्राओं की तरह अमिता भी प्रयोग में मग्न थी. अपना पर्स अमिता ने कुछ दूर स्थित स्टूल पर रख दिया था. मौका पा कर अक्षय ने प्रेमपत्रों और ढेरों शेरों से भरी अपनी डायरी उस के पर्स में चुपके से रख दी. इस डायरी में अक्षय का एक फोटो भी था.

कक्षा समाप्त होने पर अमिता ने जब उस डायरी को अपने पर्स में पाया तो वह आगबबूला हो गई. खैरियत यही थी कि उस समय वहां पर अक्षय नहीं था. उस ने इस की सूचना प्राचार्य महोदय को दे दी.

दूसरे दिन प्राचार्य महोदय का चपरासी छात्रावास में यह पैगाम ले कर आया कि अक्षय को प्राचार्य साहब तुरंत बुला रहे हैं. उस से पूछने पर मालूम हुआ कि प्राचार्य साहब के दफ्तर में अमिता के पिताजी भी बैठे हैं.

मैं ने सोचा कि आज अक्षय की खैरियत नहीं. आज तो उस के सिर से इश्क का भूत उतर ही जाएगा. लेकिन, आशा के विपरीत मैं ने देखा कि अक्षय हंसते हुए, सीना तान कर प्राचार्य महोदय के यहां से लौटा. जैसे ही वह छात्रावास में घुसा बहुत से छात्रों ने उसे घेर लिया. सभी एक ही बात पूछ रहे थे, "क्याक्या बातें हुईं वहां पर? खूब डांट पड़ी होगी?"

कुछ देर तक वह मौन साधे रहा, फिर फिल्मी अंदाज में अभिनय करते हुए बोला, "क्या कहा, वह मुझे डांटेंगे. मैं ने तो उन लोगों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का ऐसा जवाब दिया कि प्राचार्य साहब ही नहीं, बल्कि अमिता के पिताजी भी शांत हो गए." इतना कह कर वह चुप हो गया.

सभी छात्र चुपचाप प्रयोगशाला में प्रयोग कर रहे थे कि अचानक अमिता ने अक्षय के किसी अभद्र व्यवहार पर उसे डांटनाफटकारना शुरू कर दिया.

"अच्छा, जरा हमें भी तो बतलाओ कि तुम ने ऐसी कौन सी बात कही." सभी छात्र एकसाथ बोल पड़े.

"जाते ही प्राचार्य महोदय ने मेरी डायरी मुझे दिखाते हुए कड़कती आवाज में पूछा, 'क्या यह डायरी तथा यह फोटो तुम्हारी ही है?'

"मेरे हां कहने पर दोनों एकसाथ उखड़ गए, 'तुम ने अमिता के पर्स में रखने की हिम्मत कैसे की. जानते हो इस का क्या परिणाम होगा?'

उन लोगों की बात बीच में ही काट कर मैं बोला, श्रीमानजी, आप ने यह कैसे अनमान लगा लिया कि डायरी मैं ने ही उस के पर्स में रखी है. मुझे बदनाम करने के लिए कोई दूसरा आदमी भी तो यह काम कर सकता है.

"'नहीं, यह काम तुम्हारे सिवा और कोई भी नहीं कर सकता,' अमिता के पिता ऊंची आवाज में चीखते हुए बोले.

"श्रीमानजी, तब तो अमिता का भी एक फोटो मेरे पास है और वह मेरे बगल में बैठ कर खिंचवाया हुआ है. क्या यह फोटो अमिता ने मुझे दिया है या साथ बैठ कर खिंचवाया है? मेरे इतना कहने पर वे दोनों सकते में आ गए.

"फिर भी अंतिम अस्त्र का इस्तेमाल करते हुए प्राचार्य बोले, 'अपने बचाव के लिए तुम झूठ बोल रहे हो.'

"नहीं, श्रीमानजी, मेरी बात शत-प्रतिशत सही है. अवसर आने पर वह फोटो आप लोगों को भी दिखला दूंगा. मैं ने बिना किसी भय के यह बात कह डाली.

"मेरे दृढ़निश्चय को देख कर वे लोग भी इसे सच मान बैठे. इसी लिए प्राचार्य महोदय मुझे समझाते हुए बोले, 'देखो, अक्षय, तुम बेकार में इन लफड़ों में पड़े रहते हो. इस समय तुम्हें अपना सारा ध्यान पढ़ाई की ओर केंद्रित करना चाहिए.' फिर बहुत ही आत्मीय ढंग से बोले, 'तुम वह फोटो मुझे दे दो.'

"श्रीमानजी, फोटो तो मैं आप को दूंगा, लेकिन आप ने यह कैसे अनुमान ल लिया कि उस फोटो की केवल एक ही प्रति पास है. आप विश्वास रखिए कि मैं उस फो से किसी प्रकार का नाजायज फायदा न उठाऊंगा. इतना कह कर मैं वहां से च दिया."

"लेकिन, अक्षय," सभी छात्र एकसा बोल पड़े, "अमिता का फोटो तुम्हारे पा कैसे आ गया?"

"अरे, दोस्तो, तुम लोग भी इसे स मान बैठे. मैं ने तो उन्हें डराने के लिए इस झ का सहारा लिया था."

लेकिन अक्षय की यह बात सच बाद में पता चला कि कक्षा का जो ग्रुप फ खींचा गया था, उसी में से अक्षय ने फोटोग्राफर को काफी पैसा दे कर अमिता फोटो निकलवा कर उस का नेगेटिव ब लिया था. इस नेगेटिव को अपने फोटो नेगेटिव के साथ मिला कर इस प्रकार फ खिंचवाया था, जिसे देख कर ऐसा मा पड़ता था कि दोनों ने एकसाथ बैठ कर फ खिंचवाया है.

अक्षय को सजा न मिलने के कारण अब और बढ़चढ़ कर हरकतें करने लग

उसे अमिता के आगेपीछे घूमते लग सातआठ महीने गुजर गए, लेकिन वह उ बात करने की हिम्मत तक नहीं जुटा पा पर जब वह किसी दूसरे लड़के को उस साथ बातें करते देखता, तो आगबबूला जाता और मारपीट करने पर उतारू जाता.

ऐसी ही एक घटना हमारे साथ प वाले अजय नामक लड़के के घटी. एक दिन अक्षय ने जब अजय अमिता के साथ बातें करते देखा, तो एकां क्रूर उसे डांटते हुए बोला, "अजय, ज नहीं कि वह मेरी प्रेमिका है. उस पर दूसरा आदमी हाथ नहीं डाल सकता. पहला दिन है, इसलिए छोड़ रहा वरना..."

अजय भी कम न था, बीच में ही बोल पड़ा, "वरना, क्या? तुम मेरा क्या कर लोगे? कल ही तुम्हारे सामने उस से बातें करूंगा. देखता हूं कि तुम क्या कर लोगे?" फिर अक्षय की खिल्ली उड़ाते हुए वह बोला था, "अभी तक तुम उस से एक क्षण को भी बात नहीं कर पाए और कहते हो कि वह तुम्हारी प्रेमिका है. वाह रे, प्रेमी महोदय. आप का भी जवाब नहीं."

जोश में आ कर दूसरे दिन अजय ने अपना कहा कर तो दिया, लेकिन बाद में उसे इस गुस्ताखी की भारी कीमत चुकानी पड़ी.

बात यह हुई कि उस दिन अजय अपने कमरे में चौकी पर लेट कर पढ़ रहा था. रात्रि के आठ बज रहे थे. छात्रावास की बिजली अचानक गुल हो गई. मौका मिलते ही अक्षय धीरेधीरे उस के कमरे में आया और अपने हाथ में थामे लोहे के छड़ से तड़ातड़ दसबारह वार अजय के ऊपर कर दिए. अजय अपने ऊपर इस आकस्मिक आक्रमण के बारे में कुछ समझता, तब तक अक्षय वहां से चंपत हो चुका था. फिर दसपंद्रह दिन तक वह कालिज से अनुपस्थित रहा.

दूसरे दिन अक्षय की इस करतूत की खबर प्राचार्य महोदय ने उस के पिता को तार द्वारा भेज दी और साथ ही लिखा कि अक्षय को ले कर तुरंत कालिज आएं.

लगभग दो दिन बाद वह आए. लेकिन अकेले. पूरी घटना से अवगत करा कर उन्हीं से पूछा गया कि अब आप के सुपुत्र के साथ कैसा सलूक किया जाए. उन के द्वारा काफी अनुनयविनय करने पर अक्षय को इस बार भी उस की नादानी समझ कर छोड़ दिया गया.

15 दिन बाद जब अक्षय कालिज आया, तब तक सभी कुछ शांत हो चुका था. अजय ने भी अक्षय को माफ कर दिया था.

कुछ दिन तक तो अक्षय शांत रहा, लेकिन आखिर कब तक शांत रहता. एक दिन अजय वाली हरकत हमारे ही साथ पढ़ने वाला एक बंगाली लड़का हलधर कर बैठा. इसे देख कर अक्षय फिर पुरानी हरकतों पर उतर आया.

एक दिन एकांत पा कर उस से बोला,

बड़े साहब दौरे पर गए हैं...

"देखो हलधर, तुम्हें अपनी जान प्यारी है कि नहीं. एक ने मेरी बात नहीं मानी तो उस की हड्डीपसली एक कर दी. अब तुम आए हो. आज पहला दिन है, इसलिए छोड़ रहा हूं. कल के बाद उस से बातें करते देख लिया न, तो गोलियों से भून कर रख दूंगा."

अक्षय की इस धमकी से वह काफी डर गया. अपनी सफाई पेश करते हुए वह बोला, "नहीं, अक्षय, मैं ऐसी बात कहां कर सकता हूं. मैं तो उसे अपनी बहन मानता हूं. कल नोट्स के सिलसिले में उस से थोड़ी देर के लिए बातें कर ली थीं. तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि भविष्य में फिर कभी उस से बातें नहीं करूंगा." और सचमुच परीक्षा की समाप्ति तक हलधर ने अमिता से बातें नहीं की.

अक्षय की इन हरकतों को देखते हुए कालिज के सभी छात्र व प्राध्यापक यह मान बैठे थे कि अक्षय का दिमाग कुछ खराब हो गया है. इसी लिए लोग पीछे उसे 'पगला अक्षय' के नाम से याद करने लगे थे. अमिता के पिता भी अब अक्षय को डांटने के बदले अमिता को ही उस से दूरदूर रखने की कोशिश करते. यही कारण था कि अमिता फुरसत के क्षणों में या तो पुस्तकालय में रहती थी या महिला छात्रावास में चली जाती थी.

अक्षय महिला छात्रावास में नहीं जा सकता था. अतः पुस्तकालय में जब तक वह बैठी पढ़ती रहती, अक्षय भी उस से कुछ दूरी पर बैठ कर उसे एकटक देखता रहता, लेकिन अमिता अक्षय को कुछ नहीं कहती. अक्षय ने जब देखा कि अमिता बुरा नहीं मान रही है, तो उस ने कुछ विशेष कर दिखाने की बात सोची.

जाड़ों के दिन थे. रोज की तरह अमिता एक कोने में बैठी कुछ पढ़ रही थी. अचानक अक्षय को क्या सूझा कि अमिता के पास स्थित पंखे को पूरी रफ्तार में कर के चालू कर दिया. अमिता ने उस को ऐसा करते देख लिया था. वह उठी और पंखा बंद कर के अक्षय से बोली, "इतनी भयंकर सर्दी के मौसम में आप ने यह पंखा क्यों चालू कर दिया?"

अक्षय भी अमिताभ बच्चन के अं[दाज] में बोला, "यह पंखा का[लिज के] पुस्तकालय में लगा हुआ है. इसे मैं चालू [करूं] या बंद करूं, तुम को इस से क्या तकलीफ [हो] रही है? और अगर परेशानी है तो कहीं [और] जा कर पढ़ो."

चाहती तो अमिता वहां से न हटती [और] अक्षय को खरीखोटी भी सुना देती. लेकिन [वह] उस समय पढ़ने के मूड में थी, अतएव [मूड] खराब करना नहीं चाहती थी. इसी का[रण] वहां से उठ कर दूसरी जगह चली गई.

कुछ ही क्षण बीते होंगे कि अक्षय ने [वहां] पर भी पहले वाली हरकत कर डाली. [इस] बार अमिता ने चुप रहना उचित नहीं सम[झा] अतएव वह अक्षय पर उबल पड़ी. दू[सरी] तरफ अक्षय भी लड़ने की योजना बनाए [हुए] था. उस ने अमिता को मुंह तोड़ जवाब दे[ना] शुरू कर दिया. पुस्तकालय का श[ांत] वातावरण इन दोनों के झगड़े से अशांत [हो] उठा. शोरगुल सुन कर काफी लोग जमा [हो] गए थे. कुछ समझदार लोगों के बीचबचाव [से] मामला शांत हुआ.

अमिता का चेहरा उस समय दे[खने] लायक था. वह आंखें लाल किए दनदना[ती] हुई प्राचार्य महोदय के पास इस की शिका[यत] करने चली गई. तुरंत ही अक्षय का बुल[ावा] आ गया. एक विजयी राजा की तरह डग भ[रते] हुए व सीना ताने हुए अक्षय प्राचार्य के क[मरे] की तरफ चल दिया.

मैं सोच रहा था इस बार अक्षय [का] बचना नामुमकिन है. उस का इस कालिज [से] निष्कासन अवश्यंभावी है. लेकिन इस बा[र] भी अक्षय ने मुझे मात दे दी. वह हंसते [हुए] प्राचार्य साहब के कमरे से निकल रहा था. [उस] समय तो अक्षय ने मुझे कुछ न बताया. [पर] तुरंत छात्रावास चलने का आग्रह करने ल[गा].

छात्रावास में आ कर बिना पूछे [उस] ने सारी घटना विस्ता[र] पूर्वक मुझे सुना डाली.

"यार, लगता है कि प्राचार्य साहब मुझ से डरने लगे हैं. इतना बड़ा हंगामा [हो]

के बाद भी मुझे डांटने के बदले प्यार से समझाने लगे. इधरउधर की बात करने के बाद वह बोले, 'अमिता को आखिरकार तुम इतना तंग क्यों कर रहे हो? इस ने कौन सी ऐसी गलती की है कि तुम ने इतना बड़ा हंगामा कर दिया है.'

"श्रीमान, मैं ने हंसते हुए जवाब दिया, इन्हें तो मैं बहुत इज्जत देता हूं. भला मैं इन से कैसे गुस्ताखी कर सकता हूं. इन को आज गलतफहमी हो गई थी कि मैं इन्हें छेड़ रहा हूं. बस, बिना सोचेसमझे मुझ पर उखड़ गईं. ऐसी हालत में मैं कैसे चुप रहता. मैं ने भी कुछ बोल दिया तो इन को बुरा लग गया.

'छोड़ो इन बातों को, अभी तुम ने कहा कि तुम इन की इज्जत करते हो, तो अभी तुरंत माफी मांग लो.'

"मैं माफी मांगने के लिए मुड़ा ही था. वह मुझे टोकते हुए बोले, 'और हां, एक कागज पर यह भी लिख कर मुझे दे दो कि आज के बाद भविष्य में इस के साथ किसी भी तरह की छेड़खानी नहीं करोगे.'

"'अच्छा, तो अब यह लिख कर भी देगा.' इतना कह कर वह मुझे आंख दिखाती हुई, पैर पटकती प्राचार्य के कमरे से निकल गई.

"उस के जाने के बाद प्राचार्य साहब मुझे फिर समझाने लगे. थोड़ी देर बाद मैं उन से यह वायदा कर के चला आया कि अपना बयान शाम तक उन के निवास पर पहुंचा दूंगा."

इस के बाद चापलूसी करते हुए वह मुझ से बोला, "तुम ही तो इस कालिज में मेरे घनिष्ठ मित्रों में से हो, हमदर्द हो, सुखदुख के साथी हो. आज मैं तुम से एक आग्रह करता हूं कि एक खूबसूरत सा फिल्मी अंदाज वाला संवाद मुझे लिखवा दो. तुम्हारे इस कार्य के लिए मैं आजीवन तुम्हारा आभारी रहूंगा."

उस समय मुझे अपनी अज्ञानता पर काफी क्रोध आया. मैं अक्षय की यह इच्छा पूरी नहीं कर सका और उस ने अपना बयान प्राचार्य साहब को नहीं दिया. उधर प्राचार्य ने

भी मामला शांत होते देख कर आगे खोज-खबर नहीं ली.

अक्षय की इन हरकतों से तंग आ कर शरीर विज्ञान के विभागाध्यक्ष ने उसे पागलखाने में भेजने के लिए सभी लड़कों को बुला कर बारीबारी से प्रत्येक लड़के व लड़की से उस के विषय में राय लिखवाई. इस क्रम में उस के कमरे के साथी से विशेष तौर पर पूछा गया. उस ने अक्षय की अजीबोगरीब आदतों का परदाफाश किया.

"अक्षय जब भी कमरे में रहता है, अपने साथ एक आईना जरूर रखता है और उस में अपना चेहरा देखदेख कर खुश होता रहता है. कभीकभी वह आईना साथ लिए ही सो भी जाता है, जिस के कारण उस के तीनचार आईनें टूट चुके हैं. एक मेरा भी आईना उस ने इसी तरह तोड़ दिया था. जब कभी भी मुझे खाली बैठे देखता है, मेरे पास आ कर पूछने लगता है, 'देखो तो, आज मैं कितना सुंदर लग रहा हूं. सचसच बताओ, क्या मुझ से ज्यादा इस कालिज में कोई और सुंदर है? इतना होते हुए भी अमिता पता नहीं मुझे क्यों नहीं चाहती?'

"अपनी जान छुड़ाने के लिए मैं उस की हां में हां मिलाते हुए थोड़ीबहुत प्रशंसा भी कर देता हूं. एक बार मैं ने उस की बुराई की तो वह गालीगलौज पर उतर आया था. तभी से मैं ने सोचा कि बिना मतलब का सिरदर्द मोल लेना उचित नहीं है."

अफसोस की बात यह कि तैयार की गई यह सब रिपोर्ट धरी की धरी रह गई, क्योंकि तभी परीक्षाएं आ गईं और सभी उस में व्यस्त हो गए.

जो छात्र रात के 12 बजे तक महिला छात्रावास के पास बैठ कर अपनी प्रेमिका से गप्पें लड़ाते थे, अब परीक्षा नजदीक आ जाने से उधर कभी झांकते भी नहीं थे, लेकिन अक्षय इन सब का अपवाद था. वह अपना कार्यक्रम पूर्ववत बनाए हुए था. पढ़ाईलिखाई से कोसों दूर केवल अमिता के खयालों में खोया रहता. परीक्षा के कारण हम लोगों की कक्षा लगनी बंद हो गई इसलिए उसे अब अमिता को देखने के लिए उस के घर के पास सुबह से ले कर रात्रि बजे तक चक्कर काटने पड़ रहे थे. अभियान में उसे कभी सफलता मिली अथवा नहीं, यह मुझे पता न था. मैं उसे रात्रि को दस बजे आने वाली कालिज बस से उत देखता. यह बस उस हस्पताल में काम कर इंटर्न व हाउस सर्जनों को लाती है.

सैद्धांतिक परीक्षा के प्रथम दिन अक्षय ने हंगामा खड़ा कर दिया. इस परी में नकल एकदम बंद थी और अक्षय मोटी मोटी किताबें अपने पास लिए बैठा था अचानक एक निरीक्षक की नजर उन किताबों पर पड़ी. जब उन्होंने उन किताबों को लेना चाहा, तो अक्षय ने देने से इनकार कर दिया इस पर दोनों तरफ से काफी शोर होना शुरू हो गया. अंत में निरीक्षक महोदय जबरदस्ती उस से किताबें ले लीं. साथ ही साथ अक्षय की उत्तर पुस्तिका को ले कर प्राचार्य साहब को दे आए. अक्षय के बारबार आग्रह करने पर लगभग 15 मिनट बाद प्राचार्य साहब ने उसे यह कह कर उत्तर पुस्तिका वापस दे दी कि अगर फिर नकल करते हुए पकड़ा गया, तो परीक्षा से निष्कासित करने के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा.

इस घटना के बाद उस ने सैद्धांतिक परीक्षा में फिर कभी उत्पात नहीं मचाया.

सैद्धांतिक परीक्षा समाप्त हो जाने के बाद प्रायोगिक व मौखिक परीक्षा की तैयारी के लिए कक्षा शुरू हो गई. अब तो अक्षय को अमिता को देखने का मौका रोज ही मिलने लगा. अक्षय फिर वही पुरानी हरकतें करने लगा.

एक दिन डार्करूम की चाबी न रहने के कारण एक्सरे प्लेट म्यूजियम में ही किसी तरह दिखलाई जा रही थी. परीक्षा के डर से सभी छात्र व छात्राएं काफी ध्यान से शांतिपर्वक उन प्लेटों को देख रहे थे. अभी कुछ ही पल बीते होंगे कि शांत वातावरण में

अमिता की कड़कती हुई आवाज सुनाई दी. पलट कर देखा तो पाया कि अमिता अक्षय को डांटे जा रही है और अक्षय चुपचाप डांट खाए जा रहा है. एकतरफा हमला होने के कारण मामला तुरंत ही शांत हो गया और फिर सभी लोग एक्सरे प्लेट देखने में मग्न हो गए.

लगभग आधे घंटे बाद पहले वाली घटना की पुनरावृत्ति हुई. इस बार तो अक्षय भी बोल रहा था, "तुम अपने आप को समझती क्या हो? बहुत शान में रहती हो? एक ही दिन में सारी शान झाड़ कर रख दूंगा. अभी मुझे पहचानती नहीं हो."

पता नहीं, अक्षय और क्याक्या बकता, लेकिन दो छात्र उस को पकड़ कर म्यूजियम से बाहर ले गए. इस के बाद अक्षय ने फिर कुछ नहीं किया.

इसी तरह फिजियोलाजी (शरीर विज्ञान) की परीक्षा लेने आए बाह्य परीक्षक से अक्षय उलझ गया. परीक्षक महोदय प्रत्येक छात्र व छात्रा की मौखिक परीक्षा एकएक कर के ले रहे थे. अक्षय का नंबर पहला ही था. उन के द्वारा पूछे गए साधारण से साधारण प्रश्न का जवाब भी वह नहीं दे सका, तो उन्होंने कहा, "आप जा सकते हैं."

लेकिन अक्षय उठा नहीं और उलटे उन से बहस करने लगा, "आप मुझ से इतने कठिन प्रश्न पूछ रहे हैं और कहते हैं कि मुझे कुछ आता ही नहीं."

इतना सुनते ही परीक्षक महोदय अक्षय पर बरस उठे, "तुम मुझ से मुंह लड़ाते हो? तुम जाते हो कि नहीं. तुम कितने पानी में हो, मैं सब जानता हूं."

अक्षय फिर भी नहीं उठा, तो वह खुद ही यह कहते हुए बाहर निकल गए, "पता नहीं, इस कालिज में कैसेकैसे उद्दंड छात्र पढ़ते हैं. इस ने तो मेरा दिमाग ही खराब कर के रख दिया."

बहुत आग्रह करने पर लगभग 15 मिनट बाद वह पुनः मौखिक परीक्षा लेने के लिए तैयार हुए.

इस के दो दिन बाद बायोकेमिस्ट्री की प्रायोगिक व मौखिक परीक्षा होने वाली थी. नियत समय पर जब मैं कालिज पहुंचा, तो एक परिचित आदमी को इतने सवेरे कालिज में देख कर चौंक उठा. वह यहीं पर इंटर्न हैं.

उन से इस आकस्मिक आगमन का कारण जानना चाहा, तो वह बोले, "अमिता के पिताजी ने मुझे उस का अंगरक्षक बना कर भेजा है. अक्षय ने कल ही प्राचार्य साहब के सामने घोषणा की थी कि जो लडकी उस की

जिंदगी को बरबाद कर रही हैं वह उसे परीक्षा समाप्त होने के बाद किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेगा."

"लेकिन, अमिता की परीक्षा तो कल थी," मैं ने अपनी शंका जाहिर करते हुए पूछा.

"हां, तुम्हारा कहना ठीक है. कल ही अक्षय की भी परीक्षा थी. अमिता के पिता ने उसे कल यह सोच कर नहीं आने दिया कि पता नहीं अक्षय आवेश में आ कर प्रयोगशाला में ही कुछ गड़बड़ कर दे और कुछ न हो तो तेजाब या कोई अन्य द्रव ही उस के शरीर पर डाल दे."

"अच्छा, तो यह बात है? तब आप भी बच कर रहिएगा. अकेले में उस से मत उलझिएगा." मैं ने भी अपनी सलाह दे दी.

"तुम क्या समझते हो कि मैं यहां पर अकेले आया हूं. मेरे साथ दसपंदरह साथी और हैं. आज यदि अक्षय ने कुछ भी करने की हिम्मत की तो उस की खाल उधेड़ कर रख दी जाएगी." वह काफी आवेश में बोले जा रहे थे.

इसी बीच परीक्षा का समय हो गया. परीक्षा की समाप्ति पर मैं ने देखा कि अमिता प्रयोगशाला से निकल कर सीधे अपनी कार में जा कर बैठ गई. उस के बैठते ही कार चल पड़ी. पीछेपीछे तीनचार मोटर साइकिलें व स्कूटर भी चल पड़े. एक स्कूटर पर मेरे परिचित वह इंटर्न भी चले जा रहे थे.

परीक्षा दे कर जब मैं कालिज द्वार से बाहर निकला तो पाया कि अक्षय हाथ में लोहे की एक मोटी छड़ लिए छात्रावास की तरफ चला जा रहा था.

डेढ़ महीने से चल रही परीक्षा का आज अंतिम दिन था. अतः मैं अपने दो अन्य मित्रों के साथ उसी दिन घर चला आया था.

"अरे यार, बैठेबैठे दिवास्वप्न देख रहे हो क्या?" अक्षय मुझे झकझोरते हुए कह रहा था, "अरे, भई, कहां खो गए हो?"

"आ...तुम...तुम...अभी तक यहीं पर हो?" मैं उस को देख कर चौंकते हुए बोला.

"हां, यार, सचमुच इतनी देर के सपनों की रंगीन दुनिया में खो गया था"

"अच्छा!" आश्चर्य से मेरी ओर दे हुए अक्षय बोला, "जरा मुझे भी बतलाओ सपने में तुम ने क्याक्या देखा?"

"वहां पर मैं ने एक ऐसे लड़के को दे जिस ने दो साल पहले दिनरात एक कर पी.एम.डी.टी. की परीक्षा में सफलता हासि की थी.

पर अब एक लड़की के चक्कर में कर अपने आप को इस कदर बरबाद लिया है कि एम.बी.बी.एस. की प्रथम वर्ष मामूली सी परीक्षा में ही फेल हो गया."

"यार, तुम्हें यह जान कर आश्च होगा कि तुम्हारी ही तरह इतनी देर खड़े मैं भी सपनों की दुनिया में चला गया था बीच में ही अक्षय बोल पड़ा, "वहां मैं ने दे कि वह लड़का अपने किए पर लगात पश्चाताप के आंसू बहाए जा रहा है. अंत मन ही मन उस ने कसम खाई है कि वह महीने बाद होने वाली पूरक परीक्षा सफलता प्राप्त करने के लिए दिनरात एक कर देगा और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा कीमत पर पुनः प्राप्त कर के ही दम लेगा."

"अक्षय, क्या तुम्हारा यह सपना स हो सकता है?" मैं ने शंकालु दृष्टि से उस आंखों से आंखें मिलाते हुए पूछा.

"क्यों नहीं, यार, जिसे तुम्हारे जै सच्चा साथी, सही मार्गदर्शक व हमद मिलेगा, उस के लिए तो इस सपने को स साबित करना बाएं हाथ का खेल है," उस दृढ़तापूर्वक मेरी शंका को निर्मूल साबि करते हुए कहा.

मन ही मन मैं ने सोचा कि 'चलो दे आयद, दुरुस्त आयद. आखिर अक्षय रा पर आ ही गया.' फिर प्रकट में बोल "अक्षय, तुम्हारे इस निर्णय से मैं बहुत खु हूं. इस खुशी के मौके पर आज तुम मुझ कुछ भी उपहारस्वरूप मांग सकते हो."

"बस, एक कप काफी," इतना कह क वह जोरों से हंस पड़ा. उस की हंसी में मैं शामिल हो गया.

दुनिया भर की

जानवरों को गोद लीजि
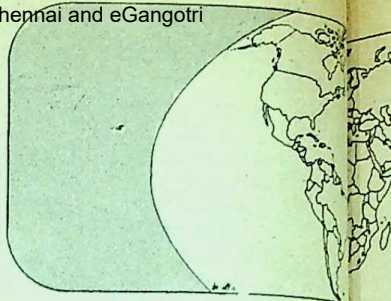
लंदन के चिड़ियाघर के प्रबंधकों ने अपने जानवरों की बेहतर सुरक्षा, रखरखाव और उन के भोजन के लिए एक नई योजना निकाली है. यह योजना है—गोद लेने की. आप इस चिड़ियाघर में आइए और जो भी जानवर पसंद आए, उस के खाने के लिए एक निश्चित रकम दे दीजिए. बस, वह जानवर आप के द्वारा 'गोद लिया' कहलाएगा, लेकिन सिर्फ तब तक, जब आप पैसा देते रहेंगे.

लंदन के चिड़ियाघर को यों तो सरव आर्थिक सहायता भी मिलती है, लेकिन सहायता जानवरों के लिए अपर्याप्त रहत चिड़ियाघर में आने वाले दर्शक अक जानवरों के सुस्त, मरियल और पतले होने की शिकायत करते रहते हैं. दर्शकों
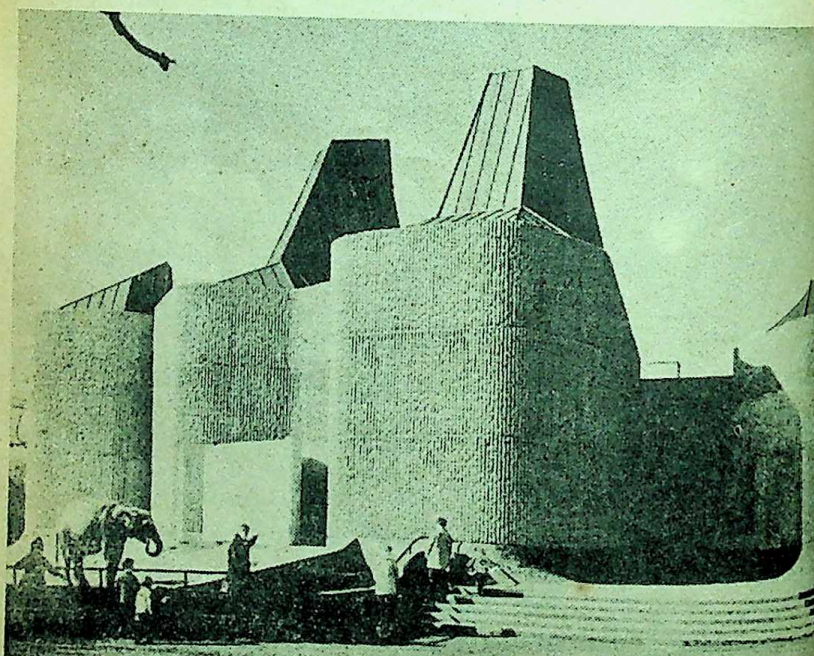
इसी शिकायत को ध्यान में रखते हुए यह नई सहायता योजना बनाई गई है.

इस योजना के अंतर्गत भालुओं के छोटे बच्चे, चिंपाजी, जैबरा के बच्चे, शेर और हाथी के बच्चे दर्शकों को बहुत अच्छे लगते हैं और वे इन के साथ अपना नाम जुड़ा हुआ देखना पसंद करते हैं. इधर बेचारे सांप, दरियाई घोड़े, मगरमच्छ, गिद्ध, गैंडा को कोई नहीं पूछता और न ही कोई इन का

लंदन के चिड़ियाघर के दो दृश्य : जानवरों की सुरक्षा को प्रमुखता.
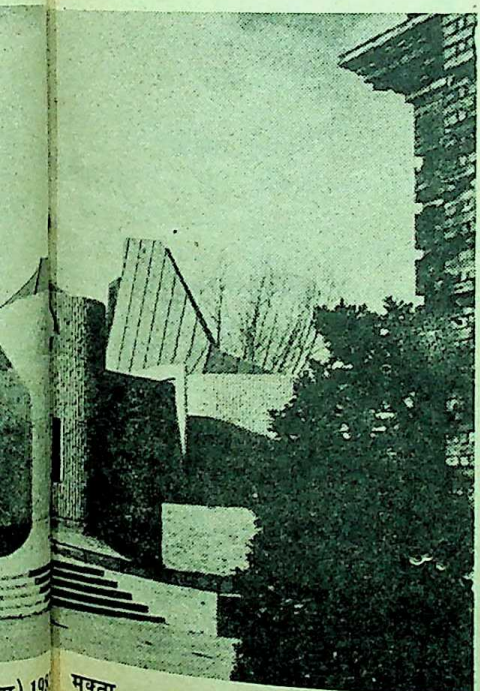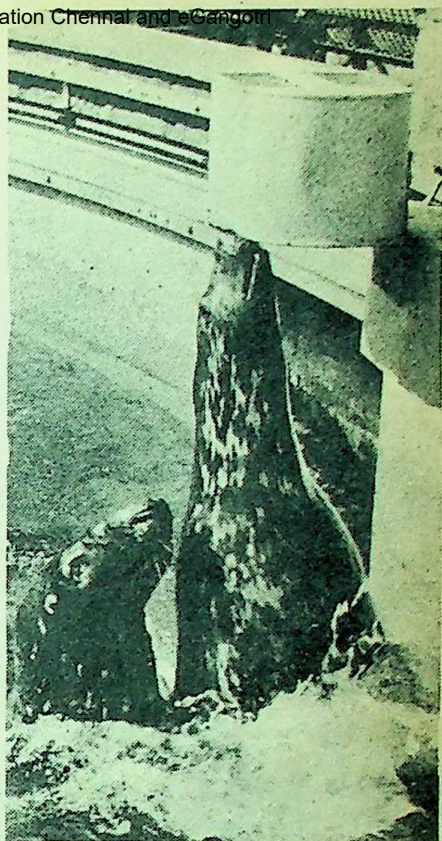
लंदन के चिड़ियाघर में जानवरों की सुरक्षा के नए उपाय. सऊदी अरब के शाह का बिकाऊ मकान. ताइपेह के दुकानदारों की बानगी. लेबनान के ऐतिहासिक किले पर इजराइली कब्जा. हांगकांग के छात्रों द्वारा आत्महत्याएं और रूस को बिना युद्ध हराने की अमरीकी योजना आदि का विस्तृत विवरण...

अभिभावक बनना चाहता है.

चिड़ियाघर के प्रबंधकों का कहना है कि वे चाहते हैं कि स्कूल, क्लब और व्यापार-केंद्र इन जानवरों की मदद करें. इस सहायता योजना को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए दाताओं को कई सुविधाएं दी गई हैं. 30 पौंड देने वाले का नाम इच्छित जानवर के साथ जोड़ दिया जाएगा यानी जहां जानवर रहेगा वहां दानदाता के नाम की तख्ती भी लगी रहेगी. ऐसे लोगों को एक प्रमाणपत्र भी मिलेगा. साथ ही चिड़ियाघर में प्रवेश के लिए फ्री टिकट भी. आर्थिक व्यापार संस्थान 3,000 पौंड सालाना दे कर अपनी दुकान, संस्थान, दफ्तर का नामपट जानवर के पिंजरे के पास रखवा सकते हैं.

दुकानदारों का शहर

अमरीका के कम्यूनिस्ट चीन से प्रेम की पींगें बढ़ाने के कारण ताइवान की स्थिति इन दिनों अनाथ जैसी हो गई है. 1949 में चीन की कुओमितांग सरकार जब गृहयुद्ध में कम्यूनिस्टों से हार गई और उसे चीन की मुख्य भूमि से भाग कर ताइवान (फारमोसा) में शरण लेनी पड़ी, तब भी उस के नेता जनरल च्यांग काई शेक के अपने द्वितीय युद्ध कालीन साथी अमरीका से अच्छे संबंध रहे और वह कम्यूनिस्ट चीन के खिलाफ ताइवान सरकार को बराबर संरक्षण और सहायता देता रहा. लेकिन अब अमरीका उस से अपना हाथ खींच रहा है. अमरीका ने ताइवान से आपसी सुरक्षा समझौता खत्म कर वहां से अमरीकी फौजें हटा ली हैं. साथ ही अब फौजी मदद देना भी बंद कर दी है. इस सब के बावजूद ताइवान निडर और निर्भीक हो कर रह रहा है और यदाकदा कम्यूनिस्ट चीन को ताइवान के शासन में मिलाने की मांग करता रहा है.

एक ही देश के इन दो टुकड़ों की आर्थिक स्थिति अलगअलग है. ताइवान जैसे देश का उद्योगीकरण देख कर इन दिनों विदेशी सैलानी अचभे में पड़ जाते हैं. जिस

तरफ भी चले जाइए, दुकानें ही दुकानें नज़ आएंगी. ताइवान की राजधानी ताइपेह माल से ठसाठस भरी दुकानों, चमक रंगबिरंगे और बिजली के बोर्डों तथा साम के पास बैठे मालिकों और नौकरों को देख विदेशी इस शहर को दुकानदारों का श कहने लगे हैं.

रात के समय ताइपेह का बाज़ जापानी बाजार बन जाता है. यातायात कोई दिक्कत नहीं. ज्यादातर सड़कें सीधी यातायात के साधनों में कारों, बसों बहुतायत है. चौराहे पर जब भी लालब होती है तब दूरदूर तक हर देश का वाह दिखाई देता है, लेकिन इन सब में सब अधिक नजर आएंगी—मोटर साइकि ताइपेह में करीब ढाई लाख मोटर साइकि हैं. इन पर आप को ज्यादातर चीनी माताएं और उन के बच्चे सवार दिखाई देंगे. जब पड़ोसी चीन की मुख्य भूमि की राजधा बीजिंग (पीकिंग) में सुबह और शाम सड़ पर सिर्फ साइकिलें ही नजर आएंगी. कित अंतर है दोनों में. एक में दमघोटू वातावर और दूसरे में खुला वातावरण. खुला व्याप

ताइवान की राजधानी ताइपेह का एक दृश्य : यहां के लोगों की खुशहाली विदेशी पर्यटकों को आश्चर्य में डालने लगी है.

बादशाह का मकान बिकाऊ है

पांच वर्ष पूर्व सऊदी अरब के बादशाह खालिद द्वारा लंदन में 19,00,000 पौंड से खरीदा गया एक मकान उन की मृत्यु के बाद अब संभवतः फिर बेचा जाएगा.

मकान के बेचे जाने की खबर से इस मकान के पास का एक पड़ोसी बहुत खुश हुआ है. पिछले पांच वर्षों से कई मकान मालिकों को खालिद द्वारा खरीदे गए मकान के आसपास की सुरक्षा व्यवस्था से बड़ी परेशानी होती है. हैम्सस्टीज लेन (लंदन) में स्थित इस मकान की कीमत बढ़ कर अब करीब 50 लाख पौंड हो गई है. यह भी कहा जाता है कि इस मकान को खरीदने के तुरंत बाद बादशाह खालिद ने अपने भतीज शाहजादा फैसल के लिए मकान के पास के केंसटेड हाल को ठीक करवाने के लिए 30 लाख पौंड खर्च किए थे.

बादशाह खालिद इस मकान में यदाकदा ही आते थे. कहा जाता है कि शाह ने विश्व के अनेक देशों में इस तरह के अनेक मकान खरीद रखे थे जहां वह कभीकभार ही आ कर ठहरते थे.

मुक्ता •

ऐतिहासिक किले पर इजराइली कब्जा

लेबनान पर हाल के इजराइली आक्रमण से इजराइली बहुत खुश हैं. इस युद्ध में इजराइल के सैनिकों ने ईसाइयों के धर्मयुद्ध के समय बने ऐतिहासिक किले ब्यूफोर्ट पर कब्जा किया है. कहा जाता है कि इस किले पर कब्जे के लिए ईसाई, तुर्क, ड्रूज, फिलस्तीनी

और इजराइली सदियों लड़ते रहे हैं.

यह किला लेबनान के दक्षिण की तरफ और इजराइल के उत्तर में समुद्र तल से 2,199 फीट (667 मीटर) ऊंचाई पर पहाड़ियों के खड्ड में है. इस के पूर्व में नीचे की तरफ लिटानी घाटी है और घाटी से 15,000 फीट नीचे बहने वाली लिटानी नदी के साथसाथ ही हमले के दौरान सैनिक इस तरफ से गुजरते हैं.

कहा जाता है कि इसे सन 1135 में यरुशलम के राजा फल्क ने बनवाया था. इस किले का ब्यूफोर्ट नाम ईसाइयों के धर्मयुद्ध में मारे गए ब्यूफोर्ट परिवार के एक व्यक्ति के नाम पर रखा गया. ब्यूफोर्ट किले का नाम क्वालत अल शकीफ भी रहा है.

सन 1950 में सीरिया और लेबनान की सरकारों ने इसे ऐतिहासिक इमारत मान कर इस के रखरखाव की व्यवस्था की. लेकिन सन 1975 में युद्ध होने पर इस का कागजों में ऐतिहासिक इमारत होने के अलावा और कोई महत्त्व नहीं रहा.

सन 1978 से पूर्व फिलस्तीनी इस किले से इजराइल की तरफ चलाए जाने वाले गोलों की निगरानी किया करते थे. सन 1978 में इजराइली हमले के बाद यह किला संयुक्त राष्ट्र संघीय शांति सेना के क्षेत्र में आ गया. फिलस्तीनियों के साथ शांति सेना भी यहां रहने लगी.

इजराइली सेना ने अक्तूबर 1979 और अगस्त 1980 में इस पर हमला करने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे. पर जून 1982 में वे इस पर कब्जा करने में सफल हो गए.

हांगकांग के छात्र सलाहकार केंद्र

परीक्षा में असफल छात्र को घर और बाहर काफी परेशानियां उठानी पड़ती हैं. कई बार मानसिक रूप से परेशान हो कर छात्र घर से भागने और आत्महत्या करने तक की सोच बैठते हैं. इस तरह की घटना[illegible] अकसर परीक्षाफल निकलने के तुरंत बाद [illegible] घटने लगती हैं.

हाल में हांगकांग के विद्या[illegible] सलाहकार केंद्र ने 400 छात्रों से पूछताछ [illegible] के जो जांच रिपोर्ट प्रकाशित की है वह का[illegible] चौंकाने वाली है. इन छात्रों में से 14 प्रतिश[illegible] छात्र बजाए फेल होने के आत्महत्या कर[illegible] बेहतर समझते हैं जब कि छः प्रतिशत छा[illegible] आत्महत्या को वीरतापूर्ण कार्य समझते है[illegible]

हांगकांग में पिछले कुछ अरसे [illegible] असफल छात्रों में आत्महत्या की बढ़[illegible] घटनाओं से चिंतित हो कर प्रशासन ने क[illegible] तरह के कदम उठाए हैं. एक अनुमान [illegible] अनुसार हांगकांग के जूनियर सैकंडरी स्कू[illegible] में करीब 2,80,000 छात्र पढ़ते हैं. गत व[illegible] 7,000 छात्रों को छात्र सलाहकार केंद्र [illegible] तरहतरह के सुझाव और परामर्श दे कर उ[illegible] आगे बढ़ने, नया कार्य करने और खूब पढ़[illegible] की सलाह दी.

छात्र सलाहकार केंद्र अब छात्रों [illegible] आत्महत्या की प्रवृत्ति को रोकने के लि[illegible] परीक्षाफल निकलने से पहले ही तैयारी कर[illegible] है. केंद्र के लोग स्कूलों के मुख्याध्यापकों [illegible] मिल कर उन छात्रों के नाम और पते न[illegible] करते हैं जो पूरे वर्ष पढ़ाई में कमजोर [illegible] लापरवाह होते हैं. परीक्षाफल निकलने [illegible] बाद तुरंत केंद्र के लोग ऐसे असफल छात्रों [illegible] पीछा कर उन्हें समझाते हैं और फिर उ[illegible] खूब मेहनत कर पढ़ने की सलाह देते हैं.

छात्र सलाहकार केंद्र के प्रयासों का [illegible] यह फल है कि छात्रों में पनपती कायरता [illegible] पलायन की इस प्रवृत्ति में काफी कमी हो[illegible] जा रही है.

रूस को बिना युद्ध हरा[illegible] जा सकता है

क्या विश्व की एक बड़ी ताकत रूस [illegible] युद्ध के बिना हराना संभव है? जी हां, स[illegible] है. एक भी गोली चलाए बिना रूस को टी[illegible]

हांगकांग के असंतुष्ट छात्र वर्ग में बढ़ रही आत्महत्या की घटनाएं क्या सरकारी प्रयासों से काबू में आ सकेंगी?

के भारी प्रचार से हराया जा सकता है. भारी प्रचार से रूस के कार्यक्रमों में गड़बड़ी पैदा कर रूसी जनता में असंतोष फैलाया जा सकता है.

यह योजना अमरीका का विदेश विभाग शीघ्र ही राष्ट्रपति रेगन की स्वीकृति के लिए भेजने वाला है. इस योजना को राष्ट्रपति रेगन के भूतपूर्व विदेश मंत्री अलेग्जेंडर हेग ने तैयार किया था. इस में कहा गया है कि कम्यूनिस्ट विरोधी रेडियो और टी.वी. प्रचार संगठनों और एजेंसियों को आर्थिक सहायता दे कर रूस के अंदर सरकार और कम्यूनिज्म के खिलाफ प्रचार कर सरकार को ठप किया जा सकता है.

करीब 950 लाख डालर की इस योजना में कहा गया है कि सन 1983 में रेडियो लिबर्टी, रेडियो फ्री यूरोप तथा रेडियो स्टेशनों व अन्य प्रकार की प्रचार एजेंसियों की आर्थिक मदद कर रूस के खिलाफ धुआंधार प्रचार करवाया जाए ताकि रूस के रेडियो जाम हों जाएं और रूसी जनता इन रेडियो स्टेशनों से प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों को दूरदूर तक सुन सके.

रूस के खिलाफ इस योजना को अंतरराष्ट्रीय संचार एजेंसी के प्रमुख चार्ल्स विक और विदेशों में रूस के खिलाफ प्रचार कार्यक्रम के प्रमुख फ्रेंक शेक्सपियर ने तैयार किया है.

कुछ अमरीकियों का विश्वास है कि यह योजना निरर्थक है, क्योंकि ये रेडियो स्टेशन प्रभावशाली ही नहीं हैं और न ही रूसी जनता में इन के कार्यक्रमों के प्रति कोई रुचि है. विदेश विभाग की इस योजना को राष्ट्रपति रेगन मंजूरी देंगे, यह बात भी संदिग्ध है. वैसे क्यूबा के खिलाफ रेडियो प्रचार करने के लिए रेगन ने शक्तिशाली ट्रांसमीटर स्टेशन बनाने की एक योजना को हाल में मंजूरी दे दी है. ●

लेखाकार बिहारी ठीक 10 बजे नए दफ्तर पहुंच गए. उन की बदली बाड़मेर से जैसलमेर हो गई थी और उस दिन उन्हें नए दफ्तर में उपस्थित होना था.

वहां पहुंचने पर उन्हें कर्मचारियों के चेहरे जरूर नए लगे, लेकिन माहौल एक दम पुराने दफ्तर सा परिचित लगा. दो व्यक्ति मेज पर रखी फाइलों पर कुहनी टिकाए अधलेटे पड़े थे और उन के पास ही एक अन्य व्यक्ति कुरसी पर बैठा था, जिस की टांगें सामने वाली मेज पर फैली फाइलों से अठखेलियां कर रही थीं. तीनों ही व्यक्ति देशविदेश की राजनीति में बुरी तरह उलझ रहे थे.

उन्होंने दफ्तर में नए व्यक्ति को देखा तो वे चौंक कर थोड़े तरीके से बैठ गए. एक ने मेज से टांगें खींच कर नीचे कर लीं. मेज पर अधलेटे व्यक्तियों ने तकलीफ झेल कर अपनी कमर सीधी की.

''आप?''तीनों ने एक साथ प्रश्न किया.

''मैं बाड़मेर से आया हूं.''

''ओह, अकाउंटेंट साहब बिहारीजी, बैठिएबैठिए,'' मेज पर बैठे व्यक्ति ने खड़े हो कर इन से हाथ मिलाया, ''मुझे मक्खनलाल कहते हैं. यहां कार्यालय सहायक हूं. यानी बड़ा बाबू. यह मोती है और यह इकबाल है. दोनों क्लर्क हैं.''

''और स्टाफ कहां बैठा है?'' बिहा चारों तरफ नजरें घुमाईं.

''अभी आने वाला है,'' बड़ा बोला, ''साहब साढ़े बारह एक बजे तक हैं तो स्टाफ भी उसी हिसाब से आए

यात्रा के बारे में औपचारिक बात करने के पश्चात बड़े बाबू ने पूछा, सुना है कि आप एक दफ्तर में एक ज्यादा नहीं रहते. ऐसी कौन सी बात है पीछे?''

बिहारी हंसे, ''दस वर्ष के सेवाका मेरी यह 11 वीं बदली है. मैं तो एक ही रहना चाहता हूं, लेकिन सरकार सारे का भ्रमण कराना चाहती है तो बताइए मैं कर सकता हूं?''

कब तक

कहानी • बुलाकी शर्मा
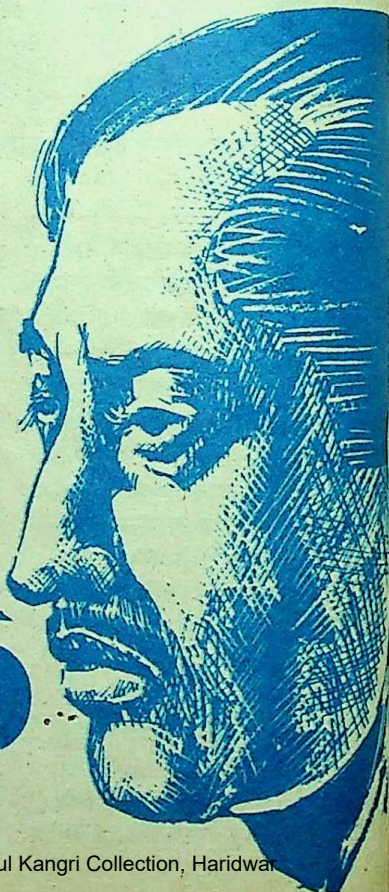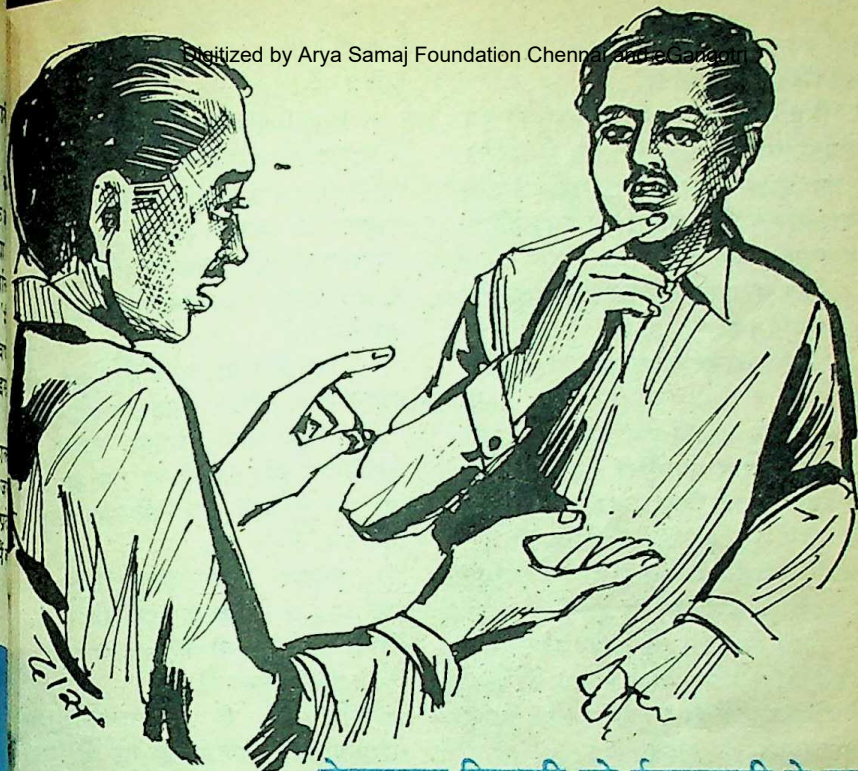
लेखाकार बिहारी को ईमानदारी से काम करने के एवज में बजाए तरक्की या प्रशंसा के मिली लगातार तबादलों की सजा, पर फिर भी क्या वह स्वयं को भ्रष्टाचार के रंग में रंगने को तैयार हुआ?

बड़ा बाबू भी हंस दिया. बिहारी ने साफ देख लिया कि उन के पहुंचने से पहले ही यहां वालों को उन के संबंध में सारी बातें मालूम हो चुकी हैं.

प्रत्येक दफ्तर की यही परंपरा है. बिहारी जहां भी गए हैं, सब ने पहला प्रश्न उन से तबादले का ही किया. वे जानते हैं कि ज्यादा तबादले उसी कर्मचारी के होते हैं जो अफसर से बना कर नहीं चलता. सभी उन्हें घबराहट से देखते हैं कि यह निश्चित ही विद्रोही कर्मचारी है.

नए दफ्तर में आठदस दिन तो बड़ी सहजता से व्यतीत हो गए. स्टाफ भी बिहारी के हंसमुख स्वभाव से खुश रहने लगा. लेकिन उस दिन सारा स्टाफ बिहारी को ले कर सशंकित हो गया. उन के पास बैठने में उन्हें असुरक्षा महसूस होने लगी कि कहीं साहब को पता न चल जाए.

उस दिन माल की आपूर्ति की निविदाएं (टेंडर) भरने की अंतिम तारीख थी. ठेकेदार आए हुए थे. पांच वस्तुओं की आपूर्ति करनी थी. पांच ही ठेकेदार थे. पांचों ने 'पोल सिस्टम' से निविदाएं भर दीं. मतलब कि ठेकेदारों ने आपस में समझौता कर के मिल कर दरें लिखीं. एक ने एक वस्तु में ऊंची दर लिख दी तथा अन्यों ने उस से कम. दूसरे ने दूसरी वस्तु में ऊंची दर लिख दी तथा अन्यों ने

उस से कम द[illegible] पांचों के नाम निविदाएं खुलनी थीं.

बिहारी निविदा की दरें देखते ही इस बात को भांप गए. उन में जो सब से कम दर थी, वह बाजार भाव से ज्यादा थी. उन्होने निविदा खुलते ही ठेकेदारों को ठेका देने से साफ इनकार कर दिया.

"हम मना कैसे कर सकते हैं. साहब?" बड़े बाबू ने पूछा.

"इन में जो दरें हैं ये बाजार दर से ज्यादा हैं."

"लेकिन इस में हम क्या कर सकते हैं?" बड़े बाबू ने सफाई दी, "हमें उसी को ठेका देना पड़ता है जिस ने सब से कम दर से माल मुहैया करने की निविदा भरी हो. हां, यदि निविदाएं नियम से कम आतीं तो इन्हें स्थगित कर सकते थे. हमें ठेके देने पड़ेंगे."

"मुझे समझाने की आवश्यकता नहीं है. बड़े बाबू." बिहारी गंभीरता से बोले "कायदेक़ानून मैं भी जानता हूं. इन पर मै दस्तखत नहीं कर सकता."

बड़े बाबू ने सहजता से कहा, "कोई बात नहीं. मैं सीधे साहब से हस्ताक्षर करवा लाता हूं."

दफ्तर का काम उचित माध्यम से सरकता हुआ चलता है. क्लर्क मसौदा तैयार करता है. लेखाकार उसे चैक कर के उस पर अपने हस्ताक्षर कर देता है. उस के पश्चात साहब के पास वह हस्ताक्षर के लिए जाता है.

बिहारी ने सोचा, देखें, साहब हस्ताक्षर कैसे करते हैं.

कुछ ही देर में बड़ा बाबू साहब के कमरे से बाहर आया और ठेकेदारों को ठेके के कागजात पकड़ा दिए.

बिहारी विस्मित से अपनी कुरसी पर बैठे रहे. चपरासी ने आ कर उन्हें सचेत किया, "अकाउंटेंट साहब, आप को साहब याद कर रहे हैं."

"अच्छा," वह साहब के कमरे की तरफ चल दिए.

कमरे में घुसते ही उन्हें सुनाई दिया, "बिहारीजी, आप की यह अटकान नीति मुझे नापसंद है. यहां आते ही आप वही सब क[र] लगे हैं जो पिछले दफ्तरों में करते थे."

बिहारी ने स्पष्टता से बताया, "सा[हब,] वे निविदाएं 'पोल सिस्टम' से भरी हुई [हैं.] निविदाएं हम इसलिए मंगवाते हैं जि[ससे] सरकार को अच्छी सामग्री कम मूल्य [में] उपलब्ध हो जाए. लेकिन इन में जो कम [दरें] हैं, वह बाजार दर से ज्यादा हैं. इस में [सरकार का] नुकसान है."

"नुकसान या फायदे का ध्यान र[खना] हमारे जिम्मे नहीं है." साहब बेरुखी से बो[ले,] "हमें सिर्फ यही देखना चाहिए [कि] औपचारिकताएं पूरी हैं या नहीं. बस. [मुझे] विश्वास है, आगे आप शिकायत का मौ[का] नहीं देंगे."

बिहारी चुपचाप बाहर निकल आ[ए.] बड़ा बाबू उन्हें देख कर इकबाल से बो[ला,] "जैसा सुना वैसा ही पाया."

दोनों मुसकराने लगे.

बिहारी के समक्ष पुनः व[ही] परिस्थितियां उपस्थित हो गई थीं, जिन[से] वह बराबर बचते रहना चाहते हैं. दफ्त[र में] होते हुए भी अन्य कर्मचारी उन्हें अनुपस्थि[त] सा मानने लगे और उन के हस्ताक्षर के बि[ना] ही बड़ा बाबू कागजपत्र सीधे साहब के [पास] भेज देता. वहां से हस्ताक्षर हो कर भी [आ] जाते.

आखिर वह गलत कहां है? इस बारे [में] वह अपना कितनी ही बार विश्लेषण कर चु[के] हैं. उन्होंने दफ्तर का काम ईमानदारी [से] करने का नियम बना रखा है जिस से सरका[र] का हित हो. वह गलत काम न करते हैं और [न] करने देते हैं. रिश्वत लेना वह घोर अपरा[ध] मानते हैं. इतने वर्षों का अनुभव बोलता है [कि] उन के यही नियम उन्हें अन्य कर्मचारियों [से] अलगथलग करते रहे हैं.

इन सिद्धांतों और आदर्शों से उन्हें [क्या] मिला, इस बारे में रामगोविंद अक[सर] उन से प्रश्न करते रहते हैं. रामगोविंद उन[के] दोस्त हैं और एक सरकारी दफ्तर में क[निष्ठ] लेखाकार. वह पूछते हैं, "तुम्हें आदर्शों [से]

क्या दिया, बिहारी? आदर्शों का मोह तुम्हें बराबर सब से दूर करता जा रहा है. तुम अंदर ही अंदर टूट रहे हो. सही होते हुए भी गलत माने जाते हो. इन आदर्शों ने तुम्हें सिर्फ नुकसान ही पहुंचाया है, बिहारी."

बिहारी को रामगोविंद की बात स्वीकार नहीं होती. वह सिर ऊंचा कर के जवाब देते हैं, "ये आदर्श मुझे मानसिक शांति प्रदान करते हैं, रामगोविंद, मेरे लिए यही तसल्ली बहुत है कि मैं वही करता हूं जो मेरा अंतःकरण कहता है. मैं अपने अंतः-करण को धन के लिए नीलाम नहीं कर सकता."

लेकिन रामगोविंद के जाने के पश्चात उन्हें अपने कहे शब्द ही अर्थहीन लगने लगते हैं. कहां है उन्हें मानसिक शांति? नौकरी लगने से आज तक उन्हें बराबर संघर्षों से जूझना पड़ रहा है. अफसर और सारा स्टॉफ एक तरफ और दूसरी तरह सिर्फ वह अकेले. सब के लिए जैसे हौआ हों.

और तो और पत्नी भी उन के व्यवहार से दुखी रहती है. स्पष्ट तो नहीं कहती, लेकिन इस ओर संकेत अवश्य करती रहती है. रामगोविंद का जिक्र कर के कहती है, "रामगोविंदजी ने बंगला बनवा लिया है. स्कूटर खरीद लिया है. पता नहीं हमारा कब मकान बनेगा और मकान मालिकों की चकचक से पिंड छूटेगा."

रामगोविंद की उन से कम तनख्वाह है. फिर भी उन्होंने इतना कुछ कर रखा है. जरूरत पड़ने पर उधार लेने के लिए वह रामगोविंद के पास ही जाते हैं.

उन्हीं के साथ के लेखाकार पदोन्नत हो गए हैं. वह 10 सालों से उसी पद पर है, जब कि उन के साथी सहायक लेखाधिकारी बन गए... गजटेड आफिसर. वह मिलते हैं तो बिहारी से कहते हैं, "समय के साथ कदम मिला कर चलना सीखो, बिहारी."

लेकिन बिहारी के लिए ऐसा संभव नहीं. कभीकभी विपरीत परिस्थितिया उन्हें डगमगाने की चेष्टा करती

हैं और वह समय की रफ्तार के साथसाथ बहने की सोचने लगते हैं, लेकिन पुनः वह मजबूत बन जाते हैं. उन के सिद्धांत उन्हें ऐसा स्वीकारने नहीं देते. समझौता वह क्यों करें? वह सही हैं. जो गलत हैं, समझौता वे करेंगे. सभी अपने को नीलाम कर रहे हैं. ऊंची बोलियों में बिक रहे हैं. क्या वह भी बिकें? नहीं, वह सही हैं और इसी पथ पर चलते रहेंगे.

नए दफ्तर में भी वह बहिष्कृत से माने जाने लगे. उन के लिए यह सामान्य स्थिति थी. कायदेकानून की कमी होते हुए भी ठेकेदारों का काम हो रहा था और वह देख रहे थे.

उन से कोई राय नहीं ली जाती थी. सब काम बड़ा बाबू करता. उस रोज बड़े बाबू ने तीन दिन की छुट्टी ले ली. मजबूरन अफसर ने बिहारी को काम देखने के लिए कहा. बिहारी अपने डिविजन के अधीन सब डिविजन से आए मासिक खर्च का ब्यौरा बारीकी से देखने लगे. उस में उन्हें घोटाला नजर आया. स्पष्ट लग रहा था कि दैनिक मजदूरी पर लगाए गए श्रमिकों के नाम फर्जी लिखे गए हैं और उन के नाम से रुपए खाए गए हैं.

उन्होंने पिछले महीने के खर्च का ब्यौरा निकाला. दोनों महीनों में नाम वही थे. लेकिन किसी ने पहले महीने में अंगूठा लगा कर मजूरी ली थी और दूसरे महीने दस्तखत किए थे. कुछ ने पहले महीने में दस्तखत किए थे और दूसरे माह में अंगूठा लगाया था.

बिहारी ने इस मामले को साहब के सामने प्रस्तुत किया. साहब बिना देखे ही बोले, ''उस सब डिविजन में लाल बहादुर हैं. वहां ऐसा नहीं हो सकता.''

''साहब, ऐसा हुआ है.'' बिहारी जताने लगे, ''यह संदेहास्पद मामला लग रहा है. जिस को दस्तखत करने आते हैं, उस ने अंगूठा क्यों लगाया? और जिस को दस्तखत करने आते ही नहीं फिर उस के दस्तखत कैसे हो गए?''

''...भूलवश ऐसा हो... हो. उन से ठीक करवा लेंगे.''

''भूल?'' बिहारी को आश्चर्य हु... ''इसे भूल कैसे मान सकते हैं, साहब? य... सरासर धोखाधड़ी और गबन का मा... है.''

अफसर उन्हें देर तक घूरता रहा... सख्ती से बोला, ''बिहारीजी, आप मेरे मा... हैं. मेरे आदेश को मानना ही आप का क... है. आप मुझे राय नहीं दे सकते.''

''मेरा कर्तव्य कानून सम्मत कार्य क... का है. मैं अफसर का नहीं, सरकार... कर्मचारी हूं. किसी के दबाव में आ क... गलत काम नहीं कर सकता.''

इतना कह कर बिहारी बाहर आ... हाथोंहाथ एक नोट तैयार कर के साहब... पास भिजवा दिया कि यह मामला स्पष्ट ग... का लगता है.

स्टाफ के एक साथी ने बताया, ''सा... से कहने से कुछ नहीं हो सकता, अका... साहब, उस सब डिविजन का सहा... इंजीनियर अपने साहब को ईमानदारी... हिस्सा पहुंचाता है. फिर वह उस के वि... कैसे काररवाई कर सकते हैं?''

उस घटना के बाद अफसर बिहारी... तबादला कराने की कोशिश में... गया. उस ने अधीक्षक इंजीनियर को लि... कि वह लेखाकार बिहारी को अपने दफ्त... रखने में असमर्थ हैं. उस की अड़चन डा... की नीति दफ्तर में काम में बाधा उत्... करती है. उसे यहां से शीघ्र कहीं अन्यत्र... देने का आदेश दिया जाए.

बिहारी के अफसर की अपने अफस... अच्छी पटती थी. वह उस का पूरापूरा ख... रखता था. वह स्वयं जा कर भी अपने अफ... से इस संबंध में निवेदन कर आया.

बिहारी ने अपनी पत्नी को कह दिया... नई जगह जाने के लिए तैयार रहे. कभी... तबादला हो सकता है.

बहुत जल्दी तबादले का आदेश... गया. उन का तबादला इस बार छत्त...

हुआ था. जैसलमेर से भी [illegible] सरकारी कर्मचारियों की भाषा में कालेपानी की सजा.

विदाई समारोह में स्टाफ़ के साथी उन के बारे में औपचारिक शब्द बोल रहे थे, "बिहारीजी नेक और ईमानदार लेखाकार हैं. सभी के साथ मधुर व्यवहार रखते रहे. कभी किसी काम में अड़चन नहीं डाली."

उन का ध्यान इन शब्दों की ओर नहीं, [illegible] वह सोच रहे थे कि बच्चों की पढ़ाई कैसे होगी. सत्र के बीच में उन्हें कैसे ले जाएं. वहां दसवीं कक्षा से आगे विद्यालय भी नहीं है. बड़े वाले लड़के को यहीं रखना होगा. छोटे को वहां अपने साथ ले जाएंगे. और यदि वहां से भी दोतीन माह में तबादला हो गया तो?

तालियों की गड़गड़ाहट ने उन्हें सचेत किया. स्टाफ वाले उन्हें मालाएं पहनाने लगे. ●

"हम तो 'बहुमत का आदर' करते हैं... आप को पता ही है देश में पढ़ेलिखे लोगों की तुलना में कम पढ़ेलिखे लोगों की संख्या अधिक है... अतः हम ने राष्ट्रपति जैसे पद के लिए भी..."
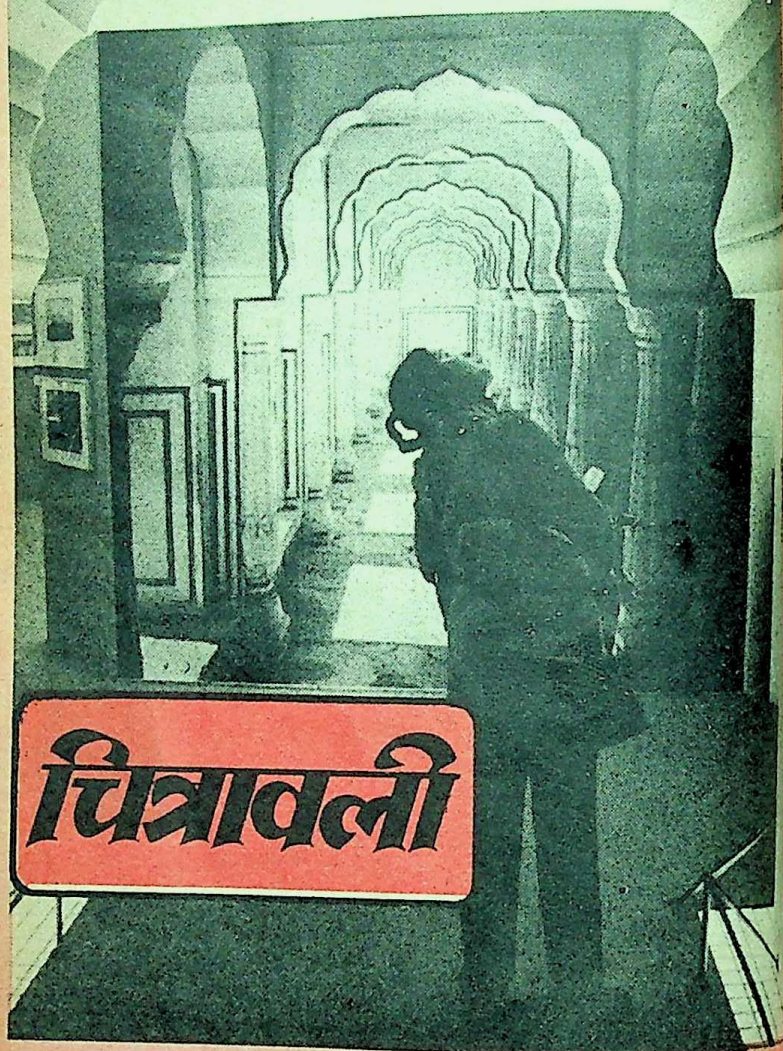
चित्रावली

लंदन में भारतीय प्रदर्शनी : लंदन के विक्टोरिया एंड अलबर्ट म्यूजियम में आयोजि[illegible] प्रदर्शनी मे 17वीं शताब्दी के मुगलकाल की इस शानदार स्तंभावलि का निर्माण विश[illegible] कायाचित्रों की मदद से किया गया है. यह प्रदर्शनी लंदन में आयोजित भारत समारोह का एक हिस्सा है.

अमरीकी राष्ट्रपति के पीछे सैनिक चलता है : एक सैनिक अमरीकी राष्ट्रपति के पीछे साए की तरह लगा रहता है. इस सैनिक के हैट पर क्रास का चिह्न है. यह सैनिक हर पल अपने साथ एक बैग रखता है, जिस में ऐसे संकेत होते हैं, जिन की आवश्यकता राष्ट्रपति को आणविक आक्रमण छेड़ने पर पड़ सकती है.

गंगाजल के बंटवारे पर फिर वार्ता : गंगाजल के बंटवारे की समस्या भारत और बंगला देश के संबंधों में जबरदस्त अवरोध बनी हुई है. चित्र में बंगला देश के कृषि मंत्री श्री ए.जेड.एम. अब्दुल्ला (बाएं से तीसरे) और भारत के सिंचाई मंत्री श्री केदार पांडे (दाएं से दूसरे) अपने सहायकों के साथ नई दिल्ली में गंगाजल के बंटवारे पर विचारविमर्श करते हुए.
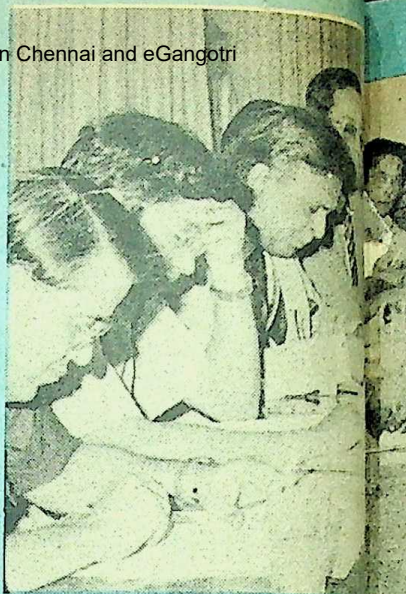
यूनीमोग ट्रकों ने रैली जीती : इस वर्ष पेरिस से डाकार तक आयोजित एक रैली में पश्चिम जरमनी के यूनीमोग ट्रकों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया. इन ट्रकों ने 10,000 किलोमीटर की यात्रा 20 दिनों में तय की है.
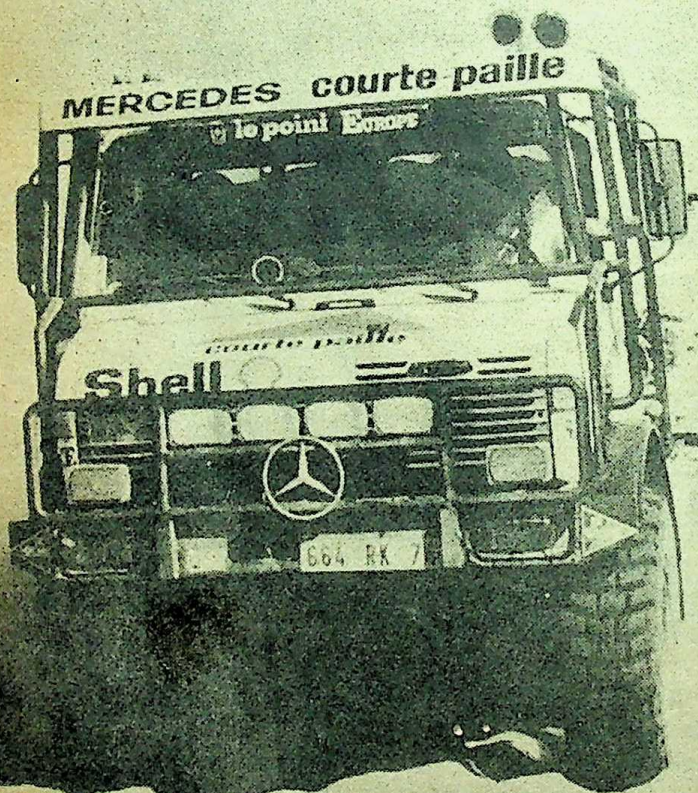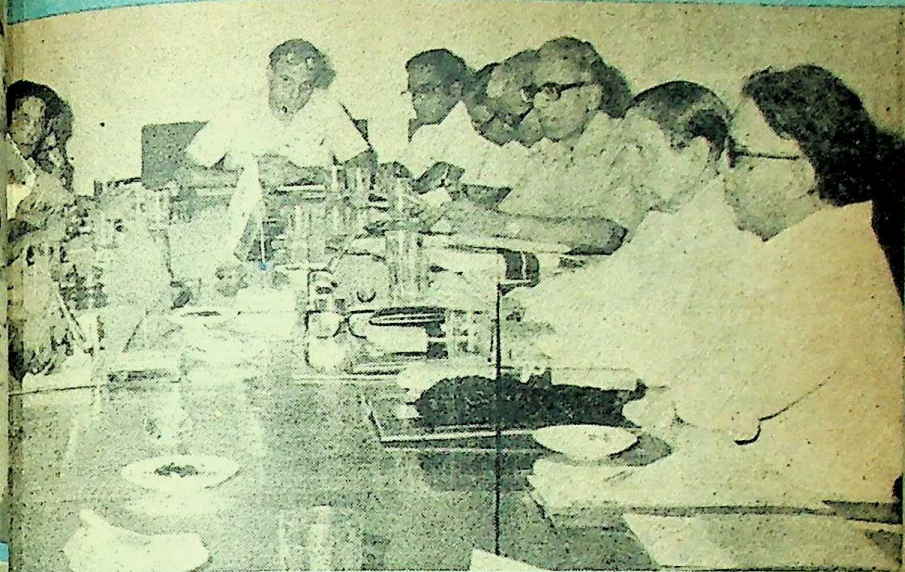
पश्चिम जरमनी में भारतीय संसद सदस्य : पिछले दिनों लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम झाखड़ के नेतृत्व में भारतीय संसद सदस्यों का एक प्रतिनिधिमंडल पश्चिम जरमनी गया. चित्र में प्रतिनिधिमंडल के सदस्य पश्चिम जरमनी के राष्ट्राध्यक्ष प्रोफेसर कार्ल कारस्टैंस (दाएं से पांचवें) के साथ खड़े हैं. श्री कारस्टेंस की बगल में श्री बलराम झाखड़ हैं.

भारतीय मशीनों और यंत्रों की प्रदर्शनी : कोलोन में पिछले दिनों एक अंतरराष्ट्रीय हार्डवेयर मेले का आयोजन किया गया. भारत की 27 कंपनियों ने इस मेले में अपने यहां की निर्मित वस्तुओं का प्रदर्शन किया. इस मेले में 35 देशों की 1,300 कंपनियों ने भाग लिया.

लंबाई : 105 फुट, पंखों का फैलाव : 73 फुट, अधिकतम गति : 2.2 मैक, व्यक्तियों के बैठने का स्थान : 2, सतह पर कार्य करने की गति : 1.2 मील.
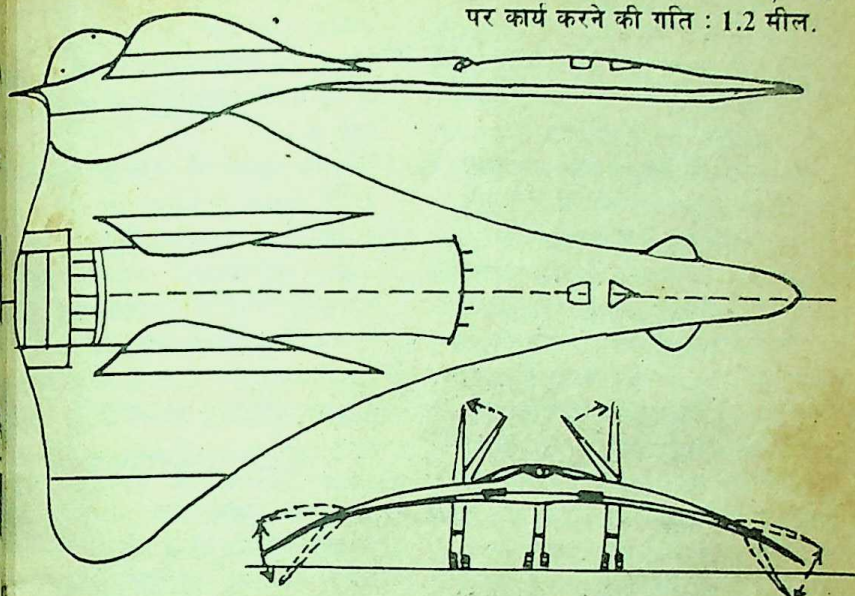
राडार की पकड़ में न आने वाला अमरीकी विमान

लेख • राजेंद्रप्रसाद दुबे

अमरीकी हथियार विशेषज्ञों ने एक ऐसे 'अदृश्य' विमान का निर्माण शुरू किया है जो राडार की पकड़ में आए बिना तथा किसी भी प्रकार का संकेत दिए बिना शत्रु के आकाश को रौंद कर सकुशल वापस आ सकता है...

कोई लड़ाकू विमान चुपके से शत्रु के क्षेत्र में प्रवेश कर अपना काम पूरा करने बाद चुपचाप लौट जाए और शत्रु को उस मान की भनक तक न मिले, क्या यह संभव , हां, क्योंकि यह एक ऐसा विमान है जो डार की पकड़ के बाहर है.

पहले इस तरह के विमान की कल्पना को लोग रक्षा सामग्री की रूपरेखा तैयार करने वाले योजनाकारों का खयाली पुलाव कहा करते थे. लेकिन जब समाचारपत्रों ने अकस्मात अमरीका की इस अदृश्य बमवर्षक विमान के निर्माण की योजना का

रहस्योद्घाटन किया तो सचाई खुल कर सामने आ गई.

राडार की पकड़ से बाहर रहने वाले इस तरह के कुछ 'अदृश्य' विमान आजकल अमरीका के कुछ गुप्त हवाई क्षेत्रों में उड़ानें भी भर रहे हैं.

अमरीका ने इस तरह के विमानों का निर्माण रूस की उत्कृष्ट रक्षा तकनीक की चुनौती को सामने रख कर किया है.

शत्रु के बिना जाने गुप्त रूप से उस पर प्रहार करना एक पुरानी और मान्य तकनीक है. सेना की गाड़ियों तथा सैनिकों की वर्दियों का रंग संयोजन, नौ सेना में समुद्र की अतल गहराइयों में जा सकने वाली पनडुब्बियों पर जोर देना तथा बहुत कम ऊंचाई पर उड़ कर राडार को बेकार कर देने वाले लड़ाकू विमानों को महत्त्व देना इसी गुप्त पद्धति के उदाहरण हैं. लेकिन हवाई युद्ध में गुप्त ढंग से आक्रमण को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है. इस तरह के आक्रमण से निपटने के लिए खास कदम उठाने पड़ते हैं.

आकाश में लड़ाकू विमानों के उड़ने की जानकारी राडार पर, दृश्य ध्वनि से या इन्फ्रा रेड तकनीक के माध्यम से प्राप्त की जाती है.

सामान्यतया विमानों को राडार की पकड़ में आने से बचाने के लिए रंग संयोजन के छद्म आवरण का सहारा ले कर विमान को बहुत ऊंचाई पर या फिर बहुत कम ऊंचाई पर बहुत तेज गति से उड़ाया जाता है. या फिर दुश्मन के राडार को जाम करने की विधि अपनाई जाती है. प्रायः सैनिक विमान राडार को जाम करने तथा राडार की पकड़ से बहुत कम ऊंचाई पर उड़ने की विधि ही अपनाते हैं.

राडार जाम करने से तात्पर्य उस विधि से है, जिस में संबद्ध लड़ाकू विमान राडार से ध्वनि तरंग ग्रहण कर ऐसी तैयार ध्वनि तरंगें वापस भेजता है, जो उस की अपनी आवाज से भी ज्यादा तेज होती हैं और राडार को यह भ्रम देती हैं कि विमान दूसरी दिशा में है.

रूसियों ने अपनी रक्षा तकनीक में कुछ नए विकास किए हैं. उन्होंने ऐसी तकनीक विकसित की है जिस से शत्रु के विमा राडार को जाम नहीं कर सकते. इस ही उन्होंने ऐसे विमान भी बनवाए हैं के विमान को देखते ही मार गिरा उन की इस तकनीक ने विमान द्वारा से युद्ध करने की प्रक्रिया को अप्रभा दिया है.

पर, अमरीकी हथियार विशे अगले दशक में काम आ सकने शस्त्रास्त्र बनाने की प्रक्रिया में 'अदृश्य' विमान के निर्माण की संभा पता लगा लिया, जो राडार की पकड़ बिना तथा किसी भी प्रकार का अपना दिए बिना शत्रु के आकाश को सकुशल लौट कर आ सकता है.

विमान का प्रारंभिक प्रारूप

इस विमान का प्रारंभिक लाकहीड़ गुमन तथा बोइंग कंप करीब पांच वर्ष पूर्व तैयार किया लाकहीड़ कंपनी को विमानों की तैयार करने का अच्छाखासा अनुभव लिए यह कंपनी इस विमान को और बनाने का कार्य कर रही है ताकि यह के पुराने टोही (जासूसी) विमानों 'टी.आर-वन' और 'एस आर 71' का ले सकें. इन कंपनियों द्वारा तैयार नमूना विमान सी.आई.ए. के गुप्त अड्डे 'द रांच' (नेवाडा) से उड़ानें भर

इस विमान के संबंध में अब तक यही जानकारी प्राप्त हो सकी है. इस का फोटो कहीं भी उपलब्ध नहीं है रेखाचित्र उपलब्ध हैं. इस के निर्मा विस्तृत जानकारी भी प्राप्त नहीं है. निर्माण के आधारभूत सिद्धांतों के विमान विशेषज्ञ अपनेअपने अटकलबाजियां लगा रहे हैं. वैसे विम अदृश्य कर सकने के सिद्धांत की जा सब को है, पर ऐसा अदृश्य विमान लिए नया समाचार है. यही तकनीक प्रक्षेपास्त्रों को अदृश्य करने में अप रही है.
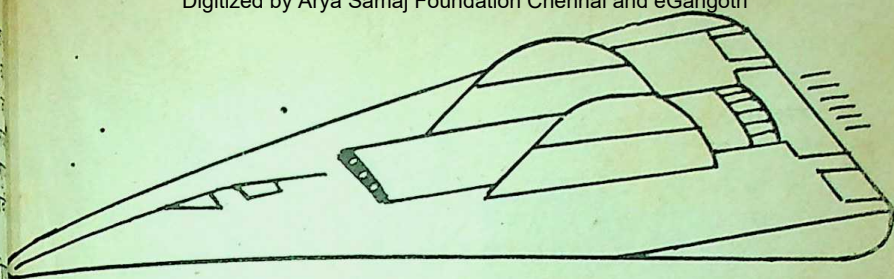
राडार की पकड़ में न आने वाले 'अदृश्य' अमरीकी विमान का रेखाचित्र.

कुल मिला कर यह अदृश्य विमान डेल्टा के आकार जैसा है, इस में कोई तीखा कटाव आदि नहीं होता, क्योंकि राडार ऐसे कटाव जल्दी पकड़ता है. राडार इसे न पकड़ पाए, इस के लिए इस के आकार को बहुत छोटा (अमरीका के सर्वप्रसिद्ध बमवर्षक बी–52 के आकार से आधे से भी कम) रखा गया है तथा इस के निर्माण में ग्रेफाइट का उपयोग किया गया है.

इन्फ्रा रेड खोजी यंत्रों द्वारा पकड़ से बचाने के लिए इस विमान का एकमात्र इंजन विमान के एकदम ऊपर, काकपिट के पीछे रखा गया है. इस के गैस रूपी ईंधन का धुंआ भी अंधी नली में से गुजर कर अंतरिक्ष में जज्ब हो जाएगा. यद्यपि इन गुणों से इसे अदृश्य रहने में सहायता मिलेगी. परंतु इस की अदृश्यता का मुख्य आधार इस पर ऐसी परत चढ़ा देना है, जो राडार के संकेतों को जज्ब कर लेगी, उन्हें वापस नहीं भेजेगी. इस परत की एक से अधिक तह इस पर की जाती हैं.

इस डाइलेक्ट्रिक सामग्री (रबरनुमा फोम) की परत चढ़ी होने से राडार की तरंगें उस में प्रवेश कर जाती हैं. इस विमान में स्वचालित उड़ान–नियंत्रक तथा राडार जाम करने वाला यंत्र भी रखा गया है. यह यंत्र इस काम आता है कि यदि कोई तरंग राडार को इस विमान की उपस्थिति के बारे में मिल भी रही हो तो उसे खत्म कर दे.

परंतु इन सब विशेषताओं के बावजूद यह अदृश्य विमान अभी सर्वगुण संपन्न नहीं बन सका है. बहुत छोटा होने पर भी यह बहुत भारी है और इस में एक ही इंजन होने से इसे उड़ाने में भी बहुत कठिनाई होती है.

इन के दुर्घटनाग्रस्त होने की सूचनाएं भी मिली हैं. दूसरी तरह की परेशानी इस की राडार तरंगों को पी जाने वाली परत से पैदा होती है. यह परत विमान को बिना मजबूती प्रदान किए विमान के भार को बढ़ा देती है. यह परत रबर व फोम का मिश्रण होने से उच्च तापमान को भी बरदाश्त नहीं कर पाती, इस का मतलब यह हुआ कि यह विमान सुपरसोनिक (ध्वनि की गति से भी तेज उड़ने वाले) विमानों की गति से नहीं उड़ सकता, क्योंकि ध्वनि की गति से भी तेज उड़ते समय सुपरसोनिक विमान का बाहरी हिस्सा बहुत गरम हो जाता है. इस तरह गति कम होने तथा काफी भारी होने के कारण यह विमान सक्षमता से कार्य नहीं कर सकता.

इन सब कमियों के बावजूद इस विमान की कल्पना हवाई युद्ध में एक नए युग का सूत्रपात है तथा अंतरिक्ष अनुसंधान में अमरीका के सर्वप्रथम होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है. पर अमरीका की यह सफलता तभी तक अपना प्रभाव बनाए रख सकती है, जब तक रूस कोई ऐसी तकनीक विकसित नहीं कर लेता जो इस तरह के विमान को भी अपनी पकड़ में ले कर मार गिराए. रूसियों के पास ऐसी तकनीक विकसित करने के लिए पर्याप्त समय है, क्योंकि अमरीकी सेना में ये 'अदृश्य' विमान 1987 से पहले नहीं आ सकते.
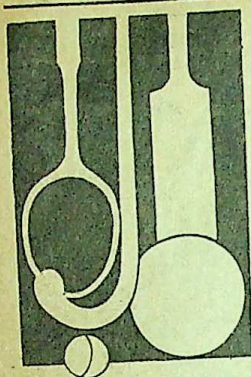
खेल समीक्षा

बात विंबलडन की

ब्योर्न बोर्ग, इवान लैंडल, जोसे लुई, गुइलमों विलास जैसे खिलाड़ियों की गैरमौजूदगी की वजह से विंबलडन–82 के आकर्षण में कमी हो जाने की जो आशंकाएं व्यक्त की गई थीं वे सभी निर्मूल साबित हुई.

घास के 18 कोर्टों पर विंबलडन के मैच हमेशा की तरह हुए, समय असमय की वर्षा से थोड़ी दिक्कत जरूर हुई. लेकिन न खिताब जीतने का खिलाड़ियों का संघर्ष कमजोर और न ही दर्शकों की दिलचस्पी में कोई आने पाई.

विश्वविख्यात खिलाड़ी राड लेवर ठीक ही कहा था, "विंबलडन का आक कोई एक खिलाड़ी नहीं होता विंबलडन की वजह से खिलाड़ियों आकर्षण पैदा होता है."
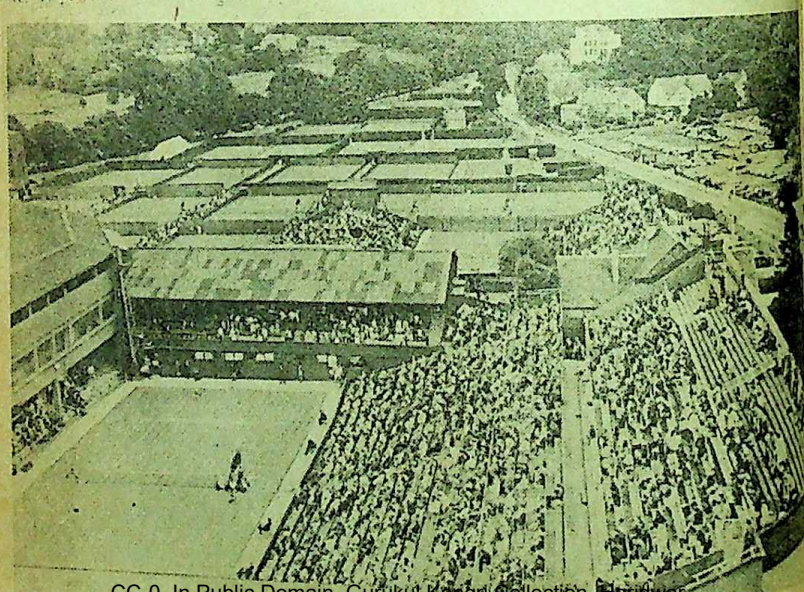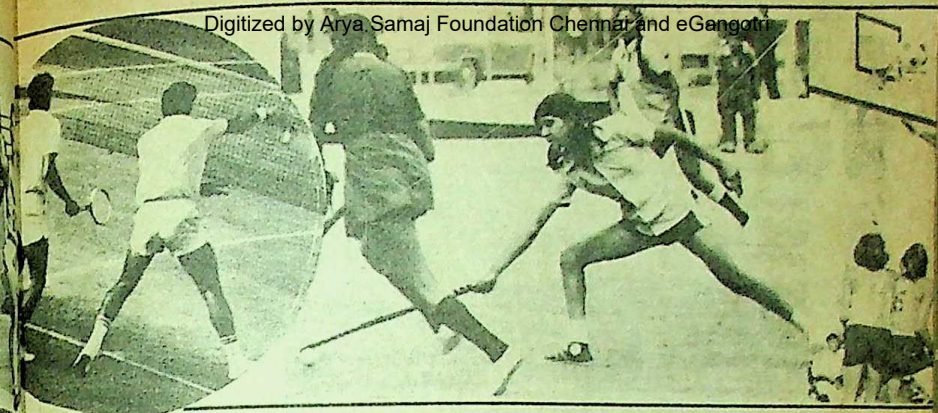
बोर्ग इसलिए नहीं खेला क्योंकि आयोजकों ने उसे क्वालीफाइंग मैच खेल कर मुख्य प्रतियोगिता में शामिल होने को कहा था. पांच साल का विबलडन विजेता 1982 में दस ग्रां पी मुकाबलों में शामिल होने की आवश्यक शर्त पूरी नहीं कर पाया था. क्वालीफाइंग मैच खेलने की शर्त उसे काफी अपमानजनक लगी.

(बाएं) विबलडन के मुकाबले देखने के लिए दर्शकों से भरा कोर्ट नं. एक और (दाएं) जान मैकनरो व क्रिस एवर्ट जो ज्यादा सफल न हो सके और ब्योर्न बोर्ग व मारलोना शामिल नहीं हुए.

फाकलैंड मामले को ले कर इंगलैंड व आर्जेंटीना में छिड़े युद्ध की वजह से आर्जेंटीना के क्लार्क व विलास विबलडन में नहीं आए. चेकोस्लोवाकिया का इवान लैंडल व अमरीका का एडी डिब्स विबलडन में इसलिए शामिल नहीं हुए क्योंकि वे घास के कोर्टों पर अपने आप को अनुपयुक्त मानते हैं.

इन नामी खिलाड़ियों के [illegible] 106 साल पुरानी विंबलडन प्रतियोगिता के 96 वें सालाना मुकाबले में अमरीकियों का बोलबाला रहा, वैसे भी पिछले दसपंदरह साल में अमरीका में टेनिस का खेल जिस तेजी से विकसित हुआ है, उसे देखते हुए यह स्थिति अप्रत्याशित नहीं थी.

पुरुष व महिला वर्ग की वरीयता सूची के 16-16 खिलाड़ियों में शुरू के 4-4 अमरीकी थे व कुल मिला कर सूची में 9-9 स्थान अमरीकियों के हिस्से में थे. पुरुष युगल व महिला युगल में भी वरीयता सूची के पहले दो स्थान अमरीकी खिलाड़ियों को मिले.

मुकाबलों में भी अमरीकी खिलाड़ियों का ही बोलबाला रहा. तहलका मचाया 21 वर्षीय टिम मेयोरी ने जो पिछली बार वरीयता सूची में न होते हुए भी क्वार्टर फाइनल तक पहुंच गया था, इस बार सेमीफाइनल तक जा पहुंचा. रास्ते में उस ने अमरीका के सैंडी मेयर, इंगलैंड के बस्टर माडूम व अमरीका के [illegible] टीचर को हराया.

पहले दौर में वरीयता सूची के आस्ट्रेलियाई खिलाड़ी पीटर मैकनमारा फिर दूसरे दौर में अमरीका का ब्रायन गाटफ्रीड हारा, तीसरे दौर में अमरीका का ही सैंडी मेयर व चौथे दौर में स्वीडन का मैट्स विलेंडर, अमरीका का रास्को टैनर व इंगलैंड का बस्टर माडूम प्रतियोगिता से बाहर हुए.

क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले खिलाड़ियों में से 6 अमरीकी थे. आस्ट्रेलिया का मार्क एडमंडसन अप्रत्याशित रूप से सेमीफाइनल में जा पहुंचा लेकिन फाइनल का मुकाबला आशा के अनुरूप दो खब्बू अमरीकियों जिमी कोनर्स व जान मैकेनरो के बीच हुआ. ठीक 14 साल पहले 1968 में फाइनल में दो खब्बू खिलाड़ियों का मुकाबला हुआ था. तब के दोनों खिलाड़ी टोनी रोश व राड लेवर आस्ट्रेलिया के थे.

सवा चार घंटे के फाइनल में कोनर्स 3-6, 6-3, 6-7, 7-6, 6-4 से जीत गया. 19[illegible]

1974 में कोनर्स व क्रिस एवर्ट जीत गए थे लेकिन आठ वर्ष बाद इस बार कोनर्स तो सफल रहा, पर क्रिस को असफलता हाथ लगी.
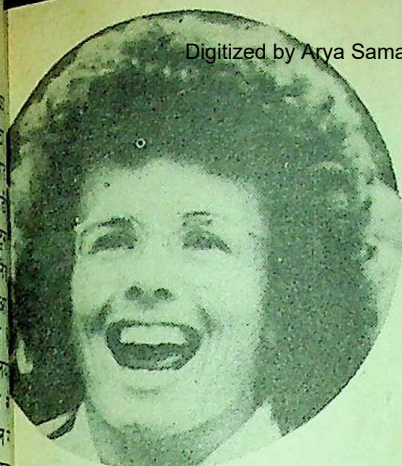
बिली जीन किंग : सेमीफाइनल में क्रिस एवर्ट से पराजित.

पहली बार खिताब जीतने के आठ साल द उसे फिर सफलता मिल सकी. पिछले ाल.मैकेनरो विजेता रहा था.

पुरुष युगल में भी पिछली बार पीटर लेमिंग के साथ उस ने जीत हासिल की थी, किन इस बार यह जोड़ी हार गई.

महिला वर्ग में भी यही कहानी दोहराई ई. 1981 की विजेता क्रिस लायड को मरीका की ही मार्टिना नावरतिनोवा ने हरा या.

महिला वर्ग में किशोर खिलाड़ियों का बोलबाला रहा. 100 से ज्यादा एकल मैच ल चुकी अमरीका की 38 वर्षीया बिली जीन ग ने जरूर इस स्थिति को चुनौती दी. 21 बलडन खिताब जीत चुकी किंग ने वैडी बुल व ट्रेसी आस्टिन जैसी खिलाड़ियों को रा कर सेमीफाइनल में प्रवेश किया. मीफाइनल में भी वह क्रिस एवर्ट से कड़ा कावला करते हुए हारी.

क्वार्टर फाइनल में पहुंची आठ खिलाड़ियों में सात अमरीका की थीं. रवरीयता सूची की बेटिना बुगे जो मीफाइनल में हारी, हालांकि पश्चिमी रमनी के लिए फेडरेशन कप में खेलती है किन साल का उस का अधिकांश समय अमरीका में ही बीतता है.

फाइनल करीब 82 मिनट चला जिस में मार्टिना 6-1, 3-6, 6-2 से विजयी रही. पाम श्रिविर के साथ उस ने महिला युगल का खिताब भी जीता.

भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन पिछली बार से भी खराब रहा. विजय, रमेश व शशि मेनन तीनों को विंबलडन में खेलने के लिए क्वालीफाई करना पड़ा.

विजय पिछले वर्ष की विंबलडन प्रतियोगिता में एकल, युगल व मिश्रित युगल में क्वार्टर फाइनल तक पहुंचा था. मिश्रित युगल में उसे इंगलैंड की वर्जीनिया वेड के साथ सातवें नंबर की वरीयता दी गई. पुरुष युगल में वह खेला नहीं जब कि एकल में 10 ग्रां पी मैच खेलने के नियम का पालन न कर पाने की वजह से उसे क्वालीफाइंग मैच खेलने पड़े. क्वालीफाइंग दौर के बाद उसे पता चला कि मैक्सिको के राउल रामीरेज के प्रतियोगिता से हट जाने की वजह से उसे सीधे ही प्रवेश मिल गया है.

जैफ बोरीविएक (अमरीका) एवं पास्कल पोर्ते (फ्रांस) को हराने के बाद तीसरे

मार्टिना : 82 मिनट के संघर्ष के बाद आखिर सफलता पा ही ली.

विजय अमृतराज : कुछ भी हाथ न लगा.

दौर में वह अमरीका के रास्को टैनर से 6-4, 6-4, 4-6, 4-6, 6-3 से हार गया. मिश्रित युगल में उसे व वेड की जोड़ी को दूसरे ही दौर में चार्ल्स स्ट्रोड (अमरीका) व आद्रिआ तेमेरबरी (हंगरी) की जोड़ी ने हरा दिया.

इंगलैंड के एंड्यूजेरेट व अमरीका के डेविड डाउलेन को हराने के बाद रमेश कृष्णन भी तीसरे दौर में आस्ट्रेलिया के मार्क एडमंडसन से हार गया.

रमेश कृष्णन : अन्य भारतीय खिलाड़ियों की तरह पूरी तरह असफल.

अशोक अमृतराज तीसरे भारतीय खि... रूप में दूसरे दौर में मात खा गया ... अमृतराज पुरुष युगल में जान अ... साथ खेला लेकिन पहले ही दौर में फि...

वर्षा की फुहारों ने विंबलडन ... समय ऐसा ला दिया जब लगने लगा ... सप्ताह की यह प्रतियोगिता तीसरे स... न खिंच जाए. नंबर एक कोर्ट को ता... मजबूत व्यवस्था कर दी गई लेकिन ... कोर्टों पर कनात डाले रखने के बावजूद ... पानी इतना ज्यादा रिस जाता था कि ... धूप निकलती उस पानी को ही सुखाने म... लग जाता और जैसे ही घास सूख पाती ... फुहारें पड़ने लगतीं.

पहले सप्ताह यही आंख... चलती रही. दूसरे सप्ताह स्थिति ... संभली और इसी वजह से 5,93,363 ... पुरस्कार राशि वाली विंबलडन प्रति... निर्धारित समय में पूरी हो गई.

भारत इंगलैंड में क्यों हा...

एक बार फिर भारत इंगलैंड ... शृंखला हार गया. इस तरह 1981-... घरेलू मुकाबले में इंगलैंड को हरा कर ... क्रिकेट श्रेष्ठता की जो गलतफहमी ... गई थी वह दूर हो गई.

एक बार फिर यह बात साबित ... कि गावसकर एक कप्तान के रूप में ... भूमि पर अपनी सारी प्रतिभा गंवा ... भारत में धीमे पिचों पर वह भले ही ... कप्तान साबित हो गया लेकिन बाहर ... वह सफल कप्तान रह पाया और न ही ... लिए फायदेमंद साबित होने वाला ब... जब तक वह कप्तान नहीं बना था. ... मैदानों पर उस ने 29 टेस्टों में 15 ... जमाए थे और छः टेस्टों में भारत को ... भी मिली थी. लेकिन कप्तान बन जाने ... बाहर खेले गए नौ टेस्टों में उस ने ... जरूर है लेकिन कोई शतक नहीं ब...

इस बार भारत ने तीन टेस्... पिछले रिकार्ड को देखते हुए भारत ...

(ऊपर) गावसकर : इंगलैंड दौरे में कुछ न कर सका. (दाएं) बाथम : भारतीय टीम उतनी कमजोर नहीं थी, जितनी कल्पना की थी.

की ज्यादा संभावना भी नहीं थी. लेकिन जैसा कि बाथम ने तीनों मैचों में हराने का दावा किया था वैसा नहीं हो पाया. पहला मैच संघर्षपूर्ण स्थिति में हार जाने के बाद भारत ने मध्यम क्रम के बल्लेबाजों की कामयाबी की वजह से बाकी दो टैस्ट बचा लिए.

इस का बहुत सा श्रेय कपिल देव को जाता है. उसे शृंखला का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया. उस की बल्लेबाजी में कलात्मकता नहीं थी तो भी कम से कम तीन मौकों पर उस ने संकट के दौरान भारत को बचाया. लार्ड्स के पहले टैस्ट में उसी के बल पर भारत लज्जाजनक हार को थोड़ा बहुत सम्मानजनक बना पाया.

उस ने 73.00 की औसत से 292 रन बनाए व 43.90 की औसत से दस विकेट लिए.

विश्वनाथ ने पांच पारियों में 189 रन बना कर अपनी योग्यता साबित की. वेंगसरकर लार्ड्स की 157 रनों की पारी जैसा खेल फिर नहीं दिखा सका.

• बल्लेबाज के रूप में गावसकर तीन पारियों में सिर्फ 74 रन बना पाया.

आरंभिक खिलाड़ियों के रूप में प्रणव राय व गुलाम परकार को ले जाया गया था लेकिन इस्तेमाल रवि शास्त्री का किया गया. चेतन चौहान की उपेक्षा का ही यह नतीजा रहा कि तीनों टैस्टों की पांचों पारियों में भारत की शुरुआत कभी भी ढंग से नहीं हो पाई.

भारत को अब छः महीने के भीतर ही पाकिस्तान व वेस्टइंडीज की मजबूत टीमों से

(ऊपर) **विश्वनाथ,** (सामने) **कपिल और** (नीचे) **वेंगसरकर : भारत की ओर से सफल खिलाड़ी रहे.**
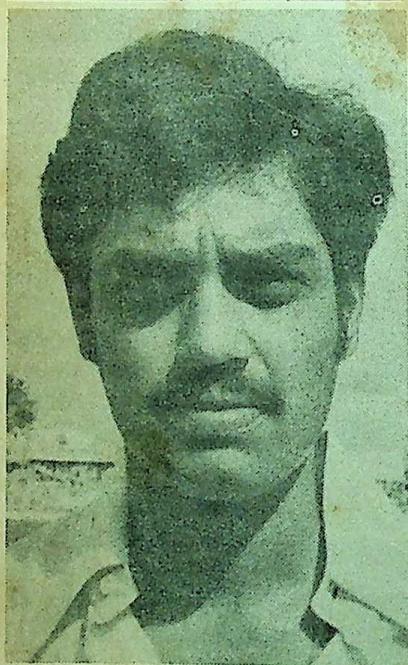
भिड़ना है— उन्हीं के मैदानों पर. वर्तमान टीम से तो इन दोनों मुकाबलों में सफलता की आशा नहीं की जा सकती.

क्रिकेट खिलाड़ियों के जरिए चाय का निर्यात

यूरोप में भारतीय चाय का निर्यात बढ़ाने के लिए भारत सरकार इन दिनों काफी चिंतित हो गई है, तभी तो चाय के लिए यूरोपीय लोगों को आकर्षित करने के लिए क्रिकेट खिलाड़ियों को इस्तेमाल किया जाने लगा है.

सुनील गावसकर व इयान 'बॉथम' इंगलैंड के टेलीविजन पर चाय की चुस्कियां
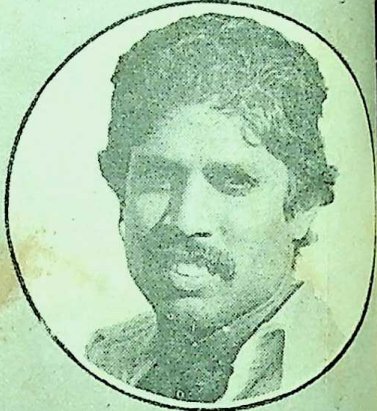
लेते हुए दिखाई दिए, साथ ही इस तरह का प्रचार करते हुए भी कि भारतीय चाय सबसे बढ़िया होती है.

हाल ही में इंगलैंड गई भारतीय क्रिकेट टीम के प्रत्येक सदस्य को ऐसे पुलोवर दिए गए जिन पर भारतीय चाय के समर्थन का डिजाइन बना हुआ था.

केंद्रीय वित्त मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव वेंकटरमण इस सिलसिले में लंदन भी गए, लेकिन लगता है कि इस सारे प्रयास से कोई खास फायदा नहीं हुआ है. भारतीय टीम के प्रदर्शन से इंगलिश दर्शकों को इतनी निराशा हुई कि ओवल के तीसरे टेस्ट मैच में 12 जुलाई को चौथे दिन का खेल देखने सिर्फ 500 लोग ही पहुंचे.

लेख • गोपाल कृष्ण गोयल

परमाणु घड़ी : बनावट की दृष्टि से जटिल मगर उपयोगिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण.
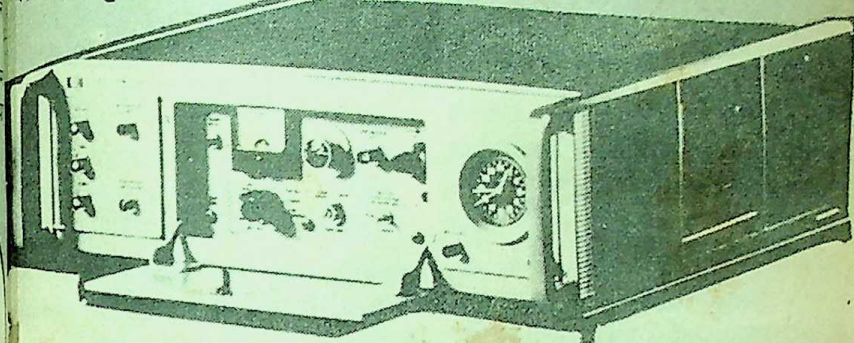
एशियाई खेलों के लिए सर्वशुद्ध समय कौन बताएगा?

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि आप इस प्रश्न का सहीसही उत्तर नहीं पाते हैं, क्योंकि कुछ ही लोग जानते हैं कि सेकंड का दसवां, सौवां व हजारवां भाग बताने वाली घड़ी कहां और कैसे देखने को मिल सकती है और उस की आखिर क्या रूपरेखा होगी.

यह वैज्ञानिक युग है, ऐसे कितने ही क्षेत्र हैं, जहां सेकंड के दो दशमलव से ले कर छः दशमलव तक की शुद्धता वाले समय की जरूरत होती है. खेलकूद, तैराकी, घुड़दौड़, फोटोग्राफी, डाक्टरों के आपरेशन कक्षों में तो उतना अधिक शुद्ध समय नहीं चाहिए, जितना 18,000 मील प्रति घंटा उड़ने वाले उपग्रहों, चंद्रयान और सेवायान के मिलन के समय, राडार द्वारा दुश्मनों के वायुयानों का पता लगाने के समय, सोनार व लोनार द्वारा समुद्र में तैरती हुई बर्फ की चट्टानों और जंगी पनडुब्बियों का पता लगाने के समय, दूरगामी दूरमारक मिसाइलों का अचूक निशाना लगाने के समय जरूरत पड़ती है. ये तो कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जिन से यह अंदाज लगाया जा सकता है कि मानव ने समय की बारीक नापतोल में कहां तक उन्नति कर ली है और उस की आवश्यकता किस सीमा तक बढ़ गई है.

तो फिर आइए, एक ऐसी घड़ी के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त कर लें, जिस की

कीमत आज [illegible] लाख रुपए के

लगभग होगी और जिस में 10 हजार वर्षों में सिर्फ एक सेकंड का अंतर आने की संभावना होगी. ऐसी घड़ी ही ऊपर बताई हुई जरूरतों को पूरा करने में सफल हुई है. इस घड़ी की रूपरेखा या कार्य संचालन आम यांत्रिक कलपुर्जों से बनी घड़ी जैसा नहीं है. यह तो शुद्ध इलैक्ट्रानिक यंत्र है जिस में पेंडुलम घड़ी की भांति सिजियम धातु नं. 133 के परमाणुओं के कंपनों द्वारा सेकंड की अवधि ज्ञात की जाती है. यह विश्व का सर्वश्रेष्ठ स्टैंडर्ड समय माना जाता है.

भारतीय सर्वशुद्ध समय का केंद्र

भारत में राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला द्वारा संचालित ए.टी.ए. नाम से ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली में एक ऐसा केंद्र है जो अंतरराष्ट्रीय समिति के अनुसार 5,10 और 15 मैगाहर्ट पर प्रतिदिन सुबह नौ बजे से सायं छः [illegible] सर्वशुद्ध समय की जानकारी [illegible] रेडियोप्रसारण करता है. यह सम[illegible] मिलीसेकंड तक शुद्ध व भारतीय [illegible] एक मात्र स्थान है. यहां के समय की [illegible] से प्राप्त समय के सिगनलों से सम[illegible] प्रतिदिन शुद्धता की जांच की जाती [illegible] केंद्र पूरे दक्षिण पूर्व एशिया की शुद्ध स[illegible] जरूरतों को पूरा करता है. वैसे [illegible] प्रत्येक जगह साधारण रेडियोसेट पर [illegible] जा सकता है.

चाहे कितनी ही कीमती घड़ी [illegible] पास क्यों न हो, वह हमेशा रेडियो [illegible] अपना समय मिला कर रखता है, क्यों[illegible] साधारण की दृष्टि में केवल रेडियो का [illegible] हुआ समय ही सर्वशुद्ध समय समझा [illegible] यह सत्य है, पर एक वैज्ञानिक की दृष्टि [illegible] समय लगभग सही है क्योंकि रेडियो [illegible]

बर्नस्विक (प.जरमनी) में बनी इस घड़ी के विषय में वैज्ञानिकों का मत है कि इस घड़ी [illegible] 50 लाख वर्षों में एक सेकंड का अंतर आएगा.
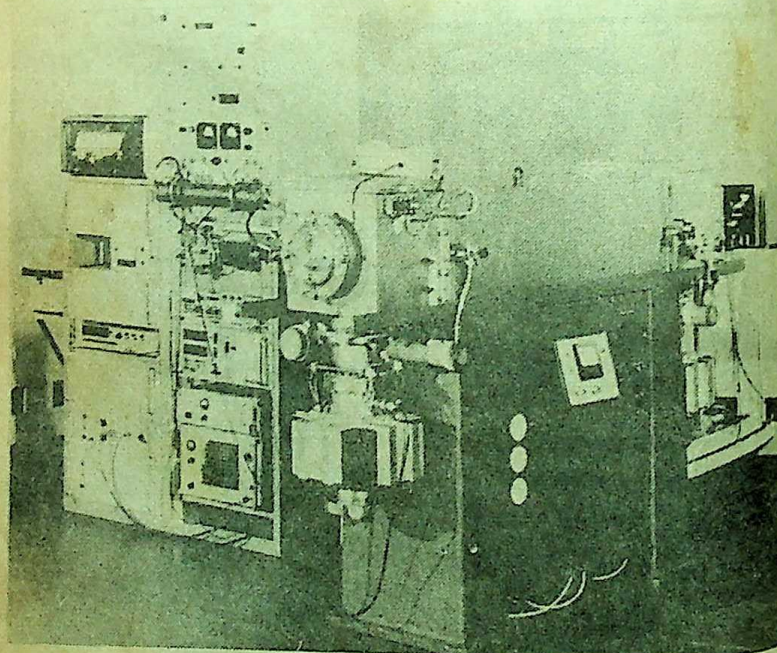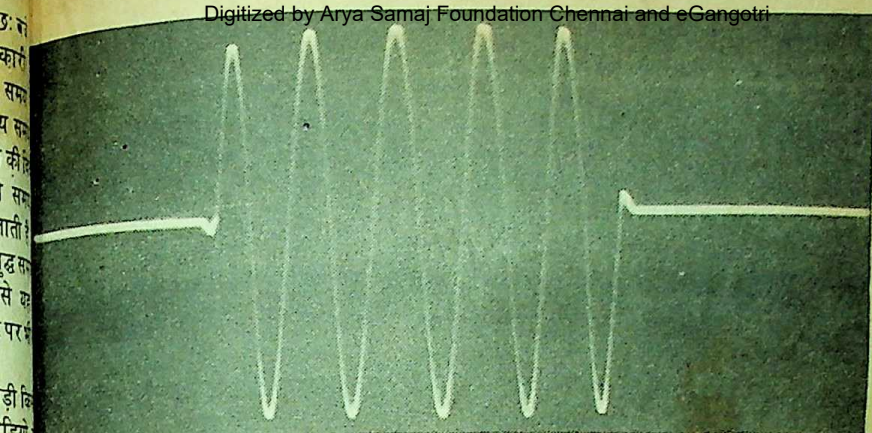
रेडियो प्रसारण के दौरान की जाने वाली पिप की ध्वनि तरंग, जिस की अवधि पांच मिली सेकंड होती है.

केवल 'सेकंड्री क्लाक' होते हैं, अतः रेडियो वाले भी अपनी घड़ियों का सही समय मिलाने के लिए सदैव प्राइमरी स्टैंडर्ड टाइम क्लाक का सहारा लेते हैं और ऐसी घड़ी सिर्फ ए.टी.ए. के पास है जो अपनी किस्म की पहली और अकेली है.

रेडियो प्रसारण द्वारा क्या बताया जाता है?

रेडियो वाले सेकंड की शुद्धता की जानकारी देने के लिए समाचारों से पहले या बाद ठीक छः पिप देते हैं और आखिरी पिप ठीक सातवीं सेकंड होता है. अगर आप अपनी स्टाप वाच पर या डिजिटल वाच (सेकंड वाली) घड़ी पर समय लेना चाहें तो आप उसे छठी पिप पर शुरू कर सकते हैं.

यह सेवा बी.बी.सी. (ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन) पर तो बहुत वर्षों से चलती आ रही है, पर श्रीलंका के सिलोन रेडियो से आप पिप नहीं सुन सकते. शायद वे इतने अधिक शुद्ध समय की जरूरत अभी नहीं महसूस करते.

हमारे ए.टी.ए. केंद्र का मुख्य उद्देश्य समय की उच्चतम शुद्धता को बनाए रखना है, जिस के प्रसारण की शुद्धता की जांच राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के अलग कक्ष में की जाती है, जहां पर इस से भी ज्यादा शुद्ध युक्ता

समय के स्रोत हैं. विश्व के अन्य ऐसे ही केंद्रों के सिगनलों को प्राप्त कर के उलटे तरीके से जांच की जाती है ताकि हमारा प्रसारण अंतरराष्ट्रीय स्तर का बना रहे.

यद्यपि परमाणु घड़ी इस केंद्र का दिल है, फिर भी बिजली बंद हो जाने या किसी अन्य यंत्र की खराबी के कारण आने वाले अवरोध को रोकने के लिए क्रमशः बैटरियों का एक बहुत बड़ा सेट तथा अतिरिक्त यंत्रों

नई दिल्ली में राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला द्वारा संचालित समय का सर्वशुद्ध प्रसारण करने वाला केंद्र ए.टी.ए. यानी आधुनिक जंतरमंतर.
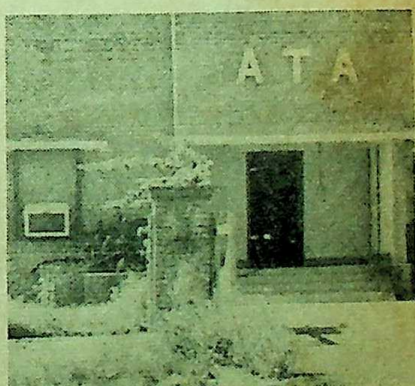
का प्रबंध किया गया है.

यूरोप का छोटे से छोटा देश भी अपना अलग केंद्र रखता है जब कि हमारे इतने बड़े देश में सिर्फ यही एक केंद्र है. इस के पूर्व में निकटतम केंद्र जे.जे.वाई. जापान में है पश्चिम में आई. वी. एफ. इटली में है कारण ए. टी. ए. का महत्त्व और भी बढ़ जाता है. आइए, अब हम आप केंद्र के प्रसारण का विवरण समझा दें

सेकंडपिप : यह पांचमिली सेकंड अवधि की होती है और एक हजार साइकिल प्रति सेकंड वाली टोन से बनाई जाती है एक सेकंड के बाद आती है.

मिनटपिप : यह पिप 100 मिली सेकंड वाली अवधि की होती है और यह भी एक हजार प्रति सेकंड वाली टोन से बनाई जाती है और प्रत्येक छठी सेकंड पर सुनाई देती है. इस प्रकार सेकंड और मिनट का अंतर साफसाफ सुनाई देता है.

टोन : प्रत्येक 15 मिनट के बाद मिनट के लिए लगातार एक हजार साइकिल वाली टोन होती है जो घोषणा के फौरन बाद शुरू हो जाती है और दूसरी बार ठीक मिनट बाद आती है.

घोषणा : प्रसारण के समय 15वें मिनट से पहले सर्वशुद्ध भारतीय समय की घोषणा स्वचालित टेपरिकार्डर द्वारा अंगरेजी में इस प्रकार की जाती है जैसे मानो वह 'बोलती घड़ी' हो.

अंतरराष्ट्रीय महत्त्व का यह ए. टी. ए. केंद्र हमारे देश के लिए कितना लाभप्रद है, यह तो आने वाली पीढ़ियां ही बता पाएंगी क्योंकि किसी भी संदर्भ का परिणाम आंतरिक तथा दूरगामी होता है, फिर भी इस संदर्भ ने काफी औद्योगिक, वैज्ञानिक व प्रतिरक्षा संबंधी समस्याओं को सुलझाया है. अब अंक परीक्षण अथवा जांचपड़ताल के कार्यों के लिए हमें विदेशों का मुंह नहीं ताकना पड़ेगा. अगर ऐसा न होता तो एशियाई देशों के लिए समय की जानकारी विदेशों से लेनी पड़ती.

यह बड़े गौरव की बात है कि भारत ने अपने आप को काफी आगे बढ़ा लिया है. परमाणु घड़ियां बनाने का भी कार्य शुरू कर दिया है, जो देश की प्रगति में एक बड़ा कदम सिद्ध होगा.

कौन घड़ी कितना समय शुद्ध बताती है?

सूर्य घड़ी

कुछ मिनट प्रतिदिन गलत हो जाती है. यह सिर्फ समय का अंदाज लगाने के लिए प्राचीन समय में जब अन्य कोई दूसरा साधन नहीं था, काम में लाई जाती थी.

हाथ की साधारण घड़ी

प्रतिदिन 10 सेकंड से 30 सेकंड तक गलत हो सकती है. वैसे जनसाधारण के लिए उपयुक्त है.

पेंडुलम क्लाक

एक सेकंड प्रतिदिन गलत हो सकती है. स्टेशनों, डाकघरों, गिरजाघरों आदि में ठीक रहती है.

क्वाट्र्स क्लाक (साधारण)

एक सेकंड प्रति वर्ष गलत हो सकती है. डिजिटल क्लाक ज्यादातर ऐसे कामों में प्रयोग किया जाता है जहां समय की साधारण शुद्धता चाहिए.

क्वाट्र्स क्लाक (विशेष किस्म का)

एक सेकंड की गलती 300 वर्षों में आ सकती है.

परमाणु घड़ी

एक सेकंड की गलती प्रति 10 हजार साल में आ सकती है. यही आज की सब से महंगी घड़ी है जो अंतरिक्ष यानों की उड़ानों, मिसाइल व राकेट राडार आदि यंत्रों के संचालन में काम आती है. ऐसी घड़ियां कुछ ही विकसित देश बना पाए हैं, भारत में ऐसी कुछ ही घड़ियां हैं.

मुक्ति कैद

लेखक छोटे भरानी ने एक गूढ़ किंतु सामयिक विषय को ले कर उपन्यास 'मुक्ति कैद' की रचना की है. इस में न केवल नारी के विविध रूपों को दर्शाया गया है, अपितु धर्म की आड़ में स्वार्थ सिद्धि का भी पर्दाफाश किया गया है.

उपन्यास की एक पात्रा रुक्मिणी अपने पति से उपेक्षित व तिरस्कृत हो कर विद्रोहवश अन्य लोगों के गृहस्थ जीवन की खुशियां समाप्त करने पर उतर आती है और इस के लिए वह धर्म के आडंबर का सहारा लेती है.

उपन्यास की मुख्य पात्रा है रमणा जो रुक्मिणी की बातों में आ कर अपना भरापूरा खुशहाल घर छोड़ कर मुक्ति पाने के लिए आश्रम चली जाती है और पति से तलाक ले लेती है. उस का पति रघु क्योंकि उस से अत्यधिक प्रेम करता है, अतएव वह फिर भी अपनी सारी संपत्ति उसी के नाम कर देता है.

रघु, पत्नी के वियोग में आत्महत्या तक करने पर उतर आता है, पर उस का एक मित्र उसे एक वेश्या पद्मा से मिलवाता है जो उस को सामान्य बनाने का प्रयास करती है. पर, रघु पत्नी के लिए ही तड़पता रहता है.

इधर रुक्मिणी की वास्तविकता खुलती है, साथ ही रमणा के पास धन खत्म हो जाने पर उसे आश्रम से निकाल दिया जाता है. अब वह जिस आश्रम में भी जाती है, वहां उसे उपदेश और व्यवहार में घोर विरोधाभास मिलता है. हार कर वह घर वापस आ जाती है, पर अपने पति से क्षमा नहीं मांग पाती, क्योंकि जब तक वह पद्मा के घर पहुंचती है वह दम तोड़ चुका होता है.

इस उपन्यास को पढ़ कर लगा जैसे तार्किक और विवेकपूर्ण लेख को रोचक बनाने का प्रयास करने के लिए उसे उपन्यास का रूप दिया गया है. पर सच पूछें तो पुस्तक तब भी रोचक नहीं बन पड़ी है. लेखक इस में उपन्यासकार नहीं, उपदेशक ही बना रहा है.

उपन्यास के मुख्य पात्र रघु को अत्यधिक व्यावहारिक दिखाने का प्रयास किया गया है, पर उस की छवि एक निहायत भावुक और हारे हुए व्यक्ति जैसी ही उभरती है.

लेखक ने उपन्यास को मार्मिक बनाने के लिए रघु की मृत्यु भी करा दी है, पर यह अंत भी पाठक पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ता.

कलात्मक बनाने के चक्कर में उपन्यास की भाषा भी दुरूह हो गई है, लेकिन जो समस्या उठाई गई है, उसे देखते हुए पुस्तक को उपयोगी कृति कहा जा सकता है.

पुस्तक : मुक्ति कैद, लेखक : छोटे भरानी, प्रकाशक : अभिव्यंजना, 109/48 पंजाबी बाग, नई दिल्ली–110026. प्रथम संस्करण : 1981, मूल्य : 20.00, पृष्ठ : 110.

जंग का मैदान

'**जंग** का मैदान' कुमार संभव की चर्चित कहानियों का पहला संग्रह है. इस कहानी संग्रह में लेखक की कुल आठ कहानियां संकलित हैं. अधिकतर कहानियां हृदयस्पर्शी हैं और कुछ मुद्दों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से लिखी गई हैं. केवल एक कहानी 'स्थिति' अपनी स्थिति स्पष्ट नहीं कर पाई. कहानियों में प्रवाह और सरसता व भावानुकूलता है. विभिन्न वर्गों के लोगों की साधारण बोलचाल की भाषा को लेखक ने कुशलता से कहानी के विभिन्न पात्रों के संवादों में प्रयुक्त किया है. अनावश्यक

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित
लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट
सेट नं. 1

प्राचीन हिंदू संस्कृति
शंबूक वध
अतीत का मोह
परोहितवाद
गो पूजा
हमारी धार्मिक सहिष्णुता
कृष्ण नीति : हमारा नैतिक पतन
ज्ञान की कसौटी पर परलोकवाद
राम का अंतर्द्वंद्व
राम का अंतर्द्वंद्व : आ. व आ. के उत्तर
भारत में संस्कृति का ब्राह्मण
निर्यातित विस्तार
हिंदू धर्म
संस्कृत
भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
कर्ण
भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
तुलसी और वेद
रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
युगोंयुगों से शोषित भारतीय नारी
भ्रष्टाचार
रामचरितमानस में नारी
सत्यनारायण व्रत कथा
क्या नास्तिक मूर्ख हैं?
गांधी जी का बलिदान
यज्ञोपवीत
जंत्र तंत्र मंत्र
कर्मयोग
गरुड़पुराण
ईश्वर आत्मा और पाप
कितना महंगा धर्म?

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट.
रुपए अग्रिम भेजें.
वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.
सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली

...विस्तार से भी... कहानियां दोषमुक्त सामंतवादी लोगों के निम्न व निर्धन वर्ग के प्रति अमानवीय व्यवहार का जीवंत व वास्तविक चित्रण किया गया है.

अधिकतर कहानियों के पात्र निम्न वर्ग के हैं. वे पात्र जो निरंतर कष्ट सहते सहते बेजान हो गए हैं, जो बचपन से सीधे बुढ़ापे में ही कदम रखते हैं. जवानी क्या होती है, वे नहीं जानते, पर जो विद्रोह जरूर करते हैं, तो उस के भयानक परिणाम भुगतने पड़ते हैं. शोषण और अत्याचार के विरुद्ध लेखक ने एक नए जिहाद की घोषणा की है. विरोधी शोषक में आम आदमी की स्थिति का चित्रण करने में भी लेखक को सफलता मिली है.

कहानी संग्रह की कुछ अच्छी कहानियां 'आखिरी सांड,' 'जंग का मैदान' व 'हमला दर हमला' हैं. 'छोटे गांधी' में पदलोलुप राजनीतिबाजों व शोषक वर्ग द्वारा एक रिक्शावाले को फांसी की सजा पाने की स्थिति में पहुंचाना मार्मिक है. 'चश्मदीद गवाह' भी उल्लेखनीय कहानी है, जिस में निरपराध, मासूम किशोर नगीना को जबरदस्ती कलकत्ता पुलिस के अमानवीय अत्याचारों का शिकार होना पड़ता है और अंत में उसे नक्सली घोषित कर गोली मार दी जाती है.

कहींकहीं गंदी गालियों का अनावश्यक प्रयोग खटकता है. उन के बिना भी काम चलाया जा सकता था. बातबात पर गाली देना पुलिसवालों का स्वभाव है, यह सर्वविदित है, पर बारबार कहानियों में इन के प्रयोग से अश्लीलता का समावेश हो गया है.

पुस्तक निश्चय ही उल्लेखनीय कृति है, परंतु कीमत की दृष्टि से आम पाठक के बूते से बाहर की है. इस दृष्टि से पुस्तक पुस्तकालयों व व्यक्तिगत संग्रहों में ही स्थान बना पाएगी. आम पाठक इसे ले सकेगा, इस में संदेह है.

पुस्तक : जंग का मैदान, लेखक : कुमार संभव, प्रकाशक : प्रतिमान प्रकाशन, चौक गंगादास, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1982, मूल्य : 20.00, पृष्ठ : 120.

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति,
की कहानियां —
क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?
क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?
क्या आप को सही राह दिखाती हैं?
नहीं...
वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...
गलत दुनिया में भटकाती हैं...
चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...
सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और
उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.
दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.
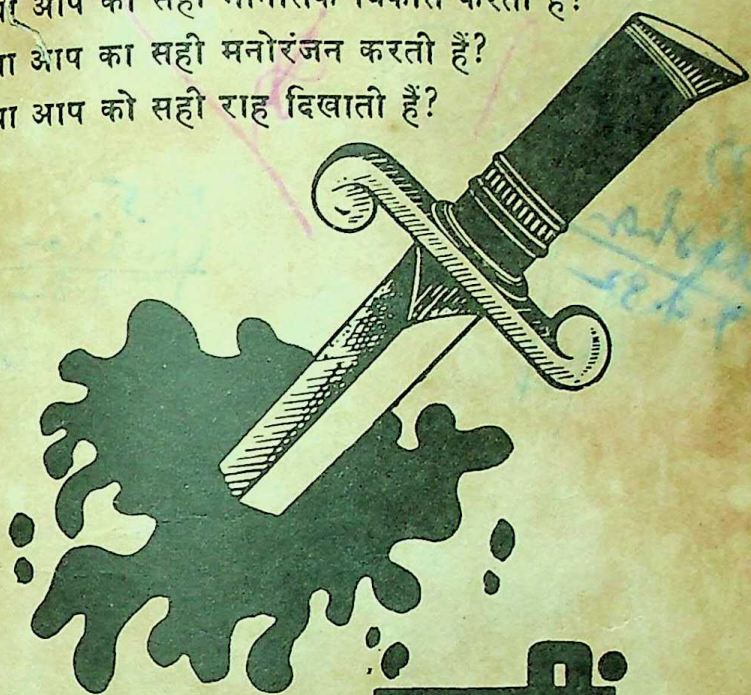
अगस्त (प्रथम) 1982

ोलंबिया :
तरिक्षयान भी
ायुयान भी

बनान में
लता
रब इजराइल
द्ध

ूषण के साए में
ल रही दिल्ली

3.00

मुक्ता

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

सजग, सफल, सरस
जीवन की पत्रिका

अगस्त (प्रथम) 1982
अंक : 384

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस म.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति : 3.00 रुपए, एक वर्ष : 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. बंबई कार्यालय : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. मद्रास कार्यालय : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31-2 ए पैंथन रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

सड़क दुर्घटनाओं (मुक्त विचार जून/द्वितीय) के बारे में आप का यह कहना एकदम उचित है कि लाइसेंस अधिकारी और यातायात पुलिस के भ्रष्टाचार व लापरवाही के कारण ही दुर्घटनाएं होती हैं. अतः उन्हें दंडित किया जाना आवश्यक है. पर क्या भ्रष्टाचार में सिर से पैर तक डूबी इस सरकार से ऐसी आशा करनी चाहिए?

— गोवर्धन कोठारी

*

सड़क दुर्घटनाओं के संबंध में आप ने सही लिखा है कि मोटर चालन लाइसेंस आवेदक की परीक्षा लिए बिना दोतीन सौ रुपए ले कर ही दे दिए जाते हैं. जब ऐसे लोग सड़कों पर नियमों की परवाह किए बिना वाहन दौड़ाएंगे तो क्या लाइसेंस अधिकारी को सजा नहीं मिलनी चाहिए? मेरा कहना है कि लाइसेंस अधिकारी को अवश्य सजा मिलनी चाहिए. ठीक इसी प्रकार राजनीतिक जगत में प्रधान मंत्री को भी सजा मिलनी चाहिए, अगर उन्होंने ऐसे गलत व्यक्ति को राज्यपाल, मंत्री या मुख्य मंत्री नियुक्त कराया हो जिस के कारण राजनीतिक, प्रशासनिक अथवा सामाजिक दुर्घटना हुई हो.

— रा.मू. अग्रवाल

*

संपत्ति कर समाप्त हो (मुक्त विचार-जून/द्वितीय) में आप के विचार यथार्थ से परिपूर्ण हैं. इस के इस प्रकार है. संपत्ति कर अधिनियम के प्रावधान इस रीति से बनाए गए लगते हैं कि कर आमदनी बढ़ेगी. लेकिन यह संदेहास्पद है. परंतु यह जरूर कहा जा सकता है कि लोगों का मेहनत से कमाया गया पैसा बचत में न जा कर फिजूलखर्च एवं कागज के खर्च को बढ़ाने में जरूर मदद करेगा. उदाहरणार्थ हर संपत्ति (चल एवं अचल) का मूल्यांकन सरकार द्वारा मान्य मूल्यांकनकर्ता से कराने का प्रावधान है. इस प्रकार प्राप्त रिपोर्ट को संपत्ति कर अधिकारी को तीन वर्ष तक मानना चाहिए. परंतु प्रति वर्ष बढ़ रही मुद्रा स्फीति के कारण मूल्यों में थोड़ा बहुत फर्क तो पड़ता ही है. अतएव इस आधार पर अधिकारी वह रिपोर्ट दूसरे वर्ष में ही मानने से इनकार कर देता है. इस रिपोर्ट को लेने में काफी खर्च आता है और कागज व मेहनत लगती है सो अलग और यह खर्च लगने वाले संपत्ति कर से (जो पांच छः साल में मूल्य बढ़ने से लगेगा) अधिक होता है. फलस्वरूप करदाता किसी भी तरह अधिकारी से समझौता करना ही पसंद करता है. इस प्रकार से यह खुले रूप से रिश्वतखोरी को बढ़ावा देना ही है.

कहा जाता है कि अधिक कर से तात्पर्य आर्थिक समानता लाने का उद्देश्य है, परंतु वास्तव में अधिक कर का बोझ मध्यम वर्ग

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

पर ही पड़ता है. संपत्ति कर में प्रति वर्ष बढ़ जाने वाली मुद्रा स्फीति से बढ़ने वाले भावों के असर से संपत्ति के मूल्य में घटबढ़ का कोई औचित्य नहीं है. क्योंकि मूलभूत छूट में जो संपत्ति दी गई है, उस की सीमा उसी अनुपात में हर वर्ष नहीं बढ़ाई जाती.

— माधवदास मोहता

*

हाल ही में संपन्न हुए लघु आम चुनावों में इंदिरा कांग्रेस की विफलता (मुक्त विचार-जून/प्रथम) के बारे में आप ने जो लिखा है कि इस से पार्टी को एक यह फायदा होगा कि अनुशासन बढ़ेगा और भ्रष्टाचार में कमी आएगी. किंतु सचाई तो यह है कि इंदिरा कांग्रेस दल एक ऐसी खत्म न होने वाली भीड़ है, जिस में चमचावाद, जीतवाद, भ्रष्टाचार और बेईमानी सर्वत्र व्याप्त है. यहां स्पष्ट करना चाहूंगा कि हमारे विपक्षी दल भी कोई दूध के धुले नहीं हैं. भ्रष्टाचार और चमचागीरी में वे भी पीछे नहीं हैं, किंतु तुलनात्मक दृष्टि से इंदिरा कांग्रेस में सर्वाधिक सत्तालोलुपता है और इसी कारण इस दल में हमेशा एक असंतुष्ट गुट समानांतर रूप से तैयार रहता है.

— कल्पेश जानी

*

इंदिरा कांग्रेस की विफलता के बारे में व्यक्त आप के विचारों से मैं सहमत हूं. हरियाणा में इंदिरा कांग्रेस का गठन किस प्रकार से हुआ, वह स्वयं में इतिहास है. भजनलाल सरकार के निर्माण के लिए जो शर्मनाक खेल खेला गया, वह अपने आप में अजूबा है. इस से यह सिद्ध होता है कि इंदिरा कांग्रेस लोकतंत्र की कतई भी समर्थक नहीं है. सत्ता हथियाने के लिए संसदीय परंपराओं और नियमों की जो हत्या वहां की गई है, वह

मुक्ता के लेखक

हिम्मतलाल ठक्कर

इस अंक में प्रकाशित लेख 'सफलता का सही समय' के लेखक हिम्मतलाल ठक्कर रायगढ़ (म.प्र.) में अध्यापन कार्य करते हैं. आप दर्शन, मनोविज्ञान, विज्ञान और शिक्षा आदि पर लिखते रहते हैं. आप की रचनाएं तथ्यपरख जानकारी के साथ ही रोचक भी होती हैं.

अश्विनीकुमार भटनागर

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'प्रसिद्धि' के लेखक अश्विनीकुमार भटनागर 'हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन', रांची में मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष हैं. 35 वर्ष बाद आप ने लेखन कार्य फिर से शुरू किया है. राजनीति, विज्ञान और सामाजिक समस्याएं आप के लेखन के प्रमुख क्षेत्र हैं.
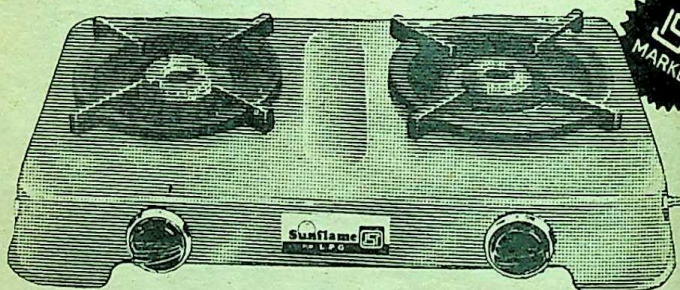
लोकतंत्र की ही हत्या है. — अशोक बजाज

*

यंत्रमानवी कहानी (जून/द्वितीय) पढ़ कर बड़ा रोमांच तथा विस्मय हुआ. क्या यह लेखक की कल्पना है? या विज्ञान इतनी तरक्की कर चुका है? विश्वास नहीं होता कि कोई यंत्रमानवी ऐसी भी बनाई जा सकती है जिसे इतने दिन साथ रहने पर भी न पहचाना जा सके और वह एक वास्तविक नारी की तरह साथ रहे. — श्यामबिहारी अग्रवाल

*

'सरकारी उपेक्षा का शिकार मुजफ्फरपुर का लीची उद्योग' लेख (जून/द्वितीय) में लेखक ने एक महत्वपूर्ण जानकारी छोड़ दी है. मुजफ्फरपुर के लीची उद्योग और इस के भविष्य को देखते हुए अमरीकी सरकार ने पी.एल. 480 योजना के तहत लीची के पौधों में लगने वाले रोग एवं उस के निदान आदि पर शोध करने के लिए एक योजना बिहार विश्वविद्यालय को दी थी, जो छः वर्षों तक चली. यही योजना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तहत पुनः तीन वर्षों के लिए चलाई गई. लीची के कीड़े की रोकथाम एवं लीची की पैदावार बढ़ाने के लिए दिसंबर, 1981 में 25 वर्षीय युवक मनेंद्रकुमार ने शोध कर डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की. अन्य लोगों ने भी इस विषय पर शोध की, लेकिन दुख की बात यह है कि ये शोधार्थी सरकारी रवैए से संतुष्ट नहीं हैं. इन के शोध का उपयोग कहीं भी लीची के कीड़ों की रोकथाम एवं इस की पैदावार बढ़ाने में अब तक नहीं किया जा रहा है.

— ब्रह्मानंदप्रसाद 'सहायक'

*

बहुओं के सताए जाने से संबंधित लेख (जून/द्वितीय) पढ़ कर बेहद दुख हुआ. यह लेख नितांत अदूरदर्शितापूर्ण, सत्य से परे व समाज विरोधी है.

हर शहर में दहेज के लोभी बसते हैं. पैसे के आगे आदमी खुद को भूल जाता है तो कुछ दिनों पहले आई उस अजनबी लड़की की क्या बिसात है? बलि का बकरा बना कर और
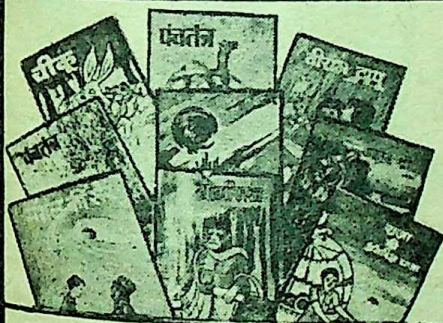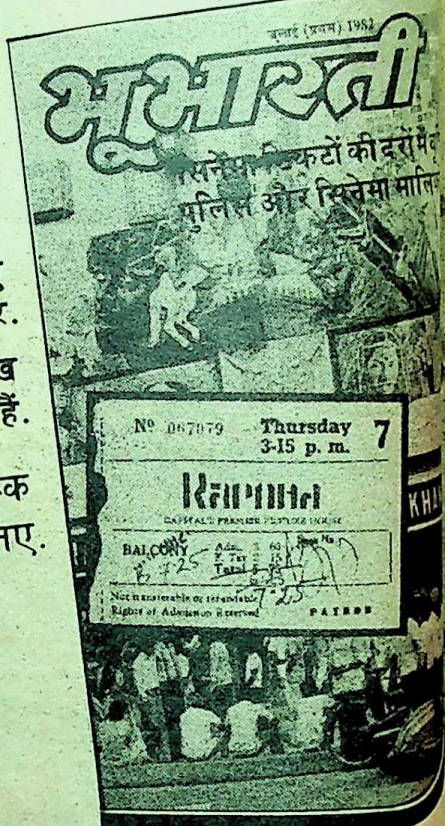
अधिक दहेज लाने के लिए बहू को तंग करने वाली सासें लगभग हर चौथेपांचवें परिवार में हैं. हर लड़की ससुराल में यह सोच कर कदम रखती है कि उस घर को स्वर्ग बना देगी. किंतु विपरीत परिस्थितियां उसे अलग घर बसाने या अन्य बातों के लिए मजबूर करती हैं. अपनी जान बचाने के लिए या बिलावजह सताए जाने से बचने के लिए जब वह अलग घर बसा लेती है तो सासननदें भड़क कर उल्टासीधा कहने लगती हैं.

आप ने यह लेख प्रकाशित कर उन सभी मांबापों को स्तब्ध कर दिया है, जिन की पुत्रियां इस का शिकार हुई हैं. **— भावना**

*

सही पक्ष देखा जाए तो यह बात सामने आती है कि सास बहू को जलाने के लिए जितनी लालायित रहती है, उतना बहुएं नहीं. हां, यह बात मानी जा सकती है कि सास बहू में 'वाकयुद्ध' अकसर हो जाया करता है मगर सास द्वारा बहू को जलाने की बात असंभव प्रतीत होती है. भला क्यों कोई सास (जब कि वह अधेड़ उम्र में पहुंच चुकी होती है बेटीबेटों की शादी कर के वह संतुष्ट रहती है. उस का ध्यान भजनकीर्तन की ओर अधिक रहता है) बहू को जलाने, मारने जैसा जघन्य अपराध कर के अपना बचाखुचा जीवन नारकीय बनाना पसंद करेगी. बल्कि सच तो यह है कि सास की तरफ से पहला प्रयास यही होता है कि दोनों के संबंध मधुर तथा स्नेह पूर्ण रहें.

— शंकर आहूजा

मुक्त विचार

इंदिराजी असंतुष्टों के घेरे में

राष्ट्रपति का चुनाव होते ही मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र व गुजरात के असंतुष्ट कांग्रेसियों ने श्रीमती इंदिरा गांधी के घर पर धावा बोल दिया. चारों राज्यों के कांग्रेसी अपनेअपने मुख्य मंत्रियों के विरुद्ध शिकायतें करते हुए एक स्वर में कह रहे थे कि उन के राज्यों में न अमनचैन है, न विकास हो रहा है, चारों तरफ रिश्वत व बदइंतजामी का बोल-बाला है और अगर यही हाल रहा तो इंदिरा कांग्रेस का नामोनिशान भी न रहेगा, वगैरह वगैरह.

बेचारी इंदिराजी जो अभी हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व पश्चिमी बंगाल के चुनावों में हुई हारों से संभल भी नहीं पाई हैं, सिवा इन असंतुष्टों को डांटनेफटकारने के कुछ न कर पाईं. उन्होंने फरमान जरूर निकाल दिया कि मुख्य मंत्रियों को अपनेअपने राज्यों में असंतुष्टों को संतुष्ट रखना चाहिए और अपना सही नेतृत्व प्रदान करना चाहिए.

लेकिन बेचारे मुख्य मंत्री भी क्या करें? पहली बात तो यह है कि वे नेता हैं ही नहीं. चारों में से कोई भी मुख्य मंत्री अपने राज्य विधान सभा में बहुमत प्राप्त करना तो दूर लोक सभा की सीट तक नहीं जीत सकता. चारों ही मुख्य मंत्री इंदिराजी द्वारा नामज़द... विधान सभा सदस्यों द्वारा मतदान से... चुनने की परंपरा तो इंदिराजी ने वर्षों पहले... समाप्त कर दी थी.

चारों मुख्य मंत्री अपनेअपने राज्यों... सब से अधिक लोकप्रिय इंदिरा कांग्रेसी... नहीं हैं. दरअसल इंदिरा कांग्रेस में लोक... होना कोई गुण नहीं, अवगुण है. जैसे... इंदिराजी को पता चलता है कि ...की... राजनीतिबाज लोकप्रिय होने लगा है, ... फौरन उस का पत्ता साफ कर देती हैं. इं... कांग्रेस में गुणी वही है जो इंदिराजी की... हजूरी कर सके. अब ऐसा व्यक्ति निश्चय... स्वाभिमानी तो होगा नहीं. फिर उस... प्रशासनिक योग्यता कहां से आएगी?

मुख्य मंत्री भी अब यह जान गए हैं... वे अच्छा काम करें या बुरा, उस का पद... बने रहने से कोई संबंध नहीं है. यदि इंदिरा... की कृपादृष्टि बनी रहे तो कानून व्यवस्था... भाड़ में जाए, पैसा कमाओ, ऊपर वालों... खिलाओ और गद्दी से चिपके रहो. इसलि... वे असंतुष्टों की परवाह ही नहीं करते.

वे यह भी मानते हैं कि अब इंदिरा... लिए रोजरोज नए मुख्य मंत्री बनाना... मुशकिल होता जा रहा है. आंध्र प्रदेश... महाराष्ट्र, राजस्थान व उत्तर प्रदेश में...

बड़ी कठिनाई से नए मुख्य मंत्री मिले. हरियाणा में उन्हें भजनलाल जैसे बदनाम व्यक्ति को फिर से नेता चुनना पड़ा. अतः वे अपनी स्थिति के प्रति प्रायः निश्चित हैं.

जब तक इंदिराजी अपने दल का संचालन निजी संपत्ति की तरह करेंगी, ऐसा बराबर होता रहेगा. जनता को इस से जो नुकसान होगा, उस की चिंता इंदिराजी या मुख्य मंत्री क्यों करें. जब जनता ही अपनी चिंता अपने आप नहीं करना चाहती?

गोरे पर्यटकों को छूट बरकरार

पश्चिमी देशों से पर्यटन के लिए आने वाले लोगों को भारत में प्रवेश के समय ही 30 दिन का वीजा देने की प्रणाली काफी वर्षों से चली आ रही है. इस के कारण विदेशी पर्यटकों को भारत में आने के लिए अपने देशों में स्थित भारतीय दूतावासों में वीजा के लिए चक्कर नहीं लगाने पड़ते.

लेकिन इस के विपरीत यदि भारतीय पर्यटक इन देशों में पर्यटन के लिए जाना चाहें तो उन्हें भारत में ही इन देशों के दूतावासों से वीजा बनवाना पड़ता है. किसी देश में प्रवेश की यह अनुमति अगर औपचारिक होती तो बात दूसरी थी. अधिकांश मामलों में पश्चिमी देशों के दूतावास भारतीयों के साथ बहुत रूखे ढंग से पेश आते हैं और बहुत सी बेकार की जानकारी मांगते हैं.

कुछ दूतावासों के अधिकारी तो वीजा आवेदकों को बाहर सड़क पर या खुले में घंटों इंतजार कराते हैं और कईकई दिन चक्कर लगवाने के बाद भी लौटा देते हैं. उन के देश की सीमा पर पहुंचें तो वे वीजा देते ही नहीं और वापस लौटा देते हैं.

इस व्यवहार से क्षुब्ध हो कर किसी भारतीय अधिकारी ने निर्णय लिया कि अब विदेशियों को भी भारत में आने पर उसी तरह वीजा लेना होगा, जैसे भारतीयों को लेना पड़ता है. 'जो देश जैसा व्यवहार करेगा, उस से हमारा देश भी वैसा ही व्यवहार करेगा' का सिद्धांत लागू करने की कोशिश की गई.

आत्मसम्मान की दृष्टि से यह निर्णय बहुत ही अच्छा था. माना कि हमारा देश गरीब है और हमारे देशवासी दूसरे देशों में जा कर बसने की कोशिश करते हैं, पर इस का मतलब यह तो नहीं कि दूसरे देश हमें भिखारियों की तरह समझें और चाहें तो भीख में वीजा दे दें और चाहें तो दुत्कार दें.

वीजा प्राप्त कर के जो भी भारतीय उन के देश में जाता है, वह अपना या अपने संबंधियों का ही पैसा खर्च करता है, वहां की सरकार से भीख नहीं मांगता. वीजा देने से पहले सभी देश वापसी का टिकट देखते हैं, देश के किसी जानेपहचाने व्यक्ति की सिफारिश मांगते हैं, अपनी नियत फीस लेते हैं. इस प्रकार वे कोई एहसान नहीं करते. फिर भी यदि वे भारतीयों को सम्मान देने को तैयार नहीं तो उन के देश के निवासियों को भी भारत में आने पर विशेष सुविधाएं देने की कोई जरूरत नहीं.

खेद की बात है कि इस अच्छे निर्णय का होटल वालों, पर्यटन एजेंटों और निहित स्वार्थों ने खूब विरोध किया और प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस निर्णय को रद्द कर दिया.

लगता है हम चाहे जितना भी स्वतंत्रता का ढोल पीट लें, हमारी मानसिकता अभी भी गुलामी के जहर से प्रभावित है और कुछ लाख डालरों तथा पौंडों के लिए हम देशवासियों का सम्मान बेचने को वैसे ही तैयार हैं जैसे मीर जाफर जैसे लोगों ने अंगरेजों के हाथ देश को ही बेच दिया था.

मंदी का दौर

देश की आर्थिक स्थिति अब गंभीर होती जा रही है. जब तक महंगाई का दौर था, मुनाफा कमाने के चक्कर में उद्योगधंधे चलाने वाले उत्पादन बढ़ाने में लगे हुए थे और अधिक उत्पादन के बावजूद हर चीज की कमी थी.

जैसे ही महंगाई का दौर कम हुआ, उद्योगधंधों पर अब मंदी का व्यापक असर

पड़ने लगा है. कुछ माह पहले तक बड़ी कंपनियों के ट्रकों के लिए खरीदारों की लंबी लाइनें लगी रहती थीं और ट्रकों पर 20 से 30 हजार रुपए तक का ब्लैक था. अब 8,000 ट्रक बिक्री के इंतजार में खड़े हैं क्योंकि खरीदारों के पास पैसा नहीं है.

ट्रैक्टरों के मामले में भी यही हाल है. यद्यपि पिछले साल सूखा नहीं पड़ा और अच्छी फसल हुई, फिर भी 15,000 ट्रैक्टर फैक्टरियों में खड़े हैं. लोहे की कमी भी हमारे उद्योगों के लिए परेशानी थी. रिश्वतों और सिफारिशों पर ही लोहे का कोटा मिलता था. अब 10 लाख टन लोहा अनबिका पड़ा है.

इसी तरह 150 करोड़ रुपए की खादें बिक नहीं पा रही हैं. लाखों गज सस्ता कपड़ा बना पड़ा है, पर पहनने वाले नहीं हैं. बंबई की 60 कपड़ा मिलें पिछले छः महीनों से बंद पड़ी हैं पर कपड़े की उपलब्धि में कोई कमी नहीं, क्योंकि मांग बुरी तरह घट गई है.

कुल मिला कर इस मंदी का असर यह होगा कि देश का औद्योगिक विकास एकदम रुक जाएगा. लोगों का जीवनस्तर सुधरना बंद हो जाएगा. पश्चिमी देशों में जो नई वस्तुएं बन रही हैं, वे भारतवासियों को और 10 वर्ष तक उपलब्ध नहीं होंगी.

इस मंदी का कारण ढूंढ़ना आसान नहीं है. सरकार तो इसे मंदी मानती ही नहीं है. वह तो महंगाई कम करने की सफलता में इतनी खुश है कि उसे इस बारे में सोचना अच्छा ही नहीं लगता.

उद्योगपति कहते हैं कि महंगाई को रोकने के लिए कर्ज देने पर जो रोक लगाई गई है, उसी कारण यह मंदी हुई है. वे बारबार कर्ज देने में ढील की मांग कर रहे हैं.

उधर उपभोक्ता को किसी भी चीज की कमी नहीं हो रही है. यदि कर्ज की सख्त नीति के कारण बिक्री नहीं हो रही होती तो उपभोक्ता की मांग बढ़ जानी चाहिए थी.

इस सब से लगता है कि मंदी का मुख्य कारण हमारा आर्थिक विकास रुक जाना है. पिछले दोतीन दशकों में भारी करों से आए पैसे को योजनाओं में लगाया जाता रहा है.

यद्यपि जितना पैसा लगा, उस के आ लाभ होता था. फिर भी पूंजीनिवेश नई फैक्टरियां, नई सड़कें, नए बांध, बन जाती थीं.

अब करों से आने वाला सरकारी तंत्र में बरबाद किया जा नतीजा यह है कि हम जो रोज कमा पूरा खर्च कर रहे हैं. इसलिए नए उद्यो में लगाने के लिए पैसा बच ही नहीं यही वजह है कि मंदी केवल उन उत्पा ज्यादा है जिन्हें आम उपभोक्ता इस्तेमाल नहीं करता.

बिना सजा 37 वर्ष की कै

पटना उच्च न्यायालय ने हाल एक ऐसे व्यक्ति को रिहा करने का दिया है जो 37 वर्षों से विचाराधीन कै और जिस पर अब तक मुकदमा ही नहीं पाया. इस व्यक्ति को 1945 में एक की हत्या करने के आरोप में गिरफ्तार गया था. कुछ समय बाद वह मान विक्षिप्तता का शिकार हो गया. पर छोड़े के स्थान पर वह जेल का ही सदस्य ब रह गया.

यदि इस व्यक्ति पर मुकदमा च और इसे सजा भी हो जाती तो सामान्य में इसे लगभग 20 वर्ष पहले ही छोड़ गया होता. लेकिन जेल अधिकारि लापरवाही व उदासीनता का यह हाल यह जानते हुए भी कि बिना सजा पाए व्यक्ति जेल में पड़ा सड़ रहा है, एक के एक अनेक जेलर आए, अधिकारी ब जमाना बदला पर वह वहीं का वहीं

यह घटना न पहली है, न अंतिम, जेलों में सड़ रहे विचाराधीन कैदि मामले प्रकाश में आए हैं, इस प्रकार के व्यक्तियों के साथ की गई बेरहमी की सू मिल चुकी हैं.

जेल अधिकारियों की इस बेरहमी सब से बड़ा कारण है— जेलों में तानाश अनुशासन बनाए रखने व कैदियों को

सजा देने के नाम पर अधिकारी नियम कानून आदि सब ताक पर रख देते हैं और जैसा चाहते हैं, करते हैं. राज्य सरकारें अधिकारियों को असीमित अधिकार दे देती हैं. हिंसा, प्रतिहिंसा ही नहीं, तड़पातड़पा कर दंड देना और मार तक देना जेल अधिकारियों के मूल अधिकारों का अंग बन गया है.

ऐसे में कोई विचाराधीन या सजायाफ्ता कैदी अपने प्रति हो रहे अन्याय के विरुद्ध कहां फरियाद कर सकता है, कैसे कर सकता है?

जब कभी जेल अधिकारियों को सीमा से बाहर न जा कर व्यवहार करने को कहा जाता है तो वे कैदियों से बलवा करवा देते हैं और अनुशासनहीनता का सारा दोष मानवीय नियमों पर डाल देते हैं. हार कर सरकार को जेलरों के अधिकार लौटाने पड़ जाते हैं.

यही वजह है कि कड़ी आलोचना के बावजूद जेलों में अभी भी आतंक, भ्रष्टाचार और उदासीनता का वातावरण बना हुआ है जिस में लाखों कैदी अपने गुनाहों से कहीं अधिक सजा भुगतने को मजबूर हो रहे हैं.

राजनीति... बनाम नीमहकीम

देश के सब से सफल, लोकप्रिय व सरल व्यवसाय के लिए न तो कोई डिगरी लेनी पड़ती है और न कोई नियमित प्रशिक्षण. फिर भी इस व्यवसाय में सफल लोगों की चांदी ही चांदी रहती है, वे लाखों कमाते हैं और दुनिया भर को उंगलियों पर नचाते हैं. यह व्यवसाय है राजनीति.

शायद इस पेशे में शिक्षा का कोई महत्व न देख कर ही कुछ अन्य व्यवसायों में भी लोग अब बिना शिक्षा, बिना प्रशिक्षण और बिना उचित जानकारी के कूदने लगे हैं. गुजरात में हाल ही में सैकड़ों ऐसे चिकित्सकों का पता चला है, जो आठवींदसवीं तक ही पढ़े होने के बावजूद शहरों व गांवों में ठाठ से डाक्टरी (ऐलोपैथी की चिकित्सा) कर रहे हैं.

इन का काम करने का तरीका राजनीतिबाजों से काफी मिलताजुलता है. जैसे बड़े नेता के निकट रहने वाले लोग, जिन में सचिव से चपरासी तक शामिल होते हैं, नेतागीरी के गुर सीख जाते हैं, उसी तरह डाक्टरों के साथ काम करने वाले चपरासी, कंपाउंडर आदि भी 10-20 रोगों के लक्षण, कारण और उपचार जान जाते हैं.

जैसे राजनीतिबाजों के चमचे एक दिन गुरु को छोड़ कर स्वतंत्र नेतागीरी करने लगते हैं, उसी तरह डाक्टरों के ये सहायक भी बैग में दसबीस दवाइयां रख कर लोगों को मूंड़ने निकल पड़ते हैं.

जिस तरह हमारे देश में नेताओं को मान्यता देने के लिए सैकड़ों राजनीतिक दल, तथाकथित समाजसेवी संस्थाएं, मोर्चे व संगठन हैं, उसी तरह इन तथाकथित डाक्टरों को मान्यता देने के लिए भी बहुत सारी फर्जी संस्थाएं अस्तित्व में आ गई हैं.

ये संस्थाएं संस्था के रूप में अपने पंजीकरण को ही सरकारी मान्यता घोषित कर के डिगरियां या प्रमाणपत्र बांटने लग जाती हैं. ये डिगरियां या प्रमाणपत्र बहुत थोड़े रुपयों में मिल जाते हैं. ठीक ऐसे ही जैसे मात्र एक रुपए में किसी भी राजनीतिक दल का 'सक्रिय' सदस्य बना जा सकता है.

ठीक राजनीतिबाजों की तरह ये फर्जी डाक्टर मरीजों को लच्छेदार बातों में उलझा कर प्रभावित कर लेते हैं, छोटीमोटी बीमारियों को बड़ा बता कर उन्हें डरा देते हैं और अपनी चालू दवाओं से इलाज शुरू कर देते हैं. राजनीतिबाज भी समाज की साधारण समस्याओं को समाप्त करने का बीड़ा उठाते हैं, उस के लिए चंदा या कर जमा करते हैं, और यदि असफल हो जाएं तो विदेशी हाथ या असामाजिक तत्वों को दोष देने लगते हैं. फर्जी डाक्टर भी मरीज का अहित होने पर 'भगवान' को दोष दे कर हाथ झाड़ लेते हैं.

लगता है राजनीतिबाज अब इस प्रकार के दूसरे व्यवसायों की सफलता से चिढ़ने लगे हैं कि कहीं जनता उन की पोलपट्टी न समझ जाए. तभी तो गुजरात में पुलिस ने ऐसे फर्जी डाक्टरों को पकड़ना शुरू कर दिया है. वरना तो चोरचोर मौसेरे भाई ही होते हैं. ●

कोलंबिया अंतरिक्ष यान भी वायुयान भी

लेख • बिमल श्रीवास्तव
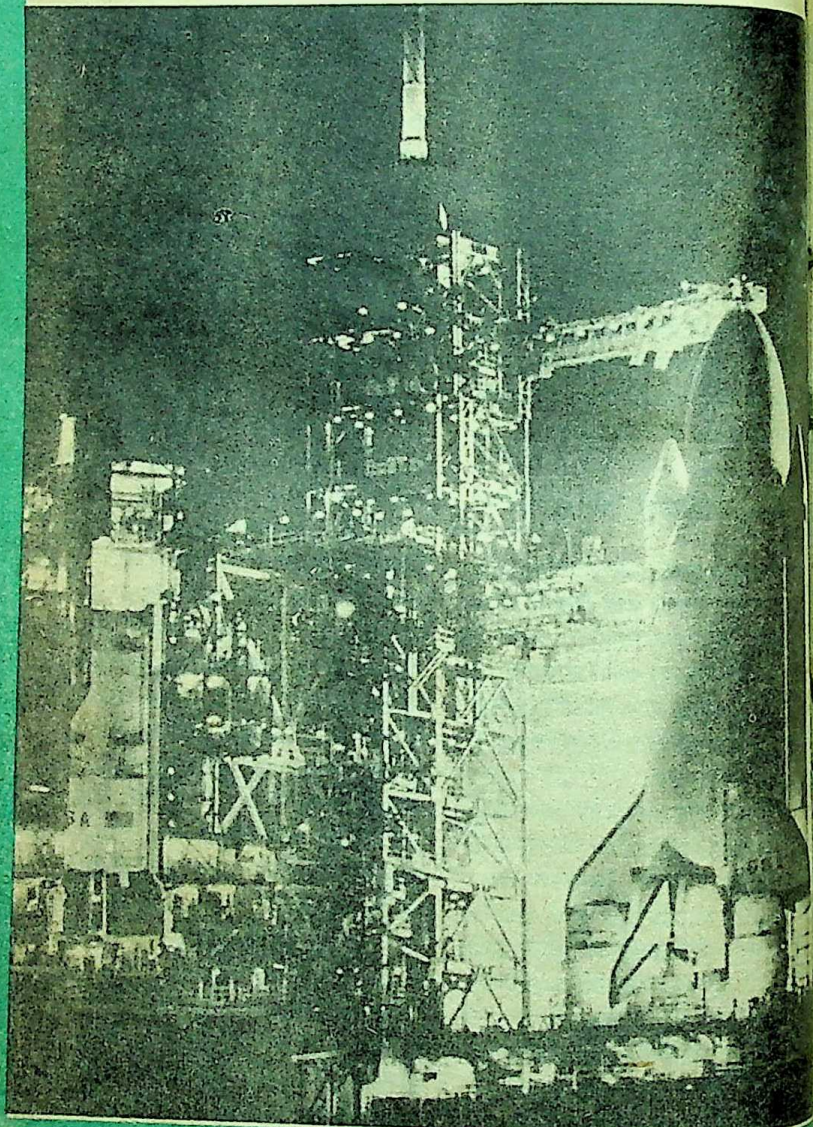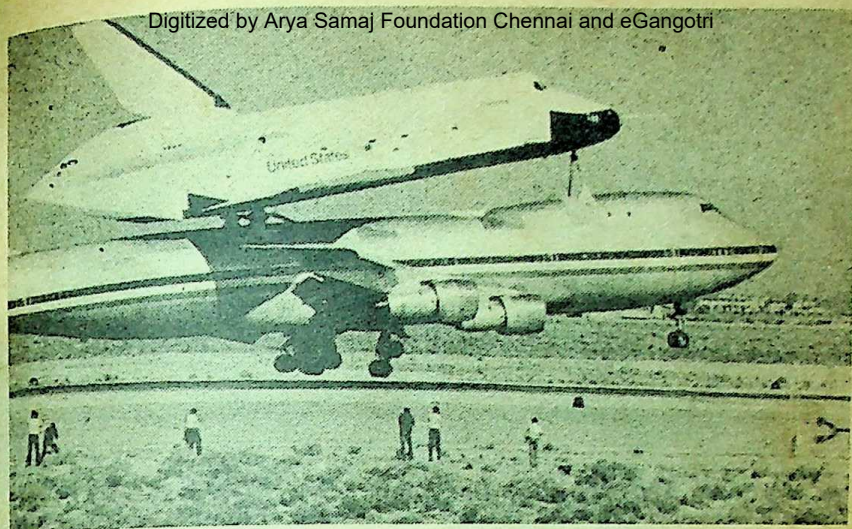
अमरीका का अंतरिक्ष यान कोलंबिया अब तक छोड़े गए सभी अंतरिक्ष यानों से बहुत भिन्न है. यही नहीं, यह वायुयानों की तरह बारबार उपयोग में आ सकेगा और मानवहित में इस का उपयोग कोई भी देश आसानी से कर सकेगा...

"**कोलंबिया** का चमत्कारी प्रदर्शन." एक समाचार.

"अंतरिक्षयान कोलंबिया भूमि पर विमान की तरह उतरा." एक अन्य समाचार.

पिछले दिनों इस प्रकार के अनेक समाचार समाचारपत्रों में देखनेपढ़ने को मिले. आखिर इस अंतरिक्षयान में ऐसी क्या खास बात है जो यह इतनी प्रसिद्धि पा रहा है. तो आइए, आज इस यान के बारे में कुछ जानकारी हासिल की जाए.

'कोलंबिया' संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा निर्मित एक ऐसा अंतरिक्षयान है जिस का प्रयोग बारबार शटल यान के रूप में किया जा रहा है. वायुयान की तरह पंखों वाला यह अंतरिक्षयान सात दिन अंतरिक्ष में रह कर 4 जुलाई, 1982 को भारतीय समय के अनुसार रात के नौ बज कर 40 मिनट पर कैलिफोर्निया के एडवर्ड्स एयरफोर्स बेस पर उतरा. इस शटल यान में अंतरिक्षयात्री केन मैटिंगली तथा हेनरी हाट्स फील्ड भी सवार थे. 'कोलंबिया' की यह चौथी और अंतिम परीक्षणात्मक उड़ान थी. इस उड़ान में यान में सवार अंतरिक्ष यात्रियों ने अंतरिक्ष में अन्य परीक्षणों के अलावा सैनिक उपकरणों के परीक्षण भी किए.

'कोलंबिया' पहली बार कंक्रीट की हवाई पट्टी पर वायुयान की तरह उतरा. 'कोलंबिया' की सफलता को देखते हुए यह आशा की जाती है कि अमरीका अपनी उस योजना पर अमल जारी रखेगा, जिस के अंतर्गत 1988 तक केप कैनेवरल (फ्लोरिडा) से हर माह कंक्रीट की हवाई पट्टी का प्रयोग कर के दो शटल यान अंतरिक्ष में भेजे जाएंगे.

'कोलंबिया' की लंबाई 122 फीट (37.25 मीटर), पंखों का विस्तार 78 फीट (23.8 मीटर) तथा ऊंचाई 57 फीट (17.25 मीटर) है. इस में तीन इंजन लगे हैं तथा देखने में यह काफी कुछ डी.सी. 9 विमान जैसा है. 'कोलंबिया' का भार लगभग 100 टन है तथा
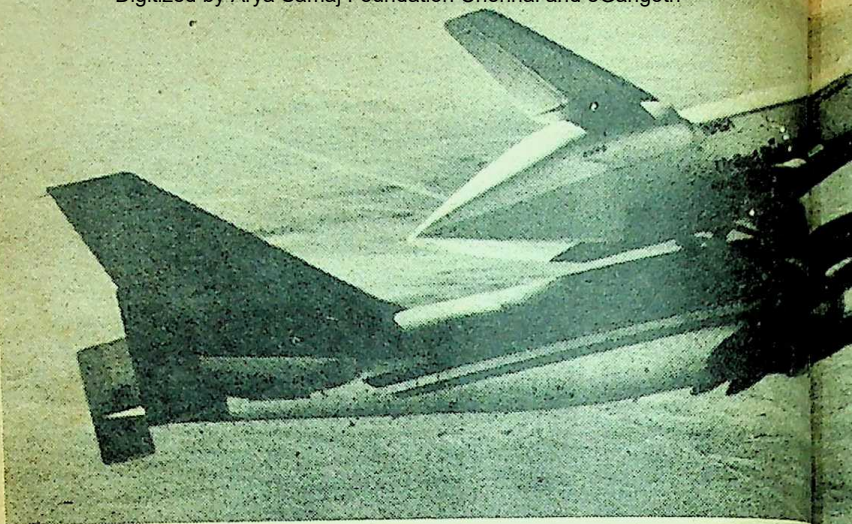
इस में चालकों सहित सात व्यक्ति बैठ सकते हैं. इस के अलावा इस में 30,000 किलोग्राम भार तक के वैज्ञानिक उपकरण इत्यादि भी रखे जा सकते हैं.

'कोलंबिया' भूमि तल से लगभग 150-250 किलोमीटर की ऊंचाई पर 28,000 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चक्कर लगाता है. इस प्रकार यह पृथ्वी की परिक्रमा लगभग 36 घंटे में पूरी कर लेता है.

'कोलंबिया' से पहले अमरीका ने जितने भी यान अंतरिक्ष में भेजे, उन का प्रयोग केवल एक बार ही किया जा सका. उन के केवल ऊपरी भाग (कैपसूल) ही पृथ्वी के वायुमंडल में वापस आ सके, जिन्हें पूर्व अनुमान के अनुसार समुद्र में गिरने पर उक्त क्षेत्र में तैनात जहाजों द्वारा उठा लिया गया.

किंतु 'कोलंबिया' और उस जैसे शटल यान पृथ्वी और अंतरिक्ष के बीच बारबार आतेजाते रहेंगे. इस प्रकार इस शटल यान का उपयोग साधारण विमान की तरह किया जा सकेगा, जिस में यात्री बारबार आजा सकते हैं. अंतरिक्ष यात्रा की दृष्टि से यह एक नई चीज होगी, क्योंकि अभी तक जितने भी अंतरिक्षयान बनाए गए थे, वे एक बार यात्रा करने के बाद दूसरी यात्रा के लिए उपयुक्त नहीं रहते थे. 'कोलंबिया' का यह गुण इसे अन्य विमानों की तुलना में एक अलग दर्जा देता है. यही नहीं, इस में प्रयुक्त होने वाले राकेटों तथा ईंधन की टंकी का भी निर्माण इस प्रकार किया गया है कि उन को बारबार उपयोग में लाया जा सकता है.

'कोलंबिया' की दूसरी विशेषता यह है कि यह धरती पर हवाई जहाज की तरह उतरता है. अभी तक अमरीका द्वारा जितने भी अंतरिक्षयान बनाए गए थे, वे अंतरिक्ष से पृथ्वी पर लौटने पर सागर में गिर कर तैरने लगते थे तथा उन्हें जहाज द्वारा खींच कर बाहर लाया जाता था. इसी प्रकार रूस द्वारा बनाए गए अंतरिक्षयान धरती पर ऐसे होते थे उतरते थे जैसे वृक्ष से उड़ कर कोई पक्षी भूमि पर उतरता है.

किंतु 'कोलंबिया' के उतरने का तो ढंग ही निराला है. इस के लिए बाकायदा एक हवाई पट्टी बनाई गई और उस पट्टी पर यान चालक इसे कुशलतापूर्वक नीचे उतार लाए.

उड़ान की तैयारियां

'कोलंबिया' की उड़ानें अमरीका के दक्षिणपूर्वी राज्य फ्लोरिडा के केप कैनेवरल

[illegible] कोलंबिया की परीक्षण उड़ान सफल रही.

नामक स्थान से संपन्न की जा रही हैं.

केप कैनेवरल तक पहुंचाने के लिए कोलंबिया को एक विशेष प्रकार के जंबो जेट विमान (बोइंग 747) पर सवारी कराई जाती है. यह जंबो जेट इसी उद्देश्य से बनवाया गया है तथा इस में 'कोलंबिया' को जोड़ने के लिए विशेष प्रकार के साधनों की व्यवस्था है.

यान के प्रक्षेपण तथा उड़ान के लिए इस में दो बूस्टर राकेट तथा एक बाह्य ईंधन की टंकी लगी है. बूस्टर राकेटों में ठोस ईंधन भरा रहता है तथा ईंधन की टंकी में द्रव आक्सीजन तथा हाइड्रोजन रहता है. ये राकेट प्रक्षेपण के समय लगभग दो मिनट तक प्रज्वलित होते हैं तथा इस बीच यान को इतनी शक्ति प्रदान कर देते हैं कि वह पृथ्वी से लगभग 50 किलोमीटर ऊंचा पहुंच जाता है और उस की गति लगभग 5,000 किलोमीटर प्रति घंटा तक पहुंच जाती है. इस के बाद 'कोलंबिया' बाह्य ईंधन की टंकी तथा अपने तीनों इंजनों के सहारे आगे बढ़ता है तथा लगभग 10 मिनट में अपनी कक्षा में स्थापित हो जाता है और पृथ्वी की परिक्रमा चालू कर देता है.

ये राकेट तथा बाह्य ईंधन की टंकी अपना कार्य समाप्त हो जाने के बाद केप कैनेवरल से लगभग 200-250 किलोमीटर दूर अटलांटिक महासागर में गिर जाते हैं. सागर से इन्हें बाहर निकालने के लिए 'नासा' (राष्ट्रीय उड्डयन एवं अंतरिक्ष एजेंसी) के अपने विशेष जहाज हैं जो इन स्थानों के आसपास टोह लेते रहते हैं. ये जहाज इन राकेटों इत्यादि को झटपट बाहर खींच लाते हैं. बाद में इन राकेटों तथा ईंधन की टंकी को साफ कर के तथा दोबारा ईंधन इत्यादि भर के उन्हें पुनः कोलंबिया के प्रक्षेपण के लिए प्रयुक्त किया जाता है.

'कोलंबिया' के चालक अंतरिक्ष उड़ान पूरी हो जाने के बाद उस यान को वायुयान की तरह हवाई पट्टी पर उतारते हैं. अभी तक की परीक्षण उड़ानों के दौरान 'कोलंबिया' को कैलिफोर्निया राज्य में एक रेगिस्तानी भूमि पर उतारा जाता रहा है, किंतु नियमित उड़ानों के दौरान यह यान केप कैनेवरल के पास विशेष तौर पर निर्मित 4,500 मीटर लंबी हवाई पट्टी पर उतरेगा.

परियोजना का उद्देश्य

कोलंबिया परियोजना अमरीका द्वारा निकट भविष्य में अंतरिक्ष में सैनिक, वैज्ञानिक तथा व्यावसायिक हितों की स्थापना के उद्देश्य से शुरू की गई है. वास्तव में यह परियोजना उन सभी अंतरिक्ष परियोजनाओं से भिन्न है जो केवल सोवियत रूस से होड़ की दृष्टि से बनाई गई थीं (उदाहरण के लिए मानव को चांद पर भेजने की योजना).

'कोलंबिया' के अनेक कार्यों में एक कार्य भविष्य में मानव द्वारा पृथ्वी के निकट अंतरिक्ष स्टेशनों की स्थापना करना है. उन अंतरिक्ष स्टेशनों का उपयोग मानव द्वारा अंतरिक्ष यात्रा तथा अन्य कई कार्यों के लिए किया जाएगा. इस के अलावा 'कोलंबिया' का उपयोग अंतरिक्ष में उपग्रहों को भेजने तथा वापस लाने के लिए भी किया जाएगा. 'कोलंबिया' का तीसरा बड़ा उपयोग विभिन्न वैज्ञानिक तथा व्यावसायिक संस्थाओं के

उपकरणों को अंतरिक्ष में भेजना है, जिन से वे उन उपकरणों द्वारा अंतरिक्ष में विभिन्न प्रकार के प्रयोग करने में समर्थ हो सकें.

'कोलंबिया' का उपयोग सरकारी तथा गैरसरकारी दोनों प्रकार की संस्थाओं द्वारा किया जाएगा. यही नहीं, बल्कि अमरीका के अलावा अन्य विदेशी संस्थाएं भी इस का उपयोग कर सकेंगी, किंतु ये सभी कार्य व्यावसायिक दृष्टि से किए जाएंगे. इस प्रकार 'कोलंबिया' के उपयोग के लिए इन संस्थाओं को उन का समुचित मूल्य चुकाना पड़ेगा.

विस्तृत वैज्ञानिक उपयोग

वैज्ञानिक संगठनों को प्रायोगिक सुविधा देने के लिए 'नासा' ने 'कोलंबिया' में विशेष प्रकार के बेलनाकार पिंजरों की व्यवस्था की है. इन पिंजरों में वैज्ञानिक संस्थाएं अपने प्रायोगिक उपकरणों को रख कर बंद कर देंगी और उड़ान के बाद उन्हें निकाल कर उन के परिणामों का निरीक्षण कर सकेंगी. इस प्रकार ये संस्थाएं बिना किसी प्रकार का दखल दिए अपने प्रयोग कर सकेंगी. इन पिंजरों का भार 27 किलोग्राम से ले कर 180 किलोग्राम तक होगा तथा इन के एक बार के उपयोग के लिए 3,000 डालर से ले कर 10,000 डालर तक देने होंगे.

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, 'कोलंबिया' का उपयोग उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजना है. इस कार्य के लिए इस यान में एक यांत्रिकी हत्था लगा हुआ है जो लगभग 25,000 किलोग्राम तक के भार वाले उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ने तथा पकड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाएगा.

'कोलंबिया' द्वारा छोड़े जाने वाले ये उपग्रह सैनिक तथा असैनिक दोनों प्रकार के होंगे. अमरीका के प्रतिरक्षा विभाग ने इस प्रकार के कई सामरिक उपग्रह छोड़ने की योजना बनाई है, जिन का प्रयोग वह सैनिक दृष्टि से गुप्त कार्यों के लिए करेगी.

इस के अलावा अनेक संचार उपग्रहों को भी अंतरिक्ष में स्थापित करने की विशाल योजना है. ये संचार उपग्रह अमरीका के अलावा कनाडा, आस्ट्रेलिया, पश्चिमी जरमनी, इंडोनेशिया तथा भारत इत्यादि द्वारा भी छोड़े जाएंगे. भारत अपना उपग्रह 'इनसैट-1 बी' सन 1983 में 'कोलंबिया' द्वारा प्रक्षेपित करेगा. इस का उपयोग टेलीविजन, दूरदर्शन, संचार, मौसम विभाग इत्यादि के लिए किया जाएगा.

यद्यपि 'कोलंबिया' की व्यावसायिक उड़ानें कुछ समय उपरांत ही चालू हो पाएंगी, किंतु इस की सीटों की अग्रिम बुकिंग सन 1976 से ही चालू हो चुकी है. तब से ले कर इस वर्ष के प्रारंभ तक लगभग 200 व्यक्तियों तथा संस्थाओं द्वारा कोलंबिया यान में लगभग सवा तीन सौ आरक्षण किए जा चुके हैं. इस प्रकार की बुकिंग में निजी संस्थाओं से ले कर हाईस्कूल के छात्र तक शामिल हैं. इस से जाहिर है कि 'कोलंबिया' की बुकिंग योजना कितनी लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है.

उदाहरण के लिए अनेक दवा तथा धातुएं तैयार करने वाली कंपनियों ने 'कोलंबिया' में आरक्षण कराया है, जिस से वे अंतरिक्ष में विशेष प्रकार की शुद्ध दवाएं तथा टीके और नईनई धातुएं बनाने के परीक्षण कर सकें.

कोलंबिया के अन्य उपयोग

'कोलंबिया' के अन्य लाभदायक उपयोग हैं– पृथ्वी पर धातुओं तथा अन्य पदार्थों के नए भंडारों का पता लगाना, मौसम के रुख का भेद खोलने के लिए रचनात्मक अध्ययन करना, सागर तथा धरती के अनबूझे रहस्यों का पता लगाना इत्यादि. इस के अलावा 'कोलंबिया' द्वारा अंतरिक्ष में एक पांच टन भारी दूरबीन भी स्थापित की जाएगी, जिस के द्वारा तारों तथा ग्रहों के बारे में नई जानकारी प्राप्त होगी.

'कोलंबिया' यान की पहली परीक्षण उड़ान 12 अप्रैल, 1981 को प्रारंभ की गई थी. यह तारीख अंतरिक्ष में मानव के प्रवेश की बीसवीं वर्षगांठ पर पड़ती थी, क्योंकि 12 अप्रैल, 1961 को ही सोवियत रूस के यूरी
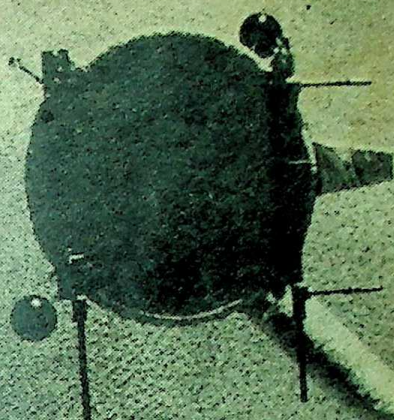
अमरीका के अंतरिक्ष शटल 'कोलंबिया' ने अपनी परीक्षण उड़ान के दौरान शटल के पार्श्व में लगे इस विद्युत चुंबकीय और कण संवेदी यंत्र पुंज का उपयोग कर के अंतरिक्ष में अपने आसपास के पर्यावरण का अध्ययन किया.

गागरिन ने पहली मानवी अंतरिक्ष यात्रा प्रारंभ की थी.

'कोलंबिया' पहले 10 अप्रैल, 1981 को छोड़ा जाने वाला था, किंतु कंप्यूटर की खराबी के कारण उस का प्रक्षेपण दो दिनों के लिए स्थगित कर दिया गया था. उस प्रारंभिक उड़ान के लिए यान के मुख्य चालक जान यंग थे तथा सहचालक रावर्ट क्रिपेन थे. वैसे तो यह उड़ान ठीकठाक चलती रही थी, किंतु यान की बाहरी दीवारों पर लगी अग्नि निरोधक पट्टियां यात्रा के दौरान निकलने लग गई थीं.

'कोलंबिया' की दूसरी परीक्षण उड़ान 12 नवंबर, 1981 को प्रारंभ की गई. इस बार यान के कप्तान जो ऐंजल तथा उपकप्तान रिचार्ड ट्रूली थे. इस बार 'कोलंबिया' की पृथ्वी के 84 चक्कर लगाने की योजना थी, किंतु यान के ऊर्जा उत्पादक यंत्र में कुछ खराबी आ जाने के कारण उसे केवल 54 घंटों के बाद ही धरती पर उतरना पड़ गया था.

'कोलंबिया' को तीसरी उड़ान के लिए 22 मार्च, 1982 को छोड़ा गया. यान के कप्तान थे जैक लुज्मा और सहकप्तान थे गोर्डन फुर्लटन. इस बार यान को पृथ्वी की लगभग 115 परिक्रमाएं करनी थीं. यान कुछ छुटपुट खराबियों को छोड़ कर लगभग सफलतापूर्वक चलता रहा था, किंतु भूमि पर उतरने में मौसम की खराबी के कारण इसे एक दिन की देरी हो गई थी.

अब 'कोलंबिया' की चौथी तथा अंतिम परीक्षण उड़ान 4 जुलाई, 1982 को पूरी हुई है. इस के बाद यह यान प्रतिवर्ष लगभग 40 उड़ानें भरा करेगा (जिन में से प्रथम 68 उड़ानें पहले से ही पूरी की पूरी बुक हो चुकी हैं).

'कोलंबिया' की सफलता के बाद अमरीका का इरादा इसी प्रकार के दूसरे यान 'चैलेंजर' को भी अंतरिक्ष में भेजने का है. अब देखना है कि इस अभियान में अमरीका कहां तक सफल होता है. ●

लेबनान मे फैलता अरब इजराइल युद्ध

लेख • मनमोहन वशिष्ठ

फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के नेता यासर अराफत : अलग फिलस्तीनी देश की चाह.

एक वर्ष पूर्व दक्षिणी लेबनान में बंदरगाह वाले नगर तायर की सीमा पर बालू भरे ऊंचे टीले पर खड़े हो कर वहां के सैनिक कमांडर मेजर आजमी झगायार ने अपने एक परिचित को बताया, ''वह भूमध्य सागर का पूर्वी सुनहला किनारा और उस के आगे की जो धरती तुम देख रहे हो, वह कभी मेरा देश था. मैं अपने देश को कैसे भूल सकता हूं.'' ठीक एक वर्ष बाद आज बालू भरे ऊंचे टीले वाला वह स्थान जहां कभी मेजर आजमी खड़ा हो कर हसरत भरी निगाहों से दूसरी ओर स्थित अपने देश की झलक देखा करता था, इजराइली सैनिकों के कब्जे में आ गया है. मेजर के देश का दृश्य अब उस की आंखों से ओझल हो गया है.

सीरिया तथा इजराइल के मध्य सागर तट पर 10,400 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले लेबनान में फिर से लड़ाई भड़क [illegible] फिलस्तीनी छापामार जो इजराइल [illegible] लेबनान की सीमाओं के नजदीक अपने [illegible] बना कर रह रहे थे, इस बार लड़ा[illegible] निशाने बने हुए हैं.

आज से 34 वर्ष पूर्व इजराइल के [illegible] के साथ फिलस्तीनियों को काफी बड़ी [illegible] में उस भूमि से जबरदस्ती धकेल दिया [illegible] था, जहां उन के पूर्वज रहते थे और जो [illegible] की जमीन कहलाती थी. सच बात यह [illegible] कि इसी धरती पर कभी इजराइली भी [illegible] थे. इन दोनों का इस धरती से पवित्र [illegible] था. दोनों ही जातियों के लोग सैमिटिक [illegible] गिने जाते हैं. दोनों ने खानाबदोशों की [illegible] को भोगा है. भूमध्य सागर के पूर्वी किना[illegible] प्राचीन काल से बसे फिलस्तीनियों के [illegible] का नाम कैनानिटस था.

लेबनान का निर्माण भूतपूर्व तुर्क साम्राज्य के पांज जिलों से किया गया था और 1 सितंबर, 1920 को सीरिया के साथसाथ यह भी एक अलग राज्य बन गया था. 1920 [illegible] यह फ्रांस के शासनादेश में रहा. 27 दिसंबर, 1943 को फ्रांस और लेबनान के प्रतिनिधियों में एक समझौता हुआ, जिस के अनुसार 1 जनवरी, 1944 को फ्रांस ने अपने अधिकांश अधिकार और दायित्व लेबनान की सरकार को सौंप दिए. दिसंबर 1946 तक फ्रांस की सेनाएं भी वहां से पूरी तरह हटा ली गईं.

संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रस्ताव

19वीं शताब्दी के शुरू में इस क्षेत्र में पांच लाख लोग थे, जिन में ज्यादातर अरब किसान थे. इन में 25,000 यहूदी थे, जिन के पास एक प्रतिशत से भी कम भूमि थी. सन 1917 में ब्रिटेन ने यहूदियों का समर्थन प्राप्त करने के लिए बालफोर अधिघोषणा जारी की, जिस में यहूदियों के सपने की मातृभूमि की स्थापना का प्रावधान था. सन 1947 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस क्षेत्र को तीन हिस्सों

इजराइल के प्रधान मंत्री मेनकम बेगिन : हमला आत्मरक्षा के लिए?

0 किमी. २५
त्रिपोली
लेबनान
जुनिया
बेरूत
जाहले
दमूर
लिटानी
सिदों
भूमध्य सागर
नबातिया
ब्यूफोर्ट केसल
दमिश्क
टीयर
सीरिया
इस्राइल
इस्राइल के नियंत्रण में
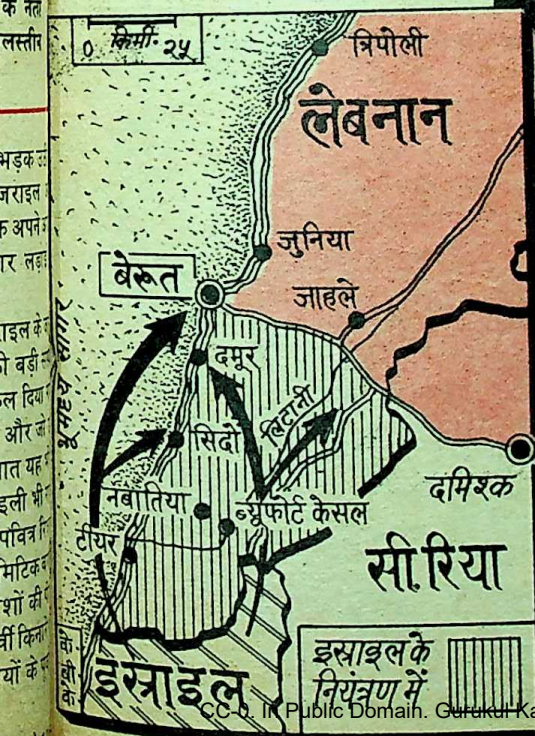
लेबनान गृहयुद्ध से मुशकिल से अभी उभरा ही था कि अरब इजराइल युद्ध की लपेट में आ गया. दादाओं के बीच बंटे इस देश में दिन प्रतिदिन भयंकर रूप धारण कर रहे इस युद्ध का अंत क्या होगा?

इजराइल, प... अरबों ... और यहूदियों के बीच बांटने का प्रस्ताव रखा, जिस का अरबों ने विरोध किया. 14 मई, 1948 को अरबों के भारी विरोध के बावजूद यहूदी राज्य इजराइल की स्थापना की घोषणा कर दी गई.

इजराइल के जन्म से ही युद्ध शुरू

इजराइल की स्थापना के साथ ही अरब देशों और इजराइल में युद्ध शुरू हो गया. सन 1948 और सन 1973 में इजराइल पर हमले हुए और सन 1956 और सन 1967 में उस ने अरबों पर हमले किए. एक के बाद एक इन चार बड़े युद्धों ने इजराइल को शक्तिशाली बना दिया. इजराइल ने युद्ध में जहां अनेक मुसलिम देशों की धुनाई की, वहां उन के काफी हिस्से पर कब्जा भी किया. सन 1956 और 1967 के अरब इजराइल युद्ध में इजराइल ने मिस्र से गाजा पट्टी और सिनाई क्षेत्र, जोर्डन से उस का पश्चिमी तट और पूर्वी यरुशलम और सीरिया से गोलान पहाड़ी क्षेत्र छीन लिया.

मिस्र के तत्कालीन राष्ट्रपति अनवर ... को ... का पूरा विश्वास हो ... था कि अरब देशों में कभी एकता नहीं ... सकती और इजराइल को हराया नहीं ... सकता. उन्होंने कैंप डैविड समझौते ... शांति का नया वातावरण बनाया, लेकिन ... की हत्या ने फिर से नफरत और लड़ाई ... आग को सुलगा दिया. इस में कोई संदेह ... कि अरब इजराइल संघर्ष में फिलस्तीन ... समस्या ने हमेशा चिनगारी का काम किया ...

पांचवां बड़ा युद्ध

सितंबर 1978 में हुए कैंप डैविड ... समझौते के अंतर्गत हाल में इजराइल ने ... का काफी हिस्सा खाली कर दिया है. इस ... को खाली करने से इजराइल में ... होहल्ला मचा. पिछले कुछ अरसे से इजराइल ... में सत्ताधारी पार्टी के घटते बहुमत ... सुलगते हुए असंतोष ने इजराइली शासन ... को एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया, जहां ... का अस्तित्व संकट में था. इधर लेबनान ... फिलस्तीन छापामार इजराइली गांवों ... कसबों पर राकेटों और बमों से यदाकदा ... हमला कर नया संकट पैदा करने पर ...
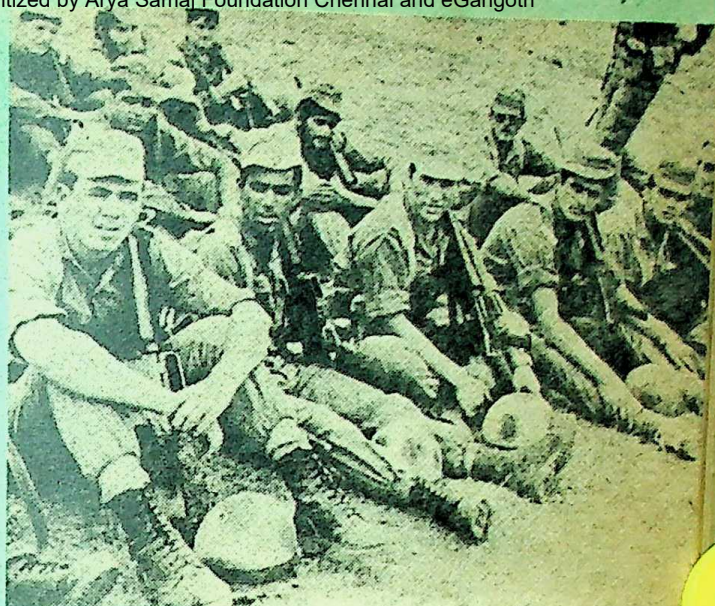
इजराइली सैनिक : हर युद्ध के बाद पहले से ज्यादा उत्साह.

समुद्री तट, बागबगीचे, ऊंचीऊंची इमारतें और सुखसुविधापूर्ण रहन-सहन– लेबनान के वैभव का प्रतीक.

हो रहे थ.

4 जून, 1982 को लंदन में इजराइली राजदूत श्लामा आरगोव को गोली मार दी गई. इस घटना से कुछ दिन पूर्व पेरिस में इजराइल के राजनयिक याकूब ब्यार सीमंतोव को गोली का निशाना बनाया गया. इन सारी घटनाओं को इजराइली की विरोधी पार्टी ने जनता के बीच उछालना शुरू किया.

इजराइल का इरादा

6 जून, 1982 को फिलस्तीनी छापामारों का सफाया करने और उन्हें इजराइल की सीमा से 40 किलोमीटर दूर रखने के लिए इजराइल ने लेबनान पर चढ़ाई कर पांचवां बड़ा युद्ध शुरू कर दिया.

इजराइल ने 6 जून को जिस समय लेबनान में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा नियंत्रित शांति क्षेत्र को पार किया, उस समय सीमा पर 11 देशों के 6,000 सैनिक तैनात थे. इसे सन 1978 में इजराइल के एक हमले के बाद तैनात किया गया था. इजराइल की निगाह में यह सेना निष्क्रिय थी और इस की आड़ में फिलस्तीनी छापामार इजराइली कसबों पर हमला करते थे. इस सेना के कमांडर

आयरिश जनरल विलियम केलघन ने एक बार कहा था कि उन की सेना इजराइल के हर हमले का मुंहतोड़ जवाब देगी. किंतु इस बार इजराइली सेना की सीमा पार करते ही वह अचानक एक तरफ को हो गई.

इधर इजराइली सेना लेबनान में आगे बढ़ने लगी और उधर दूसरी तरफ भूमध्य सागर के रूसी नौसैनिक बेड़े के जहाजों की संख्या में बढ़ोतरी होने लगी. जिन दिनों यह लड़ाई शुरू हुई, उन्हीं दिनों विश्व की अर्थ व्यवस्था को संकट से बचाने और आपस में सहयोग करने के लिए अमरीका, फ्रांस, पश्चिमी जरमनी, ब्रिटेन, इटली और जापान के राष्ट्रध्यक्ष मुंह में पाइप दबाए वरसाई (फ्रांस) में हो रहे शिखर सम्मेलन में विचारविमर्श में डूबे हुए थे.

दादाओं के बीच में बंटा लेबनान

पिछले 10 वर्षों से लेबनान फिलस्तीनी छापामार दादाओं और सीरियाई सेना के बीच में बंटा हुआ था. जोर्डन से धकेले जाने के बाद फिलस्तीनियों ने लेबनान को पनाहगाह बनाया और समूचे लेबनान में जगहजगह अड्डे बना लिए. 30 ... आबादी वाले लेबनान में इसलाम ... धर्म को मानने वाले हैं. संविधान के ... राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री का पद ... जनसंख्या के इन दो प्रमुख समुदायों ... दिया गया है. राष्ट्रपति के पद पर ईसाई ... प्रधान मंत्री के पद पर मुसलिम चुना ... फिलस्तीनियों के कारण यहां ईसाइयों ... मुसलमानों के बीच मतभेद उग्र होने ... इजराइल ने जहां लेबनान के ईसाइयों ... समर्थन किया, वहां उन्हें हथियारों की ... भी दी.

सन 1975-76 में लेबनान गृहयुद्ध ... चपेट में आ गया. जब गृहयुद्ध शांत हुआ ... लेबनान की भूमि दादाओं के खेमों में ... सन 1945 में लेबनान अरब लीग का ... बन गया था. गृहयुद्ध छिड़ने पर लेबनान ... सरकार और अरब लीग से अनुरोध ... सीरिया ने सन 1976 में अपने 30 ...

बेरुत : एक सुंदर शहर

लेबनान की राजधानी बेरुत के बाहरी हिस्से में इन दिनों इजराइली सेना मोर्चाबंदी किए हुए पड़ी है. सन 1975-76 के गृहयुद्ध में ईसाई और मुसलिम बहुल क्षेत्रों में काफी खूनखराबा हुआ था. बाद में किसी तरह शांति हुई. तब तक बेरुत दोनों जातियों के बीच बंट गया. शहर का पश्चिमी हिस्सा मुसलिम बहुल क्षेत्र में आ गया और पूर्वी बेरुत ईसाइयों के पूर्वी हिस्से में. ईसाइयों की रक्षा के लिए छापामार किस्म के फलंगिस्ट ने अपनी मोर्चाबंदी की और पश्चिम में सीरियाई, सेना लेबनानी मुसलिम सेना के साथ फिलस्तीनी छापामार जम गए.

'डेली टेलीग्राफ' के बेरुत ... संवाददाता ने लिखा है कि गत 13 जून ... को इजराइली सेना ने बेरुत शहर के ... हिस्सों में प्रवेश किया तो ईसाइयों में खु... लहर दौड़ गई. शहर के बाहरी इला... पहाड़ी पर स्थित ईसाई खुशी से रोने ल... गए और इजराइली सैनिकों का वीरों की ... स्वागत किया. 'टाइम' के संवाददाता ... सूरो ने अपनी रिपोर्ट में लिखा: "... समय इजराइली रक्षा मंत्री एरल श... ईसाई क्षेत्रों का दौरा किया. इ... हैलीकौप्टरों में बैठे चालक बेरुत के ... नीचे उड़ान भर कर पीले और ह... फेंकते समय शहर की अति ... गगनचुंबी इमारतें देख कर आश्चर्य ... गए. चालकों को लगा जैसे यह शहर ... यूरोपीय देश का कोई शहर हो."

समुद्र के किनारे बसे बेरुत शहर ...

सैनिकों को राजधानी बेरुत के आसपास भेज कर शांति स्थापित करने में योगदान किया. इसी प्रकार सन 1978 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने लेबनान में अपनी शांति सेना भेजी.

मजेदार बात यह है कि शांति की आड़ में सीरिया की सेना पिछले छः सालों से लेबनान में पड़ी हुई है. इधर समूचा लेबनान टुकड़ोंटुकड़ों में बंटा हुआ है. फिलस्तीनी छापामार लेबनान के उत्तर में सक्रिय हैं तो मेजर साद हदाद समर्थक ईसाई संगठनों का दक्षिण भाग पर कब्जा है. राजधानी बेरुत भी दो टुकड़ों में बंट गई है. पश्चिमी बेरुत में मुसलमान हैं और पूर्वी बेरुत में ईसाइयों का प्रभाव है. समूचा लेबनान इस समय कुल मिला कर सात टुकड़ों में बंटा हुआ है.

इजराइल के साथी मेजर साद हदाद द्वारा नियंत्रित भाग.

संयुक्त राष्ट्र संघ की शांति सेना द्वारा नियंत्रित भाग.

फिलस्तीनी मुक्ति संगठन द्वारा नियंत्रित क्षेत्र.

सीरियाई सेना द्वारा नियंत्रित भाग.

ईसाइयों द्वारा नियंत्रित भूभाग.

इजराइल द्वारा कब्जे में किया गया सीरिया का पुराना लेबनानी हिस्से वाला क्षेत्र.

छापामार संगठन के नेता अल मरादा द्वारा नियंत्रित भाग.

जैसा कि अकसर होता है, इजराइल हर युद्ध में बड़े पैमाने पर और सुनियोजित ढंग से लड़ाई लड़ता है. लेबनान में फिलस्तीनियों को सीमा से 40 किलोमीटर धकेलने के लिए उस की सेना ने सीमा पार कर लेबनान के दो नगरों तायर और सिडोन पर कब्जा कर फिलस्तीनी अड्डों का सफाया कर दिया. इन दिनों शहरों के प्रशासन के लिए इजराइल ने पश्चिमी तट और गाजा पट्टी से प्रशासक बुलाए हैं. इजराइली सेना का अनुमान है कि लेबनान में 15,000 से ले कर 20,000 प्रशिक्षित छापामार हैं. इन में से करीब 6,000 बेरुत में हैं.

इजराइल ने अब तक अपनी सीमा से 25 किलोमीटर उत्तर में फैले मध्यवर्ती क्षेत्र

रफ पहाड़ों के सुंदर दृश्य दिखाई देते हैं तो दूसरी तरफ अति आधुनिक 10 और 12 मंजिल इमारतें सैलानियों को आकर्षित करती हैं. ...राची समुद्र तटीय किनारे पर अनगिनत लोग स्नान करते हैं और काफी ऊंचाई से कूदते हैं. बेरुत के कई होटलों की बनावट स्विटजरलैंड के होटलों जैसी है. इन अति आधुनिक होटलों में दिसंबर में रहने में और मजा है. बेरुत का तिकोना रूप तो और भी आकर्षक है. एक तरफ ऊंची इमारतें हैं तो साथ ही पानी के बीच में ऊंची उठी चट्टानें.

इजराइली सेना के कब्जे वाले राजधानी बेरुत के क्षेत्रों में रिपोर्टिंग के लिए गए पश्चिमी देशों के कुछ संवाददाताओं ने इजराइली सैनिकों की बातचीत के कुछ मनोरंजक अंश अपने देश के अखबारों में प्रकाशित करने के लिए भेजे हैं. पश्चिमी बेरुत के क्षेत्रों में आगे बढ़ती सेना के जवानों
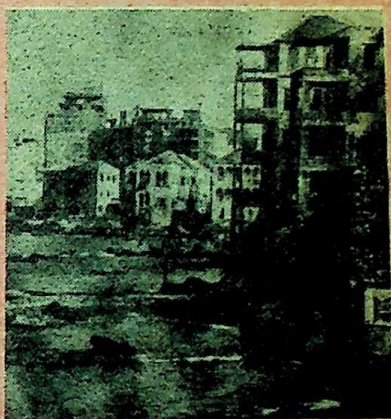
ने शहर की सुंदरता और माल से भरी दुकानों को देख कर अस्फुट स्वर में कहा है, "अरे, यहां इतना सोना है... बेरुत इतना सुंदर है... काश, मैं अपनी महबूबा के साथ इस शहर में होता. मैं अपनी महबूबा को इस शहर को जरूर दिखाऊंगा."

पर भी कब्जा कर लिया है. इजराइल की करीब 20 हजार सेना ने प्राचीन शहर तायर से ले कर माउंट हर्मीज की तलहटी तक फैले 53 किलोमीटर के संपूर्ण सीमांत पर अपना घेरा डाल रखा है. इस समय इजराइली सेना लेबनान की राजधानी बेरुत में बाहरी इलाके में राष्ट्रपति भवन से 500 गज दूर है. पिछले दिनों इजराइली सेना ने बेरुत शहर पर हजारों परचे और बम बरसा कर यह बता दिया कि वह आगे बढ़ने से चूकेगी नहीं.

इजरायली सेना माऊंट हरमन पहाड़ी की तलहटी में बने फिलस्तीनी अड्डे हेसबयाह, ब्यूफोर्ट किले, यासर अराफत के मुख्यालय, दक्षिण बेरुत स्थित सैदा के फिलस्तीनी गढ़ पर भी कब्जा कर चुकी है.

इजराइली छापामारों ने लेबनानी क्रिश्चियन मिलिशिया की सहायता से छः ... विश्वविद्यालय के ... संकाय पर कब्जा कर इस अंतिम फि... अड्डे को भी अपने कब्जे में ले लिया है ... के हवाई अड्डे के बगल में स्थि... विश्वविद्यालय पर सन 1975-76 ... के बाद फिलस्तीनियों का कब्जा था.

संभवतः इस पूरे युद्ध में यह ... अवसर है जब इजराइली सेना के बेरु... में घुसने के बाद क्रिश्चियन मिलि... फिलस्तीनियों को पीछे धकेलने में ... ईसाई सेना के फलंगिस्ट तोपखाने ... फिलस्तीनियों पर गोले बरसाए हैं.

लेबनान लेबनानियों के लिए

दुनिया के किसी भी भाग में जब ... होता है तब बीचबचाव और युद्धवि... कोशिशें की जाती हैं. इजराइली ह...

फिलस्तीनी मुक्ति संगठन

सन 1960 तक फिलस्तीनियों के 40 राष्ट्रभक्त दल थे, जिन में से फिलस्तीनी मुक्ति संगठन भी एक है. सन 1964 में यरुशलम में अहमद शुकारी के नेतृत्व में एक बैठक हुई और संगठन की नई रूपरेखा तैयार की गई. सन 1967 के अरब इजराइली युद्ध में नएनए छापामार दल बने और फिर फिलस्तीन राष्ट्रीय परिषद का निर्माण हुआ. फरवरी 1969 में इस की कार्यकारिणी समिति ने यासर अराफत को अध्यक्ष चुना. अपने अल फतह संगठन के मुखिया के नाते यासर अराफत ने फिलस्तीनी मुक्ति संगठन को एक नई दिशा दी. सन 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ में सर्वप्रथम फिलस्तीनियों के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हो कर यासर अराफत ने प्रसिद्धि प्राप्त की. यों तो फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के अनेक दल हैं, लेकिन मुख्य दल निम्नलिखित हैं :

यासर अराफत का दल—अलफ...

सन 1968 में बना आसाम अ... का सैका सीरियन दल. इसी वर्ष फिल... क्रांति का बाज दल भी बना.

सन 1966-67 में मार्क्सवादी ... हबाश द्वारा बनाया पैलप (पापुलर फ्रं... दि लिबरेशन आफ पेलेस्टाइन).

सन 1970 में अबु दाऊद के ने... बना ब्लैक सैप्टेंबर दल. अबु दाऊद ... 1981 में देहांत हो गया.

सन 1968 में अहमद जबरा... नेतृत्व में पैलप जनरल कमांड बना.

सन 1969 में नैफ हवातमेह के ... में एक दल पापुलर डेमोक्रेटिक फ्रंट ... लिबरेशन आफ पेलेस्टाइन बना.

सन 1975 में वादी हदाद दल ...

सन 1977 में अबु अल अब्बा... नेतृत्व में फिलस्तीन मुक्ति मोर्चा ब...

सन 1970 तक फिलस्तीनियों के ... जोर्डन में थे. बाद में जोर्डन के शासक... मतभेद और ब्लैक सैप्टेंबर के का... छापामारों द्वारा सेना से हुई भिड़ंत ने ... लड़ाई को जन्म दिया. पूरे 10 दिव...

फिलस्तीनियों को बुरी तरह झकझोर दिया है. यह दूसरी बात है कि बेरुत में हाथों में स्टेनगन लिए यासर अराफत का अपने साथियों के साथ लड़ते हुए का एक चित्र हाल ही में ऐक विदेशी दैनिक में छपा है. लेबनान में शांति स्थापना के लिए अमरीकी राष्ट्रपति रेगन के विशेष दूत फिलिप हबीब इन दिनों बेरुत, यरुशलम और दमिश्क की दौड़धूप कर रहे हैं. पिछले दिनों फिलिप हबीब ने बेरुत में फिलस्तीनियों के सामने एक चार सूत्री शांति प्रस्ताव रखा था. यह प्रस्ताव इस प्रकार है :

फिलस्तीनी छापामार आत्मसमर्पण करें.

फिलस्तीनियों के पास जो हथियार हैं उन्हें जमा कराया जाए.

फिलस्तीनी अपने को शरणार्थी शिविरों तक सीमित रखें.

फिलस्तीनी नेता बेरुत छोड़ दें.

फिलिप हबीब के इन प्रस्तावों को यासर अराफत ने मानने से इनकार कर दिया है और चप्पाचप्पा भूमि पर लड़ने की बात कही है.

इस समय स्थिति यह है कि लेबनान का 2,800 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र यानी पूरे देश का चौथाई से भी ज्यादा हिस्सा इजराइली के नियंत्रण में है. पश्चिमी बेरुत के मुसलिम बहुल क्षेत्र में क़रीब एक लाख फिलस्तीनी इजराइल की घेरेबंदी में हैं. इजराइल हमले से 20 प्रतिशत लेबनानी बेघर हो गए हैं. दक्षिणी लेबनान में लगभग दो लाख व्यक्ति युद्ध के कारण अपने घरों से भागने को मजबूर हुए हैं. इसी प्रकार पश्चिमी बेरुत की बाहरी बस्तियों की दो लाख से अधिक आबादी

युद्ध में जोर्डन की फौजों ने फिलस्तीनियों को जोर्डन से निकाल कर लेबनान की सीमाओं में धकेल दिया. बाद में फिलस्तीनियों ने लेबनान के अनेक स्थानों में अपनी रिहायश और अड्डे बनाए. सन 1975 में लेबनान में हुए गृहयुद्ध में फिलस्तीनियों ने पूरी तरह भाग लिया और सरकार को सहयोग दिया. इस के बदले उन्होंने भारी छूट ली और लेबनान में उन के जगहजगह अड्डे बन गए.

गत 15 वर्षों से फिलस्तीनी मुक्ति संगठन ने अपने आतंकवादी क्रियाकलाप द्वारा सारे विश्व का ध्यान फिलस्तीन समस्या की तरफ खींचा है. मार्च 1978 में एक बस का अपहरण कर उस में बैठे 38 इजराइलियों को मार कर फिलस्तीनी संगठन ने खूनखराबी का नया दौर शुरू किया. इन दिनों यूरोप के देशों में रहने वाले इजराइलियों पर फिलस्तीनी छापामार यदाकदा घातक हमला कर रहे हैं.

यासर अराफत के राजनीतिक प्रभाव और कुछ मुसलिम देशों की सहायता के आधार पर पिछले कुछ वर्षों से फिलस्तीनी मुक्ति संगठन ने एक निर्वासित सरकार गठित कर रखी है, जिसे भारत समेत अनेक देशों ने मान्यता दे रखी है. इस सरकार को सुचारू रूप से चलाने के लिए सभी फिलस्तीनी छापामार संगठनों का सहयोग लेने के लिए एक काउंसिल, कैबिनेट (कार्यकारी कमेटी) और विश्व के विभिन्न देशों में 82 कार्यालय बना रखे हैं. सौ सदस्यों वाली काउंसिल के सदस्य वर्ष में दो बार एक स्थान पर एकत्र हो कर सर्वसम्मत फैसला करते हैं.

राजनीतिक गतिविधियों के अतिरिक्त फिलस्तीनी मुक्ति संगठन हस्पतालों दवाखानों, मजदूर संगठनों, लेखक, कवि संगठनों का संचालन करता है. इन के अतिरिक्त यह संगठन 35 छोटी फैक्टरियों को भी चलाता है, जिन में कपड़ा, कंबल, फर्नीचर, खिलौने और फिल्में बनती हैं. यासर अराफत का भाई फाथी जो एक डाक्टर है, इन दिनों फिलस्तीनी रेडक्रास का अध्यक्ष बना हुआ है. दक्षिणी लेबनान में रशीदी शरणार्थी कैंप में आठ से 16 साल के बच्चों को छापामार फौजी प्रशिक्षण दिया जाता है. अपनी प्रार्थना में बच्चे जोरजोर से 'बिलाडी बिलाडी' का उच्चरण करते हैं, जिस का अर्थ है– 'मेरा देश, मेरा देश.'

सुरक्षित स्थानों की तरफ चली गई है. मरने वालों की संख्या काफी अधिक बतलाई जा रही है.

इधर इजराइली चाहते हैं कि उन का क्षेत्र फिलस्तीनियों के राकेटों और तोपखाने की मार से दूर रहे. इस के लिए इजराइली चाहते हैं कि लेबनान इजराइल सीमा पर एक तटस्थ क्षेत्र का निर्माण हो और इस क्षेत्र में ईसाई और इजराइल समर्थक मेजर साद हदाद नियंत्रित मिलिशिया का नियंत्रण हो.

इजराइली सेना दमिश्क और बेरुत की सप्लाई लाइन काटने की भी मांग कर रही है क्योंकि यह लाइन फिलस्तीनियों का हथियार लाने का सब से सुरक्षित रास्ता है.

युद्ध का विचित्र पहलू

इस युद्ध का एक विचित्र पहलू यह है कि फिलस्तीनीयों के इजराइली सेना के घेरे में आने के बाद कोई भी मुसलिम देश मदद के लिए सामने नहीं आया है, ईरान और इराक की ताकत लगभग 20 महीने के युद्ध से टूट गई है. बाकी के देश या तो इजराइली आक्रमणों से पीड़ित हैं या फिर आतंकित

मुसलिम बहुल पश्चिमी बेरुत को इजराइली सेनाओं द्वारा पूरी तरह घेर लेने तथा फिलस्तीनी छापामारों को इजराइली शर्तें मान लेने के लिए बाध्य करने के उद्देश्य से इस क्षेत्र को बिजली और पानी की सप्लाई काट देने के बाद से जो खबरें मिल रही हैं इतनी परस्पर विरोधी हैं कि उन से तत्काल किसी नतीजे पर पहुंचना संभव नहीं है. फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के एक प्रवक्ता का कहना है कि बेरुत में उस के नेताओं ने अमरीकी राष्ट्रपति के विशेष प्रतिनिधि फिलिप हबीब से यह साफसाफ कह दिया है कि पश्चिमी बेरुत में लड़ाई को टालने का एकमात्र उपाय यही है कि इजराइली सेनाएं पश्चिमी बेरुत से कम से कम [illegible] किलोमीटर दूर चली जाएं ताकि लेबनान सरकार और फिलस्तीनी नेता बातचीत द्वारा यह तय कर सकें कि फिलस्तीनी किन शर्तों पर लेबनान में रह सकते हैं.

फिलस्तीनी मुक्ति संगठन का रुख

प्रवक्ता ने कहा कि लेबनान में सशस्त्र फिलस्तीनियों की मौजूदगी 3 नवंबर, 19[illegible] को काहिरा में लेबनान सरकार और फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के मध्य हुए समझौते के अंतर्गत है. यदि लेबनान सरकार इस समझौते में कोई परिवर्तन करना चाहती है तो फ़िलस्तीनी मुक्ति संगठन उस से बातचीत करने को तैयार है. लेकिन जब तक इजराइली सेनाएं पश्चिमी बेरुत को घेरे हुए हैं, तब तक यह बातचीत नहीं हो सकती क्योंकि इजराइली सेनाओं के रहते लेबनान के प्रधान मंत्री शफीक बाजान अपने निवास स्थान से निकल कर राष्ट्रपति के महल तक नहीं जा सकते जो कि इस समय इजराइल अधिकृत क्षेत्र में है.

काहिरा समझौता के पैराग्राफ चार में कहा गया है कि लेबनान में रहने वाले फिलस्तीनी सशस्त्र संघर्ष द्वारा फिलस्तीन

लेबनान में संघर्षरत शक्तियां

सशस्त्र सैनिकों की अनुमानित संख्या :

1. फैंजीह क्रिश्चियन मिलिशिया	–1,000
2. फैलेंजिस्ट क्रिश्चियन मिलिशिया	–10,000
3. इजराइली सैनिक टुकड़ियों की संख्या	–अज्ञात

(इजराइल की सीमा से बेरत की बाहरी बस्तियों तक तथा मध्य लेबनान के क्षेत्रों तक का भाग इस समय इजराइल के नियंत्रण में है.)

4. संयुक्त राष्ट्र संघ की सेना	-7,000
5. हद्दाद क्रिश्चियन मिलिशिया	-2,000
6. सीरिया की सेना	-25,000
7. लेबनानी सेना	-25,000
8. वामपंथी सैनिक	-हजारों की संख्या में
9. फिलस्तीनी छापामार	-6,000

क्रांति में भाग ले सकते हैं.

बेरुत में फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के प्रवक्ता ने बताया कि उस का संगठन इन खबरों को कोई महत्त्व नहीं दे रहा है कि अमरीका फिलस्तीनी छापामारों को लेबनान से सकुशल निकालने के लिए अपनी सेनाएं लेबनान में भेजने को तैयार है.

यासर अराफत ने अमरीकी संरक्षण में फिलस्तीनी छापामारों को पश्चिमी बेरुत से निकालने की बात मानने से इंकार कर दिया है. उन का रवैया शायद यह लगता है कि यदि फिलस्तीनी छापामारों को वहां से निकलना ही पड़े तो उन की निकासी का कार्य संयुक्त राष्ट्रसंघ की देखरेख में हो, न कि अमरीका की देखरेख में जो उन की दृष्टि में इस मामले में इजराइल का प्रत्यक्ष समर्थन कर रहा है. पश्चिमी सूत्रों का कहना है कि ऊपर से भले ही यह लगे कि फिलस्तीनी छापामार झुकने को तैयार नहीं हैं, पर अंदरअंदर जो बातचीत चल रही है उस से उन का रवैया वैसा कड़ा नहीं दिखाई देता. शायद अंदर ही अंदर हो रही बातचीत की प्रगति को देख कर ही इजराइल ने पश्चिमी बेरुत में बिजली की सप्लाई फिर से चालू कर दी है.

अराफत का रवैया

वैसे इस समय की जो स्थिति है उस में से लगता यही है कि कहीं से भी मदद न मिलने के कारण आखिर यासर अराफत को इजराइलियों के आगे झुकने को विवश होना पड़ेगा. अरब पहले इजराइल के अस्तित्व को भी मानने को तैयार नहीं थे, किंतु यासर अराफत का हाल का यह बयान कि फिलस्तीनी मुक्ति संगठन इजराइल के अस्तित्व के साथसाथ फिलस्तीन की स्थापना चाहता है, इस बात का संकेत है कि मिस्र के बाद इजराइल के विरुद्ध संघर्ष में रत फिलस्तीनियों ने भी अब वस्तुस्थिति को कुछकुछ समझ लिया है. किंतु वर्तमान स्थिति का हल तभी संभव है जब फिलस्तीनी मुक्ति संगठन और इजराइल दोनों ही संघर्ष के स्थान पर बातचीत का मार्ग अपनाएं.

युद्ध फायदेमंद भी होता है

इजराइल के लिए अरबों से लड़ा जाने वाला हर युद्ध वरदान बनता गया. एक तरफ जहां उस ने अरबों की भूमि पर कब्जा किया, वहां युद्ध में प्रयुक्त शस्त्रों का मलबा उस के लिए कीमती माल बनता गया. सभी देशों के इन टूटेफूटे हथियारों की जांचपड़ताल कर उस ने एक से एक बढ़िया हथियार बनाए. सन 1949 से ही इजराइल को दूसरे देशों से हथियार खरीदने में काफी दिक्कतें होती रही हैं. इन दिक्कतों को उस ने दो तरह से हल किया– एक तो विदेशी हथियारों के बचेखुचे टुकड़ों और पुर्जों से नए देशी हथियार बना कर और दूसरे अरबों से छीने और युद्ध में टूटेफूटे हथियारों का बारीकी से अध्ययन कर अपने ढंग के नए हथियार बना कर.

15 मई, 1948 को प्रथम अरब इजराइल युद्ध में इजराइल के पास उधार की ली हुई बंदूकें थीं, जिन से उस ने युद्ध लड़ा. आज इजराइल के पास एक से एक नए अपने बनाए बमवर्षक, टैंक और प्रक्षेपास्त्र हैं. यही नहीं, इजराइल ने परमाणु बम भी बना लिया है.

लेबनान में फिलस्तीनियों के खिलाफ लड़े गए इस पांचवें बड़े युद्ध में इजराइल ने रूस के बने नए से नए हथियारों की बड़ी दुर्गति की. इस युद्ध में इजराइल ने रूस के नए टैंक टी-72, पुराने टैंक टी–62 और मिग- 21,23 जैट लड़ाकू हवाई जहाजों को तोड़ डाला. इजराइल ने पूर्वी लेबनान में बिका घाटी में बने सीरियाई अड्डे पर रूसी जमीन से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र सैम-2 और सैम-6 भी बुरी तरह तोड़े. यही नहीं, उस ने अपना बना मरकवा टैंक प्रथम बार इस युद्ध में परीक्षण के लिए भेज कर उसे युद्ध के लिए बढ़िया पाया.

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: सावधान, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

शादी कर के लोगों को ठगता था

पटना में पैसा बटोरने के चक्कर में एक डाक्टर ने एक ऐसा धंधा शुरू किया जिस से अ... पुलिस बुरी तरह से उस की तलाश कर रही है.

पुलिस सूत्रों के अनुसार पटना मेडिकल कालिज के एक विवाहित युवा डाक्टर ने नगर... एक संभ्रांत परिवार में अपने को अविवाहित बता कर कन्या की माता से खासी रकम ऐंठ... और अंतरजातीय विवाह कर लिया.

इस के एक वर्ष बाद उस ने बी.ए. पास एक लड़की से शादी की और उस के परिवार से... हजार रुपए ले लिए.

जब वह तीसरी शादी करने जा रहा था तब उस के पूर्व विवाहित होने की भनक लड़... वालों को लगी. इस पर इस की दूसरी पत्नी को इत्तिला कर दी गई और मामला पुलिस में द... कराया गया. वह यह तीसरी शादी भी अंतरजातीय कर रहा था

—दैनिक आज, पटना (प्रेषक : सत्यनारायण गुप्...

*

दवा के केप्सूलों में बालू

आसनसोल के सब डिवीजनल हस्पताल में कैप्सूलों में बालू पाया गया है.

आसनसोल को बर्दवान जिला रिजर्व स्टोर से ट्रेट्रासाइक्लिन के 84 हजार कैप्सूल भे... गए. उन में से तीन हजार कैप्सूल इस्तेमाल कर लेने के बाद एक दिन अचानक एक कैप्सूल... गया जिस में से बालू निकला.

इस की सूचना चिकित्साधिकारी को दी गई. उन्होंने कई कैप्सूलों की जांच की, सब... बालू ही मिला. बचे हुए कैप्सूल दवा नियंत्रक कलकत्ता के पास जांच के लिए भेज दिए गए...

राज्य के मुख्य मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री से इस घटना की उच्चस्तरीय जांच कराने की मा... भी की गई है.

—दैनिक सन्मार्ग, कलकत्ता (प्रेषक : अशोककुमार पांडे...

*

मंत्री का भतीजा डकैतों के गिरोह में

कानपुर में घाटमपुर पुलिस द्वारा डकैती के संबंध में गिरफ्तार किए गए लोगों में उत्त... प्रदेश के एक मंत्री का भतीजा भी है.

पुलिस के अनुसार राधवेंद्र सिंह नाम के इस युवक ने जिस ने अपना एक अलग गिरो... बना लिया है, घाटमपुर थाने के मोतीपुर ग्राम में डकैती डाली और स्वतंत्रता सेनानी सुख... प्रसाद की गोली मार कर हत्या कर दी.

उक्त युवक की तलाश कानपुर पुलिस के अलावा मध्य प्रदेश पुलिस भी कर रही है...

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : ...कुमार दुबे) (सर्वोत्तम)

शरारत

हवा ने ये शरारत की है
या शरारत आप ने की है,
चूमी थी गुलाब की कलियां
तपन लबों की आग की सी है.

हवा में उड़ती अदाएं जैसे
इशारा कर के हमें बुलाती हैं,
लबों को दांतों में कैद कर के
आंखों ही आंखों में शर्माती हैं.

अधर गुलाबी, अधखिली कलियां
नयनों में नेह निमंत्रण भी है,
लगता है ऐसा जैसे कि तुम ने
प्यार से पहले शरारत की है.

— अवधेश शुक्ल

एक दिन हमारे अफसर ने एक सादे कागज पर पत्र लिख कर मुझे टाइप करने को दिया. दफ्तर के चपरासी ने आ कर पूछा, "चिट्ठी टाइप हो गई?" मैं ने कहा, "नहीं."

उसी बीच एक लाइन मेरी समझ में नहीं आ रही थी. मेरे पीछे किसी की पदचाप सुनाई दी मैं ने सोचा कि दफ्तर का कोई कर्मचारी होगा इसलिए मैं ने जोर से कहा, "यह उल्लू का पट्ठा क्या लिखता है, कुछ समझ में नहीं आता." लेकिन जब मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो हतप्रभ रह गया क्योंकि वह मेरे अफसर ही थे. किंतु उन्होंने बिना कुछ कहे वह लाइन मुझे बता दी. इस पर मुझे बहुत दिनों तक ग्लानि रही. — शकील अहमद खान

*

हमारे बैंक के मैनेजर खान साहब हैं. वह जब भी फोन आता तो कहते, "मैं खान मैनेजर बोल रहा हूं."

एक दिन उन का फोन आया तो उन्होंने वही कहा, "मैं खान मैनेजर बोल रहा हूं." इस पर फोन करने वाले ने फोन रख दिया. ऐसा ही दोबारा हुआ.

तब मैं ने उन से कहा, "आप यों कहें, मैं बैंक मैनेजर खान बोल रहा हूं." अगली बार जब उन्होंने ऐसा ही कहा, तब फोन करने वाले ने उन से बात की.

अंत में उन्होंने मुझ से पूछा कि पहले वह व्यक्ति फोन क्यों रख देता था. मैं ने कहा, "वह आप को खान (माइन) का मैनेजर समझते थे." —कामेशकुमार राजपूत

*

बैंक में खाता बंद कराते वक्त खातेदार को आवेदन करना होता है.

एक दिन एक सज्जन हमारे बैंक में खाता बंद कराने आए. उन्होंने फार्म भरा और जिस कालम में खाता बंद करने का कारण लिखना होता है, उस में लिखा— 'मेरी मरजी.'

यह देख कर हम लोग अपनी हंसी नहीं रोक सके. —प्रमोदकुमार (सर्वोत्तम) •

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :

दास्ताने दफ्तर, मुक्ता; रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ऐम्सटर्डम

सौंदर्य और भद्देपन की मायानगरी

लेख • अजयकुमार सिन्हा

ऐम्सटर्डम का नाम सुनते ही पवनचक्कियों और लकड़ी के जूतों का चित्र सामने आ जाता है, क्योंकि ये दोनों इस नगर के अतीत से जुड़े हुए हैं और एक प्रकार से इस नगर के चिह्न माने जाते हैं. किंतु ऐम्सटर्डम नगर पवनचक्कियों और लकड़ी के जूतों से आगे बढ़ चुका है और संसार के प्रमुख महानगरों में उस का महत्त्वपूर्ण है. इस नगर की अनेक ऐसी बातें हैं,

[illegible] हर दृष्टि से यह नगर आगे बढ़ा है. अच्छी हो या बुरी, हर बात इस में है. एक तरफ यदि इस का सौंदर्य लुभावना है तो दूसरी ओर इस का कुत्सित व कलंकित रूप भी लोगों को उतना ही ललचाने वाला है.

सब से बड़ी बात यह है कि यहां के लोगों को इस बात पर संतोष है कि उन के नगर में सभी प्रकार की इच्छाएं पूरी होने के साधन हैं. एक तरफ यदि यह शांतिदायक

ऐम्सटर्डम नगर सांस्कृतिक धरोहरों और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है. यहां के उदार, सहिष्णु और शांत नागरिक सैलानियों का मन मोह लेते हैं.

ऐमस्टर्डम की भव्य इमारतें देख कर कोई भी इस भ्रम में आ सकता है कि यह नगर किसी विशाल, शक्तिशाली व संपन्न देश की राजधानी है न कि नीदरलैंड जैसे छोटे देश की.

उद्यान सदृश है तो दूसरी ओर व्यापार का बहुत बड़ा केंद्र. एक ओर यदि यहां कला और संस्कृति की धरोहर के दुर्लभ संग्रहालय हैं तो दूसरी ओर रंगरेलियां मनाने के लिए नाइट क्लब भी हैं.

यह वह मायानगरी है, जिस की शांत नहरों के निर्मल जल पर नौका विहार करते हुए इस के अनुपम सौंदर्य को निरखते हुए आप के मन में यही भाव आएगा, 'ले चल मुझे भुलावा दे कर मेरे नाविक धीरेधीरे.'

छलपूर्ण सौंदर्य

इस के छलपूर्ण सौंदर्य में खो जाने का प्रलोभन बहुत प्रबल है. आवेगों व उत्तेजनाओं को शांत करने वाली शांति है तो वासना को नग्न उत्तेजना प्रदान करने वाली चंचलता भी है, इसलिए यह नगर एक भुलावा है.

नीदरलैंड की महारानी जुलियाना और महामहिम राजकुमार.

किंत यह नगर मात्र भुलावा नहीं है. यह तो बड़ा स्पष्ट नगर है, क्योंकि इस के गुण और दोष, सौंदर्य और वीभत्सता, दोनों ही साफ दिखलाई पड़ते हैं. जो लोग इस के कलंकित रूप को देखना चाहते हैं, उन्हें ढूंढ़ने की जरूरत नहीं है. इस नगर ने कुछ भी छिपा नहीं रखा है. यहां के लोगों ने जीवन के दोनों यथार्थों को मान्यता दी है, इसलिए यह माया नगरी अंततोगत्वा एक यथार्थ नगरी में बदल जाती है.

'यूरोप पुष्पोद्यान' कहलाने वाले विश्व भर के देश नीदरलैंड (जिसे हालैंड भी कहते हैं) की यह राजधानी किसी नन्हें देश की राजधानी नहीं लगती. यह किसी भी विशाल, शक्तिशाली, संपन्न और ऐश्वर्यपूर्ण देश की राजधानी होने में सक्षम है. इस की पहचान इस की भिन्नता व विशिष्टता है, जो अनुपम और अतुलनीय है. यह और कहीं नहीं मिलती. इस पर इतनी पुस्तकें लिखी गई हैं कि शायद ही कोई उन सभी को अपने जीवनकाल में पढ़ सकता है. इस ने हमेशा लेखकों, कवियों व संगीतज्ञों को प्रेरणा दी है. इसे 'उत्तर का वेनिस' (इटली का सांस्कृतिक गौरव का नगर जहां अनेक नहरें हैं) कहा जाता है. इस के नगरवासी गर्व से पूछते हैं "क्या हमारे नगर के मुकाबले का कोई अन्य नगर इस दुनिया में है?"

नगर का इतिहास

यह नगरी 706 वर्ष पुरानी है, फिर भी इस का यौवन बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि इस के सौंदर्य में निरंतर वृद्धि हो रही है. किसी समय यह ऐम्सटेल नदी और ज्यूडरजी के बीच एक दलदली स्थल था. मछुए यहां आ कर बस गए थे. मल्लाह और जाल बुनने वाले जुलाहों ने यहां झोंपड़ियां बना डाली थीं. यहां हल दलदल में डूब जाते थे और मकान समुद्र के पानी में तैरते थे. समुद्र के पानी से अपने गांव को बचाने के लिए यहां के लोगों ने बांध (डाइक्स) बनाए और अपनी इस जगह का नाम ऐम्सटेल नदी और बांध (डैम) के नाम पर ऐम्सटर्डम रखा.
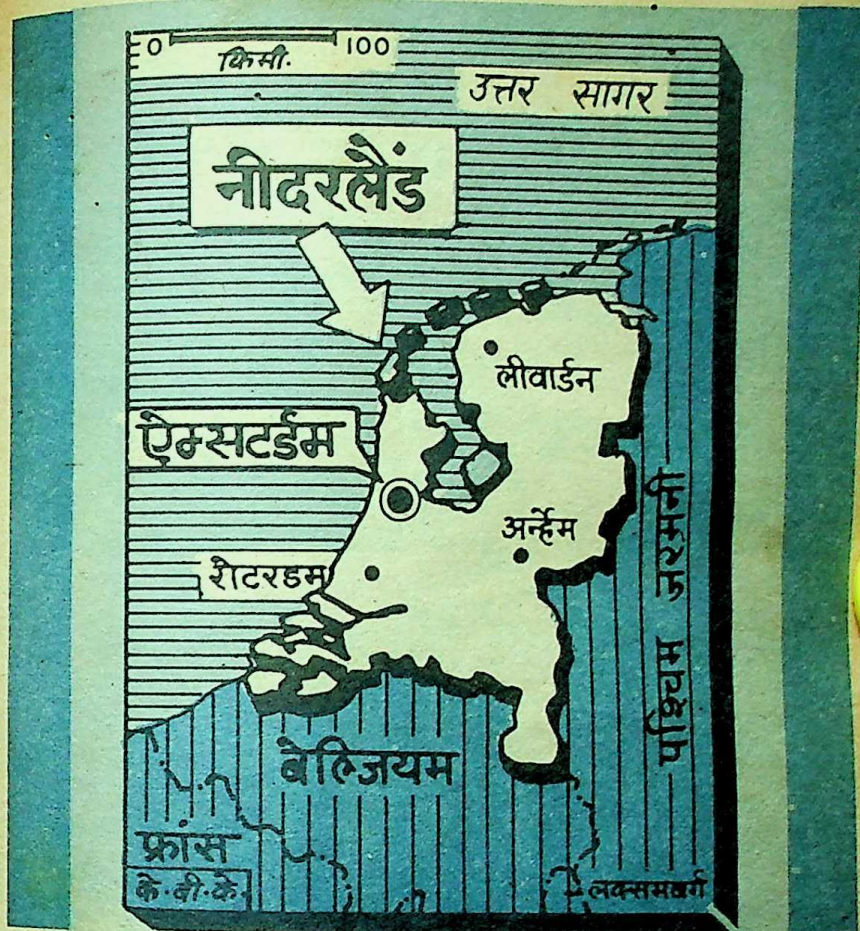
आयातनिर्यात की शुरुआत

समुद्र से इन लोगों का संघर्ष चलता रहा. सन 1275 तक यह नगर महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली लोगों का नगर बन चुका था. इस का सितारा तेजी से बुलंद होने लगा. इस के वासी उत्तरी सागर के सभी बंदरगाहों के साथ व्यापार करते थे. वे बलवान और खोजी थे. सन 1384 में उन में से ब्यूकेल्स नामक एक व्यक्ति ने व्यापार के लिए हैरिंग मछली को जो यहां बहुत पाई जाती है, सुरक्षित रखने और खराब होने से बचाए रखने की तरकीब ढूंढ़ निकाली. इस के लिए आवश्यक नमक प्राप्त करने के लिए वह समुद्र द्वारा पुर्तगाल गया और पीपों के लिए लकड़ी प्राप्त करने के लिए बाल्टिक सागर को रौंद डाला. यही आयातनिर्यात व्यापार की शुरुआत थी.

कालांतर में यह मछुओं का दलदली गांव व्यापार और वित्त का महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया. इस की सफलता की कहानी अविश्वसनीय है. इस के पीछे दृढ़ व परिश्रमी ऐम्सटर्डमवासियों की मेहनत छिपी हुई है. वे कुशल नाविक पैसे के मामले में भी खरे, कलाकार, सेतुनिर्माता और दूरदर्शी नियोजक थे.

यद्यपि ऐम्सटर्डम संसार के सघन और [illegible] भरे हुए नगरों में से है. (जनसंख्या
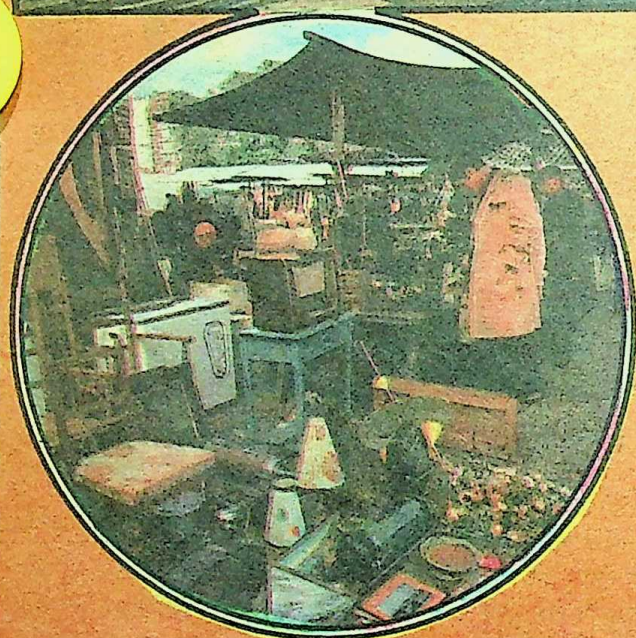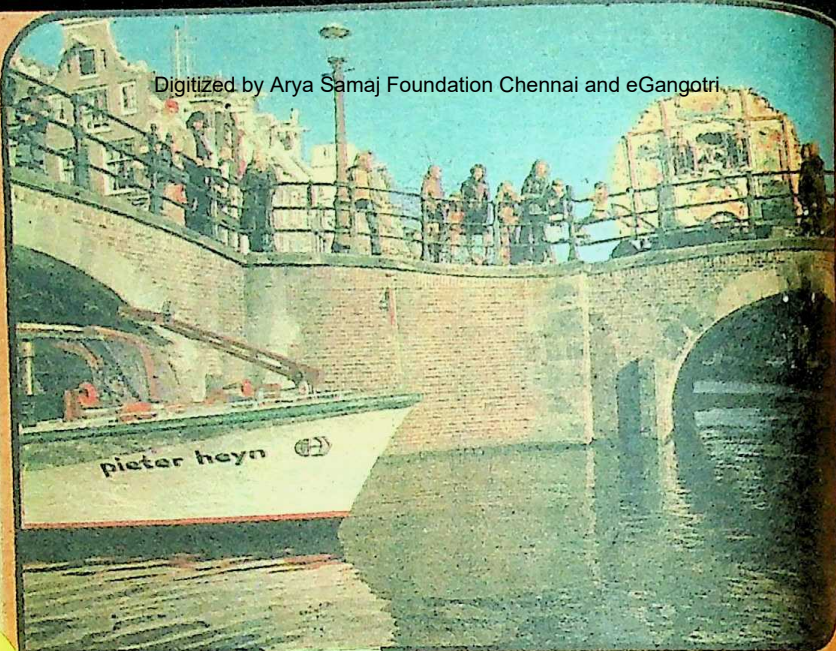
'पानी पर स्थित' इस नगर में अनेक नहरें व पुल हैं, जहां सैर करने का आनंद ही निराला है.

हीरे के उद्योग के लिए प्रसिद्ध इस नगर के बाजारों की छटा देखते ही बनती है.

8,20,000) पर यहां पर भीड़ का अर्थ कुछ दूसरा ही लिया जाता है अर्थात, 'जितना ही ज्यादा उतना ही सोल्लासपूर्ण.' यह नगर यूरोप का एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह है और एक अनोखे अर्द्धचंद्र के आकार का है. इस में अनेक नहरें हैं, जो राइन नदी और उत्तरी सागर में मिलती हैं. ये नहरें आम जलमार्ग और नौका विहार का साधन भी हैं. ये यहां की विशेषता हैं. नहरों पर 930 पुल हैं. नहरों के किनारों पर हजार से भी ज्यादा बजरे लंगर डाले खड़े रहते हैं. केंद्र में दो छोटी नदियों को मिलाने वाला बांध है. 'पानी पर स्थित' इस नगर को मोटरबोट द्वारा सब से अच्छे ढंग से देखा जा सकता है.

बांध के समीप ही विख्यात रिजक्स संग्रहालय है, जिस में डेंब्रांट और बरमियर जैसे मशहूर कलाकारों के अनमोल चित्र व कृतियां प्रदर्शित हैं. ऐम्सटर्डम में 38 संग्रहालय हैं. पानी तो इस नगर की विशेषता और प्रमुख आकर्षण है ही, पानी के बाद सब से ज्यादा जों चीज इस नगर में दिखलाई पड़ती है, वह है फूल. सभी पार्क फूलों से भरे रहते हैं. ट्यूलिप यहां का प्रमुख फूल है. ट्यूलिप की हर किस्म यहां पैदा की जाती है. ट्यूलिप के बहुत बड़े फार्म हैं, जहां इन फूलों

इस नगर के क्लबों में रातभर चहलपहल और रंगीनी रहती है.

की बहुतायत और विविध रंग आंखों को चकाचौंध कर देते हैं. किंतु इस से भी ज्यादा दर्शनीय है तैरता हुआ फ्लावर शो, यानी सिनजेल नहर में नावों पर फूलों की बिक्री.

नगर का स्वर्णकाल

17वीं सदी इस नगर का स्वर्णकाल था, जब नहरों के किनारों पर अभिजात्य वर्ग के सुंदर भवनों का निर्माण हुआ. इन में धनी व्यापारी और महाजन रहते थे. ये भवन आज भी उस संपन्न काल के साक्षी हैं. इस युग में यह यूरोप का सब से समृद्ध बंदरगाह था. इस के व्यापारी यूरोप के अभिजात्य या कुलीन वर्ग को पैसा देते थे. ऐम्सटर्डमवासी ही डच

(शेष पृष्ठ 46 पर)

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. भी हजारों वर्ग मील भारतीय विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पू लिए बहुत बड़े पैमाने पर सा सहयोग और सद्भाव की आवश्य होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्था पूंजीपति या राजनीतिक दल से सं नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रका सहायता स्वीकार करती है. यह एक ही वर्ग की सहायता और बलबू निर्भर है. और वह हैं सरिता के इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्सा सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ ले

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी सरकार का और देशी व वि

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

(पृष्ठ 43 से आगे)

ईस्ट कंपनी और डच वेस्ट इंडिया कंपनी के मालिक थे. अमरीका के न्यूयार्क नगर का पहला नाम न्यू ऐम्सटर्डम इसी के नाम पर था, क्योंकि यहीं से जाने वाला एक अंगरेज वहां पर पहुंचा था.

ऐम्सटर्डम नगर कई बार आग लगने से नष्ट हो कर पुनः बसाया गया है. 16वीं सदी में स्पेन ने इस पर कब्जा कर लिया, 18वीं सदी में फ्रांस ने और द्वितीय विश्वयुद्ध में जरमनी ने. लेकिन इन सभी विपत्तियों को झेल कर भी यह नगर पुनः स्वाधीन हो गया. यह इस के निवासियों के आत्मबल का ही फल है.

नीदरलैंड विकसित देश है. इस ने केनिया और युगांडा से भगाए गए प्रवासियों में से कुछ को अपने यहां बस जाने की अनुमति दी, जब कि अन्य देशों ने मना कर दिया था. द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जरमनी में सताए गए बहुत से यहूदी भी यहां आ कर बस गए. उन्होंने यहां के व्यापार को बढ़ाने में योग[illegible] किया है.

मशहूर उद्योग

ऐम्सटर्डम हीरे के उद्योग के लि[illegible] मशहूर है. यहां हीरे की कटाई और पालि[illegible] के प्रमुख केंद्र हैं. अनेक नहर जल[illegible] उपलब्ध होने के कारण व्यापार के लि[illegible] यातायात सुलभ है और माल ढोने वाले [illegible] की यहां बहुत कंपनियां हैं, जो सारे यूरो[illegible] माल पहुंचाती और वहां से लाती हैं. इस[illegible] की सरलता भी निराली है. यहां की [illegible] जुलियाना कभीकभी साइकिल पर घूमती [illegible] दिखलाई पड़ती है. ट्यूलिप के फूलों [illegible] बाजार और नुमाइश रातभर खुले रह[illegible] और रानी भी उसी दुकान से ट्यूलिप क[illegible] खरीदती हैं, जिस से अन्य नागरिक ख[illegible] हैं.

यहां अत्याधुनिक रंगशालाएं रात [illegible] चहकती हैं. ऐतिहासिक विरासत को लिए [illegible]

ऐम्सटर्डम नगर आग लगने से कई बार नष्ट हो चुका है, पर जब भी इसे पुनः बसाया ग[illegible] इस का सौंदर्य और भी निखर उठा.
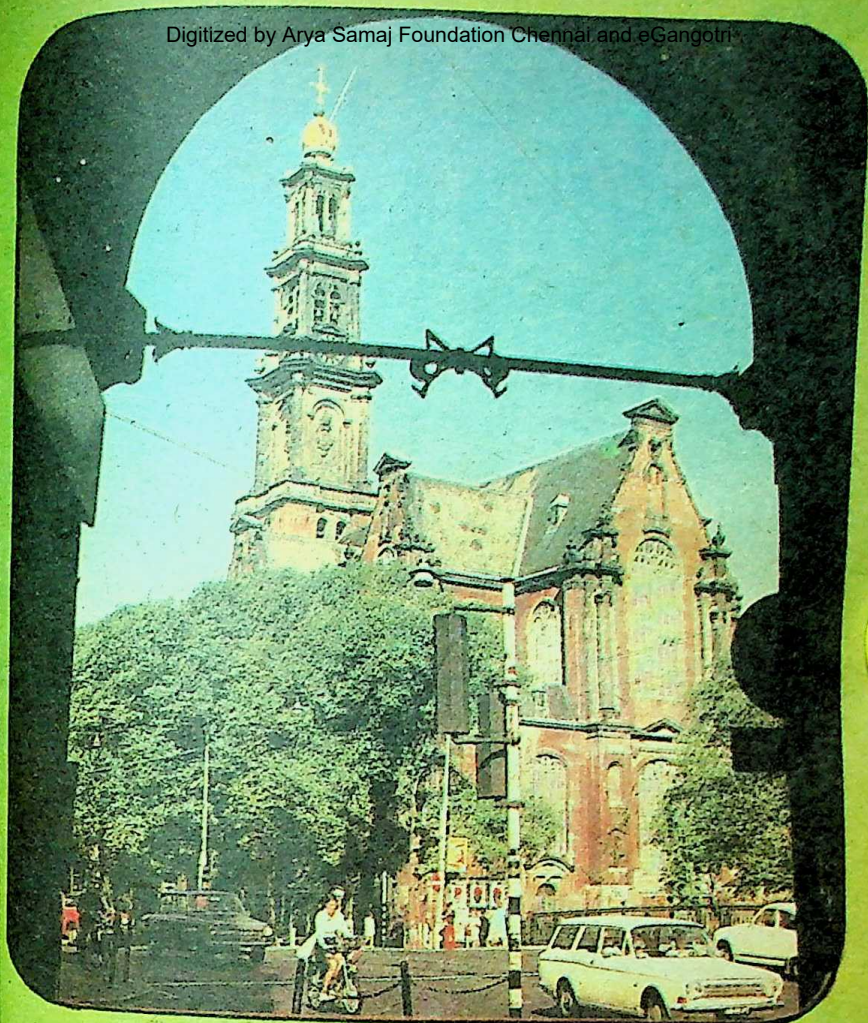
706 वर्ष पहले ऐम्सटर्डम एक दलदली स्थल था, परंतु अब इस के सौंदर्य में लगातार वृद्धि होती जा रही है.

यह अनोखा नगर मैत्री, सहिष्णुता, उदारता से भरा सार्वदेशिक नगर है, जहां अनेक देशों के प्रवासी शांतिपूर्ण और मैत्री के वातावरण में रहते हैं. इस नगर की प्रगति में सभी योगदान करते हैं. यहां के मूलवासी दूसरे देशवासियों को बहुत पसंद करते हैं. सदियों से विदेशी इस नगर के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकारे जाते रहे हैं. इस नगर में अपराध व हिंसा की घटनाएं अधिक नहीं होतीं. यहां के लोग अनेक भाषाओं को जानते और बोल लेते हैं, उन में अंगरेजी के प्रति पूर्वाग्रह नहीं है. बच्चों के देखने के लिए यहां एक मनोरंजक आकर्षण है– नन्हा नगर माडूरोडम, जिस में नन्हेनन्हे मकान हैं.

इतिहास, संस्कृति, कला, प्राकृतिक सौंदर्य और व्यापार तथा शांति और सद्भाव से पूर्ण यह नगर एक अनोखा अनुभव प्रदान करता है, जो और कहीं नहीं मिलता. •
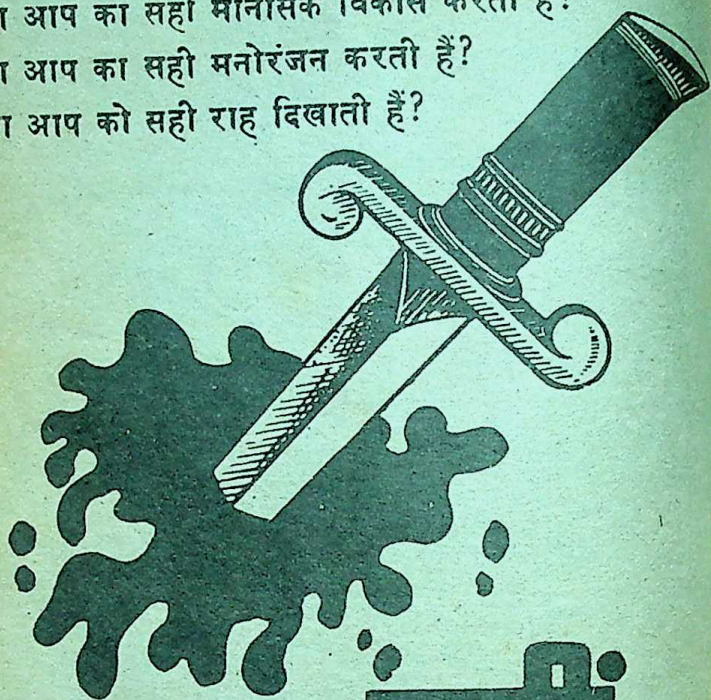
इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.
भेजने का पता: शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ऐसे भी होते हैं पुलिस वाले

पुलिस वाले सहृदय भी होते हैं, इस का प्रमाण देने वाली एक घटना त्रिवेंद्रम में प्रकाश में आई है.

घटना इस प्रकार है कि एक पोलियोग्रस्त लड़की अपनी मां के साथ बस में बैठ कर अपने विशेष जूते बनवाने मेडिकल कालिज जा रही थी. अचानक उस का पर्स गुम हो गया. ड्राइवर बस को सीधे थाने में ले गया, लेकिन पर्स नहीं मिला.

यह पैसा उक्त लड़की के जूतों के लिए था. पुलिस वालों ने अपनी सहृदयता का परिचय दिया और आपस में चंदा कर के 83 रुपए उस लड़की को दिए.

—नवभारत दैनिक, रायपुर (प्रेषक : मोहम्मद शौकत अली) (सर्वोत्तम)

*

शराब बेचने के लिए जगह किराए पर न मिली

जयपुर की बस्सी तहसील के जागवाड़ा गांव का कोई भी व्यक्ति अपना मकान शराब की दुकान के लिए किराए पर देने को तैयार नहीं हुआ.

कहा जाता है कि जब शराब का ठेकेदार तांगे में शराब की बोतलें भर कर वहां पहुंचा और अपने ठेके के स्थान नयावास में माल रखने लगा तो दुकान के मालिक ने जगह देने से इनकार कर दिया.

गांव के अन्य लोगों ने भी यही रुख अपनाया.

मजबूर हो कर ठेकेदार निकट के मीठावास गांव में गया, लेकिन वहां भी उसे निराशा हाथ लगी.

निराश हो कर ठेकेदार को अपना सारा सामान वापस ले जाना पड़ा.

—नवभारत, नागपुर (प्रेषक : नरेश गनेडीवाल)

*

मां की खातिर जान दे दी

जालंधर के नवांशहर में 15 वर्षीय लड़के राजू ने अपनी मां की जान बचाने के लिए अपनी जान दे दी.

बताया गया है कि भीषण तूफान के कारण दूरदर्शन का तार चारा काटने की मशीन पर जा गिरा, उस में करंट था. जब राजू की मां का हाथ मशीन से लगा तो वह करंट कह कर जोर से चिल्लाई.

शोर सुन कर लड़का भागाभागा आया और उस ने मां को धक्का दे कर वहां से हटाया, लेकिन करंट लगने से खुद मर गया.

—वीरप्रताप, जालंधर (प्रेषक : सतीश मलिक)

महिला रोजगार

विज्ञापन लेखन

लेख • प्रतिनिधि

आज का युग विज्ञापन का युग है. विज्ञापन व प्रचार के अभाव में औद्योगिक विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती. औद्योगीकरण की प्रक्रिया के साथसाथ विज्ञापन व्यवसाय भी प्रगति कर रहा है और इस में काम की संभावनाएं काफी बढ़ गई हैं. इस समय देश भर में 144 मान्यता प्राप्त (आई. ई. एन. एस. द्वारा) विज्ञापन एजेंसियां हैं, जो प्रतिवर्ष लगभग 40 करोड़ रुपए का व्यापार करती हैं. ये एजेंसियां दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास, पुणे, अहमदाबाद तथा अन्य बड़े शहरों में हैं. हर एजेंसी की कई शहरों में शाखाएं हैं और इस के प्रतिनिधि देश भर के व्यवसायियों और उद्योगपतियों से संपर्क रखते हैं. ये एजेंसियां विभिन्न माध्यमों—जैसे समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, सड़कों व सार्वजनिक स्थलों पर विज्ञापन पट्ट आदि से अपने ग्राहकों के उत्पादनों या क्रियाकलाप का प्रचार करती हैं.

कई उद्योगों, कंपनियों तथा व्यावसायिक समूहों की अपनी निजी विज्ञापन एजेंसियां भी हैं.

विज्ञापन एजेंसियां विज्ञापनों को हर दृष्टि से रोचक और आकर्षक बनाने की कोशिश करती हैं और इस कोशिश में सब से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं—विज्ञापन लेखक (कापी राइटर), माडल और कमर्शियल आर्टिस्ट. इन लोगों की कुशलता पर ही विज्ञापन की सफलता निर्भर होती है.

विज्ञापन लेखक, माडल और कमर्शियल आर्टिस्ट के काम महिलाओं के

भाषा पर अच्छा अधिकार होने के साथसाथ यदि आप कल्पनाशील हैं और मौलिक चिंतन कर सकती हैं तो आप इस व्यवसाय में सफलता हासिल कर सकती हैं.
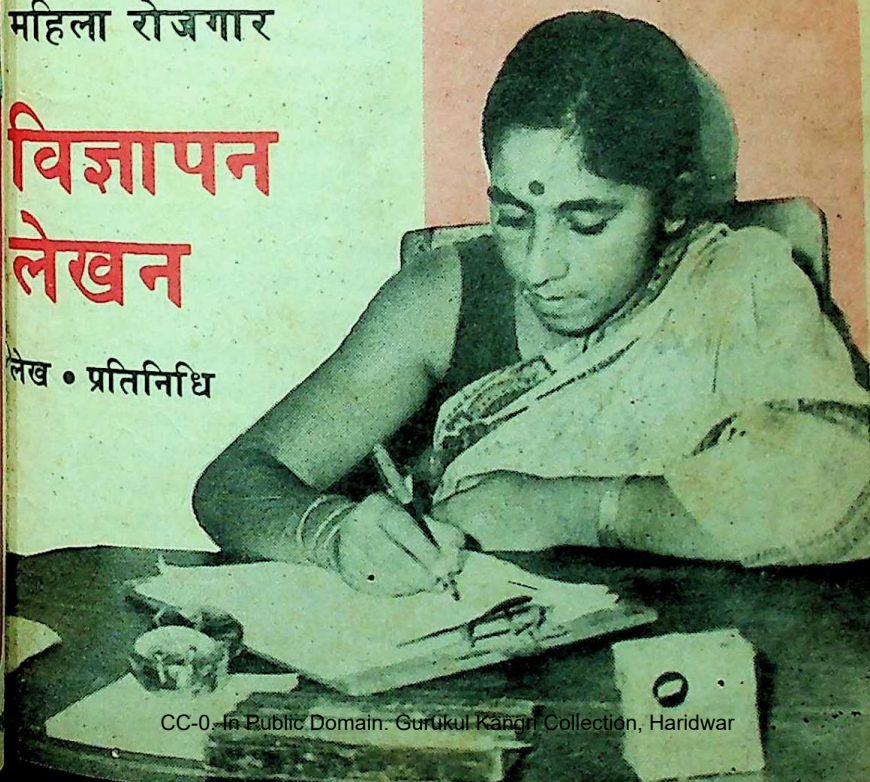
लिए काफी अनुकूल हैं. अधिकांश विज्ञापन एजेंसियां अब इन कामों के लिए महिलाओं को प्राथमिकता दे रही हैं.

ये तीनों ही व्यवसाय महिलाएं स्वतंत्र रूप से भी कर सकती हैं और किसी विज्ञापन एजेंसी में नियुक्त हो कर भी. वैसे इन व्यवसायों के अधिकांश लोग स्वतंत्र रूप से ही काम करते हैं.

यहां हम केवल विज्ञापन लेखक के बारे में ही जानकारी दे रहे हैं.

विज्ञापन लेखक की विशेषताएं

विज्ञापन लेखक का काम विज्ञापन लिखना होता है. क्या आप में विज्ञापन लिखने की योग्यता है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए आप हिंदी और अंगरेजी के, और हो सके तो अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के भी, सौ दो सौ विज्ञापन पढ़ डालिए. उन की भाषा और लेखन शैली को ध्यान में रख कर कुछ उत्पादनों के 40-50 विज्ञापन अपने ढंग से तैयार कीजिए. अपने तैयार किए हुए विज्ञापन स्वयं भी तटस्थ दृष्टि से देखिए और अन्य अनुभवी व बुद्धिजीवी व्यक्तियों को भी दिखाइए. इस के बाद आप निर्णय कर सकेंगी कि आप में विज्ञापन लिखने की योग्यता है या नहीं.

आत्मनिरीक्षण के बाद यदि आप को लगे कि आप विज्ञापन लिखने में समर्थ हैं और आप के लेखन में ग्राहकों का ध्यान खींचने की सामर्थ्य है तो आप इस व्यवसाय को चुन सकती हैं.

विज्ञापन लेखक को भाषा पर अधिकार के अलावा किसी डिगरी आदि की आवश्यकता नहीं. हिंदी या क्षेत्रीय भाषा के अलावा अंगरेजी का ज्ञान आवश्यक है. यदि आप की लेखन में रुचि है और आप की रचनाएं विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं तो आप को इस व्यवसाय में आने में ज्यादा सुविधा रहेगी.

इस व्यवसाय में प्रवेश के लिए किसी विज्ञापन एजेंसी से संपर्क कीजिए. उसे अपना प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य दिखाइए और नमूने के तौर पर प्रकाशित व प्र... होने योग्य कुछ विज्ञापन भी लिख... दिखाइए.

विज्ञापन एजेंसी को यदि आ... विज्ञापन लिखने का ढंग पसंद आ... परीक्षण के तौर पर वह आप से कुछ... करवा सकती है. बहुत सी एजें... प्रशिक्षणार्थी (कापी ट्रेनी) के तौर पर र... पहले काम देखती हैं और सिखाती भी हैं... प्रशिक्षणार्थी बन कर कुछ दिन तक... सीख लिया जाए तो इस व्यवसाय में... संभावनाएं बढ़ जाती हैं.

प्रारंभ में विज्ञापन लेखक की आय... मामूली (300-400प्रति माह)होती है... बाद में वह स्वतंत्र रूप से काम करते... 1,000 से 3,000 रुपए तक प्रति माह... सकती है. यदि विज्ञापन एजेंसी में उ... नियमित नियुक्ति होती है, तब भी... 1,000 से 3,000 और कभीकभी पांच हजार रुपए तक वेतन मिल सकता है.

विज्ञापन का कार्य करने वाले व्यक्ति... जीवन को समझने के लिए हम ने 'इ... विज्ञापन एजेंसी की विज्ञापन लेखिका... कार्यकारी प्रमुख श्रीमती अर्चना फर्ना... 'प्रभु' से बातचीत की.

अर्चना हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार सुदर्शन की पोती हैं. उन्होंने सेंट जे... कालिज, बंबई से अंगरेजी साहित्य में... (आनर्स) किया है.

''विज्ञापन लेखन के व्यवसाय में... कैसे आ गईं?''

इस बात के जवाब में अर्चनाजी ने... ''घर में आंख खोलते ही लिखनेपढ़ने... माहौल मिला, जिस से मुझे लेखन की... मिली. पर मैं ने हिंदी में नहीं अंगरेजी... लिखना शुरू किया. मेरी रचनाएं कालिज... पत्रिकाओं में छपती रहीं. उन्हीं... 'क्लेरियन' विज्ञापन एजेंसी से संपर्क... और मैं 'कापी ट्रेनी' के तौर पर काम... लगी.

''1971 में मैं अय्यर विज्ञापन एजें... वरिष्ठ 'कापी राइटर' के रूप में नियुक्त...

यहां कुछ ही महीने काम करने के बाद कुछ व्यक्तिगत कारणों से मुझे दिल्ली आना पड़ा.

"दिल्ली में ए. एस. पी. विज्ञापन एजेंसी ने मेरे सामने काम का प्रस्ताव रखा. जिसे मैं ने स्वीकार कर लिया. यहां मैं ने दोढाई साल तक काम किया."

अर्चनाजी का कहना है कि महिलाओं को जीवन में चुनौतियों से नहीं डरना चाहिए. उन्होंने घर और बाहर दोनों ही क्षेत्रों में चुनौतीपूर्ण जीवन को प्राथमिकता दी. बाहर उन्होंनें ऐसा व्यवसाय चुना, जिस में उस समय सीमित संभावनाएं थीं और घर बसाने के लिए अंतरजातीय विवाह को प्राथमिकता दी.

उन्होंने बताया, "1972 में मेरा श्री डैरिक फर्नानडिस से विवाह हुआ. वह ईसाई हैं और मैं ब्राह्मण, पर धर्म और जाति का प्रश्न कभी भी हमारे लिए समस्या नहीं बना. मुझे अंगरेजी में शिक्षा जरूर दी गई थी, पर हमारा परिवार पूरी तरह रूढ़िवादी था, इसलिए हम सोचते थे कि अंतरजातीय विवाह से शायद समस्याएं खड़ी होंगी, पर ऐसा हुआ नहीं. हम पतिपत्नी दोनों ही काफी प्रगतिशील हैं और धर्म हमारे बीच कभी आड़े नहीं आया. मैं तो कहूंगी कि इस व्यावसायिक क्षेत्र के ज्यादातर लोग प्रगतिशील होते हैं. आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि विज्ञापन व्यवसाय में लगी 80 प्रतिशत महिलाओं ने अंतरजातीय विवाह किए हैं."

"एक महिला होने के कारण काम करते हुए आप को समस्याओं का सामना तो नहीं करना पड़ता?"

"कुछ समस्याएं तो पैदा होती हैं जैसे दफ्तर का काम देखने के साथसाथ परिवार को भी खुश रखना पड़ता है. थोड़ी सूझबूझ से काम लें, घर में बच्चों की देखभाल की उचित व्यवस्था कर दें तो परिवार संबंधी समस्याएं पैदा नहीं होंगी. मेरे दो बच्चे हैं—एक पांच वर्ष का और दूसरा तीन महीने का. मैं पूरी कोशिश करती हूं कि मेरे बाहर रहने के कारण उन्हें किसी किस्म की परेशानी न हो."

चाहे उम्र कुछ भी हो, यदि आप आकर्षक लेखन कर सकती हैं तो इस क्षेत्र में सफल हो सकती हैं.

"विज्ञापन लेखक में क्या खूबी होनी चाहिए?"

इस बात के जवाब में अर्चनाजी ने कहा, "पहली बात तो भाषा पर, खास तौर से, अंगरेजी भाषा पर अच्छा अधिकार होना चाहिए. इस के साथ ही मौलिक चिंतन, कल्पनाशीलता और गहन सामान्य ज्ञान का होना जरूरी है. 'मार्केटिंग' और उपभोक्ताओं के मनोविज्ञान की भी अच्छी समझ होनी चाहिए."

अर्चनाजी ने बताया, "महिलाओं के लिए इस व्यवसाय में अच्छे अवसर हैं. पहले लोग सोचते थे कि पता नहीं महिलाएं यह काम कर सकेंगी या नहीं, पर हम ने उन्हें अच्छा काम कर के दिखाया और महिलाओं के प्रति जो आशंकाएं लोगों के मन में थीं, उन्हें दूर किया.

"अब लोग समझने लगे हैं कि महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा ईमानदार, मेहनती और जिम्मेदार होती हैं, इसलिए बहुत से कार्यक्षेत्रों में उन्हें पसंद किया जा रहा है." •

"देखो, वह आ रहा है साला."

"कौन?" मोहन बाबू ने चौंक कर उधर देखा, जिधर मैं ने इशारा किया था.

"अरे, वही अवध शरण."

"हां, आ तो रहा है, कमबख्त. जल्दी से चाय खत्म कर के पैसे चुकाओ वरना एक चाय के पैसे और..."

मोहन बाबू अपनी बात भी नहीं खत्म कर पाए और वह लंबेलंबे डग रखता हुआ खोपड़ी पर आ खड़ा हुआ और अपनी पुरानी आदत के अनुसार अपने पीलेपीले दांत निपोर कर बोला, "अच्छा तो चाय पी जा रही है. तभी दफ्तर में कुरसी खाली थी. मैं ने सोचा कि कहां गए सब के सब. यार, काम करतेकरते सचमुच थकान भी हो जाती है. 10 बजे आ कुरसी पर बैठो तो..."

फिर बात अधूरी छोड़ कर के वह [illegible] वाले से बोला, "देना यार, एक कप [illegible] भी."

मैं जानता था कि यह चाय भी हमारी जेब पर पड़ेगी. मन में तो आया कि पूछूं उसे हमारी क्या जरूरत थी जो वह हमें [illegible] फिर रहा था? पर मैं ने कुछ न पूछना उचित समझा. क्योंकि पूछने का मतलब उस से और ज्यादा उलझना. अभी हमें [illegible] भी खाने थे, वह उस में भी शामिल हो जाता. इस से मोहन बाबू ने जेब से पैसे निकाल कर चुकाए और हम चलने को हुए. तभी उस ने पूरी चाय प्लेट में डाल ली और सुड़कसुड़क कर जल्दीजल्दी पी गया. पीने के बाद वह [illegible]

कहानी • छाया श्रीवास्तव

कमीना
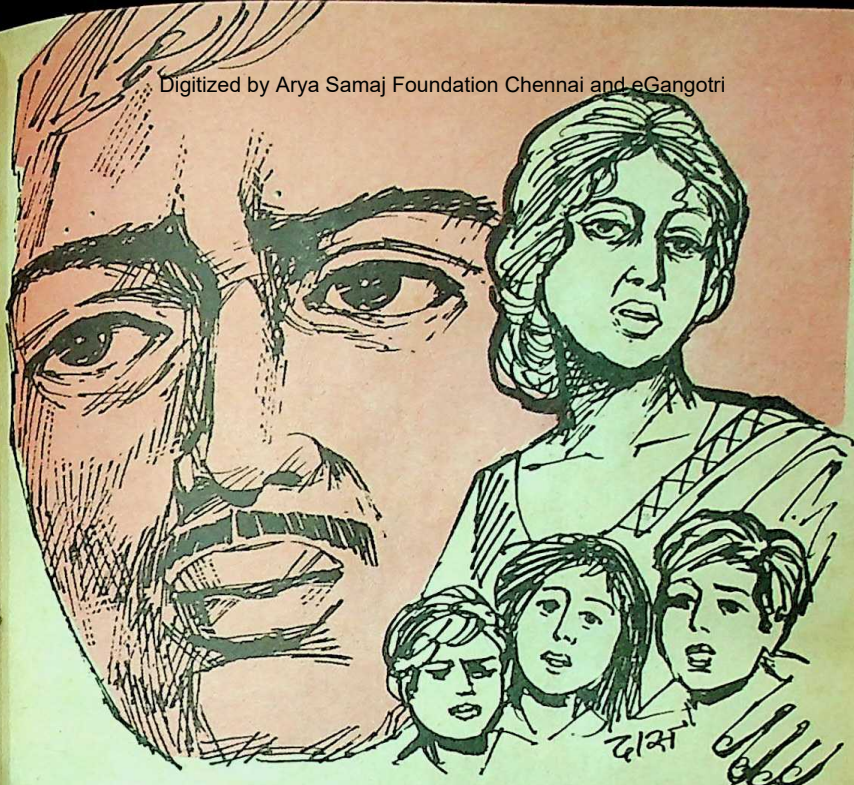
पूरे दफ्तर में ऐसा कोई कर्मचारी शायद ही बचा हो जिस से अवधशरण ने रुपए उधार न ले रखे हों. मगर तब भी लोग बजाए उस से किनारा करने के उसे और भी आर्थिक सहयोग देने को तैयार क्यों रहते थे?

"यार, मेरे भी पैसे दे देना. मैं अपना पर्स घर ही भूल आया हूं. क्या बताऊं, चलते समय कुछ याद ही नहीं रहता."

मन में आया कि बेशर्म से कह दूं कि पर्स तुम्हारे पास है भी जो भूल आए. पर मन मार कर रह गया. मुझ से तो शराफत ताक पर रखते नहीं बनती. मोहन बाबू ने उस की चाय के पैसे भी चुका दिए. मैं समझ गया कि अब पान के भी पैसे भुगतने पड़ेंगे. जैसे ही हम पान की दुकान के निकट खड़े हुए, वह भी पीछेपीछे चला आया. हमें झख मार कर उसे पान खिलाना ही पड़ा.

यह आज का ही नहीं लगभग रोज का काम था उस का. कभी पर्स भूलने का बहाना तो कभी छुट्टे पैसे न होने का बहाना, पूरा दफ्तर तंग था उस की इस आदत से. बाबू से ले कर चपरासी तक से उस ने उधार ले रखा था. तनख्वाह मिलने पर भी उस का हमेशा एक ही रोना होता कि पास में एक पैसा भी नहीं है. पता नहीं वह सारी तनख्वाह कहां खर्च करता था. न जाने कितना बड़ा परिवार था उस का. जहां देखो वहां उधार.

बनिए के यहां तो उस का कईकई महीनों का उधार रहता था. घर का किराया भी वह वर्षों से नहीं चुका पाया

था. आए दिन मकान मालिक से झगड़ा होता रहता था. दूध भी उधार पर ही चलता था. अकसर पहली तारीख को बनिया, मकान मालिक, दूध वाला और भी अड़ोसपड़ोस के लोग आ खड़े होते.

पहले तो मैं ने उस की उधार मांगने की इस हरकत पर उसे कई बार डांटाफटकारा, परंतु अगले ही दिन से उस ने मुझ से ही उधार मांगना शुरू कर दिया. लोग तो यहां तक कहते थे कि उधारी में वह यहां तक पुर गया है कि वह आजीवन कर्जा नहीं चुका सकता. इस से हम सब लोग उस से कतराते रहते थे. पर वह था कि अपने साथियों से जोंक सा चिपके रहना चाहता था. एक तो बाबुओं को तनख्वाह ही कितनी मिलती है जो अपना पेट काट कर दूसरों को उधार दें?

एक बार वह कई दिन तक दफ्तर नहीं आया. जब आया तो अजीब हुलिया था उस का. मैले कपड़े, बिखरे बाल और बढ़ी हुई दाढ़ी. चढ़ीचढ़ी आंखें, जैसे कई रात से सोया न हो. वह थकाथका सा अपनी सीट पर आ बैठा और कागज पर जल्दीजल्दी कुछ लिखने लगा. मुझे चैन नहीं पड़ा. आखिर साथ ही काम करता था. सोचा, पता नहीं बेचारे पर क्या विपत्ति आई हो.

"अरे, अवधशरण, कहां रहे इतने दिन?"

"क्या बताऊं यार, बड़ी मुसीबत में रहा. बस, एक मिनट, यह अर्जी पूरी कर लूं तो बताऊं."

वह फिर लिखने में जुट गया. फिर पांच मिनट बाद उस ने वह कागज मोड़ कर जेब में रख लिया और मुझ से मुखातिब हुआ.

"यार, तीन दिन से सारा घर बीमार पड़ा है. बच्चों को चेचक निकल आई है. और उन की मां के कमर में फोड़ा निकल आया. कई रातों सो नहीं पाया. एक बच्चे की हालत तो बहुत बिगड़ गई थी. बड़ी कठिनाई से हालत सुधरी. कई बार डाक्टर को बुलाना पड़ा. दिन भर घर से हस्पताल और हस्पताल से घर के चक्कर लगाता रहा. खाना भी खुद ही बनाना... इसी लिए 15 दिन की छुट्टी ले रहा हूं... बच्चों को ठीक होने में बहुत समय... दस ही दिन में पूरी तनख्वाह स्वाहा हो... घर में एक पैसा भी नहीं है कि आगे... चले. खाने को चुटकी भर आटा तक नहीं... कैसे क्या होगा, राम बाबू, समझ में नहीं... रहा है. तुम्हारा जीवन भर उपकार मा... यदि मुझे सौ रुपए दे दो." वह गिड़गि... हुआ बोला.

सुनते ही गुस्सा भी आया और दया... पर मेरे पास थे कहां जो मैं दे देता.

"मेरे पास तो यहां 10 रुपए भी... हैं." मैं बेबाक बोला.

"तो घर चला चलूं?"

"अरे, नहीं यार, घर में भी क्या होगा? हमारा अपना खर्च पूरा नहीं पड़...

"सो तो है ही. पर मुझे सौ रुप... सख्त जरूरत है. तुम कहीं से दिलवा दो यार. यह मैं..."

उस ने कातरता से मेरे हाथ पकड़ लि... ने देखा, उस के दोनों नेत्र तर... आए थे. फिर भी मैं कड़ा बना रहा. ... "तुम खुद ही मांग लो न किसी से." ... अपना हाथ छुड़ा लिया.

"कोई नहीं देता दोस्त, मुसीबत में ... साथ नहीं देता. सच कहता हूं, तन... मिलते ही पैसे तुम्हारे हाथ पर रख दूं..."

"पर, मेरे पास नहीं हैं."

"जरूर होंगे राम बाबू. भाभीजी ... कुछ बचा कर रखती होंगी. मैं तुम्हारे सा... चलूंगा. मैं यह अर्जी दे कर थोड़ी देर में ... हूं." कह कर वह चला गया.

मैं न चाहते हुए भी फंस रहा था. ... भी सोच लिया था कि यहां से छुप कर ... जाऊंगा और पत्नी से पहले ही बहाना ... कर के टालने को कह दूंगा. मैं दफ्तर से ... की अपेक्षा जल्दी बाहर निकल आया. ... साइकिल ले कर चला कि वह न जाने ... कोने से निकल कर साथ हो लिया. मैं ... मन मसोस कर रह गया

"बात यह है कि मैं सुरेंद्र को गोद लेना चाहता हूं." जैसे ही अवधशरण ने कहा, मैं यकायक चौंक गया.

घर आ कर मैं ने पत्नी को अच्छी तरह समझा दिया था कि किसी भी प्रकार रुपए देने के लिए हां न करे. परंतु हुआ वही जिस का मुझे भय था. पत्नी के आगे वह ऐसा रोना रोया, ऐसी दीनता दिखलाई कि मेरी तरह पत्नी भी द्रवित हो गई और आखिर उस ने सौ रुपए दे ही दिए. बाद में हम दोनों के बीच घंटों चखचख हुई. मैं मन ही मन सोच चुका था कि तनख्वाह मिलते ही वापस ले लूंगा.

दूसरे दिन दफ्तर जा कर जो कुछ पता लगा, उस से तो मैं स्तब्ध रह गया. वह कमबख्त केवल मुझ से ही रुपए नहीं ले गया था, बल्कि मोहन बाबू तथा अन्य कई बाबुओं से भी 100-100, 50-50 कर के उधार ले गया था. सब से यही कह गया था कि तनख्वाह मिलते ही सब के पैसे लौटा देगा. मैं तो क्या, वे सब के सब उसे जम कर कोस रहे थे. भला 450-500 रुपए में वह किसकिस का कर्जा चुकता करेगा? हम यही सोच कर चिंतित हो रहे थे. फिर भी हम सब आशा की डोर से बंधे पहली तारीख का इंतजार कर रहे थे.

और जब पहली तारीख आई तो उस ने एक चपरासी के जरिए अपनी तनख्वाह मंगा ली.

इस बार भी हम सब हाथ मलते रह गए थे. सोचा था, बच्चू जाएगा कहां, छुट्टी खत्म होते ही जिस दिन आएगा उस दिन देख लेंगे. जिस दिन वह आया, सब ने उसे गिद्धों की तरह चारों ओर से घेर लिया. परंतु धन्य है

वह. सब के ताने और फटकार सहज ही झेल गया. फिर वही आश्वासन की बूटी पिला गया कि अगले माह जरूर सब का कर्ज उतार देगा. लेकिन ऐसा कभी हुआ नहीं. कभी कोई अपना पैसा लेने के लिए अड़ जाता या गालीगलौज पर उतर आता तो वह स्वयं भी लड़नेमरने को तैयार हो जाता. बहुत बकझक के बाद उसे पांच रुपए देता और साफ कह देता, "जब पैसा होगा तो दूंगा. क्या बालबच्चों को भूखा मार डालूं या जहर दे दूं? अगर सब का उधार चुकाने लगूं तो मैं क्या खाऊंगा और क्या बच्चों को खिलाऊंगा."

ऐसे ही एक साल गुजर गया. हम सब रुपए वापस मिलने की आशा छोड़ चुके थे, मैं सोच रहा था कि चलो सौ रुपए से ही छुट्टी मिली. अब कम से कम आगे उधार मांगने का उस का मुंह तो नहीं है.

दफ्तर भर में कोई ऐसा नहीं बचा था, जिस से उस ने कर्जा न लिया हो. एक बार तो दफ्तर में तमाशा ही बन गया. हुआ यह कि उस ने कई नए शिकार फांस लिए. कई लोगों को यह लिख कर दे दिया कि पहली तारीख को तनख्वाह मिलते ही वे लोग अपनेअपने पैसे ले लें. तनख्वाह मिलने के दिन लोग अपनेअपने पर्चे ले कर पैसे लेने आ पहुंचे.

इस बार उस की एक भी चाल नहीं चल पाई. सब उस की चाल समझ गए थे इसलिए परछाई की तरह साथ ही लगे थे. जैसे ही उस ने वेतन लिया, सब ने चारों ओर से उसे घेर लिया. इस छीनाझपटी में कई नोट टुकड़ेटुकड़े हो गए. मुशकिल से एकदो का ही कर्जा चुकता हो पाया. जो रह गए वे मारपीट पर उतर आए. गालियां तो वह रोज ही खाता था. उस दिन एक ने कालर पकड़ कर धक्का दे कर कहा, "कमीने, अगर अगले महीने हमारे रुपए नहीं लौटाए तो जान से मार दूंगा. हमारी रकम हजम नहीं कर पाओगे."

वह हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाता हुआ भाग छूटा था. हम ने भी सोच लिया था कि वह इंसानियत से गिर गया है. सब उसे 'कमीना' कहने लगे थे. मैं भी यही सोचता था कि वास्तव में वह कमीना है. एक बार ऐसे ही गुजर गया. तभी हम ने सुना कि अपने भविष्य निधि खाते का रुपया निकाल रहा है, क्योंकि उसे अपने लड़के व लड़की की शादी करनी है. मैं ने निश्चय कर लिया इस बार अपने रुपए वसूल कर ही लूंगा. उस के घर के चक्कर लगाने शुरू किए परंतु वह घर पर मिलता ही नहीं. जब जाता, बच्चे कह देते कि वे 'घर पर नहीं' फिर सुना वह एक माह की छुट्टी ले अपने गांव चला गया है. हम लोग फिर मलते रह गए.

सोचा कि अब उस के लौटने पर निबटेंगे. जब भविष्य निधि खाते से निकलवाया है तब कर्जा क्यों नहीं चुका माना लड़की की शादी में रुपया लगा परंतु लड़के की शादी में तो बच्चू ने रकम ली होगी.

और एक दिन मैं मोहन बाबू कैलाश बाबू के साथ उसके घर पहुंचा. वहां का नजारा ही बेजोड़ था. मकान मालिक से ले कर बनिया, दूध वाला, धोबी नाई तक अपनेअपने पैसों के लिए वहां हल्ला मचा रहे थे, वे शायद उस की घरवाली से लड़ रहे थे क्योंकि वह कमबख्त तो नहीं कहां जा बैठा था. उस की पत्नी के जवाब नहीं था. वह भी हाथ मटकामटका कर लड़ रही थी. साथ ही उस के छः बच्चे भी थे. पड़ोसी खड़े तमाशा देख रहे थे.

हमें देखते ही उस का बड़ा लड़का दौड़ा आया. वह शायद हमें पहचानता करीब 18 वर्ष की उम्र थी उस की. उस की 15 वर्ष की हाल की ब्याही बहन थी. हमें आश्चर्य हुआ कि इतनी छोटी उम्र ही उस की शादी करने की क्या आवश्यकता थी. फिर सोचा कि चलो लड़की की शादी दी, ठीक ही हुआ. लेकिन फिर लड़के की कर ली? वह न कहीं पढ़ता था और न नौकरी करता था.

हम सोच ही रहे थे कि वह अपनी कुछ कह कर हमारी ओर दौड़ता हुआ

"नमस्कार, आइए, चाचाजी."

"क्यों तुम्हारे बाबूजी कहां हैं?"

"वह तो बाजार गए हैं."

"अच्छा, तो हम चलते हैं. आएं तो बता देना कि मोहन बाबू, कैलाश बाबू और राम बाबू आए थे."

"नहींनहीं, ऐसे मत जाइए, आइए न. चाय पी कर जाइएगा. अम्मां भी यही कह रही हैं."

किचकिच में उलझने का हमारा मन नहीं था, परंतु उस लड़के के आग्रह को हम टाल नहीं सके. उस की मां भी माथे तक धोती खींच कर पास आ गई. फिर विनम्र स्वर में बोली, "आइए न आप लोग. जब यहां तक आए ही हैं तब बैठिए न, थोड़ी देर."

शायद वह इस बहाने तकाजे वालों से छुटकारा पाना चाहती थी और हुआ भी यही. तकाजे वाले और पड़ोसी हमें देख कर चले गए.

सुरेंद्र बड़ी उमंग से हमें बैठक में ले गया, परंतु उस सीलन भरी बैठक में दो टूटी हुई कुरसियां और एक मूंज की झूलती सी खाट ही पड़ी थी. उस पर एक मोटी सी चीकट भरी दरी बिछी थी.

"बैठिए."

हम कुरसी और खाट पर धंस गए.

"मुन्नी, चाय तो बना."

मां का आदेश सुनते ही बड़ी लड़की भीतर दौड़ गई और बड़ा लड़का गिलास ले कर बाहर भागा. हम समझ गए कि वह दूध लेने गया है. बाकी बच्चे हमें हैरानी से झांकझांक कर देख रहे थे.

"अवधशरणजी क्या बाहर गए हैं?"

"यद्यपि अभी मेरी सगाई ही हुई है, फिर भी भविष्य की सुरक्षा के लिए मैं इस संस्था की सदस्यता ग्रहण कर रहा हूं."

मोहन बाबू ने पूछ ही लिया.

"हां, बाजार गए हैं. असल में कल रात ही हम लोग गांव से लौटे हैं. घर में कुछ नहीं है, इसी लिए सौदा लेने गए हैं."

"एक बात समझ में नहीं आई कि जब आप का बेटा कहीं नौकरी नहीं करता, पढ़ा भी नहीं है और उम्र भी इतनी कम है फिर उस की इतनी जल्दी शादी क्यों कर ली?" मैं ने पूछा.

वह फीकी हंसी से हंस कर बोली, "असल में मुन्नी की शादी तय हो गई तो सुरेंद्र की तय करनी पड़ी. उस का जितना दहेज आया, मुन्नी को दे दिया. आप तो जानते हैं कि महंगाई कितनी है. भविष्य निधि खाते का जो रुपया निकाला था, वह भी खर्च हो गया. ऊपर से कुछ खेती की जमीन भी रेहन रखनी पड़ी."

"आजकल बड़ा परिवार होना अभिशाप है. आप लोगों में से एक को फौरन आपरेशन करा लेना चाहिए. आप का सब से छोटा बेटा अभी तीनचार वर्ष का ही तो दिखता है. अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है. ऐसा न हो कि सातवां अदद..."

कैलाश बाबू कहतेकहते अचानक खामोश हो गए, क्योंकि स्त्री का मुख लज्जा से लाल पड़ गया था. शरम के कारण उस ने आंचल से मुंह छिपा लिया, फिर हताश सी चारपाई के एक कोने की पाटी पर बैठती हुई अपनी तरल आंखें धोती के छोर से पोंछने लगी. हमें अचरज हो रहा था कि हमारी बात उसे बुरी क्यों लगी. तभी वह गला साफ कर के बोली, "ऐसा कह कर आप मुझे गाली क्यों दे रहे हैं? देखते नहीं, मेरी सूनी मांग. ये... ये... चूड़ियां तो मैं ने बेटे के नाम की पहन रखी हैं. इस के पिता की तो चार वर्ष पहले ही मृत्यु हो गई थी."

"क्या...?"

हम तीनों जैसे उछल ही पड़े. मैं संभल कर बोला, "तो... तो... अवधशरण..."

"वह... वह मेरे देवर हैं."

"और उन की पत्नी बच्चे."

"उन्होंने शादी ही कहां की है साब.

ऐसा देवता इंसान क्या दुनिया में ढूंढ़ कर ढूंढ़ने पर भी मिलेगा कभी, जो परिवार के लिए इतनी कुरबानी दे. कितनी ही जगह से रिश्ते आए, उन्होंने लौटा दिए. मैं कितना ही रोती गिड़गिड़ाती कि भैया हम लोगों के लिए अपनी जिंदगी बरबाद करो. उम्र रहते अपना घर बसा. परंतु उन्होंने तो शादी न करने की जैसे कसम ही खा ली है. कहते हैं, 'नहीं भाभी, जब तक सब बच्चे ठिकाने नहीं लग जाएंगे, मैं विवाह नहीं करूंगा. पता नहीं तुम्हारी देवरानी कैसी आए? फिर परिवार भी तो बढ़ने का डर है.' अब आप ही बतलाइए, तब क्या उन की विवाह करने की उम्र रह जाएगी? फिर कहां मिलेगी उन्हें विवाह योग्य लड़की? हमारी जाति में तो छोटी आयु में ही विवाह हो जाते हैं, अभी तो 30-35 के हैं, मिल जाएगी. इस से आगे कठिन है."

हम सब स्तब्ध से सुन रहे थे और वह कहे जा रही थी.

"पता नहीं कहांकहां से कर्ज ले कर सब का पेट भर रहे हैं. कर्ज नाक तक चढ़ गया है. देखदेख कर मेरा हृदय घबराता रहता है पर वह तो केवल इस धुन में रहते हैं कि किसी प्रकार परिवार का खर्च चलता रहे. ये बच्चे जी जाएं.

"भाई की बीमारी में उन्होंने अपनी सारी जमा पूंजी लगा दी थी. यहां तक कि जमीन भी बेच दी थी. थोड़ी बची थी सो गिरवी रख आए हैं. उस से छः माह के लिए अनाज मिल जाता था, वह भी गया."

तब तक चाय आ गई थी. पर वह केवल तीन प्यालों में थी. चाय शायद बाहर की थी. अदरक की सुगंध भी उसे छुपा नहीं पा रही थी.

"आप नहीं लेंगी चाय?" मैं ने किसी प्रकार पूछा.

"नहीं, घर में सिवा लालाजी के कोई नहीं पीता. आप लोग पीजिए."

उन प्यालों को देख कर जी मतलाने लगा... मुझे तो सुरेंद्र पार्...

दौड़ा आया. मन के एक कोने में हूक उठी कि व्यर्थ ही चाय पान पर खर्च कराया. शायद एक उधार और चढ़ गया होगा.

वहां से उठ कर बाहर आए और साइकिलों पर चढ़ कर हम चल दिए. रास्ते में हम लोगों में एकदूसरे से बात करने की हिम्मत शेष नहीं रही थी. शायद तीनों मन में सोच रहे थे कि जिसे अब तक हम 'कमीना' कहा करते थे, वह कमीना नहीं है बल्कि हम कमीने हैं. वह, वह तो देवता है.

उस दिन से हम ने अपने उधार दिए रुपए भुला दिए. यही नहीं दफ्तर में भी हम ने उन सब लोगों से उस की स्थिति बता दी, जिन से उस ने पैसे उधार लिए थे. बहुत से लोगों ने हमारे कहने पर रुपए मांगना छोड़ दिया.

अब हमें उसे दफ्तर में चाय पिलाने या पान खिलाने में जरा भी नहीं अखरता था. बल्कि अब मन में एक तुष्टि की भावना उभरने लगी थी. कुछ दिनों बाद हम लोगों ने महसूस किया कि वह दिनप्रतिदिन कमजोर होता जा रहा है और रोगी सा दीख रहा था. फिर भी वह अपना काम मुस्तैदी से करता था.

लगभग छः सात माह गुजर चुके थे. तभी किसी से मालूम हुआ कि वह बीमार पड़ गया है और एक माह की छुट्टी ले कर इलाज करवा रहा है. मैं रोज सोचता था कि उसे देखने उस के घर जाऊं, पर जा नहीं पाता था. ऐसे ही एक माह निकल गया. फिर सुना कि उस ने छुट्टी बढ़ा ली.

तब मुझे काफी चिंता हुई. उस का भतीजा भी नहीं दिखा था. शायद 11वीं की परीक्षा देने में व्यस्त था.

तभी एक दिन मैं कैलाश बाबू और मोहन बाबू को ले कर उस के यहां जा पहुंचा. मकान हमारे यहां से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर था.

वहां पहुंचने पर उसे देखा तो कलेजा मुंह को आ गया. वह उसी झूलती हुई खाट पर चीकट भरी दरी पर पड़ा था. लगता था प्राणहीन हो.एकदम मुहं पीला पड़ गया था. उस की दशा देख कर मन कसक उठा. दो माह में ही कैसी दशा हो गई थी उस की. मन शंकाओं से भर उठा. कमरे में दो कुरसियां ही शेष थीं. कैलाश बाबू और मोहन बाबू को मैं ने जबरन कुरसियों पर बैठा दिया और मैं स्वयं खाट की पाटी पर बैठ गया. खाट हिलते ही उस की तंद्रा भंग हो गई. उस ने नेत्र खोल कर हमारी ओर देखा.

उस के अधरों पर एक मधुर मुसकान आ गई. उस ने पूछा, "कब आए आप लोग?"

''आए तो अभीअभी हैं, परंतु यह तो बताओ कि तुम ने अपनी यह कैसी हालत कर ली? क्या हम लोग गैर थे जो अपनी बीमारी की भी सूचना नहीं दी?'' कैलाश बाबू उपालंभ भरे स्वर में बोले.

''क्या करता यार बता कर? वैसे ही ढेरों एहसान हैं तुम लोगों के इसलिए और परेशान करने का मन नहीं हुआ.'' वह विगलित स्वर में बोला.

''यही तो कैलाश बाबू कह रहे हैं कि तुम ने हमें गैर समझा,'' मोहन बाबू बोले.

''नहींनहीं भैया, यह बात नहीं है. तुम लोगों को छोड़ कर इतनी बड़ी दुनिया में कौन है मेरा? सोच ही रहा था कि सुरेंद्र को तुम लोगों के पास भेजूं, परंतु वह परीक्षा में लगा था. कल ही उस की परीक्षा खत्म हुई है.''

''परचे कैसे हुए उस के?'' मैं ने पूछा.

''उम्मीद है कि पास हो जाएगा. बेचारा पढ़ ही कहां पाया? परसों ही मैं हस्पताल से लौटा हूं. उस का एक पांव घर में और एक हस्पताल में रहता था. दूध, पथ्य ले कर वही तो दोनों समय हस्पताल जाता था. रात में भाभी को मेरे पास छोड़ कर पढ़ाई कर के सुबह परीक्षा देने जाता था. पूरा घर परेशान था, इस से मैं जबरन हस्पताल से चला आया. हस्पताल दूर है, रिक्शातांगे का खर्च अलग से था. बेचारी भाभी इतनी चिलचिलाती धूप में पैदल दौड़ी आती थीं.''

यह तुम्हें हो क्या गया अवधशरण? एकदम सूख गए हो. खाट पकड़ ली है?'' मैं अपनी शंका दबा नहीं पा रहा था.

उस ने क्षण भर हम सभी को कातर दृष्टि से देखा फिर गहरी उसांस ले कर बोला, ''दाद में खाज की मसल समझ लो भैया. गरीबी में आटा गीला इसी को कहते हैं. अब क्या बताऊं क्या रोग लग गया है.''

''वही तो जानना चाह रहे हैं हम.'' कैलाश बाबू बोले.

''तपेदिक बतलाई है डाक्टर ने.'' यह सुनते ही हम चौंक पड़े.

''यह... यह क्या कह रहे हो अवधशरण?'' हम तीनों लगभग एक साथ बोल पड़े.

''वही जो सच है. लगता है ... तरह मैं भी पूरे घर को कंगाल कर के ... भाभी दूसरेतीसरे दिन सुरेंद्र की ... मिले बरतन बेच आती हैं. गौने ... भतीजी की ससुराल से कई संदेश ... परंतु करें कहां से? कर्ज में सिर से ... डूब चुका हूं. अब इस लायक भी तो ... कि बेशरमी लाद कर किसी के आगे ... फैला सकूं.''

अचानक विवशता से उस के ... आंसू छलक आए, जिन्हें वह जबरन ... चेष्टा कर रहा था.

''ऐसी खतरनाक बीमारी है ... हस्पताल से घर चले आए? यह ठीक ... किया,'' मैं आर्द्र कंठ से बोला.

''**ठीक** ही किया है राम बाबू ... जानते हमारे घर की ... पीछे भाभी लगता है पूरे घर को कुर्क ... देगी. मालूम है, दो माह से बच्चों ... खिला रही है. ज्वार और जौ की ... खिलाखिला कर मारे डाल रही है, घर ... दस्त लग जाते हैं. बच्चे रूठ कर दिन ... कुछ नहीं खाते. साग भाजी सब बंद ... मट्ठा या मिर्च, नमक ला कर इन्हें ... है. लगता है मेरे साथ पूरे घर को ... रोग लग गया है.''

उस की आंखों से बूंदबूंद आंसू ... हम सब स्तब्ध अपराधी से बैठे थे.

''यह... यह तुम ने बहुत अन्याय ... है अवधशरण. तुम ने अपने साथ ... भी गला घोंटा है. एक बार ... इम्तिहान ले कर तो देखते यार,'' मोहन ... ने कहा.

''मौत के निकट सरक आए ... हमें याद नहीं किया,'' कैलाश बाबू ... स्वर में बोले.

''भैया, मेरे ऊपर एक अंतिम ... कर दो.''

''मुझ से क्या सेवा हो सकती है ...

?" मैं बोला.

"आप के पड़ोस में केशव वकील रहते हैं, उन्हें यहां बुलाना था," वह बोला.

"वकील? उस का क्या होगा?" मुझे आश्चर्य हुआ.

"बात यह है कि मैं सुरेंद्र को गोद लेना चाहता हूं."

"क्यों, क्या अब तुम्हें अब तक शादी न करने का गम खा रहा है? क्या यह सोचने लगे हो कि काश, कोई पत्नी होती या सेवा करने वाला सुरेंद्र जैसा कोई बेटा होता."

मेरी बात सुन कर वह धीरे से हंसा, फिर गंभीर होता हुआ बोला, "नहीं, भैया. यह सब सोचने का मेरे पास समय ही कहां रहा? बचपन में मांबाप गुजर गए थे. बड़े भाई ही ने किसी प्रकार इतना पढ़ालिखा कर नौकरी पर लगवा दिया था. भाभी आई तो इन्होंने मां का सा प्यार दिया. गृहस्थी की चक्की में भैया पिस कर चल बसे. छोड़ गए निराश्रित सात प्राणी. बस, इन्हीं सब में मैं अपना सुखदुख भूल गया. पर अब सोचता हूं कि मेरे बाद इन सब का क्या होगा. सरकार पिता के मरने पर दया कर के उस के बेटे को नौकरी दे देती है. इस से चाह रहा हूं कि सुरेंद्र को गोद ले लूं, जिस से मेरे बाद मेरे बेटे को नौकरी मिल जाए और यह परिवार बरबाद होने से बच जाए. इसी से तुम्हारे पड़ोस में रह रहे वकील की बात कह रहा था."

उस की बात सुनते ही अंतर जैसे कचोट उठा. मैं अपने दुख से फड़कते होंठ काटते बोला, "तुम... तुम यह सब चिंता छोड़ो, विश्वास रखो, हम आज ही से सुरेंद्र के लिए दौड़धूप कर नौकरी का जुगाड़ करने की कोशिश करेंगे. तुम सिर्फ अपनी चिंता करो."

"अपनी चिंता अब मैं क्या करूंगा? मेरे बाद ये सब सुखी रहें, यही चाहता हूं."

"तुम्हें मरने कौन देगा? तुम यह सोचते ही क्यों हो कि तुम्हारे बाद क्या होगा. क्या हम लोग तुम्हें ऐसे ही मर जाने देंगे? तुम्हारा इलाज कराएंगे, यहां लाभ नहीं दिखा तो

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें
संपादकीय विभाग
मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055

किसी पहाड़ी स्थान पर भेजेंगे, बढ़िया से बढ़िया इलाज कराएंगे. ये सब निराशाजनक बातें छोड़ो. जीने की इच्छा जगाओ," कैलाश बाबू एक स्वर में कह गए.

मोहन बाबू ने कुछ कहने को होंठ खोले ही थे कि सुरेंद्र की मां सुरेंद्र के साथ बाजार से लौट आई. वे शायद पैदल चल कर आए थे, दोनों के चेहरे धूप से लाल पड़ गए थे.

हमें देखते ही दोनों ने हाथ जोड़ कर नमस्ते की, फिर सामान रखने भीतर चले गए. कुछ ही क्षणों बाद पानी पी कर वे वापस आ गए. दोनों के मुंह उतरे हुए थे. सुरेंद्र की मां के तो नेत्र ही भरभर आ रहे थे. लगता था, जैसे उन के भीतर कोई ज्वालामुखी हो जो फूटने वाला हो.

"बैठिए," मैं उठता हुआ बोला तो वह धरती पर ही बैठ गई.

फिर भर्राए कंठ से बोलीं, "आप बैठिए न. तू बैठ जा सुरेंद्र, चाचा के पायताने." सुरेंद्र चुपचाप बैठ गया तो कैलाश बाबू ने बात शुरू की, वह आयु में हम सब से बड़े थे. उन्होंने कहा, "यह आप ने बड़ी गलती की भाभी, जो हमें पराया समझ कर अवधजी की बीमारी की सूचना देने में भी हिचक की. देखिए, क्या हालत हो गई है इन की? अब कितना समय लगेगा इलाज में, कह नहीं सकता."

कैलाश बाबू की बात समाप्त होते ही उन की आंखों से आंसू बह निकले. उन्हें आंचल से पोंछते हुए वह किसी प्रकार बोलीं, "यह... यह इन से पूछो. कितनी बार मैं ने सुरेंद्र को आप लोगों के पास भेजना चाहा, पर इन्होंने ही नहीं जाने दिया. इन से पूछो कि इन्होंने अपनी सौगंध दे कर क्यों हमें बांध दिया."

"भाभी, तुम समझती क्यों नहीं मैं... मैं तो केवल इसलिए कह रहा था कि..."

"बसबस, अब रहने दो, लालाजी. सच कहती हूं, यदि आज तुम ने मन का गुबार न निकलने दिया तो कलेजा फट जाएगा. मेरे प्राण निकल जाएंगे. कितना अत्याचार कर [illegible] तो तुम उनके पर और हम प[र] तुम्हारे मन में रत्ती भर भी दया न[हीं]"

"क्या तुम पागल हो गई हो..." अवधशरण लगभग चीख कर बोला.

"हांहां, पागल हो गई हूं, क्यों[कि] अब हमें पराया समझने लगे हो. क्या [तुम] चाहते हो कि तुम्हारे भाई और तुम्हा[री...] हम सब भी तपेदिक से तड़पतड़प क[र...] तुम... तुम जबरन हस्पताल से चले [आए...] दोस्तों के पास भी नहीं जाने देते, अपनी [...] रखवा कर बैठ गए.

"तुम चाहते हो कि अपनी आंखों [...] मैं तुम्हें तिलतिल होम होता [...] रहूं. यह नहीं होगा, अब यह नहीं होग[ा...] तुम्हें हम सब की कसम है जो बीच मे[ं...] तो."

"कैलाश बाबू, मैं तुम्हारे हाथ [...] हूं, पांव पड़ती हूं, कहीं से भी हमें कर्ज [...] दो. डाक्टर ने इन्हें नौगांव ले जाने को [...] आज सब जगह से निराश लौट आई हूं [...] की कौन कहे, कोई सौ रुपए तक [...] तैयार नहीं है."

"चाचाजी, आप तीनों ही कुछ उ[...] दें. मैं... मैं अपने बीमार चाचा की क[सम खा] कर कहता हूं कि सब की एकएक पाई [...] दूंगा, चाहे मुझे दिनरात मजदूरी ही [...] करनी पड़े. आप लोगों का यह एह[सान] जीवन भर नहीं भूलूंगा. मेरे चाचा कि[सी तरह] अच्छे हो जाएं, चाहे हम सब बिक ही [...] जाएं." इतना कहतेकहते सुरेंद्र फूट[फूट कर] रो पड़ा.

मेरे नेत्र भी बरस पड़ने को आ[...] अपने को किसी प्रकार संभाल कर [...] आंसू पोंछता हुआ बोला, "तुम... तुम [...] मत करो सुरेंद्र, अब तुम्हारे चा[चा की] जिम्मेदारी मेरी है. इन के इलाज [में कोई] कसर नहीं रखी जाएगी."

"मैं भी इन के साथ हूं. तुम [...] करो, धैर्य से काम लो." मोहन बा[बू ...] साफ कर के बोले.

"और मैं क्या पीछे रहूंगा, भा[...]

आप अपने को संभालिए. नौगांव तो क्या डाक्टर जहां बताएंगे, हम वहां इन्हें ले जाएंगे," कैलाश बाबू ने कहा.

"भाभी, क्या तुम यह चाहती हो कि सुरेंद्र मेरे और भैया के समान रातदिन पिस कर जबरन यह रोग गले लगा ले. तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं भाभी, मेरे पीछे घर भर को तबाह न करो. सुरेंद्र यह कर्ज जीवन भर नहीं उतार पाएगा, भाभी. उस को चिता की आग में मत झोंको." अवधशरण खांसने लगा. लगा, जैसे उस के कंठ में कुछ फंस गया हो. उस के नेत्रों से आंसू बह निकले.

"यह बताओ, तुम्हारी जगह यदि सुरेंद्र होता तो क्या मैं उसे ऐसे ही सड़ा-सड़ा कर मार डालती? उस का इलाज न कराती? क्या कोख जाया बेटा ही अपना होता है? तुम नहीं मेरे बेटे? क्या एक मां अपनी आंखों के सामने बड़े बेटे को घुटघुट कर मरते देख सकती है? अब जो होगा, सो होगा. अब तुम सब चिंता छोड़ो," भाभी आंखें पोंछते हुए भर्राए कंठ से बोलीं.

"भाभी, हम अब आप लोगों पर कोई कर्जा नहीं चढ़ाएंगे. रुपए का बंदोबस्त हम कर लेंगे. आप सब चिंता छोड़ो. जो सामान घर में न हो, वह लिख कर दे दिया करें. जब तक अवधशरण स्वस्थ नहीं हो जाते, सब खर्चा हम उठाएंगे."

कैलाश बाबू बोले तो भाभी अपने को रोक नहीं सकीं. अवधशरण ने भी भीगी पलकें बंद कर लीं.

हम उन्हें समझाबुझा कर बाहर आए. दूसरे दिन से ही हम ने अवधशरण के लिए चंदा इकट्ठा करना शुरू कर दिया.

आज अवधशरण को ले कर हम तीनों नौगांव जा रहे हैं. हमारे दफ्तर के अन्य लोग भी साथ जा रहे हैं. परिवार के भरणपोषण के लिए हम ने हर माह 50-50 रुपए देने का संकल्प किया है. एक बोरा गेहूं पिसा कर रख आए हैं.

यदि आप को, सिर से पैर तक कर्ज में डूबे उस 'कमीने' व्यक्ति पर दया आ रही हो तो आप भी कुछ रुपया दे सकते हैं, पर कर्ज स्वरूप नहीं, दान स्वरूप. ●

आर्थिक नीतियों पर चढ़त इसलामीकरण का मुलम्

पिछले कुछ अरसे से मुसलिम देशों में 'ब्याज' के प्रश्न पर काफी विवाद चल रहा है. मुसलिम देशों विशेषकर पश्चिमी एशिया के देशों में आर्थिक मामलों पर इसलामीकरण का रंग चढ़ाने का जो दौर कुछ वर्ष पूर्व शुरू हुआ था, वह अब फैल कर एशिया के मुसलिम देशों में भी पहुंच गया है.

सन 1973 में मुसलिम देशों के सम्मेलन के बाद आर्थिक नीतियों को इसलामी कायदेकानूनों के अनुसार लागू करने का निर्णय अब काफी देशों में अपनाया जाने लगा है. बहरीन, जोर्डन, कुवैत, मलयेशिया, सऊदी अरब, सूडान, संयुक्त अरब अमीरात और पाकिस्तान में तो अब आर्थिक नीतियों पर इसलामीकरण का रंग प्रायः पूरी तरह चढ़ा दिया गया है.

आर्थिक नीतियों को इसलामी कायदे-कानूनों के अनुसार लागू करने में वैसे तो कोई खास दिक्कत नहीं आई, पर इन दिनों एक समस्या मुसलिम देशों में विवाद पैदा कर रही है. यह समस्या है—ब्याज लेने की. कट्टरपंथी मुसलमानों का मत है कि रिबा (ब्याज लेने) को खत्म कर दिया जाए क्योंकि कुरान के अनुसार ब्याज लेना मना है जब कि प्रगतिशील मुसलमानों का मत है कि कुरान में 'रिबा' न लेने की बात जरूर कही
लेकिन न लेने की कुछ स्थितियों का भी
है. अनुचित और असाधारण रूप से म
ब्याज लेना तो मना है, लेकिन यदि न
रूप में ब्याज लिया जाए तो वह अनु
अनुचित नहीं है.

पाकिस्तान ने अपने यहां बैंकों
डाकखानों में रुपया जमा कराने वा
विवेक के ऊपर यह छोड़ दिया है कि वे
राशि पर ब्याज ले या न लें. ब्याज न ले
स्थिति में बैंक या डाकखाना जमाक
अपने लाभ में से हिस्सा देता है.

सन 1976 से 'ब्याज' लेने का
इतना चर्चित रहा है कि मुसलिम देशों
प्रस्तावित पारस्परिक सहयोग के आ
विश्व मुसलिम बैंक की स्थापना का
खटाई में पड़ गया है.

बहरहाल ब्याज के प्रश्न पर
मुसलिम देश भले ही एक मत न हों
विदेशों में तेल के बदले मिल
अरबोंखरबों की धनराशि पर मिल
ब्याज को क्या वे छोड़ रहे हैं? ज्यादा
निर्यातक देशों का पैसा तेल खरीद
देशों के बैंकों में जमा हो जाता है ज
बाद में निकाल लेते हैं. लेकिन इस

पर यूरोपीय बैंक ब्याज की काफी बड़ी रकम भी चुकाते हैं.

इसलामी देशों में ब्याज पर विवाद. अंतरिक्ष से पेड़ों की निगरानी. अमरीकी विश्वविद्यालयों में विदेशी छात्रों की भीड़. पाकिस्तान में बढ़ते तलाक और मजदूरों के विकल्प मशीनी मानव जैसे विषयों की तथ्यपरक जानकारी...
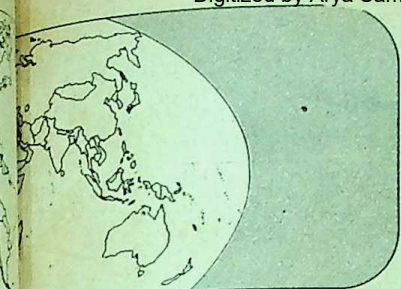
आज का तक्षशिला अमरीका

किसी समय पूर्व में भारत की पश्चिमोत्तर सीमा के निकट स्थित तक्षशिला विद्या के केंद्र के रूप में दूरदूर के देशों में प्रसिद्ध था. आज पश्चिम में अमरीका ने ज्ञानविज्ञान के नए तक्षशिला का रूप धारण कर लिया है. अमरीका का आज शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है. दुनिया का शायद ही कोई देश हो जिस के छात्रछात्राएं उच्च शिक्षा के लिए अमरीका जाने को उत्सुक न हों.

इन दिनों अमरीका में हर साल उच्च शिक्षा पाने के उद्देश्य से आने वाले छात्रों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है. सब से मुख्य बात यह है कि कम्यूनिस्ट देशों के छात्र भी अब अमरीका में विद्या अध्ययन के लिए आने को उत्सुक रहते हैं. एक सर्वेक्षण के अनुसार

अमरीका के कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय का एक दृश्य: अमरीका के विश्वविद्यालयों में विश्व के कोनेकोने से छात्र शिक्षा प्राप्त करने आते हैं.

सन 1980-81 में 184 देशों से 3,11,882 छात्रों ने अमरीका के विभिन्न कालिजों और विश्वविद्यालयों में प्रवेश लिया. अमरीका में सब से अधिक छात्र (47,550) ईरान के हैं.

अंतरराष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अभी हाल में प्रकाशित विदेशी छात्र गणना संबंधी वार्षिक रिपोर्ट के कुछ उल्लेखनीय अंशों को 'क्रिश्चियन साइंस मानिटर' ने प्रकाशित किया है. रिपोर्ट में बताया गया है कि गत वर्ष 27 प्रतिशत दक्षिण और पूर्व एशिया से, 27 प्रतिशत पश्चिम एशिया से, 16 प्रतिशत लेटिन अमरीका से, 12 प्रतिशत अफ्रीका से, आठ प्रतिशत यूरोप से और बाकी छात्र ओशियानिया और उत्तरी अमरीका से शिक्षा ग्रहण करने अमरीका आए.

जिन 10 देशों के अमरीका में सब से अधिक छात्र हैं उन के नाम हैं—ईरान, ताईवान, कनाडा, नाइजीरिया, जापान, बेनेज्वेला, सऊदी अरब, हांगकांग, भारत और लेबनान. विदेशी छात्रों के दो प्रिय विषय हैं– इंजीनियरिंग और व्यवसाय प्रबंध.

अमरीका में विभिन्न देशों से आए विदेशी छात्रों की कुल संख्या में पुरुष 2,23,670 और महिलाएं 88,210 हैं. इस तरह इन दिनों अमरीका के हर शहर में किसी न किसी देश का छात्र नजर आता है.

तलाक के फंदे में लटका बुर्का

भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान में इन दिनों दो चीजों की काफी चर्चा चल रही है. इन में से एक है जम्हूरियत (लोकतंत्र) को दफन किए जाने की और दूसरी देश में बढ़ते हुए तलाकों की. पिछले दिनों पाकिस्तान में किए गए एक सर्वेक्षण से यह बात स्पष्ट हो गई कि पाकिस्तान में पिछले कुछ वर्षों में तलाकों की संख्या बहुत बढ़ी है. यहां हर तीन शादियों में से एक शादी अदालत में जा कर टूट जाती है. पिछले सात वर्षों में तलाकों की संख्या में करीब 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है.

पाकिस्तान की अदालतों में इस... तलाक के करीब एक लाख 70 हजार मु... चल रहे हैं. इन में से करीब 60 ... मुकदमों का फैसला जल्द होने वाला है... आंकड़ों के अतिरिक्त, जबानी यानी... तरीके से अशिक्षित ग्रामीण लोगों द्वारा... गए तलाकों की संख्या इस से कई गुना ... है. तलाकों की बढ़ती संख्या से पाकि... अब ब्रिटेन के बाद दूसरा ऐसा बड़ा दे... गया है जहां तलाकों की संख्या बढ़ ... ब्रिटेन में तो हर दूसरी शादी तलाक पर... हो जाती है.

सर्वेक्षण से इस बात का भी पता च... कि मुसलिम महिलाओं में तलाक लेने का... बड़ा कारण है सास. इस के बाद है ... दूसरी बीवियां. पाकिस्तान में रहने... मुसलिम परिवारों में सास का सब... प्रभाव रहता है जो अपने तौरतरीकों से... पर शासन करने, बेटे को बहू के खि... कभी भी बहकाने और उस की दूसरी ... करने की अकसर धमकी देती रहती है.

अंतरिक्ष में घूमता पे... का डाक्टर

वैज्ञानिकों ने हाल ही में कुछ ऐसे... का निर्माण किया है, जिन के द्वारा अंतरि... 704 किलोमीटर की ऊंचाई पर घूमता... उपग्रह धरती पर स्थित पेड़ों में ... बीमारी का पता लगाएगा. इस तरह... उपग्रह पेड़ों पर से गुजरता हुआ पेड़ों में... हुई किसी भी प्रकार की बीमारी का ... चिह्न दे कर डाक्टरों को पेड़ों की बीमारी... करने की सलाह देगा. इस तरह का ... अमरीका में इस साल या अगले साल ... जाएगा.

उपग्रह से पेड़ों की बीमारी का... लगाने के कार्यक्रम के संयोजक हैं—सेंट... पेपर कंपनी, दि नेशनल एयरोनाटिक्स... और एडमिनिस्ट्रेशन परडयू विश्वविद्... सेंट रेजिस पेपर कंपनी पिछले...

अरसे ... लूइजिये... लाख ए... की बीम... कर चुक... अ... कंपनिय... द्वारा अ... हैं. उपग्र... की जान... भी अव... पेड़ों का... लाखों क... सकेगा.

मशीन... अन्य ... अब ...

अरसे से फ्लोरिडा, जार्जिया, मिसीसिपी, लूइजियेना, अलाबामा और टैक्सास के ढाई लाख एकड़ में फैले जंगलों में उपग्रहों से पेड़ों की बीमारी की छानबीन का सफल परीक्षण कर चुकी है.

अमरीका की कुछ अन्य कागज निर्माता कंपनियां भी पिछले कुछ समय से उपग्रह द्वारा अपने घने जंगलों की खैरखबर लेती रही हैं. उपग्रह जहां टूटे, सूखे और मुरझाए पेड़ों की जानकारी देगा, वहां पेड़ों में फैले रोगों से भी अवगत कराएगा और इस तरह समय पर पेड़ों का उपचार कर लकड़ी को होने वाले लाखोंकरोड़ों के नुकसान की रोकथाम कर सकेगा.

मशीनी मानव : मजदूरों की हड़तालों व अन्य परेशानियों से बचने का यह साधन अब काफी उपयोगी सिद्ध हो रहा है.
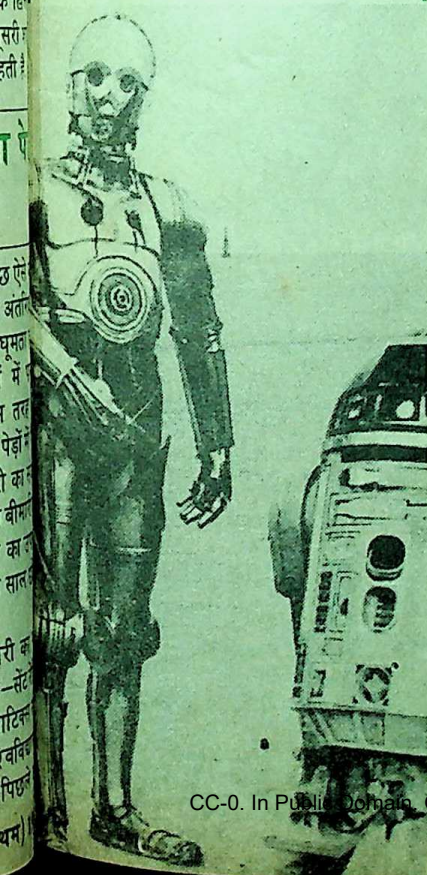
उपग्रह के प्रयोग से जंगलों के फैलाव, उन के विस्तार, सहरा (अफ्रीका) के दक्षिणी किनारों पर स्थित हरेभरे जंगली इलाकों की पूरी निगरानी रखी जा सकेगी. विश्व के जंगलों में रहने वाले नोमेडिक कबीले को भी यह बताया जाएगा कि किस तरफ प्रचुर मात्रा में खाद्य उपलब्ध हो सकेगा.

न होगा मजदूर, न होगी हड़ताल

पश्चिम के देश मजदूरों की आए दिन होने वाली हड़तालों से दुखी हो कर अब मजदूरों का विकल्प तलाश करने लगे हैं. जापान की एक प्राइवेट कंपनी ने तो 1990 तक अपने कारखाने में मजदूरों के स्थान पर कार्य करने के लिए हजारों मशीनी मानव तैयार करने की घोषणा की है.

मैतशुचिता इलैक्ट्रिक इंडस्ट्रीज ने अपनी फैक्टरी में अब अति संवेदनशील और अकलमंद मशीनी मानव तैयार कर उन्हें विभिन्न कामों में लगाना शुरू कर दिया है.

इस समय इस कंपनी ने अपने यहां विभिन्न खंडों में काम करने के लिए करीब 5,000 मशीनी मानव फिट कर रखे हैं जो मजदूरों द्वारा किया जाने वाला सभी कार्य बड़ी जल्दीजल्दी निबटा देते हैं.

इस कंपनी ने अब मजदूरों का वेतन बढ़ाने, बोनस देने, काम के घंटे कम करने, काम की स्थितियों में सुधार करने आदि की दिन प्रतिदिन बढ़ती मांगों और आए दिन हड़ताल करने की धमकी से निबटने के लिए धीरेधीरे मजदूरों के स्थान पर मशीनी मानव लगाने का निर्णय ले लिया है. कंपनी को उम्मीद है कि सन 1996 तक इस के यहां सभी मजदूरों के स्थान पर मशीनी मानव काम करने लगेंगे.

फिलहाल कंपनी को इस बात का पूर्ण संतोष है कि इस ने अपने यहां जहां भी मशीनी मानव लगाए हैं वहां ही मजदूरों से बेहतर और जल्द काम हुआ है. ●

भारत की राजधानी दिल्ली देश का दिल है. नई दिल्ली को उद्यानों का नगर कहा जाता है. इस महानगर के भविष्य के बारे में विचार करने के लिए कुछ समय पहले नई दिल्ली में दिल्ली विकास प्राधिकरण के तत्वधान में एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया था.

जनसंख्या विशेषज्ञ, नगर नियोज[...] भवन व सड़क निर्माता इंजीनियर तथा ज[...] आपूर्ति विभाग, स्वास्थ्य विभाग, नगर क[...] विद्युत विभाग और बागबानी विभाग[...] सैकड़ों विशेषज्ञों ने इस विचारगोष्ठी[...] महानगर की सन 2001 तक [...] आवश्यकताओं और उन की संभावित [...]

की स्थिति के बारे में विचारविमर्श किया था.

महानगरों की जनसंख्या को सुविधाएं पहुंचाने और पर्यावरण को स्वच्छ व प्रदूषण रहित रखने के लिए बड़े पैमाने पर आयोजन की जरूरत पड़ती है. बड़े आयोजन के लिए यह नितांत आवश्यक है कि महानगर में जनसुविधाएं पहुंचाने वाले सभी विभाग आपस में पूरी तरह तालमेल से काम करें.

इस समय दिल्ली महानगर की आबादी 70 लाख के आसपास है. इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए सुविधाएं जुटाने और उन में निरंतरता बनाए रखने के लिए करोड़ों रुपए की जरूरत पड़ती है. महानगरों के बारे में एक सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि यहां सभी जनसुविधा प्रणालियां जैसे जल आपूर्ति,

दिल्ली में वायु और जल प्रदूषण की स्थिति दिन ब दिन भयंकर होती जा रही है और यदि स्थिति इसी रफ्तार से बिगड़ती चली गई तो सन 2001 तक दिल्ली का हर निवासी भयंकर बीमारियों से ग्रस्त हो जाएगा...

इंद्रप्रस्थ बिजलीघर : दिल्ली में वायु प्रदूषित करने में सब से आगे (बाएं) और दिल्ली के ग्रामीणों को पीने तक के लिए गंदा पानी ही मिलता है (नीचे).

दूध व सब्जी वितरण, विद्यालय, हस्पताल, यातायात और खाद्य आपूर्ति एकदूसरे पर बहुत ज्यादा निर्भर करते हैं. महानगर की नित्य चलने वाली इस विशाल मशीन के किसी भी एक पुर्जे के काम बंद करते ही हाहाकार मच जाता है. महानगर की समस्याएं इतनी विशाल और विकट होती हैं कि उन का सामना करने के लिए कई वर्षों का समय चाहिए.

उपर्युक्त गोष्ठी में यह बताया गया था कि इस समय दिल्ली में कुल जल आपूर्ति 30 करोड़ 30 लाख गैलन प्रतिदिन है. इस दृष्टि से दिल्ली में हर आदमी प्रतिदिन 50 गैलन पानी का उपयोग कर सकता है. दिल्ली में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धि अन्य महानगरों से अधिक है. उदाहरण के लिए मद्रास में प्रतिव्यक्ति को प्रतिदिन 17 गैलन तथा बंबई व कलकत्ता में 30 गैलन जल उपलब्ध है. इस लिहाज से दिल्ली वासी मद्रास, कलकत्ता और बंबई वासियों की अपेक्षा अधिक अच्छी स्थिति में हैं. परंतु सरकारी मापदंड के

दिल्ली में बिजली की स्थिति

मेगावाट में

इन्द्रप्रस्थ पावर स्टेशन

राजघाट पावर स्टेशन

डीजल सेटों से

	उत्पादन क्षमता	आपूर्ति	वास्तविक मांग	2001 में मांग (अनुमान)
मेगावाट	320	580	654	2500

वर्तमान

के.बी.के.

अनुमान यह आपूर्ति अभी कम है. सरकारी निर्देशों के मुताबिक दि... महानगर में प्रतिशहरी प्रतिदिन 70 गै... पेय जल उपलब्ध होना चाहिए व देहात में ... गैलन.

सन 2001 में दिल्ली (महानगर और बाह्य क्षेत्र) की जनसंख्या बढ़ कर अब... करोड़ 29 लाख हो जाएगी (शहरी जनसं... एक करोड़ 25 लाख) तो जल आपूर्ति वि... को 115 करोड़ गैलन पेय जल नित्य मु... कराने की क्षमता प्राप्त कर लेनी हो... अन्यथा महानगर निवासियों को शुद्ध ... जल के भारी संकट का सामना करना ... सकता है. वैसे कई अल्पकालीन पग उठा... दिल्ली में 1985 तक जल आपूर्ति की मा... वर्तमान 30 करोड़ 30 लाख गैलन से बढ़ा... 47 करोड़ 20 लाख गैलन कर दी जाएगी ... जल आपूर्ति में वृद्धि के लिए दिल्ली में ... भूगर्भीय नहर के निर्माण का काम अब अं... चरणों में है. गंगा से निकली यह नहर दि... वासियों के लिए लघु भागीरथी से कम न... होगी.

ऊर्जा की खपत

किसी भी महानगर में व्यक्तियों ... जीवनस्तर पर वहां होने वाली ऊर्जा ... उपलब्धि और खपत का सीधा असर पड़... है. महानगरीय जनजीवन और अर्थव्यवस्था... का स्वास्थ्य और विकास काफी हद तक ऊ... साधनों पर निर्भर है. दिल्ली में इस स... ऊर्जा की कुल खपत का अनुमान इस बात... लगाया जा सकता है कि अधिक... आवश्यकता के समय 580 मैगावाट बिज... खर्च हो रही होती है. वास्तव में बिजली ... कुल मांग 654 मैगावाट है. यानी फिलह... दिल्ली में 74 मैगावाट बिजली की कमी ...

भविष्य में दिल्ली में नए कारखा... मकान, व्यावसायिक केंद्र व दफ्तर न... जनसुविधाएं बनने से निश्चय ही बिजली ... मांग में तीव्र वृद्धि होगी. बिजली की आ... की मांग में यदि यही स्थिति कायम रहती है ... 1990 तक मांग और पूर्ति में अंतर ब...
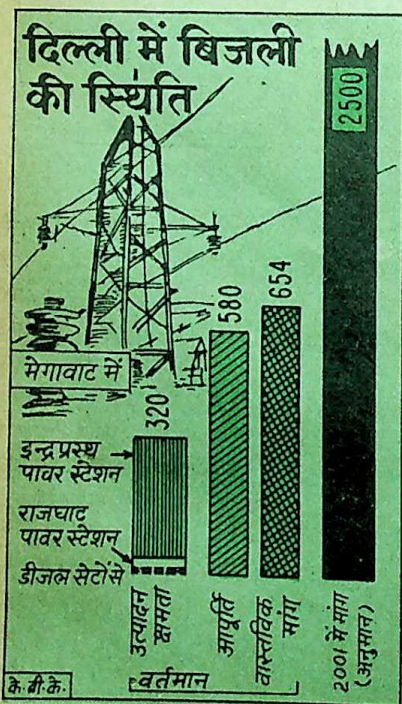
74 मैगावाट से बढ़ कर 400 मैगावाट हो जाएगा.

एक अनुमान के अनुसार 2001 में दिल्ली को 2,500 मैगावाट बिजली की जरूरत पड़ेगी. यदि उत्तरी अंचल विद्युत ग्रिड, बदरपुर ताप बिजलीघर तथा सिंगरौली व कोरबा जैसे बड़े ताप बिजलीघरों से भी दिल्ली में बिजली लाई जाए तो भी 2,500 मैगावाट की मांग की पूर्ति उस समय तक असंभव जान पड़ती है जब तक दिल्ली विद्युत प्रदाय संस्थान स्वयं मैदान में न कूदे.

यानी यह संस्थान स्वयं नए ताप बिजलीघर या परमाणु बिजलीघर दिल्ली के बाह्यक्षेत्र में कहीं लगाए.

वैसे उत्तर प्रदेश में नरौरा का निर्माणाधीन परमाणु बिजली घर अगर 1990 तक बिजली उत्पादन करने लग जाए तो दिल्ली को बिजली आपूर्ति की स्थिति बेहतर हो सकती है. अन्यथा भविष्य में दिल्ली में बिजली आपूर्ति में भारी कमी की संभावना है. इन सब के बावजूद रोहिणी, नरेला औद्योगिक क्षेत्र, रोहतक रोड तथा डी.एस.आई.डी.सी. (दिल्ली राज्य औद्योगिक विकास निगम) औद्योगिक क्षेत्र स्थापित किए जा रहे हैं. कहां से आएगी इन के लिए बिजली?

दिल्ली महानगर में कारखाना मालिकों द्वारा अपने केंद्रीय कार्यालय बनाए जाने का सब से प्रमुख कारण आसपास के (राजधानी के चारों ओर सौ किलोमीटर व्यास में) इलाके में संचार सुविधाओं का न होना या कम होना है. दिल्ली में निकट संचार के लिए टेलीफोन व दूर संचार के लिए टेलैक्स, केबल और उपग्रह की सुविधाएं उपलब्ध हैं. साथ ही यहां यातायात का हर उन्नत साधन उपलब्ध है. उपर्युक्त गोष्ठी में दिल्ली टेलीफोन के एक प्रवक्ता ने बताया था कि 2001 तक दिल्ली में 12 लाख नए टेलीफोन कनेक्शनों की मांग हो जाएगी. इस का अर्थ यह हुआ कि प्रति वर्ष 50 करोड़ रुपए खर्च कर के 50,000 नए टेलीफोन कनेक्शन दिए जाएं. पर ऐसा कठिन ही जान पड़ता है.
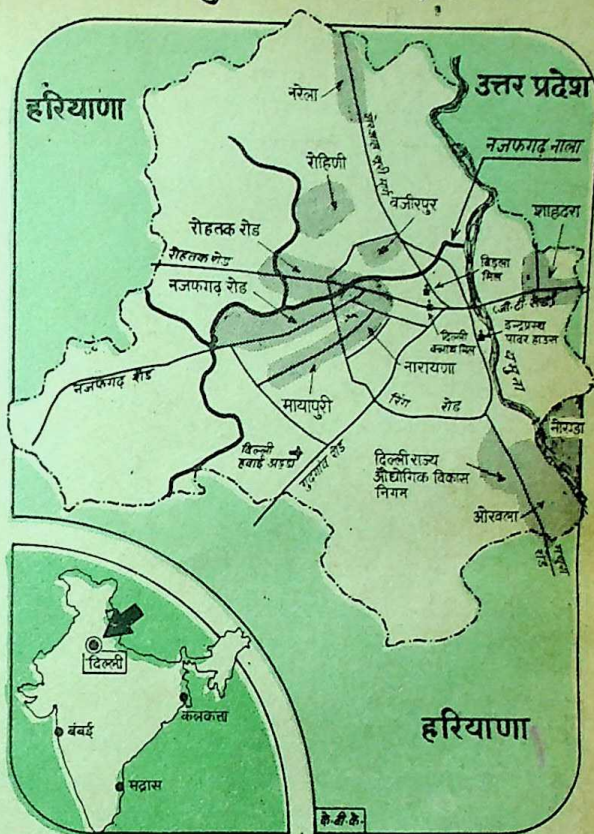
इस समय दिल्ली में 44 टेलीफोन केंद्र हैं जो दो लाख 23 हज़ार 400 लाइनों को जोड़ते हैं. सन 2001 तक मांग के अनुसार 40 नए टेलीफोन केंद्र खोलने पड़ेंगे और करोड़ों रुपए खर्च कर के जापान, बैल्जियम और स्वीडन से टेलीफोन यंत्रप्रणाली का आयात करना पड़ेगा. इस का कारण यह है कि भारत में नई दिल्ली के दूर संचार अनुसंधान केंद्र (टी.आर.सी.) का 'इंडियन क्रासबार प्रोजेक्ट' स्वदेशी एक्सचेंज का निर्माण कर उस का बाधा रहित उपयोग करने में बुरी तरह विफल हुआ है. करोड़ों रुपए इस तरह बट्टे खाते में चले गए है.

महानगरों की विकट समस्या

शिक्षा, समाजकल्याण और नए हस्पतालों की वृद्धि कर उन्हें मांग के अनुरूप बनाए जाने के वास्ते वैसे अल्पावधि की कई योजनाएं आरंभ की जा चुकी हैं, पर दीर्घकालीन विकास के लिए घरेलू पूंजी और विदेशी आर्थिक साधनों के बलबूते पर पंचवर्षीय योजनाओं के अधीन बड़े पैमाने पर उन का विकास किए जाने का प्रारूप है.

महानगरों में आजकल एक विकट समस्या तेजी से उभर रही है. वह है पर्यावरण प्रदूषण की. कलकत्ता, मद्रास, बंबई, दिल्ली, कानपुर और अहमदाबाद आदि प्रमुख महानगरों में औद्योगिक व घरेलू कचरे से पर्यावरण का गंभीर प्रदूषण हो रहा है. महानगरों में वायु व जल प्रदूषण की वर्तमान स्थिति की जो सूचनाएं नागपुर के राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरी अनुसंधान संस्थान (नेशनल एनवायरनमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट) व स्थानीय विश्वविद्यालयों या राज्यों के औद्योगिक विभागों ने एकत्र की हैं वे एक गंभीर खतरे की चेतावनी हैं.

दिल्ली में वायु व जल प्रदूषण की स्थिति धीरेधीरे विश्व स्वास्थ्य संगठन की सभी सीमाएं लांघती जा रही है. दिल्ली में वायु व जल प्रदूषण का मुख्य स्रोत घरेलू कचरा, गंदा पानी व औद्योगिक धुंआ तथा रसायनिक विसर्जन है. इस के अलावा मोटर गाड़ि[illegible] निकला धुंआ भी हवा को निरंतर प्रदूषित [illegible] सहनीय स्तर से ज्यादा गरम कर रहा [illegible] दिल्ली में प्रदूषण को बढ़ाने में इंद्र[illegible] बिजलीघर' का भी पूरा हाथ रहा है.

अगर कोई यह कहे कि दिल्ली के मौ[illegible] में पिछले 10 साल में जो परिवर्तन आ[illegible] वह प्राकृतिक शक्तियों के कारण कम [illegible] मानव गतिविधियों के कारण अधिक है [illegible] हमें इस बात को आंशिक रूप से सत्य [illegible] लेना चाहिए. पिछले दिनों दिल्ली के मौ[illegible] वैज्ञानिकों डा. पद्मनाभमूर्ति और डा. [illegible] ने दिल्ली के मौसम में आए परिवर्तन [illegible] कारणों को जानने के लिए एक सर्वेक्षण [illegible] था. उन की खोज से मालूम हुआ कि दिल्ली [illegible] अत्यधिक भीड़ और खुले स्थान के अभाव [illegible] परिणामस्वरूप राजधानी के अनेक क्षेत्र [illegible] उष्ण हवाई गर्त (हीट पाकेट) बन चुके [illegible] दीवार से घिरा पुरानी दिल्ली का इलाका [illegible] गरम हवा की खोली बना हुआ है. यह इला[illegible] मई, जून में भट्ठी बन जाता है. सर्दियों में [illegible] यहां की हवा नीम गरम रहती है.

जनसंख्या का सर्वाधिक घनत्व

इस इलाके में जनसंख्या का घन[illegible] संपूर्ण दिल्ली में सब से अधिक है. इस में [illegible] में एक अनुमान के अनुसार तीन लाख [illegible] उद्योग लगे हुए हैं. इन इकाइयों में ऊर्जा [illegible] उपयोग होता है और बहुत सी फालतू [illegible] गरमी के रूप में बाहर वातावरण में [illegible] जाती. है. दूसरे वाहनों की आवाजाही [illegible] कारण भी यहां धुएं से गरमी में नि[illegible] बढ़ोतरी हो रही है. स्वास्थ्य विभाग [illegible] मापदंड के अनुसार अप्रैल से अक्तूबर [illegible] यहां तापमान मानव की 'आरामदायक [illegible] सहन क्षमता' से ज्यादा रहता है.

दरियागंज में नेताजी सुभाषचंद्र मार्ग [illegible] रोज़ाना हजारों वाहनों का आवागमन [illegible] है. अकेली दिल्ली में ही इस समय पांच [illegible] के लगभग वाहन हैं. इन वाहनों से नि[illegible] धुआं और उस में उपस्थित हानिका[illegible] तत्व-सल्फर डायआक्साइड. कार्बन [illegible]
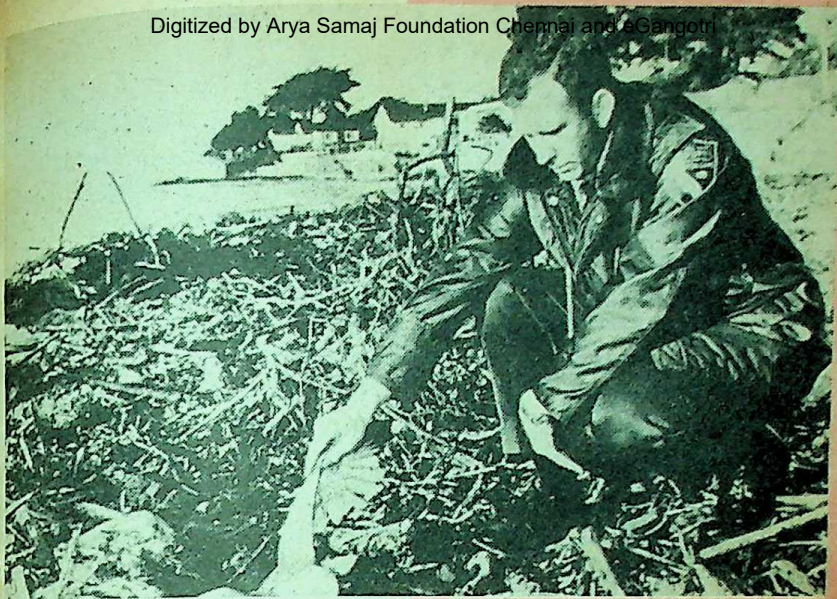
जल के अत्यधिक प्रदूषित होने से मरा पक्षी : दिल्ली में जल प्रदूषण की स्थिति विश्व स्वास्थ्य संगठन की सीमाएं लांघती जा रही है.

आक्साइड व कार्बन डायआक्साइड ही यहां के तापमान को निरंतर ऊंचा बनाए रखते हैं और वायु प्रदूषण फैलाते हैं. वाहनों से निकले धुएं के दुष्प्रभाव की कहानी दरियागंज के भवनों की क्षरित होती दीवारों पर अंकित है. इस के परिणामस्वरूप इस इलाके की जनसंख्या के आम स्वाथ्य में लगातार गिरावट आई है.

नीम गरमी का टापू

दिल्ली के कुछ अन्य क्षेत्रों में भी 'नीम गरमी के टापू' हैं. ये इलाके हैं पहाड़गंज व कनाट प्लेस के चारों ओर दो किलोमीटर व्यास में आने वाले इलाके. इस के अलावा यमुना पार उत्तरपूर्वी आबाद इलाका (शाहदरा आदि) और दक्षिण में यूसुफ सराय भी इसी श्रेणी में आते हैं. नई दिल्ली में कनाट प्लेस के आसपास 'गरम टापू' बनने का प्रमुख कारण यहां बहुमंजिली इमारतों का बनना है. अनुमानतः इस क्षेत्र में 35 बहुमंजिली व्यावसायिक इमारतें हैं.

एक छोटे से क्षेत्र में इतनी इमारतें बनने से यहां का पर्यावरण बीमार हो गया है. मानव गतिविधि व वाहनों की आवाजाही के कारण यहां हर प्राकृतिक साधन– हवा, वनस्पति, भूमि, जल व धूप पर दबाव बढ़ गया है. ऊंची इमारतें स्वयं भी अपने आंतरिक जीवन को संभालने के लिए काफी ऊर्जा का उपयोग करती हैं. इसलिए यहां अब जनसुविधाओं व पर्यावरण की स्थिति के किसी भी समय विगड़ जाने जैसा खतरा उत्पन्न हो गया है. आश्चर्य है कि सरकार सब कुछ जान कर भी नई बहुमंजिली इमारतें बनाने की अनुमति दे रही है. दिल्ली में वायु प्रदूषण कम करने के लिए जो भी कदम उठाए गए हैं वे सर्वथा प्रभावहीन और कम सिद्ध हुए हैं. उदाहरण के लिए दिल्ली में इंद्रप्रस्थ विजलीघर की पांच इकाइयों में से केवल चार में अभी तक इलेक्ट्रोस्टेटिक प्रैसिपिटेटर लग पाए हैं. पांचवी इकाई अब भी सीना ताने 15 किलोमीटर की दूरी तक हवा में प्रदूषण प्रसारित कर रही है. मजे की बात यह है कि

सामने ही ... दक्षिणपूर्व एशिया का प्रधान कार्यालय है.

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में पर्यावरण विभाग के डीन प्रोफेसर दवे ने जब एक सर्वेक्षण किया तो उन्हें इंद्रप्रस्थ ताप बिजलीघर की चिमनी से निकली राखी राष्ट्रपति भवन, डिफेंस कालोनी और कनाट प्लेस तक मिली. इकाई नंबर तीन व चार में लगे फिल्टर ठीक काम नहीं कर रहे. पिछले साल सितंबर में इन में गड़बड़ हुई थी. अब ये दो इकाइयां भी वायु प्रदूषण के प्रसार में पांचवीं इकाई का पूरा साथ दे रही हैं. ज्ञातव्य है कि एक फिल्टर की कीमत एक करोड़ रुपए से ज्यादा ही पड़ती है. भारी कीमत दे कर अमरीका से ये फिल्टर मंगवाए गए थे.

चिमनियों की प्रदूषित राखी

इलेक्ट्रोस्टेटिक प्रैसिपिटेटर चिमनी से निकलने वाली राखी को पकड़ कर इकट्ठा कर लेता है और उसे बाहर हवा के जरिए प्रसारित नहीं होने देता. पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार कोयला जलने से बिजलीघर की चिमनी से जो राखी (फ्लाई ऐश) निकलती है उस में फ्लोरायड और आर्सनिक होते हैं. इंद्रप्रस्थ बिजलीघर में जो कोयला जलाया जाता है उस में प्रदूषणकारक तत्व कुछ अधिक मात्रा में ही बनते हैं. ये दोनों पदार्थ मानव स्वास्थ्य के लिए घातक हैं. वैसे भी वातावरण में विद्यमान नमी के साथ मिल कर ये आसपास के भवनों– खास कर पत्थर की बनी इमारतों का क्षरण करते हैं. इलेक्ट्रोस्टेटिक प्रैसिपिटेटर न लगने से पहले या उन के काम न करने की दशा में जब इंद्रप्रस्थ बिजलीघर की तीन, चार व पांच नंबर की इकाइयां धुआं उगलती हैं तो आसपास कई किलोमीटर क्षेत्र में एक काला दैत्याकार बादल पसर जाता है.

प्रो. दवे की खोज के अनुसार इन चिमनियों से निकले धुएं के अम्लीय प्रभाव के कारण राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, इंडिया गेट, राष्ट्रीय संग्रहालय तथा कनाट प्लेस आदि में भवनों को नुकसान हुआ है. इंद्रप्रस्थ ताप बिजलीघर की पांचों इकाइयां लग 4,000 मीट्रिक टन कोयला प्रतिदिन उप करती हैं. इतने कोयले के जलने से 9 1,000 टन राखी प्रतिदिन बनती है. इस 700 टन राखी तो चार इकाइयों में प्रैसिपिटेटर खींच लेते हैं पर बाकी राखी ही अब भी वायुमंडल को प्रदूषित करती यह विडंबना है कि भारत में भेल (भारत इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड, भोपाल) विश्वप्रसिद्ध संस्था इंद्रप्रस्थ ताप बिजली की पांच चिमनियों के वास्ते इलेक्ट्रोस्टे प्रैसिपिटेटर न बना सकी. ये पांचों प्रैसिपि 1967 से 1981 की अवधि में लगभग करोड़ रुपए की लागत से अमरीका की कंपनी 'दि यूनाइटेड आयल प्रोडक्ट्स-ए करेक्शन डिविजन' से खरीदे और उसी लगवाए गए. पांचवीं इकाई में प्रैसिपिटेटर लगाया जा रहा है. प्रैसिपिटेटर अगर ठीक काम करें तो राखी एक भी कण वायुमंडल में नहीं जा सक फिलहाल एक, दो व तीन नंबर की इ 99.7 प्रतिशत ठीक काम कर रही है. ख खराब है. केंद्रीय सरकार ने जो मान निर्धारित किया है, उस के अनुसार चिमनी निकलने वाली गरम गैसों की प्रतिघन मी मात्रा में 150 मिलिग्राम से अधिक र बाहर नहीं आनी चाहिए. पर क्या ऐसा रहा है?

नजफगढ़ क्षेत्र — गैस चैंबर

दिल्ली में नजफगढ़ औद्योगिक क्षेत्र गैस चेंबर से कम नहीं. यहां सार्वजनिक का डी.डी.टी. बनाने का कारखाना हिंदुस्तान इंसेक्टीसायड लिमिटेड' है अन्य सैकड़ों रासायनिक पदार्थ बनाने वा इकाइयां हैं. बंबई में जो हाल चेंबूर का वही हाल दिल्ली में नजफगढ़ औद्योगिक का है. यहां का सारा आकाश एक अ तीखी रासायनिक गैसों की धुंध में लि रहता है. सर्दी के मौसम में तो यहां प्रदूष स्थिति असहनीय हो उठती है. रात को प वाली ओस के साथ तेज़ाबी पदार्थ जब

पर गिरते हैं तो अम्लीय प्रभाव के कारण सारी वनस्पति जल जाती है.

यहां चारों ओर वृक्षों के कंकाल ही देखने को मिलते हैं. यहां की हवा में घातक रासायनिक गैसों की जितनी मात्रा घुली हुई है उसे यहां के कामगार निरंतर अपने फेफड़ों में भर कर तपेदिक और दमे के मरीज बनते जा रहे हैं. आज तक इस बात की कोई सार्वजनिक घोषणा नहीं हुई और न ही आंकड़े प्रकाशित किए गए कि नजफगढ़ औद्योगिक क्षेत्र में वायु कितनी शुद्ध है और यदि यहां की हवा विश्व स्वास्थ्य संगठन के स्वीकृत प्रदूषण स्तर को पार कर चुकी है तो यहां तुरंत पर्यावरण संबंधी उपचार की आवश्यकता है. दिल्ली के औद्योगिक विभाग ने इस क्षेत्र में शायद ही कभी वायु की शुद्धता की जांच की है. यहां किसी भी स्थान पर वायु शुद्धता मापक स्थायी केंद्र नहीं है.

मरकरी फिल्टरों पर प्रतिबंध

दिल्ली में वायु प्रदूषण की स्थिति को शायद अभी तक गंभीरता से नहीं लिया गया है. पर्यावरण आयोजन एवं समन्वय संबंधी राष्ट्रीय समिति (नेशनल कमेटी आन एनवायरनमेंटल प्लानिंग एंड को आर्डिनेशन) के भूतपूर्व अध्यक्ष नागचौधरी ने बड़ी खिन्नता से एक बार कहा था, "समिति अभी तक वास्तव में नई स्थापित होने वाली औद्योगिक इकाइयों के मामले में ही पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण व निवारक उपाय लागू करने में कामयाब हुई है. उदाहरणत: नई कागज मिलों के लिए यह अनिवार्य है कि वे 'मरकरी फिल्टर' न लगाएं. पर पुरानी कागज मिलें जिन में मरकरी फिल्टर लगे हैं, अभी तक कमेटी की सिफारिशों को नजरअंदाज किए हुए हैं. हो सकता है कि शक्तिशाली औद्योगिक लाबी के आगे सरकारी दरबारियों का बस न चला हो."

ज्ञातव्य है कि आज से 20 बरस पहले जापान में मिनामाटा में बहुत सारे लोग उन मछलियों के खाने से मर गए थे जिन्होंने एक निकटवर्ती कारखाने से विसर्जित पारे का सेवन कर लिया था. हो सकता है मरकरी फिल्टर लगे कारखानों से विसर्जित होने वाला पारा यमुना में मिल कर उस भयानक घटना की पुनरावृत्ति कर दे. नागचौधरी के मत में भारत के चारों बड़े महानगरों– बंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली में प्रदूषण के मामले में दिल्ली की स्थिति सब से खराब है. वह इसलिए कि यहां रासायनिक उद्योगों और ताप बिजलीघरों की स्थिति सब से खराब है.

वास्तव में दिल्ली के चारों ओर विशेषत: पूर्व और पश्चिम में कारखानों की भरमार है. हवा अधिकतर पूर्व से पश्चिम या पश्चिम से पूर्व को प्रवाहित होती है. हवा चलते ही परिधि पर बने कारखानों से निकला धुआं केंद्र में बसी जनसंख्या व वनस्पति पर कहर ढा रहा है. इस से दिल्ली के योजनाबद्ध विकास और नगर नियोजन को भारी क्षति

नये टेलीफोन कनेक्शन दिए जाएंगे

अवधि	कनेक्शन
फरवरी–मार्च '82	2500
1982–83	15300
83–84	30000
84–85	30130
छठी योजना के बाद	7050

के.वी.के.

पहुंची है. एडविन लुटीन अगर आज अपनी नियोजित नई दिल्ली को पहुंचाई जा रही क्षति को देख ले तो उसे निश्चय ही रोना आ जाएगा.

वायु प्रदूषण में पहला स्थान बंबई का, दूसरा कलकत्ता का और तीसरा दिल्ली का है. पर दिल्ली में जिस कदर वायु प्रदूषण बढ़ रहा है उसे देखते हुए सन 2001 तक यह महानगर भारत का सब से अधिक प्रदूषित महानगर हो जाएगा. एक सर्वेक्षण के अनुसार वायु में प्रदूषण तत्वों की मात्रा बंबई में एक घनमीटर हवा में 60 माइक्रोग्राम, कलकत्ता में 45 व दिल्ली में 35 माइक्रोग्राम है. (एक माइक्रोग्राम एक ग्राम का दस लाखवां हिस्सा है)

यमुना कितनी प्रदूषित

जैसा कि पहले बताया गया है, सन 2001 में दिल्ली वासियों को 115 करोड़ गैलन पेय जल की जरूरत पड़ेगी. यह तो केवल घरेलू खपत की मात्रा है. उद्योग धंधे भी नित्य करोड़ों गैलन जल इस्तेमाल करते हैं खास कर रासायनिक उद्योग, कागज व कपड़ा मिलें. अशुद्ध और प्रदूषित पेय जल का अर्थ है हेपाटाइटिस बी, पेचिश व पीलिया जैसी घातक बीमारियों को बुलावा. एक सर्वेक्षण के अनुसार दिल्ली में यमुना में रोज 120 करोड़ लीटर घरेलू और बाजारू गंदा पानी गिरता है. इस के अलावा नजफगढ़ के गंदे नाले में हिंदुस्तान इंसैक्टीसायड कारखाना भी काफी मात्र में डी.डी.टी. विसर्जित करता है. यह नाला यमुना में जहां गिरता है वहां दूरदूर तक नदी की वनस्पति व मछलियां मर गई हैं. वहां नदी में विद्यमान सूक्ष्मजैविक स्वयं शुद्धिकरण की प्राकृतिक प्रक्रिया दम तोड़ चुकी है.

वास्तव में शाहदरा रेलपुल से ले कर ओखला बराज तक यमुना एक सड़ीगली नदी बन चुकी है. यमुना में प्रदूषण की यह स्थिति पिछले 20 वर्ष से बरकरार है. इस के बावजूद दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों ने यमुना को प्रदूषण रहित बनाने की आशा का दामन नहीं छोड़ा है. नित्य नई घोषणाएं [illegible] आश्वासन अब खोखले लगने लगे हैं. [illegible] में किसी भी आशा को पाले रखने के लि[illegible] महानगर की आयु में 20 वर्ष का समय केवल कुछ क्षण के बराबर नहीं? जल्दबाजी किस बात की? क्या जरू[illegible] जल्दी प्रदूषण दूर करने की?

कुछ समय पहले दिल्ली नगर नि[illegible] मुख्य इंजीनियर (जल) ने एक विचारगो[illegible] कहा था कि दिसंबर 1982 तक यमुना को [illegible] तरह प्रदूषण विहीन कर दिया जाएगा. [illegible] इस कथन की सत्यता पिछले प्रयत्नों [illegible] प्रदूषण की अधिकता को देखते हुए संदेह[illegible] है

अपर्याप्त मल विर्सजन व्यवस्था

दिल्ली जैसे महानगर में अधि[illegible] कूड़ाकरकट पानी के साथ मिला कर विस[illegible] किया जाता है. इस महानगर में 30 क[illegible] गैलन तरल मल नित्य बनता है. इस [illegible] केवल 12 करोड़ गैलन गंदे पानी [illegible] उपचारित करने की सुविधा इस [illegible] उपलब्ध है. अर्थात 18 करोड़ गैलन [illegible] पानी अब भी नित्य यमुना में प्रवाहित कि[illegible] जा रहा है. सन 2001 तक दिल्ली में गंदे [illegible] की मात्रा बढ़ कर 70 करोड़ गैलन प्रतिदि[illegible] जाएगी. पर हाल में बनी दीर्घका[illegible] योजनाओं के अनुसार सन 2001 तक के[illegible] 35 करोड़ गैलन गंदा जल उपचारित क[illegible] की सुविधा ही नगर निगम जुटा सके[illegible]

इस स्थिति को मद्देनजर रखते [illegible] यमुना को इस वर्ष के अंत तक प्रदूषण र[illegible] करना तो दूर की बात रही अगर प्रदूषण [illegible] को ही रोक लिया जाए तो बड़ी बात हो[illegible] यहां यह कहना प्रासंगिक होगा कि वि[illegible] स्वास्थ्य संगठन ने 1981-90 को विश्व [illegible] जल दशक घोषित किया हुआ है. इस दौ[illegible] विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोगी [illegible] जनसंख्या को शुद्ध पेय जल काफी मात्र[illegible] उपलब्ध किए जाने के लिए प्रयत्न करें[illegible]

राष्ट्रीय स्तर पर नियोजन करने [illegible] को इस बात का केवल एहसास ही नहीं है[illegible]

चाहिए कि यमुना में प्रदूषण की रोकने की स्थिति हाथ से निकलती जा रही है अपितु यह निर्णय लेना चाहिए कि यमुना की प्रदूषण मुक्ति का कार्य तुरंत आरंभ किया जाए. अगर अगले 25 वर्ष तक कोई कदम न उठाया गया तो यमुना के तटवर्ती प्रदेशों की जनसंख्या व वनस्पति के स्वास्थ्य को भयंकर खतरा पैदा हो जाएगा और स्थिति किसी तरह भी नहीं संभलेगी, क्योंकि घातक विष के प्रभाव को प्रभावहीन करने में निरंतर संघर्षरत यमुना की शक्ति तब मर चुकी होगी.

यह तो शुक्रगुजार होना चाहिए हमें बाढ़ का जो प्रति वर्ष यमुना में जमा हुई गंदगी को समुद्र में बहा ले जाती है और उसे पुनः निर्मल कर जाती है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी

विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्पष्ट चेतावनी के बावजूद दिल्ली में औद्योगिक व घरेलू गंदे जल को सिंचाई के लिए प्रयुक्त किए जाने की एक आत्मघाती योजना अभी जनवरी, 1982 में ही क्रियान्वित हुई है. नई दिल्ली के दैनिक 'टाइम्स आफ इंडिया' में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार महरौली व नजफगढ़ क्षेत्रों में 5,000 हैक्टेयर कृषि भूमि को शहरी गंदे जल से सींचा जाएगा. इस सिंचाई परियोजना के लिए गंदा जल ओखला के मल उपचारित करने वाले प्लांट से नहर द्वारा खेतों तक ले जाया जाएगा. शायद यही वह रहस्य है जिस के आधार पर मुख्य इंजीनियर (जल) ने इस साल दिसंबर तक यमुना को प्रदूषणविहीन बनाने का दावा किया है.

इस सिंचाई परियोजना पर लगभग सात करोड़ रुपए खर्च होंगे. इतनी मात्रा में रुपया खर्च कर के प्रदूषण तो कम न होगा, हां, उस की दिशा अब यमुना न हो कर खेत होंगे. यदि इस योजना के बनाने वाले और उस पर अमल करने वाले यह जानते हैं कि ऐसा करने से वे खाद्यों में जहरीले पदार्थों का समावेश कर देंगे तो यह कहना गलत न होगा कि वे जानबूझ कर दिल्ली की आबादी के
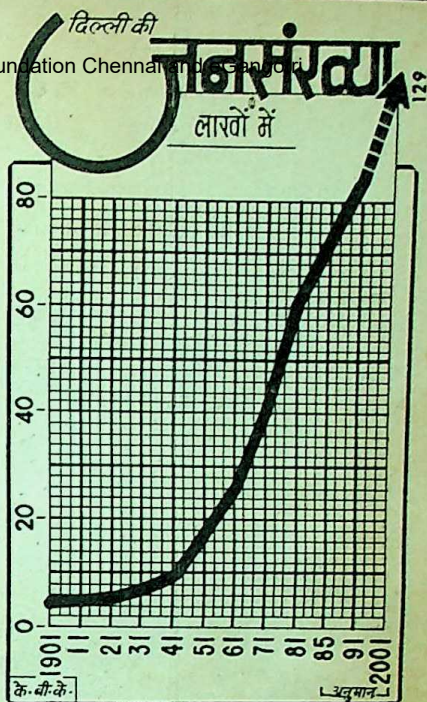
स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, क्योंकि गंदे जल में तांबा, जस्ता, पारा, सीसा, मेगनीज, लीथियम व पोटासियम जैसी घातक धातुएं मिली होती हैं. यही धातुएं धीरेधीरे वनस्पति और उस के जरिए पशुओं के दूध और अनाज में पहुंच कर मानव स्वास्थ्य को हानि पहुंचाती हैं.

दिल्ली में प्रदूषण की मात्रा को कम करने और कुछ समय बाद इसे पूरी तरह समाप्त करने के लिए प्रशासन को विज्ञान की सहायता कम और प्रकृति की सहायता अधिक लेनी पड़ेगी. प्रकृति को लगे घाव और आघात का इलाज प्रकृति के ही पास है. प्रकृति में स्वयं को संवारने की एक अद्भुत ताकत है.

प्रदूषण को कम करने के उपायों के अलावा दिल्ली में बाहर से आ कर बसने वाले नए लोगों की स्थायी रूप से बसने की प्रवृत्ति पर भी प्रभावी नियंत्रण करना होगा. साथ ही दिल्ली में जनसंख्या वृद्धि की दर वर्तमान 2.5 प्रतिशत से घटा कर एक प्रतिशत करने का प्रयत्न करना होगा. दिल्ली और सीमावर्ती राज्यों के साधनों पर इस समय इस की जनसंख्या का अत्यधिक दबाव है. 25 वर्ष

बाद यह दबाव दिल्ली महानगर की जी... संबल व्यवस्था को पंगु बना सकता है... महानगरीय व्यवस्था व प्रणालियां चरम... कर टूट जाएंगी.

अगर देखा जाए तो दिल्ली महानगर... आबाद इलाके की तुलना में खुली जगह और हरियाली का अनुपात 5 प्रतिशत भी न... बैठता, जब कि मास्को, लंदन, न्यूयार्क, बैंकोक, बंगलौर और पेरिस जैसे महानगरों में खुला इलाका व हरियाली कुल क्षेत्र का कम से कम 30 प्रतिशत तो है ही. मास्को में तो... 35-40 प्रतिशत है. दिल्ली में हरा क्षेत्र बढ़ाने के लिए अगले 25 वर्ष में 50 करोड़ नए वृक्ष लगाए जाने की आवश्यकता है. यह तो उ... अवस्था में है जब नियोजित नई दिल्ली और उत्तर अरावली छोर पर पहाड़ी क्षेत्र पर फैले जंगल बरकरार रहे. नई दिल्ली में बड़े... छायादार व चौड़ी पत्ती वाले पेड़ों ने प्रदूषण नियंत्रण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और निभा रहे हैं. पहाड़ी क्षेत्र का तो दिल्ली के पर्यावरण में महत्त्वपूर्ण स्थान है.

यहां व्यक्त किए गए विचारों को निराशावादी चिंतन कहना अन्याय करना होगा. भविष्य के खतरों के प्रति अभी सचेत होना और उन से बचने के उपाय करना मानव की सहज व जागरूक प्रकृति का परिचय है. दिल्ली में यदि अभी से वायु व जल प्रदूषण नियंत्रण व निवारक उपाय लागू न किए गए तो शीघ्र ही महानगर प्रदूषण के क्रूर पंजों की चपेट में होगा. तब इस महानगर के नागरिकों के लिए साफ वायु और पेय जल विश्व में सब से ज्यादा जरूरत की चीजें बन जाएंगी.

दिल्ली के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रदूषण का हर आघात यहां के हर बाशिंदे की आयु कम कर जाता है. इस का असर भावी पीढ़ी पर भी पड़ेगा. दिल्ली को स्वस्थ, आकर्षक और जिंदा रखने के लिए यहां के हर नागरिक को अब जाग जाना होगा. नहीं तो सन 2050 में दिल्ली में हर मानव गैसमास्क लगा कर चलता नजर आएगा. उस समय पीछे मुड़ कर देखना असंभव होगा.

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हमारे विद्यालय में एक दिन धोतीकुर्ता पहने एक सज्जन आए और उन्होंने प्राचार्य का कमरा पूछा. उन दिनों बहुत से लोग चंदा मांगने आते थे, अत: छात्रों ने अनापशनाप कह कर उन्हें वापस भेज दिया. वह बाहर चले गए.

कुछ देर बाद वही सज्जन फिर आए. इस बार उन का सूटकेस चपरासी ले कर चल रहा था.

छात्रों ने फिर उन का मजाक उड़ाया, लेकिन वह चुपचाप चले गए.

बाद में वही सज्जन जब हमारी कक्षा में रसायनशास्त्र पढ़ाने आए तो सभी छात्रों के सिर शर्म से झुक गए.

—सतीश वर्मा (सर्वोत्तम)

*

कक्षा में हमारे शिक्षक कुछ काम कर रहे थे और बारबार लड़कों से शांत रहने को कह रहे थे. थोड़ी देर बाद एक लड़के ने मुझे पीछे से आवाज दी. मैं ने उस का कोई ज़वाब ही नहीं दिया.

उस ने दोबारा आवाज लगाई तो मैं बोला, ''भाड़ में जाओ.''

यह सुन कर शिक्षक ने पूछा, ''क्या बात है?''

उस लड़के ने मेरी ओर इशारा कर के कहा, ''वह मुझे भाड़ में जाने को कह रहा है.''

शिक्षक ने तुरंत कहा, ''नहीं, नहीं, छुट्टी होने से पहले कोई कहीं नहीं जाएगा.''

—ओमदत्त चावला

*

हमारे एक शिक्षक बहुत योग्य थे, लेकिन कभी साफ कपड़े पहन कर विद्यालय नहीं आते थे. इस के लिए प्रधानाध्यापक ने उन्हें कई बार टोका भी था. पर एकाएक वह शिक्षक अब साफ कपड़े पहन कर आने लगे. यह देख कर हमारे प्रधानाध्यापकजी भी आश्चर्य में पड़ गए. वास्तविकता यह थी कि हमारे विद्यालय में एक बहुत सुंदर अध्यापिका की नियुक्ति हो गई थी.

—नंदलाला हकदुनिया

*

एक बार मैं अपने पिताजी के साथ दुकान में बैठा था तभी मेरे एक शिक्षक उधर आए. उन्हें देखते ही मेरे पिताजी ने कहा, ''प्रणाम, अध्यापकजी.'' लेकिन उन्होंने बजाए प्रणाम का उत्तर देने के पूछा, ''तुम बता सकते हो कि फोल्डिंग छाता कहां मिलेगा.''

यह देख कर मैं चौंक गया, क्योंकि मेरे पिताजी आयु में शिक्षक से काफी बड़े थे, फिर भी वह शिक्षक उन से ढंग से बात नहीं कर रहे थे. मेरे पिताजी उन के लिए आप शब्द का प्रयोग करते रहे लेकिन वह शिक्षक तुम शब्द का प्रयोग ही करते रहे.

—विष्णुप्रसाद राजगढ़िया

कीमतें कम करने के लिए :
• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए:
• करों में कमी कीजिए
• सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है

हृदय परिवर्तन

एक विदेशी-जिज्ञासु ने
एक भारतीय सज्जन से पूछा,
क्या बात है कि
आप के देश में हृदय परिवर्तन के लिए
शल्य क्रिया बहुत कम होती है?
उन सज्जन ने उत्तर दिया,
श्रीमान, इस मामले में हम आप से
बहुत आगे हैं
हम बिना शल्य क्रिया के ही
हृदय परिवर्तन कर लेते हैं.
विदेशी चौंका, कुछ झल्लाया
फिर बोला, कुछ समझ नहीं आया.
उस ने कहा, घबराएं नहीं,
मैं अभी समझा देता हूं,
आप की जिज्ञासा को शांत कर देता हूं.
हमारे यहां के एक लड़के का बाप
जो अपनी बेटी की शादी के समय
पगडी तक पैरों पर रखने को तैयार होता है,
हर तरह से मजबूर लाचार होता है,
किस तरह हाथ पीले करे, यही सोचता है,
वही बाप अपने बेटे की शादी के समय
अपनी भावी पुत्रवधू के बाप की पगड़ी को
ठोकर मारने को तैयार हो जाता है,
कल तक जो बेटा बाप की सुनता नहीं था
वह पिता का आज्ञाकारी सुपुत्र हो जाता है.
मैं क्या जानूं, पिताजी जानें, कह कर
अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाता है.
अभी भी नहीं समझे तो
और समझाता हूं,
एक नेता जो कल तक
उस पार्टी को सैकड़ों सुनाता था
आलोचना करते नहीं अघाता था
विरोध में लंबे वक्तव्य छपवाता था,
वही नेता
उस पार्टी के सत्ता में आते ही
उस पार्टी के एकमात्र नेता के आगे
कुत्ते की तरह दुम हिलाता है,
पक्का स्वामीभक्त बन जाता है
और पूछो कि यह क्या हुआ
तो शान से कहता है—
हमारा 'हृदय परिवर्तन' हो गया है

—डा. सुशीलचंद जैन

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

जमीन भी जायदाद भी, फिर भी पेंशन दी जा रही है

विहार के नालंदा जिले के अस्थामा प्रखंड में 67 वर्षीय पिता और उस के 70 वर्षीय पुत्र को वृद्धावस्था पेंशन देने का एक रोचक मामला सामने आया है.

नालंदा के जिलाधिकारी शिशिरकुमार लाण ने इस मामले को पकड़ा है. इसी गांव के एक अन्य किसान परिवार के पांच सदस्यों को भी पेंशन दी जा रही है. उस के पास सात एकड़ जमीन है, जिले में अब तक इस तरह के 50 मामले प्रकाश में आए हैं.

—आज, पटना (प्रेषक : निखिलकुमार पंत)

*

साधु की नवयौवना से शादी

इंदौर में एक अधेड़ उमर का साधु अमरदेव गीता भवन में प्रवचन करते समय एक 22 वर्षीया नवयौवना पर रीझ गया और अंत में दोनों विवाह के सूत्र में बंध गए.

गौमुखी घाट पर हुए इस विवाह में साधू की ओर से एक तथा वधू की ओर से करीब 50 लोग उपस्थित थे. इस अनोखे विवाह को देखने के लिए भी भारी भीड़ जमा हो गई थी.

—युगधर्म, जबलपुर (प्रेषक : विद्या महाचार्य)

*

भिखारी ने वादा निभाया

अभी तक इंडियन एअर लाइंस के विमान से केवल अमीर ही यात्रा करते थे लेकिन एक भिखारी ने अपनी प्रेमिका को विमान से यात्रा करा के अपना 35 वर्ष पुराना वादा पूरा किया.

60 वर्षीय भिखारी हरीदास वैष्णव और उस की 55 वर्षीया प्रेमिका त्रिपुरा के एक गांव के रहने वाले हैं. उन्होंने अगरतल्ला से कलकत्ता तक हवाई यात्रा की.

इस भिखारी ने थोड़ाथोड़ा कर के अब तक जो कुछ पैसा बचाया था वह हवाई जहाज से यात्रा में खर्च कर दिया. जब दोनों नवद्वीप में उतरे तो भिखारी ने कहा, "मैं ने अपनी प्रेमिका को दिया गया वादा आज पूरा कर दिखाया." **—सांध्य समाचार, दिल्ली (प्रेषक : ओमदत्त)**

*

थानेदार रिश्वत लेते गिरफ्तार

1980 में श्रेष्ठ सेवाओं के लिए राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत गंगानगर के एक थानेदार को 200 रुपए की रिश्वत लेने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है.

पुलिस उच्चाधिकारियों के अनुसार मुकलावा थाने में थानेदार अब्दुल अजीज को भ्रष्टाचार निरोधक शाखा ने रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा.

उसे निलंबित कर के लाइन हाजिर कर दिया गया है.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : अनिलकुमार वालिया) (सर्वोत्तम) •

बनारसी साड़ियों में अब वह पहले जैसी गुणवत्ता और कोमलता नहीं रह गई है, फिर भी क्या कारण है कि देशविदेश में इस की मांग लगातार बढ़ रही है?

बनारस का साड़ी उद्योग

लेखक

विवेक सक्सेना

बनारसी सिल्क की साड़ियों की बात ही कुछ और होती है. समय के साथसाथ भले ही साड़ियों में लगने वाले रेशम की मात्रा कम होती जा रही हो, पर उन की मांग बराबर बढ़ती जा रही है. किसी समय वाराणसी में ऐसी रेशमी साड़ियां तैयार की जाती थीं जो मुट्ठी में आ जाती थीं व अंगूठी के अंदर से पार निकल जाती थीं. बढ़ती हुई महंगाई के कारण अब वह बात नहीं रही.

इस बारे में जब एक उद्योगपति से यह पूछा गया कि क्या आजकल ऐसी साड़ियां तैयार नहीं की जा सकती हैं तो उस ने छूटते ही कहा, "साह घटाए आना तो जुलाहा घटाए बाना." अर्थात जब कीमत में कमी करने को

बात आती है तो मजबूरन निर्माता को साड़ी की गुणवत्ता में कमी करनी पड़ती है.

वाराणसी का सिल्क उद्योग बहुत पुराना है. इस पेशे में लगे कारीगर पीढ़ियों से यही काम करते आ रहे हैं. एक वर्ग विशेष के ही लोग साड़ियां बुनने का काम करते हैं. वाराणसी व उस के आसपास के गांवों में लगभग 25,000 बनारसी साड़ी के निर्माता हैं.

अभी तक अलगअलग रंग के बार्डर वाली सिल्क की साड़ियां दक्षिण भारत में ही बनती थीं, पर अब इन्हें वाराणसी के साड़ी निर्माताओं ने भी बनाना शुरू कर दिया है. इन साड़ियों पर सोने व चांदी का पानी चढ़े तारों से काम किया जाता है. सिल्क की बनारसी साड़ियों के साथ ही तंजोई, आरगेंजा, साटन व टैंपल साड़ियां भी वाराणसी में बनने लगी हैं.

दक्षिण भारतीय रेशम की साड़ियां बनारसी साड़ियों की तुलना में भारी होती हैं. प्रत्येक साड़ी का भार उस में प्रति मीटर लगने

लुभावने रंगों और डिजाइनों के कारण बनारसी साड़ियों के प्रति महिलाओं का आकर्षण हर मौसम और हर फैशन के दौर में बना रहता है.

वाले सिल्क के भार पर निर्भर करता है. यह भार जितना अधिक होता है, साड़ी उतनी ही महंगी हो जाती है. वैसे साड़ी का भार बढ़ाने खास तौर पर उसे मोटा दिखाने के लिए उस में हलका कलफ भी दे दिया जाता है.

अच्छी क़िस्म के रेशम से बनी साड़ी बहुत मुलायम होती है, जब कि घटिया सिल्क से बनी साड़ी खुरदरी होती है. बनारसी साड़ियां 250 रुपए से ले कर 2,000 रुपए तक की आती हैं. वाराणसी की बनी तंजोई साड़ियों में रेशमी धागों से बूटियों का डिजाइन डाला जाता है. सस्ती तंजोई साड़ियों में एक धागा सूती व एक धागा रेशमी लगाया जाता है. आरगेंजा साड़ियों में भी चांदी व सोने का पानी चढ़े तारों से सुंदर बार्डर तैयार किए जाते हैं.

इस समय वाराणसी में एक लाख से अधिक लोग इस उद्योग में लगे हुए हैं. इन में

से 80 प्रतिशत अभी भी हथकरघे पर साड़ियां तैयार करते हैं. हथकरघे से तैयार की जाने वाली साड़ियों में एक अनोखी सुंदरता छिपी रहती है. बिजली से चलने वाले करघे से साड़ियां काफी जल्दी तैयार हो जाती हैं, पर एक तो यह काफी महंगा होता है, दूसरे व्यापारी को इस से कोई विशेष लाभ नहीं मिलता, क्योंकि साड़ियां दैनिक मजदूरी पर नहीं बल्कि ठेके पर तैयार की जाती हैं.

साड़ियों में मुख्यत: शिफान व आरगेंजा की साड़ियां तैयार की जाती हैं. आरगेंजा की साड़ी में जो धागा काम में लाया जाता है वह इकहरा होता है. इसलिए साड़ी लगभग पारदर्शक नजर आती है जब कि शिफान में दोहरा धागा इस्तेमाल करने के कारण यह भारी हो जाती है. प्रत्येक साड़ी की कीमत उस में लगने वाले रेशम व उस की बनावट पर निर्भर करती है.

आम तौर पर एक साड़ी का भार 25 से 50 ग्राम प्रति मीटर होता है. इस के अलावा इस में जरी व सोने तथा चांदी के पानी चढ़े तारों का भी उपयोग किया जाता है. यह तार बंबई से मंगवाया जाता है. अच्छी किस्म का तार कभी काला नहीं पड़ता.

इस उद्योग में लगे लोग समयसमय पर डिजाइन बदलते रहते हैं. ये डिजाइन खास तौर पर तैयार करवाए जाते हैं व उन्हीं के आधार पर साड़ियां तैयार की जाती हैं. डिजाइनों की चोरी बहुत बड़ी समस्या है. जहां एक बार किसी विशेष डिजाइन की साड़ी बाजार में आई नहीं कि तुरंत उस की नकल कर के ठीक वैसी ही साड़ियां तैयार कर दी जाती हैं. इसलिए इस उद्योग में लगे लोग यही प्रयास करते हैं कि किसी विशेष डिजाइन की ज्यादा से ज्यादा साड़ियां तैयार कर के ही उसे बाजार में लाएं.

डिजाइन की नकल एक समस्या है

इस बारे में एक व्यापारी ने बताया कि उस ने एक विशेष डिजाइन की साड़ियां तैयार करवा कर पहले दिन 600 रुपए प्रति साड़ी की दर से बेचीं. अगले दिन ही बाजार में कुछ वैसी ही साड़ियां आ जाने के कारण उसे उन्हें 550 रुपए प्रति साड़ी की दर से बेचना पड़ा व चौथे दिन तक बाजार में वैसी ही इतनी ज्यादा साड़ियां आ गई थीं कि उसे अपनी साड़ियों की कीमत 300 रुपए कर देनी पड़ी.

आम तौर पर एक साड़ी तैयार करने में तीन दिन लगते हैं. इस धंधे में लगे ज्यादातर कारीगर मुसलमान हैं. बिजली के करघे पर हर साड़ी तीन घंटे में बन कर तैयार हो जाती है. इस उद्योग में सब से बड़ी समस्या

बनारसी साड़ियों में जरी व सोनेचांदी का पानी चढ़े तारों का प्रयोग किया जाता है, जो कभी काले नहीं पड़ते.

धागे को हथकरघे या बिजली के करघे पर प्रयोग करने से पहले रीलों पर चढ़ाया जाता है.

कारीगरों की है. कारीगर अग्रिम पैसा ले कर घर बैठ जाते हैं. साड़ी के डिजाइन के अनुसार ही कारीगर भी अपनी मजदूरी लेता है. आम तौर पर 50 से 150 रुपए प्रति साड़ी तक उसे मजदूरी मिल जाती है.

इस उद्योग में कच्चे माल अर्थात रेशम की कमी तो नहीं होती, पर उस का मूल्य बहुत घटताबढ़ता रहता है. यह 300 से 900 रुपए प्रति किलोग्राम तक बिकता है. जिस साड़ी की लागत 200 रुपए आती है वह ग्राहक को 350-400 रुपए तक की मिलती है. पर इस का अर्थ यह नहीं है कि इस में निर्माता को बहुत अधिक मुनाफा मिलता है.

अधिकांश निर्माता सीधे दुकानदारों या व्यापारियों को सामान नहीं बेचते. वाराणसी में साड़ियों की भी आढ़त होती है, जहां से बाहर के व्यापारी साड़ी खरीद कर ले जाते हैं. आम तौर पर आढ़ती 3.12 रुपए प्रति सैकड़े की दर से साड़ियों की बिक्री पर अपना कमीशन लेते हैं.

शादियों के मौसम में साड़ियों की मांग काफी बढ़ जाती है. यों तो साड़ियां पूरे देश व विदेशों में भी बिकती हैं, पर ... सर्दियों
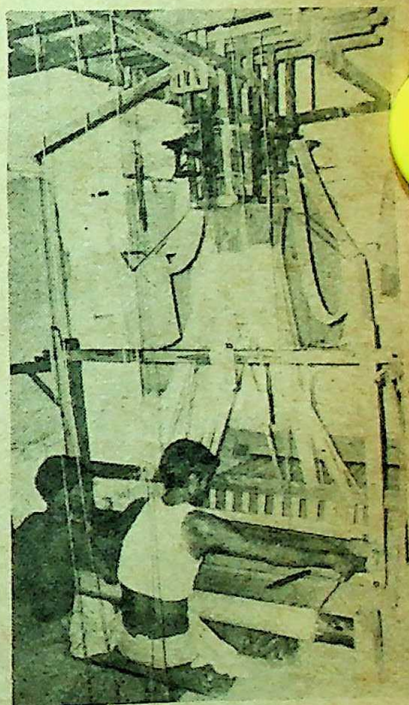
हथकरघा : इस से तैयार साड़ियों में एक अनोखी सुंदरता छिपी रहती है

की सब से ज्यादा मांग बंबई में रहती है. आरगेंजा की साड़ियां पारदर्शक होने के कारण गांवों व छोटे शहरों में ज्यादा नहीं बिकतीं.

एक साड़ी में लंबाई में 4,600 धागे होते हैं. एक हथकरघे पर एक जुलाहा व उस की सहायता के लिए एक बच्चा बैठ जाता है. साड़ियां हमेशा बन कर तैयार हो जाने के बाद ही रंगवाई जाती हैं. कभी भी रंगीन धागे से साड़ी तैयार नहीं की जाती. वैसे भी साड़ी बुनते समय गंदी हो जाती है, अतः इस साबुन के पानी से अच्छी तरह से उबाल कर धोया जाता है. उस के बाद इस की रंगाई होती है. एक साड़ी की रंगाई पर 15 रुपए खर्च आता है.

रूप खिल उठे बनारसी साड़ी में (दाएं) बिजली का करघा (नीचे) : इस से व्यापारी को कोई खास लाभ नहीं होता.

इस उद्योग की एक उल्लेखनीय बात यह है कि इस के इतने अधिक निर्माता होने के बावजूद वे आपस में संगठित नहीं हैं और न ही उन का कोई ऐसा संघ है जो साड़ियों के दामों के निर्धारण में किसी तरह का योगदान दे रहा हो. इस का मुख्य कारण यह है कि इस क्षेत्र में बहुत अधिक प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है.

अगर विभिन्न प्रकार की साड़ियों का बिक्री मूल्य निर्धारित कर दिया जाए तो भी इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि संघ के सदस्य निर्माता उस का पालन करेंगे. प्रतियोगिता के कारण वे कम से कम लाभ पर साड़ी बेचने के लिए तैयार रहते हैं. एक अन्य उल्लेखनीय बात यह भी है कि बनारसी साड़ियों की मांग अब भारत से ज्यादा विदेशों में बढ़ती जा रही है. इसलिए उन का निर्यात होने के कारण इस उद्योग के विकास की संभावनाएं और अधिक बढ़ गई हैं. ●

डिंपल : 10 लाख की मांग

राजेश खन्ना से आजाद होने के बाद डिंपल दोबारा फिल्मों में आ रही है. कई निर्मातानिर्देशक उस के पास अनुबंध करने के लिए जा रहे हैं. लेकिन जब वह 10 लाख रुपए मांगती है तो फिल्म निर्माता उलटे पांव लौट पड़ते हैं. बाहर आ

डिंपल : दस लाख रुपया पारिश्रमिक पाने की चाह क्या पूरी हो सकेगी?
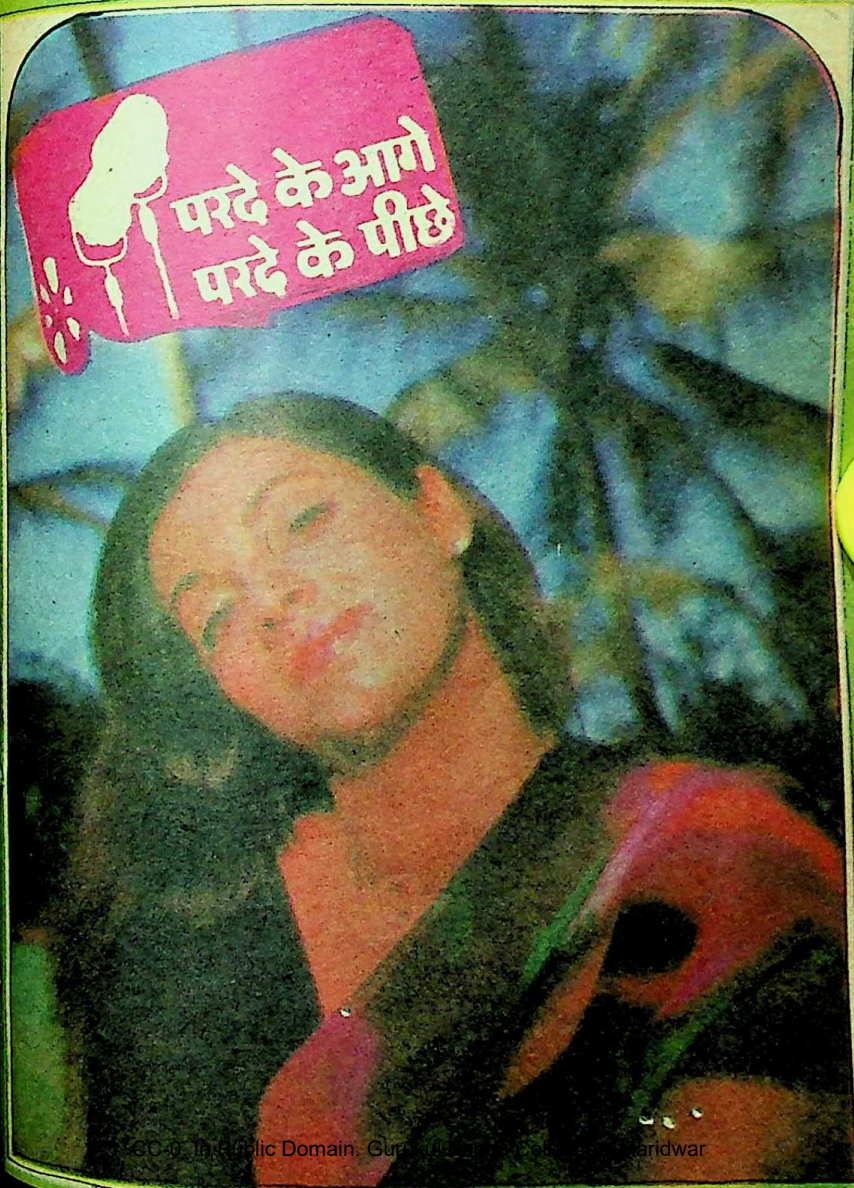
कर ये लोग कहते हैं, "10 लाख रुपए डिंपल को किस बात के दिए जाए? रेखा आज 'नंबर वन' हीरोइन है, लेकिन वह भी केवल आठ लाख रुपए ही मांगती है."

इन लोगों का कहना उचित भी है. दो बच्चों की मां बन जाने के बाद अब डिंपल में वह कशिश भी नहीं रही जो फिल्म 'बाबी' में थी. फिर बजाए डिंपल को अनुबंधित करने के छोटे बजट की कोई फिल्म बना लेने में क्या हर्ज है?

डिंपल अगर 10 लाख के लिए बैठी रही तो उसे पता नहीं कब तक इंतजार करना पड़ेगा.

बिद्दू : "मैं बहुत ही घटिया किस्म का संगीतकार हूं, जो मेरे जी में आता है ठोक देता हूं."

मैं खराब संगीतकार हूं

सच बात को स्वीकार कर लेने की हिम्मत बहुत कम लोगों में होती है. हाल ही में संगीतकार बिद्दू ने अपने बारे में अपनी राय जाहिर की तो सब लोग काफी चौंके. हुआ यह कि एक पार्टी में एक साहब बिद्दू से आ कर मिले और कहने लगे, "आप बहुत अच्छे संगीतकार हैं, आप की एक ही धुन ने लोगों को आज तक दीवाना बना रखा है."

बिद्दू से उन की झूठी तारीफ बरदाश्त नहीं हुई. उस ने कहा, "देखिए, साहब, मैं जानता हूं कि मैं बहुत ही घटिया किस्म का संगीतकार हूं, जो मेरे जी में आता है ठोक देता हूं. यह संयोग की बात है कि लोग उसे पसंद कर लेते हैं. दरअसल मैं एक जमाने में जब विदेश जाने से पहले बहुत ही अच्छी गिटार बजाया करता था तो उस वक्त मुझे किसी ने भी प्रोत्साहन नहीं दिया." बिद्दू की इस बात से साफ जाहिर होता है कि फिल्म जगत वाले असल से ज्यादा नकल को पसंद करते हैं.

चर्चे सुजाता के

"फिल्म और मंच दोनों पर सफलता हासिल करना कोई हंसी खेल नहीं है, मैंने दोनों ही स्थानों पर अपने दर्शकों का दिल जीता है." सुजाता ने यह जुमला बहुत ही पुरजोर लहजे में कहा. फिल्म 'रजिया सुलतान' में सुजाता ने एक नृत्य किया है जिस के चर्चे फिल्म जगत में काफी हो रहे हैं. इसी संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने के दौरान सुजाता ने बताया कि उसे भावुक और गंभीर भूमिकाएं बहुत अधिक पसंद हैं.

मंच से भी सुजाता जुड़ी हुई है और उस का अपना एक पूरा ग्रुप है जो देश और विदेश में नृत्य और संगीत के कार्यक्रम पेश करता है. हाल ही में वह अमरीका, लंदन, पेरिस, पाकिस्तान और अन्य देशों का दौरा कर के लौटी है और जल्द ही दुबई जाने का कार्यक्रम बना रही है. सुजाता गोपीकृष्ण की शिष्या है और कत्थक नृत्य में उस का अपना एक अलग स्थान है. फिल्मों में वह काफी अरसे से काम कर रही है. मंच पर गजलें गाने का भी सुजाता को शौक है. हाल ही में पाकिस्तान की एक कंपनी ने सुजाता की आवाज में गजलों का एक कैसेट भी तैयार किया है जो काफी लोकप्रिय हुआ है.

20 साल से फिल्मों से जुड़े रहने के बाद भी सुजाता हीरोइन नहीं बन सकी. इस का उसे कोई अफसोस नहीं है. उस का कहना है, "मेरे पास हमेशा इतनी फिल्में रहती हैं जितनी किसी हीरोइन के पास भी नहीं रहती होंगी."

फीरोज खां में परिवर्तन

हमेशा बड़े बजट की फिल्म बनाने वाले फीरोज खां में अचानक परिवर्तन आ गया है और अब वह अपनी फिल्म 'कसक' रोक कर छोटे बजट की एक फिल्म शुरू करने वाला है. अचानक फीरोज खां में यह परिवर्तन देख कर फिल्म जगत वाले तरहतरह की बातें

सुजाता : फिल्मों की कमी कभी भले ही न रही हो [illegible] वर्ष के फिल्मी जीवन में आज तक नायिका बनने का अवसर क्यों नहीं मिल सका?
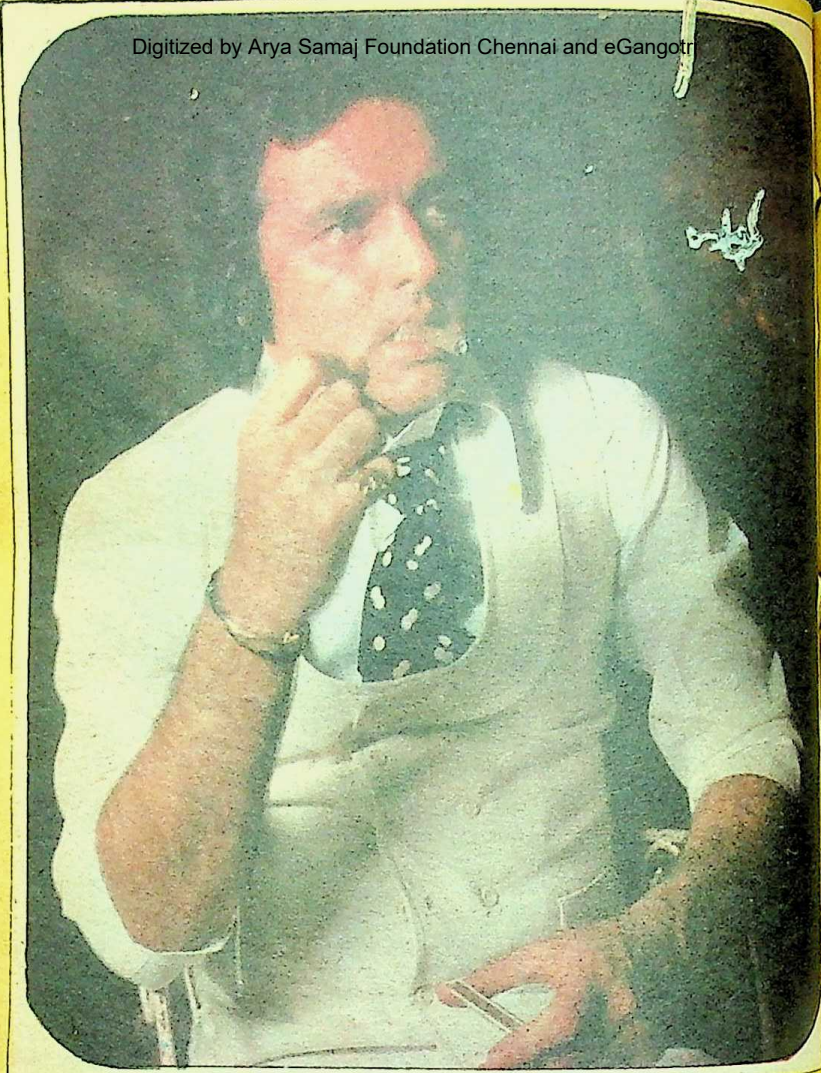
फीरोज खां : बड़े बजट की फिल्म बनाना बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात तो है अच्छी और सफल फिल्म बनाना.

करने लगे हैं.

इधर संजय खां भी छोटे बजट की एक फिल्म बनाने के मंसूबे बना रहा है. खान बंधु शायद अब यह समझ गए हैं कि बड़े बजट की फिल्में बनाना बड़ी बात नहीं है. बड़ी बात तो यह है कि अच्छी और सफल फिल्में कम से कम खर्च और कम से कम समय में बनाई जाएं. ऐसी फिल्मों में लगा धन आसानी से निकल आता है और व्यापार के एतबार से ये फिल्में घाटे की कम और फायदे की ज्यादा होती हैं.

अमजद खां : मैं सब कुछ हूं

फिल्म जगत में किसी को जरा सी सफलता मिली नहीं कि फिर वह अपने में न
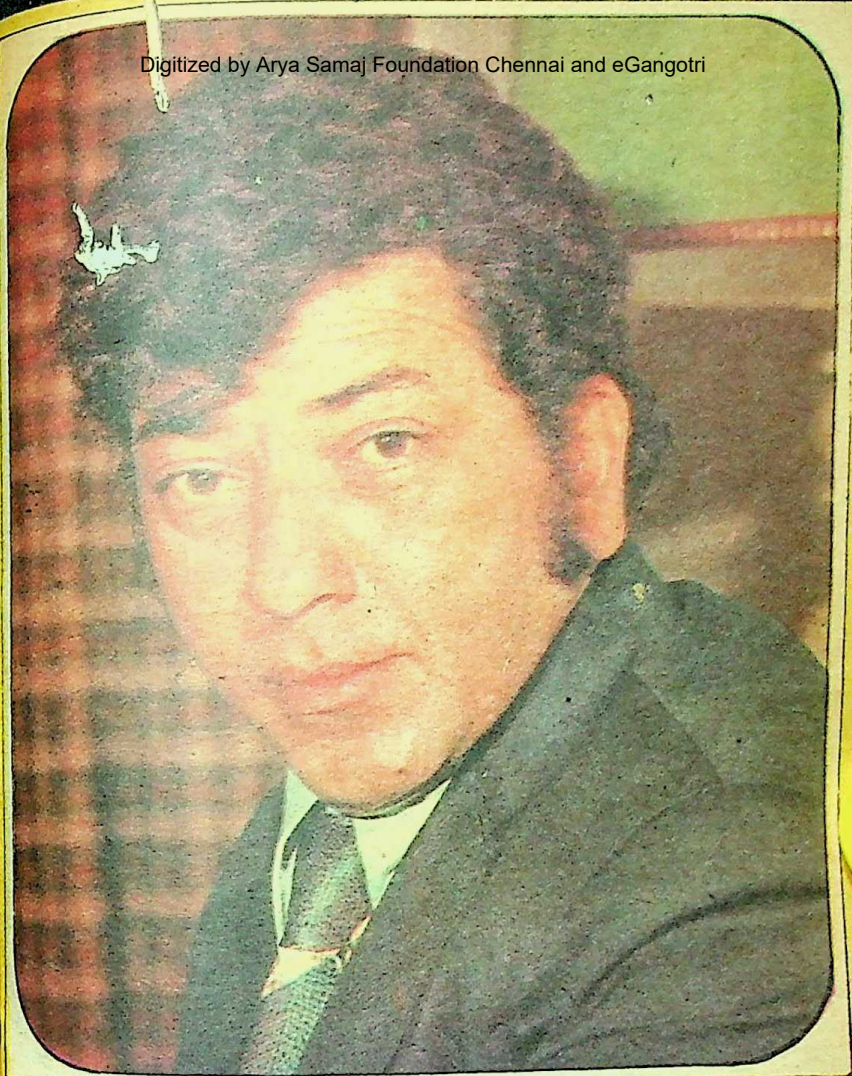
अमजद खां : अभिनय की ओर ज्यादा से ज्यादा ध्यान न दे कर लेखन और निर्देशन में टांग अड़ाना कहीं चारों खाने चित न कर दे.

को छोड़ कर हरेक के काम में दिलचस्पी लेने लगता है और इतना ही नहीं उस काम में खुद को माहिर भी समझता है.

अब अमजद खां हो ही लीजिए. फिल्म 'चोर पुलिस' का वह लेखक, निर्देशक भी बन गया है. आगे चल कर अमजद खां संगीत निर्देशक और गीतकार भी बन जाए तो आश्चर्य की बात नहीं. मजे की बात तो यह है कि अमजद खां के ससुर अख्तरूल ईमान खुद एक अच्छे लेखक हैं और उस का भाई इम्तियाज खां निर्देशक है. जब घर के लोग ही इस काम को बखूबी जानते हैं तो अमजद खां को लेखक, निर्देशक बनने की क्या जरूरत थी. अब लेखन और निर्देशन में अमजद खां ने क्या गुल खिलाए होंगे, यह तो फिल्म देखने के बाद ही पता चलेगा. ◦ ◦

पिछलें छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें स. : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी नि. : निर्देशक मु.पा. : मुख्य पा

बाजार : मुसलिम समाज में प्रचलित कुरीतियों पर चोट करने वाली फिल्म. इस में दिखाया है कि समाज में एक स्त्री का बाजार में आम बिकाऊ माल से अधिक महत्व नहीं है. **नि.** : सागर सरहदी, **मु.पा.** : स्मिता पाटिल, सुप्रिया पाठक, नसीरुद्दीन शाह, फारुख शेख. **म.**

इनसान : किसी व्यक्ति को महान सिद्ध करने का नरेंद्र बेदी का बेतुका फार्मूला. रवि विधवा सोना से शादी कर लेता है. जब उसे पता चलता है कि सोना का पति शंकर मरा नहीं था, बल्कि जिंदा है तो वह उस के लिए बलिदान हो जाता है. **नि.** : नरेंद्र बेदी, **मु.पा.** : विनोद खन्ना, जितेंद्र, रीना, अमजद, करण दीवान. **अ.**

मैं इंतकाम लूंगा : शीर्षक के अनुरूप प्रतिशोध की कहानी. मुक्केबाज कुमार गोवर्धनदास से अपने पिता की हत्या का बदला लेता है. **नि.** : रामा राव, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रीना राय, दारासिंह, श्रीराम लागू, निरूपा, अमरीश पुरी, शारदा. **अ.**

हमकदम : एक दकियानूसी परिवार की कहानी, जिस में नारी द्वारा नौकरी करना पसंद नहीं किया जाता. घिसापिटा पुराना विषय ले कर बनाई गई फिल्म. **नि.** : अनिल गांगुली, **मु.पा.** : राखी, परीक्षित साहनी, विश्वजीत, हंगल, मदनपुरी. **स.**

ईंट का जवाब पत्थर : प्रसिद्ध लेखक अलैक्जैंडर ड्यूमा के उपन्यास का भारतीयकरण कर के बनाई गई एक घटिया फिल्म. कुछ लोगों के षड्यंत्र का शिकार हो कर माधोसिंह जेल जाता है. जेल से भाग कर वह एकएक कर के सब से बदला लेता है. **नि.** : पाछी, **मु.पा.** नीता मेहता, सुरेंद्रपाल, प्रेमनाथ, अमजद, ओम प्रकाश, रजा मुराद. **अ.**

गजब : आत्मा जैसी अविश्वसनीय बातों को ले कर गढ़ी गई कहानी, जिस में मानसिक रूप से विकलांग एक व्यक्ति की आत्मा अपने पिता की जायदाद हथियाने वालों से अपने जुड़वा भाई के जरिए बदला लेती है. अविश्वसनीय घटनाओं से भरपूर एक बेतुकी फिल्म. **नि.** : सी.पी. दीक्षित, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रेखा, मदनपुरी, रंजीत. **अ.**

सितारा : गांव की गरीब लड़की की नामी हीरोइन बनने की कहानी. चोटी पर पहुंच जाने के बाद वह सच्चा प्यार नहीं पाती और वापस अपनी दुनिया में लौट जाती है. कुछ दिलचस्प प्रसंगों वाली यह एक सतही फिल्म है. **नि.** : मेराज, **मु.पा.** : मिथुन, जरीना, कन्हैयालाल. **स.**

आधारशिला : क्षेत्र चाहे कोई भी क्यों न हो [illegible] युवा को सफलता पाने के लिए संघर्ष की कई बाधाएं [illegible] करनी होती हैं. 'आधारशिला' में इसी विषय को [illegible] गया है. कमजोर व प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण की [illegible] से फिल्म कोई असर नहीं छोड़ पाती. **नि.** : अ[illegible] आहूजा, **मु.पा.** : नसीरुद्दीन शाह, अनिता. **अ.**

शौकीन : एक कामेडी फिल्म जिस में तीन [illegible] मौज करने के लिए हमेशा लड़कियों की तलाश में [illegible] हैं. लेकिन बाद में उन्हें अहसास होता है कि उन की [illegible] काफी आगे निकल चुकी है. **नि.** : बासु चटर्जी, **मु.पा.** मिथुन, रति, उत्पल दत्त, अवतारकृष्ण हंगल, अशोककुमार. **म.**

बदले की आग : भाईबहनों का अपने परिवार [illegible] बिछुड़ना, बदला लेना और डाकुओं वाले प्रसंगों [illegible] भरपूर इस फिल्म में कदमकदम पर बेतुकी हिंसा [illegible] कहानी कहीं भी नहीं है. **नि.** : राजकुमार कोहली, **मु.पा.** धर्मेंद्र, सुनील दत्त, जितेंद्र, रीना, स्मिता. **अ.**

अंगूर : विलियम शेक्सपीयर के नाटक 'कामेडी आफ एरर्ज' पर आधारित एक बेहतरीन हास्य फिल्म जिस में दो जुड़वां जोड़ों की हरकतें गुदगुदा जाती हैं. काफी समय बाद बनी एक अच्छी फिल्म, जिसे [illegible] परिवार के साथ देखा जा सकता है. **नि.**: गुलजार **मु.पा.**: सजीव, मौसमी, दीप्ति, देवेन वर्मा. **म.**

दासी : अंधविश्वासों का शिकार हो नायिका [illegible] अंधे नायक से विवाह करना पड़ जाता है. फिल्म [illegible] घटनाएं बेतुके प्रेम त्रिकोण की वजह से असहज हो [illegible] हैं, गीतसंगीत की दृष्टि से भी कमजोर फिल्म. **नि.**: [illegible] खोसला, **मु.पा.**: संजीव, मौसमी, रेखा, विक्रम. **अ.**

हीरों का चोर : आम स्टंट फिल्मों के जानेपहचाने ढर्रे पर बनी फिल्म जिस में फार्मूले तो तमाम हैं लेकिन कहानी कोई नहीं. अभिनय व तकनीकी हिसाब से फिल्म सामान्य है. **नि.**: स.क. कपूर, **मु.पा.**: मिथुन, [illegible] अशोक. **अ.**

दिल का साथी दिल : कमला हासन की हिंदी [illegible] डब की गई चौथी फिल्म. 'बाबी' और 'जूली' [illegible] कहानियों के जोड़ से बनी कहानी. दोषपूर्ण डबिंग [illegible] कारण बेकार. **नि.**: शंकरन नायर, **मु.पा.**: [illegible] बहाव, कमल हासन. **अ.**

तीसरी आंख : तीन भाइयों की कहानी. एक [illegible] बचपन में बिछुड़ जाता है और अंत में लाकेट की [illegible] से मिलता है. आम फार्मूला फिल्म. **नि.**: सुबोध मुखर्जी [illegible]

मु.पा.: धर्मेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा, जीनत, नीतूसिंह, सारिका, राकेश रोशन, अमजद. स.

दो उस्ताद : 'दो चोर' और 'दो ठग' आदि की शैली पर बनी आम फार्मूला फिल्म. बेजान और उबाऊ फिल्म. नि.: एस.डी. नारंग, मु.पा.: शत्रुघ्न सिन्हा, रीना, डैनी, विक्रम, जगदीप, नाजनीन. अ.

अशांती : ... के कलाकारों को ले कर बनाई गई अपराध फिल्म, फिल्म में तीन नायक और तीन ही नायिकाएं हैं. सभी मिल कर राजा भीष्म बहादुरसिंह और उस के गिरोह को समाप्त करते हैं. घटनाओं में गति. नि.: उमेश मेहरा, मु.पा.: राजेश खन्ना, जीनत, शबाना, परवीन बाबी, मिथुन, कंवलजीत, अमरीश पुरी. स.

नमकहलाल : एक सीधेसादे ग्रामीण की कहानी जो शहर में जा कर एक होटल मालिक की उस के मैनेजर के षड्यंत्रों से रक्षा करता है. अपराध फिल्म होते हुए भी हास्य का रोचक वातावरण छाया रहता है. नि.: प्रकाश मेहरा, मु.पा.: अमिताभ, शशि कपूर, वहीदा, परवीन बाबी, स्मिता पाटिल, ओम प्रकाश. म.

सवाल : अपराध जगत का बादशाह सेठ धनपतराय तस्करी और अवैध धंधों का बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित करता है, पर मकड़ी के जाले की तरह खुद ही उस में फंस कर रह जाता है. नि.: रमेश तलवाड़, मु.पा.: शशि कपूर, संजीवकुमार, वहीदा, रणधीर कपूर, पूनम ढिल्लों. स.

दो दिल दीवाने : मूल रूप से तमिल में बनी फिल्म का हिंदी संस्करण. एक सीधीसादी प्रेम कहानी में विदेश भ्रमण का गैर जरूरी प्रसंग जोड़ दिया गया है. 'एक दूजे के लिए' की कमल व रति की जोड़ी कहीं भी प्रभावित नहीं करती. डबिंग में काफी खराबियां हैं. नि.: के. बालाचंदर, मु.पा.: कमल हासन, रति. अ.

देश प्रेमी : देशभक्ति पर बनी बेहद सामान्य फिल्म जिस में दोहरी भूमिका में भी अमिताभ सामान्य लगता है. कलाकारों की भीड़ फिल्म में जुटा दी गई है, जो बिना किसी उद्देश्य के दर्शकों को सिर्फ मनोरंजन देती है. नि.: मनमोहन देसाई, मु.पा.: अमिताभ, हेमा, उत्तम, शम्मी. म.

तुम्हारे बिना : तलाक के बाद पतिपत्नी के बीच पैदा हुए तनाव और उस से बच्चे पर पड़ने वाले प्रतिकूल असर की सहज फिल्म. नि.: सत्येन बोस, मु.पा.: सुरेश ओबराय, स्वरूप संपत. उ.

बेमिसाल : दो मित्र डाक्टरों की कहानी. डाक्टर प्रशांत चतुर्वेदी धन के लालच में गर्भपात और अवैध काम करने लगता है. डाक्टर सुधीर उसे अपने त्याग द्वारा सीधे रास्ते पर लाता है. नि.: ऋषिकेश मुखर्जी, मु.पा.: अमिताभ, राखी, विनोद मेहरा, अरुणा ईरानी, शीतल. म.

जीवनधारा : 'तपस्या' फिल्म की भांति संगीता नौकरी कर के अपने भाईबहनों का पालनपोषण करती है. परिवार के लिए एक युवती के त्याग की मार्मिक कहानी. नि.: त. रामाराव, मु.पा.: रेखा, अमोल पालेकर, सिपल कापड़िया, मधु कपूर, राकेश रोशन, कंवलजीत. उ.

प्यारा दोस्त : खजाने की खोज की ऊलजलूल फिल्म. असली कहानी को पीछे हटा कर अमजद खान अपनी भूमिका को तूल देता चला जाता है. नि.: इम्तियाज खान, मु.पा.: नसीरुद्दीन, रंजीता, अमजद, इम्तियाज खान. अ.

राजपूत : मनु और जानकी प्रेम करते हैं, पर जानकी की शादी धीरेंद्र से हो जाती है. अंत में धीरेंद्र को बचाते हुए मनु का बलिदान हो जाता है. मनु के भाई भानु की प्रेमिका कमली को राजा साहब के आदमी उठा ले जाते हैं. अंत में भानु का विवाह राजा की लड़की कामिनी से होता है. पात्रों और घटनाओं से भरपूर रोचक फिल्म, नि.: विजय आनंद, मु.पा.: हेमा, धर्मेंद्र, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, रंजीता, टीना, रणजीत. म.

श्रीमान श्रीमती : एक ऐसे युगल की कहानी है जो फिल्म 'बावर्ची' की तरह दुखी परिवारों में जा कर उन की समस्याएं हल करते हैं. अति नाटकीय घटनाओं से युक्त मद्रासी फार्मूले की पारिवारिक फिल्म. नि.: विजया रेड्डी, मु.पा.: संजीव, राखी, राकेश रोशन, दीप्ति नवल, अमोल पालेकर, सारिका, श्रीराम लागू. स.

शमा : शमा एक स्त्री के जीवन के उतारचढ़ावों की कहानी है, जिस की शादी असलम से तय होती है, पर परिस्थितिवश असलम के बड़े भाई विधुर यूसफ से हो जाती है. इस के बाद देवर के जुल्मों और मां बेटे के प्यार की कहानी बन जाती है. नि.: नईम बसीत, मु. पा.: गिरीश करनाड, शबाना, कुलभूषण खरबंदा, अरुणा ईरानी. स.

जियो तो ऐसे जियो : भाइयों के कहने पर कुंदन गांव छोड़ जाता है और बंबई जा कर अपने परिश्रम व ईमानदारी से उन्नति के शिखर पर पहुंचता है. भाई बरबाद हो जाते हैं. करुण मिलन के साथ अंत. नि.: कनक मिश्र, मु.पा.: अरुण गोविल, देवश्री राय, जयश्री गडकर, विजय अरोड़ा, नीलम. स.

प्यारा तराना : मूल रूप से तमिल भाषा में बनी फिल्म का डब संस्करण, संगीतमय फिल्म में सब से ज्यादा कमजोर पक्ष संगीत का ही रहा है. निर्देशन व फिल्म का प्रस्तुतीकरण बेहद सामान्य. नि.: के. बालाचंदर, मु.पा.: कमल हासन, जयप्रदा. अ.

प्रेम रहस्य : एक किशोर व बड़ी उम्र की युवती के बीच शारीरिक आकर्षण की कहानी जो अश्लील दृश्यों की वजह से अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर पाती. मूलतः यह फिल्म मलयालम भाषा में बनी थी. नि.: के. भारतन, मु.पा.: जया भारती, सोमन. अ.

उस्तादी उस्ताद से : 'मुकद्दर का सिकंदर' व 'हम किसी से कम नहीं' के प्रसंगों को ले कर बनी अस्वाभाविक फिल्म जिस में मारधाड़ की घटनाओं का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल किया गया है. नि.: दीपक ..., मु.पा.: मिथुन, रंजीता, विनोद. स.

सैलून से सैट तक

भेंटवार्ता: ... खान

अमिताभ: बालों ... मामले में कैरानवी ... सलाह कामयाब ...

हकीम कैरानवी

सन 1957 में हकीम कैरानवी कुछ 'बड़ा' बनने का सपना ले कर बंबई पहुंचा और 'बड़ा' बनने के लिए संघर्ष शुरू कर दिया. शुरुआत हुई छोटे काम से. पहले पेंटिंग का काम किया, जिस के बदले उसे महीने में 50 रुपए मिलते थे. पचास रुपए में मुशकिल
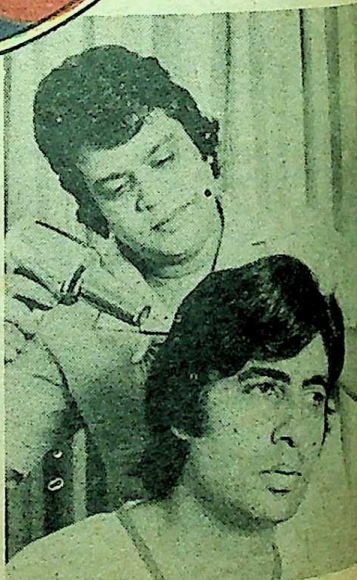
से गुजारा होता था, [illegible] इस काम से जल्दी ही मन उचाट हो गया. उन्हीं दिनों उस के रिश्ते का एक भाई ताजमहल होटल के 'हेअर कटिंग सैलून' में काम किया करता था. अतः उस से बालों को सैट करने की कला सीखी और [illegible] में निपुणता प्राप्त करने के

फिल्म अभिनेताओं के बाल काटतेकाटते हकीम कैरानवी फिल्मों में बतौर अभिनेता भी आने लगे हैं, लेकिन फिल्मों की चकाचौंध में आ कर भी उन्होंने अपना पुराना धंधा आज भी क्यों नहीं छोड़ा है?

[illegible] के बाल सैट करने शुरू कर दिए, जिस से उसे नाम और दाम तो मिले ही, साथ ही फिल्मों में भी काम मिलना शुरू हो गया. अब वह बालों पर कैंची चलाने के साथसाथ फिल्मों में अभिनय भी कर रहा है.

"फिल्म वालों के बाल बनाने का सिलसिला कब से शुरू हुआ?"

"काफी पहले ही शुरू हो चुका था." हकीम कैरानवी ने सोच कर बताया, "फिल्म 'छोटी सी मुलाकात' में उत्तमकुमार के बाल सैट किए थे. के.आसिफ की फिल्म 'मुहब्बत और खुदा' में मजनूं की भूमिका गुरुदत को दी गई. गुरुदत के लिए मजनूं की विग मैं ने ही बनाई थी. गुरुदत के देहांत के बाद इस भूमिका के लिए जब संजीवकुमार को लिया गया तब भी मैं ने ही विग बनाई थी. फिल्म वालों में मैं ज्यादा लोकप्रिय हुआ फिल्म

हकीम कैरानवी जय श्री तलपदे के साथ फिल्म 'प्रीत न जाने रीत' में.

'जंजीर' के बाद से. इस फिल्म के लिए मैं ने अमिताभ के बाल सैट किए थे, यों तो अमिताभ के बाल मैं 'सात हिंदुस्तानी' के समय से सैट कर रहा हूं, मगर 'जंजीर' तक उन्होंने अपने बालों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था. उन के बाल आम लोगों की तरह थे. मैं ने उन्हें राय दी कि अगर वह अपने चेहरे की तुलना में बाल बड़े रखें तो ज्यादा अच्छा रहेगा. उन्होंने मेरी बात मानते हुए बाल बड़े रखने शुरू कर दिए और मैं ने उन्हें एक नए अंदाज से सैट किया. वह अंदाज इतना लोकप्रिय हुआ कि पूछिए मत. आज जिस को देखो वही अमिताभ की तरह बाल रखे हुए है."

"और किनकिन कलाकारों के बाल सैट करते हैं आप?"

"अमिताभ के अलावा दिलीपकुमार, विनोद खन्ना, सुनील दत्त, शत्रुघ्न सिन्हा, शम्मी कपूर, शशि कपूर, फीरोज खान, अजीत, विक्रम, दीपक पराशर, धीरज, जूनियर महमूद रंजन, हीरालाल, संजीव कुमार, कामरान, रजा मुराद, महीपाल, जानी बाबू, ओमप्रकाश रल्हन, राज बब्बर, संजय दत्त और कुमार गौरव जैसे नए पुराने और छोटे बड़े कलाकारों के बाल सैट करता हूं. फिल्म वालों के अलावा मेनका गांधी, जूडो कराटे विशेषज्ञ ब्रूस ली, क्रिकेट खिलाड़ी नवाब पटौदी, टोनी ग्रेग, पाकिस्तानी शायर कतील शिफाई और विश्व विख्यात लेखक हेडली चेस के बाल सैट कर चुका हूं."
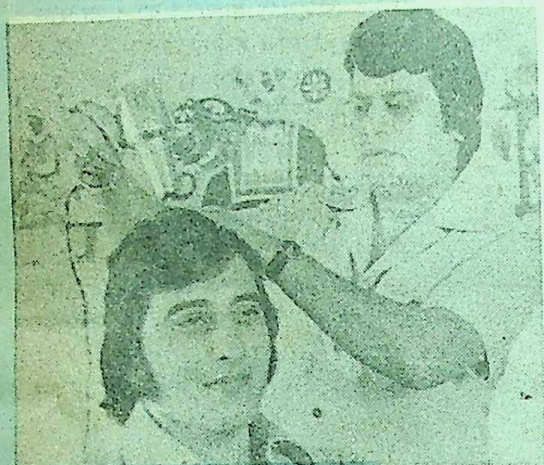
विनोद खन्ना : बालों के मामले में कैरानवी के प्रशंसक.

दिलीपकुमार : अभिनय का अंदाज मेरा अपना, बालों का अंदाज कैरानवी की देन.

"फिल्म वालों के सामने बड़े बड़े निर्माता सिर झुकाते हैं. मगर इन फिल्म वालों के सिर तो आप के सामने झुकते हैं. किसी किस्म की परेशानी तो नहीं होती?"

प्रश्न सुन कर पहले तो हकीम कैरानवी हंस दिया, फिर बोला "परेशानी कैसी साहब. उन्हें मुझ से बाल सैट करवाने होते हैं और मुझे उन के बाल सैट करने होते हैं. फिर वे मुझे परेशान क्यों करने लगे? दिलीपकुमार

बाल बनवाते समय आलोचना करते भी सुनाते रहते हैं. उन के बालों का अंदाज भी बहुत अच्छा है. उन की तारीफ करना तो सूरज को चिराग दिखाने के बराबर है. उन के अंदाज को तो लोग आज तक पसंद करते हैं. सुनील दत्त के आगे के बाल कम हो रहे थे. मैं ने उन्हें भी बड़े बाल रखने की सलाह दी. उन बड़े बालों की वजह से यह कमी दूर हो गई.

"शत्रुघ्न सिन्हा को गोल घूम जाने वाले बाल बिलकुल पसंद नहीं. वह उन गोल घूम जाने वाले बालों को फौरन कटवा लेते हैं. अपने बालों के सिलसिले में वह मुझ से बराबर राय लेते रहते हैं. पिछले दिनों एक अंगरेजी पत्रिका ने उन से मेरे मनमुटाव की एक मनगढ़ंत कहानी छापी थी, जिस में रत्ती भर भी सच नहीं था. अमिताभ बच्चन के बाल मैं उस वक्त से काट रहा हूं जब वह स्टार भी नहीं बने थे. स्टार बनने के बाद भी मैं ने उन में कोई तबदीली महसूस नहीं की. इन के अलावा सभी से अच्छे संबंध हैं, इसलिए परेशानी होने का सवाल ही पैदा नहीं होता."

अभिनेता कैसे बना?

"सैलून से सैट तक कैसे पहुंचे?"

"उत्तमकुमार से मेरी सूरत थोड़ीबहुत मिलतीजुलती है. उन का जब देहांत हुआ और उन की कुछ फिल्में अधूरी रह गईं तो उन फिल्मों के निर्माताओं ने उन की जगह मुझ से काम करवा के अपनी फिल्मों को पूरा कर लिया. बंगाली फिल्म 'कलंकिनी कंकाबती' और मनमोहन देसाई की फिल्म 'देश प्रेमी' में मैं ने उत्तमकुमार की जगह काम किया है."

"पहली बार कैमरे के सामने अभिनय करते हुए कैसा लगा?"

"पहली बार कैमरे का सामना 'कलंकिनी कंकाबती' में किया था. पहले ही दृश्य में शर्मिला टैगोर जैसी बड़ी अभिनेत्री मेरे साथ थी. पहले से जानपहचान होने के कारण कुछ ज्यादा घबराहट नहीं हुई. उन्होंने भी सहयोग दिया, जिस से 'रीटेक' कम हुए और काम बड़े इतमीनान से हो गया. इस फिल्म में मैं ने उत्तमकुमार का बचा हुआ काम पूरा किया है."

"हकीम कैरानवी की हैसियत से अभिनय दिखाने का अवसर कब प्राप्त हुआ?"

"सब से पहले ओमप्रकाश रल्हन ने अवसर दिया फिल्म 'प्यास' में. इस फिल्म में मैं नई अभिनेत्री आलोका का दूल्हा बना हूं. 'प्यास' के साथ रल्हन साहब ने अपनी दो फिल्में 'इशारा' और 'शरीफ लोग' के लिए भी अनुबंधित किया है."

"इस के लिए क्या आप ने अभिनय का प्रशिक्षण लिया है?"

"पहली बात तो यह है कि अभिनय सीखने की चीज नहीं होती. दुखसुख और टेढ़मेढ़े रास्तों से गुजरने वाला हर इनसान एक अच्छा अभिनेता होता है. मैं ने भी अपने जीवन में इस कदर उतारचढ़ाव देखे हैं कि मैं किसी भी भूमिका को बिना किसी दिक्कत के आसानी से निभा सकता हूं, ऐसा मुझे अपने पर विश्वास है. इसी लिए मैं ने अभिनय के

सुनील दत्त : कैरानवी की बदौलत ही बाल उड़ने की कमी छिप सकी.

बंगला फिल्म 'कलंकिनी कंकाबती' में शर्मिला टैगोर के साथ उत्तमकुमार की जगह का[म] करता हकीम कैरानवी.

प्रशिक्षण की जरूरत नहीं समझी."

"कौनकौन सी फिल्मों में काम कर रहे हैं?"

"'प्यास', 'वक्त के शहजादे', 'शिवचरण', 'प्रीत न जाने रीत', 'कलंक', 'अटल विश्वास', 'दौलत मंद', 'राजा जोगी', 'भाग्य रेखा', 'विद्रोह', 'अपनीअपनी किस्मत' और 'दूर है किनारा' में मैं काम कर रहा हूं.'इशारा' और'शरीफ लोग' अभी सैट पर नहीं गई हैं. 'विद्रोह' की तो पूरी शूटिंग मारीशस में होने वाली है और यह हिंदी और अंगरेजी दोनों भाषाओं में बनेगी."

"आप ने अपनी फिल्मों के ट्रायल जरूर देखे होंगे. अपने आप को परदे पर देख कर कैसा लगा?"

"फिल्मों में काम करने से पहले मैं अपना चेहरा रोज आईने में देखा करता था और रोज ही अच्छा लगता था. सो परदे पर भी अपने आप को देख कर अच्छा लगा. अब काम कैसा किया है, यह तो लोग ही बेहतर बता सकते हैं."

"फिल्मों के कारण आप के पेशे पर जरूर असर पड़ेगा?"

"फिल्मों की शूटिंग वैसे भी रोज न[हीं] होती और होती है तो दिन में होती है. दि[न में] मैं अपना काम खत्म कर के शाम में फ[िल्म] वाला काम कर लेता हूं. मेरे ग्राहक [भी] बंधेबंधाए हैं और समझदार हैं, ऐसी न[ौबत] हालत आती है तो वे मेरा इंतजार कर[ते] हैं."

"भविष्य में अगर आप स्टार बन ग[ए] हैं और बहुत व्यस्त हो जाते हैं तो क्या तब [भी] अपना यह पेशा नहीं छोड़ेंगे?"

"जी नहीं, मैं कैंची का साथ कभी न[हीं] छोड़ सकता. फिल्मों के काम का क्या है, [आज] है कल नहीं. यहां पर तो लोग चढ़ते सूरज [को] सलाम करते हैं. डूबते सूरज की तरफ [आंख] उठा कर देखते तक नहीं. इसलिए मैं कि[तना] ही बड़ा स्टार क्यों न बन जाऊं, अपना [पेशा] कभी नहीं छोड़ूंगा. कैंची ने बुरे दिनों में [मेरा] साथ दिया है और अगर फिर बुरे दिन आ[ए तो] तब भी यह मेरा साथ देगी. इसे ले कर कि[सी] झाड़ के नीचे भी बैठ जाऊं तो शाम [तक] आसानी सी 25-30 रुपए कमा लूंगा."

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

•

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

आस्था के आयाम

कहानी • चंद्रमोहन प्रधान

सुगंधा ने बाहर से ही पार्थ को विदा कर दिया और फाटक में प्रवेश करते हुए कनखियों से देखा, शिखर वहीं चारदीवारी के पास पेड़पौधों के झुरमुट में अपनी मेज पर झुका हुआ पूर्ववत लिख रहा था.

एक लंबी सांस ली सुगंधा ने. ढाईतीन घंटे पहले वह घर से निकली थी तो भी शिखर वहीं, उसी मुद्रा में बैठ कर लिख रहा था. सामान ले कर घर आई तो भी वही दृश्य. उस ने सोचा, पता नहीं, इस भले आदमी का मन कभी पढ़नेलिखने से ऊबता भी है?

हाथों में पैकेट संभाले वह धीरे शिखर की ओर बढ़ी. शिखर के पीछे प कर जरा ठिठकी. शिखर की कलम का पर द्रुत गति से चल रही थी. काफी संख्या लिखे हुए पन्ने मेज पर पड़े थे.

सुगंधा के थोड़ा झुकने पर उस छाया कागजों पर पड़ी तो शिखर चौंक पीछे मुड़ कर देखते हुए वह मुसकरा बोला, ''लौट आईं?''

सुगंधा पास की कुरसी पर बैठ सामान नीचे घास पर रखते हुए नाराजगी के साथ बोली, ''लौट आई. तु
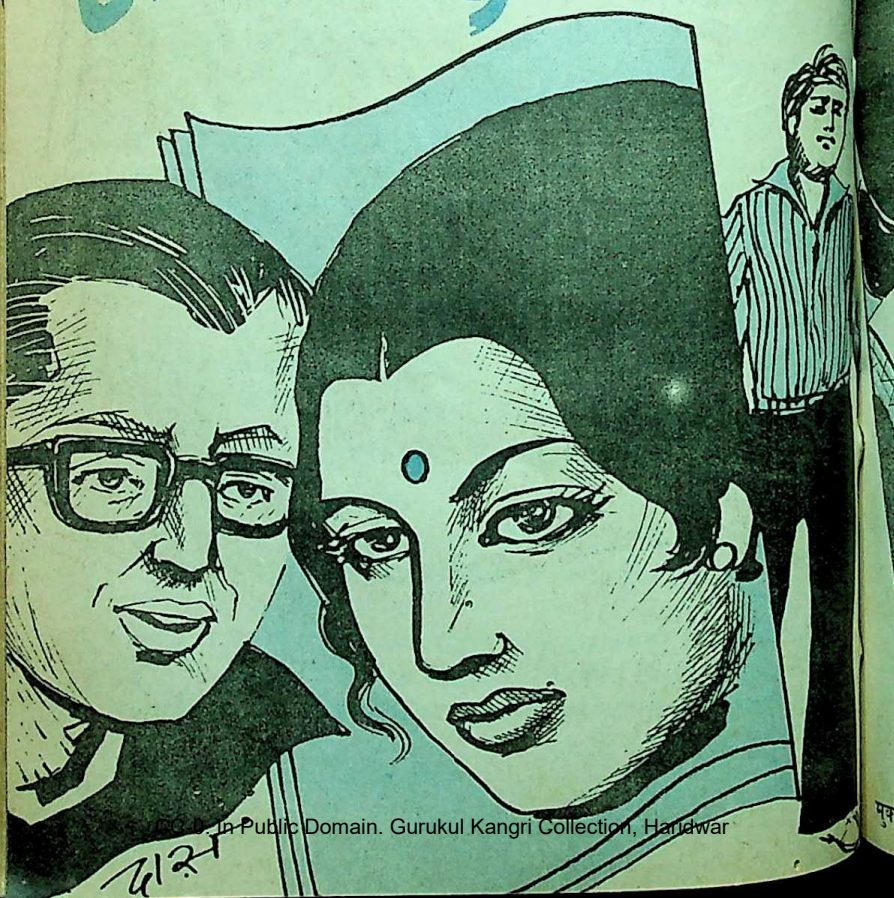
पता है कितने बज रहे हैं?"

शिखर ने घड़ी देखी, "अरे, तीन बज रहे हैं! भई वाह, मुझे तो कुछ ध्यान ही नहीं रहा."

"कैसे रहेगा," व्यंग्य के साथ सुगंधा ने कहा, "तुम्हें तो विवाह ही नहीं करना चाहिए था. जिस आदमी को अपने खानेपीने का होश नहीं रहता, वह बीवी की क्या देखभाल करेगा."

शिखर ठहाका लगा कर हंस पड़ा. "भई वाह, खूब कही तुम ने. लेकिन बताओ, इस में मैं क्या करूं? अब तो विवाह हो ही गया है और हमारी पत्नी श्रीमती सुगंधा देवी हमें रोज वक्त पर खाना खिला दिया करती हैं."

"खाक वक्त पर," सुगंधा चिल्लाई, "मैं कहती हूं, मुझे देरी हो गई तो तुम ने खुद ले कर भोजन क्यों नहीं कर लिया? सच तो यह है कि मैं अभी आ कर टोकती नहीं तो तुम शाम तक बैठे कलम ही घिसते रहते."

"कहती तो तुम सच हो," शिखर ने कागजों को समेट कर क्रम से लगाते हुए कहा, "कहानी ऐसी दिलचस्प बन पड़ी है कि क्या बताऊं, लिखते हुए कुछ ध्यान ही नहीं रहा."

"तुम्हारी सभी चीजों में यही बात

सुगंधा को महसूस हुआ कि उस का लेखक पति शेखर उसे उतना महत्व नहीं देता जितना कि शेखर का मित्र पार्थ देता है. इसी लिए वह शेखर को छोड़ कर पार्थ के साथ जाना चाहती थी. पर उस ने अपना निर्णय क्यों बदल लिया?

रहती है," कुढ़ कर सुगंधा बोली, "खैर, चलो, अब तो खाना खा लो, फिर आराम करना. अब आज और लिखना नहीं होगा."

"रात में तो..."

"नहीं," सुगंधा ने कहा, "रात में हम फिल्म देखने चलेंगे. पार्थ भी आने वाला है, अभीअभी फाटक के बाहर से ही घर लौट गया है."

विवश सा शिखर कागजों को उठाए सुगंधा के साथ घर के अंदर चल पड़ा.

सुगंधा का विवाह शिखर के साथ चार वर्ष पूर्व हुआ था. उस समय तो उसे एक उदीयमान लेखक की पत्नी बनने के विचार से बड़े रोमांच का अनुभव हुआ था, उस की सखीसहेलियों को भी उस से ईर्ष्या ही हुई थी, किंतु विवाह के साल भर के भीतर ही सुगंधा का मोह भंग होने लगा था. उसे लगा जैसे एक लेखक की पत्नी बनना लोहे के चने चबाना है. बाहर से देखने पर इस जीवन में जो चमक दिखाई देती है, भीतर से जिंदगी उतनी ही कंटकाकीर्ण साबित होती है.

शिखर की रचनाओं की प्रशंसा तो होती थी, किंतु सुगंधा ही जानती थी कि शिखर को इस के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है.

शिखर सुगंधा पर पूरी तरह निर्भर है. वह उस के खानेपीने से सोनेजागने तक का खयाल रखती है. यदि कभी वह व्यस्तता के कारण शिखर पर ध्यान नहीं दे पाती तो शिखर घंटों बिना खाए, बिना कपड़े बदले ही अपने लेखन में जुटा रहता. सुगंधा को इस से कभीकभी चिढ़ भी होती. कहती, "तुम तो बच्चों से भी गए गुजरे हो, अपना जरा भी खयाल नहीं रख सकते."

"भई आखिर बच्चे को बड़ा और समझदार होने में समय तो लगता ही है न. धीरेधीरे मैं भी इस लायक हो जाऊंगा कि तुम्हें मुझ से किसी तरह की शिकायत न रहे."

"बात को हंसी में उड़ाना तुम्हें खूब आता है," सुगंधा हंस कर कहती.

इस के बाद शिखर गंभीरता से कहता, "पुरुष तो निरर्थक ही घर का स्वामी बनने का ढोंग करता है. उस की असली नब्ज तो घर की स्त्री के हाथों में होती है. पुरुष तो जिंदगी भर अपने घर में मेहमान सा रहता है. घर की वास्तविक स्वामिनी गृहिणी ही होती है."

सुगंधा गदगद हो कहती, "कम से कम अपनी जरूरतों का तो ध्यान रखा करो."

शिखर लापरवाही से कहता, "भई, जब तुम हो तो मैं कौन होता हूं इन बातों का ध्यान रखने वाला? मैं तो तुम्हारा हूं, जैसे चाहो में रखोगी, रह लूंगा."

सुगंधा अपने महत्त्व से प्रसन्न होती. ऐसे में वह अकसर शिखर को अपनी बांहों में भर लेती और सोचती, ठीक ही तो कहता है शिखर. वह पूरा ध्यान लेखन में दे सके तो अच्छा ही है. आखिर शिखर की सफलता उस की भी तो सफलता है.

विवाह से पूर्व उस ने भी अन्य लड़कियों की तरह बहुत सारे सपने देखे थे. उस का पति कोई बड़ा अधिकारी होगा या किसी अच्छीखासी कंपनी का मालिक. वह रोज उसे समय पर तैयार करा देगी, उस के काम पर निकल जाने के बाद अपना काम करेगी, घर संवारेगी, बुनाईसिलाई करेगी. समय मिलने पर कहानी या उपन्यास पढ़ेगी या किसी सहेली के यहां चली जाएगी. जब मन होगा फोन पर पति से बातें भी कर लेगी. शाम को दोनों घूमने निकलेंगे, फिल्में देखेंगे. क्लब, होटल, दोस्तों के यहां जाएंगे. कितना सुंदर जीवन होगा. इस के आगे की कल्पना उस वक्त उस से नहीं हो पाती थी.

पर यहां पति के रूप में एक लेखक है. सुगंधा यह तो नहीं कह सकती कि शिखर में पति के रूप में कोई कमी है. वह आदर्श पति है, पत्नी को जी जान से चाहता है. किसी तरह का ऐब या बुरी आदत उस में नहीं है. स्वस्थ और सुंदर है, विद्वान है, हर तरह से हीरों से तौलने लायक है.

शिखर के पिता अपने इस पुत्र के रंग-ढंग को पहले ही ताड़ गए थे

इसलिए उन्होंने अपने जीवनकाल में ही उस के नाम कई बड़ी कंपनियों के शेयर खरीद डाले थे. इन्हीं कंपनियों से उसे प्रति माह एक अच्छीखासी रकम मिल जाती है. इस के अतिरिक्त उस के लेखन से भी आय होती रहती है. कुल मिला कर किसी तरह की आर्थिक कमी नहीं है, बल्कि संपन्न लोगों की श्रेणी में ही उसे रखा जा सकता है.

सुगंधा को कहीं कुछ खटकता है तो शिखर का यह लेखन का पेशा. इस पेशे के तौरतरीके. लेखन शिखर का शौक है, साधना है. उसे वह अपना पेशा नहीं मानता. किंतु जो भी हो, है तो एक काम ही. और वह भी ऐसा काम जिस के लिए कोई समय और सीमा तय नहीं है. जब तक सुगंधा टोके नहीं, शिखर लिखता रहेगा.

कभीकभी तो ऐसा भी होता है कि रात के डेढ़ या दो बजे सुगंधा जब एक नींद ले कर जागती है तो बगल में लेटे शिखर को बेचैनी से करवटें बदलते पाती है. सुगंधा के पूछने पर वह उसे बताता है कि वह किसी कहानी या उपन्यास के किसी घटनाक्रम के विषय में सोच रहा है और वह घटनाक्रम उस के दिमाग की पकड़ में नहीं आ रहा है. सुगंधा उसे चुपचाप सोने को कहती है. वह लेट जाता है, लेकिन थोड़ी ही देर बाद फिर उठ बैठता है और लिखने में व्यस्त हो जाता है. सुगंधा को सुबह पता चलता है कि शिखर रात में सोया ही नहीं, या भोर में चार बजे सोया.

सुगंधा फिल्म देखने या खरीदारी का कार्यक्रम बनाती है तो शिखर यदाकदा ही चलने को तैयार होता है. सुगंधा को ज्यादातर अकेले ही जाना पड़ता है.

इधर एक साल से पार्थ आ रहा है. पार्थ

"शिखर," सुगंधा ने सिसकियों के बीच टूटे शब्दों में कहा, "तुम मुझे क्षमा करोगे?"

शिखर का प्रशंसक है और शहर में ही रहने के कारण उस से मिलने आया करता है. असल में उस का नाम तो कुछ और है, किंतु कवि होने के कारण उस ने अपना उपनाम पार्थ रख लिया है. वह शिखर के घर में घर के सदस्य जैसा हो गया है. प्रायः रोज आता है. खूब गप्पें होती हैं सुगंधा से. शिखर तो चायनाश्ते के वक्त ही बातें कर पाता है. पार्थ के कारण सुगंधा का समय अच्छी तरह कटने लगा है.

पार्थ के आते रहने से शिखर को एक तरह की राहत सी महसूस हुई है. इस से पूर्व वह काम करते हुए भी अवचेतन मन में परेशान रहा करता था कि सुगंधा अकेली बैठी ऊब रही होगी या उसे फिल्म देखने या कहीं और जाना है. अब वह कह देता है, पार्थ को ले जाओ. इस पर सुगंधा नाकभौंह चढ़ाती है, लेकिन प्रायः पार्थ के साथ ही जाना पड़ता है. वह कभीकभी शिखर से कहती, "पार्थ के साथ जाने से लोग क्या कहेंगे?"

इस पर शिखर कहता है, "लोगों के कहने पर चलें तो खानापीना भी बंद कर देना पड़े. अपने को देखो, यदि तुम सही हो तो सारा संसार सही है."

फिर भी सुगंधा बाजार के सिवा होटल, फिल्म आदि मनोरंजन की जगहों पर पार्थ के साथ अकेली नहीं जाती, शिखर को खींच ही ले जाती है, पार्थ भले ही साथ रहे. लेकिन तब फिल्म देखने में उसे मजा नहीं आता, क्योंकि पार्थ के साथ रहने से पता नहीं वह क्यों उतनी उन्मुक्तता से फिल्म नहीं देख पाती.

उस दिन भी उस ने फिल्म देखने का कार्यक्रम बनाया था. पार्थ को भी शाम को आना था और वहीं चायनाश्ता कर के साथ चलना था.

फिल्म देखने के बाद भोजन से निश्चिंत हो कर दोनों लेटे तो शिखर ने कहा, "मैं ने तुम से कहा था कि ऐसी रद्दी फिल्म देखना समय नष्ट करना है, लेकिन तुम नहीं मानीं, मुझे भी साथ खींच कर ले गईं. वहां बैठेबैठे निरर्थक ऊबना पड़ा. इतने समय में तो मैं अपने उपन्यास का एक अध्याय लिख लेता."

सुगंधा चिढ़ कर बोली, "कोई फिल्म रद्दी निकल आई तो क्या हो गया? कुछ मन तो बदला, तुम बाहर तो निकले. दिन भर घुसे रहते हो."

"जी माफ कीजिए, मेरा मन बहलाव यहीं होता है. ऐसी रद्दी फिल्में देखना मेरे लिए बहुत मुशकिल है. अब से तुम पार्थ के साथ ही आया करना. इस तरह की फिल्में मैं नहीं देख सकता."

सुगंधा मुंह फुला कर दूसरी ओर मुड़ कर के लेटी रही. वह सोचने लगी, अजीब आदमी हैं, पता नहीं कैसी फिल्में देखना चाहते हैं. बरसों में कभी किसी फिल्म की तारीफ कर दी तो कर दी, आम तौर से सब फिल्में इन्हें घटिया ही लगती हैं. पता नहीं, अपना बौद्धिक स्तर कितना ऊंचा बना रखा है.

पता नहीं इन का दिलदिमाग भी कैसा है, अपनी पत्नी को गैर मर्द के साथ घूमतेफिरते देख कर जरा भी नहीं खटकता. खुद ही कह रहे हैं, फिल्में देखने भी अब पार्थ के साथ ही जाया करो.

लेकिन वह ऐसा कैसे कर सकती है? वह लाख कहें, आखिर वह भारतीय स्त्री है, उस की अपनी मर्यादा है, अपनी सीमाएं हैं. इस तरह पराए मर्द के साथ कभीकभार बाजार जाना और बात है, किंतु फिल्म देखना...

शिखर में जरा भी व्यावहारिक बुद्धि नहीं है. रातदिन लिखनापढ़ना. बिलकुल किताबी आदमी बन कर रह गए हैं. शिखर के पिता बड़े अफसर थे. उन का बड़ा दबदबा था. लोग आज भी उन का नाम लेते हैं. इस परिवार की शहर में इज्जत है. क्या सुगंधा इन पर पानी फेर दे? आखिर शिखर को कब अक्ल आएगी?

कहीं ऐसा तो नहीं कि शिखर को उस से प्यार नहीं? वह उसे सिर्फ अपनी जरूरतें पूरी करने को रखे हुए हैं. जो पुरुष पत्नी को प्यार करेगा वह ऐसी बातें क्यों करेगा?

सुगंधा के मन में यह विचार खलबली

मचाने लगा. जितना सोचती, उसे उतना ही यह विश्वास होने लगता कि शिखर उसे पति वाला प्यार नहीं देता है. बस, अपनी जरूरतें पूरी करने को उस पर निर्भर है.

उस की आंखों से नींद गायब हो गई. सिर जरा घुमा कर देखा तो खिड़की से आ रही चांदनी में शिखर आराम से सो रहा था. धीरेधीरे उस पर एक तरह का विचित्र आक्रोश हावी होने लगा.

वह सोचने लगी, इन हजरत की सही सजा तो यही है कि वह इन्हें छोड़ कर पार्थ के साथ चल दे. तब पता चलेगा इन्हें. पार्थ सुगंधा से कितना प्रभावित है. उस की प्रशंसा करते नहीं अघाता. शिखर के भाग्य की तारीफें करता रहता है. सुगंधा अपने नारी सुलभ ज्ञान से समझती है कि पार्थ उस पर अनुरक्त है. यदि वह अपनी तरफ से संकेत कर दे तो वह जैसे सब कुछ पा जाएगा.

सिर झटक कर उस ने ये विचार दूर किए. रात के दो बज गए थे. वह सोने की कोशिश करने लगी. थोड़ी देर के बाद नींद ने उसे आ घेरा.

दूसरे दिन से सुगंधा की मनःस्थिति कुछ अनमनी रहने लगी. शिखर ने इस पर गौर नहीं किया, बस अपने काम में जुटा रहा.

तीसरे पहर सुगंधा चाय की तैयारी कर रही थी कि पार्थ आया. सीधे रसोई में आ कर बोला, "भाभी, यह नया कविता संग्रह छपा है मेरा. देखिए, मैं ने आप को समर्पित किया है."

सुगंधा ने पुस्तक का प्रथम पृष्ठ खोला तो उस पर ये वाक्य छपे थे– 'सुगंधा भाभी को, जिन के व्यक्तित्व और सौंदर्य की सुगंध इन कविताओं का स्रोत तथा प्रेरणा रही है.'

आरक्त चेहरे से सुगंधा ने कहा, "आप ने यह क्या लिख दिया? जो देखेगा, वही..."

"वाह!" पार्थ ने जैसे चकित हो कर कहा, "आप क्या जानें खुद को. यह तो मैं ने बहुत कम कर के लिखा है. शिखर भाई साहब आप की क्या कद्र जानें. आप उन के चक्कर में खुद को महत्त्वहीन समझने लगी हैं." •
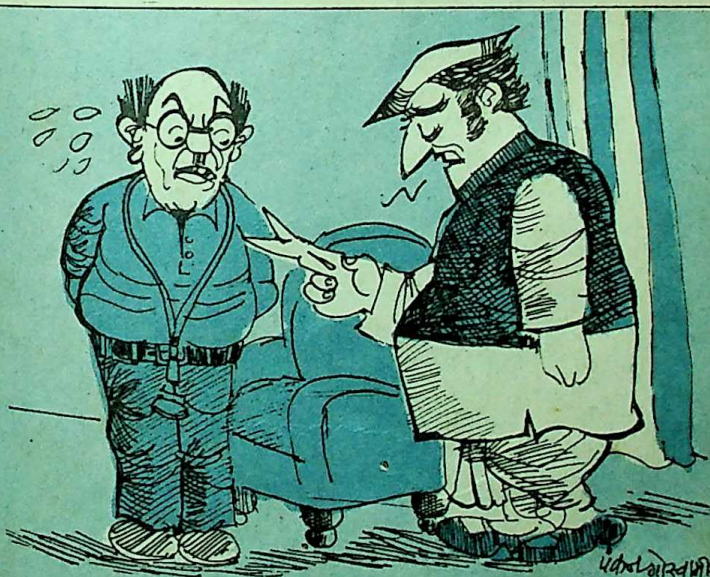
"मैं नहीं जानता कि उंगलियों की बनावट में यह परिवर्तन कैसे आया, पर हां, पिछले महीने से अब तक मैं करीब चार सौ उद्घाटन जरूर कर चुका हूं."

सुगंधा चुपचाप ट्रे में चाय रखने लगी. पार्थ कहता रहा, "सच पूछिए तो इधर जब से आप से भेंट हुई है, मेरी कविताएं सजीव होने लगी हैं. अब लगता है, कवि के रूप में मेरा यश फैलेगा. इस का सारा श्रेय आप को होगा."

सुगंधा जरा सा मुसकराई और ट्रे उठाए बाहर चल दी. पार्थ पीछेपीछे निकला.

लान में उसी कोने में, अपनी खास जगह पर शिखर लिखने में मग्न था. दोनों वहां जा कर बैठ गए.

शिखर ने कलम रख दी. अंगड़ाई लेता हुआ बोला, "आ गए, भई पार्थ. सुनाओ, क्या हालचाल हैं? आज तो मैं बहुत थक गया हूं."

सुगंधा ने चाय प्यालों में डाली. पार्थ ने अपनी पुस्तक शिखर को दे कर कहा, "देखिए, भाई साहब, मेरा संग्रह. मैं ने इसे भाभी को समर्पित किया है."

"देखूं तो," कह कर शिखर उत्सुकता के साथ पुस्तक खोल कर पढ़ने लगा.

"भई वाह!" खुश होता हुआ शिखर बोला, "खूब समर्पण किया है तुम ने."

"आप ने तो कभी अपनी कोई पुस्तक मुझे समर्पित नहीं की," सुगंधा ने यों ही कह दिया.

"भई, सच पूछो तो ये सब चीजें बनावटी लगती हैं," शिखर ने चाय की चुस्की ले कर कहा, "मैं तो संपूर्ण रूप में तुम्हें समर्पित हूं, फिर एक पुस्तक क्या समर्पित करूं?"

पार्थ ने सुगंधा की ओर देखा. सुगंधा ने व्यंग्य किया, "जी हां, बनावटी लगती हैं. बाहर का कौन देखने आता है कि लेखक महोदय किसे समर्पित हैं, बाहरी लोग तो यही सब देख पाते हैं."

"तो तुम्हें बाहरी लोगों को यही दिखा कर संतोष मिलेगा?" शिखर ने गहराई के स्वर में पूछ लिया.

सुगंधा चुप रही. पार्थ ने विषय बदलने के लिए कहा, "भाई साहब, आप की नई कहानी की एक बात समझ में नहीं आई."

"कौन सी बात, भई?" शिखर उस की ओर मुड़ा.

पार्थ ने अपने थैले से एक पत्रिका निकाली. सुगंधा उठ कर भीतर चल दी.

उसे अपना मन शिखर से पता नहीं क्यों बहुत उखड़ सा गया प्रतीत हुआ. उसे ऐसा लगने लगा जैसे शिखर जानबूझ कर उसे महत्त्वहीन बनाए रखना चाहता है. स्वयं संसार के सामने उभर कर आना चाहता है, किंतु सुगंधा को पृष्ठभूमि में ही बनाए रखने की उस की इच्छा है.

कितना स्वार्थी है शिखर. सुगंधा ने अपना जीवन शिखर को ही समर्पित कर रखा है, उस की सेवा में रातदिन जुटी रहती है. क्या शिखर का कर्तव्य नहीं है कि उसे भी अपने यश में भागीदार बनाए, भले ही जीवन संगिनी के रूप में ही सही?

वह सोने के कमरे में आ कर पलंग पर पड़ रही. सिर में दर्द सा होने लगा था. शिखर को क्या परवाह उस की. उसे तो अपना कलम घसीट काम मुबारक हो. और किसी से उसे क्या मतलब?

पता नहीं कितनी देर हुई. धुंधलका होने लगा था. अचानक बत्ती जल उठी. सुगंधा ने देखा, पार्थ खड़ा है.

"भाभी, क्या हुआ, क्या तबीयत खराब है?"

"कुछ नहीं, यों ही जरा सिर दर्द होने लगा है." सुगंधा ने टाला.

"सिरदर्द! मैं...मैं...सिर..." वह बात बदल कर बोला, "अभी किसी दुकान से ऐस्प्रो या एनासिन लाता हूं."

सुगंधा समझ गई कि सिर दबाने की बात कहतेकहते पार्थ ने बात बदल दी. उस ने कृतज्ञता के साथ कहा, "छोड़िए भी, क्यों नाहक तकलीफ करेंगे."

"अजी, तकलीफ कैसी? अभी आया," पार्थ ने तत्परता के साथ कहा और वापस मुड़ कर बाहर निकल गया.

सुगंधा की कनपटियां धमकने लगीं. 'एक शिखर है, एक...' उस ने सिर झटक कर विचार बदलने चाहे, पर घूमफिर कर यही

बातें मस्तिष्क में गूंजती रहीं.

दिन बीतते रहे... ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और वसंत आ पहुंचा. एक साल पूरा हुआ. पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक चक्कर लगा चुकी. शिखर को पता ही न लगा कि उस के जीवन और परिवार के समान संतुलित गति से घूम रहे पहिए के धुरे से कब हलकी सी ध्वनि आने लगी है.

वह तो इस बीच अपने उपन्यास 'किस को पुकारूं' को पूरा करने में जुटा रहा.

दोपहर में शिखर अपने लिखने की जगह पर बैठा डाक देख रहा था कि सुगंधा पास आ बैठी.

''वाह, आज कहां की तैयारी है इस दोपहर में?'' शिखर ने उसे देख मुसकराते हुए पूछ लिया.

सुगंधा असाधारण रूप से गंभीर बनी रही. कुछ ठहर कर बोली, ''एक बात बताओ.''

''कहो,'' शिखर ने उसे गंभीर देख कर जरा चकित हो कर कहा.

''मैं जो पार्थ के साथ घूमतीफिरती हूं, ज्यादातर उस के साथ रहती हूं, इस से तुम्हें कुछ भी बुरा नहीं लगता?''

''बुरा क्यों लगेगा?'' शिखर ने आश्चर्य के साथ पूछा, ''तुम कोई बच्ची थोड़े ही हो जिसे वह फुसला कर कहीं ले जाएगा?''

''यह बात नहीं,'' सुगंधा थोड़ा हिचकी, ''मेरा मतलब यह है कि एक गैरमर्द के साथ आती दिखे...''

''गैरमर्द!'' शिखर हंसा, ''यह कल का छोकरा पार्थ मर्द हो गया? खूब, तुम से तो शायद साल दो साल छोटा ही होगा.''

''जो भी हो, मान लो, ऐसी ही बात हो और वह मुझे दूसरी दृष्टि से देखे तो?''

''कुछ बात हुई है क्या?'' शिखर ने संभल कर पूछा.

''इसे छोड़ो,'' सुगंधा ने निर्णायक स्वर में पूछा, ''तुम यह कहो, यदि मैं ही उस के साथ चल दूं तो?''

''तुम चल दोगी उस के साथ?'' अविश्वास के स्वर में शिखर ने कहा.

''मान लो ऐसा ही हो तो क्या तुम अपनी देखभाल कर लोगे?''

शिखर ने मानो सुना ही नहीं. दृढ़ स्वर में बोला, ''ऐसा नहीं हो सकता.''

''क्यों, कौन रोकेगा मुझे? तुम?'' सुगंधा ने कड़े स्वर में कहा.

''मैं नहीं,'' शिखर ने इतमीनान के साथ कहा, ''तुम... तुम ही खुद रोकोगी अपने को.''

''मैं रोकूंगी स्वयं को?'' सुगंधा ने जैसे बहुत दूर से बोलते हुए मानो स्वयं से पूछा.

''**हां**, तुम,'' शिखर ने पूर्ववत दृढ़ स्वर में कहा, ''मैं ने तुम्हें जितना पहचानासमझा है, तुम्हारे अंतर को छुआ है, उतना तुम ने स्वयं को भी नहीं पहचाना होगा. यह पार्थ किस गिनती में है.''

सुगंधा चुप रही. लंबी सांसों से उस के वक्ष ऊपरनीचे होते रहे.

शिखर ने मेज पर रखे उस के दाएं हाथ को थपकते हुए ऊपर पेड़ों की फुनगियों पर दृष्टि जमा कर कहा, "मेरे जीवन की तुम सुगंध हो, मेरा तो अलग कोई अस्तित्व ही नहीं. मैं आज जो कुछ भी हूं, सब तुम्हारे कारण, तुम्हारी ही प्रेरणा, परिश्रम से. मेरा अपना व्यक्तित्व बचा ही क्या है? बाहरी लोग मुझे देखते हैं, किंतु मेरी शक्ति का वास्तविक स्रोत्र क्या है, वे क्या जानें."

उस ने पुनः गंभीर रूप से कहा, "तुम यदि ऐसा करना भी चाहो तो समझ लो कि खुद को तुम धोखा देना चाह रही हो. तुम वैसी हो ही नहीं. तुम्हारी विचारधारा ऐसी है ही नहीं. तुम ऐसा कर ही नहीं सकतीं. मुझे तुम पर पूरा विश्वास है. यदि तुम किसी आवेश में ऐसा निर्णय कर लेती हो तो वह क्षणिक आवेश की गलती होगी. तुम्हारे व्यक्तित्व, तुम्हारे अहं और तुम्हारी मानसिकता से यह बात कोसों दूर है."

सुगंधा शून्य दृष्टि से सामने की क्यारी में धीरेधीरे हिल रहे गुलदुपहरिया के पौधों को देखती रही.

शिखर ने जरा भीगे स्वर में कहा, "यदि तुम्हें कहीं जाने में सचमुच लाभ दीखे, किसी अन्य के साथ तुम्हारे व्यक्तित्व का विकास हो सके तो कहो, मैं यथासंभव तुम्हें मदद ही दूंगा. तुम्हारे जाने की व्यवस्था मैं स्वयं कर दूंगा. यदि वास्तव में तुम्हें जीवन में कुछ प्राप्त हो सके तो तुम मेरी चिंता न कर के किसी के साथ जाने का कार्यक्रम बना सकती हो."

"मैं बड़ी स्वार्थी हूं, है न?" सुगंधा बुदबुदाई.

"गलत बात," शिखर ने पुनः उस का हाथ थपथपाया, "तुम ने मेरे लिए जो त्याग किया है, करती रही हो, उसे शब्दों में बांध पाने में मैं असमर्थ हूं. कुछ कहना, उस के मूल्य को गिराना होता है. तुम जो करोगी, सर्वथा सही करोगी. मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा विश्वास है."

"मुझ पर पूरा विश्वास है?" सुगंधा ने सूखे गले से पूछा.

"अपने से अधिक तुम पर विश्वास है." शिखर हंसा, फिर सामने देखता हुआ बोला, "मैं खुद नहीं समझ पाता कि कब क्या कर बैठूंगा. तुम पर जो भरोसा रहता है मुझे, वही मुझे स्थिर हो कर लिखने की भी शक्ति देता है. तुम मेरे आसपास रहती हो, इस से मुझे पूरा इतमीनान रहता है कि सब ठीकठाक है और मैं पूरे मनोयोग से लिख पाता हूं. तुम्हारे ऊपर मुझे संसार में सब से अधिक विश्वास रहा है और रहेगा."

तभी शिखर ने देखा, सुगंधा का माथा मेज के किनारे टिका है. पीठ हिल रही है, जैसे वह रो रही हो.

"यह क्या?" शिखर ने बलपूर्वक उस का मुंह उठाया, सुगंधा का चेहरा आंसुओं से भीग रहा था.

"शिखर!" उस ने सिसकियों के बीच टूटे शब्दों में कहा, "तुम मुझे क्षमा करोगे?"

"क्यों, तुम ने किया ही क्या है?"

"मैं...मैं...अभी सचमुच उस के साथ शहर छोड़ कर जाने वाली थी," सुगंधा ने किसी तरह प्रयास कर के कहा.

"पार्थ के साथ?"

"हां," सुगंधा ने गला साफ कर के कहा, "वह बाहर टैक्सी लिए मेरी प्रतीक्षा कर रहा है."

शिखर दो क्षण चुप रहा, फिर रूमाल से उस के आंसू पोंछता हुआ बोला, "पार्थ के या किसी के भी साथ तुम जा सकती हो. मेरी इच्छा बस यह है कि तुम सुखी रहो. मैं तुम्हें सुखी देखना चाहता हूं. मैं स्वयं तुम्हें उस के यहां पहुंचा..."

"नहींनहीं," सुगंधा फूट पड़ी, "मैं मूर्ख थी. तुम ऐसी बात मत कहो. मैं तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं जा सकूंगी."

"तो," शिखर उठ खड़ा हुआ, "जरा तुम्हारे देवरजी को समझा तो आऊं."

शिखर फाटक से बाहर निकला. फाटक से थोड़ा आगे एक टैक्सी सचमुच खड़ी

थी. वह सीधा व[illegible]

पीछे की सीट पर सिकुड़े बैठे पार्थ ने शिखर को देखा तो उस का रंग उड़ गया. शिखर ने इतमीनान के साथ कहा, "पार्थ, सुगंधा की प्रतीक्षा करना बेकार है. वह नहीं जा रही है."

"आ...आप..." पार्थ हकलाने लगा.

"हां, भई," शिखर ने बड़े मजे के साथ कहा, "तुम्हें बेकार की तकलीफ हुई. क्या किया जाए, वह कहती है, पार्थ या किसी के साथ मुझे कहीं नहीं जाना है."

"च...चलो..." पार्थ ने घबरा कर टैक्सी वाले के कंधे पर हाथ मारा और टैक्सी तेजी से चल पड़ी.

शिखर आराम से टैक्सी को मोड़ पर घूमते हुए देखता रहा.

शिखर के बाहर जाने पर सुगंधा स्वयं को संभालने की कोशिश में थी कि उस की दृष्टि सामने मेज पर पड़े अखबार पर पड़ी.

मुखपृष्ठ पर जरा नीचे छपे एक समाचार के शीर्षक ने उस का ध्यान खींच लिया. शीर्षक था :

'[illegible] राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कार.'

सुगंधा ने चकित हो कर नीचे पढ़ना शुरू किया : "प्रख्यात हिंदी साहित्यकार श्री शिखर को उन के नए उपन्यास 'किस को पुकारूं' पर इस वर्ष का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है. हिंदी जगत में इस से अपार प्रसन्नता है.

"श्री शिखर ने इस संबंध में पत्रकारों से बात करते हुए बताया कि यह पुरस्कार उन्हें नहीं बल्कि उन की पत्नी श्रीमती सुगंधा को मिलना चाहिए, क्योंकि अपनी पत्नी की प्रेरणा और व्यक्तित्व के कारण ही वह लेखन कार्य में सफलता प्राप्त कर सके हैं. श्रीमती सुगंधा के अभाव में वह लेखन में यों सफलता प्राप्त कर पाते, यह संदिग्ध है.

"पुरस्कार की 51 हजार की राशि के संबंध में श्री शिखर ने बताया कि वह उन की पत्नी ही उन की ओर से ग्रहण करेंगी."

सुगंधा चेष्टा कर के भी आगे नहीं पढ़ पाई. उस की दृष्टि छपी पंक्तियों पर अवश्य थी, किंतु अक्षर कब धुंधले होतेहोते लिपपुत कर एकाकर हो गए, उसे पता नहीं चला. ●

काम लेना भी एक कला है

लेख • चितरंजन भारती

'क्या काम लेना भी एक कला है?' यह प्रश्न कुछ लोगों को अजीब लग सकता है. 'काम करना एक कला है.' यह तो हम अकसर सुनते हैं, मगर उपर्युक्त प्रश्न के बारे में शायद ही किसी ने सोचा हो.

पहले सभी कार्य स्वयं संपादित करने के कारण 'काम करना एक कला है' कहा जाता होगा, जो उपयुक्त भी था. किंतु आधुनिक युग में श्रम विभाजन के कारण सभी कार्य स्वयं संपादित कर पाना किसी के बूते के बाहर की चीज हो गई है. किसी भी कार्य के लिए हमें दूसरों का सहयोग लेना ही पड़ता है.

अधीनस्थ कर्मचारियों से काम लेना आज एक समस्या बन गया है, पर अगर आप जरा सी सावधानी रखें तो आप को इस समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा...
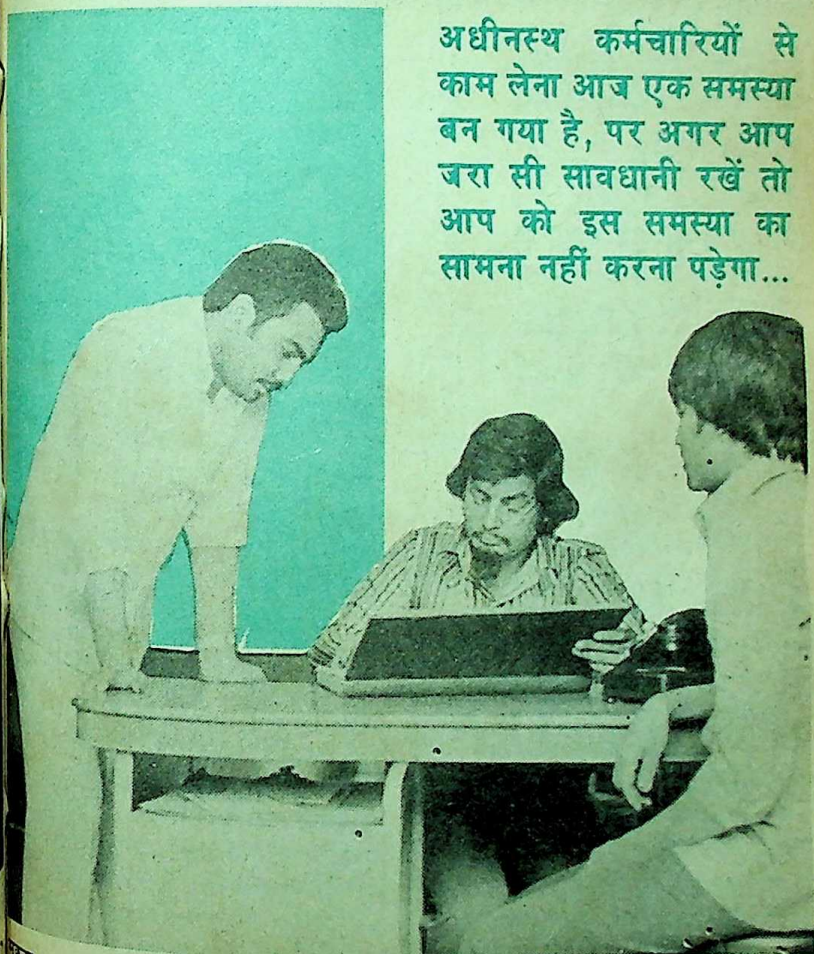
घर हो या बाहर, दफ्तर हो या कारखाना सब कामों में दूसरों का सहयोग अनिवार्य है.

कभी कार्य करते वक्त हम स्वयं को बिचौलिए वाली स्थिति में पाते हैं. हमारे ऊपर हमारा अधिकारी रहता है तथा नीचे अधीनस्थ कर्मचारी, उस अधिकारी के साथ भी कुछ इसी तरह की बात रहती है. श्रम विभाजन के कारण ही ऐसा हुआ है, जो किसी भी कार्य के सरलतापूर्वक समाप्त होने के लिए उचित भी है.

किंतु यहीं अकसर हम दोहरा मानदंड कायम कर लेते हैं. हम अपने अधिकारी से विनम्रता का व्यवहार करते हैं, पर दूसरी तरफ अधीनस्थ लोगों के प्रति रूक्षता अथवा कठोरता के साथ पेश आते हैं. कभी अनुशासन के नाम पर तो कभी 'यह इसी के लायक है,' कह कर. फलतः हम से अफसर खुश रहे या न रहे, अधीनस्थ कर्मचारी अवश्य नाराज हो जाते हैं. कभीकभी यह नाराजगी सीमा पार होते ही विभिन्न रूपों में फूट पड़ती है. तब रोना रोया जाता है कि हम बिचौलिए तो दोनों तरफ से मारे जाते हैं. मजे की बात यह है कि हम स्वयं को इस के लिए कभी दोषी नहीं मानते.

नाराजगी का नजारा

केंद्र सरकार के सचिवालय की एक घटना है. एक मंत्री महोदय ने अपने विभाग के एक अधिकारी से एक विशेष फाइल निपटाने को कहा, अधिकारी ने उस फाइल विशेष को अपने अधीनस्थ बाबू को देखने के लिए दे दिया. थोड़ी देर पहले ही उस अधिकारी ने उस बाबू को किसी बात के लिए उस के साथियों के बीच ही बुरी तरह लताड़ा था. बाबू लोगों की बात जगजाहिर है. मौका अच्छा जान कर बाबू ने फाइल सरसरे तौर पर देख कर अधिकारी को लौटा दी. अफसर ने सिर हिला कर जाने को कह दिया.

बाबूजी चले गए. उधर अधिकारी महोदय किसी काम से बाहर निकले. बाबूजी झट से अपनी कुरसी पर से उठे और उक्त फाइल मेज पर से उठा कर अधिकारी के ब्रीफकेस में रख दी और अपने काम में लग गए. साहब लौटे तो फाइल ढूंढ़ने लगे. अलमारी, मेज दराज सब जगह उठापटक चलने लगी, मगर फाइल हो तब तो मिले. बाबूजी चुपचाप सब कुछ देखते और हंसते रहे.

शाम को फाइल न मिलने पर मंत्रीजी ने अधिकारी महोदय को बुरी तरह डांटा फटकारा और जलील किया क्योंकि अगले दिन उस फाइल से कुछ टिप्पणियां संसद में सुनाई जानी थीं. मगर इस से क्या फाइल मिल जाती? चुपचाप सिर झुकाए सब कुछ सुनते रहे, बाद में घर जा कर जब उन्होंने ब्रीफकेस खोला तो फाइल देखी और अपना सिर पीट लिया.

अहित किस का?

एक और घटना बंबई के एक कारखाने की है. एक अभियंता महोदय ने अपने फिटर को काफी कड़वी बात कह दी थी. फिटर मौके की तलाश में था. एक दिन उसे मौका मिला और उस ने बदला ले लिया.

हुआ यह कि एक मशीन को बदलना था, उक्त फिटर ने मोटर और मशीन के आधार के कुछ नटबोल्ट जानबूझ कर ढीले छोड़ दिए. मोटर चालू करते वक्त तो कुछ नहीं हुआ, मगर थोड़ी ही देर में दौ... अश्वशक्ति वाले मोटर के बाकी नटबोल्ट ढीले पड़ गए और मशीन उखड़ गई. फलतः चार लाख रुपए की मशीन के साथ ... मोटर का भी सत्यानाश हो गया. किसी को कुछ न हुआ, मगर मालिक ने अभियंता की छुट्टी कर दी. वह छटपटा कर रह गए.

इसी तरह की एक और घटना फिल्मी जीवन से संबंधित है और काफी रोचक है. एक फिल्मी निर्माता को अपनी फिल्म की शूटिंग के दौरान शादी के दृश्य के लिए बरातियों की जरूरत पड़ी. संयोगवश उन की बंबई के ही एक औद्योगिक प्रतिष्ठान के ... बिहारी प्रशिक्षणार्थियों से जानपहचान थी. उन्होंने एक्सट्राओं को न ला कर उन्हीं ... शूटिंग में बराती का रोल देने का निर...

किया. इस से एक तीर से दो शिकार होते. प्रथम तो एक्सट्राओं के ऊपर होने वाले हजारों रुपए बचते तथा दूसरे प्रशिक्षणार्थियों की वाहवाही भी लूटते.

शूटिंग का दिन और समय तय हुआ. बंबई से 200 मील दूर शूटिंग स्थल था. वहां एक दो दिन पहले प्रकाश प्रबंधक (लाइटमैन) को निर्माता ने डांटाफटकारा था, तो वह मौके की तलाश में था.

प्रशिक्षणार्थी बहुत खुशीखुशी आए. मन में दबी हुई वर्षों की साध जो पूरी हो रही थी. मगर शीघ्र ही सिनेमा व्यवसाय की कलई खुल गई. एक ही दृश्य का बीसों बार फिल्माया जाना, कड़ा अनुशासन तथा निर्देशक के व्यंग्य बाणों ने बिहारी भाइयों की फिल्म में काम करने की इच्छा को खत्म कर दिया. खानेपीने का कोई इंतजाम वहां था नहीं. भूखेप्यासे अलग तड़प रहे थे. बंबई होता तो वह पहले ही फूट लेते, मगर इस निर्जन जंगल से कल्याण स्टेशन ही करीब 60 किलो मीटर दूर था. बस उन्हें वहां छोड़ कर वापस लौट गई थी.

प्रकाश प्रबंधक का कारनामा

रात में प्रकाश प्रबंधक ने अपना कारनामा दिखाना शुरू कर दिया. रातभर प्रकाश का समुचित प्रबंध नहीं होने दिया. बिजली के बारे में अनभिज्ञ निर्माता ताव खाते रहे और बेचारे बराती भूख से छटपटाते रहे. केवल चाय पी कर कब तक रहा जा सकता था?

पौ फटते ही वह अपना पीछा छुड़ा कर बस लौटे और फिर कभी किसी शूटिंग में न जाने की कसम खाई. प्रकाश प्रबंधक मन ही मन हंसते रहे.

दूसरे दिन निर्माता महोदय फिर होस्टल पधारे. मगर प्रशिक्षणार्थी खार खाए बैठे थे.

उन्होंने तरहतरह से समझाया, मगर वे फिर जाने को तैयार नहीं हुए. तब उन्होने बताया कि उन की अधूरी शूटिंग होने से लगभग साठ हजार रुपए मूल्य की कच्ची रील बरबाद हो जाएगी, तब कहीं वे तैयार हुए.

इस तरह की एक दो नहीं सैकड़ों घटनाएं हैं, जिस के कारण संबद्ध व्यक्ति को घाटा उठाना पड़ता है. उपर्युक्त घटनाओं को कोई भी समझदार व्यक्ति अच्छा नहीं बता सकता.

तब यह सवाल उठता है कि ऐसी घटनाएं क्यों घटती हैं? इस का एक ही कारण है. वह है, ऊपर वालों का नीचे वालों से बुरा बरताव, जिस के कारण वे ऊपर वाले तंग करने का रास्ता चुन लेते हैं.

काम कराने का सही तरीका

कोई भी काम कराने के अनेक तरीके हो सकते हैं. अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम कौन सा तरीका अपनाएं. अकसर यह देखने में आता है कि एक व्यक्ति द्वारा किसी काम को करने के लिए कहने पर संबद्ध कर्मचारी उसे प्रसन्नतापूर्वक करता है. जब कि दूसरे व्यक्ति द्वारा कहे जाने पर अनमने ढंग से करता है. इस में एक ही भावना काम करती है.

प्रथम व्यक्ति द्वारा अधिकार हीन ढंग से हंस कर सहानुभूति पूर्वक काम करने को कहा जाता है. जब कि दूसरा व्यक्ति ठीक उलटा करता है. पहला काम करने वाले को भी मनुष्य समझता है, मगर दूसरा उसे पशु अथवा मशीन से अधिक महत्त्व देना नहीं चाहता. इस के अलावा किसी के अहं पर भूल कर भी चोट नहीं करनी चाहिए.

घरेलू नौकरों तथा दूकान के नौकरों का तो और भी बुरा हाल होता है. फलतः वे मौका पाते ही भाग जाते हैं. या ऐसी हरकतें कर बैठते हैं; जो समाचारपत्रों की सुर्खिया बन जाती हैं. इस के लिए हम उन्हें दोषी ठहराते हैं, मगर अपनी कमियों को नहीं देखते.

इसलिए जरूरत है अपना व्यवहार ठीक रखने की ओर काम लेने की कला सीखने की वरना आप के भी अधीनस्थ आप से नाराज हो कर आप को भी फंसाने का काम कर सकते हैं

संग्रहालय में कार : 1963 के फ्रैंक... मोटर समारोह में तहलका मचाने वाली मर्सीडीज– 600 गाड़ियों की 2,677 की आखिरी खेप सड़कों पर आ गई है. अब इस की जगह मर्सीडीज– 500 ने ले ली है. लिहाजा पुरानी गाड़ियों को तो संग्रहालय में रखना ही होगा.

रक्षा के सवाल पर : पाकिस्तान से युद्ध का हौवा दिखा कर श्रीमती इंदिरा गांधी अपनी राजनीतिक कमजोरी को छिपाने की कोशिश में हैं. शायद इसी लिए वह सेना के वरिष्ठ लोगों से अकसर मुलाकात करती रहती हैं.

इंगलैंड अमरीका नजदीक : अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन की सपत्नीक ब्रिटेन यात्रा ने दोनों देशों के बीच संबंध और मजबूत बनने के आसार पैदा किए हैं. यात्रा के दौरान शाही विंडसर पैलेस में महारानी एलिजाबेथ के साथ रेगन दंपत्ति.

एक मेला विदेश में : कोलोन (पश्चिमी जरमनी) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय समारोह में लोहे का छोटामोटा सामान बनाने वाली 27 भारतीय फर्मों ने हिस्सा लिया. यह समारोह व्यापारिक संबंध कायम करने व नए बाजार तलाश करने के लिए भारत की निर्यात संबर्द्धन परिषद ने आयोजित किया.
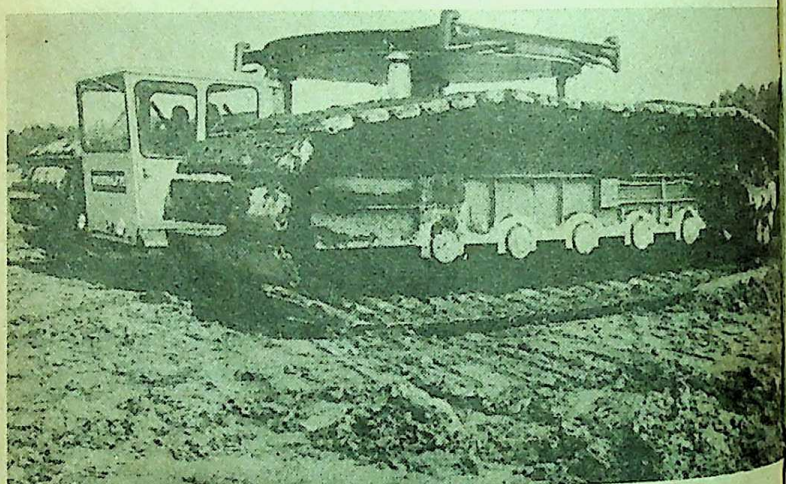
विशाल दैत्याकार मशीन : वैड ओएनहासेन (पश्चिमी जरमनी) में वेस्टफैलिन कंपनी ने 165 टन का वजन उठाने वाला ट्रेक्टर बनाया है जो 200 किलोवाट की डीजल मोटर से 400 टन सामान उठा कर 15 मीटर प्रति घंटा की रफ्तार से चलता है.
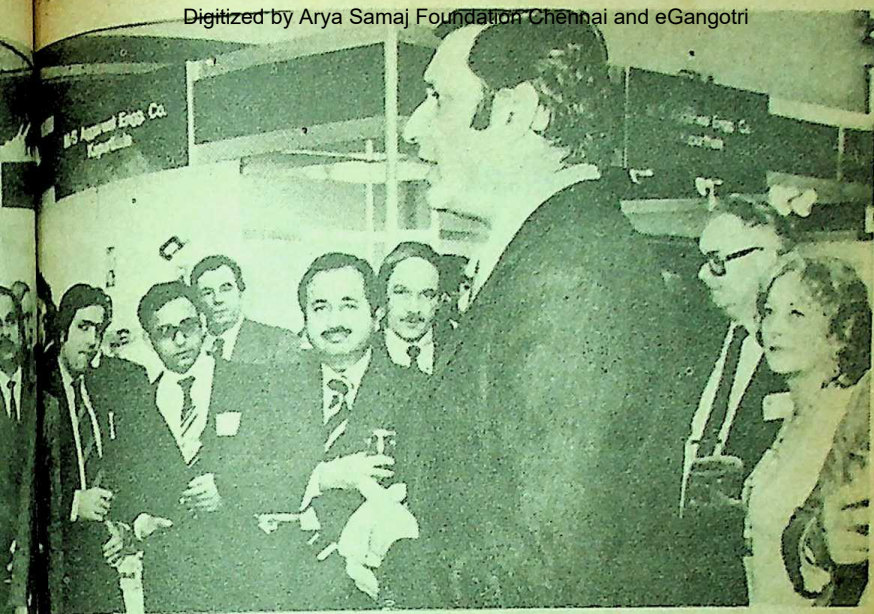
लेखन भी चित्रकारी भी : पश्चिमी जरमनी में हाल ही में एक कलात्मक गद्य संकलन की प्रदर्शनी की गई. इस संकलन में कलात्मक किस्म का लेखन व बेहतरीन चित्रकारी का समन्वय है.

वेस्टफैलि
ट की
चलता
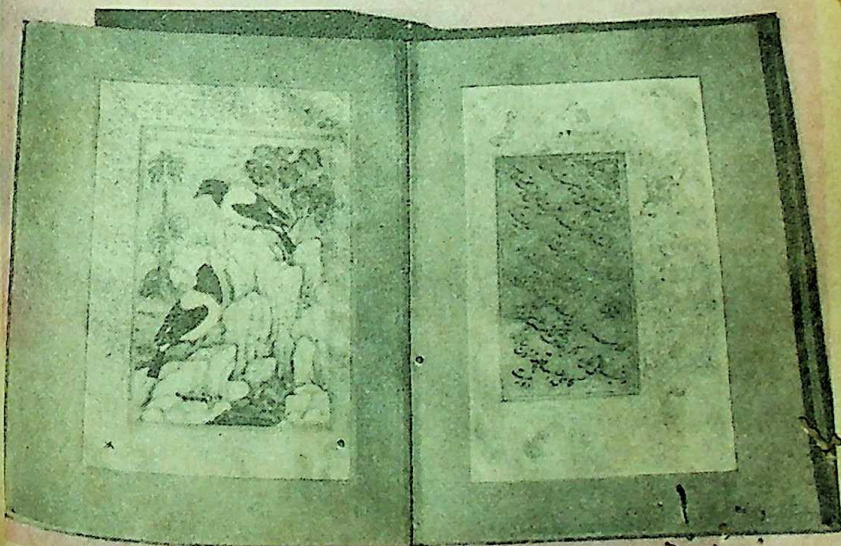
नए अंकुर

व्यवहार

कहानी • ज्ञानेश श्रोत्रिय

कालोनी में वह नया ही आया था. किसी से बात न करता, बस सुबह ही तैयार हो गले में स्टेथस्कोप लटका कर स्कूटर पर बैठ निकल जाता और रात गए घर लौटता. घनश्यामदासजी के मकान में ऊपर का कमरा उस ने किराए पर ले रखा था. घनश्यामदासजी की युवा पुत्री चंचल से भी उस ने कभी बात करने का प्रयास नहीं किया और न ही कभी ऐसेवैसे हावभाव बनाए. छः महीने से यही क्रम चला आ रहा था उस का. उस के दोस्त भी बहुत कम ही आते हैं. कोई युवती मित्र भी नहीं देखी गई अब तक.
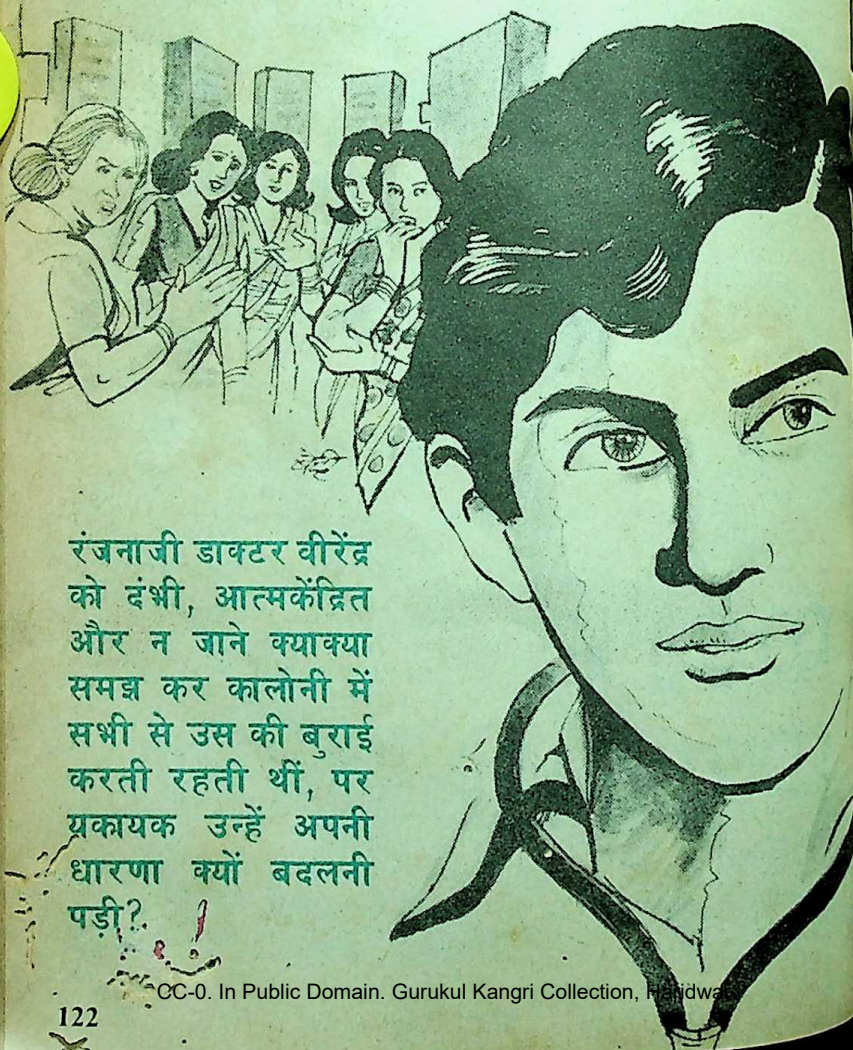
रंजनाजी डाक्टर वीरेंद्र को दंभी, आत्मकेंद्रित और न जाने क्याक्या समझ कर कालोनी में सभी से उस की बुराई करती रहती थीं, पर एकायक उन्हें अपनी धारणा क्यों बदलनी पड़ी?

''डाक्टर है तो क्या, बड़ा घमंडी है,'' बड़ी लड़की चंचल क्हती.

''नहीं, हो सकता है उस का स्वभाव ही ऐसा हो,'' दसरे नंबर वाली रश्मि कहती.

''मनोवैज्ञानिक दृष्टि से तो समझदार और दार्शनिक लगता है,'' एम.ए. मनोविज्ञान की छात्रा आभा का कथन होता.

इस तरह सभी उस के बारे में तरहतरह की अटकलें लगाते. बात एक दिन श्रीमती रंजना के कानों तक पहुंची. वह कालोनी की वयोवृद्ध महिला हैं और उम्र के अनुभवों के आधार पर तेजतर्रार भी. मुंह पर ही खरीखरी सुनाना उन की आदत है. अवकाश प्राप्त प्रधान अध्यापिका हैं, इसलिए रोब डालने में माहिर हैं. यह सब सुन कर उन के मस्तिष्क में भी खलबली हुई. वाकई यह लड़का कैसा है, जो न कभी किसी से बोलता है और न हंसता बात करता है. जैसे उसे किसी की जरूरत ही नहीं. कालोनी में कौन रह रहा है, क्या करता है, जैसे उसे इन सब बातों से कोई वास्ता ही नहीं.

फिर सब से बड़ी बात यह है कि कोई छः महीने से कालोनी में रह रहा हो और श्रीमती रंजना से परिचित न हो पाया हो यह तो अनहोनी ही कहलाएगी, पर यह तो उन्हें कभी नमस्ते तक भी नहीं करता है. यह हो कैसे सकता है. वह यही सब सोच कर मौका तलाशने लगीं, उस से टकराने का.

एक दिन कालोनी में महल्ला सुधार संबंधी एक बैठक होनी थी, जो असल में श्रीमती रंजना अपने बेरोजगार पुत्र रमेश के लिए कोई बढ़िया काम ढूंढ़ने की खातिर करा रही थीं. रमेश को सभी लोगों के यहां सूचित करने भेजा गया ताकि सभी सुबह 11 बजे बैठक में उपस्थित रहें.

उस दिन इतवार था. वह भी काफी देर तक घर पर ही था. फिर कहीं जाने के लिए जब घर से बाहर निकल कर स्कूटर स्टार्ट कर ही रहा था कि रमेश सब को बैठक की सूचना देता हुआ वहां आ धमका. उसे देख कर वह ठिठका.

रमेश करीब आ कर बोला, ''भाई साहब, आज कालोनी वालों की बैठक है हमारे यहां, अभी 11 बजे. आप भी आइए.''
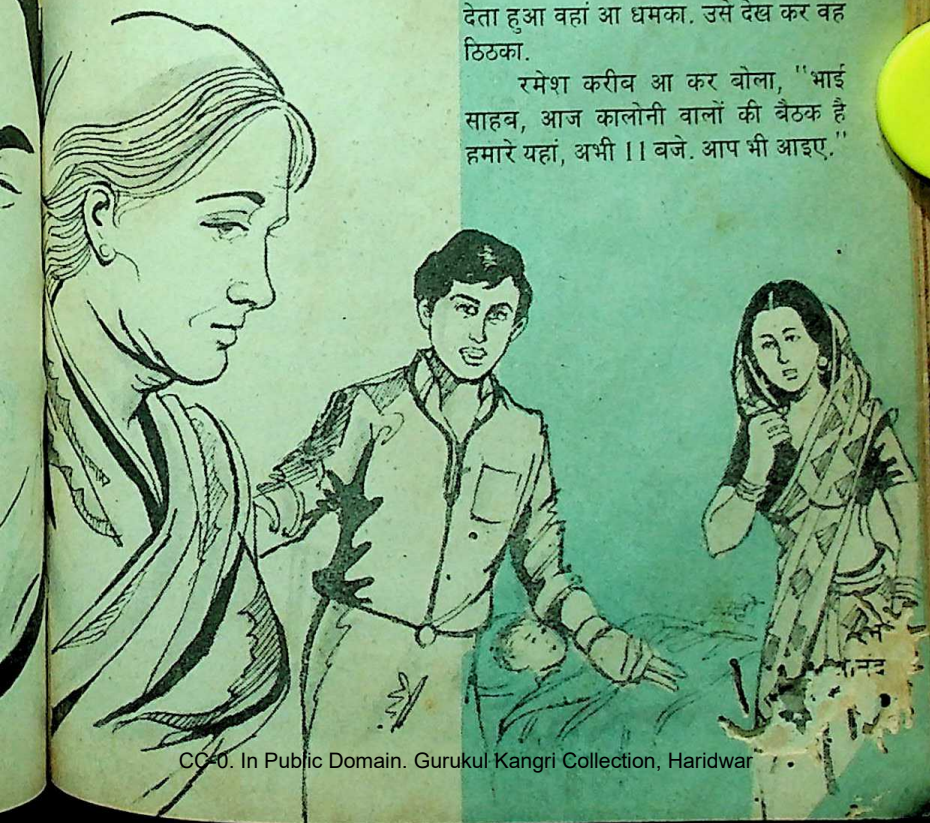
"जी, अच्छा." फिर बड़ी शालीनता से पूछा, "क्या नंबर है, आप का?"

"445 ए."

"अच्छा, अभी तो मैं काम से जा रहा हूं, शायद 11 बजे तक लौट नहीं सकूंगा. फिर कभी अवश्य आऊंगा." कहता हुआ वह स्कूटर पर बैठ कर चल दिया.

रमेश को उस का यह व्यवहार बड़ा अजीब लगा. उधर श्रीमती रंजना को जब यह बात मालूम हुई तो उन का विश्वास पक्का हो गया कि लड़का घमंडी ही है. फिर तो उन पर उस का अपमान करने का भूत सवार हो गया.

एक दिन दोपहर के भोजन के समय जब वह घर लौट रहा था, तो राह में ही डाकिए को खड़ा देख उस ने स्कूटर धीमा कर लिया. सोचा कि डाकिए को अपनी एक आने वाली रजिस्ट्री के बारे में सचेत कर दे. वहीं श्रीमती रंजना भी खड़ी थीं. नजदीक आए बगैर ही वह रुक कर बोला, "भई हमारी कोई चिट्ठी... नाम डा. वीरेंद्र..."

"आज तो नहीं है, साब."

"अच्छा कोई बात नहीं. हां, मेरी एक रजिस्ट्री आएगी, कृपया सुरक्षा के साथ मुझे पहुंचाने का कष्ट करिएगा."

"आप तो सामने के मकान में रहते हैं न?" वह चलने को ही हुआ था कि श्रीमती रंजना ने पूछा.

"जी, माताजी." वह ठिठक गया.

"वह रमेश ने एक दिन बताया था कि यहां एक डाक्टर रहने लगे हैं, उस दिन वह बैठक के बारे में भी आप से कहने आया था."

"अच्छा, तो वह आप के सुपुत्र हैं. यानी आप ही 445 ए में रहती हैं. माफ करें, उस दिन मैं नहीं आ पाया था."

"खैर, वह तो हो ही जाता है," श्रीमती रंजना सपाट स्वर में बोल रही थीं, "एक दिन शाम को आप जा रहे थे, तो मैं ने समझा कि 10 नंबर वालों का विजय है, मैं कुछ सामान ... लिए, आवाज देने वाली ही थी कि ... कि यह तो आप हैं..." इतना कह कर वह हंसने लगी.

"अरे, तो क्या हुआ? आप मुझे ही क... लेतीं. मैं कोई मना थोड़े ही करता."

"हां, बेटे, वह तो ठीक है, म... किसीकिसी को अच्छा भी नहीं लगता. फि... आप तो यहां किसी से मिलतेजुलते भी न... किसी को जानते भी नहीं."

अब तक वह श्रीमती रंजना का आ... समझ चुका था, बोला, "माताजी, मैं ब... ज्यादा व्यस्त रहता हूं. इसलिए मिल न... पाता. मगर आप तो मेरे लिए मां के समान... यदि आप मुझ से किसी काम के लिए कह... तो मैं आप के बेटे की तरह ही व्यवहार... करूंगा? आप ने गलत सोच लिया." उस... सीधा और साफ उत्तर सुन कर श्रीमती रं... गदगद हो गईं.

"अच्छा, अब चलूं, नमस्ते," यह क... कर वह घर की ओर बढ़ गया.

इस के बाद भी श्रीमती रंजना को उस... व्यवहार रूखा और औपचारिक... लगा. बातचीत का सलीका भी कुछ क्षो... जनक लगा. उन की उस के बारे में धार... वैसी ही रही. इस घटना का उल्लेख उन्... किसी से नहीं किया, मगर उस के बारे... अपनी धारणा उन्होंने खूब फैला दी. रात... यदाकदा गप्पों में वह उस की बुराई... अवश्य करतीं. सब चटखारे लेले कर गप्पों... भाग लेते.

इधर कुछ दिनों से श्रीमती रंजना कु... अधिक व्यस्त हो गई थीं. बहू को प्रथम सं... के रूप में लड़का हुआ था. बड़ा भारी जल... मनाया गया. डाक्टर वीरेंद्र उस समारोह... भी शामिल नहीं हुआ. उस की चर्चा च... पर सभी के सामने उन्होंने उस की भर्त्... की. उस दिन तो सभी ने उसे बुराभला क... हालांकि पुरुषों का एक वर्ग बराबर... कहता रहा कि लड़का है, उसे भला अ... सामाजिकता का क्या ज्ञान.

कुछ दिन बीते तो एक दिन नव... शिशु की हालत अचानक बिगड़ने लगी... हिचकियां ले कर वह एकदम सुन्न पड़ ...

सांस बंद सी हो गई और हाथपैर ठंडे पड़ गए. श्रीमती रंजना बुरी तरह घबरा गईं. बहू भी रोने लगी. घड़ी में साढ़े दस बजे थे. वह दौड़ीदौड़ी रामनाथजी के घर पहुंची और उन के 15 वर्षीय बबलू को डाक्टर बुलाने के लिए पास के सहायक इंजीनियर के घर से फोन करने भेज दिया. खुद फिर हांफती हुई अपने ऊपर की मंजिल वाले कमरे में चढ़ आईं. बच्चे की हालत नाजुक थी. बहू बुरी तरह रो रही थी.

इतने में दरवाजे पर दस्तक हुई. श्रीमती रंजना ने जैसे ही दरवाजा खोला. हाथ में दवाओं का बक्सा व स्टेथस्कोप लिए वही युवक डाक्टर खड़ा था. उन्हें खयाल आया कि इसे ही क्यों न बुलाया मैं ने. "माताजी, बच्चा कहां है?"

"वो...वो... अंदर है है...!" श्रीमती रंजना को कुछ समझ में नहीं आ रहा था.

उस ने अंदर जा कर बच्चे को देखा. जल्दी से एक इंजेक्शन लगाया, फिर कुछ गोलियां श्रीमती रंजना के हाथों में देता हुआ बोला, "घबराने की कोई बात नहीं, माताजी. सब ठीक हो जाएगा. मैं ने इंजेक्शन लगा दिया है. आप यह गोली अभी इसे दे दीजिएगा. कुछ देर में होश आ जाएगा."

और वह फिर बच्चे के पेट एवं बांहों को मसलने सा लगा.

कुछ क्षणों में ही बच्चा होश में आ गया. बहू की जान में जान आई. श्रीमती रंजना तो एकदम भावविह्वल हो उठीं, उन से कुछ भी कहते न बना.

"**दरअसल** मैं अभी सिगरेट ले कर बाजार से लौट रहा था कि एक बच्चे की चीख सुनाई दी, वह अंधेरे में पत्थर की ठोकर लग जाने से गिर पड़ा था. मैं ने उठा कर उस का नाम पूछा. उस ने अपना नाम बबलू बताया, उसी से मुझे मालूम हुआ कि आप के यहां बच्चे की तबीयत खराब है और वह डाक्टर को बुलाने जा रहा था. सो, मैं बिना देर किए आ गया. आप ने सीधे ही मुझे क्यों नहीं बुलवाया? आप का पड़ोसी हूं. क्या इतना भी नहीं कर सकता. खैर, अब चलूं, ग्यारह बज गए हैं. अच्छा, नमस्ते," कह कर वह बिना कुछ सुने लौट गया.

श्रीमती रंजना हतप्रभ रह गईं. उन्हें इस युवक से ऐसे व्यवहार की आशा न थी. इस घटना का भी किसी को पता न चल सका.

अगले दिन कालोनी के सब लोग दंग थे क्योंकि श्रीमती रंजना हर बात में उस युवक डाक्टर की प्रशंसा किए जा रही थीं. ●

सफलता का सही समय

लेख • हिम्मतलाल ठक्कर

35-40 वर्ष की उम्र तक आतेआते लोग प्राय: निराश हो जाते हैं और सफलता की आशा छोड़ देते हैं, लेकिन आखिर किस प्रकार विश्वविख्यात लेखकों, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों ने इसी आयु के बाद सफलता प्राप्त की?

सफलता का अर्थ अपनी इच्छा, आकांक्षा का पूरा होना है. जिस उपलब्धि से व्यक्ति को सुख, संतोष, प्रसन्नता और तृप्ति मिले, वही उस के लिए सफलता है. सवाल यह है कि सफलता किस उम्र तक मिल जानी चाहिए.

काफी लोग 30-40 वर्ष की उम्र तक तो अपनी मनोवांछित इच्छाएं पूरी होने की आशा रख कर उत्साह के साथ प्रयत्नशील [illegible]ते हैं. किंतु आयु का चौथा दशक बीतने के [illegible] ही उन्हें निराशा घेरने लगती है. [illegible] एक तरह के लोग यह सोचने लगते हैं कि आधी उम्र यों ही निकल गई और इतने वर्षों में कोई उन्नति न कर पाए तो आगे ही क्या कर सकेंगे. ऐसा सोच कर वे सफलता के लिए प्रयास करना व्यर्थ समझ कर किसी भी नए काम या क्षेत्र में रुचि लेना बंद कर देते हैं. ऐसे लोग यह मान कर कि सफलता उन के बस की बात नहीं, शेष जीवन उसी घिसेपिटे ढर्रे पर गुजारने के लिए अपने मन को तैयार कर लेते हैं.

दूसरी तरह के लोग सफल होने में देर हो गई समझ कर हड़बड़ी मचाने लगते हैं. गलत और अनुचित उपायों से अपना लक्ष्य पाने का प्रयत्न करते हैं. ऐसे लोग अधिक परिश्रम और समय चाहने वाले उचित रास्तों

के बजाए झूठ, कपट और बेईमानी के छोटे दिखने वाले रास्तों पर चल पड़ते हैं. अंत में वे इस का बुरा परिणाम भुगतते हैं. उन्हें सफलता मिल भी जाए तो भारी कीमत चुकानी पड़ती है.

इन दो के अलावा एक तीसरी तरह के भी लोग होते हैं, हालांकि इन की संख्या बहुत कम होती है. ये यह मान कर चलते हैं कि सफलता नैतिक नियमों और मानवीय आदर्शों का पालन करते हुए ही अपनी योग्यता के बल पर पानी चाहिए, चाहे इस में कितना भी समय क्यों न लग जाए. सचाई, ईमानदारी और परिश्रम के जरिए सफलता मिलने में देर होने पर भी ये धैर्य रखते हैं. ऐसे लोग बेहद आशावान और दृढ़प्रतिज्ञ होते हैं तथा विलंब से ही सही, सफल हो कर ही रहते हैं.

सफल कौन होता है?

एक गैर सरकारी फर्म में तीन व्यक्ति मुनीम का कार्य करते थे. तीनों की आयु 40 के आसपास थी. तीनों की शिक्षा, योग्यता और सामाजिक स्थितियां भी लगभग एक सी थीं. केवल विचारों में अंतर था. इन में से एक सदा निराशापूर्ण बातें करता रहा. दूसरा जालसाजी करता रहता था, पर तीसरा फर्म के काम में अधिक दिलचस्पी लेने, व्यापारियों से मधुर संबंध बनाने, अपनी योग्यता बढ़ाने और पैसा बचाने में ज्यादा ध्यान देने लगा. 15 वर्षों के बाद पहला व्यक्ति 55 वर्ष की उम्र में भी उसी जगह उसी पद पर काम करता हुआ पाया गया. दूसरा सजा पाने से तो बच गया, किंतु अपमानित हो कर दूसरे शहर चला गया और किसी छोटी फर्म में गुजारे लायक ही काम पा सका. पर तीसरे ने स्वयं अपनी कंपनी खोल ली थी.

समय के घेरे में बंधी सफलताएं

बहुत थोड़े किस्म की सफलताएं ही ऐसी होती हैं, जिन्हें एक निश्चित और उचित समय तक पा लेना ही अच्छा होता है. पर अधिकांश सफलताएं जीवन के किसी भी भाग में प्राप्त की जा सकती हैं. अनेक लोग एक सी सफलता अलगअलग उम्र में प्राप्त

नैतिक मूल्यों व मानवीय आदर्शों का पालन करते हुए अपनी योग्यता के बल पर प्राप्त सफलता स्थाई होती है, भले ही यह देर से प्राप्त हो.

कर पाते हैं.

अधेड़ावस्था तक असफल रहने वाले लोगों के हताश हो जाने का कारण यह है कि वे अपनी उम्र की गणना अपने जन्मदिन से करते हैं. और चूंकि सामान्यतः 75 वर्ष से अधिक जीने की वे आशा नहीं रखते, अतएव 40वां वर्ष आतेआते वे समझने लगते हैं कि आधी से अधिक आयु बीत गई. अब बाकी थोड़ी उम्र में सफल होना संभव नहीं रहा.

किंतु यहीं वे भूल कर जाते हैं. असल में देखा जाए तो मनुष्य वास्तविक जीवन चालीसवें वर्ष के बाद से ही शुरू होता है. व्यक्ति को पूरी तरह विकसित और मस्तिष्क को परिपक्व होने में ही 25 वर्ष लग जाते हैं. उस वक्त तक अनुभव की दृष्टि से लोग नवयुवक ही कहे जा सकते हैं. तब तक वे जीवन की वास्तविकताओं से बहुत कम परिचित होते हैं. 25 से 40 वर्ष की उम्र तक लोग प्रायः पारिवारिक समस्याओं, यौन आकर्षणों और रोजगार आदि की चिंताओं में डूबे रहते हैं. फिर भी जीवन के यही 15 वर्ष उन्हें अनेक प्रकार के कड़ुवेमीठे अनुभव करा देते हैं. इस दौर में हर तरह के लोगों के संपर्क में आते रहने के कारण व्यक्ति काफी समझदार हो जाता है. इस स्थिति के बाद ही मनुष्य का नया जीवन शुरू होता है. अतएव व्यक्ति को अपनी उम्र की गणना 40वें वर्ष के बाद से ही करनी चाहिए.

अनुभवों का लाभ कब?

इस दृष्टिकोण से यदि लोग 50 वर्ष की उम्र होने पर भी अपनी आकांक्षा पूरी न कर पाएं तो उन्हें लगेगा कि उन्होंने 10 वर्ष ही खोए हैं, न कि 50 वर्ष या दो तिहाई आयु गुमा चुके हैं. उन 40 वर्षों को तो अलग ही रखना है, जो उन्हें अनुभवी बनाने में खर्च हुए हैं. उन संचित अनुभवों से लाभ उठाने की उम्र तो अभी ही शुरू हुई है.

100 मीटर की दौड़ में कोई खिलाड़ी [illegible] से अधिक समय निकल जाने पर भी पड़ा [illegible] हो [illegible] वह आगे बढ़ जाने की [illegible] है, क्योंकि इस में वह ज्योंज्यों दौड़ता है, अधिक थकता जाता है. किंतु किसी पहेली या सवाल को हल करने में दिए हुए समय का तीन चौथाई भाग बीत जाने पर भी जीतने की आशा रखी जा सकती है, क्योंकि इस में जितना मानसिक श्रम किया जाता है, उस का ही अनुभव बढ़ता जाता है. जीवन की तुलना शारीरिक दौड़ों से नहीं, मानसिक खेलों से की जा सकती है.

संसार में प्रसिद्ध और महान व्यक्तियों ने जितनी भी सफलताएं पाई हैं उन में से अधिकांश ने 45वें वर्ष के बाद ही प्राप्त की हैं. अमरीका में किए गए एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि 64 प्रतिशत महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने अपनी सर्वोत्तम सफलताएं 45 से 65 वर्ष की उम्र के बीच प्राप्त की थीं. इस बात से भी साबित होता है कि 40 वर्ष की उम्र जीवन का मध्यांतर नहीं, वास्तविक जीवन की शुरुआत है.

कम उम्र में ही सफल

जो थोड़े से कम उम्र के सफल व्यक्ति दिखते हैं, उन में भी तीन प्रकार के लोग होते हैं. कुछ असाधारण प्रतिभाशाली होते हैं, कुछ अनुकूल अवसरों और संयोगों के बल पर आगे आए होते हैं और कुछेक अपनी मानवता खो कर सफल हुए दिखते हैं.

किंतु जिन्हें हम सामान्य कहते हैं, अर्थात औसत क्षमता वाले व्यक्ति, जो बिना किसी की मदद के, अपनी योग्यता बढ़ा कर, सचाई और परिश्रम से आगे बढ़े हैं, वे 50वें वर्ष के बाद ही सफल हुए हैं. यही सच्ची और स्थायी सफलता है. असामान्य व्यक्ति तो 20 से 25वें वर्ष की उम्र में भी काफी कुछ कर गए हैं.

इस का अर्थ यह नहीं कि आप की उम्र 28 वर्ष है तो आप 12 वर्ष तक प्रतीक्षा करेंगे. नहीं, सफल होने की कोशिश तो हर उम्र में करनी चाहिए, किंतु जल्दबाजी में गलत तरीके नहीं अपनाएं. सही रास्ते चलने पर असफलता मिले, तब भी निराशहताश न हों. 51वें वर्ष से शुरू कर के भी आप सफल हो सकते हैं. लोग सफल हुए हैं.
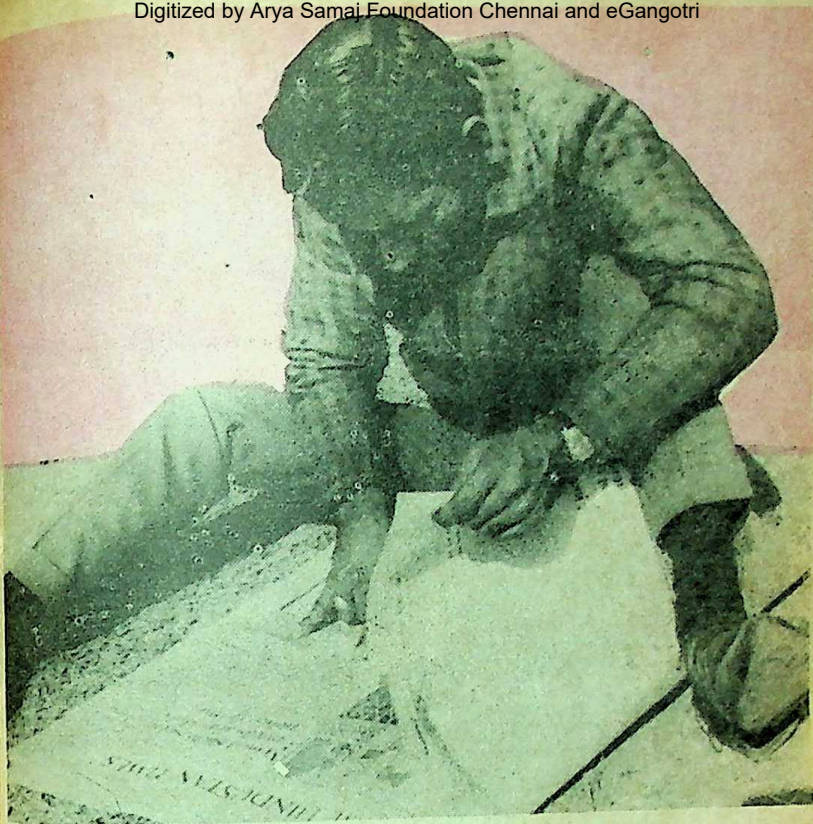
उम्र के इस मोड़ पर आ कर प्रगति के लिए कोशिश करना न छोड़ें क्योंकि संचित अनुभवों से लाभ उठाने की उम्र तो अभी शुरू ही हुई है.

जेम्स वाट ने 85 वर्ष की अवस्था में जरमन भाषा सीखी थी. श्रीमती मोसेज 80 वर्ष की उम्र में पेंटर बनीं. न्यूटन ने 83 वर्ष की उम्र में नई खोज की. टाम स्काट ने 86 साल की आयु में हिब्रू भाषा सीखी. गैलीलियों ने 70 साल की उम्र में 'गति' के नियम संसार को दिए. एडीसन ने 67 वर्ष की उम्र के बाद कई नए यंत्र बनाए. डेनियल डेफो ने 58वें वर्ष में, चौसर ने 61वें वर्ष में, कांट ने 74वें वर्ष में, जानसन ने 78वें वर्ष में, चतुरसेन ने 80वें वर्ष में, हाब्स ने 87वें वर्ष में तथा हंबोल्ट ने 90वें वर्ष में अपने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिखे. आर्थिक सफलता भी अनेक लोगों ने 60वें वर्ष के बाद पाई.

अतः यदि आप की उम्र अधिक हो गई हो और आप अपने को अब भी असफल पा रहे हों अथवा आप की आकांक्षा अधूरी रह गई हो तो निराश और चिंतित हो कर बैठ जाने की जरूरत नहीं है और न गलत राह पकड़ने की आवश्यकता है. अभी भी अपनी मेहनत से सफल होना संभव है.

यदि आप नाना या दादा बन जाने के बाद भी नए क्षेत्र को पकड़ कर चलने लगें तो अपने नातीपोतों के विवाह तक काफी कुछ कर सकते हैं. और यदि आप स्वास्थ्य के नियमों का पालन करें तो अपनी इन सफलताओं का 10-20 वर्षों तक खूब आनंद भी उठा सकते हैं.

प्रस्तुत है भारत का सर्वप्रथम
पवित्र
विक स्टोव
अद्वितीय तेल सूचक सहित
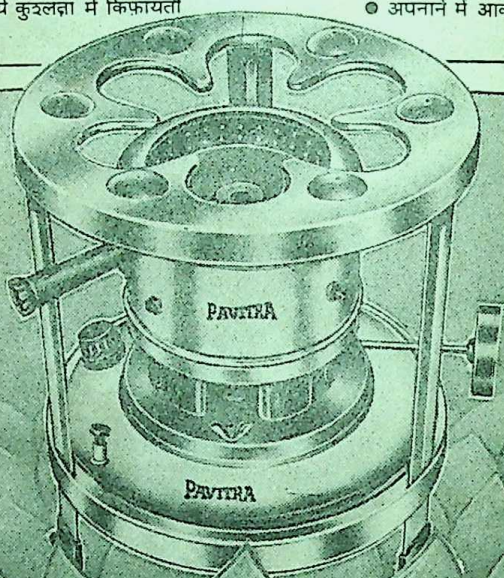
हांगकांग की सरकार कारों पर रोक लगा रही है

लेख • विवेक

हांगकांग में पिछले कुछ सालों से एक नई समस्या यह पैदा [हो] गई है कि यहां की सड़कों पर कारों की [सं]ख्या इतनी अधिक बढ़ गई है कि वे लगभग [रें]गती हुई नजर आती हैं. हांगकांग विश्व में [प्र]ति किलोमीटर सब से अधिक वाहन रखने [वा]ले देशों की सूची में आ गया है.

यहां पर कुल वाहनों की संख्या 3.3 [ला]ख है. इसे इस तरह भी कहा जा सकता है [कि] प्रति किलोमीटर 285 कारें सड़क पर [र]हती हैं. हांगकांग क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से [का]फी छोटा है, पर यहां की जनसंख्या [क्षे]त्रफल के अनुपात में काफी अधिक है. यहां [पां]च करोड़ से अधिक लोग रहते हैं. यहां के [प]रिवहन विभाग के अनुसार कारों की संख्या [में] पिछले 10 सालों में 8.4 प्रतिशत की दर से [सा]लाना वृद्धि हुई है.

सरकार इस वृद्धि दर को कम कर के [पां]च प्रतिशत करना चाहती है, जिस से [स]ड़कों पर कारों की भीड़ को कम किया जा [स]के. लोगों को कार खरीदने के लिए [हतो]त्साहित करने के लिए यहां की सरकार ने [का]रों के पंजीकरण शुल्क, वार्षिक लाइसेंस [फी]स व पेट्रोल पर लगने वाले करों में भारी वृद्धि कर दी है. इस के साथ ही यह भी चेतावनी दी है कि अगर यहं सभी प्रयास कारों की संख्या को नियंत्रित कर सकने में असफल साबित हुए तो और कड़े कदम उठाए जाएंगे.

सरकार के इस निर्णय से कार मालिकों और उन के भावी खरीदारों में बेचैनी फैलना स्वाभाविक था. उन्होंने इस का सख्त विरोध करते हुए कहा है कि अगर सरकार ने अपने इस निर्णय को नहीं बदला तो वह स्थानीय सरकार के खिलाफ लंदन में ब्रिटिश सरकार से अपील करेंगे कि वह स्थानीय सरकार की वर्तमान परिवहन नीति की जांच के लिए एक आयोग नियुक्त करे.

उल्लेखनीय है कि हांगकांग ब्रिटिश उपनिवेश है, यहां के लोगों की आम धारणा यह है कि सरकार द्वारा भारी कर लगाने के बावजूद कारों की बढ़ती संख्या पर नियंत्रण रख सकना संभव नहीं हो सकेगा, क्योंकि एक तो यहां के लोगों के पास पैसा काफी है दूसरे सरकारी परिवहन सेवा बदतर है. यहां के लोगों की आर्थिक स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि संसार में ब्रिटेन को छोड़ कर प्रति 1,000 व्यक्ति सब से ज्यादा राल्स रायस कारें हांगकांग में ही हैं •
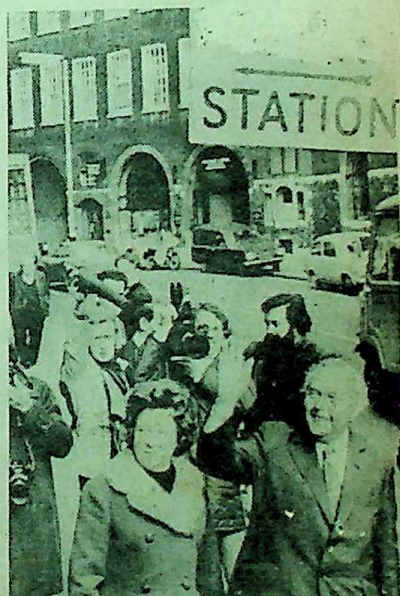
क्या आप एक अच्छी पुस्तक ढूंढ़ रहे हैं जिस को सब चाहते और पसंद करते हैं?

'विश्व पुस्तकें' देखिए!

'विश्व पुस्तकें' सारे भारत में पढ़ी जाती हैं और पसंद की जाती

अब तक लाखों पुस्तकों की बिक्री 'विश्व पुस्तकों' की लोकप्रियता का प्रमाण है.
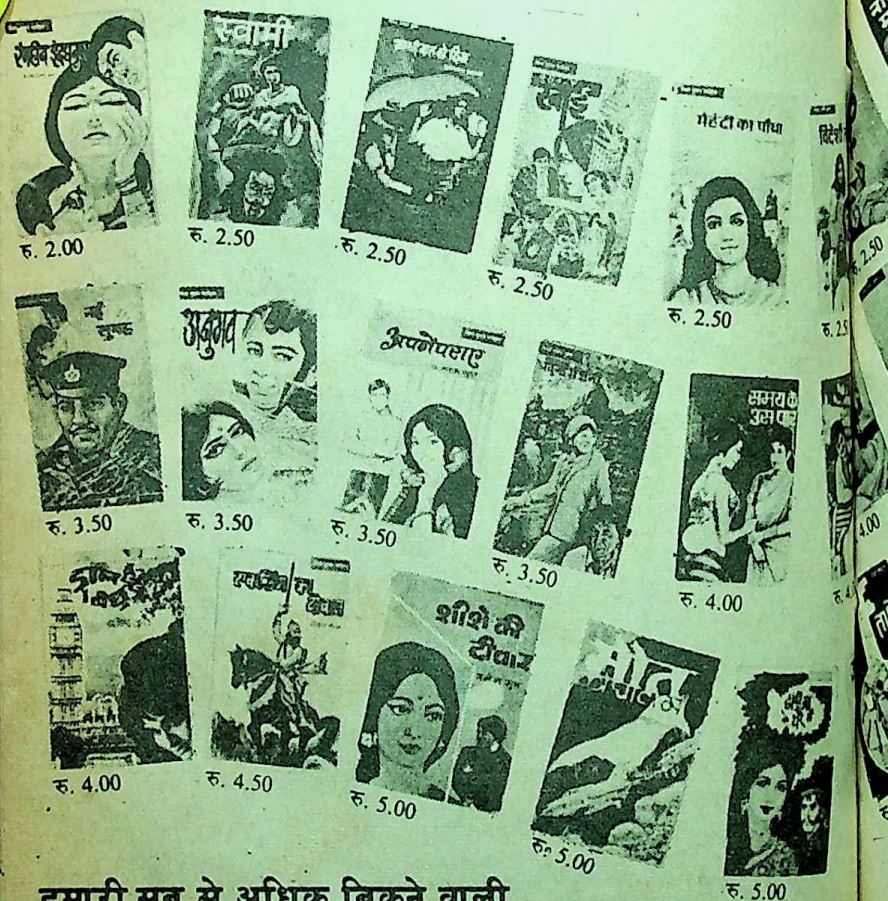
हमारी सब से अधिक बिकने वाली पुस्तकों में से कोई भी पुस्तक चुनिए.

लगभग 300 शीर्षकों में 6 विभिन्न मूल्यों में 'विश्व पुस्तकें' उपलब्ध हैं.

'विश्व पुस्तकें' व्यापक दृष्टिकोण वाले पाठकों के लिए विस्तृत जानकारी लिए हुए हैं.

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व प्रेरक.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेंजे :

दिल्ली बुक कंपनी एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001

पूरा सैट केवल 100 रुपए में. कोई भी पांच पुस्तकों के लेने पर एक पुस्तक मुफ्त. डाक खर्च में भी छूट.
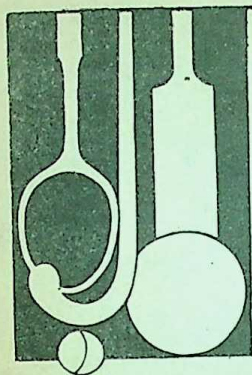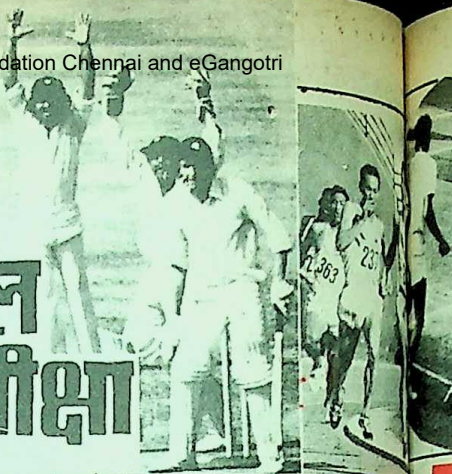
सुरेंद्रसिह गिल को क्यों हटाया गया?

आजकल आम तौर पर एशियाई खेलों के बारे में चर्चा होती है तो यही सवाल सामने रहता है कि क्या व्यवस्था की दृष्टि से ये खेल सफल साबित हो सकेंगे, लेकिन अब जब कि खेल होने में मुशकिल से चार महीने का समय बाकी रह गया है, सुरेंद्रसिह गिल को बरखास्त किए जाने से आशंका होने लगी है कि कहीं व्यवस्था करने वाली सारी मशीनरी ही तो नहीं चरमरा रही है.

सुरेंद्रसिह गिल को एशियाई खेलों की विशेष संयोजन समिति का महासचिव बनाया गया था. इस तरह की समितियां क्योंकि अस्थायी आधार पर बनती हैं इसलिए कोई विशेष बात हुए बिना किसी पदाधिकारी को हटाया नहीं जाता.

लेकिन गिल को हटा दिया गया जब कि उन्हें हटाने की कोई ठोस वजह सामने नहीं थी.

गिल पिछड़ी जाति आयोग के अतिरिक्त महासचिव थे जहां से उन्हें उठा कर एशि[याई] खेलों की विशेष समिति में ले आया गया. अब उन्हें अल्पसंख्यक आयोग का स[दस्य] बना कर भेज दिया गया है.

दरअसल यह सारी बात गिल [और] संयोजन समिति के अध्यक्ष बूटासिंह [के] विवाद की वजह से हुई. यह विवाद कई कई रूपों में खुल कर सामने आया.

रायटर समाचार एजेंसी को दव[ा] दिए गए वक्तव्य में गिल ने बताया कि एशियाई खेलों के आयोजन पर कुल 4[illegible] 20 करोड़ रुपए खर्च होंगे.

जब बूटासिंह से इस के बारे में [illegible] गया तो उन्होंने कहा, "यह बकवास है. वही 60-70 करोड़ रुपए के करीब होगा [illegible] कि मैं ने संसद में भी बताया था."

कहा जाता है कि एशियाई खेलों [के] आयोजन व्यवस्था में एक प्रवक्ता के तौर [पर] गिल की बढ़ती हुई लोकप्रियता ने बूटासिंह को नाराज कर दिया था.

विजय अमृतराज बांड फिल्म में
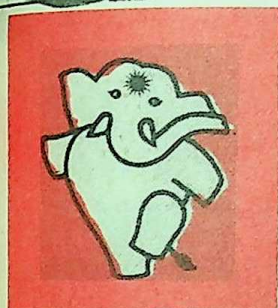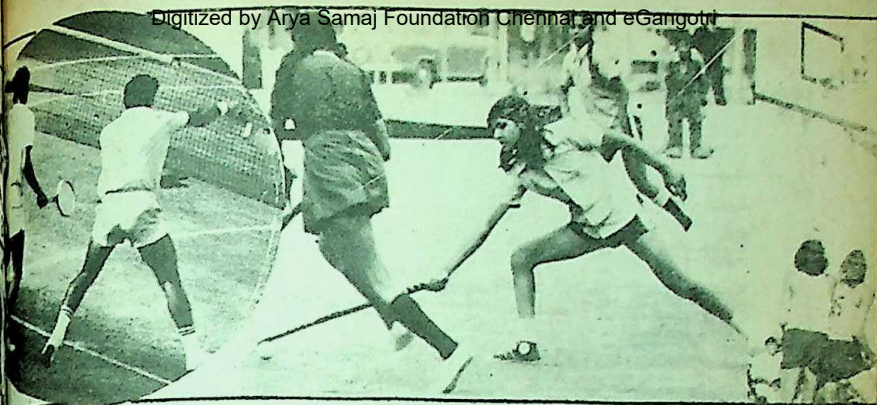
विजय अपने जीवन में ऐसे मुकाम पर पहुंच गया जहां एक खिलाड़ी की हैसियत से उस के आगे बढ़ने के रास्ते बंद हो गए हैं. जितनी काबिलियत उस में थी, उतनी सफलता वह टेनिस में पा चुका है.

शायद इसी लिए वह खुद भी सचाई को समझ कर अपने लिए ऐसे पेशों की तलाश कर रहा है जो भविष्य में उस के काम आ सकें. छोटा भाई अशोक जब टेनिस में नहीं चल सका तो विजय ने अमरीका में उस के लिए फिल्म निर्माण संस्था खुलवा दी. टेनिस खेल कर विजय सालाना करीब 15 से 20 लाख रुपए तक कमा लेता है.

यह सारा ही पैसा अशोक की फिल्म कंपनी में लग जाता है.

खुद विजय एक्टिंग करने के बारे में अब

एशियाई खेल विशेष संचालन समिति की एक बैठक में (बाएं से पांचवें) सुरेंद्रसिंह गिल : साफगोई महंगी पड़ी.

ज्यादा गंभीरता से सोचने लगा है. इससे फिल्मों में वह मामूली भूमिकाएं पहले भी कर चुका है. 'डेली मिरर' में छपी एक खबर के अनुसार विजय जेम्स बांड की नई फिल्म 'आक्टोपसी' में एक बड़ी भूमिका करने जा रहा है. इस फिल्म के हिंदी संस्करण में विजय जेम्स बांड बनेगा.

विजय जेम्स बांड की फिल्मों का इतना दीवाना है कि उस ने इस शृंखला की तमाम फिल्मों के वीडियो टेप अपने पास जमा कर लिए हैं.

देखें, इस नए क्षेत्र में वह कितना सफल हो पाता है.

ओलिंपिक में पेशेवर खिलाड़ी

ओलिंपिक खेल सिर्फ खेल भावना से खेले जाने चाहिए और उन में पैसों का दखल नहीं होना चाहिए– यह सिद्धांत पिछले 86 सालों से ओलिंपिक खेलों पर लागू है. लेकिन अब इसे बदलने की बात कही जा रही है. अगले साल 8 मार्च से 13 मार्च तक नई दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय ओलिंपिक समिति की आम बैठक होगी.

इस बैठक में इस बात पर मुख्य विचारविमर्श होगा कि पेशेवर खिलाडियों को क्या ओलिंपिक खेलों में हिस्सा लेने की इजाजत दी जाए?

भारतीय ओलिंपिक संघ के अध्यक्ष मालिदरसिंह के अनुसार, "खेलों से ... वाली खिलाड़ी की कमाई की हदबंदी तय ... जा सकती है."

सचमुच खेल आज दुनिया के किसी ... कोने में महज शौक की चीज नहीं रह गए ... खेल का सामान व बाकी उपकरण इतने ... हो गए हैं कि शौकिया खेलों में दिलचस्पी ... पाना दिन ब दिन मुशकिल होता जा रहा ... खिलाड़ी भी थोड़ी सी सफलता पाते ... पेशेवर बन जाना ज्यादा पसंद करने लगे ...

ऐसे में ओलिंपिक खेलों में एक ... ऐसा भी आ सकता है जब बढ़िया खिला... नजर ही न आएं. समय रहते चेत जाना ... मामले में लाभकर साबित हो सकता है.

इजराइयल का मसला

इजराइल हालांकि एशियाई ... महासंघ का सदस्य देश है लेकिन नई दिल्ली में होने वाले एशियाई खेलों में वह हिस्सा ... ले सकेगा क्योंकि उसे इस के लिए आमंत्रित नहीं किया गया है.

क्यों?

विजय अमृतराज : क्या खेलों से मिली ख्याति को फिल्म जगत में जा कर भी बरकरार रख पाएगा?
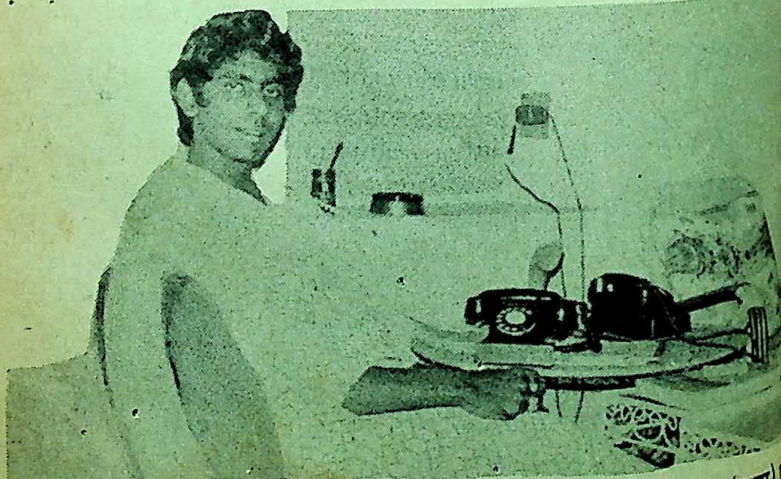
म्यूनिख ओलिंपिक में भाग लेते कुछ इजराइली खिलाड़ी : आखिर इजराइल को नवें एशियाई खेलों में आमंत्रित क्यों नहीं किया गया?

इजराइल के आने से एशियाई खेलों की रक्षा के लिए खतरा पैदा हो जाएगा. यह पुरानी दलील बेहद बकवास लगती है. अरब देशों की बेवजह खुशामद करने के लिए ही इजराइल को एशियाई खेलों से अलग किया जा रहा है.

अगर इजराइल लड़ाई के पचड़े में न पड़ा होता तो इस मामले को ले कर भारत की एशियाई खेल महासंघ की सदस्यता को रद्द करवा सकता था. महासंघ का नियम है कि इसके सदस्य देश को किसी भी खेल समारोह में हिस्सा लेने का पूरा अधिकार है. जातिगत द्वेष या किसी राजनीतिक आधार पर उसे खेलों में हिस्सा लेने से नहीं रोका जा सकता.

एशियाई खेलों की विशेष संयोजन समिति के अध्यक्ष बूटासिंह का इस बारे में कहना है, ''जहां तक नवें एशियाई खेलों का सवाल है, इजराइल वाला मसला बंद कर दिया गया है. इस सवाल के फिर से उभरने का कोई मतलब ही नहीं है.''

अंतरराष्ट्रीय ओलिंपिक समिति के अध्यक्ष मुयान एनोनियो सामाराच इजराइल को एशियाई खेलों में प्रवेश दिलाने के लिए प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से मिलने वाले हैं. अब भी बंद हुआ मसला बंद ही रह पाएगा?

दोस्ती दो दिग्गजों की

लान टेनिस के खेल में जब से व्यावसायिकता ने कदम रखा है, खिलाड़ियों में ही नहीं बल्कि खेल संस्थाओं में भी तीव्र प्रतिद्वंद्विता शुरू हो गई है. हाल ही में ऐसी प्रतिद्वंद्विता वाली दो संस्थाओं– पुरुषों की अंतरराष्ट्रीय पेशेवर टेनिस परिषद व पेशेवर खिलाड़ियों के टेनिस महासंघ ने एक लंबे समय का समझौता कर लिया है.

अंतरराष्ट्रीय लान टेनिस संघ के अध्यक्ष फिलिप चार्ट्रियर के अनुसार, दोनों ही संस्थाओं ने अपनी पुरानी दुश्मनी व मतभेद खत्म कर दिए हैं.

भारत में जहां खेलों में इतना ज्यादा पैसा नहीं है, क्या सभी अलग अलग काम करने वाली संस्थाएं एक हो कर सक्रिय नहीं रह सकतीं?
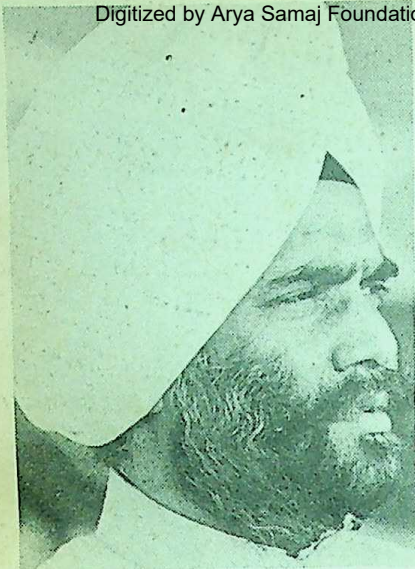
बूटासिंह : इजराइल वाला मसला बंद कर दिया गया है. इसलिए इस सवाल को फिर से उभारना फजूल है.

एशियाई खेलों के लिए

सिर्फ निर्माण कार्य ही नहीं, एशियाई खेलों के लिए बाकी इंतजाम भी काफी सावधानी व खूबसूरती से किए जा रहे हैं.

भोजन व्यवस्था व मनोरंजन के इंतज़ाम को ही क्यों न लें.

एशियाई खेलों के दौरान खिलाड़ियों, अधिकारियों, प्रतिनिधियों, पत्रकारों व दर्शकों के लिए भोजन की व्यवस्था करने के लिए संसद सदस्य रामनिवास मिर्धा की अध्यक्षता में विशेष समिति बनाई गई है. हालांकि वह नाम के अध्यक्ष हैं.

कार्यकारी अध्यक्ष संसद सदस्या रोडा मेस्त्री हैं लेकिन करना उन्हें भी कुछ नहीं है. भारतीय पर्यटन विकास निगम, सभी राज्यों के पर्यटन विकास निगम व एअर इंडिया मिल कर इस व्यवस्था को संभालेंगे.

इस के लिए 48 लाख रुपए की मशीनें विदेशों से मंगाई जा रही हैं. 9 लाख रुपए के यंत्र भारत से भी खरीदे जाएंगे. इन की मदद से खेल गांव में 4 भोजन कक्षों में 7 हजार व्यक्तियों का भोजन तैयार किया जा सकेगा.

डीप फ्रीज की सुविधा पर 49 लाख रुपए खर्च होंगे.

भारतीय, यूरोपीय और चीनी ढंग से भोजन बनाया जाएगा. दर्शकों के लिए डब्बा बंद भोजन की व्यवस्था होगी.

सभी स्टेडियमों में 134 स्टाल होंगे जिन में से 30 प्रतिशत को विकलांग व पिछड़ी जाति के लोग संभालेंगे.

विश्वविख्यात सितार वादक रविशंकर को एशियाई खेलों के उद्घाटन दिवस पर होने वाले सांस्कृतिक समारोहों का निदेशक बनाया गया है.

इस बात के लिए वह कोई पैसा नहीं लेंगे.

हिंदी के कवि नरेंद्र शर्मा ने एशियाई खेलों के लिए हिंदी में गीत लिखा है जिस का अनुवाद अंगरेजी में भी किया जा चुका है.

टेस्ट मैचों की बहार

एक तरफ टेस्ट क्रिकेट ऊबाऊ होता जा रहा है, दूसरी तरफ इंगलैंड के पांच दिन तक चलने वाले इस तमाशे के प्रति लोगों की अरुचि हो रही है, फिर भी 1984 तक का जो कार्यक्रम बना है उस के अनुसार 7 टेस्ट मैच खेलने वाले देश इस अरसे में एकदूसरे के खिलाफ 60 से ज्यादा टेस्ट मैच खेल डालेंगे.

भारत के लिए टेस्टों की कोई कमी नहीं है. पाकिस्तान, वेस्टइंडीज व आस्ट्रेलिया के खिलाफ क्रमशः 12, 12 व नौ टेस्ट मैच इस अरसे में खेल लिए जाएंगे. इंगलैंड के खिलाफ भी 6 टेस्ट मैच खेले जाने की व्यवस्था है.

पता नहीं इस बेकार के खेल को इतनी ज्यादा अहमियत क्यों दी जा रही है. साल में कम से कम आठ महीने का समय तो ऐसा होना ही चाहिए जब क्रिकेट का रागरंग कहीं सुनाई न पड़े?

घाटे की टेस्ट शृंखला

परिणाम के लिहाज से तो भारत व इंगलैंड के बीच खेली गई तीन टेस्टों की

शृंखला भारतीय दृष्टिकोण से बेहद निराशाजनक रही ही. आर्थिक दृष्टि से भी इसे काफी नुकसान उठाना पड़ा.

भारत में जैसी चाहे टीम आ जाए, टेस्ट मैच के दौरान स्टेडियम भर जाते हैं, लेकिन इंगलैंड के क्रिकेट के जानकार दर्शकों ने भारतीय टीम को दूसरे दरजे की टीम करार दे कर टेस्ट मैचों में दिलचस्पी लेनी ही बंद कर दी.

अनुमान है कि दर्शकों की इसी अरुचि की वजह से भारतीय दौरे से इंगलैंड की क्रिकेट काउंटियों को 6 लाख पौंड का नुकसान उठाना पड़ेगा.

इस का मतलब यह है कि हर काउंटी को करीब 35 हजार पौंड का नुकसान उठाना पड़ेगा.

पिछले साल आस्ट्रेलिया के आने से जितनी आय हुई थी, वह इस बार आधी रह गई है. टेस्ट व काउंटी क्रिकेट बोर्ड के मार्केटिंग मैनेजर पीटर लश के अनुसार, "आशा के अनुरूप तो दर्शक खैर आ ही नहीं रहे हैं. किसी भी टीम का इस से ज्यादा निराशाजनक दौरा पहले कभी नहीं रहा."

क्या अब भी यह कहा जा सकता है कि भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों को विदेशों में काफी लोकप्रियता प्राप्त है? ●

मैं कवि हूं, कविता लिखता हूं. कविताएं तो काफी लिखता हूं, पर सभी छपती नहीं हैं. मेरी कुछ कविताएं, जिन्हें मैं बहुत जोरदार समझता था, संपादक के खेदभरे इनकार सहित लौट आई हैं. फिर भी मैं निराश नहीं हूं.

पासपड़ोस में सब मुझे कवि के नाम से जानते हैं और अपनीअपनी समझ के अनुसार सम्मान या ताने देते हैं. कविता बढ़िया लिखूं या घटिया, लिख कर मन को जरूर संतोष

कहानी • अश्विनीकुमार भटनागर

प्रसिद्धि

मिलता है. यद्यपि कविता मेरी जीविका का साधन नहीं है, परंतु मेरे जीवन व आकांक्षा का सब से बड़ा सहारा है. कविता मेरे लिए एक गंभीर विषय है, लेकिन कविता के ही कारण मेरी पत्नी व अन्य संबंधी मेरा मजाक उड़ाते हैं.

वह दिन मेरे लिए सब से बड़े आश्चर्य का था, जब मेरे नाम एक निमंत्रण पत्र आया. ग्वालियर में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था और उस सम्मेलन में आने के लिए मेरी स्वीकृति की प्रार्थना की गई थी. मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि निमंत्रण पत्र मेरे ही नाम आया है. मैं आंखें मलमल कर देख रहा था. लिफाफा उलटपुलट कर देख रहा था, लेकिन लिफाफे पर मेरा ही नाम था. पता भी ठीक था. मैंने तुरंत ही स्वीकृति भेज दी.

दस दिन बाद ही कवि सम्मेलन था. मैं ने अपनी कविताओं की नईपुरानी डायरी निकाली. श्रोतागण जो कविताएं पसंद कर सकते थे, उन्हें एक तरफ करने लगा. फिर उन्हें एक दूसरी डायरी में लिख लिया. इस के अतिरिक्त कुछ और कविताएं भी साथ रख लीं. मैं अपनी कविताएं गा कर ही पढ़ा करता था. अकसर लोग मेरी आवाज की प्रशंसा किया करते थे.

अब मैं खयालों की दुनिया में विचरण करने लगा. मन ही मन उस समारोह की कल्पना कर रहा था. सोच रहा था कि जब मैं उठ कर माइक के आगे खड़ा होऊंगा तो

वातावरण तालियों से गूंज उठेगा. उस भव्य स्वागत से मेरा उत्साह बढ़ेगा और मेरी तरन्नुम भरी आवाज़ लहरा उठेगी, फिर खामोशी छा जाएगी और कुछ ही देर में श्रोता झूमने लगेंगे...

जब मैं भीड़ में धक्के खाता हुआ, अपना छोटा सा बक्स संभाले रेल के डब्बे से किसी तरह कूदफांद कर स्टेशन पर उतरा तो कपड़े अस्तव्यस्त हो गए थे. मैं लज्जा से इधरउधर देख रहा था कि कोई यह न देख ले कि यह 'महान' कवि दूसरे दरजे के साधारण डिब्बे से उतरा है. प्लेटफार्म पर मुझे कुछ लोग मिल गए जो बाहर से आए हुए कवियों

थे और कुछ थोड़े प्रसिद्ध कवि थे. पर यहां पर अपने आप स्तरीय विभाजन हो गया था. न मेरी जानपहचान का कोई था, और न किसी ने मेरी ओर देखा. अपनी ही बिरादरी में मैं अपने को उपेक्षित सा महसूस करने लगा. किसी ने मुझें उपेक्षित देख कर दया कर के मेरा नाम पूछा और जब मैं ने नाम बताया तो मुंह बिचका कर चल दिया. मुझे लगा जैसे इन कवियों के बीच मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है.

सम्मेलन रात्रि के आठ बजे से शुरू होने वाला था, परंतु 10 बजे तक शुरू होने का कोई आसार नहीं नजर आ रहा था. मैं उत्सुकता से बैठा हुआ सम्मेलन के प्रारंभ
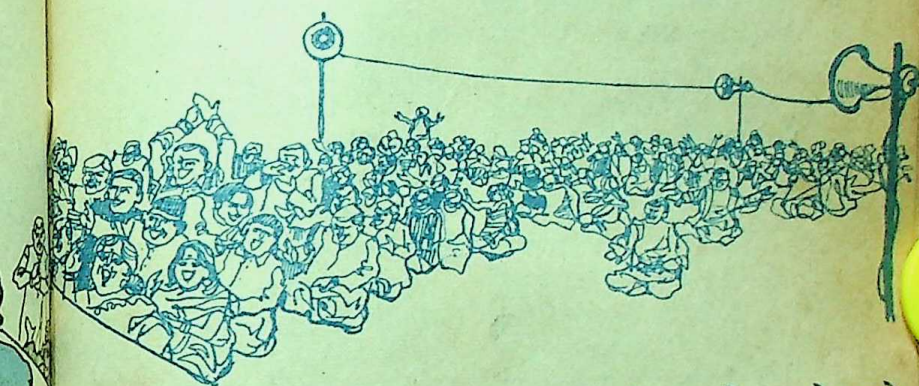
ग्वालियर के उस कवि सम्मेलन ने मुझे रातोंरात पूरे शहर में प्रसिद्ध कर दिया था, मगर सम्मेलन के चंद रोज बाद ही इसी शहर के लोग मुझे पहचानने तक से इनकार क्यों करने लगे?

को लेने आए थे. मैं ने उन्हें अपना परिचय दिया. उन्होंने अपनी सूची में मेरा नाम देख कर जिस नम्रता से स्वागत किया, उस से मेरा अहम फिर जाग उठा. मुझे लगा कि मैं भी कुछ हूं.

स्कूल के एक हाल में ठहरने की व्यवस्था थी. फर्श पर गद्दे बिछे हुए थे. वैसे बड़े नामीगिरामी कवियों का प्रबंध कहीं और था. इस हाल में कुछ मेरी तरह के कवि

होने की प्रतीक्षा कर रहा था.

एकाएक हाल का दरवाजा खुला और शराब की गंध मेरी नाक में घुस गई. एक कवि लड़खड़ाते हुए आ कर मेरे ही बिस्तर पर गिर पड़े. गूंगूं कर के कुछ गुनगुना रहे थे. मैं उठ कर दूसरी तरफ बैठ गया. सुना था कि महफिलों में रंग शराब से ही चढ़ता है, आज इस रंग से मेरा पहली बार साबका पड़ा था. नशे में धुत्त कवि ने जेब से शराब की आधी खाली बोतल निकाली और मेरी तरफ बढ़ाई.

मेरे ना में सिर हिलाने पर वह खिलखिला कर हंस पड़े और बोतल को मुंह से लगा लिया.

लगभग 11 बजे कवि सम्मेलन प्रारंभ हुआ. शुरुआत स्थानीय कवियों ने की, फिर श्रोताओं के शोर मचाने पर कुछ जानेपहचाने कवियों को मंच पर बुलाया गया. कुछ कवियों ने तो इतनी बढ़िया कविताएं पढ़ीं कि समा बंध गया, पर कुछ कवि शायद अधिक पी लेने की वजह से पिन चुभोए गए गुब्बारे की तरह से फुस हो गए. हास्य कवियों का बोलबाला रहा. बीच में मेरा नाम पुकारा गया. मेरा दिल धड़कने लगा. मंच संचालक ने कुछ बढ़ाचढ़ा कर ही मेरा परिचय दिया. आखिर मुझे निमंत्रण देने का कुछ न कुछ औचित्य तो रहा ही होगा.

जब मैं माइक के आगे खड़ा हुआ तो अपने हाथों का कंपन दूर करने के लिए मैं ने अपनी डायरी कस कर पकड़ ली. संचालक व संयोजकों का आभार प्रकट करने के लिए शब्द नहीं सूझ रहे थे. सामने श्रोतागण थे और मंच पर प्रसिद्ध कवि. घबराहट में मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बोलूं. मैं ने हिम्मत बांध कर डायरी खोली और पहली कविता गा कर पढ़ने लगा. वातावरण में खामोशी हो गई.

कविता समाप्त होने पर जब तालियों की गड़गड़ाहट से माहौल गूंज उठा तो मुझे सहसा विश्वास नहीं हुआ कि श्रोताओं को मेरी कविता इतनी पसंद आई है. परंतु हिम्मत बढ़ गई. एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी, और फिर न जाने कितनी देर तक पढ़ता चला गया. श्रोतागण भी उन कविताओं में आनंद ले रहे थे. वे सब कविताएं जो खेद सहित वापस आ गई थीं, आज प्रशंसा पा रही थीं. मैं सोच रहा था कि मैं आज कहां से कहां पहुंच गया हूं.

श्रोता कुछ और कविताएं सुनना चाहते थे, पर मैं ने उन से कह दिया कि मैं फिर सुनाऊंगा और अपने बैठने के स्थान पर जा रहा था कि संयोजक ने मुझे पकड़ लिया. उस ने मुख्य अतिथि व बड़े कवियों से मेरा परिचय कराया और उन के बीच बैठा दिया. कितने ही लड़केलड़कियां मेरे हस्ताक्षर ले गए.

दूसरे दिन मुझे कई गोष्ठियों के निमंत्रण मिल गया.

जब मैं सम्मेलन, गोष्ठियों व अनेक दावतों से निपट कर समाचारपत्रों में छपे अपने फोटो के साथ एक सप्ताह बाद घर पहुंचा तो देखा कि वहां मेरी ख्याति पहले ही पहुंच गई थी. बहन ने मुझे गले से लगा लिया. पिता ने हंस कर स्वागत किया. मां ने प्यार किया और पत्नी ने अपनी दुर्लभ मादक मुसकान मेरी ओर फेंक दी.

मैं दिन भर घर में कवि सम्मेलन से संबंधित बातें सुनाता रहा. कुछ मित्र भी मिलने आए, उन से निबटा. रात में कहीं पत्नी से बातें करने का मौका मिला. पत्नी ने जिद की कि मैं उसे सब बातें फिर से सुनाऊं. मैं ने फिर उसे विस्तार से ग्वालियर की बातें बताईं.

पत्नी ने पूछा, "क्या ग्वालियर शहर बहुत अच्छा है?"

"हां, बहुत अच्छा है. वहां किला भी है, महल भी है, तानसेन की कब्र भी है और सब से अच्छे तो वहां के रहने वाले हैं, जिन्होंने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं सचमुच उस में डूब गया."

"सच, तुम्हें मेरी याद नहीं आई?"

"आई क्यों नहीं, बहुत आई," मैं ने झूठमूठ ही कहा.

"झूठ." पत्नी ने नजाकत से मेरी नाक पकड़ते हुए कहा, "वहां तो खुद ही कितनी लड़कियां आगेपीछे मंडरा रही होंगी, मेरी याद क्यों आने लगी?"

मेरा झूठ पकड़ा गया. लेकिन स्थिति संभालते हुए मैं ने कहा, "क्यों नहीं, लड़कियां तो बहुत थीं, पर कोई तुम्हारे पैर की जूती के भी बराबर नहीं थी."

"फिर झूठ." पत्नी ने मचल कर कहा, "अच्छा, मुझे ग्वालियर घुमाने कब ले चलोगे?"

"जब कहो. अब तो वहां इतने मित्र हो गए हैं और इतने निमंत्रण हैं कि किसी तरह

का कष्ट न होगा.

"तो वादा करो."

"ठीक है, वादा रहा."

पत्नी ने मेरा वादा मुझे न भूलने दिया. मैं भी सोचने लगा कि क्या हरज है, एक बार फिर चक्कर लगा आते हैं. रहने और खाने का कोई खर्च है नहीं, क्योंकि वहां कई लोग हैं जिन्होंने मुझे अपने पते दिए हैं. उन के यहां ठहरा जा सकता है. इतनी जल्दी कोई भूलता नहीं है. कुछ प्रशंसकों के पते जो मैं साथ लाया था, उन पर पत्र डाल दिए. महीना डेढ़ महीना बाद जाने का कार्यक्रम बनाया था.

रास्ते में ट्रेन में कुछ गड़बड़ी हो जाने के कारण हम लोग रात के दो बजे ग्वालियर पहुंचे. स्टेशन पर हमें लेने कोई न आया था. स्पष्ट था कि इतनी रात तक कौन वहां रुक सकता था. मैं ने पत्नी से कहा कि सुबह तो कोई न कोई आएगा ही, अभी हम लोग प्रतीक्षालय में आराम करते हैं.

कुली हमें प्रतीक्षालय में ले गया. वहां के कर्मचारी ने नाम व टिकट नंबर लिखने के लिए अपना रजिस्टर सामने कर दिया. मैं ने नाम तो लिख दिया, पर प्रतीक्षालय प्रथम श्रेणी का था और मेरा टिकट दूसरी श्रेणी का था, इसलिए टिकट नंबर लिखते हुए मैं झिझक रहा था. झिझकते देख कर वह कर्मचारी मामला समझ गया. उस ने रजिस्टर बंद कर दिया.

मैं ने कुछ अपमानित महसूस करते हुए कहा, "भई, एकदो घंटे की बात है. सुबह चले हीं जाएंगे, प्रतीक्षालय में रुक जाने दो."

"नहीं साब," उस ने मजबूरी से सिर हिलाते हुए कहा, "जब आप जैसे पढ़ेलिखे

मैं ने भी दूसरे दरजे के उस पीड़ादायक प्रतीक्षालय में अपने लिए जगह बना कर बिस्तर फैला दिया. पर मैं चाह कर भी पत्नी से आंखें नहीं मिला पा रहा था.

लोग ही कानून तोड़ने के लिए कहेंगे तो छो
लोग क्या करेंगे."

मैं ने उस से अनुरोध करते हुए कहा, "भई, क्या तुम मुझे नहीं जानते हो? मैं अश्विनीकुमार, जो पिछले महीने यहां अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में आया था," मैं ने दर्प से कहा, "सारे अखबारों में मेरी फोटो भी छपी थी."

"आप ठीक कहते हैं, साब, पर हम गरीब लोगों को अखबार पढ़ने की फुरसत कहां है? फिर यह सम्मेलनसमारोह तो यहां आए दिन होते रहते हैं."

जब वह टस से मस न हुआ तो मैं ने प्लेटफार्म के प्रवेश द्वार पर खड़े टिकट कलक्टर से प्रतीक्षालय में ठहरने के लिए अनुरोध किया और अपने संबंध में भी बता दिया. उस ने भी मुझे पहचानने से इनकार कर दिया और मदद देने में मजबूरी जाहिर की.

कुली ने कहा, "साब, रुपया दो रुपया दे दो तो काम बन जाएगा. सब तो ऐसा ही करते हैं."

लेकिन मैं ने ऐसा नहीं किया. मैं ने कुली को दूसरे दरजे के प्रतीक्षालय में चलने के लिए कहा.

मेरा प्रसिद्धि का अभिमान चूर हो चुका था. मैं ने कुली को पैसे दे कर विदा किया. दूसरी श्रेणी के इस प्रतीक्षालय में हर तरह के अनेक मुसाफिर सोए हुए थे. कुछ संभ्रांत घर के लग रहे थे, कुछ भिखारी से थे. एक तरफ कुछ कोढ़ी लेटे हुए थे. वहीं इक्कादुक्का कुत्ते भी घूम रहे थे.

मैं पत्नी से आंखें नहीं मिला पा रहा था. सारी दुनिया का अपमान बरदाश्त कर सकता था, पर अपनी ही पत्नी की नजरों में गिर जाने की यह व्यथा बड़ी पीड़ादायक लग रही थी. विवश हो कर उन सोते हुए मुसाफिरों में मैं अपने लिए जगह खोजने लगा. एक खाली जगह देख कर बिस्तर फैला दिया.

पत्नी ने बिस्तर पर लेट कर मुंह पर साड़ी का पल्ला डाल लिया. मुझे लगा कि मेरी प्रसिद्धि पर परदा पड़ गया है.

50 लाख बच्चों की प्यारी
रंगीन पत्रिका

हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजन व शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां, चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए स्वरूप में ढालते हैं.

चंपक, पंजाबी और बंगाली भाषा के अलावा अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु और मलयालम भाषाओं में भी प्रकाशित होता है.

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें –
उन का मनोरंजन भी करें और
भविष्य भी संवारें.

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

साहित्य संगम
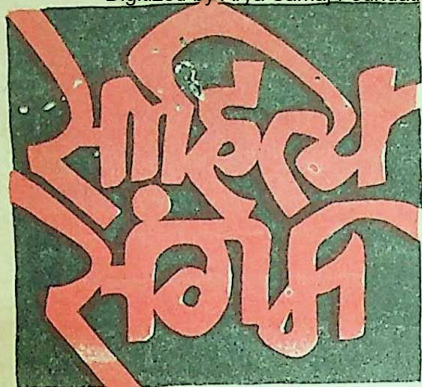
जादू जंगल

पुस्तक : जादू जंगल, लेखक : राजेश जोशी, प्रकाशक : प्रतिमान प्रकाशन, 64 चौक गंगादास, इलाहाबाद (उ.प्र.), पृष्ठ : 88, मूल्य : 12.50 रुपए.

आज तक न जाने कितने नाटकों, उपन्यासों, कहानियों में सेठ-साहूकारों द्वारा पीड़ित सामान्य जन का चित्रण होता आया है और हर रचना के अंत में रचनाकार उस सारे उत्पीड़न को आक्रोश और विद्रोह का जामा पहना कर उस का अंत कर देता है और अपने कर्तव्य से मुक्ति पा लेता है.

'जादू जंगल' का कथानक भी इसी मान्यता पर आधारित है और इस प्रकार इस नाटक में कोई नवीनता न हो कर यह पुराने ढर्रे का ही है.

लेखक राजेश जोशी तथाकथित जनवादी विचारधारा का प्रवक्ता नजर आता है और यही वजह है कि सहज और सामान्य सा लगने वाला नाटक जब एक विचारधारा को ले कर चलता है तो वह न केवल अपना प्रभाव ही खो देता है बल्कि एकपक्षीय होने के कारण तर्क की कसौटी पर भी खरा नहीं उतरता.

नाटक के बीच में गीतों का प्रयोग संवादों से तालमेल नहीं रख पाया है और यह सब हिंदी फिल्मों में जबरन ठूंसे हुए गीतों [illegible] लगता है.

मंच पर इस के प्रस्तुतीकरण में भी [illegible] दिक्कतें आ सकती हैं. हां, स्कूली बच्चों [illegible] लिए किसी भी नाटक के अभ्यास की दृष्टि [illegible] इस का प्रयोग किया जा सकता है.

लंगड़ी टांग

पुस्तक : लंगड़ी टांग, लेखक : सरन[illegible] श्रीवास्तव, प्रकाशक : प्रारूप प्रकाशन, [illegible] चौक गंगादास, इलाहाबाद (उ.प्र.), [illegible] संख्या : 100, मूल्य : 17.50 रुपए.

'लंगड़ी टांग' व्यंग्यकार हरि[illegible] परसाई की व्यंग्य रचना '[illegible] नागफनी की कहानी' का नाट्य रूपांतर [illegible]

यह नाटक हमारे आज के सामाजि[illegible] सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीति[illegible] पहलुओं पर तीखा व्यंग्य कर अपनी पु[illegible] मान्यताओं को ही अच्छा मानने वाले [illegible] पाठक को भीतर तक तिलमिला देता [illegible] प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ के तहत ही किसी [illegible] साथ देता है. प्रत्येक व्यक्ति मतलबी है, [illegible] वह किसी सेठ से मतलब रखने वाला [illegible] मंत्री हो या नौकर से अपना स्वार्थ सा[illegible] वाला कोई सेठ हो. जब तक स्वार्थ [illegible] गुंजाइश रहती है, सभी एकदूसरे को बैसा[illegible] समझ कर अपने साथ रखते हैं और स्वार्थ [illegible] पूरा होते ही दूसरे को लंगड़ा छोड़ कर [illegible] अन्यत्र स्वार्थ पूर्ति में लग जाते हैं.

नाटक में एक के बाद एक घटनाएं [illegible] पात्र अनायास ही आते चले जाते हैं और [illegible] कारण है कि पाठक को ऐसा लगता है जैसे [illegible] सब घटनाएं उस के सामने घट रही हों.

इस नाटक में कई स्थानों [illegible] हास्यव्यंग्य के प्रसंग स्तरहीन हो गए हैं [illegible] से उन में कई जगह भौंडापन आ गया है.

बहरहाल सरनबली श्रीवास्तव का [illegible] नाटक क्रम से कम एक बार तो पढ़ा ही [illegible] सकता है.

ऊंटों पर टिका एक पूरा देश : सोमालिया

लेख • विश्राम वाचस्पति

यहां ऊंटों को इतना महत्व दिया जाता है कि यहां की अर्थव्यवस्था, दंडविधान और सामाजिक मान्यताएं ऊंटों पर आधारित हैं...

आप को जान कर आश्चर्य होगा कि सोमालिया एक ऐसा देश है, जहां इनसानों से अधिक संख्या ऊंटों की है. 35 लाख चार हजार जनसंख्या वाले इस देश में 54 लाख ऊंट हैं. इस देश का सब से प्रमुख व्यापार और व्यवसाय ऊंट पालना है. संयुक्त राष्ट्र संघ की खाद्य तथा कृषि संस्था के अनुसार दुनिया के कुल ऊंटों का एक तिहाई भाग अकेले सोमालिया में है.

बाहर के देशों से सोमालिया में जाने वाले किसी भी नए यात्री को यह देख कर आश्चर्य होता है हजार डेढ़ हजार ऊंटों के रेवड़ कुछ डंडाधारी संरक्षकों के नियंत्रण में रेगिस्तानों को पार करते चले जाते हैं. यह रेवड़ वहां की राजधानी मोगादिशु से उत्तरी सीमा में जलाशयों की दिशा में बड़ी शान से बढ़ते हुए देखे जा सकते हैं.

सोमालिया कृषि के लिहाज से एक अविकसित देश है. यहां अब नदियों के आसपास राष्ट्रव्यापी योजनाओं पर काम शुरू किया जा रहा है. यहां के लोग मुसलमान हैं और अधिकतर अभी खानाबदोश हैं, जो पानी और चरागाहों की तलाश में अपनी भेड़बकरियों और ऊंटों के रेवड़ लिए निरंतर घूमते रहते हैं.

सोमालिया पहले ब्रिटेन के अधिकार में था. 1 जुलाई, 1960 को यह स्वतंत्र हो गया. यह अफ्रीका के पूर्वी समुद्र तट पर स्थित है, जिस के उत्तर में अदन की खाड़ी, पूर्व में हिंद महासागर और पश्चिम में केन्या व इथियोपिया हैं.

हालांकि सोमालिया में कागजी नोट चलते हैं, फिर भी किसी व्यक्ति को समाज में उस के ऊंटों की किस्म और संख्या के अनुसार मानसम्मान मिलता है. विवाह के अवसर पर दहेज भी मुद्रा में नहीं, ऊंटों के रूप में लिया-दिया जाता है. एक और मजेदार बात यह है कि हत्या के मामले में अपराधी को हार जाने की शक्ल में ऊंट ही देने पड़ते हैं.

(शेष पृष्ठ 150 पर)

चंचल और तरंग भरी सदा रहे जो खिली खिली
आगे ही आगे चली...
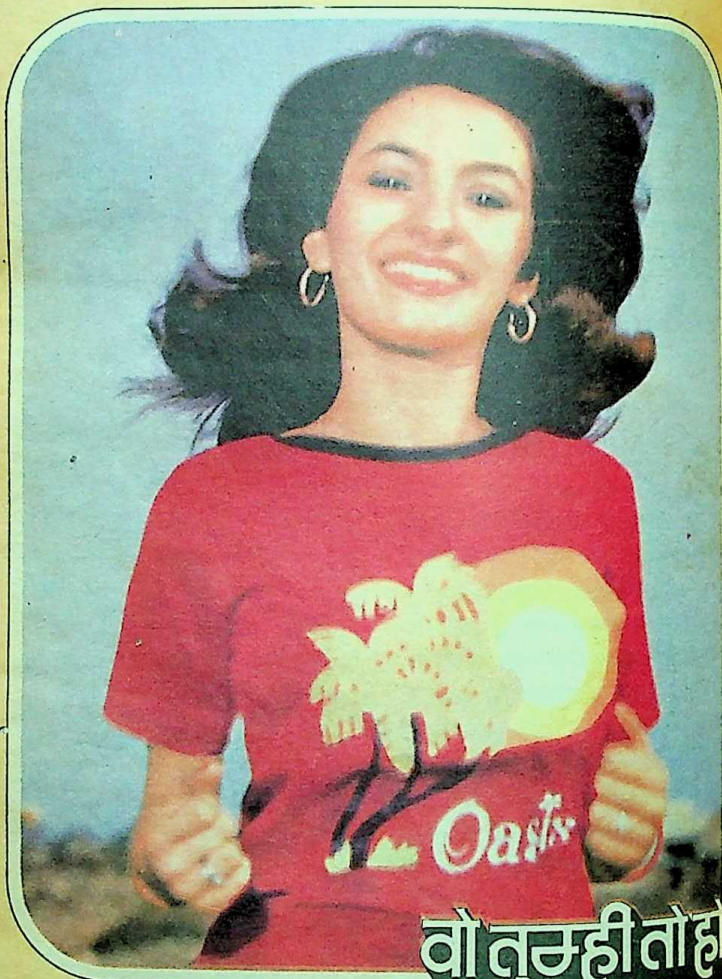
Oasis
TOILET SOAP
Oasis
Oasis

(पृष्ठ 147 से आगे)

1975 में इस देश में भयंकर सूखा पड़ा था, जिस के कारण वहां के लोग ऊंट पालने को और भी अधिक महत्व देने लगे हैं. कबीले के किसी भी मुखिया से इस बारे में पूछें तो एक ही जवाब मिलेगा, "हमारी जिंदगी ऊंटों से वाबस्ता है. भेड़बकरियों को वहीं रखा जा सकता है, जहां पानी हो, लेकिन ऊंट पानी से दूर रह कर भी जिंदा रह सकता है."

यह जानवर एक बार में पेट भर पानी पीने के बाद कितने दिन चल सकता है, इस के बारे में बहुत सी बातें कही जाती हैं. ऊंटों के एक रेवड़ के मालिक के अनुसार उन का एक ऊंट पानी पिए बिना 40 दिन तक रह गया था, लेकिन पशुविज्ञान विशेषज्ञों ने पता लगाया है कि सामान्य रूप से ऊंट 18 से 20 दिन तक बगैर पानी के रह सकता है.

ऊंट और पानी

वैज्ञानिकों के मत के अनुसार लोग यह समझते हैं कि ऊंट अपने कुब्ब में या शरीर के अंदर कुछ विशेष ग्रंथियों में पानी जमा कर के रख लेता है, पर यह गलत है. वास्तव में ऊंट इतने दिन बिना पानी के रह पाता है, इस के तीन कारण हैं.

पहला कारण है कि वह अन्य पशुओं से कम पेशाब करता है. दूसरे वह अपने अंदर के तापमान को बाहर के तापमान के अनुसार घटाबढ़ा सकता है. दिन में उस के अंदर का तापमान बढ़ जाता है और रात में कम हो जाता है, जिस से दिन में उस को गरमी के समय 41 डिगरी सेंटीग्रेड तक पसीना नहीं आता. वास्तव में पसीना न आने से शरीर का पानी कम नहीं होता, वह अंदर ही आवश्यकतानुसार दिशा परिवर्तन करता रहता है. साथ ही पानी की कमी होने पर ऊंट का रक्त अन्य पशुओं की भांति गाढ़ा नहीं होता. इसलिए भी उस की शक्ति गरमीसरदी से कम नहीं होती.

सोमालिया के लोग ऊंटों पर सवारी नहीं करते. वे आनेजाने के समय उन पर केवल मालअसबाब लादते हैं. उन को इस के बदले मांस और दूध मिलता है.

ऊंटनी के दूध के बारे में कहा जा[illegible] कि वह किसी भी [illegible] पशु के [illegible] से [illegible] शक्तिदायक और [illegible] होता है [illegible] कि चाय में डाल [illegible] पर [illegible]. पनीर की तरह [illegible] की शक्ल में बना रहता है. उस में [illegible] तत्वों और विटामिन 'सी' की मात्रा भी [illegible] अधिक होती है.

ऊंट स्वभाव से बहुत शांत पशु [illegible] परंतु जब कभी वह उत्तेजित हो जाता है [illegible] उसे संभालना कोई आसान काम नहीं हो[illegible] उस समय वह स्त्रियों के बस में नहीं [illegible] इसी लिए नर ऊंटों की देखरेख मर्द करते [illegible] और मादा को स्त्रियों के नियंत्रण में रखा [illegible] है.

किसी यात्रा से पूर्व ऊंट को [illegible] महनाना और उस पर बोझा लादना [illegible] व्यक्ति का काम होता है, जरा सी असावधा[illegible] होने पर वह अनाड़ी आदमी की खोपड़ी [illegible] जबड़े में ले कर उसे झकझोर देता है.

ऊंटों के प्रति सरकारी रुख

सोमालिया सरकार ने मादा ऊंटों [illegible] निर्यात पर रोक लगा दी है, जिस से उन [illegible] ऊंट पालन का व्यावसायिक एकाधिपत्य [illegible] रहे.

ऊंट यहां के लोगों के लिए कितनी ब[illegible] पूंजी है, इस का इसी से अनुमान लगाया [illegible] सकता है कि वह 30-40 साल तक अ[illegible] स्वामी की सेवा करता है. आवश्यकता पड़[illegible] पर 250 किलो माल ले कर एक दिन में [illegible] किलोमीटर तक जा सकता है और उसे [illegible] 20 दिन में केवल एक बार पानी पीने [illegible] जरूरत महसूस होती है.

सोमालिया वासी ऊंट को वैसे ही प्या[illegible] करते हैं, जैसे अरब में लोग घोड़े या गधे [illegible] वह उन के लिए विदेशी मुद्रा कमाता है. [illegible] की जांघ के चमड़े से रेगिस्तान की तपती [illegible] में चलने के लिए जूते बनते हैं, खाने के लि[illegible] उसी का मांस मिलता है और बालबच्चों [illegible] लिए उस का दूध. इसी लिए सोमालिया [illegible] ऊंटों का देश कहा जाता है.

"कर्कश और दानेदार मंजन आपके मसूढ़ों और दांतों को नुकसान पहुंचा सकते हैं..."
कोलगेट टूथ पाउडर से अपने दांतों और मसूढ़ों की सुरक्षा कीजिये – और सांस की दुर्गन्ध भी रोकिए!
Colgate
TOOTH POWDER
Protects your teeth and gums
कोलगेट टूथ पाउडर अति सूक्ष्म और सफ़ेद है। यह कोमलता के साथ आपके मसूढ़ों की मालिश करता है, जब कि इसका पालिश करनेवाला तत्व आपके दांतों पर से मैल की परत हटाता है, इन्हें ज्यादा साफ़ और ज्यादा सफ़ेद बनाता है। कोलगेट भरपूर झागदार होने के कारण आपके दांतों के बीच की जगहों में घुसकर दुर्गंध और दंत क्षय पैदा करनेवाले कीटाणुओं को नष्ट कर देता है और सांस की दुर्गंध खत्म हो जाती है।
कोलगेट टूथ पाउडर से अपने परिवार को आधुनिक दंत संरक्षण दीजिये। उन्हें इसका पेपरमिंट का ठंडा स्वाद बेहद पसंद आयेगा।
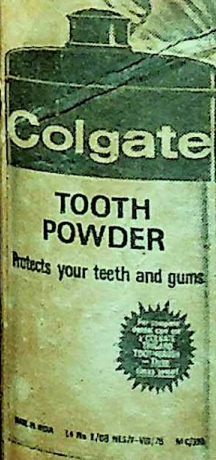
जुलाई (द्वितीय) 1982
शृंगारिक अप्सराओं के सौंदर्य
का प्रतीक : खजुराहो
अंतरिक्ष में

बैद्यनाथ च्यवन

सदा सबके लिए सेवनीय

स्फूर्ति

यौवन

विकास
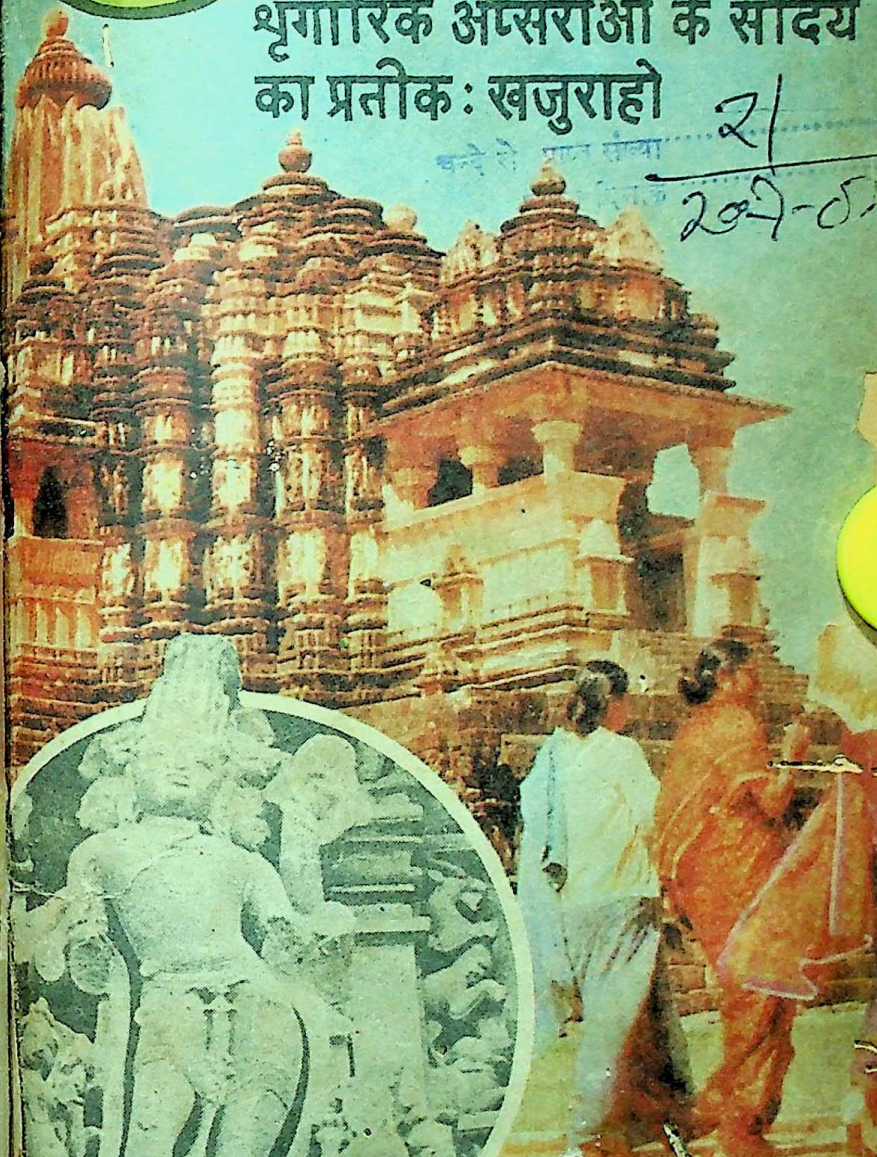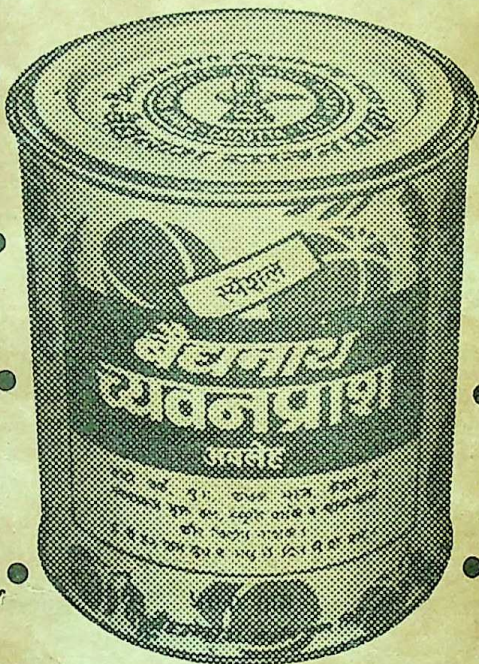
कफ खांसी नाशक

दिमागी ताजगी

बलवर्द्धक

आदर्श आयुर्वेदिक पारिवारिक टानिक

बैद्यनाथ च्यवनप्राश क्यों ?

क्योंकि यह ५० से ज्यादा जड़ी-बूटियों के तत्वों से बना ऐसे प्राकृतिक विटामिनों से भरपूर है जो मानव शरीर के लिए आसानी से पाचन योग्य है। रासायनिक प्रक्रिया से बनाये गये दूसरे टानिकों में यह गुण नहीं होता। इसके अलावा, बैद्यनाथ च्यवनप्राश आपके लिए और आपके परिवार के लिए अति आवश्यक स्वास्थ्यवर्धक टानिक है क्योंकि यह है :

- विटामिन 'सि' से भरपूर
- कफ खांसी, जुकाम नाशक
- केल्शियम एवं खून की कमी के लिये
- ताजगी और तन्दुरुस्ती के लिये
- यौवन के लिये
- आयु व बलवर्द्धक
- त्रिदोष नाशक

बैद्यनाथ ७०० से अधिक दवाएं पांच आधुनिक कारखानों में तैयार करता है

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड

कलकत्ता • पटना • झाँसी • नागपुर • इलाहाबाद
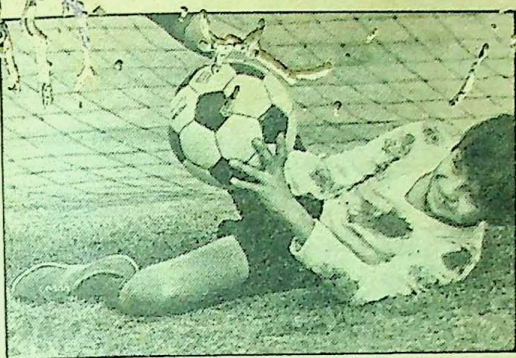
BAB/281/HIN

अब लीजिये, आर्निका फूलों के लाजवाब गुणों से भरा भारत का पहला शैम्पू

इमामी शैम्पू

आर्निका—विश्व विख्यात भेषज सत्व जो बालों के पोर-पोर में समा कर रक्त का संचार करता है—और स्वस्थ एवं सघन बालों का राज भी यही है।

बालों की क्षतिग्रस्त जड़ें

आप अब तक बहुत से शैम्पू आज़मा कर देख चुके हैं—प्रोटीन कंडिशनर, शिकाकाई, ऐन्टी डैन्ड्रफ और दूसरे अनेक तथाकथित "नैचॅरल" भी। फिर भी आपके बालों में वैसी सघनता, मजबूती तथा चमक नहीं आई। आपके बालों का असमय पकना और झड़ना रुक नहीं पाया।

अधिकांश शैम्पू सिर्फ बालों को धोकर साफ कर देते हैं, किन्तु बालों की जड़ों में रक्त का संचार नहीं बढ़ा पाते।

आर्निका सत्व बालों की जड़ों में रक्त का संचार बढ़ाता है
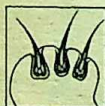
आर्निका की मदद से फिर से होने लगता है स्वस्थ, सतेज और कान्तिमान बालों का विकास

आर्निका फूलों के अनोखे सत्व से भरा इमामी शैम्पू सीधे बालों की जड़ों में पहुँच कर रक्त का संचार बढ़ाता है। आपका सपना पूरा होता है—आपके बालों में आ जाती है तरुणाई, कान्ति और मोहक सौन्दर्य।

इमामी शैम्पू बालों की सफाई के लिये देता है भरपूर झाग एवं इसकी भीनी-भीनी मोहक सुगन्ध घंटों दिलो-दिमाग पर छायी रहती है।

इमामी शैम्पू — बालों की खूबसूरती का नया अन्दाज
यही तो है आर्निका के गुणों का असली राज

मुक्ता

कला · क्रांति · कर्मण्यता

स्वस्थ, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

जुलाई (द्वितीय) 1982
अंक : 383

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस म.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष : 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए.
मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग** : एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001. **बंबई कार्यालय** : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. **मद्रास कार्यालय** : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31 2 ए पैंथन रोड, सर्लाल शिवाजी एस्टेट, मद्रास-600008.

'सड़क दुर्घटनाएं : दोषी कौन' (मुक्त विचार जून/द्वितीय) में व्यक्त आप के विचारों से मैं सहमत हूं. यह बात बिलकुल सही है कि हमारे यहां यातायात पुलिस पर्याप्त नहीं है, और जो है उन की कोई नहीं सुनता. सभी वाहनों के चालक मनमानी करते हैं. दुर्घटनाओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है. कई बार ऐसा होता है कि यातायात पुलिस का सिपाही रुकने के लिए हाथ से संकेत कर रहा होता है, परंतु वाहन चालक वाहन को रोकने के बजाए और तेजी से निकाल कर ले जाते हैं. ऐसे में दुर्घटना की आशंका बढ़ जाती है. इसे देखते हुए दोषी लोगों के विरुद्ध कड़ी काररवाई जरूरी है.

इसी अंक में प्रकाशित लेख 'क्या बहुएं सचमुच सताई जाती हैं?' बहुत प्रभावशाली था. यह सही है कि लड़कियों के मन में शुरू से ही सास के प्रति बुरी भावना बैठा दी जाती है. मां द्वारा दी गई गलत शिक्षा के कारण बहुओं का जीवन कड़वाहट से भर जाता है. अगर बहू सास व घर के अन्य सदस्यों से अच्छा व्यवहार रखेगी और समझदारी से निर्णय लेगी तो लड़ाईझगड़े होने और मनमुटाव होने का सवाल ही नहीं उठता. बहू को दहेज में मिले सामान पर भी अपना एकाधिकार नहीं समझना चाहिए.

— गुरबीरसिंग चांवला

*

'राष्ट्रपति कोई भी बने' (मुक्त विचार जून/द्वितीय) टिप्पणी पढ़ी, लेकिन उस में इतनी योग्यता तो अवश्य ही होनी चाहिए कि वह समयसमय पर राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारण हिंदी में कर सके.

आप ने यह भी सोलह आने सच लिखा कि राष्ट्रपति प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी का ही कोई मोहरा बन गया तो उस की स्थिति वर्तमान मुख्य मंत्रियों से भी बदतर ही होगी. वह प्रधान मंत्री की आज्ञा मिलते ही किसी भी कागज पर हस्ताक्षर कर देगा. जब कि सर्वसम्मति से चुना गया उम्मीदवार कुछ भी करने से पूर्व अपने विवेक का प्रयोग करेगा. अब तो यह स्पष्ट हो गया है कि भावी राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह इंदिरा गांधी की कठपुतली ही साबित होंगे.

— मनोज आंचलिया टोनी

*

राष्ट्रपति ने (मुक्त विचार जून/प्रथम) फिल्मों के सैंसर के बारे में अपने विचारों में जो उदारता का परिचय दिया है वह प्रशंसनीय है. परंतु अगर निर्णय जनता पर छोड दिया जाए तो वह सब से अच्छा होगा. अच्छी और बुरी फिल्में व सैक्स एवं कला फिल्में देखने के बाद जनता ही असली निर्णायक होगी.

आजकल की फिल्मों में सैक्स के दृश्यों के न होने पर भी फिलम को 'वयस्कों के लिए' प्रमाणपत्र दे दिया जाता है. जिस से हर उम्र का दर्शक उस फिलम की ओर भागता है.

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

दूसरी ओर जिस फिल्म को सब के लिए प्रमाणपत्र मिलता है और उस में सैक्स के कुछ दृश्य रहते हैं तो लोग अनदेखा कर जाते हैं.

यह सही है कि हिंसा या नग्नता में रुचि बहुत कम दिन ही रह पाती है, जैसे किसी चीज के बारबार उपयोग से उस की उपयोगिता घटती जाती है.

— सतीशकुमार कुजामा

*

'संचार माध्यमः दोहरे मापदंड' (मुक्त विचार जून/प्रथम) में आप के द्वारा उठाई गई आपत्ति से मैं पूर्णतया सहमत हूं. विदेशी मुद्रा को बचाने के दो ही तरीके हैं— अनावश्यक आयात में कटौती और निर्यात में वृद्धि.

यह वास्तव में आश्चर्यजनक बात है कि सरकार समाचारपत्र के कागज तथा अन्य आवश्यक माल के आयात में कटौती कर रंगीन टेलीविजन सेट जैसी विलासपूर्ण वस्तुओं के आयात पर अनावश्यक रूप से विदेशी मुद्रा खर्च कर रही है.

— सुरेंद्र कांस्टिया फालना

*

सरकार एक ओर तो नशाबंदी कानून पास करती है (मुक्त विचार मई/द्वितीय) और दूसरी ओर देश में शराब की बिक्री करवाती है. जब सरकार यह स्पष्ट रूप से जानती है और साथ ही शराब की बोतलों पर यह अंकित भी करवाती है कि शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकर है तो फिर सरकार द्वारा शराब के उत्पादन और विक्रय का क्या अर्थ है.

— रामजतन राम

*

'रोजगार कार्यालयों'(मुक्त विचार मई/द्वितीय) के बारे में आप के विचार एकदम सही हैं.

आज भी हमारे झरिया शहर में जो कि कोयला क्षेत्र के नाम से जाना जाता है, कोई रोजगार कार्यालय नहीं है. क्या सरकार गांवों में रोजगार कार्यालय खोल सकती है और रोजगार की तलाश में भटक रहे युवकों को नौकरी दिला सकती है.

बिहार सरकार की नीति अपरिपक्व मालूम होती है, जिस से बेरोजगार युवा वर्ग अंदर ही अंदर सुलग रहा है. ये युवा लोग कभी भी एक नई क्रांति को जन्म दे सकते हैं. असम, उड़ीसा आदि की स्थिति इस का ज्वलंत उदाहरण है.

बेरोजगारों के लिए बेरोजगार भत्ता योजना बिहार सरकार ने लागू की है, लेकिन आज तक किसी बेरोजगार को एक कौड़ी भी नहीं मिली है. उधर सरकार बारबार हर जगह यही घोषणा करती है कि सरकार बेरोजगारों को भत्ता दे रही है, कितनी शर्म की बात है.

— सतीशकुमार

*

यंत्र मानवी (जून/द्वितीय) एक वैज्ञानिक कहानी है, पर रचनाकार विज्ञान के विषय में अनभिज्ञ प्रतीत होता है. जैसे लेखक के अनुसार यंत्र मानवी मानसिक व शारीरिक रूप से पूर्णतया सक्षम है. किसी भी कार्य को वह सामान्य मानव से अधिक परिष्कृत ढंग से कर सकती है. तब स्नानगृह से निर्वस्त्र निकलने पर उस का चिल्लाना और स्तन से तार खींच कर यह कहना कि तारों को बिजली के प्लग से जोड़ दीजिए और मुझे बचा लीजिए, उल्टी ही बात कहता है.

— अवधेशकुमार सिंह

*

'खेल समीक्षा' (जून/द्वितीय) पढ़ कर देश के हाकी जगत के भीतर चली आ रही राजनीति की वास्तविकता का ज्ञान हुआ. अगर यह सही है कि सुरजीतसिंह ने कप्तानी न मिलने के कारण संन्यास लिया है तो यह सुरजीतसिंह की 'मूर्खता' है. क्या वह टीम का कप्तान नहीं रहेगा तो उस का प्रदर्शन उच्च कोटि का नहीं रह पाएगा? सुरजीतसिंह को तो इस बात से खुश होना चाहिए कि अब कप्तानी का भार सिर से हटने के कारण वह और अच्छा प्रदर्शन करने में सक्षम होगा. सुरजीत के लिए यह स्वर्ण अवसर था कि वह एशियाई खेलों में स्वयं को 'सर्वश्रेष्ठ हाकी खिलाड़ी' सिद्ध करता.

— शिवकुमार

*

लेख 'क्या बहुएं सचमुच सताई जाती

है?' काफी विचारोत्तेजक लगा. उस संदर्भ में मेरा एक सुझाव है कि मरने वाली बहू के अगर कोई संतान है तो उस संतान को बहू द्वारा लाया गया सारा दहेज दे दिया जाए. यह सब न्यायालय की निगरानी में रहे और संतान के बालिग होने पर उसे मिले. अगर संतान नहीं है तो पूरा दहेज लड़की के मायके वालों को लौटाया जाए. यदि मायके वाले दहेज न लेना चाहें तो वह सरकार के खजाने में जमा किया जाए. जिस व्यक्ति की पत्नी जल मरी है, उसे पुन: विवाह करने की सुविधा नहीं मिलनी चाहिए. ऐसा होने पर लोभी व्यक्ति सोचेंगे कि घर का पैसा जाएगा और नया पैसा (दहेज) नहीं आएगा तो हत्या जैसा जघन्य अपराध क्यों करे. — **भूपेश पांडे**

*

कहानी 'जिंदगी एक चुनौती है' (जून/प्रथम) में जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण अपनाने की लेखक की सलाह निश्चय ही वर्तमान युग में महत्वपूर्ण है. वास्तव में जीवन एक चुनौती ही है, दर्द नहीं. जो मुसीबतों में भी सदैव मुसकराता रहता है, उस के लिए जीवन एक आनंद से कम नहीं है.

— **मुन्ना दूदानी 'कवि'**

*

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित नाटक समारोह की रिपोर्ट (जून/प्रथम) में लेखक के दिमाग के दिवालिएपन का पता चला. मैं ने 'पंच परमेश्वर' नाटक का प्रदर्शन कई बड़ेबड़े सभागारों में देखा है. जिस का अनेक बार करतल ध्वनि से स्वागत किया गया था. नाटक की मंच परिकल्पना, संवादों का चुटीलापन, अभिनय, वेशभूषा, ध्वनि एवं प्रकाश प्रभाव आदि अत्यंत सुंदर, सुगठित व अविस्मरणीय रहा है. — **उर्मिल शर्मा**

*

'पंच परमेश्वर' नाटक के विषय में लेखक (जून/प्रथम) के विचार पढ़ कर बहुत दुख एवं आश्चर्य हुआ. मैं स्वयं नाट्य कला के प्रति समर्पित हूं. इस नाटक को दिल्ली में मुंशी प्रेमचंद जन्म शताब्दी अंतरराष्ट्रीय समारोह

के अंतर्गत प्यारे लाल भवन में तथा विद्यापति स्मृति समारोह में मावलंकर हाल में और गांधी जयंती पर कई बार देखा है. नाट्य कला का विद्यार्थी होने के नाते तुलनात्मक अध्ययन मेरी आदत बन गई है. विभिन्न समाचारपत्रों ने इस नाटक की भूरिभूरि प्रशंसा की है.

नाटक में आदि से अंत तक घटनाओं के उतारचढ़ाव के बावजूद जो एक सूत्रता बनी रही, वह कुशल निर्देशन का प्रमाण थी.

आप स्वयं अपनी पत्रिका 'मुक्ता' के स्वाधीनता अंक (अगस्त द्वितीय/1982) में ही लेखक प्रदीप गुप्ता द्वारा 'पंच परमेश्वर' नाटक के मंचन से प्रभावित हो कर पांच पृष्ठों में पांच छायाचित्रों सहित सुरेंद्र कौशिक से की गई प्रभावशाली एवं सारगर्भित भेंटवार्ता प्रस्तुत कर चुके हैं. एक ही पत्रिका में इतना बड़ा विरोधाभास? — **अनुपमकुमार**

*

नाटक 'पंच परमेश्वर' की एकतरफा आलोचना पड़ी. इसी वर्ष फिर प्रसिद्ध नौचंदी मेले में यही नाटक सर्वप्रथम घोषित किया गया था. इस से पूर्व भी इसी नाटक का प्रदर्शनी में 25-30 बार मंचन हो चुका है.

ऐसे नाटक की जिस का स्कूल, कालिज, विश्वविद्यालय एवं प्रदर्शनियों में सफलतापूर्वक मंचन हुआ है, जिस के मंचन की बारबार मांग की जाती है और जिस के मंजे हुए कलाकार 650 बार से अधिक सफल मंचन कर चुके हों, लखनऊ में जा कर संवाद भूल जाएंगे, अटकने लगेंगे यह अपने आप में कितना बड़ा झूठ है.

— **महेंद्रकुमार 'निर्मल'**

*

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी नाट्य समारोह संबंधित लेख बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है.

लेखक ने इस में नाट्य समारोह पर अधिक बल देने के साथसाथ उत्तर प्रदेश के छोटे जिलों के प्रतिनिधित्व की बात भी कही है. इन छोटे जिलों में पर्याप्त सुविधाएं न होने के कारण रंगकर्मी अपनी कला व प्रतिभा को नहीं निखार पा रहे हैं. इन जिलों में ढंग का एक भी प्रेक्षागृह नहीं है न ही इस में संगीत नाटक अकादमी या भारतेंदु नाट्य अकादमी के शिविर लगते हैं. उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ तक में विश्वविद्यालय से ले कर पूरे शहर में रवींद्रालय को छोड़ कर एक भी अच्छा प्रेक्षागृह नहीं है. रवींद्रालय की मरम्मत न होने के कारण गड़बड़ हो रहा है और वहां प्रकाश की समुचित व्यवस्था नहीं है और टिकट दर भी हर माह बढ़ा दी जाती है. ऐसे में क्या नाट्यकला को जीवित रखने की कल्पना की जा सकती है?

सांस्कृतिक कार्य विभाग, शिक्षा विभाग, पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, उर्दू अकादमी, हिंदी संस्थान, संस्कृत अकादमी इतने विभाग हैं, जिन्हें प्रेक्षागृह की जरूरत पड़ती रहती है, लेकिन आज तक एक भी अच्छा प्रेक्षागृह क्यों नहीं बन पाया? शायद उच्च अधिकारी यह बात अच्छी तरह जानते हैं.

मुक्ता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अत: बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

दूसरी ओर मध्य प्रदेश सरकार खजुराहो महोत्सव या अखिल भारतीय स्तर की नाट्य प्रतियोगिता आयोजित करती रहती है. अभी हाल ही में मध्य प्रदेश सरकार ने भारत भवन नाम का प्रेक्षागृह बनाया है. क्या उत्तर प्रदेश सरकार कुछ नहीं कर सकती. और कुछ नहीं तो एक अच्छा प्रेक्षागृह तो बनवा सकती है.

— राकेशचंद्र मिश्र

*

लेख 'तैराकी: शरीर में न रहने दे असंतुलन बाकी' (जून/प्रथम) में लेखिका ने आरती बंसल को भारत की जल परी कहा है जो राष्ट्रीय तैराकी में काफी पीछे है. भारत की जलपरी तो महाराष्ट्र की अनिता सूद है. ग्लेडा डिसूजा, दक्षिणा पटेल, अनिता खंबाता, पर्सिस मदान, चंदना सरकार, सरला सरवटे, राधिका वासन, शताब्दिदास, सोनल नानावटी के साथ आरती बंसल प्रमुख तैराकों में से एक हैं पर जलपरी नहीं.

— धर्मेश यशलहा 'प्रिय'

लेख 'समस्याओं से घिरा भट्ठा उद्योग' (अप्रैल/द्वितीय) पढ़ा. आप के प्रतिनिधि ने इस लघु उद्योग की चिरकाल से चली आ रही समस्याओं को उजागर करने का सराहनीय प्रयास किया है.

हम आप का ध्यान उन कठिनाइयों की ओर आकर्षित कराना चाहते हैं, जिन की ओर आप के प्रतिनिधि का ध्यान आकर्षित नहीं हो पाया है. जैसे उत्तर प्रदेश में लागू बागान अधिनियम, रायलटी की दरों में तीन गुना मनमानी वृद्धि, भविष्य निधि, राज्य कर्मचारी बीमा निगम, बोनस, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम आदि आदेश ईंट भट्ठों पर भी लागू किए जाने के कारण यह उद्योग दिन प्रतिदिन अलाभकर होता जा रहा है. जिस से इस का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से सामान्य जनता पर करों के रूप में पड़ता है.

— राम कुमार गर्ग
सचिव
जिला ईंट निर्माता एसोसिएशन
बरेली (उ.प्र.)

मुक्त विचार

ज्ञानी जैलसिंह की बानगी

श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश पर अगले पांच वर्षों के लिए एक ऐसा राष्ट्रपति थोपा है जो पिछले 40 वर्षों से सक्रिय राजनीति में होने तथा अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रहने के बावजूद अपने लिए वह आदर और गरिमा पैदा नहीं कर पाया जो राष्ट्रपति पद पर आसीन व्यक्ति में होनी चाहिए.

ज्ञानी जैलसिंह न केवल अल्पशिक्षित व्यक्ति हैं, लगता है उन की याददाश्त व कुशलता भी शेरोशायरी तक ही सीमित है. वह कभी हिटलर की प्रशंसा करते नजर आते हैं तो कभी अपने ही समर्थन में आयोजित सभा के संयोजक द्रविड़ मुनेत्र कषगम को अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम कहते नजर आते हैं.

1977 के बाद पंजाब की तत्कालीन प्रकाशसिंह बादल सरकार द्वारा नियुक्त गुरदेवसिंह आयोग ने पंजाब के मुख्य मंत्री के रूप में ज्ञानी जैलसिंह पर लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों को सही माना है. यह सफाई दी जा सकती है कि इस प्रकार के आयोग वास्तव में निष्पक्ष नहीं थे क्योंकि इन का उद्देश्य सिर्फ पिछली सरकारों को बदनाम करना था.

फिर भी क्या ऐसा व्यक्ति नहीं ढूंढ़ा जा सकता था जिस पर ऐसा कोई आरोप ही न होता, जिसे भाषा की समस्या न होती और जो शेरोशायरी के स्थान पर इतिहास, दर्शन अथवा राजनीति का विद्वान होता?

शायद इंदिराजी अब राष्ट्रपति पद पर ऐसा ही व्यक्ति बैठाना चाहती थीं जो राष्ट्रपति पद की गरिमा को इतना नष्ट कर दे कि वह प्रधान मंत्री के मुकाबले कहीं न ठहरे. आखिर इंदिराजी अब 16 वर्षों से देश की बागडोर संभाले हुए हैं. उन्होंने चार राष्ट्रपति बनाए हैं, पांच राष्ट्रपतियों का काम देखा है.

उन के साथ जितने राष्ट्रपतियों ने काम किया है, वे सब उन के मुकाबले लोकप्रियता, राजनीतिक अनुभव, कूटनीति व प्रभाव में बौने रहे हैं. अधिकतर राष्ट्रपति केवल राष्ट्रपति भवन में रहने की सुविधा प्राप्त होने में ही अपना बड़प्पन समझते रहे हैं. फिर भी अपने अंतिम दिनों में हर राष्ट्रपति ने किसी न किसी बहाने आंखें दिखानी शुरू कर दीं.

श्री वराहगिरि वेंकटगिरि यद्यपि इंदिराजी के समर्थन से ही जीते थे, फिर भी वह बारबार कहते रहे कि उन पर इंदिराजी का कोई एहसान नहीं है. श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने आपात स्थिति लागू करते समय हिचकिचाहट दिखाई थी और बाद में भी वह संविधान का हवाला दे कर कई बार अध्यादेशों पर हस्ताक्षर करने में आनाकानी करने लगे थे.

यद्यपि श्री नीलम संजीव रेड्डी को छोड़ कर सभी राष्ट्रपति नेहरू इंदिरा परिवार की कांग्रेस के समर्थन से ही राष्ट्रपति बने थे, फिर भी जब भी विरोधी दल अपनी शिकायतें ले कर उन के पास जाते तो राष्ट्रपति बजाय उन्हें रफादफा करने के उन की शिकायतें सुनते मानो उन के पास प्रधान मंत्री को डांटनेफटकारने का अधिकार है.

जब इंदिराजी को राष्ट्रपतियों के इतने कटु अनुभव हो चुके हैं तो कोई आश्चर्य नहीं

कि इस बार उन्होंने ऐसे व्यक्ति को चुना था ... यदि आम जनता
व्यक्ति चुना था जो इस पद पर आसीन होने के बाद भी उस लायक ऊंचा न उठ सके. ज्ञानी जैलसिंह के बारे यह काफी दावे के साथ कहा जा सकता है कि वह सदा ही इंदिराजी के सेवक रहेंगे, चाहे उन के पास कोई पद हो.

दलबदल तो होते रहेंगे

हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में आधे से अधिक स्थान हारने के बावजूद इंदिरा कांग्रेस पैसे से खरीदे गए दलबदलुओं की कृपा से विधान सभाओं में अपना बहुमत सिद्ध करने में सफल हो गई है. हिमाचल प्रदेश में तो मुख्य विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी ने काफी पहले ही हथियार डाल दिए थे. हरियाणा में देवीलाल के नेतृत्व में लोक दल विधान सभा की पहली बैठक होने तक अपने बहुमत का दावा करता रहा था.

एक तरह से यह अच्छा ही हुआ. स्पष्ट बहुमत न होने पर यदि जोड़तोड़ कर भारतीय जनता पार्टी या लोक दल इन दोनों राज्यों में सरकारें बना भी लेते तो उन की स्थिति डांवांडोल ही रहती. केंद्रीय सरकार का असहयोग वाला रुख, इंदिरा कांग्रेस का दवाव, संभावित दलबदलुओं की मांगें सरकार के नेताओं को इस कदर बांधे रखतीं कि वे कुछ नया काम न कर पाते. उलटे इंदिराजी उन पर आरोप लगाने में सफल हो जातीं कि विरोधी पक्ष वालों को सरकार चलानी ही नहीं आती.

इंदिरा कांग्रेस का पुनः सत्ता में आना आम मतदाता के लिए भी अच्छा सबक है. यदि हमारे विरोधी दल अलगअलग हैं तो इस का दोष जहां नेताओं पर है, वहां आम मतदाता पर भी है. यह जानते हुए भी कि इन दोनों राज्यों में जगजीवनरामी कांग्रेस, जनता पार्टी या निर्दलीय सदस्यों का कोई महत्त्व नहीं है, लाखों मतदाताओं ने उन पर अपने मत बेकार किए. अब यदि अधिकांश जनता ही एकमत न हो कर छुटभैयों को समर्थन दे रही हो तो विरोधी नेता कैसे एक हो सकते हैं? यदि आम जनता अपना कोई आक्रोश दिखाती, दलबदलुओं का बहिष्कार करती, इंदिरा कांग्रेस को विपक्ष में बैठने के लिए बाध्य करती तो माना जाता कि भजनलाल और रामलाल कोई गलत काम कर रहे हैं. जब तक जनता अपने मतों से बेईमानी करने वालों को सजा देने को तैयार नहीं होगी, तब तक दलबदल होते रहेंगे और इसी तरह ज्यादा पैसे वाला दल हारने के बावजूद सत्ता में आता रहेगा.

हां, अब जनता को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि नए मुख्य मंत्री व उन की सरकार द्वारा उन का खयाल रखा जाएगा. जब वे खुद नैतिकता, सच्चरित्रता, जनता की आकांक्षाओं आदि की हत्या कर के सत्ता में आए हैं, तब वह दूसरों को कैसे उपदेश दे सकते हैं? अब तो बोलबाला होगा 'खाओ, पियो और मौज करो' का क्योंकि न कोई रोकनेटोकने वाला है और न कोई नौकरी से निकाल बाहर करने वाला.

महानगरों का जीवन

लगभग एक करोड़ की आबादी वाला बंबई शहर अब एक विशाल गंदी बस्ती बन गया है. मधुमक्खियों के छत्तों की तरह के घरों, गंदी नालियों, खचाखच भीड़ से भरे बाजारों, पेड़ों व बागबगीचों के अभाव ने अब बंबई को रहने लायक शहर नहीं रखा है. फिर भी देश की प्रथम व्यावसायिक नगरी होने के कारण यहां हर रोज सैकड़ों आदमी रोजीरोटी की तलाश में चले आते हैं.

बंबई शहर की भीड़ को कम करने के लिए राज्य सरकार ने 12 साल पहले संकरी खाड़ी के दूसरी ओर खुले स्थान पर एक नया शहर बनाने की योजना बनाई थी. अब इस नए शहर में धीरेधीरे आबादी बढ़ने लगी है और अधिकारियों को आशा है कि इस से बंबई को कुछ राहत मिलेगी.

बंबई ही नहीं, देश के सभी शहर पिछले एकदो दशकों से बुरी तरह बढ़ने लगे हैं. शहरों में मिलने वाली सुविधाओं में तेजी

से विकास हुआ है. नल का पानी, बिजली, गैस, अच्छी शिक्षा, मनोरंजन सुविधाओं आदि के कारण हर कोई शहरों की ओर दौड़ रहा है. छोटे शहरों में नौकरियों के अवसर कम होते हैं, इसलिए बड़े शहर ही इस हवस के शिकार हो रहे हैं.

जब किसी शहर की आबादी बढ़ने लगती है तो सरकार भी उस पर ध्यान देने लगती है. परिवहन व्यवस्था अच्छी कर दी जाती है, बिजलीघर बना दिया जाता है, किसानों की जमीन पर अधिकार कर के नई बस्तियां बना दी जाती हैं और शहर चारों ओर बढ़ने लगता है.

लेकिन इस वृद्धि से जो हानि होती है उस का किसी को खयाल नहीं रहता. बंबई में लोग 40 से 80 किलोमीटर की यात्रा कर के दफ्तरों या फैक्टरियों में पहुंचते हैं. वे हर रोज चारपांच घंटे आनेजाने में खराब कर देते हैं.

शहर के हिस्सों को जोड़ने के लिए सड़कें, रेल लाइनें, बसें मुहैया करनी पड़ती हैं, जिन पर करोड़ों रुपया लग जाता है. बड़े शहर की कानून व्यवस्था छोटे शहर के अनुपात में कई गुना होती है, अतः उस पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं.

बच्चों को भी दूरदूर स्कूल जाना पड़ता है और वे अपना समय व शक्ति पढ़ाई में न लगा कर घर से स्कूल जानेआने में लगा देते हैं.

यदि शहर को बंबई जितना बड़ा होने से रोका जा सके तो न केवल अरबों रुपयों की बचत होगी, आम जनता को मानसिक क्लेश भी कम होगा. पर यह हो तभी सकता है जब छोटे शहरों में भी बंबई जैसी सुविधाएं हों.

महाराष्ट्र सरकार ने जो नया नगर बसाया है, आशा है उस में ये सुविधाएं होंगी, लेकिन यदि यह शहर भी बंबई की तरह बन गया तो?

महंगाई के लिए दोषी कौन?

आम तौर पर राजनीतिबाज हर महंगाई के लिए व्यापारियों को ही दोष देते हैं. श्रीमती इंदिरा गांधी हों या उन का कोई भी वित्त मंत्री, महंगाई का नाम लेते ही वे कालाबाजारियों, मुनाफाखोरों, सटोरियों, जमाखोरों पर सारी जिम्मेदारी थोप देते हैं.

लेकिन वास्तविकता यह है कि महंगाई मूल रूप से या तो मांग की अपेक्षा माल की कमी होने के कारण होती है या उत्पादन लागत बढ़ने से. उत्पादन लागत आम तौर पर सरकारी करों के कारण बढ़ती है या मजदूरों के वेतन में वृद्धि के कारण जिसे पूरा करना होता है उपभोक्ता को.

सरकार आम तौर पर बाजार में माल की कमी का दोष व्यापारियों पर यह कह कर डाल देती है कि वे माल छिपा कर दाम बढ़ाना चाहते हैं. हाल में बंबई में मकानों के दामों में परिवर्तन यह सिद्ध करता है कि दाम सरकारी हस्तक्षेप से ही बढ़ते हैं.

बंबई में अब्दुलरहमान अंतुले के मुख्य मंत्री बनते ही रिहायशी या दफ्तरों के काम आने वाले मकानों के दाम देखतेदेखते दूनेचौगुने हो गए थे. इस का कारण था अंतुले साहब के वे आदेश जिन का पर्दाफाश हो चुका है.

अंतुले ने पहले तो सीमेंट के वितरण में घोटाला किया और जानबूझ कर बंबई शहर में कम सीमेंट बंटवाया. इस वजह से बहुत से मकान बनतेबनते रुक गए. इस झटके से दाम बुरी तरह बढ़ने लगे. इस के बाद उन्होंने खाली जमीन पर नए भवन बनाने की अनुमति देना बंद कर दिया. इस का असर यह हुआ कि सारी मांग पहले से बने हुए या अधूरे बने मकानों पर केंद्रित हो गई.

बंबई जैसे हर रोज फलफूल रहे शहर में जैसे ही मकानों की कमी हुई, दाम दिनरात ही नहीं, घंटेघंटे बाद बढ़ने लगे. राज्य सरकार हमेशा की तरह अपना दोष मानने के स्थान पर सारा दोष काले धन वाले अमीरों को देने लगी.

अब जब अंतुले को निकाल दिया गया और सीमेंट वितरण में दोहरी प्रणाली चालू हुई तो भवनों की उपलब्धि एकदम बढ़ गई. नए मुख्य मंत्री ने आलोचना से बचने के लिए

मुक्ता

मकान बनाने की धड़ाधड़ अनुमतियां भी दीं. नतीजा यह हुआ है कि जहां पहले दाम 1,700-1,800 रुपए प्रति वर्ग फुट थे, वहां अब वे गिर कर 900-1,000 रुपए प्रति वर्ग फुट रह गए हैं.

यदि दाम बढ़ाने की ताकत व्यापारियों के हाथों में ही होती तो ये कम क्यों होते? व्यापारी तो चाहेगा कि दाम बढ़ते ही रहें ताकि उस का मुनाफा बढ़ता रहे. किसी व्यापार में सभी लोग दाम बढ़ाना चाहें तो भी दाम कैसे गिरे? दाम गिरे सिर्फ सरकारी हस्तक्षेप के बंद होने से. महंगाई के लिए असली दोषी सरकार और राजनीतिबाज हैं, व्यापारी नहीं.

हिमालय को कैसे बचाएं?

पर्यावरण की लड़ाई में हिमालय धीरेधीरे हार रहा है. हिमालय के अंदरूनी इलाकों की यात्राओं पर जाने वाले अब साफ महसूस करने लगे हैं कि जैसेजैसे पेड़ों की कटाई बढ़ रही है, हिमालय के क्षेत्र सूखे और रूखे होते जा रहे हैं.

हिमालय के गैरबरफीले इलाकों में कुछ दशक पहले तक पेड़ ही पेड़ थे, पर जैसेजैसे इन इलाकों में आबादी बढ़ी, पेड़ों को बेतहाशा काटा जाने लगा. नतीजा यह हो रहा है कि भूस्खलन की घटनाएं बढ़ गई हैं, जंगली जानवर कम हो गए हैं और खेती योग्य भूमि की उर्वरता कमजोर पड़ गई है.

यदि पेड़ों को वैज्ञानिक तरीके से काटा जाए तो जंगलों को कोई हानि नहीं होती, क्योंकि उस हालत में केवल पुराने पेड़ों को काटा जाता है. लेकिन हमारे यहां पेड़ों को काटा जाता है ठेकेदारों द्वारा जो एक जंगल का ठेका एक या दो साल के लिए पाते हैं.

पेड़ों की इस अंधाधुंध कटाई का जब विरोध हुआ तो सरकार ने बहुत से इलाकों में अपने अधिकारी नियुक्त कर दिए ताकि उन की इच्छानुसार ही पेड़ कटें. पर जब करोड़ों रुपए की हेराफेरी होती हो तो हजार रुपए पाने वाले अधिकारी की क्या बिसात कि वह कटाई अपनी मर्जी से करा सके. जहां सरकार ने कटाई अपने आप की, वहां भी वही हाल रहा, क्योंकि हर अधिकारी अधिक से अधिक पैसा बना लेने के चक्कर में लगा रहा. उन्हें पर्यावरण या हिमालय की सेहत से क्या लेनादेना?

इस समस्या का व्यावहारिक हल ढूंढ़ना इतना ही कठिन है जितना चुने हुए विधायकों का दलबदल रोकना. फिर भी यदि हमारी आने वाली पीढ़ियों के प्रति कोई जिम्मेदारी है तो इस का कोई न कोई हल तो खोजना ही होगा.

इस समस्या का एक हल यह हो सकता है कि इन जंगलों को 40,50 या 100 साल के लिए प्रतिष्ठित कंपनियों को पट्टे पर दे दिया जाए. हमारे देश में ऐसे कई उद्योग समूह हैं, जिन के सौसौ साल तक चलने की आशा है और जिन्हें जंगलों की आय से बहुत अधिक मुनाफा आज भी हो रहा है. इन कंपनियों की स्वतः रुचि होगी कि जंगलों को धीरेधीरे ही इस्तेमाल किया जाए ताकि उन से लंबे समय तक आमदनी होती रहे.

कंपनियां अपने अन्य उद्योगों के कारण प्रबंध भी कुशलता से कर लेती हैं और इन के मालिक यदि वास्तव में जंगलों से प्रेम करते हों तो उन्हें कुछ करोड़ के लाभ या अन्य दबाव विचलित नहीं कर सकेंगे. यूरोप, अमरीका के कितने ही देशों में उद्योगों ने इसी तरह वनों की रक्षा की है और उन से वाजिब लाभ भी उठाया है.

एक दूसरा हल यह हो सकता है कि हिमालय के बहुत से इलाकों को बिलकुल बंद कर दिया जाए. वहां न किसी को रहने की इजाजत हो और न ही सड़कें हों. उन इलाकों में कच्चे रास्ते हों जिन पर भारी वाहन चल ही न पाएं. इस तरीके को अपनाने से वनों से होने वाले बहुत से लाभ जरूर कम हो जाएंगे, पर ये जंगल बच जाएंगे.

यह भी हो सकता है कि यह प्रतिबंध अलगअलग इलाकों पर 10-10 वर्षों के लिए लगाया जाए ताकि इस अरसे में पेड़ों को बड़ा होने का अवसर मिल जाए. ●

दूर संचार के लिए स्वदेशी उपग्रह

लेख • रणबीर सिंह

10 अप्रैल, 1982 को ठीक 12 बज कर 17 मिनट पर अमरीका के अंतरिक्ष अड्डे केप कैनेवरल से विशाल शक्तिशाली डेल्टा-3910 राकेट वाहन में से भयंकर गर्जना के साथ लपटें निकलने लगीं. देखते ही देखते राकेट वहां उपस्थित चोटी के भारतीय व अमरीकी वैज्ञानिकों की नज़रों में ओझल हो गया. आकाश की अनंत गहराई में खो सा गया वह. मंत्रमुग्ध से वैज्ञानिकों की आंखें राकेट के सफलतापूर्ण प्रक्षेपण पर खुशी से चमकने लगीं.

10 अप्रैल, 1982 का गौरवपूर्ण दिन भारत में अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीकी विधा के विकास व उपयोग की दृष्टि से एक नया मील का पत्थर है. भारत अपनी अर्थव्यवस्था की उन्नति व लोगों की बेहतरी के लिए अंतरिक्ष का लगातार सुदृढ़ रूप से शांतिपूर्ण उपयोग कर रहा है. आर्यभट्ट, भास्कर-1, भास्कर-2, रोहिणी व एपल के बाद इंसेट-1-ए उपग्रह अंतरिक्ष में हमारा छठा दूत है.

उस दिन भीमकाय डेल्टा राकेट के ऊपरी सिरे पर रखा इंसेट-1ए प्रक्षेपण के ठीक 18 मिनट 17 सेकंड पश्चात राकेट से

आर्यभट्ट, भास्कर-1 भास्कर-2, रोहिणी व एपल के बाद अब भारत ने एक बहुउद्देशीय उपग्रह इंसेट-1 ए अंतरिक्ष में भेजा है. यह उपग्रह भारत के लिए कितना उपयोगी सिद्ध हो रहा है?

इंसेट-1-ए अंतरिक्ष यान तैयारी की स्थिति में.
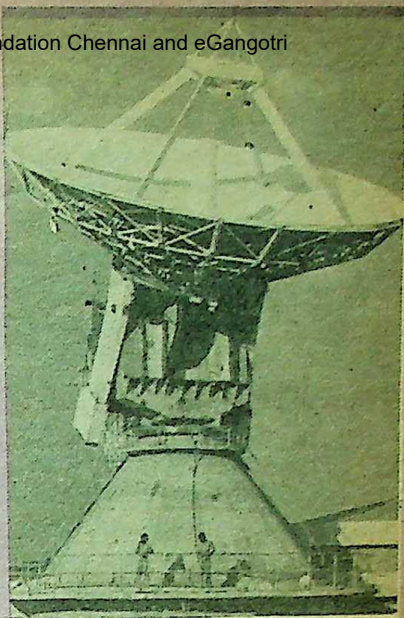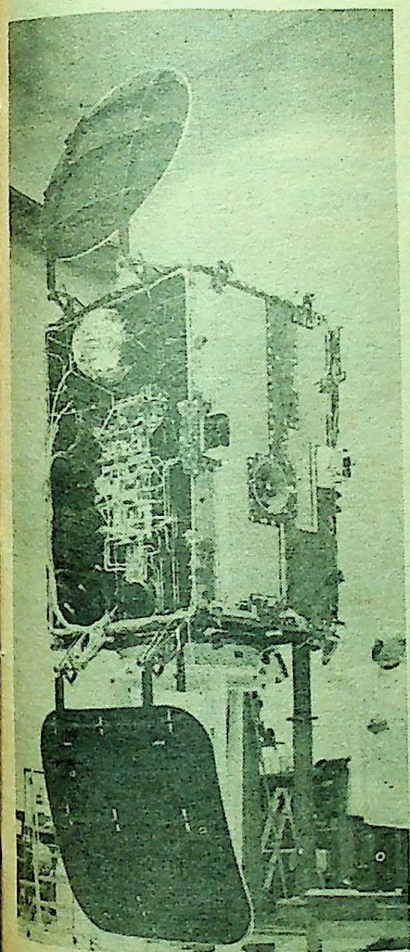
इंसेट मास्टर नियंत्रण सुविधा में 14 मीटर व्यास का घुमाया जा सकने वाला एंटेना : इस से उपग्रह की स्थिति का पता चलता रहेगा.

अलग हो कर 230 किलोमीटर ऊंची पृथ्वी की कक्षा में चक्कर लगाने लगा. इस अंडाकार कक्षा से उपग्रह को पृथ्वी से 36,000 किलोमीटर ऊंची एक स्थिर कक्षा में लाया गया. कक्षा परिवर्तन की यह प्रक्रिया बहुत जटिल तो है ही, इस के अलावा इस में सेकंड के क्षणों तक की गणना कर के यंत्रप्रणालियों को सक्रिय किया जाता है. वैसे तो उपग्रह को कक्षा में स्थापित करने, उसे एक निश्चित स्थिति पर स्थिर रखने व भटकाव को रोकने का कार्य कंप्यूटर द्वारा किया जाता है, पर कंप्यूटर को आदेश दे कर उस से काम तो वैज्ञानिक ही लेते हैं. इस गणना में अगर कहीं एक सेकंड की भी गलती रह जाए तो सारी योजना असफल हो जाती है.

प्रारंभिक कठिनाइयों के बावजूद जो मुख्यत: प्रक्षेपण से पहले मौजूद थीं, इंसेट-1-ए उपग्रह को कक्षा में स्थापित

करने में सफलता हासिल हुई है. 230 किलोमीटर ऊंची 'परिवर्तन कक्षा' से 36,000 किलोमीटर ऊंची स्थिर कक्षा में ले जाने के लिए उपग्रह में लगी एपोजी बूस्ट मोटर को हसन स्थित उपग्रह केंद्र से आदेश भेज कर दागा गया. इस से पहले, उपग्रह को अंतरिक्ष में खोला जा चुका था तथा यंत्रप्रणालियों की जांच पूरी कर ली गई थी. एपोजी बूस्ट मोटर में ईंधन के रूप में हाइड्रेजीन व नाइट्रोजन टेट्राआक्साइड का प्रयोग किया गया.

इंसेट-1 ए की परिक्रमा की गति

जब इंसेट-1ए उपग्रह ठीक 74 अंश पूर्व देशांतर पर पहुंच गया तो एपोजी बूस्ट मोटर को बंद कर दिया गया. पृथ्वी की इस 36,000 किलोमीटर ऊंची स्थिर कक्षा में इंसेट-1-ए (इंसेट का अर्थ है इंडियन नेशनल सैटेलाइट/भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह) 11,000 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से परिक्रमा कर रहा है. यही वजह है कि इंसेट हमें हसन के उपग्रह केंद्र से 74 देशांतर पर स्थिर प्रतीत होता है क्योंकि पृथ्वी की घूमने की गति से उपग्रह की पृथ्वी की परिक्रमा करने की गति को इस ढंग से मिला (सिंक्रोनाइज) दिया गया ताकि पूरे 24 घंटे इंसेट का पृथ्वी के उपग्रह केंद्र से संपर्क बना रहे और वह उस की 'आंख की सीध में' बना रहे.

'आंख की सीध' में उपग्रह को रखने का आशय यह है कि उपग्रह और पृथ्वी स्थित उपग्रह केंद्र के बीच रेडियो संकेत की तरंगें केवल सीधी रेखा में ही फासला तय करती हैं अन्यथा संपर्क कायम नहीं हो सकता, क्योंकि 36,000 किलोमीटर की ऊंचाई पर

उपग्रह नियंत्रण स्टेशन का एक दृश्य : इंसेट मास्टर नियंत्रण सुविधा से उपग्रह नियंत्रण केंद्र में उपग्रह की गतिविधियों का पता चलता रहता है.
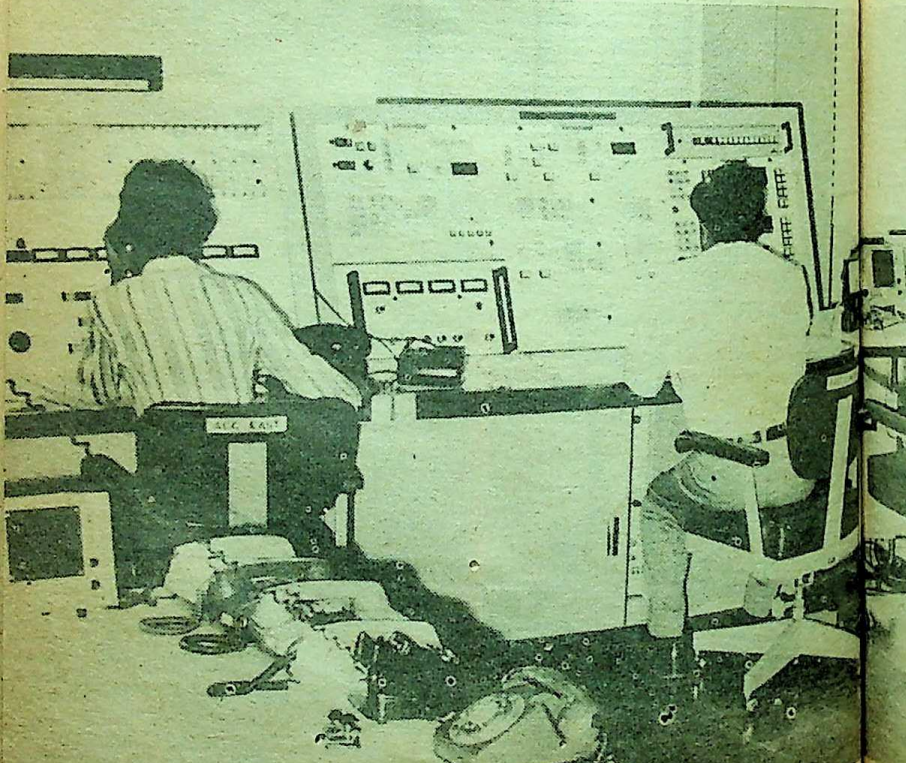
अयनमंडल जैसा कोई माध्यम नहीं जो सीधी रेखा में चल रही रेडियो तरंगों को परावर्तित कर सके.

इंसेट-1 ए बहुउद्देशीय उपग्रह

इंसेट-1-एं उपग्रह की संरचना जटिल है. विश्व के किसी भी देश ने अभी ऐसा कोई उपग्रह नहीं छोड़ा है जो दूरसंचार, पृथ्वी के सर्वेक्षण और मौसम विज्ञान के तीनों काम कर सके. भारत ही वह प्रथम देश है जिस ने बहुउद्देशीय उपग्रह अंतरिक्ष में भेजा है.

1159 किलोग्राम भारी इंसेट-1-ए अंतरिक्ष में पूरा खुलने के बाद बिलकुल किसी मशीनी मानव सा लगता है, जो लंबी गरदन ताने, बांहें फैलाए पसरा पड़ा हो. उपग्रह की ऊपर से नीचे तक लंबाई 19.4 मीटर है. यह किसी पांच मंजिला भवन से कम नहीं. इस उपग्रह के बीच में धड़नुमा जो आयताकार डिब्बा लगा है, वह 2.18 मीटर चौड़ा, 1.55 मीटर लंबा और 1.42 मीटर ऊंचा है. इंसेट-1-ए की आंखें, दिल, दिमाग और कान इसी धड़ से जुड़े हैं या इस के भीतर सुरक्षित हैं. इस में अतिसंवेदी, उच्च कार्यक्षमता वाली यंत्र प्रणालियां लगी हैं. उपग्रह के ऊपरी सिरे पर त्रिकोणात्मक सी जो सौर बैटरी लगी है, वह उपग्रह के झुकाव को इच्छित कोण पर बनाए रखने में बहुत सहायक है.

धरती से 36,000 किलोमीटर दूर अंतरिक्ष में चक्कर लगा रहे उपग्रह को ब्रह्मांड के विपरीत अनेक प्रभावों व शक्तियों का मुकाबला करना होता है. इस के लिए प्रत्येक उपग्रह में पहले ही सुरक्षात्मक व्यवस्था कर दी जाती है. सूर्य की ओर से आने वाले 'फोटोन' कणों के प्रवाह व ब्रह्मांडीय कास्मिक विकिरण के प्रवाह के फलस्वरूप उपग्रह अपने कोण व परिक्रमापथ से भटक सकता है. चूंकि इंसेट-1-ए के एक ओर 11.5 वर्ग मीटर के सौर ऊर्जा ग्राही लगाए गए हैं और इन पर सौर विकिरण व कास्मिक विकिरण प्रवाह का क्षीण दबाव पड़ता रहेगा,
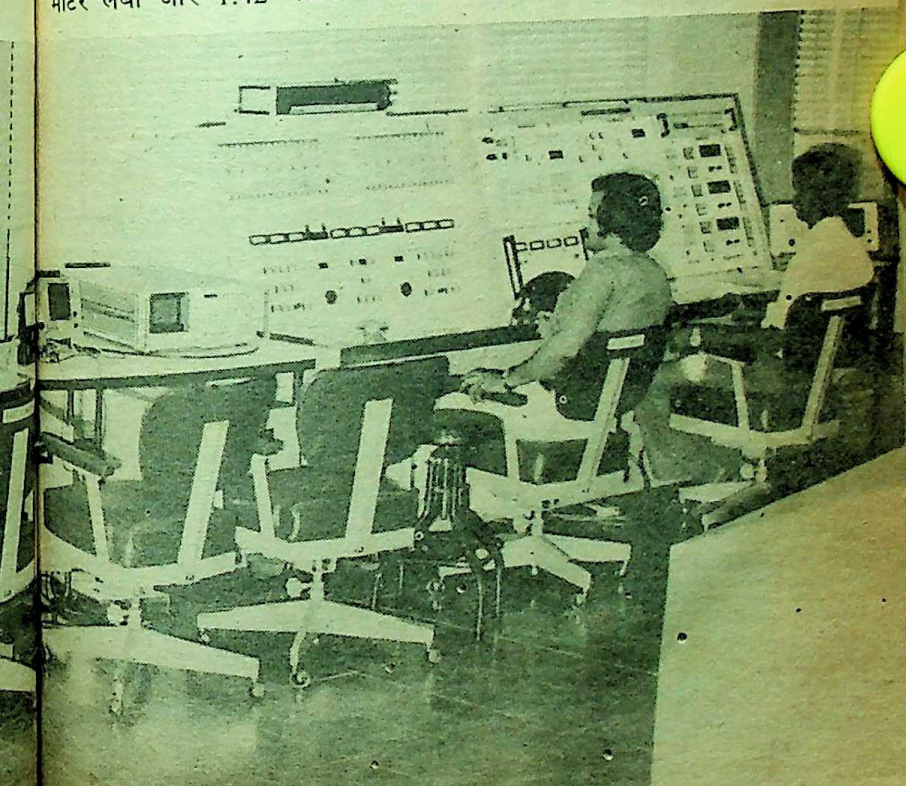
इसलिए उपग्रह के दूसरी ओर विपरीत दिशा में एक बड़ी सौर बैटरी लगाई गई है जो प्रवाह के दबाव का समान कर देगी और उपग्रह को उस के ईच्छित कोण के झुकाव पर कायम रखेगी.

इंसेट-1-ए पर एक अति उच्च विभेदक तापमापी (वेरी हाई रेजोल्यूशन रेडियोमीटर) लगाया गया है. यह इंफ्रारेड रेंज में धरती से विकरित होने वाली ताप की मात्रा को मापेगा और उसे सी-बैंड एंटेना की मदद से नीचे जमीन पर सूक्ष्म तरंगों के जरिए भेजेगा. इस की मदद से कंप्यूटर पर धरती के एक निश्चित भाग का तापचित्र तैयार किया जा सकता है. इस तापमापी उपकरण की मदद से ही मौसम के परिवर्तन के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है.

इंसेट-1-ए पर लगा यह तापमापी उपकरण विश्व का सब से शक्तिशाली व संवेदनशील तापमापी उपकरण है क्योंकि अन्य उपग्रह तापमापियों की तुलना में यह 36,000 किलोमीटर की ऊंचाई से मौसम संबंधी सूचनाएं एकत्र करेगा. मौसम संबंधी सूचनाएं एकत्र करने के वास्ते भारत के मौसम विज्ञान विभाग ने देश भर में 100 केंद्रों की व्यवस्था की है. इस के अलावा इस विभाग के दिल्ली स्थित मुख्यालय में मौसम के आंकड़ों का विश्लेषण करने की व्यवस्था

की गई है. दिल्ली में उपग्रह से सीधे मौसम संबंधी सूचनाएं [illegible] करने के लिए व्यवस्था है.

उपग्रह में दो टेलीविजन कैमरे, एक 'सी' व एक 'सी/एस' बैंड एंटेना व 12 ट्रांसपोंडर लगे हैं. ट्रासपोंडर वह यंत्र है जिस से संदेश भेजे व प्राप्त किए जाते हैं. ये 12 ट्रांसपोंडर अति संवेदनशील हैं और इन्हें दूरसंचार टेलीफोन संपर्क कायम करने के लिए उपयोग में लाया जाएगा.

मानसून संबंधी भविष्यवाणी संभव

उपग्रह में लगे दो टेलीविजन कैमरों की मदद से हर आधे घंटे बाद उच्च कोटि के चित्र प्राप्त होंगे. भारत प्रायद्वीप व हिंद महासागर, अरब सागर व बंगाल की खाड़ी के ऊपर बादलों की गतिविधियों पर नजर रख कर मानसून की प्रसार दिशा की काफी पहले से भविष्यवाणी करना संभव है. बादलों के चित्रों का अध्ययन करने के लिए भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के पास सभी आधुनिक सुविधाएं हैं. इस के अलावा भूसर्वेक्षण से संबंधित अन्य कार्य जैसे बाढ़ की स्थिति व पहाड़ों पर जमी बर्फ को भी उपग्रह के टेलीविजन कैमरे से प्राप्त चित्रों का अध्ययन कर के जाना जाएगा.

वास्तव में अगले सात वर्षों तक हमें इन सेवाओं के लिए इंसेट-1-ए व इंसेट-1-बी के युगल टेलीविजन कैमरों की सुविधा उपलब्ध रहेगी. प्राकृतिक विपत्तियों की पूर्व सूचना देने के वास्ते इन टेलीविजन कैमरों की भूमिका का अनुमान इस बात से ही लगाया जा सकता है कि इस से प्रति वर्ष हजारों मवेशियों और कई सौ मनुष्यों की जानों तथा करोड़ों रुपए की चलअचल संपत्ति की सुरक्षा करना संभव हो जाएगा.

इंसेट-1-ए उपग्रह का संभवतः प्रसारण व दूरदर्शन की राष्ट्रव्यापी सुविधा प्रदान करने वाला ही एक ऐसा पहलू है जिस के लिए आम जनता बेसब्री से इंतजार कर रही है. इंसेट-1-ए उपग्रह 8,000 दो तरफा दूरसंचार टेलिफोन संपर्क स्थापित करने तथा
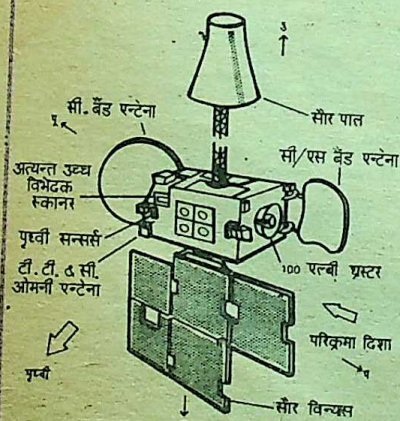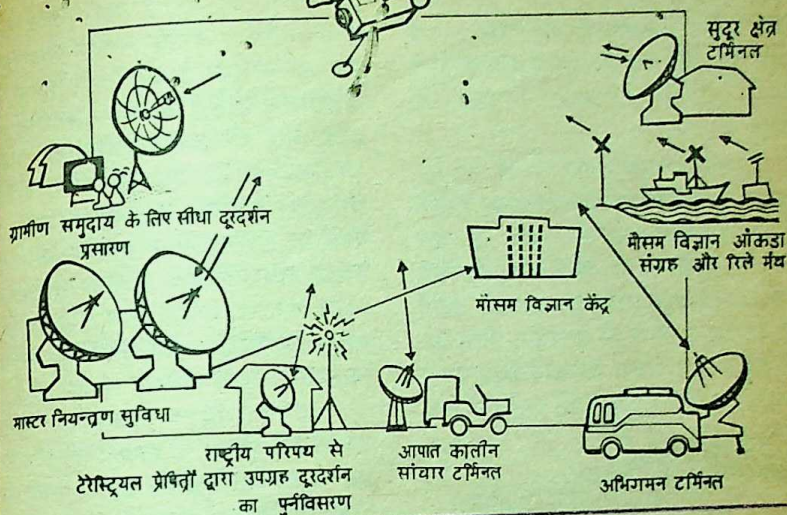
टेलीविजन चैनल प्रदान करने में सक्षम है. पृथ्वी से 36,000 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थापित यह 'टेलीफोन एक्सचेंज' व 'दूरदर्शन प्रसारण स्तंभ' इलेक्ट्रोनिक विज्ञान की चरम उपलब्धियों में से एक है. अभी केवल 1,400 टेलीफोन लाइनें ही उपलब्ध कराई जा रही हैं, पर 1983 में जब पूरी 8,000 दोतरफा लाइनों का उपयोग संभव हो जाएगा तो न केवल दूरसंचार का कार्य तेजी से होने लगेगा अपितु भारतीय डाक व तार विभाग को करोड़ों रुपए की बचत भी होगी.

दूरसंचार के लिए उपग्रह का इस्तेमाल तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग भी कर रहा है. यह सर्वविदित है कि आयोग पिछले पांच वर्षों से बंबई हाई में तेल व गैस प्राप्त कर रहा है. समुद्र के बीच स्थित कार्यालय और मुख्यालय का द्रुत संबंध बनने से आयोग के कार्य में तेजी आएगी ही, इस के अलावा प्लेटफार्म पर हो रहे कार्य की मात्रा और गुण में भारी वृद्धि होगी.

इंसेट-1-ए का टेलीविजन के प्रसारण के लिए इस्तेमाल 15 अगस्त, 1982 से किया जाएगा. आगामी स्वाधीनता दिवस समारोह का हाल पृथ्वी स्थित उपग्रह केंद्रों और डाक व तार विभाग की माइक्रोवेव व्यवस्था द्वारा प्रसारित किया जाएगा. दिल्ली के निकट सिकंदराबाद (बुलंदशहर) के उपग्रह केंद्र के जरिए स्वाधीनता दिवस समारोह का हाल अति उच्च फ्रीक्वेंसी पर इंसेट-1-ए को भेजा जाएगा. तत्पश्चात उपग्रह का ट्रांसपोंडर इसे ग्रहण कर संदेश को अधिक शक्ति प्रदान कर उसे पुनः भारत भूमि की ओर प्रेषित करेगा. यहां सभी उपग्रह केंद्र इस संदेश को पुनः ग्रहण कर पहले से उपलब्ध टेलीविजन प्रसारण सुविधाओं के जरिए उसे प्रसारित करेंगे और इस तरह हम अपने टेलीविजन पर उपग्रह से प्रेषित कार्यक्रम देख पाएंगे.

उपग्रह से टेलीविजन प्रसारण सुविधाओं का इस्तेमाल सांस्कृतिक व मनोरंजन कार्यक्रमों के अलावा सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े इलाकों की जनता को शिक्षित करने के लिए भी किया जाएगा. उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश व गुजरात के लगभग 18,000 गांवों के लाखों लोगों को लाभ होगा. यह योजना काफी हद तक 1968-78 के बीच संपन्न सैटेलाइट

इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपैरिमेंट व सैटेलाइट टेलिकम्यूनिकेशन एक्सपैरिमेंट प्रोजेक्ट से मेल खाती है. पहली योजना 1975 में अमरीकी दूरसंचार उपग्रह ए.टी.एस-6 (एप्लीकेशन टैक्नोलाजी सैटेलाइट-6) के जरिए पूरी की गई थी और दूसरी फ्रांस व जरमनी के संचार उपग्रह 'सिंफोनी' के जरिए.

ये दोनों परियोजनाएं सफल रही थीं. 'साइट' योजना में विश्व के कई उन्नत देशों ने खासी दिलचस्पी ली थी. अब की बार 18,000 गांवों में पुनः अति उच्च फ्रीक्वेंसी वाले सामुदायिक टेलीविजन सेट रखे जाएंगे जो उपग्रह से सीधे ही कार्यक्रम प्राप्त कर जनता को दिखा सकेंगे. यह कार्य प्रमुख रूप से योजना आयोग के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किया जाएगा.

एशियाई खेलों का सीधा प्रसारण

आगामी नवें एशियाई खेलों को भी इंसेट-1-ए से सीधे ही दिखाने की व्यवस्था की जा रही है. उत्तरपूर्वी अंचल में टेलीविजन के प्रसारण के लिए पूरी भूकेंद्र सुविधाएं उपलब्ध हैं, लेकिन दूसरे क्षेत्रों में डांकतार की माइक्रोवेव व्यवस्था का उपयोग किया जाएगा. यह बड़े खेद की बात है कि पहले वांछित भूकेंद्र सुविधाओं की व्यवस्था किए बिना ही इंसेट-1-ए को अंतरिक्ष में स्थापित कर दिया गया.

मोटे अनुमान के अनुसार इंसेट-1-ए उपग्रह के निर्माण पर 60 करोड़ और अन्य सुविधाओं के निर्माण व संवर्द्धन पर 215 करोड़ रुपए व्यय हो चुके हैं. अभी इंसेट-1-ए उपग्रह की संपूर्ण क्षमता का लाभ उठाने के लिए कम से कम 80 करोड़ रुपए की और जरूरत है. इस से 1987 तक ही शायद संपूर्ण रूप से उपग्रह सूचना उपयोग भूकेंद्रों की स्थापना संभव हो पाएगी. इस सब के बावजूद अंतरिक्ष विभाग अगले वर्ष नवंबर या दिसंबर में इंसेट-1- बी अमरीकी स्पेस शटल की सहायता से छोड़ने जा रहा है.

खैर, कुछ भी हो, भारत द्वारा बहुउद्देशीय उपग्रह का छोड़ा जा[ना] महत्वपूर्ण है. इस समय पृथ्वी की विभि[न्न] कक्षाओं में (197 किलोमीटर से 36,00[0] किलोमीटर की ऊंचाई तक) विश्व के [कई] देशों के सैकड़ों उपग्रह चक्कर लगा रहे हैं. सब से अधिक उपग्रह सोवियत रूस [व] अमरीका ने छोड़े हैं. इस समय अमरीका द्वारा छोड़े गए इंटेलसेट (इंटरनेशनल टेली-कम्यूनिकेशन सैटेलाइट) श्रेणी के, सोवियत संघ द्वारा अंतरिक्ष में स्थापित कम्यूनिस्ट देशों के इंटरस्पूतनिक श्रृंखला के संचार उपग्रह तथा यूरोपीय अंतरिक्ष संगठन एवं भारत, कनाडा, जापान, चीन, इंडोनेशिया के अनेक दूरसंचार उपग्रह पृथ्वी की 36,00[0] किलोमीटर ऊंची कक्षाओं में घूम रहे हैं.

आजकल विश्व के कई देशों विशेष कर 'तीसरी दुनिया' के साधनविहीन देश यह भय व्यक्त करते हैं कि 2000 ईसवी तक पृथ्वी की विभिन्न कक्षाओं में उपग्रहों की भारी होड़ हो जाएगी, नए उपग्रह छोड़ने के लिए जगह नहीं बचेगी और अंतरिक्ष में दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाएगी. इस समस्या से छुटकारा पाने का एक आसान तरीका यह है कि भविष्य में केवल बहुउद्देशीय उपग्रह ही छोड़े जाएं, क्योंकि भारत ने तीन उपग्रहों की व्यवस्था एक ही उपग्रह में कर के उपग्रहों की बढ़ती भीड़ को कम रखने का प्रयास किया है. इसलिए भारत द्वारा बहुउद्देशीय उपग्रह का प्रक्षेपण अनुकरणीय है. निस्संदेह ऐसे उपग्रह भारी होंगे. यही कारण है कि इंसेट-1-ए उपग्रह का भार 1,159 किलोग्राम है.

इस बात में अब कोई संदेह नहीं रहा कि भारत अब अंतरिक्ष विज्ञान व तकनीकी विधा में उस स्तर तक पहुंच चुका है जहां से पूर्ण स्वावलंबन का रास्ता शुरू होता है. अगले वर्ष इंसेट-1-बी हालांकि विदेशी सहायता से छोड़ा जाना है, पर अगले वर्ष ही हम अपने राकेट वाहन 'एडवांस्ड सैटेलाइट लांच विहिकल' की सहायता से 'शार' केंद्र से एक सुदूर संवेदनशील उपग्रह-1 (आर.एस.-1) का प्रक्षेपण करेंगे. •

भारतीय जीवन बीमा निगम ने आम जनता के लिए अनेक जीवन बीमा योजनाएं प्रस्तुत की हैं. जैसे— विभिन्न अवधियों की एनडाउमेंट (बंदोबस्ती) पालिसी, मनी बैंक (अवधि से पहले रकम पाने की सुविधा वाली) पालिसी आदि.

इन योजनाओं पर गहराई से विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये योजनाएं आर्थिक दृष्टि से आम जनता अर्थात जीवन बीमा निगम की पालिसी लेने वालों को कोई खास गारंटी देती हों या न देती हों, लेकिन अपने अधिकारियों, कर्मचारियों एवं निगम के एजेंटों के ऐशोआराम की गारंटी जरूर देती हैं.

जीवन बीमा निगम के कर्मचारियों के मोटेमोटे वेतनों, सुविधाओं आदि के बारे में देश भर में जोरदार चर्चा हो चुकी है, अतः इस विषय पर अब चर्चा करने की कोई खास

लेख • सोमराज अग्रवाल

जीवन बीमा योजनाएं आर्थिक दृष्टि से कितनी हानिकारक?

जनता को लाभ पहुंचाने का ढिंढोरा पीटने वाले सरकारी जीवन बीमा निगम में नौकरशाही ने किस प्रकार लूटखसोट मचा रखी है और बेचारे बीमेदारों की कदम-कदम पर कैसी दुर्गति होती है?
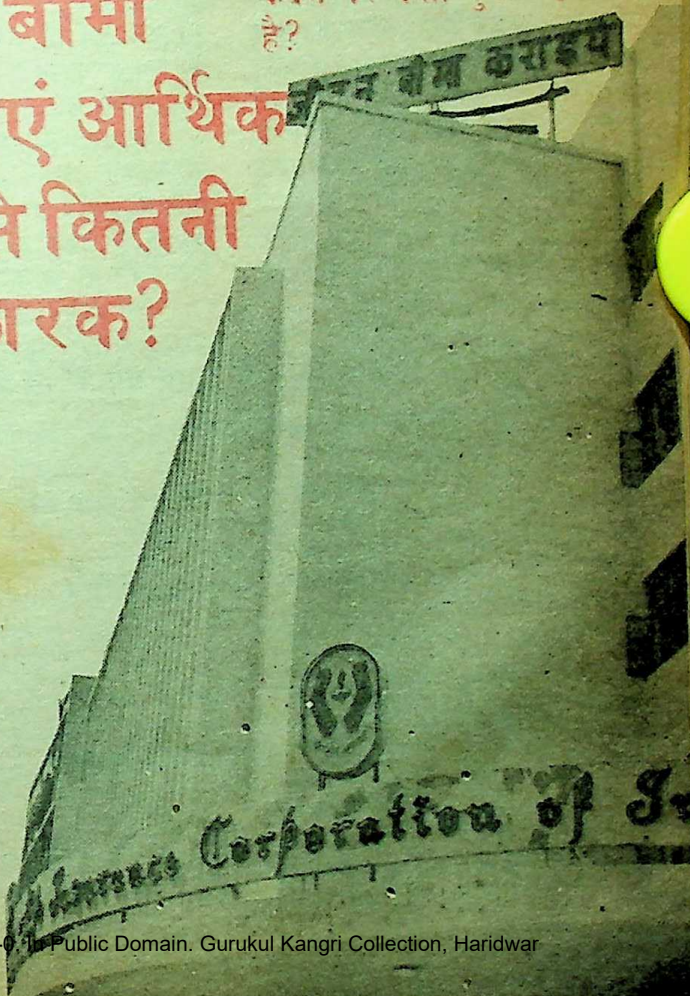
आवश्यकता नहीं रह जाती. साथ ही यह कहने की [illegible] नहीं कि निगम के अधिकारियों, कर्मचारियों को जो वेतन एवं सुखसुविधाएं प्राप्त हैं, उन सब का भार किसी न किसी रूप में बीमा कराने वालों पर ही पड़ता है अर्थात ये सब तनख्वाहें एवं सुविधाएं निगम की पालिसी लेने वालों की जेब से ही मुहैया कराई जाती हैं.

इन के अलावा जीवन बीमा निगम का एक प्रमुख अंग है– जीवन बीमा एजेंट. चूंकि जीवन बीमा एजेंट निगम का अधिकारी या कर्मचारी नहीं होता, अतः उस को प्राप्त होने वाले लाभ की ओर लोगों का ध्यान कम ही जाता है. यहां पर निगम से संबद्ध ऐसे लोगों पर चर्चा करना अनुपयुक्त न होगा.

जीवन बीमा निगम के एजेंटों को निगम की ओर से भारी कमीशन, बोनस के अलावा समयसमय पर विभिन्न योजनाओं के जरिए जो बड़ेबड़े आकर्षक इनाम दिए जाते हैं, उन सब का भार भी परोक्ष रूप से निगम की पालिसी लेने वाले को ही वहन करना पड़ता है. इन दिनों पालिसी लेने वालों को जीवन बीमा एजेंटों का प्रचलित कमीशन, बोनस आदि के रूप में जो भार उठाना पड़ता है, वह नीचे दी गई सारणी में दिया गया है.

जाता है :

पालिसी का मूल्य 50 हजार रु

वर्ष के प्रारंभ में वार्षिक प्रीमियम 2,665 रु

20 वर्ष में बीमा कराने वालों द्वारा कुल भुगतान 53,300 रु

20 वर्ष पूरे हो जाने पर बीमा कराने वाले को मिलने वाली राशि 78 हजार रु

20 वर्ष के बाद बीमा कराने वाले को मिलने वाली अतिरिक्त राशि 24,700 रु

जीवन बीमा एजेंट को पूरी अवधि पर होने वाला लाभ 16,350 रुपए 4 पै

(प्राप्त कमीशन, बोनस, इनाम आदि को बैंकों की पुनर्निपेक्ष अथवा सावधि जमा योजना में जमा करने के आधार पर)

जीवन बीमा एजेंट को उपर्युक्त 16,350 रुपए 4 पैसे के अलावा उपदान (ग्रेच्युटी) एवं टर्म बीमा का लाभ मिलने का भी प्रावधान किया गया है. इस से यह राशि और अधिक बढ़ जाएगी.

उपर्युक्त उदाहरण जीवन बीमा निगम की सारणी संख्या 14 बंदोवस्ती पालिसी, बीमा की अवधि 20 वर्ष एवं व्यक्ति की आयु 40 वर्ष एवं बोनस की वर्तमान दर 28 रुपए प्रति हजार पर आधारित है.

इस प्रकार पालिसी लेने वाले को

15 वर्ष या अधिक अवधि के कराए गए जीवन बीमों पर दिए गए प्रीमियम पर बीमेदारों पर पड़ने वाला भार

	प्रथम वर्ष	द्वितीय एवं तृतीय वर्ष	चतुर्थ वर्ष एवं उस के बाद के वर्षों में
कमीशन	25 प्रतिशत	7½ प्रतिशत	5 प्रतिशत
बोनस	10 प्रतिशत	-	-
इनाम आदि विभिन्न लाभ (लगभग)	5 प्रतिशत	-	-
	40 प्रतिशत	7½ प्रतिशत	5 प्रतिशत

इस प्रकार जीवन बीमा एजेंटों की जेब में बीमा कराने वालों की कितनी रकम चली जाती है, यह आगे के उदाहरण से स्पष्ट हो

53,300 रुपए का बीमा कराने और उस के लिए नियमित रूप से एक निश्चित राशि देने तथा उस में चूक होने पर ब्याज ही नहीं बल्कि

पालिसी के कालातीत होने यानी समय पर प्रीमियम न देने से [illegible] आदि तक का भारी जोखिम उठाने के बावजूद मात्र 24,700 रुपए ही प्राप्त होते हैं और एजेंट को बगैर कोई पूंजी लगाए 16,350 रुपए 4 पैसे का भारी लाभ हो जाता है.

जीवन बीमा निगम का इस से भी अधिक चमत्कारी पहलू देखने को मिलता है– इसी बंदोबस्ती पालिसी सारणी क्रमांक– 14 में 10 वर्ष की अवधि के लिए 50 वर्ष के व्यक्ति द्वारा कराए गए 10 हजार रुपए के बीमे पर. इस में यदि बीमेदार प्रीमियम का भुगतान वार्षिक करता है तो ऐसी स्थिति में 10 वर्षों तक प्रति वर्ष के प्रारंभ में 1,140 रुपए अर्थात कुल 11,400 रुपए का भुगतान कर पालिसी लेने से 10 वर्ष के बाद उस को 12,800 रुपए मिलेंगे. इस प्रकार 10 वर्षों की अवधि के दरम्यान 11,400 रुपए की पूंजी लगाने एवं इस के लिए विभिन्न जोखिम उठाने के बाद बीमेदार को अतिरिक्त राशि मिलती है– मात्र 1,400 रुपए, जब कि जीवन बीमा निगम के एजेंट को प्राप्त कमीशन, बोनस, पुरस्कार आदि के रूप में 2,008 रुपए 09 पैसे का लाभ होगा.

लाभ एजेंट को ही

कितनी अच्छी व्यवस्था है– "मेरा मेरे बाप का और तेरा मेरेतेरे साझे का." या यों कहिए कि टिकटधारी धक्के खाए और बगैर टिकट वाला आराम से प्रथम श्रेणी या वातानुकूलित डब्बे में बैठ कर चैन की बंसी बजाए. इस आश्चर्यजनक पहलू को देखते हुए आप विचार कीजिए कि जीवन बीमा निगम अपने एजेंटों को उन के माध्यम से करवाए गए जीवन बीमों पर इतना भारी लाभ किस प्रयोजन के लिए देता है.

जीवन बीमा निगम की योजनाओं अथवा पालिसियों पर चर्चा करते समय बैंक, डाकघर, लोक भविष्य निधि आदि योजनाओं पर भी संक्षिप्त रूप से विचार करना एवं उन का तुलनात्मक अध्ययन करना असंगत न होगा. इन दिनों ब्याज एवं बोनस की प्रचलित दरों के अनुसार 100 रुपए प्रति माह के हिसाब से 10 वर्षों तक जमा करने पर जमाकर्ता को 10 वर्षों के पश्चात स्टेट बैंक एवं अन्य सरकारी बैंकों की आवर्ती जमा योजना से 20,557 रुपए, डाकघर आवर्ती जमा योजना से 22,330 रुपए, डाकघर सार्वधि संचयी (सी.टी.डी.) जमा योजना से 17,432 रुपए एवं लोक भविष्य निधि से 18,666 रुपए 36 पैसे मिलते हैं.

इस के विपरीत जीवन बीमा निगम सारणी– 14 बंदोबस्ती पालिसी में 50 वर्ष की उम्र के व्यक्ति द्वारा 100 रुपए के स्थान पर 100 रुपए 40 पैसे प्रति माह (10 वर्षों में कुल 12,048 रुपए) जमा करने पर पालिसी लेने के 10 वर्षों के पश्चात मात्र 12,800

बीमा एजेंट : न कोई जोखिम, न कोई जिम्मेदारी, बस लाभ ही लाभ.

रुपए मिलते हैं. इस प्रकार ब्याज या बोनस के रूप में बीमेदार को कुल लाभ बैंक की आवर्ती जमा योजना के दसवें भाग से भी कम मिलता है यानी एक प्रतिशत प्रतिवर्ष से भी कम ब्याज या बोनस.

जीवन बीमा निगम के समर्थकों का कहना है कि जीवन बीमा पालिसी पर दिए गए प्रीमियम पर आयकर के उद्देश्य से कुल आय की गणना करने में छूट मिलती है. किंतु यह छूट या कटौती तो डाकघर सावधि संचयी जमा खाते एवं लोक भविष्य निधि योजना में जमा की गई राशियों पर भी मिलती है. तब इन में ही इतना भारी अंतर क्यों?

साथ ही जीवन बीमा निगम समर्थकों की यह दलील भी कि जीवन बीमा निगम बीमेदार की मृत्यु होने की दशा में उस के द्वारा नामजद व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करता है, कोई खास आकर्षक प्रतीत नहीं होती. आइए, अब इस पहलू पर भी कुछ चर्चा कर ली जाए.

बीमेदारों की मृत्यु दर

भारत में वर्तमान मृत्यु दर लगभग नौदस व्यक्ति हजार है. 1951-61, 1961-65 एवं 1966-70 में यह संख्या क्रमश: 22.8, 17.2 एवं 15.9 व्यक्ति प्रति हजार थी. शनै:शनै: मृत्यु दर घटती ही जा रही है. वैसे भी मृत्यु दर शहरों की अपेक्षा गांवों में ज्यादा है जहां जीवन बीमा निगम की पालिसी लेने वालों की संख्या कम है. साथ ही मृत्यु दर हर प्रकार के मरीजों, आत्महत्या के मामलों तथा हर उम्र के व्यक्तियों को सम्मिलित करते हुए निकाली जाती है, जबकि जीवन बीमा निगम एक निश्चित उम्र वालों तक का ही बीमा करता है, तथा मरीजों का बीमा करता ही नहीं. इसी लिए बीमा करने से पूर्व डाक्टरी जांच आदि की जाती है और एक निश्चित अवधि तक आत्महत्या के मामलों में बीमे की रकम दी ही नहीं जाती.

इस प्रकार यदि हम बीमेदारों की मृत्यु दर तीन व्यक्ति प्रति हजार प्रति वर्ष मान कर चलें तो ऐसी स्थिति में 10 वर्षों के दरम्यान एक हजार में से 30 बीमेदारों की मृत्यु हुई. प्रीमियम के भुगतान की दृष्टि से 10 वर्ष का औसत आया पांच वर्ष. इस उदाहरण में पांच वर्ष में मृत व्यक्ति या बीमेदार ने जीवन बीमा निगम को प्रीमियम के रूप में 6,024 रुपए का भुगतान किया. यदि यही 100 रुपए 40 पैसे की रकम वह व्यक्ति प्रति माह बैंक की आवर्ती जमा योजना में पांच वर्ष तक जमा करता तो पांच वर्ष की अवधि के पश्चात उस को या उस के नामजद व्यक्ति को बैंक द्वारा देय राशि हो जाती— 7,822 रुपए 16 पैसे जब कि मृत बीमेदार के नामजद व्यक्ति को जीवन बीमा निगम से मिलेंगे— कुल 11,400 रुपए.

इसी तरह पहले उदाहरण के अनुसार 20 वर्षों में 60 व्यक्ति प्रति हजार की मृत्यु हुई और प्रीमियम भुगतान की दृष्टि से औसत आया 10 वर्ष. यदि इस उदाहरण में मृत व्यक्ति 10 वर्ष तक प्रीमियम की राशि का मासिक भुगतान करता तो ऐसी स्थिति में प्रीमियम के रूप में वह जीवन बीमा निगम को 236 रुपए 45 पैसे प्रति माह के हिसाब से 10 वर्षों में कुल भुगतान करता— 28,374 रुपए. यदि उस ने प्रति माह यही 236 रुपए 45 पैसे की रकम बैंक की आवर्ती जमा योजना में जमा की होती तो 10 वर्ष के पश्चात बैंक द्वारा देय राशि हो जाती— 48,607 रुपए 3 पैसे, जब कि जीवन बीमा निगम से मृत बीमेदार के नामजद व्यक्ति को मिलेंगे मात्र 64 हजार रुपए. अब इन सब तथ्यों को देखते हुए सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जीवन बीमा निगम से बीमेदार को क्या और कितना लाभ या हानि है. उपर्युक्त दोनों उदाहरणों के अनुसार एक हजार बीमेदारों में से क्रमश: 970 एवं 940 जीवित बीमेदार तो भारी हानि उठाते ही हैं, शेष 30 या 60 व्यक्तियों को भी मरने की स्थिति में उन के परिवार वालों को क्या लाभ मिलता है? नगण्य सा ही न?

तुलनात्मक अध्ययन

गैर आयकरदाताओं की स्थिति में

बीमा एजेंट और कर्मचारियों को दी जाने वाली सुविधाओं का खर्च भी बीमेदार की जेब से ही निकाला जाता है.
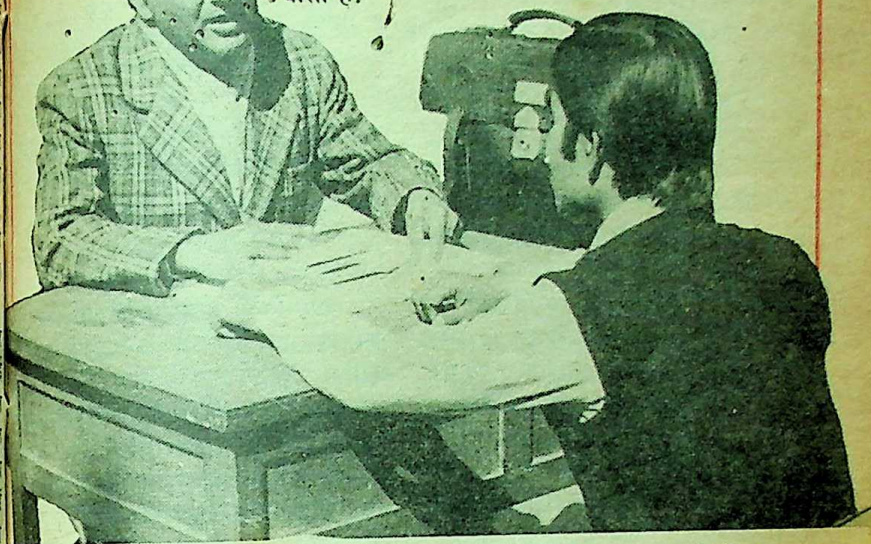
ब्याज एव बोनस की वर्तमान दरों के अनुसार किसी व्यक्ति के आयकरदाता न होने की स्थिति में उस के द्वारा 10 वर्षों तक 100 रुपए प्रति माह जमा करने पर उस को मिलने वाली राशियां विभिन्न योजनाओं से वही होंगी जो ऊपर वर्णित की जा चुकी हैं. अर्थात जीवन बीमा निगम से 12,800 रुपए, सार्वधि संचयी जमा योजना से 17,432 रुपए, बैंक आवर्ती जमा योजना से 20,557 रुपए, डाकघर की आवर्ती जमा योजना से 22,330 रुपए एवं लोक भविष्य निधि से 18,666 रुपए 36 पैसे. यहां पर लोक भविष्य निधि से प्राप्त होने वाले 18,666 रुपए 36 पैसे के संबंध में यह जानना जरूरी है कि यद्यपि यह 15 वर्षीय योजना है, तथापि तुलना की दृष्टि से उक्त गणना 10 वर्ष के आधार पर की गई है एवं इस गणना में ब्याज दर वर्ष 1980-81 की आठ प्रतिशत ली गई है, जब कि प्रचलित दर इस से ज्यादा भी हो सकती है.

आयकरदाताओं की स्थिति में : आयकरदाताओं के मामले में उन की आय आयकर की दरों के किसी भी खंड में आने पर उन को उपर्युक्त उदाहरणों के अनुसार जीवन बीमा निगम, सार्वधि संचयी जमा योजना एवं लोक भविष्य निधि से वही राशियां अर्थात जीवन बीमा निगम से 12,800 रुपए, सार्वधि संचयी जमा योजना से 17,432 रुपए एवं लोक भविष्य निधि से 18,666 रुपए 36 पैसे प्राप्त होंगे, जब कि बैंकों एवं डाकघर की आवर्ती जमा योजना में 100 रुपए में से देय कर की राशि के कारण तुलनात्मक दृष्टि से उन की जमा की गई राशि कर की राशि से कम करने की वजह से उस से प्राप्त रकम आयकर की दरों के अनुसार कमज्यादा हो जाएगी.

आयकर की 33 प्रतिशत एवं 37.4 प्रतिशत दर के मामलों में बैंकों की आवर्ती जमा योजना में क्रमशः 13,773 रुपए 19 पैसे (अर्थात 20,557 रुपए का 67 प्रतिशत) एवं 12,868 रुपए 68 पैसे (अर्थात 20,557 रुपए का 62.6 प्रतिशत) मिलेंगे, वहीं डाकघर आवर्ती जमा योजना में क्रमशः 14,961 रुपए 10 पैसे एवं 13,978 रुपए 58 पैसे (अर्थात 22,330 रुपए का 67 प्रतिशत

एवं 62.6 प्रतिशत) प्राप्त होंगे.

यहां पर यह जानना भी जरूरी है कि यद्यपि आयकर अधिनियम की धारा 80-सी के अंतर्गत प्रति वर्ष बीमे वाली राशि के दसवें भाग से अधिक की प्रीमियम राशि कटौती के योग्य नहीं है तथापि उपर्युक्त उदाहरण में पूरी कटौती मानते हुए ही गणना की गई है.

आयकरदाताओं को यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि प्रचलित कुछ योजनाओं के अंतर्गत निम्न कुछ सुविधाएं जीवन बीमा निगम की पालिसियों की अपेक्षा काफी आकर्षक हैं.

लोक भविष्य निधि के अंतर्गत किसी भी वित्तीय वर्ष में 100 रुपए से ले कर 30,000 रुपए तक की राशि (पांच रुपए के गुणक में) एकमुश्त या अधिकतम 12 किस्तों में जमा करवाई जा सकती है. इस प्रावधान का सब से बड़ा लाभ यह है कि कोई आयकरदाता अपनी कुल आय एवं उस पर देय आयकर को मद्देनजर रखते हुए प्रति वर्ष आवश्यकतानुसार मनचाही रकम 100 रुपए से 30 हजार रुपए तक जमा कर संपूर्ण अवधि में कानूनी तौर से आयकर की अधिकतम बचत कर सकता है.

पालिसी रद्द भी हो जाती है

लोक भविष्य निधि खाते को चालू रखने के लिए एक वित्तीय वर्ष में मात्र 100 रुपए जमा कराना ही पर्याप्त है, जब कि जीवन बीमा निगम की पालिसियों के संबंध में किसी प्रकार की वित्तीय कठिनाई आने या लाभ कम होने की दशा में भी एक निश्चित राशि जमा करनी पड़ती है. अन्यथा ब्याज देने के अलावा पालिसी के रद्द होने और फलतः भारी हानि उठाने की आशंका बनी रहती है.

डाकघर संचयी जमा योजना एवं लोक भविष्य निधि के अंतर्गत खातों को चालू न रहने की दशा में भी इन में जमा राशि पर ब्याज मिलता रहता है, जब कि जीवन बीमा निगम की पालिसियों के खत्म हो जाने पर उस के बाद कोई ब्याज या बोनस आदि नहीं मिलता. ऐसी स्थिति में बीमेदार को कितनी बड़ी हानि उठानी पड़ती है, इस की कल्पना नीचे लिखे उदाहरणों से हो जाती है :

यदि किसी बीमेदार ने तीन वर्ष से कम अवधि तक पालिसी पर प्रीमियम का भुगतान किया और उस के बाद आर्थिक कठिनाई या अन्य किसी कारण से भुगतान नहीं कर पाया तो पालिसी रद्द हो जाने पर बीमेदार द्वारा उस समय तक जमा की गई संपूर्ण प्रीमियम की राशि डूब जाती है और उसे जीवन बीमा निगम से कुछ भी प्राप्त नहीं होता.

अलाभकारी पालिसियां

यदि किसी बीमेदार की पालिसी 10 वर्ष तक चालू रहने के बाद चालू नहीं रह पाती तो उसे उपर्युक्त उदाहरणों में तीन वर्ष तक 100 रुपए 40 पैसे प्रति माह अर्थात कुल 3,614 रुपए 40 पैसे जमा करने पर पालिसी लेने के 10 वर्ष के पश्चात केवल 3,8[illegible] रुपए मिलेंगे. इस के विपरीत यदि उस ने यह राशि बैंकों की आवर्ती जमा योजना एवं डाकघर में सावधि जमा योजना या पुनर्निवेश जमा योजना में जमा की होती तो उसे इस से लगभग ढाई गुना राशि अर्थात 3,840 रुपए के स्थान पर 8,434 रुपए 88 पैसे की एक बड़ी राशि प्राप्त होती.

इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि जीवन बीमा पालिसियां आयकरदाता एवं गैर आयकरदाता दोनों के लिए किसी तरह से भी आकर्षक नहीं हैं बल्कि आर्थिक दृष्टि से मियाद पूरी होने पर मिलने वाली राशि को देखते हुए अन्य योजनाओं से काफी हानिकारक योजना है. जीवन बीमा निगम की पालिसियों की वर्तमान प्रचलित प्रीमियम दर एवं उन पर घोषित लाभांशों (बोनस) की वर्तमान दर को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि जीवन बीमा निगम आम नागरिकों व अपने बीमेदारों को बजाए राहत पहुंचाने के उन की जम कर हानि कर रहा है. अतः सरकार एवं निगम के उच्चाधिकारियों को तुरंत उचित कदम उठा कर इस को सामान्य जनता का निगम बनाना चाहिए, न कि एक विशिष्ट वर्ग या वर्गों का.

हमारे तहसील में नए चैनमैनों की भरती हुई थी. एक दिन कुछ परिचितों के आने पर मैं ने एक चैनमैन को पांच रुपए का नोट देते हुए कहा, "जाओ, चार चाय ले आओ."

पंदरहबीस मिनट बाद वह खाली हाथ लौट आया. यह देख कर मुझे गुस्सा आ गया. मैं ने पूछा, "चाय नहीं लाए?"

"लाया हूं साहब," कह कर उस ने जेब से चाय की चार पुड़ियां निकाल कर मेज पर रख दीं.

यह देख कर मेरे परिचितों का हंसी के मारे बुरा हाल हो गया. **—पूर्णिमा श्रीवास्तव**

*

हमारे कार्यालय के प्रबंधक बहुत परिश्रमी थे. एक बार हम लोगों ने देखा कि वे बारबार अपनी मेज की दराज खोल कर कोई चीज ढूंढ़ रहे थे. फिर वे उठे और कार्यालय के तीनों कमरों का चक्कर लगा आए. आखिर एक बाबू से नहीं रहा गया तो उस ने पूछा, "आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?"

"अरे, मेरा चश्मा नहीं मिल रहा है, उसी को घंटे भर से ढूंढ़ रहा हूं."

इतना सुनते ही हम लोगों के पेट में हंसतेहंसते बल पड़ गए क्योंकि उन्होंने अपना चश्मा सिर पर खिसका रखा था. **—स.क. सा[illegible]**

*

मैं पश्चिमी बंगाल के चौबीस परगना जिले के हवरा डाकघर में खाता खोलने के लिए फार्म लेने गया. फार्म बंगला भाषा में छपा था.

मैं ने कहा, "क्या हिंदी में छपा फार्म नहीं है?"

मुझे जवाब मिला, "आप हिंदुस्तान में जा कर हिंदी में छपा फार्म ले लीजिए. यहां केवल बंगला भाषा में छपा फार्म ही मिलता है. **—ज्ञानेंद्रकुमार दीक्षित (सर्वोत्तम)** •

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता हैं. और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई हैं, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए:
दास्ताने दफ्तर, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

आग के कुएं में

कहानी • इरमा तायलर मैकाल

डाक्टर आर्थर डे, डाक्टर ई. एस. शैफर्ड और श्री डाज. इन तीनों अमरीकी वैज्ञानिकों के सामने एक ही प्रश्न था– ज्वालामुखी पर्वतों से जो आग उगलती चट्टानें, दमघोंटू गैस और खौलता हुआ लावा निकलता है वह बाहर कैसे आता है? क्या भाप की शक्ति के कारण? यदि ऐसा है तो भाप बनने के लिए वहां पानी कहां से आता है– जमीन के भीतर से अथवा किसी झील या नदी से?

इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए उन्होंने प्रशांत महासागरीय हवाई द्वीप में स्थित संसार के सब से बड़े ज्वालामुखी पर्वत किलोई के पेट में उतरने का निश्चय किया ताकि वहां से गैसों व लावे के नमूने तथा उन के चित्र ला सकें. इन गैसों और लावे का परीक्षण कर के ही वे अपने प्रश्न का उत्तर पा सकते थे. इस ज्वालामुखी से रातदिन कुछ न कुछ निकलता रहता है, इसलिए उन का यह प्रयास दुस्साहस तो था, पर वांछित जानकारी प्राप्त करने के लिए जरूरी भी था.

मई 1912 की एक सुबह दो आदमी हवाई द्वीप के इस ज्वालामुखी किलोई की चोटी पर खड़े थे. उन में एक डाक्टर शैफर्ड और दूसरे डाक्टर डे थे. डाक्टर डे दल के नेता थे. करीब 65 मीटर (200 फुट) नीचे लावे का तालाब सा उफन रहा था. यह तालाब

ज्वालामुखी फटता है तो आसपास की धरती डोल उठती है. पिघली हुई चट्टानों का लावा ज्वालामुखी के मुंह से निकल कर इधरउधर फैल जाता है, पर लावे में पानी कहां से आता है?

लगभग 65 मीटर लंबा और 30-35 मीटर चौड़ा था. इस में 15-20 तक ऊंचे आग के फव्वारे से चल रहे थे.

डाक्टर डे आग के उस विशाल कुएं में उतरने के लिए तैयार खड़े थे. उन की नाक पर भीगा हुआ स्पंज बांध दिया गया था, ताकि ज्वालामुखी के अंदर की गैसें उन को नुकसान न पहुंचा सकें. स्पंज को लगातार गीला रखने के लिए पानी की बोतल वह अपने साथ ले जा रहे थे. इस के अलावा उन के पास एक नोकदार हथौड़ी तथा दो फुट लंबी लोहे की छड़ भी थी. इन की मदद से वह चट्टानों को खोद कर पैर रखने के लिए जगह बना सकते थे. उन की कमर की पेटी से एक रस्सी

स्थान का निरीक्षण करने के बाद सवेरा होते ही उन्होंने उस खतरनाक कुएं में उतरना शुरू कर दिया था.

बांध दी गई थी जिस का दूसरा सिरा कुएं के बाहर एक चट्टान से बंधा था. यह रस्सी उन्हें नीचे गिरने से बचाने के लिए बांधी गई थी. इस के अलावा उन के पास कोई सामान नहीं था क्योंकि वह सिर्फ यह देखने जा रहे थे कि वहां काम करना संभव है या नहीं.

डाक्टर डे किनारे के पत्थर का सहारा ले कर 'आग के उस कुएं' में उतरने लगे. शेफर्ड ने हाथ हिला कर कहा, "मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं."

डाक्टर डे जवाब में मुसकरा दिए.

लगभग 65 मीटर नीचे तक कुएं की दीवार सीधी, सपाट व चिकनी थी, इसलिए डाक्टर डे को हथौड़ी से नरम चट्टानों को तोड़तोड़ कर पैर रखने के लिए जगह बनानी पड़ रही थी. जब वह आधा रास्ता तय कर चुके तो अचानक ठंडी हवा के एक झोंके से उन का बदन सिहर उठा. आश्चर्य और खुशी से वह चिल्ला उठे, "शैफर्ड... शैफर्ड, देखो कितनी ठंडी हवा है."

लेकिन उन की आवाज नीचे सुलगते हुए लावे की सूंसूं में डूब कर रह गई. अपनी भूल पर वह मुसकरा दिए. लेकिन उन की यह खुशी ज्यादा देर तक न रही. 'अगर मेरा पैर यहां से फिसल जाए... या...अचानक ज्वालामुखी फूट पड़े तो...तो?'

उन्होंने सिर को झटका दिया और फिर नीचे उतरने लगे.

जमे हुए कठोर लावे को अपने पैरों के नीचे पा कर डाक्टर डे की आंखें खुशी से चमक उठीं. नमूने के लिए लावे का टुकड़ा उठाने के लिए वह नीचे झुकने को ही थे कि एक जोर का विस्फोट हुआ. उन्होंने नजर उठा कर देखा. जहां वह खड़े थे, उस से करीब नौदस मीटर की दूरी पर जमीन से पीले लावे का एक फव्वारा सा निकल रहा था. कुछ ही देर में लावे की लपटें थोड़ी ठंडी हो कर वृत्त सा बनाने लगीं. हर विस्फोट के साथ लावे का यह घेरा ऊंचा होता जाता और वृत्त की दीवारें नजदीक होती जातीं. आखिरकार लावे की
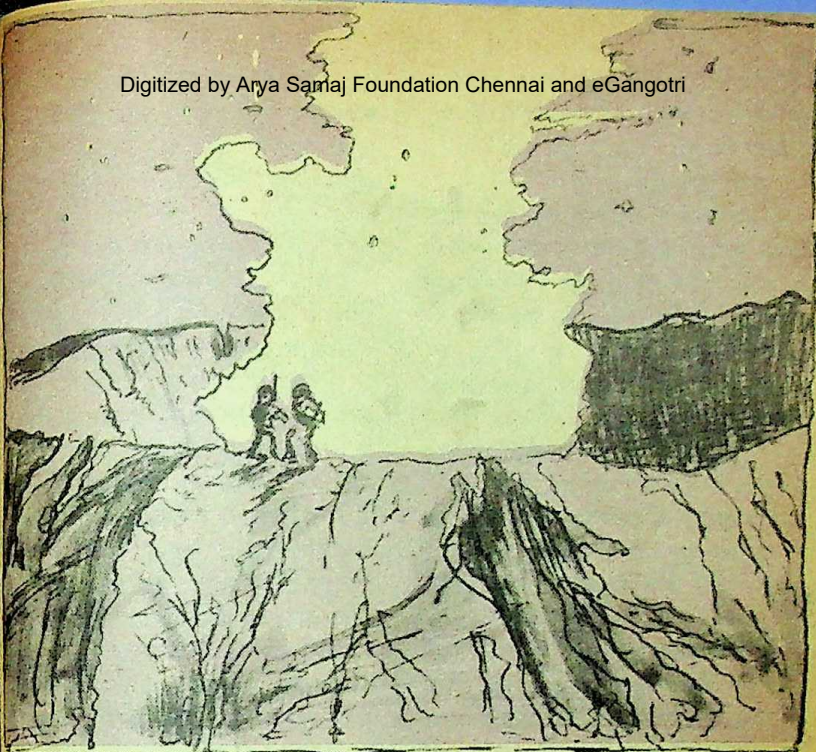
मई की एक सुबह दो आदमी डाक्टर शेफर्ड व डाक्टर डे हवाई द्वीप के ज्वालामुखी किलोई की चोटी पर खड़े थे.

लपटों ने एक छोटे से टीले का सा रूप धारण कर लिया. कुछ देर बाद ही आग के उस 'टीले' में से नीले रंग की एक गैस निकलने लगी.

'बस, हमें इसी टीले की जरूरत है. इसी नीली गैस से हमें पता चलेगा कि पानी कहां से आता है,' डाक्टर डे ने सोचा.

गैस इकट्ठा करने के लिए उन के पास कोई चीज तो थी नहीं, इसलिए वह आसपास के स्थान का निरीक्षण करने लगे.

"यहां एक क्या दस आदमी भी एकसाथ काम कर सकते हैं." फर्श पर आखिरी बार नजर डालते हुए वह बुदबुदाए और जिस रास्ते से वह आए थे, उसी रास्ते से ऊपर चढ़ने लगे.

अगली बार जमे हुए काले लावे के कठोर तल पर चार आदमी खड़े थे— डाक्टर डे, डाक्टर शैफर्ड, श्री डाज और हवाई द्वीप का एक मूल निवासी. उन के पास दो कैमरे, पाइप, ट्यूबें और दूसरा जरूरी सामान था.

फर्श पर पांव रखते ही डाक्टर डे की नजरें लावे के उस टीले पर जा अटकीं. वह काम करने के लिए ठीक जगह का चुनाव करने के लिए योजना बना ही रहे थे कि शैफर्ड की चीख ने उन का ध्यान अपनी ओर खींचा.

"मेरे जूते बुरी तरह जल रहे हैं."

"और मेरे भी," डाज बोला.

इस से पहले कि डाक्टर डे कुछ कहते, तीनों दीवार के सहारे लगी चट्टानों पर जा चढ़े. डाक्टर डे का ध्यान भी अपने जूतों की ओर गया. अगले ही क्षण वह भी उन के साथ खड़े थे.

थोड़ी देर बाद जब उन के जूते कुछ ठंडे

हो गए तो डाक्टर डे ने कहा, "चलिए काम शुरू कर देना चाहिए. जूते फिर गरम हो गए तो थोड़ी देर फिर आराम कर लेंगे."

सभी नीचे उतर आए.

डाक्टर डे ने पाइप का एक सिरा आग के उस टीले में नीली गैस के पास पहुंचाया और दूसरे सिरे पर ट्यूब रखी. तेज आवाज के साथ गैस ट्यूबों में भरने लगी. गैस की गरमी के कारण पाइप पिघलता जा रहा था, पर डाक्टर डे को इस की चिंता न थी. वह काफी गैस इकट्ठा कर चुके थे.

अब उन्होंने दीवार से थोड़ी दूरी पर कैमरे का स्टैंड खड़ा किया और लपटों, लावे, फर्श व दीवारों के चित्र लेने लगे. अचानक जोर का विस्फोट हुआ और फर्श में से लगभग 40 फुट ऊंची आग की लपटें निकलने लगीं.

सभी हड़बड़ा कर पीछे भागे. इसी भाग-दौड़ में न जाने किस का हाथ कैमरे के बटन पर जा पड़ा और लपटों के उस फव्वारे का चित्र कैमरे में कैद हो गया. बाद में यही चित्र सब से अधिक महत्त्वपूर्ण साबित हुआ.

इन लपटों के कारण खतरा और ज्यादा बढ़ गया था, पर काम पूरा किए बिना वे लौटना न चाहते थे. वे लावे के कुछ टुकड़े अपने साथ ले जाना चाहते थे. वे आवश्यक औजार निकालने लगे.

अचानक जहरीली गैसों ने उन्हें घेर लिया. इन गैसों के कारण आंखें जलने लगीं, दम घुटने लगा और खांसी आनी शुरू हो गई. लावे के पास ताजी हवा की पतली परत न होती तो उन का दम ही घुट जाता. पांचछः मिनट तक वे जिंदगी और मौत के बीच झूलते रहे. अगली बार थोड़ी देर के लिए जब हवा का रुख बदला तो वे बिना देर किए ऊपर चढ़ने लगे.

वैज्ञानिकों ने उन के द्वारा लाई गई चीजों पर तुरंत परीक्षण शुरू कर दिए. इन परीक्षणों ने सिद्ध कर दिया कि लावे में भाप का पानी जमीन के नीचे से आता है. वैज्ञानिकों की जानकारी में एक बात और जुड़ गई. ज्वालामुखियों पर काबू पाने के लक्ष्य की ओर वे एक कदम और आगे बढ़ गए. और यह सब हुआ उन वीरों के कारण, जिन्होंने अपनी जान दांव पर लगा कर सारी मानवता के लिए अमूल्य जानकारी एकत्र की.

यौवन की निशानी है

बिगड़ो न मस्त हवाओं पर, नहीं इन की शैतानी है,
संभल न पाना आंचल का, यौवन की निशानी है.
छूटे मुक्त हंसी बचपन की और आंखें शर्माती हों,
तो समझो, हर मौसम पर भरपूर जवानी है.
पर बोल गया चुपके से क्या कानों में बात कोई?
जब सोलह पूरे हो जाएं, नहीं आंख मिलानी है.
संकोच में यूं ही गवांओगी अपने जीवन को तुम,
फिर तरसोगी इस पल भर को, यह बात पुरानी है.
आओ बैठें, कुछ कह लूं मैं, कुछ कह लो तुम भी अब,
ढलते सूरज की बेला है और शाम सुहानी है.

— अनिल चड्डा

तब मैं हायर सैकेंडरी में पढ़ता था. हमारे भौतिक शास्त्र के अध्यापक लड़कों के
पकड़ कर अकसर कहा करते थे, "बख्खल उधेड़ दूंगा."

एक दिन कक्षा में उन के आने से पहले ही दो लड़कों का अचानक झगड़ा हो गया. तब
लड़के ने दूसरे लड़के के बाल पकड़ कर कहा, "बख्खल उधेड़ दूंगा."

वह अध्यापक कक्षा के बाहर खड़े खिड़की से यह सब देख रहे थे. शायद उन्हें छात्र
भाषा बिगड़ने पर दुख हुआ क्योंकि उसी दिन से उन के मुंह से हम ने यह वाक्य नहीं

—राजेश

*

हमारे पड़ोसी का नौकर हर बात में 'वह आप का' कहने का आदी था.

एक दिन पड़ोसी ने उसे मांस खरीदने के लिए भेजा, साथ ही उसे यह हिदायत भी की
यदि अच्छा मांस न मिले तो वह अंडे ही ले आए.

थोड़ी देर बाद जब वह बाजार से वापस आया तो कहने लगा, "जी, मैं वह आप का
लेने गया था, लेकिन वह आप का मीट अच्छा नहीं था. तो मैं वह आप का अंडा ले आ

इस पर जब पड़ोसी बिगड़ पड़े तब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने
यह तकिया कलाम छोड़ा.

—रतन

*

मैं एम.बी.बी.एस. अंतिम वर्ष का छात्र हूं. एक बार बाह्य रोगी कक्ष में एक मरीज
उसे 'बराबर' कहने की आदत थी. अतः वह आते ही बोला, "डाक्टर साहब, मैं चार दि
बराबर बीमार हूं. मुझे दिनरात बराबर ठंड लगती है. मैं बराबर दवा ले रहा हूं पर ब
फायदा नहीं हो रहा है."

हमारे प्रोफेसर साहब कुछ मजाकिया स्वभाव के हैं. वह बोले, "आप मेरी लिखी दवा
रोज बराबर लें. आप को बराबर फायदा होगा. लेकिन कृपा कर के आप सोमवार और गु
को बराबर आइएगा."

मरीज को इस पर भी अपने बराबर शब्द का प्रयोग ज्यादा करने का अहसास नहीं हु
वह बोला, "डाक्टर साहब, जैसा आप ने बताया है मैं वैसे ही बराबर दवा लूंगा, और आ
पास बराबर आता रहूंगा." इस पर हम सभी खिलखिला कर हंस पड़े.

—राम रा

*

मेरी भाभी को 'पता है' कहने की आदत है. एक दिन मेरे कुछ मित्र आए थे और मैं उन
साथ आमलेट खा रहा था. भाभीजी कुछ दूर बैठी कुछ कर रही थीं. चूंकि वह अंडा नहीं खा
इसलिए मैं ने चिढ़ाते हुए उन से कहा, "भाभीजी, आमलेट बहुत स्वादिष्ट है."

इस पर वह तुरंत बोली, "पता है."

लेकिन जब मैं ने कहा कि आप को कैसे पता है? तो वह शरमा कर दूसरे कमरे में
गईं.

—सुनीलकुमार मौर्य

माँ का दूध बच्चे के लिए सर्वोत्तम है

बच्चे के लिए स्तनपान का महत्व

माँ का दूध शुद्ध, कीटाणुरहित और शिशु की पाचनशक्ति के १००% अनुकूल होता है। स्तनपान से बच्चे को माँ की विभिन्न रोगों के प्रति असंक्राम्यता सहज ही मिल जाती है और आपके वात्सल्य द्वारा सुरक्षा की भावना भी उसे मिलती है जो उसके लिए ज़रूरी है. उसे वायु-रोग या नैपी - रैश भी बहुत कम होता है।

३ महीने बाद केवल दूध काफ़ी नहीं है

आपके बच्चे की पोषक-आहार सम्बन्धी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उसके आहार को बदलना ज़रूरी है। डॉक्टर, आयरन से भरपूर पोषक ठोस आहार लेने की सिफ़ारिश करते हैं जो आसानी से पचाया जा सके।

डॉक्टर फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश क्यों करते हैं?

सुपाच्य फ़ैरेक्स आपके मुन्ने की कोमल पाचन शक्ति के लिए विशेष रीति से बना ठोस आहार है। इसमें कार्बोहाइड्रेट्स, फ़ैट्स, केल्शियम, फ़ास्फ़ोरस और विटामिन मौजूद हैं। फ़ैरेक्स आयरन से भी भरपूर है। इस प्रकार मुन्ने के सर्वांगीण विकास के लिए फ़ैरेक्स एक आदर्श ठोस आहार है।

मुफ़्त! मुन्ने की प्रथमवर्ष पुस्तिका — नयी माताओं के लिए बच्चे की देखभाल सम्बन्धी सुलभ मार्गदर्शन। ५० पैसे का टिकट भेजकर मंगवाइये।

पो. ऑ. बॉक्स नं. 19119
(FAR 36 B) बम्बई - 400 025

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है - फ़ैरेक्स
मुन्ने का आदर्श ठोस आहार — जल्द और सर्वांगीण विकास के लिए

CASGLF-11-173 Hin

लेख • दिनेश खरे

शृंगारिक अप्सरा के

...रा के सौंदर्य का प्रतीक :
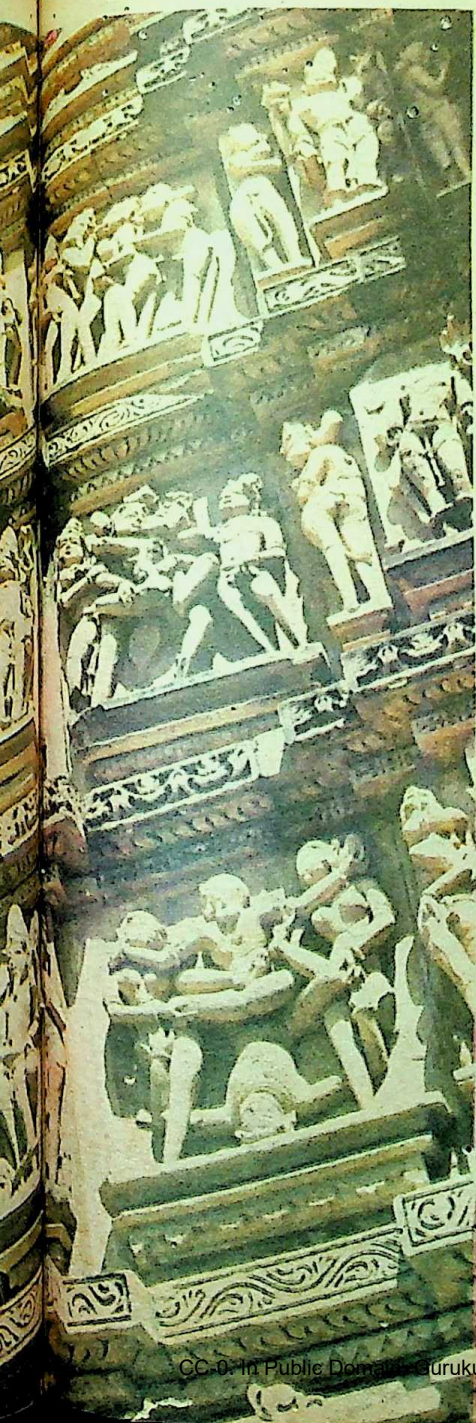
खजुराहो

विश्व में स्त्री और पुरुष के प्रेम को प्रदर्शित करने वाली उतनी मूर्तियां शायद ही कहीं उपलब्ध हों जितनी कि खजुराहो के जगप्रसिद्ध मंदिरों की बाहरी दीवारों पर हैं. इन मंदिरों की दीवारों में एक इंच स्थान भी ऐसा नहीं है जो कलात्मक मूर्तियों से अलंकृत न हो. इन मूर्तियों को देख कर ऐसा लगता है जैसे वे अभी सजीव हो उठेंगी.

खजुराहों के मंदिर कला और शिल्प के अद्वितीय नमूने तो हैं ही, यहां के मंदिरों में बनी नारी मूर्तियों में इतनी विविधता है कि हर पर्यटक यहां एक बार अवश्य आना चाहता है...

प्राचीन भारत के मूर्तिकारों ने खजराहो की इस कला को अमर बनाने में जो योगदान दिया है, वह सारे विश्व में अद्वितीय है. खजुराहो के मंदिरों में दर्पण में अपने सौंदर्य को निहारती कोमलांगी रमणियां, आलिंगनबद्ध नायकनायिका, नृत्य के लिए घुंघरू बांधती नृत्यांगना व बांसुरी, ढोलक, मंजीरा आदि बजाती संगीत मंडली जैसी उल्लेखनीय मूर्तियां हैं. इन में शृंगारिक अप्सराओं की मूर्तियां असंख्य हैं.

खजुराहो में सन 950 से ले कर 1050 तक मध्यकालीन चंदेल राजपूतों ने करीब 85 मंदिरों का निर्माण कराया था. लेकिन उन में से अब करीब 24 मंदिर ही शेष हैं. ये मंदिर चंदेला वास्तु व मूर्तिकला के अप्रतिम विकास के प्रतीक हैं. यहां के प्राचीन लोगों पर शैव मत का ज्यादा प्रभाव होने के कारण यहां शिव मंदिरों की भरमार है, लेकिन वैष्णव व जैन धर्म से संबंधित मंदिर भी यहां पर हैं. ये मंदिर

ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर से बने हैं.

खजुराहो मध्य प्रदेश में छतरपुर जिले से 45 किलोमीटर की दूरी पर बसी एक पुरानी बस्ती है. सन 1022 में कालिंजर पर आक्रमण के समय महमूद गजनवी के साथ आए इतिहासकार अबू रिहान मुहम्मद (जो अल बेरूनी के नाम से अधिक प्रसिद्ध है) ने इस बस्ती का नाम 'खजुराह' लिखा है तथा

मंदिरों की जगत पर भी शिल्पकारों ने अद्वितीय कलाकृतियां उकेरी हैं.
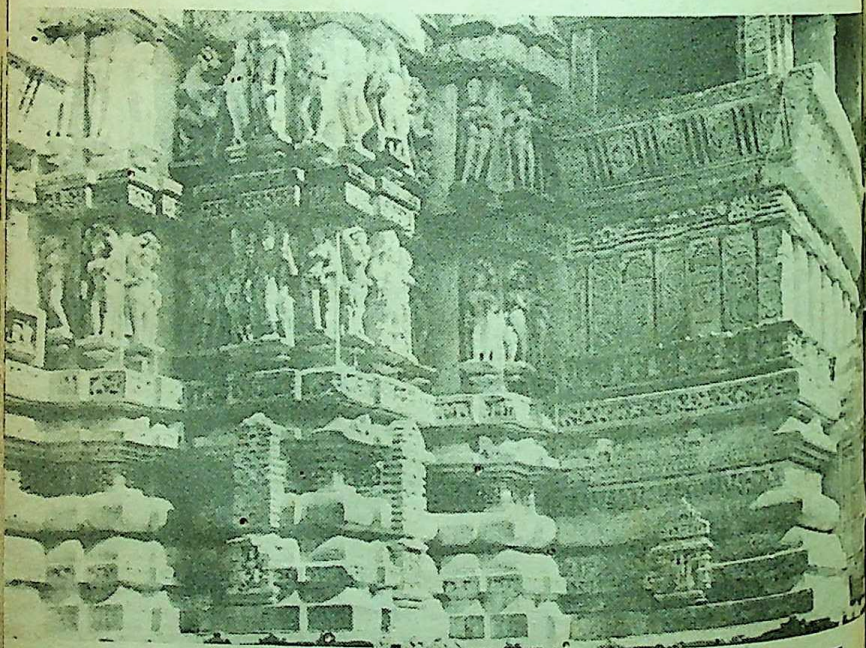
कंधारी महादेव मंदिर की बाहरी दीवार पर उत्कीर्ण आखेट करते आदिमानव.

इसे जाजाहुती नामक राज्य की राजधानी बताया है. सन 1335 में प्रसिद्ध इतिहासकार इब्ने बतूता ने इस बस्ती की यात्रा की और इसे 'खजूरा' नाम से संबोधित करते हुए लिखा है कि इस स्थान पर करीब एक मील लंबी झील थी, जिस के चारों ओर ये मंदिर बनाए गए थे.

मंदिरों का निर्माण

इन मंदिरों का निर्माण एक विशेष तरीके से किया गया है. समस्त मंदिर बिना किसी घेर के एक ऊंची चौकी के ऊपर बनाए गए हैं. इस चौकी को जगती या जंघा भी कहते हैं. इस जंघा की ठोस दीवारों के साथसाथ मंदिर की बाह्य दीवारों और शिखरों की तरह की छतों पर भी मूर्तियां बनाई गई हैं. मंदिरों में प्रवेश के लिए बने द्वार को मकरतोरण कहा जाता है. इस के बाद आते हैं अर्धमंडप और मंडप, जो तीन ओर से खुले गलियारे के रूप में बनाए गए हैं. इस के बाद आता है महामंडप और गर्भगृह. ये तीन तरफ से दीवारों से घिरे हैं, लेकिन प्रकाश व वायु के लिए इन में खिड़कियां बनाई गई हैं. यहां पर मूल नायक (जिस मूर्ति के नाम पर मंदिर का नाम रखा गया) की प्रतिमा स्थापित है.

मंदिर के इन भागों के अंदर जो आले आदि बनाए गए हैं, उन में भी मूर्तियां व भित्तिचित्र हैं. कुछ विद्वानों का मत है कि खजुराहो के इन मंदिरों का शिल्प इन के समकालीन मंदिरों जैसे लक्ष्मण मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर व विश्वनाथ मंदिर के समान नहीं निखरा है. लेकिन फिर भी खजुराहो के मंदिर अत्यधिक परिष्कृत शिल्प का नमूना हैं.

खजुराहो के कंधारी मंदिर की ऊंचाई करीब 110 फीट है, जो आज की 19 मंजिला इमारत के बराबर है. उस समय जब विज्ञान ने इतनी प्रगति नहीं की थी, इस प्रकार की भव्य इमारतों का निर्माण आज के किसी भी वास्तुशिल्पी या सिविल इंजीनियर के लिए एक चुनौती है. इन भव्य इमारतों के लिए बनाई गई नींव भी आज के सिविल इंजीनियर के लिए शोध का विषय हो सकती है.

मंदिरों में वर्णित शिल्प

खजुराहो के मंदिरों में बनी मूर्तियों को कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है

पहले वर्ग में वे मूर्तियां आती हैं जिन को मंदिरों के गर्भगृह में पूजा के लिए स्थापित किया गया था. दूसरे वर्ग में आते हैं पारिवारिक देवता आदि, जिन्हें आलों में स्थापित किया गया है. अगले समूह में आती हैं मंदिरों की बाह्य दीवारों पर बनी अप्सराओं की मूर्तियां, जिन्हें रोजमर्रा के विभिन्न कार्य करते हुए दिखाया गया है. कहीं ये अप्सराएं पैर से कांटा निकालती हुई दिखाई गई हैं तो कहीं पर स्नान के बाद बालों का पानी निचोड़ती हुई. कहीं वे पशुपक्षियों से अठखेलियां करती हुई दिखाई गई हैं, तो कहीं

यहां उत्कीर्ण नारी मूर्तियों का शरीर सौष्ठव देख कर कोई भी दर्शक ऐसी सुंदर नारी को पाने की मात्र कल्पना ही कर सकता है.

पर मैथुन क्रिया में ... देख कर शरमाती हुई.

इन मूर्तियों की शारीरिक सौंदर्य आज की किसी भी विश्व सुंदरी से अधिक है. कंधारी मंदिर की दीवारों पर कहींकहीं सामूहिक संभोग में संलग्न अप्सराएं प्रदर्शित की गई हैं.

कई विद्वानों का मत है कि मंदिरों में कौल और कापालिकों का प्रभाव बढ़ने के कारण संभोग की विभिन्न मुद्राओं का अलंकरण किया गया है. लेकिन कई विद्वानों का मत इस से भिन्न है. उन के अनुसार सच्चा ईश्वरभक्त वही है जो इन काम मुद्राओं से विचलित नहीं होता. लेकिन सच तो यह है कि किसी भी वस्तु या भाव की कोरी कल्पना करना संभव नहीं है, अतः लगता है कि तत्कालीन भारतीय समाज में कामक्रीड़ा को ले कर ऐसी कोई कुंठा नहीं होगी जैसी कि आजकल व्याप्त है. यानी ये मुद्राएं कुछ हद तक उस समाज की अंदरूनी स्वच्छंद और कुंठारहित जिंदगी का खाका प्रस्तुत करती हैं. तभी तो खजुराहो पर किए अपने शोध में चार्ल्स फेब्री ने लिखा है:

"यदि तांत्रिक शिक्षा का अस्तित्व नहीं होता तो शायद कोई ऐसा वर्ग भी नहीं होता जो यह बात दावे के साथ कह सकता कि स्त्रीपुरुष के शारीरिक संसर्ग के समान परमसुख इस धरा पर नहीं है. तब शायद यौनसुख की विविध विधाओं का वर्णन करने वाला ऐसा कामसूत्र भी नहीं बनता जो यह बताता कि अंतिम ज्ञान या प्रज्ञा स्त्री की योनि में अवस्थित है."

मंदिरों में प्रदर्शित इन सुरसुंदरियों के पुष्ट वक्ष स्थल और नितंबों को देख कर कोई

कामरूप शिवपार्वती की प्रेममयी मुद्रा वाली मूर्तियां यहां कई मंदिरों में तराशी गई हैं.
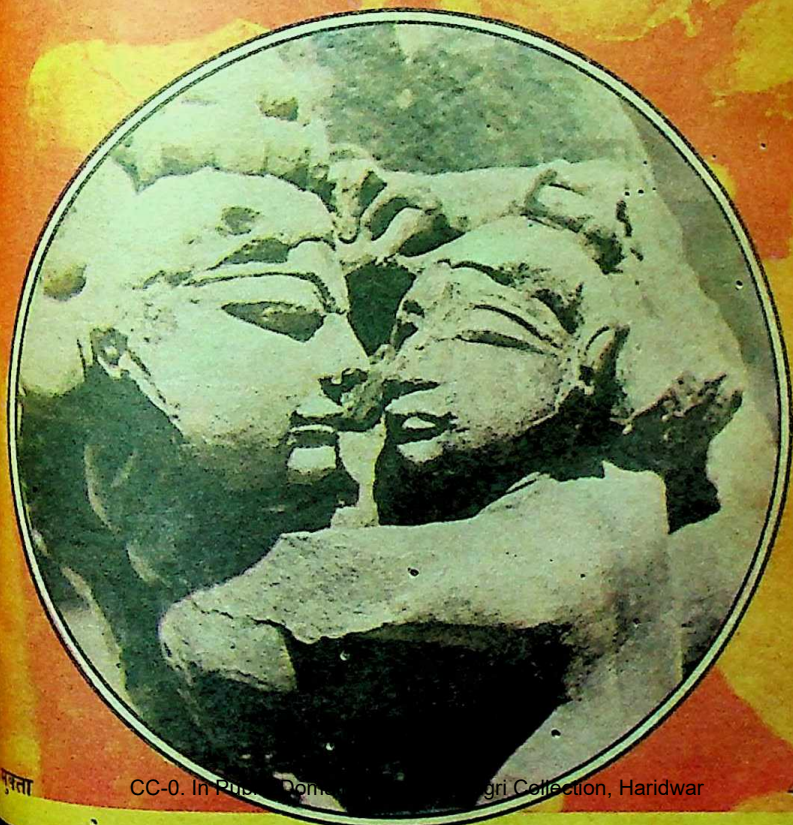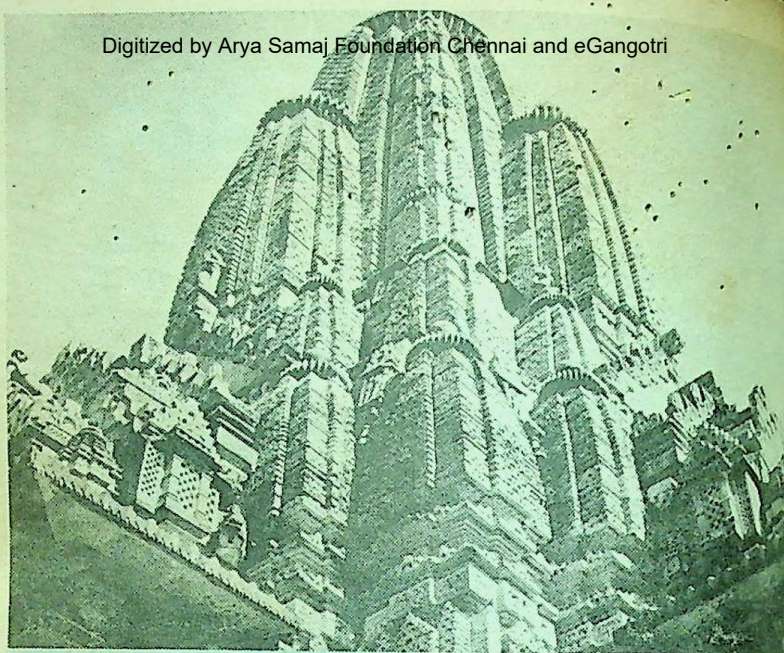
जैन मंदिरों में सब से महत्वपूर्ण पार्श्वनाथ मंदिर की शिल्पकला भी काफी चित्ताकर्षक है

भी दर्शक ऐसी सुंदर नारी को पाने की मात्र कल्पना ही कर सकता है.

यहां की अन्य मूर्तियों में घरेलू जीवन से संबंधित दृश्य व अठखेलियां करते पशुपक्षी हैं.

खजुराहो के मंदिरों में सींग वाले शेर के रूप में प्रदर्शित शार्दूल शायद तत्कालीन सभ्यता के किसी विशेष रहस्य से जुड़ा है. हो सकता है कि इस का संबंध राजवंशों द्वारा किए गए आखेटों से हो. खजुराहो का यह शार्दूल वहीं तक सीमित न रह कर जबलपुर के नजदीक भेड़ाघाट में बने चौंसठ योगिनी के मंदिर तक भी पहुंच गया है.

दर्शनीय स्थल

खजुराहो की ये मूर्तियां प्रसाधन, संगीत, मैथुन, आखेट आदि को जीवंतता प्रदान करती प्रतीत होती हैं. इन मूर्तियों के निर्माण का रहस्य जो भी रहा हो, पर्यटकों को उन्मत्त और आकर्षित करने में वे सक्षम हैं.

पर्यटन सुविधा की दृष्टि से खजुराहो के मंदिरों को तीन बड़े समूहों में विभाजित किया गया है— पश्चिमी समूह, पूर्वी समूह तथा दक्षिणी समूह.

पश्चिमी समूह : इस समूह के प्रमुख मंदिर हैं— चौंसठ योगिनी का मंदिर, कंदरिया महादेव मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, देवी जगदंबा का मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, पार्वती मंदिर और मातंगेश्वर का मंदिर.

पांच मीटर ऊंची आयताकार जगती पर बने चौंसठ योगिनी के मंदिर में ग्रेनाइट पत्थर की बनी चौंसठ योगिनियों की प्रतिमाएं हैं. ये सारी प्रतिमाएं देवी काली को समर्पित हैं. पर नवीं शताब्दी में बने इस मंदिर में काली की मूर्ति अब विलुप्त हो गई है. बताया जाता है कि यह मंदिर खजुराहो के मंदिरों में सब से पहले बनाया गया था. इस मंदिर के उत्तर दिशा में 31 मीटर ऊंचा कंदरिया महादेव का भव्य मंदिर है, जिस में 900 विभिन्न अलंकरण हैं. मंदिर के मुख्य द्वार पर संगीत वाद्यों को बजाते संगीतज्ञ, पंख वाले देवीदेवता, मगर के समान एकदस्ते में समा

प्रेमियों की मूर्तियां एक अद्भुत शिल्प प्रस्तुत करती हैं. इस मंदिर की बाह्य दीवारों पर नायकनायिका की सामूहिक संभोग में रत मूर्तियां हैं, जिन्हें देख कर शर्म से मुंह फेरे हुए अन्य कोमलांगियों की मूर्तियां हैं.

कंधारी मंदिर के उत्तर में बना जगदंबा देवी का मंदिर भी कभी काली को समर्पित माना जाता था. इस मंदिर की बाह्य दीवारों पर चित्रित स्त्रीपुरुष की प्रेममयी मुद्राओं के अलंकरण दर्शनीय हैं.

इस मंदिर के पास ही बने चित्रगुप्त के मंदिर में सूर्य को अपने सात घोड़ों के रश्मिरथ पर प्रदर्शित किया गया है. दीवारों पर खुदे आखेट के दृश्य, अप्सराओं की विभिन्न भावभंगिमाएं और पागल हाथियों की लड़ाई के दृश्य किसी भी पर्यटक का मन मोह लेते हैं. आले में 11 सिरों वाले विष्णु को अपने 10 अवतारों के साथ प्रदर्शित किया गया है.

चित्रगुप्त मंदिर के पास ही मिथ्या नाम का पार्वती मंदिर है, जो विष्णु को समर्पित है. मंदिर की मूल प्रतिमा को हटा कर मगर पर देवि गंगा की मूर्ति रख दी गई है. यहां चापलूसी की मुद्रा में सिंदूर लगाती अप्सरा का दृश्य अद्भुत है.

इस के अलावा रामचंद्र या चतुर्भुज नाम से प्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर भी दर्शनीय है. विष्णु को समर्पित इस मंदिर का भीतरी गर्भगृह अत्यंत सुंदर ढंग से अलंकृत किया गया है. इस मंदिर की कुछ विशिष्ट मूर्तियों में गेंद से खेलती अप्सरा की मूर्ति और नायक की अपनी नायिका को बंदर से बचाती हुई मूर्ति है.

लक्ष्मण मंदिर के दक्षिण में बना मांटगेश्वर का मंदिर अभी भी अपने गर्भगृह में स्थापित ढाई मीटर ऊंचे शिवलिंग के कारण महत्त्वपूर्ण है.

पश्चिमी समूह के इन मंदिरों में प्रवेश के लिए 50 पैसे का टिकट खरीदना पड़ता है.

पूर्वी समूह : इस समूह के अंतर्गत आने वाले दर्शनीय मंदिर हैं– ब्रह्मा मंदिर, वामन मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर व चंताई मंदिर.

ग्रेनाइट व बलुआ पत्थर से बना ब्रह्मा

कंधारी महादेव मंदिर : इस मंदिर में नौ सौ से ज्यादा विभिन्न प्रकार की मूर्तियां हैं.

मंदिर विष्णु को समर्पित है.

वामन मंदिर विष्णु के वामन अवतार वामन को समर्पित है. इस की बाह्य दीवारों पर विभिन्न तरीकों से मैथुन क्रिया में रत अप्सराएं प्रदर्शित की गई हैं.

चंताई मंदिर के अब मात्र अवशेष ही रह गए हैं, लेकिन यह तत्कालीन शिल्पकला को प्रदर्शित करने में सक्षम है.

जैन मंदिरों में पार्श्वनाथ मंदिर शिरोमणि है. इस की बाह्य दीवारों पर नृत्य करती अप्सराएं व शिवपार्वती के प्रेममय दृश्य अलंकृत हैं.

दक्षिणी समूह : दूल्हादेव व चतुर्भुज मंदिर इस समूह के दो प्रमुख मंदिर हैं.

खजुराहो से पांच किलोमीटर की दूरी पर बने दूल्हादेव मंदिर में शिव की मूर्ति स्थापित है व इस की प्रमुख दीवारों पर पेड़ों के

मंदिर के हर पत्थर पर शिल्पियों की अनूठी कलाकारी यहां की एक अन्य विशेषता है.

चारों ओर अठखेलियां करती अप्सरा प्रदर्शित की गई है.

चतुर्भुज मंदिर में विष्णु की एक सु मूर्ति है.

दीवारों पर प्रदर्शित मूर्तियां

खजुराहो के मंदिरों की भव्यता ज्यादा सुंदर हैं – मंदिरों की बाहरी दीवारों खुदी विभिन्न मूर्तियां, जो पर्यटकों को बरब अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं.

खजुराहो के सब से भव्य मंदिर कंध महादेव मंदिर के प्रवेशद्वार की दाहिनी दीव पर शीर्षासन की मुद्रा में पुरुष से मैथुन में र नायिका की मूर्ति है. यहां पर दो दासियां मै में सहयोग करती भी प्रतीत होती हैं. लेकि मैथुन का यह आसन साधारणतया म प्रतीत नहीं होता. स्नान के बाद दर्पण में अ सौंदर्य को निहारती पूर्ण यौवना की मूर्ति देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि कोई सुं अपने आप से बेखबर अपने सौंदर्य में ही हुई है.

मूर्तिकारों ने खजुराहो की इस शि कला को अन्य मंदिरों पर भी बरकरार र

कंधारी मंदिर की अन्य विशि मूर्तियां हैं– आखेट का दृश्य, युद्ध का दृ युद्ध की तैयारी में जाती हुई सेना, सुसज्जि हाथी व घुड़सवार सैनिक, एक मूर्तिकार पत्थर पर बैठ कर मूर्ति तराशना व मजदूरों द्वारा एक पत्थर को एक लट्ठे ढकेल कर उस के पास लाना, नृत्य के लि अपने पैरों में घुंघरू बांधती हुई नृत्यांग गेंद से खेलती अप्सरा, पैर से कांटा निकाल हुई दुखी मुद्रा बनाए नायिका, बाएं पैर खड़े पुरुष से चुंबन व मैथुन में रत नायिका उसे देख कर शर्म से अपना मुंह फेर कर ख दो दासियां.

अतः विभिन्न प्रकार की लगभग नौ मूर्तियां केवल कंधारी मंदिर की बाह दीवारों पर ही बनी हैं.

कंधारी मंदिर के बाद मूर्तियों के लि दूसरा प्रसिद्ध मंदिर है– लक्ष्मण मंदिर, ज पर आकर्षक मूर्तियों में एक गेंद से खेल मुक्त
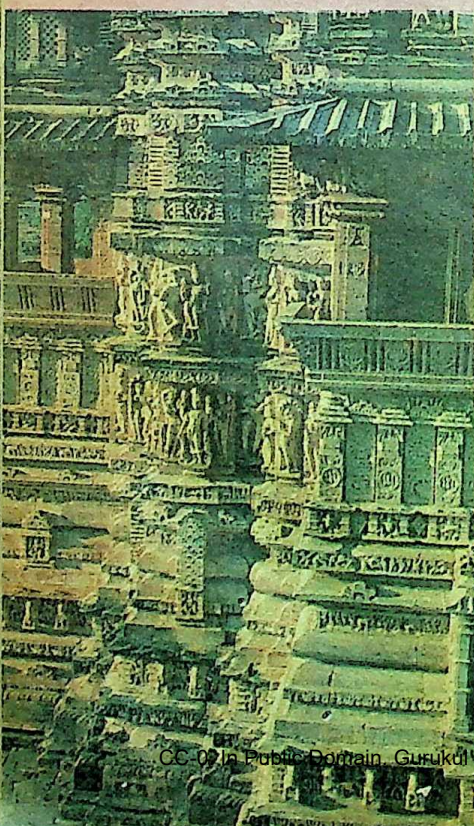
एक अन्य मंदिर की बाहरी दीवार पर उत्कीर्ण नारी के विविध रूप.

खजुराहो के शिल्पियों की रुचि और कलात्मक प्रतिभा का एक और नमूना—एक मंदिर की अलंकृत बाहरी दीवार.

नवयौवना की मूर्ति है, जो अपने दाहिने हाथ में गेंद पकड़ कर उसे मस्तक के ऊपर रखे है. इस नवयौवना का जूड़ा व कमर के आभूषण विशेष आकर्षक हैं.

एक दूसरा आकर्षक दृश्य है एक नायिका को बंदर से बचाते हुए नायक का, जो दाहिने हाथ में पकड़े गदा से बंदर को भगा रहा है और उस का बायां हाथ नायिका की कमर पर है. इस में नायिका नायक के कंधे पर अपने शरीर का भार डाल रही है.

साथ ही चुंबन, आलिंगन जैसी मुद्राओं में नायिकाओं तथा आभूषणों से सजी अप्सराओं आदि के विभिन्न दृश्यों के अलावा स्नान के बाद पीठ खुजलाती सुंदरी की मूर्ति भी उल्लेखनीय है.

पार्श्वनाथ मंदिर में भी कुछ उल्लेखनीय मूर्तियां हैं.

इन में एक मूर्ति है पैरों में अलता लगाती हुई अप्सरा की, जो खंभे से टिक कर खड़ी है. अप्सरा का पूर्ण विकसित वक्ष और उस पर पड़ी माला तथा बाईं ओर झुका उस का शरीर एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है.
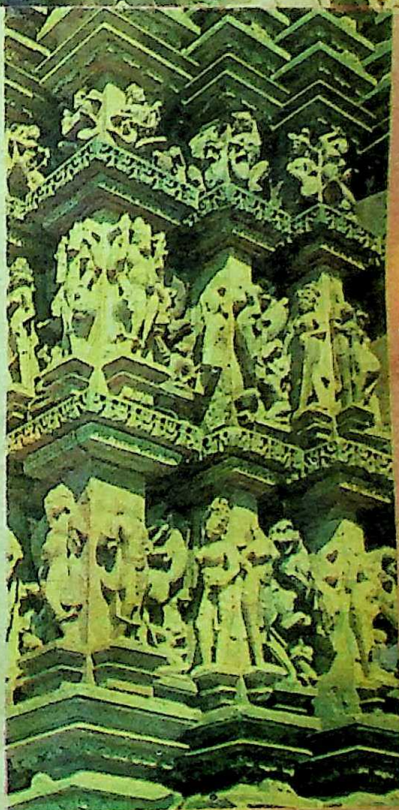
यहां पत्थर पर बैठ कर पैरों में घुंघरू बांधती हुई नृत्यांगना की मूर्ति भी बहुत स्वाभाविक सी है.

शिवपार्वती की प्रेममयी मुद्रा वाली मूर्ति में शिव पार्वती को बांहों में समेटे हुए हैं और पार्वती स्नान के बाद हाथ में दर्पण थामे शिव की ओर एक ऐसी मुद्रा में निहार रही है जो किसी छलने वाली स्त्री की भावभंगिमा होती है. शिवपार्वती की इस मूर्ति को खजुराहो के शिल्पियों ने अन्य मंदिरों में भी तराशा है.

पांव से कांटा निकालती स्थूल वक्ष वाली नायिका की मूर्ति खजुराहो शिल्प के उच्च स्तर का प्रतिमान है. नायिका के चेहरे पर पीड़ा जैसे भाव देख कर लगता है जैसे एक ग्रामीण बाला कहीं परस के जंगल में किसी कार्यवश गई हो और कांटे वाली झाड़ियों के पास पहुंच कर अनजाने में उस के पांव में कांटा चुभ गया हो.

सुरमा लगाती हुई संदरी और लबे
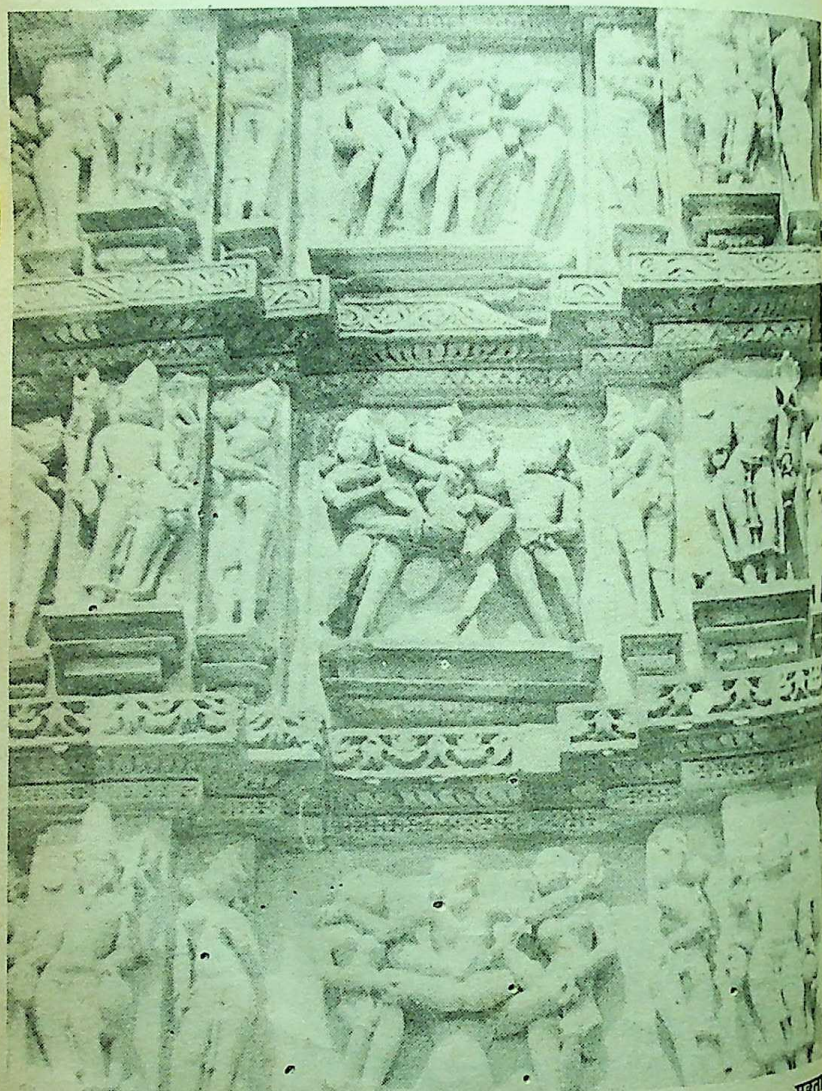
(दाएं) प्रमुख मंदिरों की एक और कड़ी—विश्वनाथ मंदिर : ग्रेनाइट व बलुआ पत्थर से बना पूर्वी समूह का यह मंदिर वास्तुकला व शिल्प की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है.

(बाएं) कंधारी महादेव मंदिर की मूर्तियों में स्त्रीपुरुष संसर्ग के विभिन्न आयाम प्रदर्शित किए गए हैं.
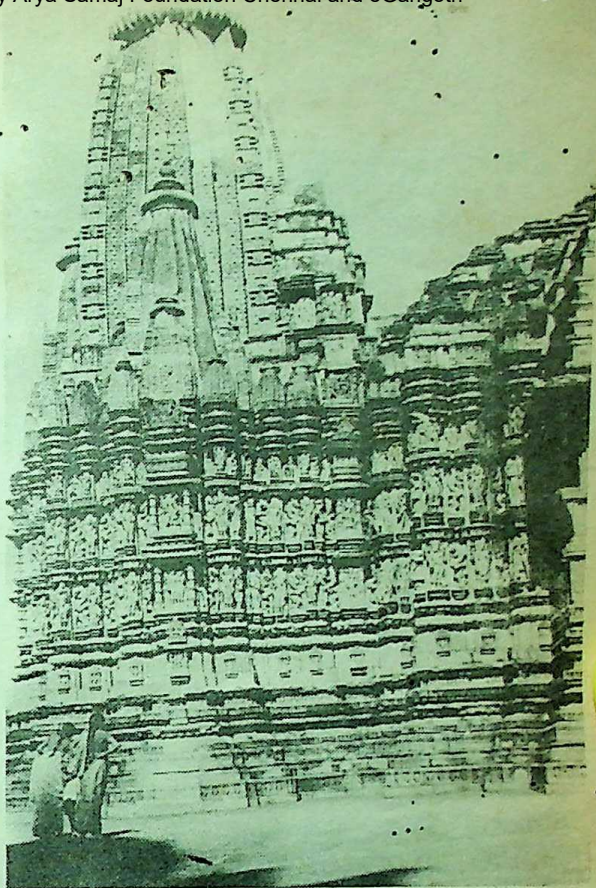
दाढ़ी वाली अग्नि की मूर्ति भी बरबस आकर्षित कर लेती है.

उपर्युक्त मंदिरों के अलावा अन्य मंदिरों में भी शिल्प के अनूठे नमूने मिलते हैं. विश्वनाथ मंदिर में स्नान कर के आई बाल झटकाती हुई नायिका की मूर्ति, पूजा को जाती सुंदरी, ग्रीक लोगों के समान लंबी नाक व घुंघराले बालों वाली अप्सरा, शरीर से चिपके भीगे वस्त्र पहने सुंदरी तथा बांसुरी बजाती अप्सरा आदि की मूर्तियां हैं.

देवी जगदंबा के मंदिर की विशिष्ट मूर्तियों में प्रेम व यौन संबंधों को प्रदर्शित करती मूर्तियां, एक पैर पर खड़े पुरुष से सहवास रत नायिका, अंगों को छिपाती दासी, खड़े हो कर स्त्रीपुरुष द्वारा संसर्ग के दृश्य, दर्पण में निहारती सुंदरी, अंगड़ाई लेती अप्सरा आदि की मूर्तियां हैं.

चुंबन करते हुए नायकनायिका व उदास चेहरे की सुंदरी की मूर्तियां चित्रगुप्त मंदिर में हैं.

दूल्हादेव मंदिर में बांसुरी बजाती व नृत्य करती नायिका, तार वाले वाद्य यंत्र बजाती स्त्री व दोनों हाथों में मशाल ले कर नृत्य करती नृत्यांगना की मूर्तियां मन मोह लेती हैं.

आदिनाथ मंदिर में आभूषणों से सजी शास्त्रीय नृत्य करती हुई नृत्यांगनाओं की सुंदर मूर्तियां हैं.

यदि आप व्यावसायिक स्तर पर एक सफल गायिका बनने का स्वप्न देख रही हैं तो निश्चय ही गायन में आप की असाधारण दिलचस्पी होगी. पर आप

महिला रोजगार

लेख • प्रतिनिधि

व्यावसायिक तो ... पर सफल हो सकेंगी या नहीं, यह बात ... आप की आवाज पर निर्भर है. अपनी आवाज के बारे में आप किसी खुशफहमी की शिकार न हों, बल्कि यह देखें कि वास्तव में आप की आवाज उन लोगों को आनंदित कर सकती है या नहीं, जो पैसा खर्च कर के गाना सुनते हैं.

बहुत सी महिलाएं अपनी अच्छी आवाज होने के बावजूद व्यावसायिक स्तर पर सफल नहीं हो पातीं. इस का प्रमुख कारण यही होता है कि उन में व्यावहारिक क्षमता और संपर्क बनाने की सूझबूझ का अभाव होता है. व्यापक संपर्कों के अभाव में इस क्षेत्र में सफल होने की कल्पना भी नहीं की जा

व्यावसायिक गायक को समारोहों में गाने का मौका मिले तो प्रसिद्धि के साथसाथ खास आर्थिक लाभ होता है.

गाने में दिलचस्पी व मधुर आवाज होने से सफल गायिका तो बना जा सकता है लेकिन इस क्षेत्र में व्यावसायिक सफलता के लिए कुछ अन्य बातों का जानना भी जरूरी है...

सकती.

आजकल [illegible] मंच, रेडियो और व्यावसायिक रिकार्डों की एक गायिका हैं प्रोमिला भट्टी. उन की शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक हुई थी. पहले वह जालंधर कैंट में एक स्कूल में अध्यापिका थीं. छःसात वर्ष तक उन्होंने वहां अध्यापन कार्य किया, साथ ही उन में गाने का शौक भी पलता रहा. इसी स्कूल के एक अध्यापक से वह गायन के विभिन्न पहलुओं की शिक्षा लेती रहीं. स्वभाव से वह इतनी शरमीली थीं कि औरतों से भी बात नहीं कर सकती थीं. पर उन के अंदर यह इच्छा बलवती होती गई कि 'चर्च में मैं खुद हारमोनियम बजा कर गा सकूं.' इसी इच्छा ने उन्हें अध्यापिका से गायिका बना दिया.

जो अध्यापक प्रोमिला भट्टी को गाना सिखाते थे, उन्होंने उन्हें पंजाब सरकार के जनसंपर्क विभाग में नौकरी दिला दी, जहां उन का काम गीत गाना और ग्रामीणों का मनोरंजन करना ही था.

सामाजिक दायरा बढ़ाएं

जनसंपर्क विभाग में आने के कारण उन की जानपहचान और संपर्कों का दायरा काफी बढ़ गया. इसी बीच उन की भेंट पंजाब के प्रसिद्ध लोक गायक हरबंस अरोड़ा से हुई, जिन्होंने उन्हें अपने साथ गाने का अवसर दिया. इस प्रकार उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों में गाने के लिए आमंत्रित किया जाने लगा.

गायिका के [illegible] में [illegible] लोकप्रिय होने [illegible] उन्होंने जन संपर्क विभाग [illegible] की नौकरी [illegible] दी, क्योंकि नौकरी करते [illegible] बाहर कार्यक्रमों में भाग नहीं [illegible] सकती थीं. साथ बाहर के कार्यक्रमों से होने वाली आमदनी नौकरी में मिलने वाली आय से कई [illegible] अधिक हो गई थी.

बातचीत के दौरान उन्होंने बताया, [illegible] प्रमुख रूप से पंजाबी के लोक गीतों [illegible] गायिका हूं. ब्याहशादियों, धार्मिक [illegible] सांस्कृतिक कार्यक्रमों, रेडियो, दूरदर्शन [illegible] पर मुझे गाने के लिए बुलाया जाता है. [illegible] बार मैं अकेले गाती हूं और कई बार हरबंस अरोड़ा और जोगिंदरकुमार साजन [illegible] प्रसिद्ध पंजाबी लोक गायकों के साथ भी [illegible] हूं. मेरे दस गीत इंडियन रिकार्ड कंपनी [illegible] रिकार्ड किए हैं, जिन की मुझे रायल्टी मिल[illegible] है."

प्रोमिला भट्टी द्वारा पंजाब [illegible] ज्योतिषियों, फकीरों, पंडितों के पाखंड [illegible] चोट करने वाले गाए हुए गीत काफी लोकप्रिय हुए हैं.

उन्हें अपने इस व्यवसाय से औसतन दोढाई हजार रुपए महीने की आमदनी [illegible] जाती है.

उन के अनुसार गायन में व्यावसायिक सफलता के लिए रेडियो व दूरदर्शन [illegible] सांस्कृतिक संस्थाओं और जन संपर्क में [illegible] जरूरी है. यहां के कार्यक्रमों से ख्याति मिलने पर, गायिका की विवाहों तथा अन्य समारोहों में भी मांग बढ़ जाती है. विभिन्न रिकार्ड कंपनियों से भी समयसमय पर संपर्क [illegible] रहना चाहिए.

इस व्यवसाय की एक अन्य तकनीकी विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा, "आवाज तो आप की ठीक ही होगी, तभी तो आप इस क्षेत्र में जाना चाहती हैं, पर इस के अलावा [illegible] और बातों पर विशेष रूप से ध्यान दें. एक यह कि आप के पास अच्छे गीतों का संकलन हो या कोई अच्छा गीतकार आप के साथ [illegible] दूसरी यह कि आप के पास साज और साजिंदे बढ़िया हों."

जलन से सताती खुजलाती घमोरियों की बेचैनी भूल जाइये।

नायसिल
अपनाइये!
शीघ्र आराम दिलानेवाला घमोरियों का पाउडर

२ पैक–
'ब्लू'
और
'सॅण्डलवुड'

नायसिल लाइये घमोरियों को भूल जाइये टॅल्कम पाउडर से भी कम क़ीमत में!
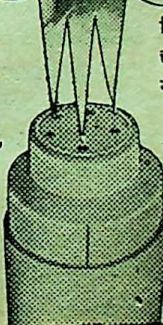
विशेष औषधियुक्त नायसिल हर दृष्टि से घमोरियों की रोकथाम करता है।

१. अत्यधिक पसीने को रोकता है।
२. पसीने को सोखता है।
३. दुर्गंध के कीटाणुओं को नाश करता है।
४. त्वचा को आराम पहुंचाता है।

Glaxo
nycil
PRICKLY HEAT POWDER
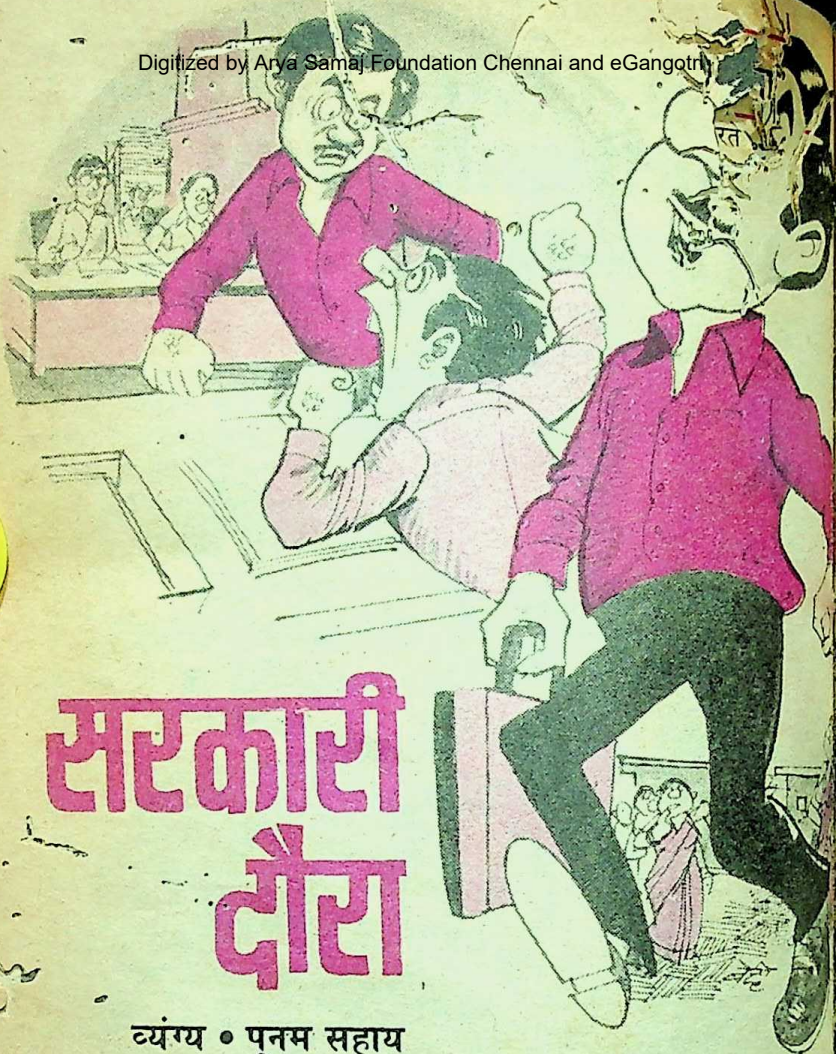
सरकारी दौरा

व्यंग्य • पूनम सहाय

केशवप्रसाद की प्रथम नियुक्ति पशुपालन चिकित्सा अधिकारी के रूप में एक छोटे से कसबे के ब्लाक कार्यालय में हुई थी. पशुओं का डाक्टर होने का उसे गर्व तो था, परंतु यह बात उसे दुखी करती थी कि वहां के देहाती उस की पीठ पीछे उसे घोड़ा डाक्टर कह कर संबोधित किया करते थे.

जिला मुख्यालय से ब्लाक करीब दो सौ किलोमीटर दूर था. आए दिन ब्लाक के खंड विकास अधिकारी, डाक्टर अथवा कृषि अधिकारी जिले का दौरा किया करते थे. सरकारी दौरा प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था. लोग यात्रा भत्ते के रूप में कमाई तो करते ही थे, परंतु केशवप्रसाद को यात्रा भत्ते से अधिक सरकारी दौरे के साथ लगी हुई प्रतिष्ठा का अधिक खयाल था. उस की बड़ी अभिलाषा थी कि वह भी कभी दौरे पर जाए. उस की पत्नी भी अकसर उसे इस के लिए कोंचती रहती थी.

केशवप्रसाद को दौरे पर जाने का अवसर ही नहीं मिला था. सरकार

पशुपालन [illegible] अवश्य खोल रखा था, पर इस क्षेत्र [illegible] वास्तविक कार्य नाम मात्र का ही था. [illegible] कभी [illegible] ही कोई खेतिहर गाय अथवा [illegible] ल [illegible] ज के लिए आता था. और इलाज के लिए उस के पास आवश्यक दवाइयां एवं उप[illegible] भी नहीं थे. एक आध बार केशवप्रसाद ने खंड अधिकारी से इस के लिए कहा भी, तो उस ने यह कह कर बात समाप्त कर दी कि जब सरकार से इस के लिए अनुदान आएगा, तभी कुछ खरीदा जा सकता है.

केशवदास सरकारी दौरे पर जाना राजपत्रित अधिकारी की पहचान समझता था, पर उस ने जब एक बार किसी तरह जोड़तोड़ कर के दौरा करने का अवसर पाया तो उस पर क्या बीती?

केशवप्रसाद सरकारी दौरे के बिना अपने को अपूर्ण राजपत्रित अधिकारी समझता था, आखिर उसे भी सरकारी दौरा करने का अवसर प्राप्त हो ही गया. सरकार ने पिछड़ी जनजाति के लोगों की सहायता के लिए एक नई योजना प्रारंभ की. इस योजना के अंतर्गत इन गरीब लोगों को सरकार की तरफ से कुछ विलायती सूअर और उन का चारा दिया जाना था.

खंड विकास अधिकारी ने पहले कृषि अधिकारी को जिला मुख्यालय से सूअर और उन का चारा लाने के लिए भेजने का निश्चय किया. केशवप्रसाद इस दुर्लभ अवसर को

जैसे ही सूअर ट्रंक में से निकल कर भागा, केशवप्रसाद भी उसे पकड़ने के लिए दौड़ पड़ा.

खोना नहीं चाहता था. उस ने खंड विकास अधिकारी से अर्ज की कि चूंकि यह पशुपालन विभाग का कार्य है, अतः उसे ही भेजा जाए.

"मुझे आप को भेजने में कोई आपत्ति नहीं है, परंतु आप नए हैं. आप को कठिनाई हो सकती है," खंड विकास अधिकारी ने कहा.

"कुछ कठिनाई नहीं होगी, श्रीमान, मैं सूअरों को कुशलतापूर्वक ले. आऊंगा," केशवप्रसाद ने कहा.

"आप भाड़े पर ट्रक का इंतजाम करने एवं मजदूरों से निवटने की दृष्टि से नए हैं. यह सब बड़े झंझट का काम है. कृषि अधिकारी का यह सब देखाभाला है. उन से यह आसानी से हो जाता."

परंतु केशवप्रसाद फिर भी नहीं माना. अंततोगत्वा खंड विकास अधिकारी ने उसे जाने की अनुमति दे दी. "ठीक है. आप ही चले जाइए. बहरहाल कृषि अधिकारी से आप पूछ लें कि ट्रक एवं मजदूर कहां से और किस दर पर मिलते है."

केशवप्रसाद ने छाती फुला कर अपनी पत्नी को यह शुभ सूचना दी. पत्नी भी फूली नहीं समाई. कुछ ही देर में उस ने सारे पड़ोस में यह बात सुना दी कि उस के पति अगले दिन दौरे पर जाएंगे. काफी रात गए तक तैयारी होती रही. पतिपत्नी दोनों अत्यंत प्रसन्न थे. शायद डा. सेठना एवं उन के सहयोगी वैज्ञानिक भी, पोखरान के सफल अणु विस्फोट के बाद इतने प्रसन्न एवं रोमांचित न हुए होंगे.

सवेरे केशवप्रसाद पशुपालन विभाग के एक चपरासी को साथ ले कर बस द्वारा जिला मुख्यालय रवाना हो गया. विदा के समय उस की पत्नी गर्व से गरदन अकड़ा कर अपने पड़ोसियों को इस तरह देख रही थी मानो उस का पति भारत का पहला व्यक्ति हो, जो चंद्रमा पर उतरने जा रहा हो.

जिला मुख्यालय में आ कर केशवप्रसाद का उत्साह धूमिल पड़ने लगा. उस ने समझा था कि [illegible] महत्वपूर्ण कार्य को करेगा. [illegible] कोई पूछने वाला भी नहीं था. जिस बाबू के पास उस के [illegible] थी, उस की कुरसी खाली [illegible] दूसरे बाबू से उस ने पूछा, "क्या यह साहब आज आए हैं?"

उस बाबू ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा. फिर ऐसे झुरझुरी ली जैसे कोई घिनौनी चीज देख ली हो. उस ने हाथ उठा कर कहा, "आए हैं. उन की कुरसी पर चद्दर नहीं दिखाई दे रही है क्या?"

केशवप्रसाद उखड़ गया, "ढंग से बात क्यों नहीं करते आप? यह नहीं कह सकते कि आए है, अभी बाहर गए हैं?"

"कौन सी मैं ने आप को गाली दे दी?" बाबू का स्वर उस से भी ऊंचा था, "एक तो मुझे परेशान किया और ऊपर से आंखें दिखा रहे हैं."

उन के शोरगुल से कमरे में बैठे लोगों पर सिर्फ इतना प्रभाव पड़ा कि आंख उठा कर देख भर लिया. फिर अपनेअपने काम में व्यस्त हो गए. शायद ऐसी घटना यहां के लिए आम बात थी.

केशवप्रसाद भिन्ना कर कुछ और कहने वाला था कि उस के चपरासी ने उस से वहां से चलने की प्रार्थना की. अपने पर संयम रख कर वह बाहर निकल आया. बाबू उसे जाते घूरता रहा.

बाबू की इंतजार में उसे दो घंटे बैठना पड़ा. इस बीच उस ने वहां के अधिकारी से भी बात की, परंतु उस ने निहायत बेदिली से कहा कि जब तक बाबू नहीं आता, तब तक तो इंतजार करना ही पड़ेगा. बैठेबैठे केशवप्रसाद को खीज होने लगी.

'कमाल है, यहां एक बाबू नहीं आए तो कोई काम ही नहीं हो सकता. मानो अदना सा बाबू ही सर्वेसर्वा हो. मैं राजपत्रित अधिकारी हूं, एक बाबू की प्रतीक्षा में कितनी देर बैठूं?' उस नें मन ही मन कहा.

प्रतीक्षा [illegible] और [illegible]पनी उपेक्षा से ऊब कर वह [illegible]: उसी अ[illegible]धकारी के पास गया तो उस के कक्ष [illegible] अ[illegible] ताला लगा हुआ मिला. दरबान [illegible] पूछ[illegible] पता चला कि साहब पास के गांव में निरी[illegible] पर गए हैं, शाम तक लौटेंगे.

विवश[illegible]श वह प्रतीक्षा करता रहा. दो घंटे बाद बाबू आया तो केशवप्रसाद ने अपने को प्रभावशाली बनाने का भरसक प्रयत्न करते हुए उस से बात की. बाबू ने उस की बात सुन कर उबासी लेते हुए कहा, "आप अपने कागज यहीं छोड़ दीजिए. अभी तो मैं बहुत व्यस्त हूं. कल मंत्री महोदय का जिला मुख्यालय में आगमन है. उस के लिए रिपोर्ट तैयार करनी है."

केशवप्रसाद क्रोध से जल गया. 'कमबख्त का घंटों से तो अतापता नहीं था और आते ही कहता है कि बहुत व्यस्तता है.' दिल तो किया कि एक झापड़ रसीद कर दे, परंतु अपने पर संयम रख कर उस ने कहा, "मुझे सामान के साथ वापस जाना है. आप फाइल पर काररवाई पूरी कर के आदेश ले लें."

बाबू ने उसे इस दृष्टि से देखा मानो उस ने कोई गाली दी हो.

"साहब, यहां एक से एक महत्वपूर्ण कार्य है. दम मारने तक की फुरसत नहीं है."

केशवप्रसाद ने अपने आवेश को दबा लिया. उस ने समझ लिया कि क्रोध में आने से कोई लाभ न होगा. अतः उस ने विनयपूर्वक काम निकालने का निर्णय लिया.

"आप की बात ठीक है. यह तो मुख्यालय है. यहां तो जिले भर का काम लगा रहता है. मैं तो सिर्फ यही कह रहा था कि मौका निकाल कर मेरी फाइल आगे बढ़ा दें."

बाबू के चेहरे के बल कुछ कम हुए. केशवप्रसाद ने फिर कहा, "इतनी गरमी है, इस छोटे से कमरे में आदमी और कितनी देर बैठ सकता है? चलिए, बाहर चाय पी कर आएं. कुछ ताजी हवा भी खा लेंगे."

चाय पिला कर, अनुनयविनय से केशवप्रसाद ने एक घंटे में अपना काम करवा लिया. शाम हो चली थी, अतः सरकारी विश्रामघर में रात गुजार कर दूसरे दिन सुबह फार्म से सूअर एवं चारा लिया तथा एक ट्र[illegible]

किसी तरह केशवदास और चपरासी ने मिल कर सरकारी सूअर को गंदे नाले में से निकाल ही लिया.

भाड़े पर किया.

सूअरों एवं चारे को लदवा कर केशवप्रसाद ट्रक पर बैठा तो दिन भर की हैरानी परेशानी को भूल गया. सरकारी दौरे के प्रति एक दिन पहले जो अरुचि उत्पन्न हुई थी, वह समाप्त हो गई.

ब्लाक तक की यात्रा करीब पांच घंटे की थी. तीन घंटे लगातार चलने के बाद एक कसबे में भोजन एवं आराम करने के लिए उस ने ट्रक रुकवा दिया.

एक होटल में वह और चपरासी खाना खाने लगे. गरमी बढ़ गई थी. वह बहुत प्रसन्न था. होटल का बेस्वाद खाना भी उसे स्वादिष्ट लग रहा था. कुछ लड़के ट्रक के करीब झुंड बनाए हुए गुलाबी, सफेद मोटेमोटे सूअरों को उत्सुकता से देख रहे थे. उन में से कोई जब यदाकदा उस की तरफ निगाह उठा कर देखता तो वह गर्व से फूल जाता था.

एकाएक शोर हुआ—"अरे... अरे एक सूअर भाग गया."

केशवप्रसाद भोजन छोड़ कर बाहर की तरफ लपका. उस ने देखा कि एक सूअर सड़क के किनारे भागा जा रहा है और उस के पीछेपीछे लड़के शोर मचाते दौड़ रहे हैं. उन के शोर से सूअर और तेजी से भागने लगा. केशवप्रसाद हतप्रभ रह गया कि क्या करे. सूअर ने रस्सी की जाली चबा कर निकलने लायक जगह बना ली थी और उसी में से हो कर बाहर कूद गया था. इस से पहले कि बाकी सूअर भी ट्रक से बाहर निकलते उस के चपरासी ने तुरंत ही होटल वाले से एक रस्सी ले कर छेद को बंद कर दिया.

केशवप्रसाद भी अब सूअर की तरफ दौड़ने लगा. सरकारी सूअर था. उस की पूरी जिम्मेवारी उसी के ऊपर थी. उसे किसी हालत में सूअर को खोना नहीं था. अपनी विचित्र हालत की परवाह किए बगैर उस ने लड़कों से चिल्ला कर कहा, "शोर मत मचाओ नहीं तो सूअर और भागेगा."

इतने में गली से दो कुत्ते भी सूअर के [illegible] भौंकते हुए [illegible]. केशवप्रसाद ने धड़कते दिल से देखा कि [illegible] सूअर बगल के गंदे नाले में [illegible] तक काफी लोग इस दिलचस्प दृश्य को देखने के लिए जमा हो गए थे. सूअर नाले में उतरते ही जैसे भूल गया कि वह विलायती सूअर है और आनंद में भर कर कीचड़ में लोट लगाने लगा. देखतेदेखते उस का विलायतीपन लुप्त हो गया और अब वह ऐसा लगता था जैसे उस की सात पुश्तें भारत की ही हों. कुत्ते नाले के ऊपर खड़े अभी तक भौंके जा रहे थे.

चपरासी भी दौड़ कर वहां जा पहुंचा. केशवप्रसाद ने बेबसी से उस की तरफ देखा.

चपरासी ने कहा, "साहब, सूअर को तो पकड़ना ही पड़ेगा. इस गंदे नाले में पकड़ना तो बहुत कठिन है. इसे बाहर निकालना पड़ेगा." फिर उस ने लड़कों की तरफ मुड़ते हुए कहा, "अरे बच्चो, सूअर को नाले से निकालो."

बच्चे एक साथ 'हुशहुश' का शोर मचाने लगे. परंतु सूअर पर इस का कोई प्रभाव नहीं पड़ा. "साहब, जब तक ये कुत्ते यहां हैं, सूअर इन के डर से बाहर नहीं निकलेगा," कहते हुए चपरासी ने पत्थर उठाया और कुत्ते को मारा. दोनों कुत्ते भाग कर दूर खड़े हो गए और वहीं से चपरासी के प्रति अपने उदगार व्यक्त करते रहे.

एक तमाशबीन ने कहा, "पत्थर नाले में फेंको तो सूअर बाहर निकल आएगा."

सुनते ही लड़कों के हाथों में पत्थर मानो किसी जादू से, एकाएक नजर आने लगे. इस से पहले कि वे सब पत्थर फेंकते केशवप्रसाद ने तेजी से आगे बढ़ कर दोनों हाथ उठा कर कहा, "पत्थर मत फेंको. सरकारी सूअर है, उसे चोट लग जाएगी."

"तब तो किसी को नाले में उतर कर सूअर को पकड़ना पड़ेगा," एक व्यक्ति ने कहा.

अब उस गंदे नाले में कौन उतरता? केशवप्रसाद को तो सुनते ही झुरझुरी आ गई. दुनिया भर की सारी गंदगी उसे नाले

में दिखाई दी. मन ही मन उस ने सूअर को गाली दी और अपने को कोसने लगा कि नाहक वह इस झंझट में पड़ा.

चपरासी ने लड़कों के झुंड से कहा, "जरा नाले से सूअर को उठा दो."

लड़के तैयार नहीं हुए. उन्हें बड़ा आनंद आ रहा था. उन को खीसें निपोरते देख कर केशवप्रसाद और जल गया और बड़बड़ाया, 'कमबख्त कैसे मजा ले रहे हैं. खुद भी तो इतने गंदे हैं कि नाले में उतर भी जाएं तो और अधिक गंदे नहीं हो सकते.' बहरहाल उस ने बड़ी विनम्रता से लड़कों से अनुरोध किया, "बच्चो, सूअर निकाल दो. देखो, मैं तुम सब को मिठाई खिलाऊंगा."

लड़कों की हंसी और तेज हो गई.

"साहब, कौन इस गंदे नाले में उतरेगा? सूअर आप का है. आप ही को उतरना पड़ेगा," एक व्यक्ति ने उपहास भरे लहजे में कहा. लोगों की हंसी गूंज उठी.

केशवप्रसाद अपने को विवश पा रहा था. उस ने चपरासी की तरफ देखा. चपरासी उस के मौन संदेश को समझ कनमनाया, "लेकिन, साहब..."

"कोई चारा नहीं है, उतरना ही पड़ेगा. बाद में यहीं नहा लेना," केशवप्रसाद ने सिर हिला कर कहा.

चपरासी ने भीड़ को संबोधित कर के कहा, "जो कोई नाले से सूअर निकालेगा, उसे 10 रुपए इनाम दिया जाएगा."

भला 10 रुपए के लिए लोग मनोरंजन के इस अनोखे दृश्य को, जो शायद उन के जीवन में पुनः न आए, भला क्यों छोड़ते. चपरासी ने पुनः अपनी बात को दोहराया. इस बार उस के स्वर में अनुरोध अधिक झलका. परंतु कोई मदद के लिए तैयार नहीं हुआ.

चपरासी भुनभुनाता हुआ अपने कपड़े खोलने लगा, सिर्फ जांघिए में वह नाले में उतरा. नाला उस की कमर तक भरा हुआ था. चपरासी ने सूअर के पास पहुंच कर उसे हड़काया. सूअर बजाए नाले में से निकलने के नाले में ही सीधा भागता गया. लोगों की हंसी कान फाड़ने लगी. चपरासी खिसियानी हंसी हंस कर केशवप्रसाद की तरफ देखने लगा.

"आप भी सूअर के आगे से उतरिए, साहब, तब सूअर बाहर निकलेगा," एक ने हंसते हुए कहा.

केशवप्रसाद की स्थिति बड़ी हास्यास्पद हो रही थी. उस ने दयनीय दृष्टि से चारों तरफ देखा कि शायद कोई सहायता करे. परंतु सब स्थिति से आनंद उठाने में ही विश्वास रखते थे. उस ने रुपए देने का लालच भी दिया, परंतु कोई सामने नहीं आया. हार कर उस को भी कपड़े उतार कर नाले में उतरना पड़ा. पहला पैर रखते ही घिन के मारे उबकाई आने लगी. आती हुई मतली को किसी प्रकार रोक कर वह नाले में उतर गया.

दस मिनट तक वहां के तमाशबीन दिल खोल कर हंसते रहे. ऐसा आनंद उन्हें शायद फिर नसीब नहीं होता. कीचड़ से लथपथ केशवप्रसाद और चपरासी ने सूअर को खींचखींच कर निकाला और ट्रक पर बड़ी मुशकिल से चढ़ाया.

सड़क के किनारे नल पर दोनों मलमल कर नहाते रहे. काफी नहा लेने के बाद भी केशवप्रसाद को लगा कि गंदगी चिपकी हुई है. अपने शरीर से उसे खुद घिन हो रही थी. ट्रक पुनः चल पड़ा था. अब उसे घर पहुंचने की शीघ्रता नहीं महसूस हुई. वहां पहुंच कर उसे एक बार फिर उपहास का पात्र बनना था. ट्रक वाले तो नमकमिर्च लगा कर बताएंगे. लज्जा एवं क्षोभ से वह गड़ा जा रहा था. सरकारी दौरा करने का शौक तो नाले में उतरते ही समाप्त हो गया था. ●

रूसी साम्यवाद पश्चिमी संगीत से परास्त हो रहा है

रूसी युवकों के एक प्रमुख पत्र 'कोमसोनोलस्क्या प्रावदा' में प्रकाशित एक लेख में, पश्चिम के पाप संगीत के प्रति रूस के युवा वर्ग के बढ़ते रुझान की तीव्र निंदा की गई है और इसे साम्यवाद के सिद्धांतों के खिलाफ पश्चिमी देशों का षड्यंत्र बताया गया है.

पिछले कुछ वर्षों से पश्चिमी देशों के पाप संगीत के प्रति रूसी युवकों की रुचि काफी बढ़ गई है और स्कूल, कालिज, विश्वविद्यालय, रेस्टोरेंट यहां तक कि दुकानों में भी पाप संगीत की धुनें बजती और इस पर थिरकती युवकयुवतियां देखी जा सकती हैं.

उपर्युक्त पत्रिका में छपे 'डार्क साइड आफ डिस्को' शीर्षक लेख में पाठकों के पत्रों का हवाला देते हुए लिखा गया है कि यह संगीत अर्थहीन और बेतुका है. क्लबों और नृत्य हालों को इस का बहिष्कार करना चाहिए.

फरवरी 1981 में स्वीडन के 'अबा' नाम के राक संगीत समूह के कार्यक्रमों और इस पर आधारित फिल्म के प्रदर्शन के बाद यहां तेजी से फैले डिस्को संगीत को रूसी संस्कृति के लिए काफी खतरनाक समझा गया. यह फिल्म रूस में खूब चली थी और अब रूस में इस के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया गया है.

उपर्युक्त लेख में छपे पत्रों में बहुत से पाठकों ने तो पश्चिमी देशों की ऐसी फिल्मों के भी रूस में आने पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है जो पाप संगीत से भरपूर होती हैं.

रूसी लोग युवकों के पश्चिमी संगीत की तरफ झुकने से ही परेशान नहीं हैं बल्कि वहां अब विदेशी वस्तुओं के प्रति भी आकर्षण बढ़ रहा है. इस से रूसियों के सिद्धांत और उन की खुशहाली की पोल खुल जाती है.

रूस में यूरोपीय देशों के कपड़े और प्लास्टिक की बनी चीजों के प्रति लोगों का रुझान बढ़ गया है. और अब मास्को में रूसी महिलाएं विदेशी दूतावासों की महिलाओं से रूसी चीजें दे कर विदेशी चीजें खरीदने की बातचीत करती हुई देखी जाती हैं.

स्वीडन के नशेबाज चोर

स्वीडन के शहरी क्षेत्रों के दुकानदार इन दिनों काफी परेशान हैं. यों कहने को तो उन्हें अपनी दुकानों से काफी आय होती है लेकिन उन की इस आय को अब ऐसे चूहे खाने लगे हैं जिन के खिलाफ
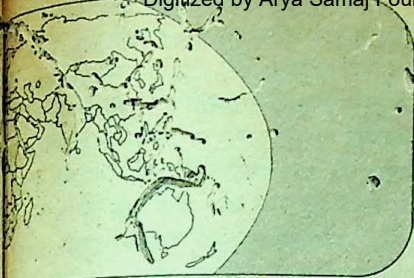
नवयुवकों में बढ़ते पश्चिमी संगीत के प्रति रुझान से परेशान रूस. नशेबाज चोरों से दुखी स्वीडन के दुकानदार. अफगानिस्तान में हुई पीली बरसात का रहस्य. घाना के बाजारों पर महिलाओं का बढ़ता असर. 1983 को अंतरराष्ट्रीय समलैंगिक वर्ष बनाने की योजना और उपग्रहों के जरिए दुर्घटनाएं रोकने के प्रयासों का विस्तृत विवरण...

दुकानदार कोई भी काररवाई नहीं कर पाते हैं. ये चूहे सचमुच के चूहे नहीं बल्कि ये हैं मादक द्रव्यों के शौकीन युवक.

स्वीडन में पिछले एक दशक में दुकानों से कीमती सुंदर माल चुराने की घटनाओं में असाधारण वृद्धि हुई है और पुलिस इन माल

पाप संगीत के पीछे यह दीवानापन आज रूस में जगहजगह दिखाई देने लगा है.

चुराने वालों को छोटे-बड़े समझती है. स्वीडन में माल चुराना एक प्रकार से फायदेमंद उद्योग बन गया है, 1970 में दुकानों से माल चुराने की 22,000 घटनाएं घटी थीं और 1980 में 35,000 घटनाएं प्रकाश में आईं. 1980 से 1982 तक इस प्रकार की घटनाओं में 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई है.

यहां के दुकानदारों के संगठन ने अनुमान लगाया है कि चोरी की घटनाओं से फुटकर दुकानदारों को 1981 में ही करीब 2,500 मिलियन डालर की हानि हुई है. इस रकम से दुकानदारों के कर्मचारियों का 50 प्रतिशत वेतन आसानी से बढ़ाया जा सकता था.

चोरी की घटनाओं का विश्लेषण करने वाले विशेषज्ञों का मत है कि दुकानों से माल चुराने वाले लोग दो प्रकार के हैं. एक तो तरहतरह की चीजों के शौकीन लोग और दूसरे वे लोग जो मादक द्रव्यों का उपयोग करने के आदी हैं. ये लोग दुकानों से चीजें चुरा कर उन के बदले या उन्हें बेच कर अपने लिए नशीले पदार्थ जुटाते हैं.

चोरी की बढ़ती घटनाओं से परेशान हो कर दुकानदारों ने अपनी दुकानों में तरहतरह के यंत्र लगवाए हैं, ताकि सामान चुराने वाला व्यक्ति पकड़ा जा सके. लेकिन नशेबाज लोग इन यंत्रों को भी धोखा दे जाते हैं.

कुछ चोर तो बड़ी विचित्र हरकतें भी करते हैं. वे किसी दुकानदार के माल जैसे चमड़े की जाकेट, बढ़िया पैंट या कोट आदि को ब्लैड से काट कर दुकानदार को वापिस भिजवा देते हैं. इस तरह की हरकतों से बेचारे दुकानदार हर साल करीब एक लाख डालर का नुकसान उठाते हैं.

अफगानिस्तान में पीली बरसात

पिछले दिनों अफगानिस्तान के उन हिस्सों में जहां बागी अफगानी लोग छिपे हुए हैं, आकाश से पीली वर्षा हुई. पहले इस क्षेत्र में कुछ हवाई जहाजों ने उड़ान भरी और इस के साथ ही एक प्रकार की गैस आकाश में छा गई. हवाई जहाजों के गुजरने के बाद आसमान से पीली पीली पानी की बूंदें टपकने लगीं. अमरीका ने इस पीली वर्षा को रूस द्वारा किए गए विषैली गैस परीक्षण का अंग बताया है. इस से वहां के लोगों को उल्टियां हुईं, सिरदर्द हुआ तथा अनेक लोगों की मौतें हुई हैं.

अमरीका के गुप्तचर विभाग द्वारा 22 मार्च, 1982 को जारी की गई एक रिपोर्ट में रूस पर यह आरोप लगाया गया है कि उस ने पिछले अनेक वर्षों में हुई अनेक झड़पों में विषैली गैसों का इस्तेमाल कर के 600 लाओस, 3,000 अफगान और 1,000 कंबोडियन लोगों को मार दिया है.

1925 में जेनेवा में हुए एक सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अनुसार अब विषैली गैस के उपयोग पर पाबंदी लगी हुई है. लेकिन इस समझौते में इस तरह की गैसों को इकट्ठा करने के बारे में कुछ नहीं कहा गया है.

47 साल बाद 1972 में जीवविज्ञान कल्याण सम्मेलन में रूस व अमरीका ने इस तरह की घातक गैसों पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे.

इस के बाद रूस और अमरीका में रसायनिक और जीवाणु हथियारों में कमी करने, न बनाने या नष्ट करने पर कोई बातचीत नहीं हुई. हालांकि 1976 में दोनों देशों ने आपस में बातचीत शुरू की थी, लेकिन 1980 तक इस विषय में कोई प्रगति नहीं हुई और दोनों देश एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप ही लगाते रहे.

हाल ही में अमरीका के सुरक्षा केंद्र ने बताया है कि अमरीका के पास 1,30,000 टन नर्वज गैस हथियार हैं. मास्टर्ड गैस और दो प्रकार की नर्वज गैसों जैसे दमघोंटू हथियारों का अनुमानित भंडार 4,00,000 टन है जब कि अमरीका ने 1969 में ही रासायनिक हथियार नहीं बनाने की घोषणा की थी.

अमरीका के सुरक्षा और अनुसंधान

...नीनियरिंग में [illegible] का कहना है कि इस समय रासायनिक युद्ध में भाग लेने के लिए रूस के पास सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षित सेनाएं हैं. यह भी कहा जाता है कि रूस की छः सैनिक परीक्षण संस्थाओं में रासायनिक युद्ध की शिक्षा दी जाती है. रूस की सेना में 6[illegible],000 से 1,00,000 तक रासायनिक हथियार विशेषज्ञ भी हैं.

अब अमरीका का रक्षा संगठन रासायनिक हथियारों पर 1982 में 53,20,00,000 डालर और 1983 में 70,60,00,000 डालर खर्च कर के रूस के मुकाबले में रासायनिक हथियार बनाने की योजना पर अमल कर रहा है.

घाना के बाजार बन गए हैं अब नए शिक्षा केंद्र

अफ्रीकी देशों के बाजारों में ज्यादातर महिलाएं ही तरहतरह का सामान बेचती हैं. पुरुष इन बाजारों में कम ही नजर आते हैं. जहां पांच 10 औरतें इकट्ठी होती हैं वहां तरहतरह की बातें होना तो स्वाभाविक है और जहां सामान बेचने वाली महिलाएं एकत्रित होती हैं वहां घरेलू बातों से ले कर बेचने वाले सामान के गुण दोषों की चर्चा होना भी आम बात है. अफ्रीकी देशों के

महिला खरीदारों और महिला विक्रेताओं से भरे घाना के दो बाजारों के दृश्य : क्या वास्तव में ये बाजार महिलाओं में जागृति लाने के आधार बन सकते हैं?
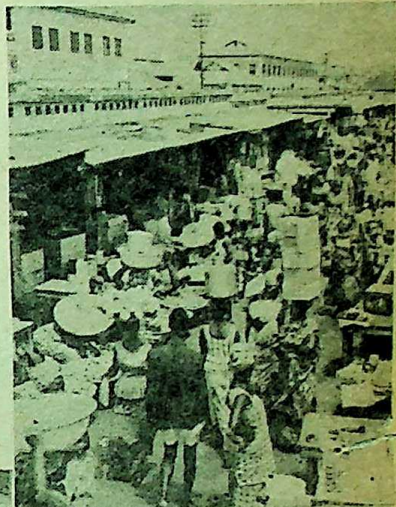
बाजार में इन दिनों महिलाएं देश विदेश में बने सामानों की विशेषताओं को परख कर अब धड़ल्ले से सामान बेचने लगी हैं.

पिछले दिनों अफ्रीका के देश घाना की सरकार ने अपने देश की महिलाओं में जागृति पैदा करने की एक नई योजना बनाई है. इस योजना के अंतर्गत घाना सरकार अब महिलाओं के बाजार में सूचना केंद्र, मनोरंजन गृह और शिशु केंद्र खोलने की तैयारी कर रही है. सरकार ने परिवार नियोजन को भी अब इसी बाजार के माध्यम से फैलाने का निर्णय किया है.

घाना सरकार ने महिलाओं के बाजार में कक्षाएं चलाने का भी निर्णय किया है, जहां उन्हें लिखनेपढ़ने व हिसाबकिताब रखने की शिक्षा दी जाएगी. इस से महिलाएं दुकानदारी में काफी तेज हो जाएंगी.

घाना की तरह ही अफ्रीका के अन्य देशों– जांबिया, तंजानिया, नाईजीरिया और बुरूंडी में भी इस तरह की योजनाएं लागू करने की तैयारी की जा रही है.

अब उपग्रह दुर्घटनाएं रोकेंगे

अमरीका, रूस, कनाडा और फ्रांस ने एक संयुक्त उपग्रह कार्यक्रम में शामिल होने का निश्चय किया है.

इस कार्यक्रम के अंतर्गत इस वर्ष गर्मियों में एक उपग्रह छोड़ा जाएगा जो भविष्य में हवाई दुर्घटनाओं की जांचपड़ताल करने, मृत और जीवित यात्रियों की सही स्थिति जानने और हवाई दुर्घटनाओं में समुद्र में गिरे लोगों को तात्कालिक मदद में सहायक होगा.

इस संयुक्त उपग्रह कार्यक्रम में शामिल देशों के दुर्घटना विशेषज्ञों का मत है कि इस तरह की व्यवस्था के बाद हवाई दुर्घटना में मरने वालों को बचाया जा सकेगा.

साथ ही पश्चिमी देशों के हवाई दुर्घटना विशेषज्ञों का मत है कि उपर्युक्त कार्यक्रम के अंतर्गत छोड़ा गया उपग्रह हवाई जहाजों से संपर्क साध कर दुर्घटना स्थल व पानी में डूबे जहाज की सही स्थिति का पता लगा सकेगा और तब दुर्घटना स्थल पर मदद शीघ्र पहुंचाई जा सकेगी.

रूस के समुद्र विशेषज्ञों का कहना है कि हर साल जहाजों के पानी में डूबने से 350 से ले कर 400 दुर्घटनाएं होती हैं. इन में से बहुत सी दुर्घटनाएं तो ऐसी होती हैं जिन में कर्मचारियों का ही नहीं जहाज तक का पता नहीं लगता है.

अब इस कार्यक्रम के अंतर्गत रूस जुलाई के आसपास एक बचाव उपग्रह छोड़ेगा. इस के बाद अमरीका, फ्रांस और कनाडा भी 1982 के अंत तक अपनेअपने उपग्रह छोड़ेंगे. ये सभी उपग्रह अंतरिक्ष में अलगअलग दूरियों पर घूमते हुए समुद्र व हवा में अचानक दुर्घटनाग्रस्त हो जाने वाले जहाजों पर निगरानी रखेंगे और दूसरे देशों को इस की सूचना देंगे.

1983 अंतरराष्ट्रीय समलैंगिक वर्ष होगा?

हाल ही में समलैंगिकता समर्थक लोगों के संगठनों का सम्मेलन फ्रांस के स्ट्रासबर्ग में हुआ, जिस में अनेक प्रकार के प्रस्ताव पेश किए गए. सम्मेलन में यूरोप के देशों की सरकारों से समलैंगिकता को समुचित महत्त्व देने, इस में सुधार करने को कहा है तथा 1981 में, यूरोप के देशों के समलैंगिक संगठनों की समिति द्वारा समलैंगिकता के प्रचारप्रसार के लिए पास किए गए एक प्रस्ताव की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है.

गत वर्ष यूरोप के देशों में समलैंगिकता समर्थक संगठनों ने सरकार से जल्द से जल्द समलैंगिकता के अनुकूल कानून बनाने और सरकारों द्वारा इसे दंडनीय अपराध की श्रेणी से निकालने की जोरदार मांग की थी.

इस सम्मेलन में करीब 27 देशों के

समलैंगिकता समर्थक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और विश्व स्वास्थ्य संगठन से समलैंगिकता के महत्त्व को बताने के लिए सिफारिशें कीं तथा समलैंगिकता की ओर जनमानस का ध्यान आकर्षित करने के लिए वर्ष 1983 को समलैंगिकता वर्ष घोषित करने की जोरदार मांग की.

यूरोप के देशों की सरकारें चाहे समलैंगिकता के पक्ष में कोई उदार कानून न बनाएं पर ब्रिटेन, पश्चिमी जरमनी, कनाडा और फ्रांस में बड़ेबड़े राजनीतिबाज इस से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं. यही नहीं अब समलैंगिक विवाह होने की घटनाएं भी सामने आने लगी हैं.

रूस तथा पूर्वी यूरोप के कुछ देशों में समलैंगिकता को अब भी अपराध की श्रेणी में गिना जाता है और समलैंगिक क्रिया करने के दोषी पाए गए व्यक्ति के लिए यहां पांच साल की कैद का प्रावधान है.

ब्रिटेन में समलैंगिकता के पक्ष में प्रचार किया जाता है. पिछले दिनों ब्रिटिश संसद में स्काटलैंड के लिए एक कानून बनाते समय समलैंगिकता का सवाल उठा था और संसद के सदस्यों को अपनी अंतरात्मा के अनुसार इस के पक्ष में मत देने की पूरी छूट दे दी गई थी.

"इस बार भाषण में यह शब्द 'हमें हर क्षेत्र में हर दिशा में भरपूर उत्पादन करना चाहिए' काट देना,क्योंकि पिछली बार परिवार कल्याण मंत्रालय ने इस पर कड़ी आपत्ति की थी."

आतंक मासिक टिकट यात्रियों का

लेख • विवेक सक्सेना

पिछले कुछ समय से रेलों में बढ़ते अपराधों के बारे में सभी चिंता व्यक्त करने लगे हैं. चलती रेलगाड़ियों में लूटपाट की घटनाएं व इन का प्रतिरोध करने वाले यात्रियों की हत्या कर दिए जाने के समाचार अखबारों में आए दिन पढ़ने को मिलते हैं. ऐसी घटनाओं के पीछे निश्चि... [illegible] हाथ होता है जो अपरा... हैं.

पर पिछले लगभग एक दशक से ऐ... सफेदपोश अपराधियों का गिरोह, रेलों ... सफर करने वाले निर्दोष यात्रियों को अप...
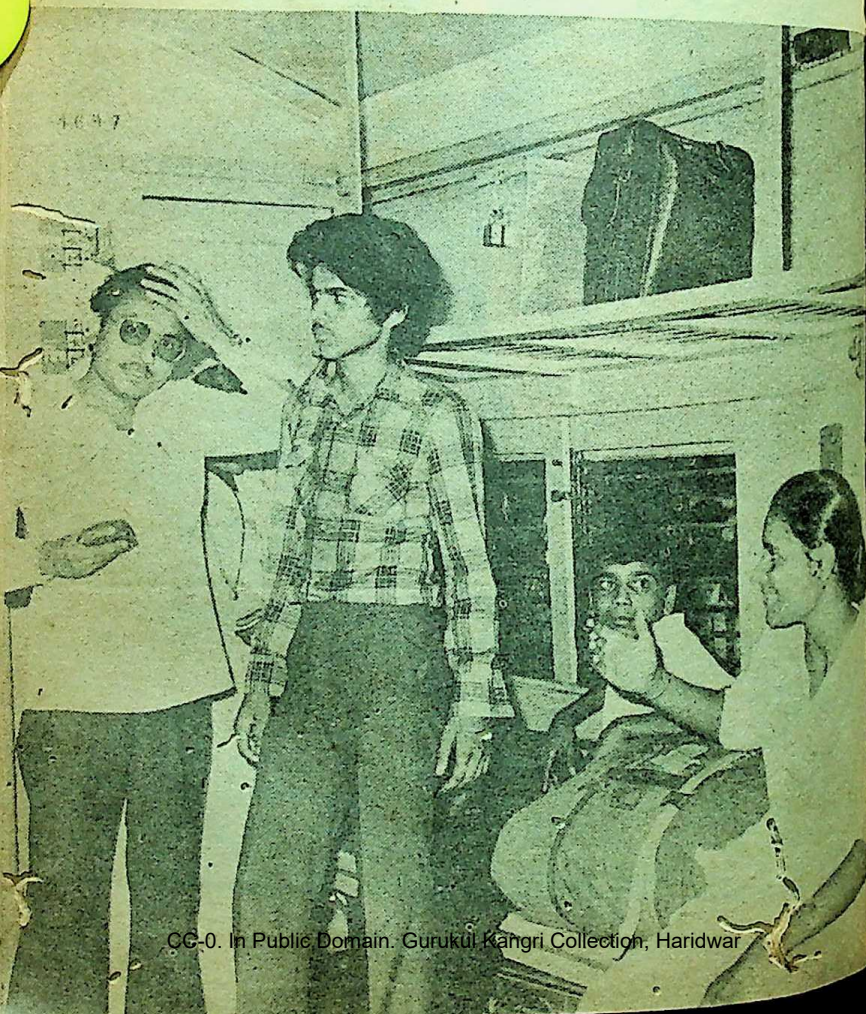
मासिक टिकट यात्री रेल के आरक्षित डब्बों में घुस कर सामान्य यात्रियों को तरहतरह से परेशान करते हैं, इतना ही नहीं वे रेलवे पुलिस या अधिकारियों तक की परवाह नहीं करते. ऐसी स्थिति में उन पर कैसे काबू पाया जाए?

शिकार बनाता चला आ रहा है, जिस की ओर आज तक किसी का ध्यान नहीं गया. इन सफेदपोश अपराधियों के विरुद्ध कोई यात्री आवाज उठाने की हिम्मत नहीं कर सकता और अगर इन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज भी करवाई जाए तो उस पर कोई काररवाई नहीं होती है.

यह सफेदपोश अपराधी हैं— रेलवे के मासिक टिकट से रेलों में यात्रा करने वाले यात्री. यह कहना उचित नहीं होगा कि सभी मासिक टिकट वाले यात्री इस श्रेणी में आते हैं, पर इस में बहुमत ऐसे ही यात्रियों का है. शेष यात्री खुद भले ही कुछ हरकतें न करते हों, पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वह इन का समर्थन जरूर करते हैं. इन पास वाले यात्रियों में शायद ही कोई ऐसा यात्री हो जो अपने साथी की बेहूदा हरकतों का विरोध करता हो.

प्रतिदिन मासिक पास से यात्रा करने वाले हजारों यात्री विभिन्न नगरों में अपने काम से आतेजाते हैं. जैसे गाजियाबाद, मेरठ से लोग दिल्ली आतेजाते हैं. कानपुर से लखनऊ तथा दिल्ली से पानीपत आदि शहरों में लोग नियमित रूप से आतेजाते हैं. इन में विद्यार्थी, व्यापारी व नौकरी पेशा लोग होते हैं. इन की औसत आयु 20 से 40 वर्ष के बीच होती है.

यह मासिक टिकट यात्री यह मान कर चलते हैं कि रेलगाड़ी उन के अपने घर की है. रेलवे द्वारा इन के लिए विशेष गाड़ियां चलाए जाने तथा अन्य मेल व एक्सप्रेस गाड़ियों में अतिरिक्त डब्बे लगाए जाने के बावजूद ये आरक्षित डब्बों में घुस आते हैं और उस में सफर कर रहे यात्रियों को तरहतरह से परेशान करते हैं.

ये यात्री सुबह व शाम की गाड़ियों में यात्रा करते हैं क्योंकि इन का स्कूल, दफ्तर या बाजार 10 बजे से खुलता है. सायं पांच बजे से ये लोग वापस होना शुरू कर देते हैं. इन में
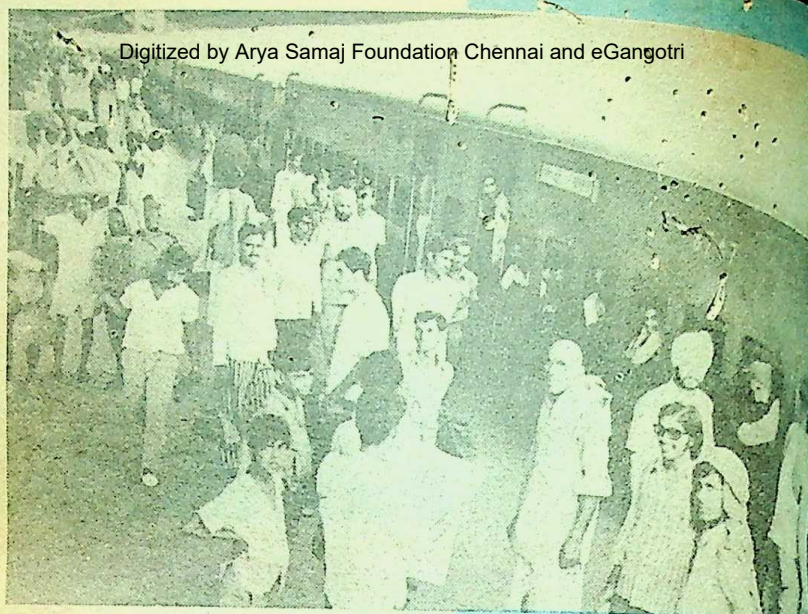
ज्यादातर यात्री पढ़ेलिखे व मध्यमवर्ग के होते हैं. आरक्षित डब्बों में इन यात्रियों को यात्रा करने की छूट न होने के बावजूद ये उन में ही यात्रा करते हैं. जब मन चाहे जंजीर खींच देना, इंजन के आगे बैठ कर यात्रा करना आदि इन की रोजमर्रा की जिंदगी का अंग बन चुका है. जैसे इन पर रेलवे का कोई नियम कानून लागू ही नहीं होता...

ये कैसी असभ्य हरकतें?

अन्य यात्रियों के साथ लड़ाईझगड़ा करना, उन के सामान के साथ छेड़छाड़ करना, महिला यात्रियों के साथ अभद्र व्यवहार करना इन के लिए आम बात है.

ये यात्री छोटेछोटे दलों में बंटे होते हैं. गाड़ी के स्टेशन पर रुकते ही ये लोग उस में चढ़ जाते हैं. फिर उस डब्बे के अंदर असभ्यता का नंगा नाच होता है.

एक बार लेखक एक्सप्रेस रेलगाड़ी काशी विश्वनाथ द्वारा दिल्ली से बरेली जा रहा था. उस के साथ ही टू टियर के आरक्षित डब्बे में बैठा एक यात्री कुछ सामान लेने के लिए स्टेशन पर उतरा. इतनी देर में 8-10 लोग डब्बे में घुस आए और डब्बे में पहले से बैठे अन्य यात्रियों के साथ जबरन बैठ गए. दो लोग उस की सीट पर भी बैठ गए.

जब वह सामान ले कर डब्बे के अंदर आया तो कुछ देर तक इस इंतजार में अपनी सीट के पास चुपचाप खड़ा रहा कि शायद वे लोग खुद उस की जगह खाली कर देंगे पर जब उन्होंने जगह खाली नहीं की तो उस ने उन से कहा कि वह सीट उस की है पर उन लोगों ने उस की बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया. जब उस ने कई बार अपनी बात दोहराई तो वे गुस्से में कहने लगे, "अबे सुन तो लिया कि तेरी सीट है. अब क्यों हमारे कान खा रहा है... हम तेरी सीट पर से नहीं उठेंगे..."

इस पर वह यात्री बड़ी नम्रता से बोला कि उसे वाराणसी तक जाना है इसी लिए उस ने सीट आरक्षित करवाई थी. इस पर उन मासिक टिकट वाले यात्रियों ने उसे डांटते हुए कहा, "तुम्हें यह कहते हुए शर्म नहीं आती कि हम सीट खाली कर दें? आखिर सारी रात तुम आराम से जाओगे, अब तुम्हारी यही सजा है कि बरेली तक तुम खड़े हो कर यात्रा करो."

अपनी सीट हथियाने की शिकायत

करने वह यात्री टिकट निरीक्षक के पास गया पर उस ने भी कुछ कर सकने में असमर्थता जाहिर कर दी. तभी वहां रेलवे पुलिस के दो सिपाही भी आ गए. उस यात्री ने उन से भी यह बात कही तो उन्होंने बजाए मासिक टिकट यात्रियों से कुछ कहने के उस यात्री से ही कहा, "इस में परेशान होने की क्या बात है. अरे, बरेली के बाद बैठ जाना." वह यात्री मन मसोस कर रह गया.

गाड़ी प्लेटफार्म पर लग गई, पर इन्हें चढ़ने की कोई जल्दी नहीं क्योंकि ये तो गाड़ी के चलने पर आरक्षित या प्रथम श्रेणी के डब्बे में घुस ही जाएंगे.

आप की सीट आरक्षित है तो हुआ करे, अब जब तक ये सफर करें आप इसी तरह सीट खाली होने का इंतजार कीजिए.

जब अन्य यात्रियों ने उन मासिक टिकट यात्रियों के इस व्यवहार की आलोचना की तो वह अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकते ही दूसरे डब्बों से अपने और साथियों को बुला लाए. उन लोगों ने अपनीअपनी कमीजों की आस्तीनें चढ़ा कर यात्रियों को गालियां देना व डरानाधमकाना शुरू कर दिया. उन में से एक व्यक्ति बोला, "कौन साला बकबक कर रहा था. बहुत दिनों से हाथों में खुजली हो रही थी, आज हाथों का कमाल दिखाना ही पड़ेगा." इस पर उस यात्री के साथसाथ बाकी सब यात्री भी सहम गए.

विरोध किया शामत आई

यह मासिक टिकट यात्री दूसरे यात्रियों की न केवल सीट पर कब्जा करते हैं बल्कि जबरन उन की सिगरेट पीना, पत्रपत्रिकाएं पढ़ने लगना, सुराही में से पानी पी लेना, उसे फोड़ देना, गाड़ी में घुसते ही सिगरेट पी कर उस का धुंआ यात्रियों के मुंह पर छोड़ना, किसी भी दूसरे यात्री की अटैची या बक्से को बीच में रख कर उस पर ताश खेलने लगना,

अन्य यात्रियों का खाना खा जाना आदि हरकतों से भी उन्हें परेशान करते हैं. इन का विरोध कर सकना अकेले या बीवी बच्चों के साथ यात्रा करने वाले यात्री के लिए संभव नहीं होता क्योंकि अगर झगड़ा हो जाए तो यह सभी मासिक टिकट यात्री एक हो कर विरोध करने वाले दूसरे यात्री की जम कर पिटाई करते हैं. क्योंकि इन की रेलवे कर्मचारियों व पुलिस वालों से मिली भगत होती है.

आरक्षित सीटों पर जबरन कब्जा

लखनऊ से बंबई जाने वाली गाड़ियों में कानपुर व लखनऊ के लिए ऐसे ही यात्री चढ़ जाते हैं. इन में अधिकांश बैंक कर्मचारी होते हैं. यह लोग प्रथम श्रेणी के डब्बे तक में जबरन घुस आते हैं. अगर किसी ने आरक्षित डब्बे या प्रथम श्रेणी के डब्बे का दरवाजा अंदर से बंद करने की कोशिश की तो फिर उस की शामत आ जाती है. यह लोग किसी भी तरह से अंदर घुस कर उस की पिटाई करते हैं.

इसी तरह रात को झेलम एक्सप्रेस में दिल्ली से पानीपत व दूसरे निकटवर्ती शहरों

को जाने के लिए मासिक टिकट यात्री आरक्षित डब्बों में जबरन घुस कर सोते हुए यात्रियों को उठा कर बैठा देते हैं. चाहे महिला यात्री हो या पुरुष, ये किसी का जरा भी लिहाज नहीं करते हैं. उन के साथ ही चिपक कर बैठ जाते हैं. इन में से कुछ यात्री ऊपर की बर्थ पर बैठ कर सामने की बर्थ पर अपने पैर रख देते हैं जो कि सोते हुए यात्री के मुंह से टकरा जाते हैं, कोई अपने जूते खोल कर पंखों के ऊपर रख देता है तो कोई बदबूदार मोजे सोते हुए यात्री की नाक से ही सटा देता है.

इन के पास अपनी इन हरकतों को जायज बताने के लिए एक ही उत्तर होता है. कि 'हमें तो रोज ही यात्रा करनी पड़ती है इसलिए हम तो आराम से जाएंगे. आप तो सारी रात आराम से यात्रा करेंगे इस लिए आप को कुछ देर तकलीफ सहन करनी चाहिए.'.

टिकट निरीक्षकों की धांधलेबाजी

इन मासिक टिकट यात्रियों को रेलवे के टिकट निरीक्षकों आदि द्वारा दो कारणों से संरक्षण दिया जाता है. पहला यह कि वे दैनिक यात्री होते हैं इसलिए उन्हें रोकटोक कर के उन से दुश्मनी मोल लेना उन के लिए संभव नहीं है. दूसरा मुख्य कारण यह है कि उन की आड़ में टिकट निरीक्षक अन्य यात्रियों से चारपांच रुपए ले कर उन्हें भी आरक्षित डब्बों में घुसने देते हैं और ये यात्री भी मासिक टिकट पर यात्रा करने वालों के साथ मिल कर दूसरे यात्रियों की बर्थ या सीट पर बैठ जाते हैं. इन्हें बैठा कर टिकट निरीक्षक चुपचाप चला जाता है और दूसरे यात्री इन्हें भी मासिक टिकट यात्री समझ कर इन का विरोध नहीं कर पाते हैं.

दिल्ली– गाजियाबाद, दिल्ली– पानीपत तथा लखनऊ– कानपुर के बीच खासतौर से इन मासिक टिकट यात्रियों का बहुत आतंक है. कुछ स्टेशनों पर तो गाड़ी भी इन की इच्छा के अनुसार ही चलती है. जब तक इन के सारे साथी इकट्ठे नहीं हो जाते हैं यह लोग गाड़ी नहीं चलने देते हैं.

लखनऊ– कानपुर रेलवे लाइन पर हरौनी के मासिक टिकट यात्री इस काम में सब से आगे हैं. वैक्यूम काट कर गाड़ी को रोक देना, ड्राइवर व गार्ड के डब्बे में घुस कर यात्रा करना व जहां चाहना वहां गाड़ी रुकवाना इन के लिए आम बात है. एक बार तो हरौनी के पास एक गांव में गाड़ी केवल इसलिए 15 मिनट तक रुकी रही थी क्योंकि एक मासिक यात्री साइकिल से आया था और गाड़ी में सवार हो जाने के बाद अपने भाई के आने का इंतजार कर रहा था. जिस को उस की साइकिल वापस ले जानी थी.

यह मासिक टिकट यात्री खुद कहते हैं कि अगर किसी शरीफ व्यक्ति को बदमाशी सिखाना हो तो उसे एक महीने का मासिक पास बनवा कर यात्रा करवा देनी चाहिए. उस में सारी बदमाशियां आ जाएंगी.

बहुत से मासिक टिकट यात्री अपने पासों की अवधि समाप्त हो जाने के बाद भी उस का नवीनीकरण नहीं करवाते. इस बारे में एक मासिक टिकट यात्री ने बड़ी रोचक बात सुनाई. उस ने बताया कि उस का पास समाप्त हो चुका है, पर उस ने उस पास को पानी में भिगो दिया है जिस से कि उस में लिखी तारीख व नाम आदि धुंधले हो गए हैं. आम टिकट निरीक्षक तो वैसे भी इन के टिकटों की जांच नहीं करता है लेकिन जब कभी मजिस्ट्रेट जांच में अचानक छापा पड़ता है तो वह अपना पास टिकट निरीक्षक को देने के बाद कहता है कि यह सुबह पेशाबघर में गिर गया था. इस कारण उस में तारीख व नाम आदि धुंधले हो गए हैं. इतना सुनते ही निरीक्षक खुद उस का पास फेंक देता है और अपने हाथ धोने के लिए आगे बढ़ जाता है.

इस में कोई संदेह नहीं कि मासिक टिकट यात्रियों को नियमित यात्रा करनी पड़ती है. अतः दोतीन घंटे का सफर खड़े हो कर तय करना काफी कष्ट साध्य होता है, पर इस का यह अर्थ भी नहीं है कि वे अपने आराम के लिए अन्य यात्रियों को परेशान करें या उन के आराम में खलल डालें.

जब बिना आरक्षण वाले डब्बों में अन्य

ी हजारों किलोमीटर की यात्रा अनेक ट उठा कर तय कर सकते हैं तो क्या सिक टिकट यात्री कुछ सौ किलोमीटर का र भी चुपचाप तय नहीं कर सकते. वैसे भी रक्षित डब्बों में यह मासिक टिकट वैध नहीं ते. लेकिन आरक्षित डब्बों में ही यात्रा कर वे अपराध करते हैं. साथ ही घंटों लाइन में कर महीनों पहले आरक्षण कराने के वजूद भी यात्री अपनी बर्थ या सीट पर राम से नहीं लेटबैठ सकते हैं.

उन के 70-80 यात्रियों के झुंड बना कर लने या संगठित होने से उन्हें दूसरे यात्रियों साथ गुंडागर्दी करने का अधिकार तो नहीं ल जाता?

खेद की बात तो यह है कि इन में से बहुमत ऐसे यात्रियों का होता है जो कि पढ़ेलिखे, अच्छे पदों पर काम करने वाले और सभ्य परिवारों के होते हैं. वे अन्य व्यक्तियों के साथ असभ्यता का व्यवहार करते समय यह भूल जाते हैं कि एक दिन उन के परिवार के साथ भी कोई व्यक्ति ऐसा ही व्यवहार कर सकता है.

अपने क्षणिक आराम व मनोरंजन के लिए वे दूसरों की यात्रा को कष्टपूर्ण बना देते हैं. यह वास्तव में उन के नैतिक पतन का परिचायक है. और इसे किसी भी तरह से रोकना या सुधार पाना फिलहाल संभव नहीं लगता है. ●

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और हर वाक्य में दो तीन शब्द अंगरेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंगरेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंगरेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास......
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण पत्र अंगरेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आप के आमंत्रित अंगरेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंगरेजी में करते हैं.

अंगरेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब से अलग हैं- विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद अपने संक्षिप्त जीवन को और संक्षिप्त बना देना चाहता था. ऐसे में नीला ने निस्वार्थ भाव से विनोद को नई जिंदगी दी.
स्त्री और पुरुष के सात्विक प्रेम संबंधों की कहानी. 5.00

डाल से बिछुड़े:
रीता की शादी इंगलैंड में बसे राम के साथ तय हुई तो उसे लगा जैसे वह भावना के स्वप्नलोक में जा रही है. मगर...
ब्रिटेन में बसने वाले भारतीयों की अपमानजनक जिंदगी की सच्ची तस्वीर. 4.00

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लंग ने एक दिन में एकएक लाख हिंदुओं को कत्ल कर के भारत की धरती को खून से लाल कर दिया. फिर भी कई हिंदू उस के पैर चूमने में अपना सौभाग्य समझते थे....आखिर क्यों? 4.00

सभ्यता के उस पार:
अनार्य राजा करंज और आर्य कन्या अंजसि का प्रेम?—असंभव.
परिणाम क्या हुआ?...
ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व की भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रोमांचक कहानी. 4.00

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच का पुट लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों के उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए. 5.00

एक और पराजय:
टिशांग कसबे के भोलेभाले नागरिकों को चीनी गुलाम बनाना चाहते थे. क्या वे इस में सफल हो सके? 4.50

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या लिखें.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सिपाही द्वारा पुलिस वालों के घर ही चोरी

हावड़ा में शिवपुर थाने के एक सिपाही को पुलिस लाइन में चोरी करने के आरोप में गिरफ्तार कर के निलंबित कर दिया गया है.

पुलिस सूत्रों के अनुसार उक्त सिपाही ने पुलिस भोजनालय के प्रबंधक की तिजोरी तोड़ कर ढाई हजार रुपए और दो घड़ियां चुरा ली थीं. पुलिस ने उस के गांव में छापा मार कर 500 रुपए और दो घड़ियां बरामद कर लीं.

—आवाज, धनबाद (प्रेषक : मनोजकुमार भगत)

*

सिर्फ चाय पर ही जीवित महिला

बंगलादेश की एक महिला पिछले 20 वर्षों से केवल चाय पी कर जी रही है.

बंगलादेश रेडियो के अनुसार सराजगंज की उक्त 57 वर्षीया महिला दिन में केवल पांच कप चाय पीती है और कुछ भी नहीं खाती.

—जलतेदीप, जोधपुर (प्रेषक : पशुपतिनाथ माथुर)

*

राजदूतों ने सड़कों पर सफाई की

सूरीनाम में इंडोनेशिया के राजदूत श्री जूको जोईवानो ने अपनी पत्नी [illegible] दूतावास के अनेक कर्मचारियों के साथ पेरामारीबो नगर की सड़कों और गलियों में झाड़ू लगाई.

देश की सैनिक सरकार को आशा है कि अन्य देशों के राजदूत भी ऐसा ही करेंगे.

—आज, पटना (प्रेषक : राजीवकुमार मिश्र)

*

पुलिस वालों को सही सबक सिखाया

कुरुक्षेत्र से छः किलोमीटर दूर करनाल के ग्राम फूतोपुर में एक हरिजन युवती को पुलिसवालों ने अकारण इतना पीटा कि वह बेहोश हो गई. इस बीच वहां काफी भीड़ जुट गई. भीड़ ने एक पुलिस सब इंसपेक्टर और उस के साथियों को पकड़ कर एक कमरे में बंद कर दिया और तार द्वारा उच्चाधिकारियों को घटना की सूचना दे दी.

हालांकि पुलिस उच्चाधिकारियों ने घटनास्थल पर पहुंच कर समझौता कराने का प्रयास किया, लेकिन ग्रामीणों ने उन्हें तभी छोड़ा जब उन्होंने माफी मांगी और ग्राम पंचायत को जुरमाना अदा किया.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक: प्रेम सिंगला)

*

बिना दुलहन के बारात लौटी

दीनानगर के पास के गांव लोहगढ़ से, एक दूसरे गांव दीदमा गई एक बारात को बिना

दुलहन के वापस आना पड़ा, क्योंकि जब दूल्हे को फेरों के लिए मंडप में बैठाया गया तो दुल्हन के भाई को पता चला कि दूल्हे को मिरगी की बीमारी है. इस पर फेरे रोक दिए गए. हालांकि दूल्हे को परीक्षण के तौर पर कमीजपैंट उतरवा कर दौड़ाया भी गया लेकिन दुलहन ने उस के साथ जाने से इनकार कर दिया.

दुलहन के पिता ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है कि लड़के के पिता ने जो 2,600 रुपए लिए हैं वह वापस दिलाए जाएं.

—पंजाब केसरी, जालंधर, (प्रेषक : रोशनलाल पटियाला)

*

परीक्षाकाल में प्रसव

गुना के अशोकनगर में बी.एससी. की परीक्षा दे रही एक महिला को परीक्षा भवन में प्रसव पीड़ा हुई. तब महिला ने प्रसाधन कक्ष में जा कर शिशु को जन्म दिया और फिर प्रश्नपत्र पूरा किया. तत्पश्चात वह स्वयं चल कर अस्पताल में दाखिल हो गई.

—दैनिक नवप्रभात, ग्वालियर (प्रेषिका : मं...

*

यीशू मसीह को तीन अप्रैल को फांसी हुई

यीशू मसीह को 33 ईस्वी शुक्रवार 3 अप्रैल को फांसी दी गई थी. भारत का 10,000वां स्वाधीनता दिवस बुधवार को होगा.

इस तरह की गणना कोचीन के एक कपड़ा व्यापारी इतियाचन विशामयिल ने एक लाख वर्षों के लिए तैयार किए गए कैलेंडर में की है. इस कैलेंडर की सहायता से 1-1-1 ईस्वी से 31-12-1,00,000 तक की अवधि की किसी भी तिथि का दिन जाना जा सकता है. उन का कहना है कि इस कैलेंडर को तैयार करने के लिए जुलियन तथा ग्रीगोरियन और अन्य ज्योतिषियों की मदद ली गई है.

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक : बल्लभदास बिन्नानी)

*

पानी पर भी राशन हो गया

मिजोरम के लोगों को अब पानी के लिए भी राशन कार्ड जारी किए गए हैं और अब उन्हें प्रतिदिन दो गैलन पानी मिलेगा.

मिजोरम की राजधानी ऐजल के कई क्षेत्रों में पानी दस रुपए बाल्टी बिक रहा है. पानी की इतनी कमी है कि लोग बरसात का पानी इकट्ठा कर के साल भर काम चलाते हैं

-नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक: नरेंद्रकुमार)

*

एक कुरसी के दो दावेदार

राजस्थान के जिले टोंक की जिला परिषद में एक कुरसी के दो दावेदार हैं और वह बारीबारी से उस पर बैठ कर अपना कार्य करते हैं.

इस जिला परिषद कार्यालय में बैठने की इतनी कमी है कि एक ही कुरसी पर जिला प्रमुख अल्ताफ हुसैन चिश्ती व अतिरिक्त जिलाधीश डा. भाटिया बैठते हैं.

जब डा. भाटिया कार्यालय में आते हैं तब वह जिला प्रमुख को टेलीफोन पर सूचना दे देते हैं कि वह कार्यालय जा रहे हैं और वह वहां न आएं. फिर काम निबटाने के बाद भी वह टेलीफोन पर सूचना दे देते हैं कि वह जा रहे हैं. तभी जिला प्रमुख वहां आते हैं.

स्थान की कमी को देखते हुए दोनों ने समझौता कर रखा है कि दोनों बारीबारी से इस कुरसी का उपयोग करते रहेंगे.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : प्रेमप्रकाश अप्पा) (सर्वोत्तम)

कहानी • उषा सक्सेना

शनिवार की वह खूबसूरत शाम फिर आ गई थी, जिस का छात्रावास में पूरे सप्ताह इंतजार रहता है. छात्रावास का भोजन कक्ष छुरीकांटों की खनखनाहट और लड़कियों के ठहाकों से गूंज उठा था.

लड़कियों की वेशभूषा देखते ही बनती थी. लगता था जैसे वे किसी फैशन परेड में भाग लेने जा रही हों, "चाय ठंडी क्यों है," "पकौड़ी में नमक ज्यादा है," "प्याले तो बाबा आदम के जमाने के हैं" जैसी आवाजें सुन कर ऐसा लगता था जैसे एक साथ कई सी चिड़ियां चहचहा रही हों.

लेकिन रीना अपनी सहेली सीमा के साथ किनारे वाली मेज पर गुमसुम बैठी थी. उस के हाथ में चाय का प्याला था और सामने मेज़ पर भोजन की प्लेट रखी थी.

वह न जाने किन विचारों में खोई हुई थी. उसे देख कर सीमा सोच रही थी कि क्या यह वही रीना है, जिस का नाम कुछ दिन

एक पागल व्यक्ति से अनजाने में हुए विवाह और तलाक की प्रक्रिया ने रीना को मानसिक रूप से विक्षिप्त सा बना दिया था, फिर भी दिनेश उस का जीवन चंदन की खुशबू सा कैसे महका सका?

...ले विश्वविद्यालय के हर लड़के की जबान ...था.

रीना का रंग तो गेहुआं था, लेकिन तीखे ...नक्श, छरहरी देह और ढंग से कटे हुए ...लों में वह बहुत आकर्षक लगती थी. काली ...ी तिरछी भौंहों के बीच छोटी सी बिंदी लगाना वह कभी न भूलती थी. अपने अल्हड़पन और विनोदी स्वभाव से सब का मन जीतने वाली रीना अब अपनी ओर से कितनी उदासीन हो गई है. ...कहीं से झूलते बाल, आंखों में विषाद और अधरों पर कृत्रिम मुसकराहट लिए जैसे वह निरंतर ज्वारभाटे को झेल रही थी. यह बात धीरेधीरे सभी जान गए थे कि रीना की वह हंसीखुशी से भरी जिंदगी अब केवल एक बीते दिनों की याद बन कर रह गई है.

"क्या बात है, रीना? आज फिर वही उदासी? देखो तो सारी चाय ठंडी हो गई."

एकाएक सीमा ने खामोशी तोड़ी तो रीना जैसे नींद से जाग उठी और गटागट एक घूंट में ही चाय का प्याला खाली कर के बोली, "चलो, थोड़ा सा घूम आते हैं."

सीमा जैसे उठने के मूड में नहीं थी. उस ने छात्रावास की महिला कर्मचारी को दो
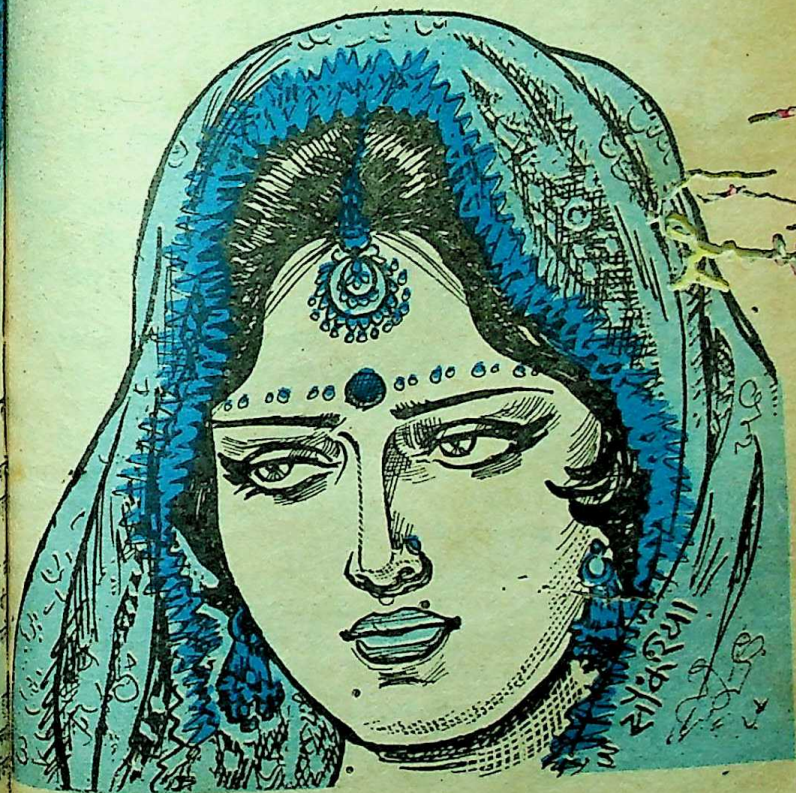
प्याले गरम चाय और लाने को कहा और बोली, "रीना, दिनेश आया था, उसे किसी विदेशी फर्म में नौकरी मिल गई है."

"उसे मेरी ओर से बधाई दे देना." रीना ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"वह तो दे दूंगी, लेकिन वह कह रहा था कि उस ने तुम से कई बार मिलना चाहा, लेकिन तुम ने कोई न कोई बहाना बना दिया. शायद तुम उस से मिलना नहीं चाहतीं. वह सब कुछ जान कर भी तुम्हारी जिंदगी बदलना चाहता है. उस ने पूछा है कि क्या तुम उसे थोड़ा सा समय दे सकोगी."

"मुझ से समय ले कर वह क्या करेगा? बबूल की कंटीली डाल को छूने से हाथ में कांटे ही लगेंगे. तुम उस से कह देना कि मैं उस से मिलना नहीं चाहती."

इसी बीच महिला कर्मचारी ने गरम चाय के प्याले मेज पर रखते हुए बताया कि सीमा के भैया उसे लेने आए हैं. सीमा ने जल्दीजल्दी चाय पी और रीना से विदा ले कर चली गई. रीना से भी अब वहां नहीं बैठा गया और चाय पी कर वह छात्रावास के पीछे के मैदान की ओर चल दी.

उस उजाड़ से मैदान को चंदन के केवल एक पेड़ ने ही महका रखा था. रीना को यह पेड़ बड़ा प्रिय था. यह उसे एकदम शांत, निर्विकार, गंभीर और तपस्वी जैसा लगता था. यह पेड़ ही अब उस के जीवन का एकमात्र संबल था. उसे जब भी समय मिलता, वह इसी पेड़ के नीचे आ कर बैठ जाती. कभी गीत लिखती, कभी कहानी और कभीकभी उस पेड़ से न जाने क्याक्या बातें करती रहती. उसे लगता जैसे इस पूरे संसार में एक यही पेड़ उस की व्यथा को समझता है.

वह अभी उस पेड़ के नीचे बैठी ही थी कि उस ने देखा कि एक सांप चंदन के पेड़ से लिपटा हुआ है. पेड़ से दूर हट कर वह सांप के जाने की प्रतीक्षा करती रही और जब उधर से गुजरते माली ने सांप को भगा दिया तो वह फिर उसी पेड़ के नीचे बैठ गई. अब उसे सांप से इतना भय नहीं लगता था, पर पहली बार जब उस ने इस पेड़ पर लिपटे हुए सांप को देखा था तो वह बुरी तरह से चीख उठी थी और फिर कितने ही दिनों तक वह भयानक दृश्य उस की आंखों के सामने घूमता रहा.

पेड़ के नीचे बैठेबैठे उसे ऐसी ही एक शाम याद आने लगी और वह अतीत में खो गई.

इसी चंदन के पेड़ के नीचे बैठी हुई वह कुछ लिख रही थी कि अचानक ही वहां सांप देख कर बहुत घबरा गई थी. फिर जब वह अपने कमरे में पहुंची थी तो सीमा ने बताया था कि भैया आए हैं.

झट से एक गिलास पानी पी कर स्वयं को संयत कर के भैया से मिलने चली थी. भैया ने उसे बताया था कि उसे उसी दिन दिल्ली चलना है.

एकाएक जाने की बात सुन कर वह घबरा कर बोली थी, "घर में सब की तबीयत तो ठीक है न?"

"सब ठीक है, घबराने की कोई बात नहीं. तुम बस तैयारी कर लो. मैं ने अधीक्षिका से बात कर ली है. उन्होंने तुम्हारे जाने की अनुमति दे दी है."

"लेकिन भैया, आखिर बात क्या है, बताओ." रीना जैसे अधीर हो उठी थी.

"चलो, पहले चल कर कहीं बैठें, फिर बात करेंगे."

रीना भैया को ले कर अतिथि कक्ष में पहुंची और वहां एकांत पा कर बोली, "अब भैया, अब बताओ, क्या बात है?"

"सचसच बता दूं? पिताजी ने तेरे विवाह की तिथि पक्की कर दी है और मुझे तुम्हें लेने भेजा है," भैया ने मुसकरा कर कहा.

"क्या कह रहे हो, भैया? मुझे ऐसा मजाक अच्छा नहीं लगता." रीना रुआंसी हो उठी थी.

"मजाक नहीं, रीना, यह सच है. तुम्हें याद नहीं, दशहरे की छुट्टियों में कुछ लोग तुम्हें देखने आए थे?"

"वे पिताजी के मिलनेजुलने वाले थे.

"हां, वे पिता[illegible] तो थे, पर, उन्होंने तुम्हें अपने लड़के के लिए पसंद कर लिया है. लड़का इंजीनियर है. भरापूरा घर है. आगरा में उन के कई मकान हैं और सब से बड़ी बात यह है कि वे दहेज भी नहीं मांग रहे हैं." भैया तो पता नहीं क्याक्या कहते जा रहे थे, पर रीना चुपचाप बैठी कुछ सोच रही थी.

भैया उस से तैयार होने को दोबारा कह कर चले गए थे और वह अपने कमरे में आ कर फफक कर रो उठी थी.

कुछ देर के बाद वह सामान बांधने लगी थी. उसे सीमा पर भी गुस्सा आ रहा था, क्योंकि वह भी कहीं चली गई थी. वहां ऐसा कोई नहीं था, जिस से यह बात कह कर वह अपना मन हलका कर लेती. अतः सामान बांधते हुए वह मन ही मन बड़बड़ाने लगी थी.

'मुझ से बिना पूछे ही सब तय हो गया. कहते थे कि एम.ए. कराएंगे. अब बी.ए. भी नहीं कर पाऊंगी. बड़ा भारी इंजीनियर है तो उसे कोई और लड़की नहीं मिली? मेरा ही भविष्य खराब करना था. अरे, उन्हें तो खाना बनाने और घर संभालने वाली लड़की की

अपना पता लिखा कार्ड रीना की तरफ बढ़ाते हुए दिनेश बोला, "रीना, मैं तो अब जा रहा हूं, पर भविष्य में तुम्हें मेरी जरूरत महसूस हो तो मुझे इस पते पर सूचित कर देना."

जरूरत होगी. तो क्या मैं ही बची थी इस काम के लिए? अभी मेरी उम्र ही क्या है? मेरे सपने अधूरे रह जाएंगे...,' अभी वह सामान बांध हो रही थी कि चपरासी आ गया और बोला "भैयाजी ने जल्दी बुलाया है. गाड़ी का समय हो गया है."

"अच्छा चलती हूं."

रीना ने जल्दीजल्दी सामान बांध कर चपरासी को दिया. कमरे में ताला लगाया और अधीक्षक को सूचना दे कर भैया के साथ चल दी.

वह रास्ते भर खोईखोई सी रही. न जाने क्यों चंदन के पेड़ पर लिपटा सांप बारबार उस की आंखों के सामने स्पष्ट हो जाता था और उस का मन घबरा उठता था.

न जाने कब स्टेशन आ गया और वह कैसे घर पहुंच गई, उसे कुछ भी याद नहीं.

घर ब्याह की रौनक से भरा था. कुछ मेहमान भी आ गए थे, क्योंकि ब्याह में केवल एक ही सप्ताह तो रह गया था.

शीघ्र ही सप्ताह भी बीत गया और विवाह का दिन आ गया. पर उस के मन में शादी की कोई उमंग न थी. छोटी मौसी ने बड़े आकर्षक ढंग से उसे सजाया. बड़ी मौसी ने बड़े चाव से जयमाल गीत लिखा और खुशीखुशी सब बहनें उसे सहारा दे कर [illegible] डल[illegible]ने ले गईं. लेकिन वह जैसे मशीन बन गई थी, जो दूसरों के इशारों पर काम करती है.

उस के उदास मुख को देख कर सब ने पारिवारिक विछोह को ही उस की उदासी का कारण समझा.

कब टीका हुआ, किस ने उसे कार में बिठाया, किस ने विदा की तैयारी की, उसे कुछ ध्यान नहीं रहा था. बस चंदन का पेड़ और उस से लिपटा हुआ सांप उसे रहरह कर याद आ रहा था.

कार ससुराल की देहरी पर रुकी और ननद ने सहारा दे कर उसे नीचे उतारा. तब उस ने किसी प्रकार अपने मन को संयत किया.

"बहू तो साक्षात लक्ष्मी है" जैसे घिसेपिटे वाक्य उस के कानों में पड़े. ननद ने उसे एक कमरे में बिठा दिया. थोड़ी ही देर में अपने भाईबहनों से घिरा उस का पति उस कमरे में आया. उस ने बोझिल सी पलकें उठा कर एक बार पति की ओर देखा तो आंखों के सामने अंधेरा छा गया.

गहरा सांवला रंग, दुबलापतला शरीर और छोटे से चेहरे पर लाललाल आंखें, जिन में मन की गहराइयों से प्रेम करने की जगह शरीर के रक्त की एकएक बूंद को चूस लेने जैसा भाव था. अचानक उसे फिर चंदन के पेड़ से लिपटे सांप की याद आ गई. वह सोचती रही कि लड़का इंजीनियर है, पैसे वाला है तो क्या पिताजी की दृष्टि में पैसा ही सब कुछ है.

"भैया, भाभी तो एकदम फिल्म अभिनेत्री लगती है. पिताजी की पसंद बड़ी ऊंची रही." छोटी ननद के इन शब्दों के साथ ही उस ने उस व्यक्ति का स्वर भी सुना जिस के साथ उस का विवाह करवाया गया था. वह कह रहा था, "उंह, इन से कहना कि मैं इन से ब्याह नहीं करना चाहता था."

'तो मैं ही तुम से कब ब्याह करना चाहती थी.' रीना कहना तो यही चाहती थी पर बात उस के मुंह तक आतेआते रुक गई क्योंकि उसे फिर उस व्यक्ति का स्वर सुनाई दिया था. "इन से कह दो कि पहले आई.ए.एस. अधिकारी बनें, तभी मैं इन से बात करूंगा."

"बन जाएंगी, भैया, यह कौन सी बड़ी बात है. अच्छा, अब कुछ खापी तो लो." ननद ने जैसे बात संभाली थी.

"ठीक है, तुम अपने मेहमान को खिलाओपिलाओ, मुझे दफ्तर की कुछ फाइलें देखनी हैं." यह कह कर वह बाहर चला गया था.

उस की छोटी ननद उस से न जाने कब तक और क्याक्या बातें करती रही थी, उसे कुछ नहीं याद रहा. हां, सब के जाने के बाद वह स्वयं को कोसने लगी थी.

अभी वह अपने जीवन के साथ हुए खिलवाड़ के बारे में सोच ही रही थी कि उसे बराबर के कमरे में चीख सुनाई दी. उस ने जल्दी से उठ कर कमरे की खिड़की से झांक कर देखा. उस कमरे का दृश्य देख कर उस के रोंगटे खड़े हो गए. उस के पति को तीनचार लोग कस कर पकड़े हुए थे और वह सब को गालियां दे रहा था. क्रोध में उस के मुंह से झाग निकल रहा था. उस की आंखें लाल हो रही थीं.

वह घबरा कर खिड़की के सामने से हट गई थी. उस की समझ में कुछ भी नहीं आया था. रात भर वह सोचविचार में बैठी रही थी. चंदन का पेड़ और उस पर लिपटा काला सांप उसे बारबार याद आता रहा था.

सुबह आ कर ननद ने उसे बताया था कि भैया की तबीयत कुछ खराब हो गई है और वह हस्पताल गए हैं. इस के बाद तीन दिन तक वह ससुराल में ही रही थी. पर उसे उस के पति से मिलने नहीं दिया गया था.

लेकिन शीघ्र ही उसे पता चल गया था कि उस के पति को पागलपन के दौरे पड़ते हैं और उस रात भी उसे पागलपन का दौरा पड़ा था. लोगों की कुछ पूरी कुछ अधूरी बातों से उस ने यह भी जान लिया था कि उस के पति को पागलपन से मुक्ति दिलाने के लिए ही इतनी जल्दी विवाह का मुहूर्त निकलवाया गया था. तीन दिन में ही उस का चेहरा मुरझा गया था. चौथे दिन उस के भैया उसे लेने आ गए थे और ससुराल वालों ने उसे मायके भेजने में कोई आपत्ति भी नहीं की थी.

भैया के साथ वह अपने मांबाप के घर लौट आई थी और ऐसी बीमार पड़ी थी कि एक महीने तक बिस्तर से नहीं उठ सकी थी. इसी बीच वह अपने आप से लड़ती रही थी. उस का मन आत्महत्या करने को करता था, वह अपने जीवन से निराश भी हो गई थी. उसे अपना भविष्य अंधकारमय लगने लगा था. उस की किसी कार्य में रुचि ही नहीं रह गई थी. उसे जैसे स्वयं से ही घृणा हो गई थी.

उधर पति का पागलपन बढ़ता ही गया -

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई [illegible] हार नहीं किया जाता.
- मुक्ता और स[illegible] में पूर्ण विराम की जगह बि[illegible] का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें

संपादकीय विभाग
मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055

फिर घरवालों की दौड़भाग, कोर्टकचहरी और तलाक यह सभी कुछ उस ने छोटी सी उम्र में देख लिया था. घरवाले उस की हालत देख कर बहुत दुखी थे, पर क्या कर सकते थे? उन्हें भी यह सब घटित होने की क्या खबर थी? उन्होंने उस में साहस और विश्वास पैदा करने के उद्देश्य से उस को पुनः विश्वविद्यालय वापस भेज दिया था.

अभी वह गुमसुम सी बैठी ही थी कि चपरासी ने आ कर बताया कि उस से कोई मिलने आया है. वह जैसे नींद से जागी. जल्दी से अतिथि कक्ष की ओर गई. देखा, वहां दिनेश उस की प्रतीक्षा कर रहा था.

"कहो, रीना कैसी हो?" दिनेश ने कहा.

"ठीक ही हूं. विदेश जाने के लिए बहुतबहुत बधाई," रीना बोली.

"धन्यवाद, मैं कल ही जा रहा हूं," दिनेश बोला.

"मेरी शुभकामनाएं," रीना ने कहा.

"और मेरी भी. रीना मैं जानता हूं कि परिस्थितियों ने तुम्हें पत्थर बना दिया है, लेकिन जिंदगी यों ही नहीं गुजर जाती. मैं तो जा रहा हूं लेकिन अगर भविष्य में तुम्हें कभी मेरी जरूरत पड़े तो इस पते पर चिट्ठी डाल देना, मैं तुरंत चला आऊंगा." दिनेश ने एक कार्ड मेज पर रखते हुए रीना का हाथ थामा, उस का कंधा थपथपाया और चला गया.

रीना न जाने कितनी देर तक जड़वत बैठी रही. फिर कुछ संयत हो कर उठी. देखा, उस की उंगली में सुंदर हीरे की अंगूठी जगमगा रही थी और मेज पर एक कार्ड रखा था जिस पर दिनेश का नया पता छपा था.

उसे एकाएक महसूस हुआ जैसे उस के आसपास शांति सी बिखर गई हो. जैसे उस के चारों ओर चंदन की भीनीभीनी सुगंध आ गई हो.

उस ने मुसकराते हुए खिड़की से बाहर देखा. चंदन का पेड़ चांदनी में जैसे नहाया हुआ था. उसे वह कुछ ज्यादा ही खूबसूरत लगा. उस में नईनई कोंपलें आ चुकी थीं. उसे ये कोंपले अपनी नई जिंदगी की शुरुआत जैसी लगीं.

वह अचानक सीढ़ियां उतरती हुई मैदान की ओर दौड़ पड़ी और चंदन के पेड़ के सामने जा कर ठिठक गई. उसे आश्चर्य हुआ आज पेड़ पर सांप नहीं लिपटा था. उस ने एकाएक पेड़ को बांहों में भर लिया जैसे वह चंदन का पेड़ न हो कर दिनेश हो.

अंजुरी भर

अंजुरी-भर
चांदनी पिएं हम,
आओ
कुछ देर सही
जिंदगी जिएं हम.
घुलने दें
दूधिया उजास
अंगअंग में
लाज भरे
सहमे दिन
जोड़ दें पतंग में.
सरगम से
चुप्पियां सिएं हम.
चुगलियां
हवाओं की
भूलें हर ताने,
आज इसी
पूनम की रात के बहाने
तोड़ें हर
सुर्ख हाशिए हम.

—हरीश निगम

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं देशभक्तिपूर्ण बाल पुस्तकें

तेनालीराम
स्वतंत्रता सेनानी

बस में चोरी
तिनके का सहारा
गलतफहमी

चीकू
नकलची ननकू
अपहरण
चमत्कारी बाबा

घमंडी भैंसा
हाथी का शिकार
सम्राट चंद्रगुप्त
पंचतंत्र भाग I, II
आगरे वाले मामाजी
घमंडी कौआ
बहादुर विनीता

आखिरी सरकस

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें।

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: सावधान, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

नर्स की लापरवाही से मरीज की जान पर बन आई

कलकत्ता के चिकित्सा विद्यालय में एक मरीज को सैलाइन वाटर की जगह मिट्टी के तेल का इंजेक्शन दे दिए जाने से मरीज की मृत्यु हो गई.

पश्चिम बंगाल के स्वास्थ्य मंत्री जतीन चक्रवर्ती ने विधान सभा में यह जानकारी देते हुए बताया कि इस के लिए तीन सदस्यीय जांच समिति ने एक नर्स को दोषी पाया है. चूंकि अभी पुलिस मामले की जांच कर रही है इसलिए नर्स के खिलाफ कोई काररवाई नहीं की गई है.

—नवभारत दैनिक, नागपुर, (प्रेषक : प्रदीप शालिग्राम मेश्राम)

*

केंद्रीय मंत्री का रिश्तेदार बन कर ठगने वाला गिरफ्तार

नई दिल्ली में पंजाब के एक ऐसे ठग को गिरफ्तार किया गया है जिस ने एक केंद्रीय मंत्री का रिश्तेदार बन कर दो व्यक्तियों को ठग लिया और अब एक सरकारी बैंक से ऋण लेना चाहता था.

गुरदासपुर का कैलाशनाथ शर्मा नाम का यह ठग अपने को कभी पंजाबी खादी आयोग का अध्यक्ष बताता था तो कभी जिला परिषद का अध्यक्ष.

जब उस ने एक बैंक से 50 हजार रुपए का ऋण लेना चाहा तो पुलिस ने उसे रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया.

इस से पूर्व फ्लैट दिलाने का लालच दे कर संघ लोक सेवा आयोग के उपसचिव से दो हजार रुपए तथा पटेल नगर के एक निवासी से एशियाई खेलों में कार पार्किंग का ठेका दिलाने के लिए 2,100 रुपए ले चुका था.

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक : कनककुमार बाठिया)

*

ये खातेपीते बेचारे लोग

रायगढ़ में निराश्रितों की सूची में ऐसे स्वस्थ पुरुषों ने नाम लिखा रखा है जो अच्छे खातेपीते परिवारों के हैं और जिन की संतानें नौकरी करती हैं.

इन लोगों ने संबंधित कर्मचारियों आदि को कुछ लेदे कर अपना नाम निराश्रितों की सूची में दर्ज करवा लिया है और दान स्वरूप मिलने वाली धनराशि एवं चावल मुफ्त में प्राप्त करते हैं.

यह चावल दुकानों पर बिक जाता है और नकद राशि मिलते ही ये लोग सिनेमाघरों की ओर चल देते हैं जो वास्तव में निराश्रित हैं उन की सुधि लेने वाला कोई नहीं है.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : भरतलाल टुवानी 'मुसकान') (सर्वोत्तम)
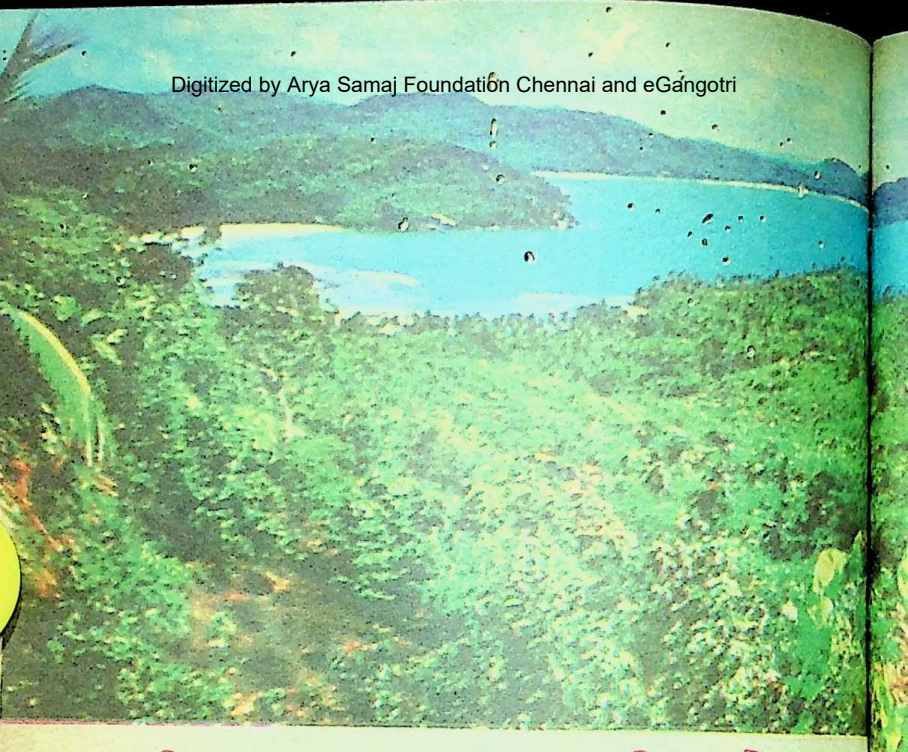
हिंद महासागर में सैन्य होड़ में फंसा अनोखा द्वीप

सेशल्स

लेख • अजयकुमार सिन्हा

हिंद महासागर के जिस क्षेत्र में अमरीका व रूस एकदूसरे के विरुद्ध सैनिक मोर्चाबंदी कर रहे हैं, वह कुछ द्वीपों का समूहमात्र है. इस द्वीप समूह के कुछ द्वीप अमरीका के प्रभाव में हैं तो कुछ रूस के. दिएगो गार्सिया द्वीप जो लगभग निर्जन और छोटा टापू है, पहले ब्रिटेन के अधिकार में था. ब्रिटेन ने इसे सैनिक अड्डा बनाने के लिए अमरीका को दे दिया. वहां पर अमरीका ने अपना अड्डा बना भी लिया है. अमरीका से पगपग पर होड़ करने वाला रूस भी पीछे न रहा. उस ने सेशल्स द्वीप में अपने पैर ज... लिए. अमरीकी शक्ति का मुकाबला करने ... लिए रूस इस द्वीप पर अड्डा बनाए हुए है. इस द्वीप की सरकार समाजवादी व ... समर्थक है.

अफ्रीका के पूर्वी तट से 1,100 मील ... में स्थित सेशल्स 92 छोटेछोटे द्वीपों का समू... है. इस द्वीप समूह का स्थलीय क्षेत्रफल ... मिला कर सिर्फ 404 वर्ग किलोमीटर है

[illegible] समुद्र के बीच में ग्रेनाइट (भुरभुरा पत्थर) के द्वीप नहीं पाए जाते. किंतु सेशल्स इन्हीं पत्थरों का द्वीप समूह है. इस द्वीप समूह के 37 द्वीप ग्रेनाइट के हैं. शेष द्वीप मूंगे या लाल पत्थर के बने हैं.

दर्शनीय प्राकृतिक सौंदर्य व सामरिक महत्त्व वाला यह द्वीप समूह निराला है, पर डर यह है कि बड़ी ताकतों की सैनिक होड़ में यह द्वीप सौंदर्य की अपनी निर्मलता न खो दे...
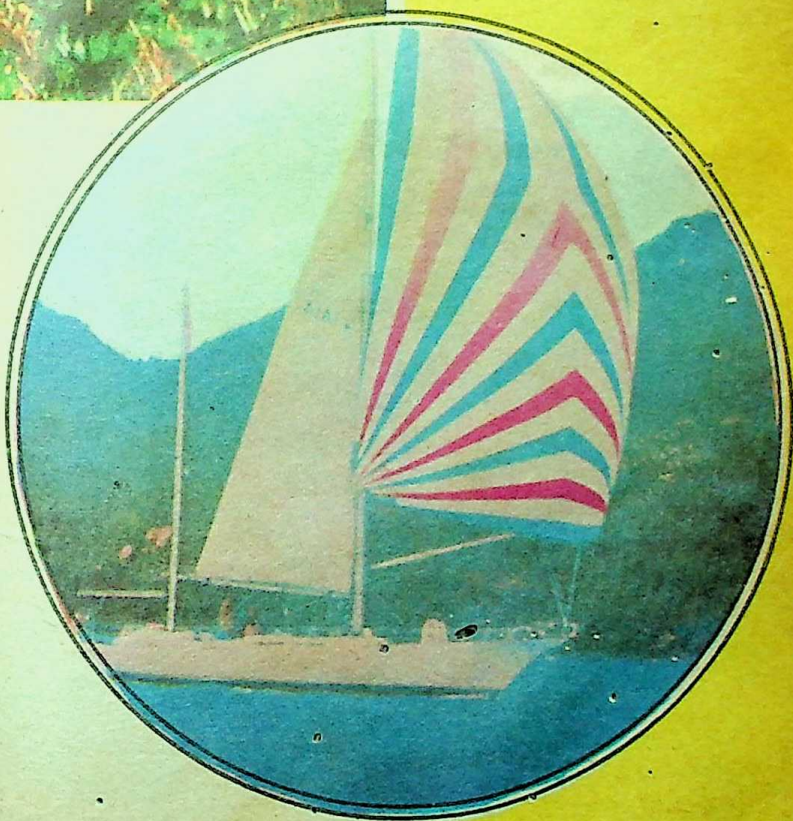
ग्रेनाइट के द्वीपों पर समुद्र के भीतर ग्रेनाइट की ढालू व खड़ी चट्टानें किलों के स्तंभों की तरह खड़ी हैं..

मूंगों के द्वीप समुद्र की सतह से ज्यादा ऊपर नहीं हैं, इन का धरातल समुद्र की सतह से बहुत थोड़ा ही ऊपर है.

सेशल्स द्वीप समूह का मुख्य व सब से बड़ा द्वीप माहे है जो ग्रेनाइट का बना है. इस पर पहाड़ियां हैं. माहे द्वीप का क्षेत्रफल 144 वर्ग किलोमीटर है. माहे द्वीप पर ही सेशल्स की राजधानी व बंदरगाह विक्टोरिया स्थित है. सेशल्स की कुल जनसंख्या लगभग 62,000 है, जिस की 90 प्रतिशत माहे द्वीप पर रहती है. ग्रेनाइट वाले सभी द्वीप, जिन में इस द्वीप समूह का दूसरा सब से बड़ा द्वीप प्रासलिन भी शामिल है, माहे द्वीप की 156 किलोमीटर की परिधि के भीतर ही स्थित है.

मूंगे के द्वीपों पर जिन में माहे द्वीप से 240 किलोमीटर दक्षिणपश्चिम में स्थित एमिरांटीज भी शामिल है, कोई स्थायी आबादी नहीं है.

ग्रेनाइट वाले द्वीपों पर चारों ओर हरियाली ही दिखाई देती है. जलवायु उष्ण कटिबंधीय है. अतएव नारियल, केले, आम, शक्करकंद व कचालू, ब्रेडफ्रूट तथा अन्य उष्णकटिबंधीय फलों के वृक्षों की यहां भरमार है. ऊंची ढालों पर देशी वृक्षों के जंगल हैं. इन ढालों पर दालचीनी (वनिला) और चाय की खेती की जाती है.

अरब के लोगों तथा पुर्तगालियों को इस द्वीप समूह के बारे में सदियों पहले मालूम था, किंतु वे उन्हें निर्जन मरुद्वीप मानते थे. 18वीं सदी के मध्य में फ्रांसीसी लोग दासों को ले कर पहली बार यहां आए और यह द्वीप समूह उन के ही अधीन रहा. किंतु फ्रांस का सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट, जब ब्रिटेन के साथ युद्ध में हार गया, तब यह द्वीप समूह ब्रिटेन के अधिकार में आ गया और ब्रिटेन ने 160 वर्ष

यद्यपि हरियाली और फलदार वृक्षों को काट कर यहां सड़कें आदि बना ली गई हैं, पर इस का प्राकृतिक सौंदर्य न बिगड़ने पाए, यह भी ध्यान में रखा गया है.

तक इन द्वीपों पर शासन किया. 29 जून, 1976 को ब्रिटेन ने इस द्वीप समूह को स्वतंत्रता दे दी.

माहे द्वीप का वातावरण अत्यंत शांत व विश्रामदायक है, द्वीप पर तापक्रम वर्षभर बड़ा अच्छा रहता है. यह सदा 75 और 83 अंश फारेनहाइट के बीच रहता है. सेशल्स ने जेटयुग में लगभग 10 वर्ष पहले ही प्रवेश किया है, माहे की तटीय भूमि में मिट्टी भरवा कर ब्रिटेन ने उस पर भारी रुपए की लागत से एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बनवाया. सन 1972 में इस हवाई अड्डे का उद्घाटन ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ ने स्वयं किया था.

सेशल्स में बसे एक भारतीय प्रवासी व्यापारी के अनुसार : "संसार की राजधानियों के साथ वायुयान सेवाओं का यातायात का संबंध सेशल्स वासियों का चिर स्वप्न था."

सेशल्स संसार के उन कुछ द्वीपों में से एक है, जहां का वातावरण व पर्यावरण अभी नष्ट नहीं हुआ है. कीनिया के मोंबासा नगर से यह 1,600 किलोमीटर तथा बंबई से 3,200 किलोमीटर दूर है. इस द्वीप समूह में माहे द्वीप से 960 किलोमीटर दूर अलडाब्रा नामक एक द्वीप है, जहां ढाई लाख कछुए हैं. पर वहां मनुष्य एक भी नहीं है. यहां 50 हजार जंगली बकरियां भी हैं.

सेशल्स के सौंदर्य का आनंद अभी तक सिर्फ ब्रिटिश, फ्रांसीसी तथा दक्षिणी अफ्रीकी ही उठाते आए हैं. सन 1977 में 65,000 पर्यटक इस द्वीप में आए.

आज के पर्यटक शांति व स्वच्छता चाहते हैं. सेशल्स में ये दोनों चीजें मिलती हैं. यहां समुद्र के किनारे सुंदर चमचमाती बालू फैली हुई है. ऊंची पहाड़ियों पर बने सुंदर मकान हैं, जहां से बंदरगाह व आसपास के द्वीपों का मनोरम दृश्य दिखलाई पड़ता है.

मनचले लोग ऐसी अनोखी चीजों की ओर ज्यादा ध्यान देते हैं या तलाश में रहते हैं, जिस से दूसरे लोग हैरान व उत्तेजित हो सकें

सेशल्स में इस दृ[illegible] फल पैदा करती है. वह है कोको डी मर नट जो नारियल जैसा होता है. इस की तुलना मनचले लोग स्त्री के पेड़ से करते हैं. इस के लिए सेशल्स सारी दुनिया में जाना जाता है. वह फल ऐसा लगता है जैसे दो नारियल एक में जुड़े हुए हों, इस से संबंधित एक किवदंती भी है कि इस के साथ पैदा होने वाला लिंग के आकार का कैटकिन जब रात को तूफान आता है और प्रचंड होता है, तब कोको डी मर नट को गर्भवती करता है.

खातूम के जनरल गारडन ने जो एक सदी पहले इस द्वीप पर आए थे, इन सौ फुट ऊंचे पेड़ों को देख कर इस द्वीप को 'दी गार्डन आफ ईडन' का नाम दिया था.

सेशल्स स्त्रियों के मुक्त सहवास के [illegible] है. स्त्रियों की जनसंख्या यहां पुरुषों से ज्यादा है. समाज एक प्रकार से उन्मुक्त है. एक पुरुष के छः महिला मित्रों से छः पुत्र हो सकते हैं, एक सदस्य वाले परिवार या अविवाहित माताओं की संख्या काफी है. सन 1975 में जन्मे 1,806 बच्चों में से 50 प्रतिशत से भी कम ही वैध थे, शेष अवैध थे. यौन से संबंधित अधिकतर किस्से अतिश्योक्ति पूर्ण हैं. इस का मुख्य कारण नाविकों द्वारा फैलाई गई कहानियां हैं.

सेशल्स के मुख्य आकर्षण

धूप व रेत सेशल्स के मुख्य आकर्षण हैं. माहे द्वीप के कुछ भागों को छोड़ कर सभी द्वीप अब भी अपनी प्राकृतिक अवस्था में हैं. अब यहां बहुत पर्यटक आने लगे हैं. समुद्र तट के ऊपर ऊंचे पहाड़ों की चोटियां हैं, जहां पर भ्रमणकारी पहुंच सकते हैं. अन्य उष्टकटिबंधीय द्वीपों के ठीक विपरीत सेशल्स में न तो जंगली जानवर हैं और न ही खतरनाक कीट या पतंगे.

दुनिया भर के पर्यटकों को प्राकृतिक सुंदरता का आनंद दिलाने के लिए ब्रिटेन द्वारा बनवाया गया सेशल्स द्वीप समूह का एकमात्र अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा.

सेशल्स द्वीप समूह में अनुकूल जलवायु और प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही शांत व स्वच्छ वातावरण भी मिलता है, इसी लिए पर्यटक यहां वर्ष भर आते हैं.

किंतु यहां समुद्री जीवों की भरमार है. सेशल्स वासी बहुजातीय तथा बहुभाषी हैं. यहां फ्रांसीसी तथा हब्शी अधिक हैं. चीनी व भारतीय भी हैं. हब्शी लोग दासों की संताने हैं जो यहां लाए गए थे या जो जहाजों से बच निकले थे. ये लोग सहिष्णु हैं. इसी लिए यहां धार्मिक सहिष्णुता है. यहां के भूतपूर्व राष्ट्रपति मैनचम, चीनी व फ्रांसीसी पूर्वजों की संतान थे और वर्तमान राष्ट्रपति फ्रांस अलबर्ट रेनी, यूरोप के ग्रेंड ब्लेक परिवार के वंशज हैं.

सेशल्स का अतीत

अंगरेजों ने सेशल्स का कारावास के रूप में भी प्रयोग किया था. यहां पर युगांडा और गोल्ड-कास्ट के राजा, मलयेशिया का एक सुलतान, साइप्रस द्वीप के राष्ट्रपति

(शेष पृष्ठ 94 पर)

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया [illegible] फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. [illegible] भी हजारों वर्ग मील भारतीय [illegible] विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति [illegible] लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहि[illegible] सहयोग और सद्भाव की आवश्यक[illegible] होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, [illegible] पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधि[illegible] नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार [illegible] सहायता स्वीकार करती है. यह के[illegible] एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते [illegible] निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठ[illegible] इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन [illegible] सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी[illegible] सरकार का और देशी व विदे[illegible]

रांज
हस्त
स्वतं
रही
एक
पत्रप

विश
यह
बिना
सरि
अधि
सकें

सरि
इस
आप

जमा

रूप

नोटि
सरि
का न
लौट
काय
व मु

इस
प्रेस'

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

यहां के द्वीप समुद्र की सतह से ज्यादा ऊपर नहीं हैं.

(पृष्ठ 91 से आगे)

आर्कबिशप मकारियोस कभी बंदी रखे गए थे.

वर्तमान रेनी सरकार सैनिक क्रांति द्वारा सत्ता में आई है. मौजूदा सरकार वामपंथी है. किंतु द्वीप पर अमरीकी वायुसेना का उपग्रह टोही केंद्र भी है, जो विक्टोरिया में है. यहां पर सनबर्ड पक्षी पाए जाते हैं. हवा में जंगली दालचीनी की गंध होती है. यहां के लोगों का धर्म मुख्यतः रोमन कैथोलिक है.

सेशल्सवासियों का भोजन

सेशल्स के लोग मछली और चावल खाते हैं. यहां पर मछली की एक अनोखी जाति पाई जाती है, जिसे ये लोग 'बूर्जवा' कहते हैं. चावल यहां का मुख्य आहार है, वह यहां आयात किया जाता है. ताजी सब्जी कीनिया से आती है तथा कोका कोला दक्षिणी अफ्रीका से आता है.

जरमनी ने यहां पर बीयर का कारखाना लगाया है, जिस में सीब्रिव नामक बीयर तथा आलू की बीयर बनती है जो नशीली होती है.

माहे द्वीप में अत्याधुनिक होटल तथा कम महंगे होटल भी हैं जो महंगे होटलों से ज्यादा चित्ताकर्षक हैं.

सेशल्स की सरकार इस ओर भी बहुत सतर्क है कि कहीं अत्यधिक पर्यटन विकास से वहां की प्राकृतिक संपदा व आकर्षण खराब न हो जाए, इसलिए उसने विकास व निर्माण में अनेक प्रतिबंध भी लगा रखे हैं. फिर भी सेशल्स में सैलानियों की देखभाल व आतिथ्य खूब अच्छी तरह किया जाता है.

सेशल्स के स्वाधीन होने के साथ ही भारत से नया संबंध शुरू हुआ. एअर इंडिया ने बंबई से यहां के लिए साप्ताहिक उड़ान शुरू की. इन देशों के बीच कुल चार घंटे का सफर है.

माहे द्वीप के सुनहरे समुद्रतट बड़े लुभावने हैं. माहे से स्कूनर (दो मस्तूलों का जहाज) से सैलानी प्रासलिन द्वीप जाते हैं, जहां 5,000 कोको डीमर वृक्ष और काले तोते पाए जाते हैं. सेशल्स द्वीप के दक्षिण पूर्व में मारीशस रास्ते में पड़ता है.

दर्शनीय प्राकृतिक सौंदर्य व सामरिक महत्त्व वाला यह द्वीप समूह निराला है. डर यह है कि बड़ी ताकतों की सैनिक होड़ में यह सौंदर्य की छटा अपनी निर्मलता न खो दे. दोनों शक्तियों की मुठभेड़ में यह द्वीप बच पाएगा या नहीं यह तो भविष्य ही बताएगा.

नीलेश मल्होत्रा

जवान दिलों की धड़कन बनने की चाह

ऐसी सफलता बहुत कम लोगों को मिलती है जैसी नीलेश मल्होत्रा को मिल रही है. उस की पहली ही फिल्म 'दूरदूर पासपास' हिंदी, जरमनी और अंगरेजी भाषाओं में बन रही है. हिंदी भाषा में बनने वाली फिल्म की अभिनेत्री है अनीता सरीन तो जरमनी भाषा में बनने वाली फिल्म में उस के साथ अभिनेत्री है क्रिस्टल.

भेंटवार्ता • इब्राहीम 'अश्क'

नीलेश मल्होत्रा की पहली ही फिल्म हिंदी, जरमनी और अंगरेजी जैसे अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में बन रही है. पर इस अद्वितीय सफलता को पाने से पहले उसे किन हालात का सामना करना पड़ा?

नीलेश मल्होत्रा और अनीता सरीन-फिल्म 'दूरदूर पासपास' के एक प्रणय दृश्य में.
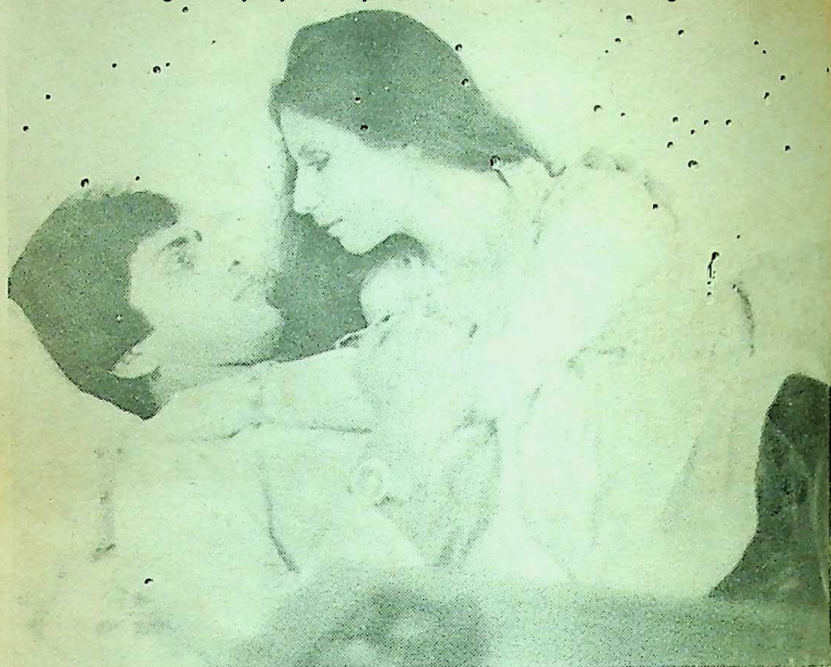
नीलेश मल्होत्रा फिल्म 'दूरदूर पासपास' के जरमन संस्करण में जरमन अभिनेत्री क्रिस्टले के साथ.

नीलेश मल्होत्रा की पहली फिल्म प्रदर्शित होने से पहले ही उसे राजश्री प्रोडक्शन, हरमेश मल्होत्रा, अशोक राय और कुछ अन्य निर्मातानिर्देशकों की फिल्में मिल जाना इस बात का सबूत है कि उस में ऐसी कोई बात जरूर है जो लोगों को उस की तरफ आकर्षित कर रही है.

नीलेश से जब मेरी मुलाकात हुई तो उस ने बताया, "फिल्मों में आने से पहले मैं ने बहुत पापड़ बेले हैं. मैं आगरा का रहने वाला हूं और वहां से मैं ने समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर (एम.ए.) परीक्षा पास की है. स्कूल और कालिज के जमाने से ही मैं स्टेज पर नाटक करता रहा, जिन्हें लोग काफी सराहते थे.

"उन दिनों मैं दिलीपकुमार से काफी प्रभावित था. उन का अभिनय मुझे बहुत सजीव लगता था. उन की फिल्में देख कर ही दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि मैं भी फिल्मों में काम करूं.

"1976 में अखिल भारतीय फिल्म प्रतियोगिता के लिए आवेदन किया. दिल्ली में रामानंद सागर, आत्माराम और अमीन सयानी ने मेरा साक्षात्कार किया और मुझे चुन लिया गया. 1977 में जब बंबई बुलवाया गया तो मुझे बड़ी खुशी हुई लेकिन यह खुशी कुछ दिन ही रही क्योंकि जिस फिल्म के लिए मुझे चुना गया था वह आज तक शुरू ही नहीं हुई है."

जब उचित निर्णय लिया...

"इस से तो आप काफी निराश हुए होंगे? बंबई जैसे महानगर में रहने के लिए सामने आने वाली समस्याओं का सामना आप ने कैसे किया?"

"बंबई आने के बाद एक लंबे संघर्ष के

शुरुआत हुई. कई फिल्मों में मुझे छोटीछोटी भूमिकाएं करने की पेशकश की गई. लेकिन मैं ने सोचा अगर एक बार भी कोई छोटी भूमिका की, तो सारा फिल्मी जीवन छोटीछोटी भूमिकाओं में उलझ कर तबाह हो जाएगा. अतः मैं ने कोई भी छोटीमोटी भूमिका स्वीकार नहीं की और रेडियो, दूरदर्शन व विज्ञापन फिल्मों से जुड़ गया जिस से मेरा खर्च चलता रहा.

"रेडियो पर मैं ने नाटकों में हिस्सा लेने के लिए स्वर परीक्षण दिया और रेडियो वालों को मेरी आवाज इतनी पसंद आई कि उन्होंने बज्मे उर्दू कार्यक्रम ही मुझे सौंप दिया. इस कार्यक्रम में मैं फिल्म वालों से साक्षात्कार करता था. तब कई बड़ेबड़े निर्माता, निर्देशक, अभिनेता और अभिनेत्रियों से मेरी मुलाकातें हुईं लेकिन इस से मुझे कोई फायदा नहीं हुआ.

"इसी बीच में मार्डलिंग और विज्ञापन फिल्मों में भी काम करता रहा. हालांकि चार साल इसी प्रकार गुजर गए, लेकिन मैं निराश नहीं हुआ. मैं इंतजार करता रहा कि कोई अपनी फिल्म में मुझे अभिनेता के रूप में ले, तो मैं फिल्मों में कदम रखूं."

आखिर फिल्म मिल ही गई...

"फिल्म 'दूरदूर पासपास' आप को कैसे मिली?"

"हुआ यह कि जरमनी से गोपाल गुप्ता और उन की पत्नी फिल्म बनाने के इरादे से बंबई आए थे. उन्होंने अभिनेता के लिए कई लोगों को देखा, लेकिन उन्हें कोई पसंद ही नहीं आया. इधर रेडियो और दूरदर्शन पर भी अभिनेता के लिए उन की तलाश जारी थी. किसी ने मेरा टेलीफोन नंबर उन्हें दे दिया. उन्होंने मुझे फोन किया. मैं उन से दोतीन वाक्य ही बोला था कि उन्होंने मुझ से कहा, 'आप की आवाज बहुत अच्छी है, मैं आप से फौरन मिलना चाहता हूं.' मैं ने उन से कहा कि मैं खुद ही आप से आ कर मिल लेता हूं. और उन से पता पूछ कर मैं उन से मिला.

"उन की फिल्म के निर्देशक दर्शन [illegible] भी उन के साथ थे. उन से बातचीत हुई और उन्होंने मुझे अपनी फिल्म की कहानी सुना दी. पूरी कहानी भी अभिनेता के इर्दगिर्द ही घूमती थी इसलिए मैं ने अच्छा मौका समझ कर फिल्म में काम करने के लिए अपनी स्वीकृति दे दी."

"फिल्म में शुरू में काम करते हुए आप को कैसा लगा?"

"कुछ भी विचित्र नहीं लगा, मैं तो पहले ही विज्ञापन और दूरदर्शन फिल्मों में काम कर चुका था. अतः कैमरे के सामने आना मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी."

नीलेश मल्होत्रा : प्रतिभा होते हुए भी फिल्मों में काम के लिए काफी इंतजार करना पड़ा.
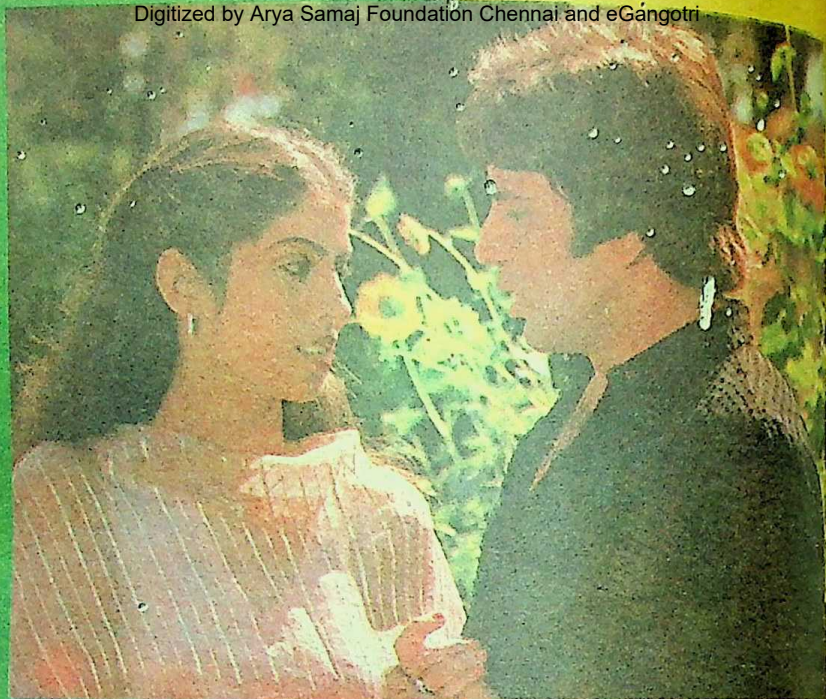
फिल्म 'दूरदूर पासपास' के एक अन्य दृश्य में नीलेश और अनीता सरीन.

"जरमनी और वहां के लोग आप को कैसे लगे?"

"हमारी फिल्म का पहला दृश्य ही जरमनी में फिल्माया गया. वहां 25 दिन की लगातार शूटिंग हुई. इतने दिनों में मैं ने अंदाजा लगाया कि जरमनी बहुत खूबसूरत और साफसुथरा देश है. वहां के लोग सीधेसादे, समय के पाबंद, मेहनती और महब्बत करने वाले हैं. जबान के पक्के हैं, जो बोलते हैं उस की कीमत जानते हैं. वहां मुझे जरमनी की दूरदर्शन फिल्मों में काम करने के लिए भी प्रस्ताव मिले. लेकिन मैं ने स्वीकार नहीं किए."

अब हिंदी फिल्मों में ही अभिनय...

"क्या अब आप विदेशी फिल्मों में काम करना पसंद करेंगे और कबीर बेदी की तरह विदेश में जा कर बस जाएंगे?"

"नहीं, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है. मैं अब हमेशा हिंदी फिल्मों में ही काम करूं[illegible]. मैं अपने देश और यहां की मिट्टी से मुहब्बत करता हूं. इस की खुशबू मुझे अच्छी लगती है."

"दर्शकों में आप अपनी कैसी छवि बनाना चाहते हैं?"

"मैं नौजवान दिलों की धड़कन बनना चाहता हूं. मैं ऐसी फिल्मों में ऐसा अभिनय करना चाहता हूं जिसे नौजवान पसंद करें भले ही उस फिल्म की कहानी कोरी [illegible] कहानी ही क्यों न हो."

"आप अब किनकिन फिल्मों में अभिनय कर रहे हैं?"

"मेरी राजश्री प्रोडक्शन की एक फिल्म जल्द ही शुरू होने वाली है. साथ ही हरमेश मल्होत्रा और अशोक राय की फिल्मों में भी [illegible] काम कर रहा हूं. बस यह समझ लीजिए [illegible] अगले चारपांच महीनों में मेरी चारपांच फिल्में शुरू हो जाएंगी."

पिछले छः महीनों की फ़िल्में

निर्देशिका उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. :निर्देशक
स. : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु. पा. : मुख्य पात्र

सितारा : गांव की गरीब लड़की की नामी हीरोइन बनने की कहानी. चोटी पर पहुंच जाने के बाद वह सच्चा प्यार नहीं पाती और वापस अपनी दुनिया में लौट जाती है. कुछ दिलचस्प प्रसंगों वाली यह एक सतही फिल्म है. नि. : मेराज, **मु.पा.** : मिथुन, जरीना, कन्हैयालाल. **स.**

आधारशिला : क्षेत्र चाहे कोई भी क्यों न हो, हर युवा को सफलता पाने के लिए संघर्ष की कई बाधाएं पार करनी होती हैं. 'आधारशिला' में इसी विषय को उठाया गया है. कमजोर व प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण की वजह से फिल्म कोई असर नहीं छोड़ पाती. **नि.** : अशोक आहूजा, **मु.पा.** : नसीरुद्दीन शाह, अनिता. **अ.**

शौकीन : एक कामेडी फिल्म जिस में तीन बूढ़े मौज करने के लिए हमेशा लड़कियों की तलाश में रहते हैं लेकिन बाद में उन्हें अहसास होता है कि उन की उम्र काफी आगे निकल चुकी है. **नि.** : बासु चटर्जी, **मु.पा.** : मिथुन, रति, उत्पल दत्त, अवतारकृष्ण हंगल, अशोककुमार. **म.**

बदले की आग : भाईबहनों का अपने परिवार से बिछुड़ना, बदला लेना और डाकुओं वाले प्रसंगों से भरपूर इस फिल्म में कदमकदम पर बेतुकी हिंसा है, कहानी कहीं भी नहीं है. **नि.** : राजकुमार कोहली, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, सुनील दत्त, जितेंद्र, रीना, स्मिता. **अ.**

अंगूर : विलियम शेक्सपीयर के नाटक 'कामेडी आफ एरर्ज' पर आधारित एक बेहतरीन हास्य फिल्म जिस में दो जुड़वां जोड़ों की हरकतें गुदगुदा जाती हैं. काफी समय बाद बनी एक अच्छी फिल्म, जिसे पूरे परिवार के साथ देखा जा सकता है. **नि.**: गुलजार, **मु.पा.**: संजीव, मौसमी, दीप्ति, देवेन वर्मा. **म.**

दासी : अंधविश्वासों का शिकार हो नायिका को अंधे नायक से विवाह करना पड़ जाता है. फिल्म की घटनाएं बेतुके प्रेम त्रिकोण की वजह से असहज हो जाती हैं. गीतसंगीत की दृष्टि से भी कमजोर फिल्म. **नि.** : राज खोसला, **मु.पा.**: संजीव, मौसमी, रेखा, विक्रम. **अ.**

हीरों का चोर : आम स्टंट फिल्मों के जानेपहचाने ढर्रे पर बनी फिल्म जिस में फार्मूले तो तमाम हैं लेकिन कहानी कोई नहीं. अभिनय व तकनीकी हिसाब से फिल्म सामान्य है. **नि.**: स.क. कपूर, **मु.पा.** : मिथुन, बिंदिया, अशोक. **अ.**

दिल का साथी दिल : कमला हासन की हिंदी में डब की गई चौथी फिल्म. 'बाबी' और 'जूली' की कहानियों के जोड़ से बनी कहानी. दोषपूर्ण डबिंग के कारण बेकार. **नि.**: शंकरन नायर, **मु.पा.**: जरीना बहाव, कमल हासन. **अ.**

तीसरी आंख : तीन भाइयों की कहानी. एक भाई बचपन में बिछुड़ जाता है और अंत में लाकेट की निशानी से मिलता है. आम फार्मूला फिल्म. **नि.**: सुबोध मुखर्जी, **मु.पा.**: धर्मेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा, जीनत, नीतूसिंह, सारिका, राकेश रोशन, अमजद. **स.**

दो उस्ताद : 'दो चोर' और 'दो ठग' आदि की शैली पर बनी आम फार्मूला फिल्म. बेजान और उबाऊ फिल्म. **नि.**: एस.डी. नारंग, **मु.पा.**: शत्रुघ्न सिन्हा, रीना, डैनी, विक्रम, जगदीप, नाजनीन. **अ.**

अशांती : चोटी के कलाकारों को ले कर बनाई गई अपराध फिल्म, फिल्म में तीन नायक और तीन ही नायिकाएं हैं. सभी मिल कर राजा भीष्म बहादुरसिंह और उस के गिरोह को समाप्त करते हैं. घटनाओं में गति. **नि.**: उमेश मेहरा, **मु.पा.**: राजेश खन्ना, जीनत, शबाना, परवीन बाबी, मिथुन, कंवलजीत, अमरीश पुरी. **स.**

नमकहलाल : एक सीधेसादे ग्रामीण की कहानी जो शहर में जा कर एक होटल मालिक की उस के मैनेजर के षड्यंत्रों से रक्षा करता है. अपराध फिल्म होते हुए भी हास्य का रोचक वातावरण छाया रहता है. **नि.**: प्रकाश मेहरा, **मु.पा.**: अमिताभ, शशि कपूर, वहीदा, परवीन बाबी, स्मिता पाटिल, ओम प्रकाश. **म.**

सवाल : अपराध जगत का बादशाह सेठ धनपतराय तस्करी और अवैध धंधों का बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित करता है, पर मकड़ी के जाले की तरह खुद ही उस में फंस कर रह जाता है. **नि.**: रमेश तलवाड़, **मु.पा.**: शशि कपूर, संजीवकुमार, वहीदा, रणधीर कपूर, पूनम ढिल्लों. **स.**

दो दिल दीवाने : मूल रूप से तमिल में बनी फिल्म का हिंदी संस्करण. एक सीधीसादी प्रेम कहानी में विदेश भ्रमण का गैर जरूरी प्रसंग जोड़ दिया गया है. 'एक दूजे के लिए' की कमल व रति की जोड़ी कहीं भी प्रभावित नहीं करती. डबिंग में काफी खराबियां हैं. **नि.**: के. बालाचंदर, **मु.पा.**: कमल हासन, रति. **अ.**

देश प्रेमी : देशभक्ति पर बनी बेहद सामान्य फिल्म जिस में दोहरी भूमिका में भी अमिताभ सामान्य लगता है. कलाकारों की भीड़ फिल्म में जुटा दी गई है, जो बिना किसी उद्देश्य के दर्शकों को सिर्फ मनोरंजन देती है. **नि.**: मनमोहन देसाई, **मु.पा.**: अमिताभ, हेमा, उत्तम, शम्मी. **म.**

तुम्हारे बिना : तलाक के बाद पतिपत्नी के बीच

पैदा हुए तनाव और उस से बच्चे पर पड़ने वाले प्रतिकूल असर की सहज फिल्म. नि.: सत्येन बोस, मु.पा.: सुरेश ओबराय, स्वरूप संपत. उ.

बेमिसाल : दो मित्र डाक्टरों की कहानी. डाक्टर प्रशांत चतुर्वेदी धन के लालच में गर्भपात और अवैध काम करने लगता है. डाक्टर सुधीर उसे अपने त्याग द्वारा सीधे रास्ते पर लाता है. नि.: ऋषिकेश मुखर्जी, मु.पा.: अमिताभ, राखी, विनोद मेहरा, अरुणा ईरानी, शीतल. म.

जीवनधारा : 'तपस्या' फिल्म की भांति संगीता नौकरी कर के अपने भाईबहनों का पालनपोषण करती है. परिवार के लिए एक युवती के त्याग की मार्मिक कहानी. नि.: त. रामाराव, मु.पा.: रेखा, अमोल पालेकर, सिपल कापड़िया, मधु कपूर, राकेश रोशन, कंवलजीत. उ.

प्यारा दोस्त : खजाने की खोज की ऊलजलूल फिल्म. असली कहानी को पीछे हटा कर अमजद खान अपनी भूमिका को तूल देता चला जाता है. नि.: इम्तियाज खान, मु.पा.: नसीरुद्दीन, रंजीता, अमजद, इम्तियाज खान. अ.

राजपूत : मनु और जानकी प्रेम करते हैं, पर जानकी की शादी धीरेंद्र से हो जाती है. अंत में धीरेंद्र को बचाते हुए मनु का बलिदान हो जाता है. मनु के भाई भानु की प्रेमिका कमली को राजा साहब के आदमी उठा ले जाते हैं. अंत में भानु का विवाह राजा की लड़की कामिनी से होता है. पात्रों और घटनाओं से भरपूर रोचक फिल्म, नि.: विजय आनंद, मु.पा.: हेमा, धर्मेंद्र, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, रंजीता, टीना, रणजीत. म.

श्रीमान श्रीमती : एक ऐसे युगल की कहानी है जो फिल्म 'बावर्ची' की तरह दुखी परिवारों में जा कर उन की समस्याएं हल करते हैं. अति नाटकीय घटनाओं से युक्त मद्रासी फार्मूले की पारिवारिक फिल्म. नि.: विजया रेड्डी, मु.पा.: संजीव, राखी, राकेश रोशन, दीप्ति नवल, अमोल पालेकर, सारिका, श्रीराम लागू. स.

शमां : शमां एक स्त्री के जीवन के उतारचढ़ावों की कहानी है, जिस की शादी असलम से तय होती है, पर परिस्थितिवश असलम के बड़े भाई विधुर यूसफ से हो जाती है. इस के बाद देवर के जुल्मों और मां बेटे के प्यार की कहानी बन जाती है. नि.: नईम बसीत, मु. पा.: गिरीश करनाड, शबाना, कुलभूषण खरबंदा, अरुणा ईरानी. स.

जियो तो ऐसे जियो : भाइयों के कहने पर कुंदन गांव छोड़ जाता है और बंबई जा कर अपने परिश्रम व ईमानदारी से उन्नति के शिखर पर पहुंचता है. भाई बरबाद हो जाते हैं. करुण मिलन के साथ अंत. नि.: कनक मिश्र, मु.पा.: अरुण गोविल, देवश्री राय, जयश्री गडकर, विजय अरोड़ा, नीलम. स.

प्यारा तराना : मूल रूप से तमिल भाषा में बनी फिल्म का डब संस्करण, संगीतमय फिल्म में सब से ज्यादा कमजोर पक्ष संगीत का ही रहा है. निर्देशन व फिल्म का प्रस्तुतीकरण भी सामान्य. नि.: के. बालाचंदर, मु.पा.: कमल हासन, जयप्रदा. अ.

प्रेम रहस्य : एक किशोर व बड़ी उम्र की युवती के बीच शारीरिक आकर्षण की कहानी जो अश्लील दृश्यों की वजह से अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर पाती. मूलतः यह फिल्म मलयालम भाषा में बनी थी. नि.: के. भारतन, मु.पा.: जया भारती, सोमन. अ.

अपना बना लो : एक बच्चे का पहले अपनी मां से अलग होना और फिर नाटकीय स्थितियों में उन दोनों का नहीं बल्कि नायकनायिका का भी मिलन. गीतसंगीत ठीकठाक. नि.: जे. ओमप्रकाश, मु.पा.: जीतेंद्र, रेखा. म.

उस्तादी उस्ताद से : 'मुकद्दर का सिकंदर' व 'हम किसी से कम नहीं' के प्रसंगों को ले कर बनी अस्वाभाविक फिल्म जिस में मारधाड़ की घटनाओं का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल किया गया है. नि.: दीपक लहरी. मु.पा.: मिथुन, रंजीता, विनोद. स.

ये नजदीकियां : विवाहित जीवन की महत्ता को स्थापित करने वाली इस फिल्म में नायक एक ही समय में अपनी पत्नी व प्रेमिका के साथ प्रेम करने की कोशिश करता है लेकिन सारा जीवन असंतुलित हो जाने की वजह से वह फिर अपने विवाहित जीवन में वापस लौट जाता है. नि.: विनोद पांडे, मु.पा.: मार्क जुबेर, परवीन बाबी, शबाना आजमी. उ.

आमने सामने : दोहरी भूमिका पर बनी एक सामान्य स्टंट फिल्म, जिस में तेज गति के सिवाय और कुछ नहीं है. नि.: असीम सामंत, मु.पा.: मिथुन, बिंदिया, आरती गुप्ता. अ.

रक्षा : आणविक प्रगति को रोकने के लिए खलनायक द्वारा किए गए षड्यंत्र को रोकने की कहानी इस फिल्म में है. फिल्म का कोई भी पक्ष स्वाभाविक नहीं है. नि.: रवी नगाइच, मु.पा.: जितेंद्र, परवीन, मौसमी, रंजीत, प्रेम चोपड़ा. अ.

नई इमारत : गांवों के नवनिर्माण पर बनी पुरानी शैली की प्रचार प्रधान फिल्म. नि.: राम पाहवा, मु.पा.: परीक्षित साहनी, सारिका, विद्या सिन्हा, रंजीता, मदनपुरी, चंद्र शेखर, हंगल, राकेश पांडे. अ.

श्रद्धांजलि : नायिका प्रधान फिल्म. श्रद्धा अपने पति व सास के हत्यारे से उस की हत्या कर के बदला लेती है. आम लीक से हट कर शुरू हुई फिल्म फार्मूलों के दलदल में समाप्त होती है. नि.: अनिल, मु.पा.: राखी, अरुण गोविल, सुरेश ओबराय, दीपक पाराशर, मदन कपूर, सोनिया साहनी. स.

कच्चे हीरे : एक अजनबी और पांच अपराधियों की कहानी जो लुक्का डाकू से मुकाबला करते हैं. पात्रों से भरपूर अपराध प्रधान फिल्म. नि.: नरेंद्र बेदी, मु.पा.: फिरोज खान, टीना, डैनी, देवकुमार, शक्ति कपूर, नरेंद्र नाथ, पेंटल. अ.

जोश : स्मगलरों के एक ऐसे बादशाह की कहानी जो भिखारियों से कर वसूल करता है. अकबर और बीरबल दो पत्रकार उस का भांडा फोड़ते हैं. नि.: राज न सिप्पी, मु.पा.: अमजद, देवेन वर्मा, विद्या सिन्हा, राज किरण. स.

सरकारी टेंडर

व्यंग्य • हरभजनसिंह हंसपाल

सरकारी दफ्तरों के कणकण में भ्रष्टाचार समाया है. आप किसी भी दफ्तर में किसी भी काम से चले जाएं, भ्रष्टाचारी सरकरी कर्मचारी आप का काम बिना कुछ लिए कभी नहीं करेंगे. विशेषकर सरकार का खरीद विभाग तो कर्मचारियों के लिए सोने की मुर्गी होता है.

सच पूछें तो सरकारी दफ्तर के लिए सामान खरीदना भी एक कला है. इस कला में कर्मचारी धीरेधीरे पारंगत होता है. खरीद विभाग में किसी भी सामान को खरीदने के लिए आवश्यक बजट और तीन टेंडरों (निविदाओं) की आवश्यकता होती है. चाहे आप को आलपिन खरीदना हो या जगुआर बमवर्षक विमान, इन सभी के लिए तीन टेंडरों की ही आवश्यकता होती है. तीन की संख्या इतनी महत्त्वपूर्ण है कि कुछ लोग तो तीन टेंडरों के माध्यम से देश को भी बेचने को

हम ने भी एक सरकारी काम करने के लिए टेंडर भरा, उस विभाग के सभी कर्मचारियों की मांगें भी पूरी कर दीं, मगर बजाए मुनाफे के फिर भी यह टेंडर हमें अच्छीखासी चपत लगा गया...

तैयार रहते हैं. कमी है तो सिर्फ उचित कमीशन दे कर तीन टेंडर देने वालों की.

हिंदू शास्त्रों में तीन ही देवता— ब्रह्मा, विष्णु व महेश— बताए गए हैं. भले ही आज के वैज्ञानिक युग में यह बात हास्यास्पद सी लगती है, पर आज जब मांबाप भारतीय शासन में पैदा किए गए दो या तीन बच्चों का भरणपोषण ठीक से नहीं कर पाते तो हिंदुओं के विश्वास के अनुसार इस संसार का पालन करने वाले विष्णु बेचारे अकेले क्या कर सकते हैं? सरकार का अन्न विभाग सब के लिए तो भरपेट अन्न जुटा नहीं सकता.

खैर, देवताओं की बात छोड़िए, नहीं तो आजकल के नेता देव नाराज हो जाएंगे. तो साहब, हम भी एक सरकारी दफ्तर में गए. गए नहीं, बल्कि ले जाए गए. एक व्यक्ति ने उस सरकारी दफ्तर को घटिया किस्म के एअर कंडीशनर सप्लाई कर दिए थे. घटिया क्या, बाद में तो यह भी पता चला कि उस ने पुराने एअर कंडीशनर ही रंगरोगन कर के सप्लाई कर दिए थे. अपने इस काले कारनामे को ढकने के लिए उस ने बाहर लकड़ी का एक सुंदर फ्रेम फिट कर दिया था जिस में नई जाली लगा दी थी. उस ने हम से कहा कि उस दफ्तर में पालिश का कुछ काम है.

वह हमें उस दफ्तर के इंजीनियर के पास ले गया. उस ने हमें पालिश का काम

ज्यों ही हम ने साहब की ओर देखा हम अवाक रह गए, क्योंकि उस जगह पर यह तो कोई दूसरा साहब था.
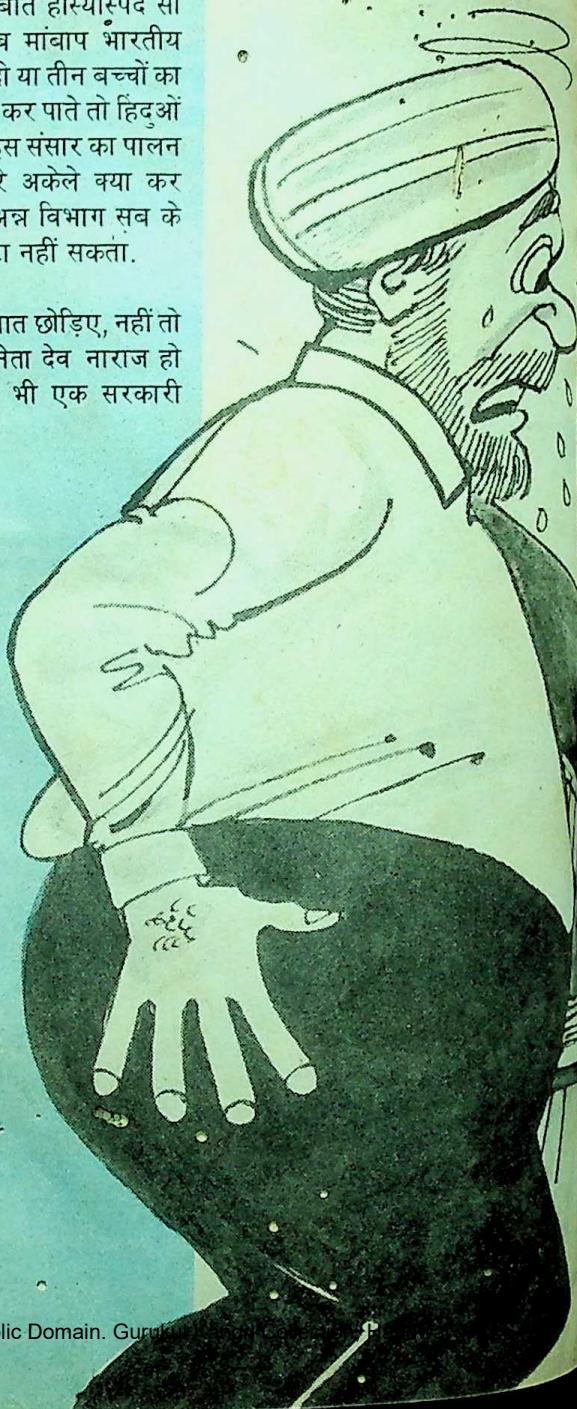
बतला दिया. रा[illegible] एअर कंडीशनर भिड़ाने वाले मित्र बोले, "यार, अपना टेंडर देते समय मेरे फ्रेमों के पैसे भी उसी में जोड़ लेना."

हम ने मन ही-मन सोचा, "पालिश का काम लगभग 300 रुपएं का होगा. उस में 300 और जोड़ कर 600 रुपए का टेंडर देना होगा. उसी दिन शाम को दफ्तर का एक चपरासी हमारे कारखाने में आ धमका.

"आप को साहब ने बुलाया है," उस ने आते ही कहा.

"ठीक है, हम कल टेंडर ले कर दफ्तर आ रहे हैं, उन से भी मिल लेंगे," हम ने कहा.

"नहीं, साहब ने दफ्तर में नहीं, घर पर बुलाया है," चपरासी बोला.

दूसरे दिन हम साहब के घर पहुंचे. अपनी खाने की मेज की ओर इंगित करते हुए साहब बोले, "यह जो मेज है न, पुराने ठेकेदार ने बनाई थी. अब यह डिजाइन पुराना हो गया है, आप हमें नए डिजाइन की खाने की मेज बनवा दीजिए."

"अच्छा, साहब," कह कर हम चलने को हुए तो साहब बोले, "आप कल तीन टेंडर ले कर दफ्तर आ जाइए; और हां, इस मेज की जो भी कीमत हो, वह भी उसी में जोड़ दीजिएगा. समझ गए न?"

"सब समझ गए, साहब," कह कर हम बाहर निकल आए. 300 का काम 600 तक तो पहले ही पहुंच चुका था. अब हमें उस में पांच सौ और जोड़ने पड़ेंगे. टेंडर 1,100 रुपए तक पहुंच गया. सुबह का समय था. हम अभी स्नानघर में ही थे कि दरवाजे की घंटी बज उठी. घंटी इतनी जोर से बजी, मानो आने वाला घोड़े पर बैठ कर आया हो. खैर, जैसेतैसे स्नान से निवट कर द्वार खोला. सामने उसी दफ्तर का बड़ा बाबू खीसें निपोरता हुआ अपने दांत दिखा रहा था.

"मैं दफ्तर जा रहा था, सोचा आप से मिलता चलूं. मैं रोज आप के घर के सामने से ही जाया करता हूं."

हम ने सोचा, जब यह रोज इस मार्ग से दफ्तर जाता है तो इसे आज ही यहां रुकने की क्या जरूरत आ पड़ी, पर चुप रहे.

"जी, मैं आप से यह पूछने आया था कि छोटे बच्चे का झूला कितने तक का बन जाता है?"

"यही कोई 400 रुपए तो लग ही जाते हैं," हम ने सहज भाव से उत्तर दिया.

"चार सौ रुपए? बात दरअसल यह है कि मैं उसी दफ्तर का बड़ा बाबू हूं. आप का काम करना मेरे ही हाथ में है. इस झूले की कीमत आप टेंडर में जोड़ दीजिए."

"जैसी आप की आज्ञा," हम ने शुद्ध हिंदी में कहा, "लेकिन आप को झूला किस के लिए चाहिए?"

"जी, बात यह है कि एक हफ्ते तक मेरी श्रीमतीजी को बच्चा होने वाला है. मैं ने सोचा आप से लगे हाथ झूला बनवा ही लिया जाए."

हम ने उस महापुरुष के मुखमंडल की ओर देखा. शक्लसूरत के हिसाब से उन्हें अब तक रिटायर हो जाना चाहिए था, पर आश्चर्य है कि वह अभी तक बच्चों के निर्माण कार्य में लगे हैं.

हम ने कहा, "ठीक है, झूला एक सप्ताह तक आप के घर पहुंच जाएगा."

टेंडर में झूले के 400 रुपए जोड़ने के बाद अब वह रकम 1,500 रुपए हो गई थी. हम ने सोचा जब सभी लोग लूट पर तुले हैं तो हम भी टेंडर को बढ़ा कर 2,500 का क्यों न कर दें.

दूसरे दिन हम तीन टेंडर ले कर दफ्तर पहुंचे. सभी हिस्सेदारों ने हमारा समुचित स्वागत किया.

साहब बोले, "देखिए, 15 दिन में आप के पास काम का आदेश पहुंच जाएगा, परंतु ध्यान रहे, उस से पहले मेरी मेज पहुंच जानी चाहिए."

"जरूर पहुंच जाएगी, साहब," कह कर हम बाहर निकले. हमें देख कर बड़े बाबू लपके, "आप बेफिकर रहें, आप का काम हो जाएगा." आगे से दफ्तर का फरनीचर का सारा काम आप को ही मिलेगा."

हम दफ्तर वालों की कृपा से पहले ही प्रसन्न थे. इस अतिरिक्त आश्वासन से गदगद

हो गए.

"पर एक हफ्ते तक झूला जरूर पहुंचा दें, भूलिएगा नहीं." बड़े बाबू यह कहना नहीं भूले.

हम भी कैसे भूलने वाले थे. हम ने कहा, "एक सप्ताह तक झूला अवश्य आप के घर पहुंच जाएगा. आप चिंता न करें."

हम तेजी से बाहर निकले. चपरासी ने जोर से नमस्कार किया. चपरासी के इस नमस्कार का एक निश्चित भावार्थ होता है, यह समझते हमें देर नहीं लगी. हम ने जेब से झट दो रुपए का नोट निकाल कर चपरासी की ओर बढ़ाया. चपरासी ने नोट जेब के हवाले किया और बोला, "हुजूर, आप को काम तो मिल ही जाएगा, मुझे आप से एक निशानी चाहिए. घर में पंखा रखने के लिए एक स्टूल की जरूरत है. आप की निशानी रहेगी, मालिक."

हम ने कहा, "काम तो मिलने दो, तुम्हें निशानी भी मिल जाएगी."

समय बीतता गया, हम ने अपने वादे के अनुसार खाने की मेज व झूला साहब लोगों के घर पहुंचा दिए और काम मिलने के आदेश की राह देखने लगे. धीरेधीरे तीन सप्ताह बीत गए. हम रोज आदेश मिलने का इंतजार करते, पर शाम को मन मार कर रह जाते. तंग आ कर एक दिन हम दफ्तर पहुंचे.

हम ने सीधे साहब के केबिन में प्रवेश किया और दरवाजे के पास से ही पूछा, "क्यों, साहब, पसंद आई खाने की मेज?" ज्यों ही हम ने साहब की ओर देखा हम अवाक रह गए. वहां तो कोई दूसरा ही साहब बैठा था. साहब व्यंग्य से बोले, "खाने की मेज वाले साहब का तबादला हो गया है. कहिए क्या काम है?"

"जी, वह पालिश का काम हमें मिलने वाला था," हम ने विनम्रता से कहा.

"मुख्यालय से आदेश आया है कि वह सरकारी काम रद्द कर दिया गया है," साहब ने बड़ी मासमियत से जवाब दिया

चित्रावली

गुणवत्ता नापने के लिए : पश्चिम बर्लिन में सरकार की मदद से उपभोक्ता प्रतिष्ठान द्वारा शुरू की गई टेस्ट पत्रिका की छः लाख कापियां बिकती हैं. इस में उपभोक्ता वस्तुओं की कड़ी जांच करने के बाद उस की असलियत लोगों तक पहुंचाई जाती है.
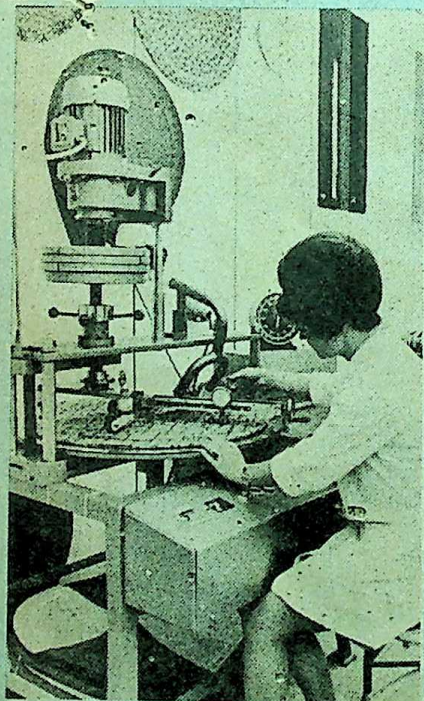
कहानी से वास्तविकता तक : एनीब्रेट फुकशबर बच्चों के लिए जो कहानियां लिखती हैं, उन में कल्पना की अनूठी उड़ान होती है. इन्हीं कल्पनाओं को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करने में भी उन्हें महारत हासिल है.

उद्योगों में महिलाएं : भारतीय व्या[illegible] मंडल की महिला सदस्याएं अब काफी सक्रि[illegible] हो गई हैं. प्रबंध व्यवस्था में बच्चों की दिलचस्पी जगाने पर पिछले दिनों उन्होंने बंबई में एक गोष्ठी की.
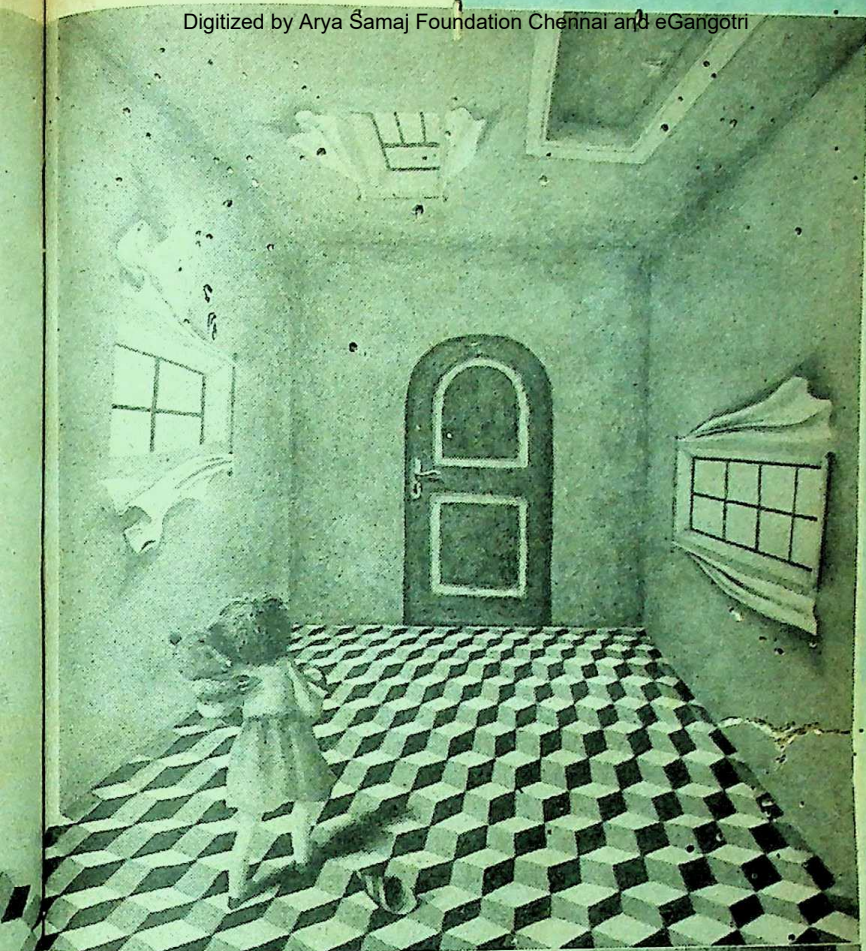
पोप इंगलैंड में : पिछले कुछ समय में पोप पर किए गए हमलों को ध्यान में रख कर हाल में उन की इंगलैंड यात्रा के दौरान सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था की गई.

फतह की तैयारी : पश्चिम जरमनी की जानीमानी अभिनेत्री क्लास किस्की की पुत्री नास्तास्जा किस्की ने हालीवुड की दुनिया को फतह करने का अभियान शुरू कर दिया है. खूबसूरत तो वह है ही, सैक्सी और समझदार भी है. ▼

▲
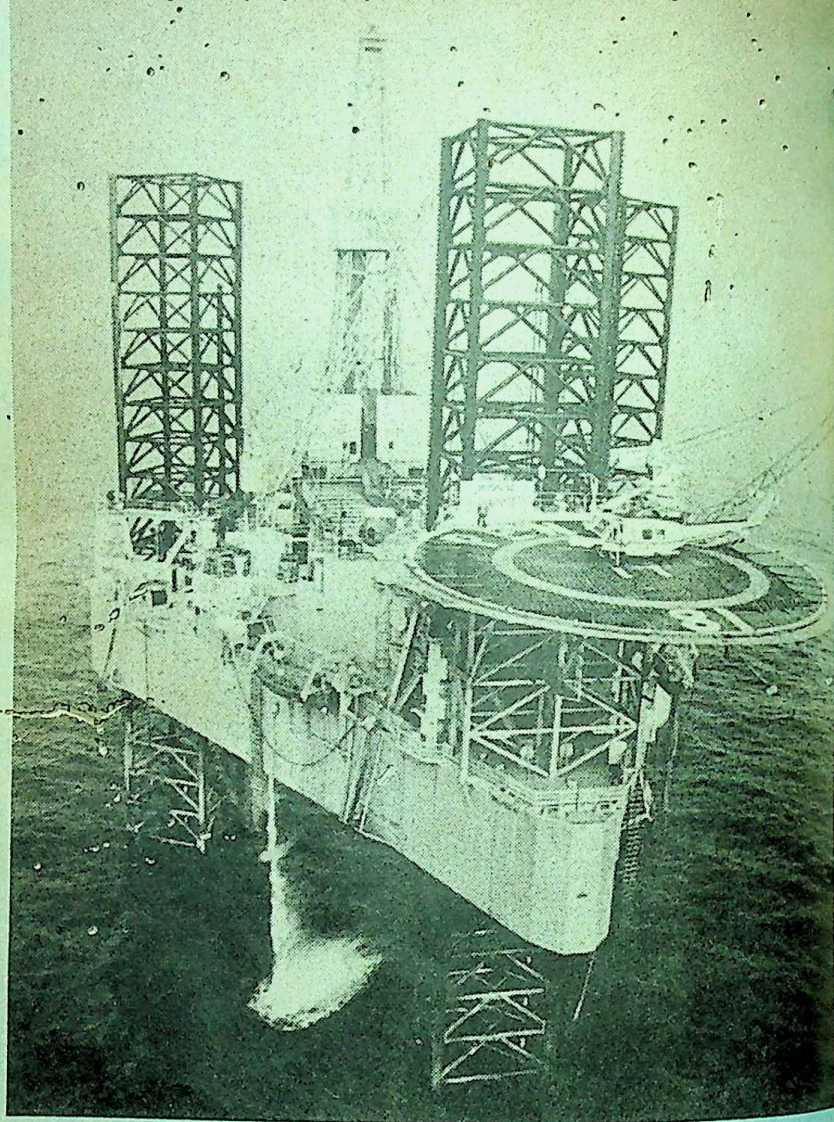
समुद्र में तेल की धार : हेलिगोलैंड से 60 किलोमीटर पश्चिम में ग्लेसनबर्ग में समुद्र में तेल का इतना भंडार मिला है कि उस से पश्चिम जरमनी की 21.4 प्रतिशत जरूरतें पूरी हो सकेंगी.

खेसारी दाल किस कीमत पर ?

लेख • रामभरोसेलाल गर्ग

गांधी प्रतिष्ठान द्वारा हाल में की गई एक पड़ताल से पता चला है कि रीवां जिले (मध्य प्रदेश) के पनामी, मानिका व झोटिया गांवों के 77.7 प्रतिशत आदिवासी व हरिजन खेसारी नामक जहरीली दाल खाने से अपंग हो गए हैं. भारत में खेसारी दाल के उपभोग और इस के कारण पंगु बना देने वाले रोग (जिसे चटरीमटरी कहा जाता है) की घटनाएं पहले भी प्रकाश में आई हैं. जून 1978 में रीवां जिले में की गई एक पड़ताल से यह तथ्य प्रकाश में आया था कि मध्य प्रदेश के अनेक गांव चटरीमटरी रोग से ग्रस्त उन व्यक्तियों, मुख्यतः भिखारियों से भरे पड़े हैं जो कभी शारीरिक रूप से स्वस्थ थे.

जुलाई, 1978 में किए गए एक अन्य सर्वेक्षण से यह भी पता चला था कि मध्य

खेसारी दाल खाने से अत्यंत भयानक रोग हो जाते हैं फिर भी सरकार इसे अन्य दालों के साथ मिला कर बेचने वालों के खिलाफ कारवाई क्यों नहीं करती?

प्रदेश के अन्य कई जिलों, मुख्यतः दुर्ग तथा राजानंदगांव, उत्तर प्रदेश के उन्नाव तथा महाराष्ट्र के भादरा जिले में खेसारी दाल खाने से लोगों में यह रोग बड़े पैमाने पर फैला हुआ था.

खेसारी दाल तथा उस से होने वाले चटरीमटरी रोग का इतिहास नया नहीं है.

चरक और सुश्रुत ने भी अपने चिकित्सा ग्रंथों में इस दाल के कुप्रभावों का उल्लेख किया है. आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली से संबद्ध ग्रंथ 'भाव प्रकाश' में इस दाल को 'त्रिपुटी' कहा गया है तथा इस की प्रकृति शीतल बताई गई है. लेकिन यह भी कहा गया है कि इस के अधिक प्रयोग करने से 'काव्यकब' (चटरीमटरी) रोग हो सकता है. खेसारी दाल के उपभोग से उत्पन्न हुए इस रोग के बारे में यूरोप में 16वीं शताब्दी में ही पता चल गया था. इस के पश्चात अनेक अफ्रीकी तथा एशियाई देशों में भी खेसारी दाल के घातक परिणाम देखने को मिले. यहां तक कि खेसारी दाल के प्रयोग से उत्पन्न घातक परिणामों से इटली, फ्रांस, स्पेन, रूमानिया, अल्जीरिया, रूस, ईरान आदि देश भी बचे नहीं हैं.

पंगु बना देने वाला चटरीमटरी रोग

खेसारी दाल के प्रयोग से उत्पन्न चटरीमटरी रोग (लैथीरिज्म) एक पंगु बना देने वाला रोग है. यह बहुत अधिक मात्रा में और अधिक समय तक खेसारी दाल के प्रयोग से हो जाता है. मध्य प्रदेश, बिहार व उत्तर प्रदेश के कुछ गांवों में इस रोग का सर्वाधिक प्रकोप है, क्योंकि इन गांवों के निम्न वर्ग के व्यक्तियों तथा खेतिहर मजदूरों का खेसारी दाल ही प्रमुख आहार है. भूस्वामियों द्वारा इसे गेहूं, जौ, या चने के साथ 30 से 80 प्रतिशत मिला कर खेतिहर मजदूरों या बंधुआ मजदूरों को दैनिक मजदूरी के रूप में दिया जाता है. स्वाद के लिए भूस्वामी भी इस दाल का प्रयोग करता है, लेकिन कम मात्रा में. खेतिहर मजदूरों द्वारा खेसारी दाल के प्रयोग की मात्रा अधिक होने के कारण वे इस रोग के चंगुल में फंस जाते हैं. खेसारी दाल को कभीकभी अरहर की दाल के साथ भी मिला कर बेचा जाता है, जिस से इस रोग के फैलने की संभावना रहती है.

खेसारी दाल के प्रयोग से उत्पन्न चटरीमटरी रोग से पीड़ित व्यक्ति अपनी टांगों को फैला नहीं पाता. घुटने के जोड़ों तथा अंगों में सख्ती आ जाती है तथा रोगी बहुत मुशकिल से चलफिर सकता है. रोगी जब तक चलने में पूर्णतः असमर्थ नहीं हो जाता, मांसपेशियों का कड़ापन बढ़ता जाता है. धीरेधीरे यह लकवे का रूप धारण कर लेता है.

इस रोग की चार अवस्थाएं होती हैं. पहली अवस्था में रोगी अपने पंजों के बल छोटेछोटे कदम रखता हुआ झटके के साथ चल पाता है. उस की एड़ियां जमीन को पूरी तरह छू नहीं पातीं. इस अवस्था में रोगी बिना लाठी के चलफिर सकता है. दूसरी अवस्था लकड़ी के सहारे चलने की होती है. कभीकभी रोगी आरंभ से ही सीधे दूसरी अवस्था में पहुंच जाता है. तीसरी अवस्था में मांसपेशियों की कठोरता तथा घुटने में झुकाव और टांगों के एकदूसरे के सामने हो जाने के कारण रोगी बिना दो लकड़ियों के चलफिर नहीं सकता. अंतिम अवस्था में टांगों में भारी कड़ापन आ जाने के कारण रोगी खड़ा हो कर चल नहीं पाता. परिणामस्वरूप वह अपना वजन हाथों पर डाल कर आगे रेंगता हुआ चलता है. यह स्थिति लकवे की तरह की ही होती है.

रोग से पुरुष अधिक प्रभावित

राष्ट्रीय पोषण संस्थान तथा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तिका में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि चटरीमटरी रोग से पीड़ित 70 प्रतिशत भूमिहीन श्रमिक हैं. आम तौर पर खेसारी दाल के प्रयोग से स्त्रियों की तुलना में 15 से 35 वर्ष की आयु के पुरुष अधिक प्रभावित होते देखे गए हैं.

खेसारी दाल, जिस का वानस्पतिक नाम 'लैथिस सेटिवस' है, एक प्रकार की घासपात है. यह देश के लगभग प्रत्येक भाग में उगाई जाती है. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार भारत में लगभग 20 लाख हैक्टेयर भूमि पर खेसारी दाल की खेती होती है. खेसारी दाल की प्रमुख विशेषता यह है कि यह किसी भी भूमि पर उगाई जा सकती है तथा इस के लिए विशेष देखभाल की भी आवश्यकता नहीं है. दिसंबर में गेहूं, चना
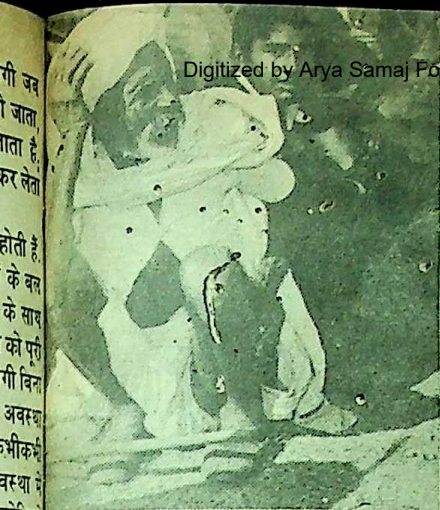
मजदूरी के रूप में खेसारी दाल पाने वाले मजदूर भयानक रोगों के शिकार होते देखे गए हैं.

और जौ के खेतों में गुलाबी फालसी रंग के फूल निकल आते हैं तथा कुछ ही समय में खेसारी की फसल तैयार हो जाती है.

देखा जाए तो यह गेहूं या चने से भारी होती है तथा सोयाबीन को छोड़ कर (जिस में प्रोटीन 40 प्रतिशत होता है) इस में प्रोटीन का अंश सर्वाधिक रहता है. इस के उगाने की लागत भी नहीं के बराबर होती है, क्योंकि इस के लिए न तो सिंचाई की आवश्यकता होती है और न खाद की ही. खेसारी दाल के अधिक मात्रा में अवैज्ञानिक ढंग से प्रयोग करने से 'चटरीमटरी' रोग हो सकता है.

इस दाल में एक प्रकार का स्नायविक विष विद्यमान रहता है. भारत में इस विनाशकारी दाल के उपभोग पर कानूनी रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया है. 1961 में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने अपने प्रतिवेदन में इस के घातक परिणामों की ओर संकेत किया था तथा उसी समय से केंद्रीय सरकार ने खेसारी दाल की बिक्री तथा उपभोग पर प्रतिबंध लगा रखा था. प्रतिवेदन में कहा गया था कि लोग आर्थिक व सामाजिक कारणों से इस दाल का उपयोग करते हैं. इस का प्रयोग भूमिहीन श्रमिकों (मुख्यतः आदिवासी, हरिजन) में है जो भूस्वामियों के ऋण से लदे होने के कारण उस से उस समय तक बंधे रहते हैं जब तक उन्हें ऋण से मुक्ति नहीं मिल जाती. भूस्वामी आम तौर पर इन लोगों को मजदूरी नकद न दे कर खेसारी दाल के रूप में देते हैं.

कुछ लोग स्वेच्छा से भी इस दाल का प्रयोग करते हैं. कुछ लोगों का विश्वास है कि खेसारी दाल बिल्कुल हानिकर नहीं है और कुछ लोग इस के स्वादिष्ट होने के कारण इस का प्रयोग करते हैं. खेसारी दाल सस्ती होती है, इसलिए इसे अरहर की दाल के साथ मिला कर तथा कभीकभी चने की दाल के साथ भी पिसवा कर बेसन के रूप में बेचा जाता है. सभी कानूनी प्रतिबंधों के बावजूद अब भी लगभग 50 लाख एकड़ भूमि में खेसारी दाल की खेती की जाती है.

राष्ट्रीय पोषण संस्थान के अनुसार खेसारी दाल आम दालों से अधिक पोषण युक्त है. इस में प्रोटीन की मात्रा अन्य कुछ दालों (सोयाबीन, चोला आदि को छोड़ कर) से अधिक है. लेकिन इस में व्याप्त स्नायविक विष के कारण इस का प्रयोग आम दालों की तरह नहीं हो सकता. हां, वैज्ञानिक विधि द्वारा इस के विष को कम कर के इसे खाने योग्य बनाया जा सकता है. लेकिन इसे निरापद बनाने की विधि इतनी जटिल है कि कृषक, मजदूर, आदिवासी लोग इस का प्रयोग नहीं कर पाते.

भूस्वामियों को खेसारी दाल से सस्ती और कोई ऐसी चीज नजर नहीं आती जिसे वे पारिश्रमिक के रूप में मजदूरों को दे सकें. दाल का उपभोग करने वाले मजदूरों को यह पता होता है कि यह दाल जहरीली होती है और इस के प्रयोग करने से वे अपंग हो सकते हैं, लेकिन उन के पास और कोई चारा नहीं होता. सब से दुख की बात यह है कि इस दाल के उपभोग के कारण हुए चटरीमटरी रोग का कोई इलाज भी नहीं है. सरकार को चाहिए कि पंगु बना देने वाली इस दाल की खेती पर प्रतिबंध लगा कर असहाय मजदूरों, किसानों व गरीब आदिवासियों की सुरक्षा करे. ●

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक

सरिता

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.
भेजने का पता: शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

बैंक कर्मचारी पुरस्कृत

कलकत्ता में पश्चिम बंगाल के पुलिस आयुक्त श्री निरुपम सोम ने स्टेट बैंक आफ इंडिया की न्यू अलीपुर शाखा के तीन कर्मचारियों –सुभाष दास, तुषार बसु और शिवाजी घोष को अद्भुत साहस और वीरता के लिए पुरस्कृत किया.

बैंक में पड़ी डकैती के समय उक्त तीनों कर्मचारियों ने एक डकैत को पकड़ लिया था लेकिन शेष डकैत बैंक से रुपए ले कर भागने में सफल हो गए.

उक्त डकैत की गिरफ्तारी के बाद इस के तीन अन्य साथियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया व लूटी हुई धनराशि में से दो तिहाई धनराशि भी बरामद कर ली गई.

–विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक: बल्लभदास बिन्नानी)

*

लाठी के बल पर चार रीछों को खदेड़ भगाया

मध्य प्रदेश विद्युत मंडल में सहायक के पद पर काम करने वाले कर्मचारी चैतराम रंजन ने सिर्फ लाठी के बल पर चार रीछों का मुकाबला किया और सकुशल बच निकला.

कान्हाकिसली विद्युत्त लाइन में सुधार के लिए कुछ कर्मचारी गए हुए थे. उन में चैतराम भी था. काम से छुट्टी पाने के बाद वह साइकिल से वापस लौट रहा था कि किसली से एक किलोमीटर आगे जंगल में नर और मादा रीछ तथा उस के दो बच्चों ने अचानक उस पर हमला कर दिया.

चैतराम के पास उस समय केवल लाठी थी. लेकिन उस साहसी युवक ने हिम्मत नहीं हारी और चारों रीछों का मुकाबला करता रहा.

काफी देर तक संघर्ष के बाद रीछ हार कर भाग गए.

–हितवाद, जबलपुर (प्रेषक: सतीश भैया कल्लू)

*

कालिज के छात्रों ने वृद्धा की जान बचाई

जयपुर में सवाई मानसिंह मेडिकल कालिज के दो छात्रों ने एक वृद्धा की जान बचा ली.

यहां त्रिपोलिया बाजार में कार से टकराने के बाद एक वृद्धा बेहोश हो कर सड़क पर गिर पड़ी थी. उधर से आ रहे उक्त दोनों खुर्शीद शेख और राधेश्याम मानावत ने तुरंत उस की देखभाल शुरू कर दी.

बुढ़िया की सांस रुक गई थी किंतु दोनों ने बुढ़िया के मुंह पर अपना मुंह लगा कर उसे कृत्रिम सांस दी और यह क्रम तब तक जारी रखा जब तक उस की सांस ठीक से नहीं चलने लगी.

बाद में उन्होंने बुढ़िया को उस के घर भेज दिया.

–राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक: पुरुषोत्तमलाल सोती)

लड़कियों की बहादुरी

बंबई में दो लड़कियों ने गले से चेन खींचने वाले दो बदमाशों को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया.

कुमारी हेमलता चारी अपनी सहेली के साथ पैदल जा रही थी कि अचानक सामने से साइकिल पर आते दो युवकों में से एक ने उस के गले से सोने की चेन खींचने की कोशिश की. चेन झटके से टूट कर उस के गले में अटकी रह गई. पर उन दोनों ने सड़क पर चलते अन्य लोगों के साथ उन बदमाशों का पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया.

—सांध्य टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक: मुकेश कुमार जैन 'पारस')

*

बचाने के प्रयास में खुद प्राण त्याग दिए

रोहतक की लालचंद कालोनी में पंकज शर्मा नाम के एक छात्र ने दो हरिजन सफाई कर्मचारियों को बचाने के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी. उस कालोनी में सीवरेज की सफाई करते समय विषैली गैस के कारण एक सफाई कर्मचारी अमेश्वर बाल्मीकि मर गया और पृथ्वी बाल्मीकि बेहोश हो गया.

पंद्रह वर्षीय पंकज शर्मा ने दोनों को बचाने की भरपूर कोशिश की लेकिन उन्हें बचाने में खुद विषैली गैस से मारा गया.

—दैनिक पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : भूपेंद्र अरोड़ा)

*

अपंग ने किशोरी को बचाया

बिलासपुर के एक अपंग युवक रसालसिंह ने जिस की एक बांह नहीं है, अपनी जान की बाजी लगा कर 12 वर्षीया एक किशोरी वनीता को डूबने से बचा लिया.

वनीता जब परीक्षा दे कर लौट रही थी तो मेग गांव के निकट अली खड्ड की तेज धारा में गिर गई. उस की सहेलियों की चीखपुकार सुन कर उधर से गुजर रहा यह अपंग युवक पानी में कूद पड़ा और लगभग आध घंटे के संघर्ष के बाद वह वनीता को किनारे लाने में सफल हो गया.

—दैनिक भास्कर, भोपाल (प्रेषक: इश्तियाकअली बहादुर) **(सर्वोत्तम)**

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है, लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी नए अंकुर रचनाओं पर पुन: विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे.

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप को रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे. इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

बंबई के बस अड्डे पर पहुंचा तो इंदौर जाने वाली बस तैयार खड़ी थी.

बस में अधिकांश सवारियां बैठ चुकी थीं. कुछ सीटें अभी भी खाली थीं. मेरे पास की सीट खाली थी. बस चलने की प्रतीक्षा में बैठे हुए यात्री अपनेअपने तरीके से समय गुजार रहे थे.

तभी एक अति सुंदर युवती ने बस में प्रवेश किया और जगह के लिए अपनी नजरों से एक बार पूरी बस का निरीक्षण किया.

बस में बैठे लोगों की नजरें उस की मनमोहक रूपराशि पर स्थिर हो कर रह गईं. जिन लोगों के पास की सीटें भर चुकी थीं, वे मन ही मन पास बैठने वालों को कोस रहे थे. जिन के पास की जगह खाली थी, वे उसे...

कहानी • सुरेश श...

मुक्तिबोध

"लीजिए, मुंह मीठा कीजिए," मिठाई की प्लेटें लिए मां ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा.

रूमाल से साफ कर के उस युवती को पास आने के लिए आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे.

राजेश एक बार तो पिता के निर्णय का विरोध नहीं कर पाया, पर तभी उस के पौरुष ने उसे झकझोर दिया और सभी सामाजिक रूढ़ियों को ताक पर रख उस ने शादी की अंगूठी उतार फेंकी...

"20 नंबर की सीट यही है न?" युवती ने . र नजदीक आ कर मुझ से पूछा.

"हां, यही है," थोड़ा सरक कर उस के लिए जगह बनाते हुए मैं ने जवाब दिया.

उस ने एक बार मुझे देखा, शायद यह सोच कर कि चलेगा. अपना थैला सीट के नीचे रख कर वह मेरे पास बैठ गई. अन्य सवारियों ने मुझे ऐसे घूर कर देखा, जैसे मैं ने कोई बहुत बड़ा अपराध कर डाला हो.

एक पत्रिका के पन्ने पलटते हुए मैं ने चोर दृष्टि से उसे कई बार देखा. सांचे में ढला इकहरा बदन. रूप और यौवन जैसे छलक पड़ रहा था. रुचिकर पोशाक और आकर्षक शृंगार. धीरेधीरे मेरे शरीर में एक अजीब सी

सिहरन रेंगने लगी. एक मीठी सी गुदगुदी का एहसास होने लगा.

ड्राइवर अपनी सीट पर बैठ चुका था. कंडक्टर ने सवारियों का निरीक्षण किया और सीटी बजाई. उसी के साथ बस चल पड़ी.

मैं ने सोचा, युवती का अतापता पूछा जाए. पर यह सोच कर कि न जाने यह किस स्वभाव की होगी, कहीं नाराज न हो जाए, मैं पूछने का साहस नहीं जुटा पा रहा था.

"आप इंदौर जा रहे हैं?" जब युवती ने स्वतः ही पूछा तो खुशी से मेरे चेहरे पर चमक आ गई.

"जी हां," मैं ने पत्रिका बंद करते हुए जवाब दिया और साथ ही पूछ भी लिया, "और आप कहां जा रही हैं?"

"मैं भी इंदौर जा रही हूं."

"तब तो रात भर का सफर साथ है."

"हां."

"बंबई में ही रहती हैं आप?"

"नहीं, मैं इंदौर की रहने वाली हूं. यहां बड़े भाई रहते हैं, उन से मिलने आई थी. आप भी शायद इंदौर के ही रहने वाले हैं?"

"इंदौर से 60 किलोमीटर दूर धार कसबे का रहने वाला हूं. मैं मेडिकल कालिज में अंतिम वर्ष का छात्र हूं. वहीं छात्रावास में रहता हूं." बात आगे बढ़ाते हुए मैं ने अपने बारे में जानकारी दी.

"मैं बी.एससी. के अंतिम वर्ष में हूं. गुजराती कालिज में पढ़ रही हूं. पिताजी डाक्टर हैं. डा. कैलाश का नाम तो सुना होगा आप ने?" बातों का सिलसिला उस ने भी आगे जारी रखा.

वह या तो काफी बातूनी थी या मेरी शिक्षा, शराफत, व्यक्तित्व के कारण उसे मुझ से बातें करने में संकोच नहीं हो रहा था.

कालिज के चुनावों में भारी खर्चे, उन में राजनीतिक नेताओं की अनावश्यक घुसपैठ, देश की वर्तमान राजनीति, बढ़ती हुई महंगाई, गरीबी आदि न जाने कहांकहां की बातों में हम व्यस्त हो गए.

कभीकभी ड्राइवर की सीट के सामने ऊपर लगे दर्पण पर मेरी नजर जम जाती थी. दर्पण इस प्रकार से लगा हुआ था कि उस में मेरा और उस का प्रतिबिंब. ऐसा लग रहा था मानो हम ने फोटो खिचवा कर वहां टांग दी हो.

तभी कंडक्टर ने बस की बत्तियां बुझा दीं.

सड़क के गड्ढों के कारण बस जब हिचकोले खाने लगती तो हम दोनों के शरीर एकदूसरे से स्पर्श कर जाते. शरीर की नसों में एक ज्वार सा आ जाता. दिल अजीब तरह से बेचैन हो जाता. खिड़की से आती हुई चंचल हवा से उस की साड़ी का आंचल उड़ कर कभीकभी मेरे ऊपर गिरता. वह मेरे विचारों की तरह बार खींच कर संभाल लेती. पर न तो आंचल के बस में था और न ही विचार मेरे नियंत्रण में थे.

बस में लोग या तो सो रहे थे या ऊंघ रहे थे. धीरेधीरे उस की आंखें भी नींद से बोझिल हो गईं और कुछ देर बाद उस का सिर मेरे कंधे से आ लगा. नवयुवती के जिस्म का स्पर्श, उस की उड़ती हुई खुशबूदार जुल्फें, लहराता हुआ आंचल– सब एक साथ मेरे संयम और संस्कारों की परीक्षा लेने लगे. सजग, स्थिर, शांत बना हुआ 'मेरी निंदिया तोहे लग जाए...' वाले भाव में अविचल बैठा रहा.

सूर्योदय के साथ इंदौर आ चुका था. बस के रुकते ही सभी यात्री अंगड़ाई ले कर खड़े हो गए. उस के बिछोह की कल्पना से मेरा मन भारी हो गया था.

"राजेशजी, यह मेरे पिताजी हैं... डा. कैलाश," उस ने अपने पिताजी से मेरा परिचय करवाया, फिर बोली, "पिताजी, ये राजेशजी हैं... मेडिकल कालिज के अंतिम वर्ष के छात्र हैं. छात्रावास में रहते हैं."

"बहुत खूब," डा. कैलाश प्रसन्न होते हुए बोले, "छात्रावास रास्ते में ही पड़ेगा बेटा. तुम को छोड़ते हुए हम निकल जाएंगे. शोभा बेटी, इन का सामान भी कार में रख दो."
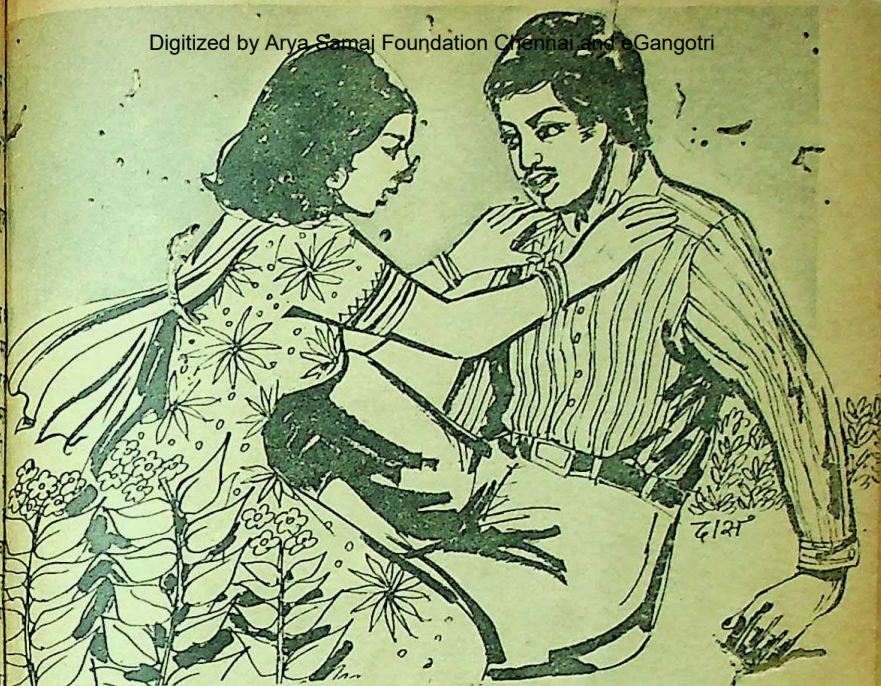
"बोलो राज, बात करोगे न अपने पिताजी से..." लजाते हुए शोभा ने पूछा तो राजेश क्षण भर के लिए दुविधा में पड़ गया.

"पिताजी, भौतिक शास्त्र का यह सिद्धांत मुझे सुबह से समझ नहीं आ रहा है. जरा आप मदद कीजिए न," शोभा खीज कर अपने पिताजी से कह रही थी.

"बेटी, अभी समय नहीं है, फिर कभी बता..."

"अरे, राजेशजी आप!" मुझे देखते ही अपने पिताजी की बात पूरी सुने बिना ही शोभा खुश हो कर बोली.

मैं ने कमरे में प्रवेश कर उस के पिताजी का अभिवादन करते हुए कहा, "छुट्टी का दिन था, सोचा आप भी घर पर होंगे, इसी लिए..."

"बहुत अच्छा किया तुम ने, बेटा," मेरी बात काट कर वह बोले, "इसी तरह कभीकभी चले आया करो. लो, शोभा, अब तुम्हें जो समझना है इसी से समझ लो और मेरा पीछा छोड़ो."

मैं ने सिद्धांत को एक बार पढ़ा और 10 मिनट में उसे समझा दिया.

उसे सिद्धांत समझाने के साथसाथ मेरी कल्पनाएं साकार हो गईं.

धीरेधीरे समय के साथसाथ हमारे संबंध घनिष्ठ होते गए.

एक दिन शहर से बाहर बगीचे में झाड़ का सहारा लिए पैर पसार कर मैं बैठा हुआ था. शोभा मेरी जांघ पर सिर रख कर लेटी हुई थी.

"सुनो, राज," शोभा तिनके से खेलते हुए बोली.

"हां, बोलो," उस के बालों की कुछ लटें उस के गालों पर फैलाते हुए मैं ने कहा.

"कल तुम घर जा रहे हो न?"

"हां."

"तो फिर अपने पिताजी से बात करोगे न?" लजाते हुए उस ने पूछा.

"पि...ता...जी..." और मेरे मस्तिष्क

में पिताजी की आकृति घूम गई– लंबाचौड़ा शरीर, रोबदार चेहरा, बड़ीबड़ी आंखें, कर्कश आवाज़, अकसर उन की जबान पर गाली और नाक पर गुस्सा रहता है.

मुझे 14 साल की उम्र में ही शहर पढ़ने भेज दिया गया था. कभी उन का प्यार देखा नहीं था. जब भी घर जाता तो यही नसीहतें देते, "शहर पढ़ने भेजता हूं, आवारागर्दी करने नहीं. जिस दिन तुम्हारी किसी इधरउधर की हरकत के विषय में मालूम पड़ा तो टांगें तोड़ कर रख दूंगा, समझे? एक भी साल फेल हुए तो पढ़ाई बंद कर के खेत में हल पकड़ा दूंगा, समझे?" इसी लिए पिताजी से सामना करने का मेरा कभी साहस नहीं होता था.

"पिताजी के नाम पर छूट गया न पसीना," मेरी नाक पकड़ कर जब शोभा ने कहा तो जैसे मेरी विचारश्रृंखला भंग हुई. बोला, "नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं," मैं ने कृत्रिम मुसकान के साथ कहा.

"अरे, रहने भी दो, हांको मत. पिछली दो बार से मुंह लटका कर चले आ रहे हो. अरे, इतना भी बच्चों की तरह क्या डरते हो. अब डाक्टर हो गए हो. अपने पांव पर खड़े हो गए हो, वयस्क हो. फिर अपने अधिकारों के लिए लड़ने में किस बात का भय है?" शोभा ने कहा.

थोड़ी देर तक मेरी खामोशी को झेल कर उस ने फिर पूछा, "बताओ न, राज, बात करोगे न पिताजी से?"

"हां...हां, करूंगा. क्या लिख कर दूं?" मैं ने उसे आश्वासन देते हुए कहा.

जब मैं अपने घर पहुंचा तो आधी रात से ज्यादा समय गुजर चुका था. मां ने दरवाजा खोला तो मैं ने उन के पांव छू कर उन का आशीर्वाद लिया. पिताजी सोए हुए थे. उन्हें जगाना अनावश्यक समझ कर मैं अपने कमरे में कपड़े बदल कर सो गया.

सवेरे उठने में मुझे देर हो गई. स्नानादि से निबट कर तैयार हो कर मैं पिताजी से मिलने बैठक में जा पहुंचा. बैठक में दो व्यक्तियों को उन के पास बैठा देख कर मैं दरवाजे पर ठिठक कर रह गया.

"भोपाल से दीनानाथजी आए थे. 60-70 हजार देने तक की बात कर गए हैं. दिल्ली वाले सेठ घनश्यामदास तो एकदम पीछे ही पड़ गए. रोज चिट्ठी आती है उन की. लिखते हैं कि एक लाख, डेढ़ लाख जो आप कहोगे लगा दूंगा. लेकिन, श्यामलालजी, मैं ने अभी तक किसी को हां नहीं की." पिताजी अपनी रोबदार आवाज में कह रहे थे.

मैं ने सोचा कि पिताजी भी कैसे आदमी हैं, जब देखो तब जमीनजायदाद की खरीदफरोख्त में लगे रहते हैं.

"आओ, बेटा, वहां क्यों खड़े हो?" मेरे ऊपर नजर पड़ते ही पिताजी ने कहा.

मैं ने बैठक में प्रवेश कर के पहले पिताजी के चरण छुए, फिर उन दोनों सज्जनों को भी नमस्कार किया.

"यह है मेरा पुत्र राजेश." पिताजी ने मेरा परिचय करवाया.

मैं ने सोचा कि उन दोनों के जाते ही मैं शोभा के बारे में बात करूंगा.

"हमें आप की सभी शर्तें स्वीकार हैं और भी आप जैसा कहेंगे, सब वैसा ही हो जाएगा. कोई कमी नहीं है हमारे घर," उन में से एक ने कहा. फिर जेब में से एक डिबिया निकाल कर पिताजी को देते हुए पुनः कहा, "मैं जानता था कि आप मेरी बात जरूर रख लेंगे. इसी लिए कुछ मामूली सी तैयारी के साथ आया था."

पिताजी ने डिबिया खोल कर देखा. हीरे की जगमगाती हुई अंगूठी देख कर उन की आंखों में खुशी की चमक दौड़ गई. तुरंत बोले, "अपने हाथ से ही पहना दीजिए राजेश को."

पिताजी ने जब यह कहा तो मुझे लगा कि मानो सीसा पिघला कर मेरे कान में डाल दिया गया हो.

अब मेरी समझ में आया कि सौदा जमीनजायदाद का नहीं, बल्कि मेरा अपना हो रहा था. मेरी खुशियों और मेरे सपनों का हो

रो लेने दे

इक उम्र पड़ी है
सब्र भी कर लेंगे,
इस वक्त तो जी भर के
हमें रो लेने दे.
—फ़िराक गोरखपुरी

रहा था. मेरे अपने सामने हो रहा था.

मैं एकदम से घबरा उठा. अचकचा कर बोला, "पिताजी..."

"शरमाओ नहीं, बेटा, पहन लो," पिताजी आदेशात्मक स्वर में बोले.

"पिताजी..."

"बहुत शरमीला लड़का है हमारा, श्यामलालजी. बुजुर्गों के सामने कभी बोलना जानता ही नहीं है."

"सब आप के संस्कारों की देन है, वरना आजकल के लड़के... बाप रे बाप..." श्यामलालजी अंगूठी लिए हुए प्रसन्नता से गदगद हो कर मेरे सामने खड़े थे. मैं ने अभी तक हाथ आगे नहीं बढ़ाया था.

"पिताजी, मुझे कुछ..." मैं ने एक बार फिर साहस करना चाहा.

"अरे, दिन भर पड़ा है तेरी बात सुनने को. अभी अंगूठी पहन लो," पिताजी ने धीमे किंतु दृढ़ स्वर में कहा.

अगर मैं गूंगा होता तो अपनी बात न कहने का मलाल न होता. अंधा होता तो इस तरह कुएं में धकेले जाने का सदमा तो न होता. सोचा, इस अंगूठी को पहन लिया तो फिर क्या शेष रह जाएगा कहने को?

मैं अपने विचारों में खोया हुआ था कि तभी श्यामलालजी ने मेरी उंगली में अंगूठी पहना दी.

"लीजिए, मुंह मीठा कीजिए," मां ने मिठाई की प्लेटें मेज पर रखते हुए कहा.

मैं शोभा का ध्यान कर, उस के विश्वास और वचन को याद कर पीड़ा से छटपटा उठा. अनासक्त भाव से उठ कर मैं बाहर बरामदे में चला आया.

भीतर से कहकहों का शोर आ रहा था. एक लड़का बेच कर खुश था, दूसरा खरीद कर. जिसे बेचा और खरीदा गया वह मानो ईंटपत्थर का मकान है, जमीन का कोई टुकड़ा है, मात्र सांस लेने वाला भावशून्य प्राणी है.

तभी मेरी नजर सड़क पर पड़ी. एक बकरे को रस्से से बांध कर दो व्यक्ति खींच रहे थे. पीछे से दो व्यक्ति डंडे से उस की पिटाई कर रहे थे. बकरा "मैं... मैं..." का हृदयविदारक शोर कर रहा था. कभी वह सड़क पर बैठ जाता, कभी मार खा कर चीखता. लेकिन वे लोग उसे निर्दयता से घसीटे जा रहे थे.

मैं करुणा से भर उठा. जब मुझ से नहीं रहा गया तो पास जा कर उन लोगों से पूछा, "क्यों सता रहे हो इस बेचारे को?"

"ईद आ रही है. शहर ले जा कर इसे बेचेंगे, बाबूजी, अच्छे पैसे मिल जाएंगे," उन में से एक ने कहा और फिर उस निरीह प्राणी को मारने और खींचने लगे.

तभी मुझे लगा जैसे अंगूठी के हीरे में शोभा की आकृति उभर आई हो और वह मुझ से कह रही हो, "डाक्टर हो गए हो. वयस्क हो. अपने अधिकारों के लिए लड़ने में किस बात का भय है?"

मुझे अपनी गरदन पर रस्से के कसाव का दर्द अनुभव होने लगा. मैं ने अपना बायां हाथ अंगूठी पर रख कर दबा दिया.

व्याकुल दशा में मैं ने बकरे की ओर देखा. बकरा अपनी मुक्ति के लिए अभी तक संघर्ष कर रहा था. अंत में उस ने अपने सींगों से प्रहार कर के उन के हाथ से रस्सा छुड़वा लिया और भाग खड़ा हुआ.

ग्लानि से, जोश से, क्रोध से, शोभा के खयाल से या न जाने कैसे, अंगूठी निकल कर मेरे हाथ में आ चुकी थी. उसे मुट्ठी में कस कर मैं मकान के भीतर आ गया और तेजी से उस कमरे की ओर बढ़ता गया जहां से अभी तक ठहाकों का शोर सुनाई दे रहा था. •

लघु व्यापार

रिकशा चलवाने का धंधा

रिकशा चलवाने का धंधा ऐसा है, जिस में बैठेबिठाए रोज आमदनी होती रहती है. इस धंधे के साथसाथ कोई और भी कारोबार किया जा सकता है, क्योंकि रिकशों के मालिक को कुछ खास करना नहीं पड़ता.

पिछले 10 सालों से इस धंधे में लगे शाहदरा, दिल्ली के श्री मनोहरसिंह के अनुसार यह धंधा कम से कम सात हजार रुपए में शुरू किया जा सकता है. जितने ज्यादा रिकशे होंगे, आमदनी भी उसी हिसाब से ज्यादा होगी.

रिकशा चलवाने के लिए ऐसे स्थानों का चुनाव करना चाहिए, जहां आबादी घनी हो तथा परिवहन की सुविधाएं अपेक्षाकृत कम हों. कई इलाकों में सड़कों अथवा गलियों की चौडाई कम होती है और भीड़ भी काफी रहती है. ऐसी सड़कों और गलियों में रिकशा आसानी से आजा सकते हैं. पुरानी दिल्ली के अतिरिक्त और शहरों अथवा कसबों में रिकशा भी आवागमन के मुख्य साधन हैं. मोटे तौर पर रिकशा की सवारी मध्यवर्गीय लोग ही ज्यादा करते हैं.

इस धंधे के लिए आदमी को कोई ऐसा ठिकाना बनाना चाहिए, जहां काफी लोग आतेजाते हों. इस ठिकाने के आसपास कुछ खाली जगह भी होना जरूरी है, जहां रिकशे खड़े किए जा सकें. साधारणतया मंडी, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा या सिनेमाघर के आसपास रिकशे ज्यादा खड़े रहते हैं, यहां से सवारियों के मिलने का भरोसा रहता है. अतः अगर इस के आसपास ही कहीं रिकशे किराए पर देने का काम शुरू किया जाए तो अच्छा है. ऐसे स्थानों पर उपयुक्त जगह न मिलने पर

एक बार थोड़ी पूंजी लगा दें और फिर रोज बैठेबिठाए 30 रुपए से 40 रुपए तक की आमदनी का जरिया बना लें.
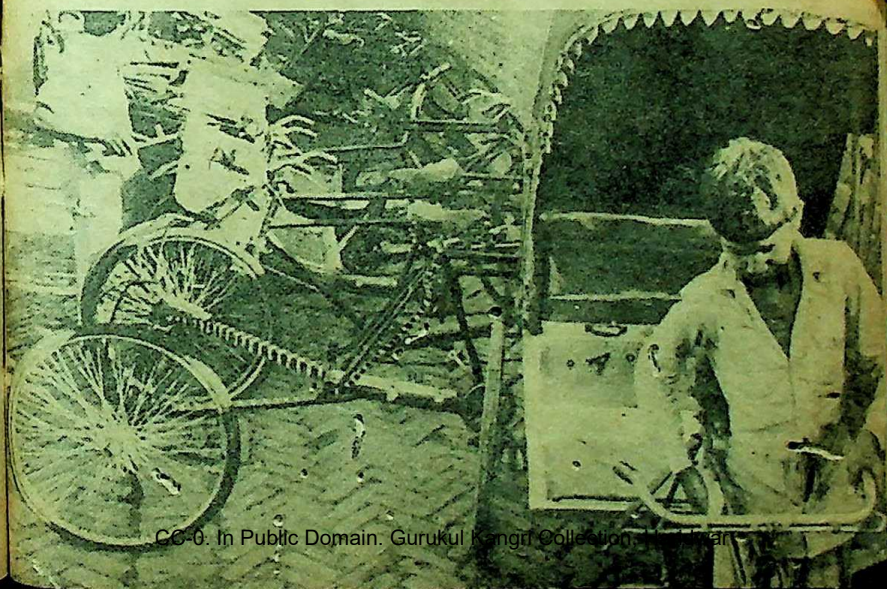
सरिता व मुक्ता में प्रकाशित
लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट
सेट नं. 3

सिपाही क्यों लड़ता है
इस्लाम और स्त्री
डायरी न लिखिए
प्रेम पत्र न लिखिए
योगी अरविन्द
गीता में अन्तर्विरोध
गायत्री मंत्र
गायत्री मंत्र: आ. व आ. के उत्तर
ट्रेड यूनियन
त्रासदी मुसलिम समाज की
भगवान की दुकानें
वेदों में नारी
स्वर्ग कहां है
आखिरत की अटकलें
हिन्दी साहित्य में बपौती
घाटे वाले बालाजी
भीष्म
संत कवियों के चमत्कार
उलहाने
वैदिक युग में मांस भक्षण
देवताओं के वैद्य—अश्विनी कुमार
महाभारत की ऐतिहासिकता
महाभारत की ऐतिहासिकता: आ. व आ. के उत्तर
दहेज और हिंदू धर्म
आप की लड़की प्रेम करती है
यूनियन
सौंदर्य प्रतियोगिता
वैज्ञानिक ज्ञान बनाम अध्यात्म ज्ञान
पूंजीपति
नियोग

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट.
रुपए अग्रिम भेजें.
वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.
सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली

कहीं भी ठिकाना बनाया जा सकता है, लेकिन रिकशा चालकों को यह जरूर मालूम रहना चाहिए कि उन्हें किराए पर रिकशे कहां से मिल सकते हैं.

इन दिनों एक रिकशे की कीमत तकरीबन 1,200 से 1,400 रुपए तक है. शुरू में अगर पांच रिकशे रख लिए जाएं तो रोज की आमदनी 30 रुपए के आसपास हो सकती है. भिन्नभिन्न शहरों में किराए की दर भी भिन्नभिन्न होती है.

रिकशों के मालिक आम तौर पर दो पालियों में रिकशे चलवाते हैं. पहली पाली सुबह छः बजे से शुरू होती है और शाम चार बजे खत्म होती है. दूसरी पाली शाम छः बजे से सुबह के चार बजे तक रहती है. एक पाली का किराया तीन से पांच रुपए तक होता है. कई जगहों पर इन पालियों के समय दूसरे होते हैं. अगर कोई रिकशाचालक दोनों पालियों के लिए रिकशा लेना चाहता है तो उसे छः से 10 रुपए तक देने पड़ते हैं. आम तौर पर दोनों पालियों के लिए रिकशा लेने वाले रिकशाचालकों को कुछ रियायत भी देनी पड़ती है.

इस धंधे में लगे व्यक्ति को साइकिल रिकशा की मरम्मत करने वाले एक मिस्तरी को भी स्थायी तौर पर रख लेना चाहिए, जो पंक्चर जोड़ सके तथा अन्य छोटीमोटी खराबियों को ठीक कर सके. जब ज्यादा रिकशे रहते हैं तो रोज किसी न किसी रिकशे में खराबियां पैदा हो ही जाती हैं. दूसरों से मरम्मत करवाने पर खर्च ज्यादा होता है. अगर स्थायी तौर पर कोई मिस्तरी हो तो प्रतिदिन एक रिकशे पर औसत खर्च पचास पैसे ही आता है. वह मिस्तरी अपने रिकशों के अतिरिक्त अन्य रिकशों तथा साइकिलों की मरम्मत का काम भी कर सकता है.

रिकशा में हमेशा अच्छी कंपनियों के टायर ही लगवाने चाहिए, क्योंकि दोनों पालियों में रिकशा चलने के कारण टायर ज्यादा घिसते हैं और अच्छी कंपनी के टायर न होने पर ये समय से पहले ही घिस जाते हैं. आम तौर पर टायरों की कीमत 22 से 28

रुपए तक होती है. टायर के अतिरिक्त ट्यूब भी अच्छी कंपनी की ही होनी चाहिए. ट्यूब आजकल आठ से 15 रुपए तक की आती है.

अगर अच्छी कंपनी के टायर हों तो एक टायर अमूमन एक साल तक चल जाता है. अगर दो पालियों में रिकशे अलगअलग लोग चलाते हों तो टायर ज्यादा घिसते हैं, क्योंकि रिकशा को आराम नहीं मिलता. लेकिन रिकशा एक ही आदमी के हाथ में रहने पर टायर ज्यादा दिन चल जाते हैं, क्योंकि एक रिकशाचालक 10 घंटे से ज्यादा रिकशा नहीं चला पाता.

आम तौर पर रिकशाचालक को जमानत के तौर पर कुछ रुपए रिकशा मालिकों के पास जमा कराने पड़ते हैं. पैसे न होने पर रिकशाचालक को किसी अन्य व्यक्ति की जमानत दिलवानी पड़ती है. किसी अनजान रिकशाचालक को रिकशा देने में हमेशा खतरा रहता है.

रिकशा चलाने का लाइसेंस नगर निगम अथवा नगरपालिका देती है, जो एक साल तक की अवधि का होता है. रिकशा का लाइसेंस अवश्य बनवा लेना चाहिए अन्यथा चालान हो जाता है.

आजकल कई बैंकों में रिकशों के लिए कर्ज देने की भी व्यवस्था है, जिसे बाद में किस्तों में चुकाना होता है.

बरसात के मौसम में यह धंधा कुछ मंदा हो जाता है. गरमियों में दोपहर के समय भी सवारियां ज्यादा नहीं मिलतीं. गरमियों में प्रति रिकशा के हिसाब से मिलने वाले किराए में भी कमी आ जाती है.

कई रिकशाचालक महीने के हिसाब से रिकशा किराए पर लेते हैं. इस स्थिति में महीने भर का किराया 150 से 170 रुपए तक होता है, जिसे महीने के प्रारंभ में ही ले लेना चाहिए.

रिकशे जैसेजैसे पुराने होते जाते हैं, उन में होने वाले खर्च बढ़ते जाते हैं. फिर भी एक रिकशा तकरीबन पांचछः साल बड़े आराम से चल जाता है. चल निकलने पर यह धंधा मनाफे का है. ●

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति,
की कहानियां –
क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?
क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?
क्या आप को सही राह दिखाती हैं?
नहीं...
वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...
गलत दुनिया में भटकाती हैं...
चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...
सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और
उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.
दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.
भेजने का पता: ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हमारे विद्यालय के एक शिक्षक कक्षा में आने के बाद किसी न किसी छात्र को पान लेने के लिए भेज देते थे. उन की इस आदत से छात्र बहुत परेशान थे.

एक दिन एक छात्र को उन्होंने पान लेने के लिए भेजा. वह पान ले कर आ रहा था कि प्रधानाचार्य मिल गए. उन्होंने उसे घूमता हुआ समझ कर डांटना शुरू कर दिया.

छात्र के यह बताने पर कि वह शिक्षक का पान लेने गया था और हर रोज कोई न कोई छात्र उन का पान लेने जाता है, प्रधानाचार्य ने उस के हाथ से पान ले लिया और कक्षा में आ कर शिक्षक से बोले, "श्रीमान, मैं तो मैदान में ही घूमता रहता हूं, आप पान लाने के लिए मुझ से कह दिया करें. लड़कों को भेज कर उन का समय बरबाद क्यों करते हैं?"

यह सुनते ही शिक्षक पानीपानी हो गए और फिर उन्होंने कभी किसी छात्र से पान नहीं मंगवाया.

— राजकुमार डोंगरे

*

उस समय मैं दसवीं कक्षा में पढ़ती थी. एक दिन कुछ शरारती छात्रों ने हमारी कक्षा के श्यामपट्ट पर लिख दिया. 'आज छुट्टी है.'

थोड़ी देर बाद हमारे कक्षा अध्यापक उधर से गुजरे तो उन की नजर श्यामपट्ट पर पड़ी, वह उसे मिटाने लगे.

उसी समय एक शरारती छात्र बोला, "देखो, चपरासी बोर्ड साफ कर रहा है."

इस पर उन्होंने शांत भाव से कहा, "छोटे बच्चों के लिए पिता को सब कुछ करना पड़ता है."

यह सुनते ही उन लड़कों पर घड़ों पानी पड़ गया.

—शैलबाला गुप्ता

*

मेरे कालिज में छात्रसंघ का चुनाव होने वाला था. हर कक्षा में लड़के अलगअलग गुटों में बंट गए थे. एक बार कक्षा में एक गुट के लड़के की पुस्तक दूसरे गुट के लड़के की कोहनी लग कर गिर पड़ी और वे एकदूसरे से किताब उठाने के लिए कहने लगे.

बात बढ़तेबढ़ते हाथापाई तक पहुंच गई. इसी बीच एक अध्यापक वहां आए और उन्होंने चुपचाप किताब उठा कर लड़के की ओर बढ़ा दी.

दोनों गुटों के लड़के यह देख कर बहुत शर्मिंदा हुए.

—रूपक राज भंडारी

*

मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता था, इसलिए मैं कक्षा में उपन्यास पढ़ा करता था. एक दिन सामाजिक ज्ञान के अध्यापक ने मुझे उपन्यास पढ़ते देख लिया.

उन्होंने मेरी खूब पिटाई की और उपन्यास ले कर चले गए. बाद में मैं ने अध्यापक कक्ष में जा कर उन से माफी मांगी कि आइंदा उपन्यास नहीं पढ़ूंगा.

इस पर वह बोले, "ठीक है. तुम जाओ, मैं दोतीन दिन में उपन्यास पढ़ कर लौटा दूंगा."

—मुरलीधर खत्री

*

मैं जब बी.एससी. की छात्रा थी तो एक दिन हमारे गणित के अध्यापक छात्राओं को केवल उत्तीर्ण होने भर के अंक प्राप्त करने पर डांट रहे थे.

एक छात्रा बोली, "श्रीमान, हम पास हो गए, फिर आप क्यों डांट रहे हैं?"

अध्यापक ने कहा, "अगर तुम्हें 100 रोटी बनाने को दी जाएं और उस में किसी तरह 33 रोटियां ही ठीक बनाओ और बाकी जला दो तो क्या तुम रोटी बनाने में निपुण कहलाओगी?"

—लीना बनर्जी

*

उन दिनों हम बारहवीं कक्षा में पढ़ते थे. एक दिन काफी ठंड थी. उस दिन हम ने न पढ़ने का निश्चय किया और पहले व दूसरे घंटे में 'सीसी' कर के ऐसा शोर मचाया कि पढ़ाई नहीं हो सकी.

लेकिन तीसरे घंटे वाले प्राध्यापक ने जब हम से 'सीसी' करने का कारण पूछा तो हमने कह दिया कि बहुत ठंड लग रही है. यह सुन कर अध्यापक मुसकरा कर बोले, "ओह, वाकई ठंड है. पढ़ाई तो अब तुम से होगी नहीं. क्या कहानी सुनोगे?"

हमने खुशी से 'हां' कहा तो वह कहानी सुनाने लगे, "अकबर के दरबार में संगीत का आयोजन होता था. संगीत सुनते ही सभी श्रोतागण झूमने लगते थे. यह देख कर एक दिन अकबर ने बीरबल से पूछा कि इन में से सच्चा संगीत प्रेमी कौन है?"

"यह जानने के लिए बीरबल ने दूसरे दिन संगीत सम्मेलन में एक तलवार लटकाई और कहा कि जो झूमेगा, उस की गरदन काट दी जाएगी. इस डर से सभी ने झूमना बंद कर दिया. लेकिन एक व्यक्ति तो तब भी झूम उठी, वह वाकई सच्चा संगीत प्रेमी था."

यह कहानी सुनतेसुनते पूरी कक्षा में शांति छा गई थी. यह देख कर उन्होंने आगे कहा, वहां पर तो एक संगीत प्रेमी मिल गया था लेकिन यहां तो अब एक भी छात्र ऐसा नहीं कि जिसे ठंड लग रही हो. इसलिए जल्दी से कापियां निकालो और लिखना शुरू करो."

—सुशीला नेगी

*

कालिज में मेरा एक सहपाठी था जिस के रिश्ते की बात उसी कालिज के एक शिक्षक की बेटी से चल रही थी.
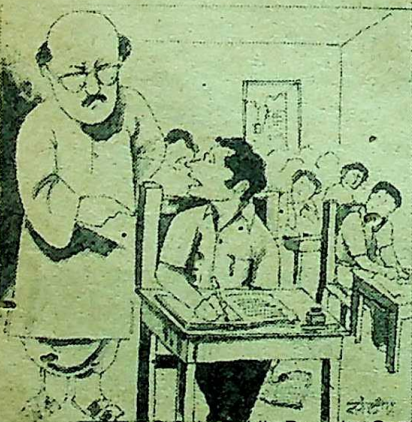
परीक्षा के समय जब वही शिक्षक निरीक्षण के लिए हमारे कमरे में आए तो मेरे मित्र ने उन्हें अपना रिश्तेदार समझ कर खुलेआम नकल करना शुरू कर दी. उस ने सोचा था कि शिक्षक उसे नहीं पकड़ेंगे.

लेकिन पहले उन्होंने उस लड़के को नकल करने से रोका और जब वह नहीं माना तो वह उसे फटकारने लगे. और अगले दिन पता चला कि उन्होंने उस युवक के साथ अपनी बेटी का रिश्ता तोड़ दिया.

—प्रकाश चौरागडे (सर्वोत्तम)

पत्राचार एक कला है

पत्र लिखना भी एक कला है. अच्छे और सोचसमझ कर लिखे पत्र जहां आपसी संबंधों को मजबूत बनाते हैं, वहां इस दिशा में की गई थोड़ी सी असावधानी से संबंधों में दरार भी आ सकती है. इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि पत्र लिखते समय शब्दों के चुनाव और वाक्य विन्यास पर पूरा ध्यान दें. आप जो बात कहना चाहते हैं, वह सीधेसादे किंतु प्रभावशाली ढंग से कहें.

पत्र मुख्य रूप से दो तरह के होते हैं. एक तो वैयक्तिक और दूसरे कार्यालय अथवा पेशे से संबंधित. पेशे से संबंधित पत्रों की एक

लेख • उर्मिला पांडेय
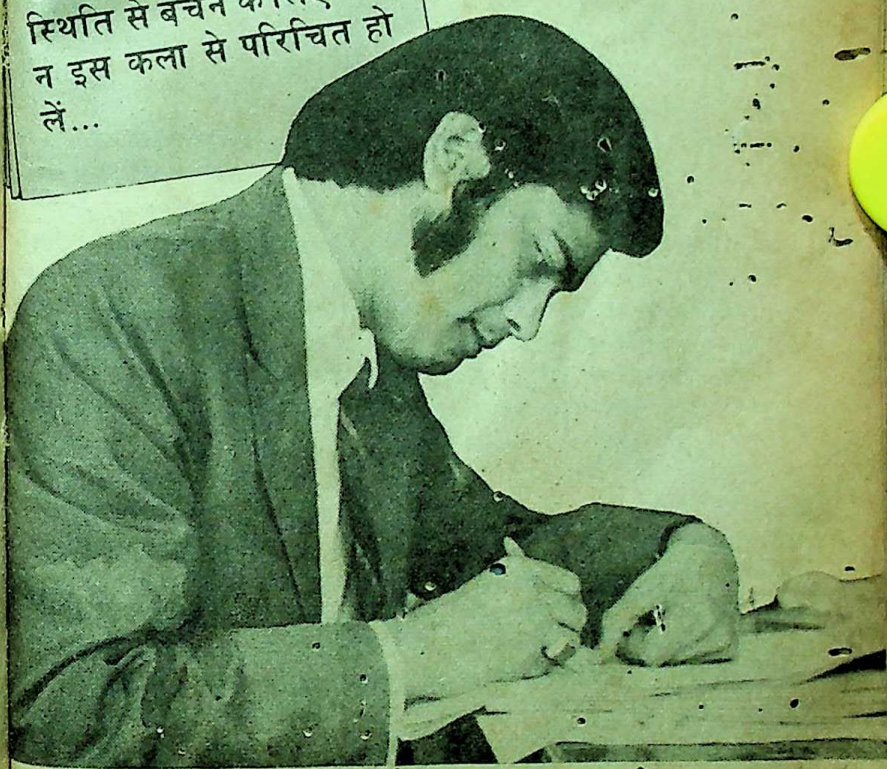
खास नपीतुली शैली होती है. वे उसी आधार पर लिखे जाते हैं. व्यक्तिगत पत्रों में अनौपचारिकता नहीं बरती जाती और उस में पेशे से संबंधित पत्रों की अपेक्षा बात कहने में अधिक आजादी से काम लेने की गुंजाइश रहती है.

कुछ लोग पारंपरिक ढंग से पत्र लिखने की अपेक्षा पत्र लेखन की शैली में नवीनता लाना चाहते हैं. यदि यह नवीनता परिष्कृत व कलात्मक हो तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि इस ढंग से पत्र लिखने वाला अधिक प्रभावशाली ढंग से अपनी बात कहता है.

लिखावट कैसी हो?

वैसे पत्र आप कैसा भी लिखें, इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि उस की भाषा एवं शब्दों की लिखावट स्पष्ट हो. कहीं ऐसा न हो कि पढ़ने वाला कुछ का कुछ पढ़ ले और बिना वजह परेशान हो.

मेरी एक रिश्ते की दीदी हैं. विवाह होने के बाद परंपरानुसार गोने तक विदाई रोक दी गई. लेकिन दीदी और उन के पति के बीच पत्रव्यवहार होने लगा. घर के लोग प्रसन्न हुए कि दामाद कितना अच्छा है जो अभी से बेटी का इतना खयाल रखता है.

लेकिन दोचार पत्रों के आदानप्रदान के बाद दीदी की स्थिति कष्टमय हो गई. पत्र पाने के बाद दीदी दो चार दिनों तक उदासी से उबर न पातीं. कभीकभी किसी दर्द का बहाना बना कर पूरा दिन बिस्तर पर पड़ी रहतीं.

बाद में पता चला कि पत्र में झूठ आरोप, उलाहने और धमकियां लिखी रहती थीं. दीदी के पति महोदय जाने किन कल्पित सूत्रों द्वारा पता लगा लिया करते थे कि दीदी अमुक दिन किस मेले या बाजार में किस के साथ बात कर रही थी. जब कि वास्तविकता यह थी कि उस रूढ़िवादी परिवार में मेला बाजार तो दूर सयानी लड़की का घर से बाहर निकलना भी वर्जित था.

दीदी ने थोड़ा पढ़नालिखना घर पर ही सीखा था. दामाद के इस व्यवहार ने मां के मन में गांठ डाल दी. रहने को दीदी व उस के परि बरसों से साथ रह रहे हैं. किंतु दामाद के प्रति बनी धारणा घर वालों के मन से नहीं निकली.

कुछ पत्र कुशलक्षेम या पारिवारिक सूचनाओं के आदानप्रदान के लिए लिखे जाते हैं. कुछ पत्र अनुराग भरे होते हैं, जिन में बहुत कुछ लिख कर भी लगता है अभी कुछ नहीं लिखा. ऐसे ही पत्रों के लिए किसी कवि ने कहा था :

पत्री आधा मिलन है, जो पहुंचे निज पास
वांचत ही सुख होत है, फेर मिलन की आस

भावातिरेक भरे ये पत्र रिश्तों की न मन की घनिष्टता पर आधरित होते हैं. प लेखन की इस भावातिरेकता को छोड़ क आइए सामान्य पक्षों पर विचार करें.

पत्र लिखते समय प्रायः लोग सोचते हैं कि पत्र ही तो है, कौन सा इस पर अंक मिलने है या कार्य बननेबिगड़ने की संभावना है. लेकिन बात ऐसी होती नहीं है. पत्रों का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव जरूर पड़ता है.

पत्र लिखते समय व्यर्थ का प्रदर्शन करें. बल्कि वास्तविकता ही लिखें.

शब्दावली कैसी हो?

लिखावट साफसाफ हो. कहीं 'अजमेर' की जगह 'आज मरे', 'बड़ी बही' की जगह 'बड़ी बहू' पढ़ने वाली स्थिति न पैदा हो जाए. अर्थ का अनर्थ न हो जाए. मात्र प्रदर्शन के लिए कठिन शब्दों का प्रयोग न करें. पत्र लिखते समय यह ध्यान रखें कि पत्र की भाषा व शब्दावली पत्र पाने वाले के बौद्धिक स्तर के अनुरूप हो. यह नहीं कि आप ने लाल प्याज की जगह 'नृपकंद' लिख दिया. पत्र पाने वाला इसे 'राजा की जड़ या राज गांठ' समझ ले या उसे शब्दकोश का सहारा लेना पड़े.

अपने भाषा ज्ञान के प्रदर्शन के लि क्षेत्रीय शब्दों का प्रयोग उन के लिए न क जो उस भाषा से अनभिज्ञ हों. मेरे गांव के व्यक्ति काफी दिनों से पंजाब में सपरिवार रहे हैं. उन के पिता आदि घर पर रहते हैं. ए बार घर से पत्र आया कि इस बार प्याज उपज बहुत अच्छी हुई है. उन्हीं दिनों क गांव जा रहा था. उन्होंने पंजाबी भाषा

ज्ञान की रौ में पिताजी को लिख दिया कि वह व्यक्ति आने लगे तो उस के हाथ थोड़े 'गंडे' भेज दें.

घर वालों ने गंडे का मतलब 'गंडे ताबीज' से लगाया. इस के लिए ओझा और ज्योतिषी की खोज शुरू हुई. मां अलग रो रही थी कि जाने बेटे को क्या हो गया है. बाद में पता चला कि 'गंडे' से उन का मतलब प्याज से है. तब तक अनायास ही अच्छी रकम फुंक गई थी.

भाव प्रदर्शन अधिक न करें

अधिक भाव प्रदर्शन न करें. जिन से हमारा परिचय होता है, उन से मिलने की स्वाभाविक उत्सुकता होती है. इसे सहज रूप में व्यक्त करें. अपनी बौद्धिकता के प्रदर्शन में ऐसा न हो कि आप की बौद्धिकता का उपहास हो जाए.

'मैं आप के दर्शन को व्याकुल हूं,' 'जाने कब सौभाग्य होगा.' 'शीघ्र ही दर्शन होगा', 'रोज ही स्वप्न में दर्शन होते हैं' आदि उद्गार प्रत्येक के लिए करना अटपटा लगता है. 'दर्शन' आदि का प्रयोग हम उन के लिए करते हैं, जिन के लिए विशेष श्रद्धा होती है. अपने से छोटों या सामान्य संबंधों के लिए इस तरह की अभिव्यक्ति अच्छी नहीं लगती. हर किसी के प्रति मन में विशेष अनुराग या विशिष्ट भावनाएं भी नहीं होती हैं.

झूठे वादे भी न करें

प्रदर्शन या पत्र के विस्तार के लिए झूठे वादे न करें. जैसे यदि निकट भविष्य में आप की उस व्यक्ति से मिलने की योजना नहीं है तो आप यह कदापि न लिखें कि जल्दी ही मिलेंगे. कुछ लोग तो झूठ ही मिलने का संभावित समय भी लिख देते हैं. बारबार ऐसा करने से आप की साख घटती है.

• बनावटी आग्रह भी न करें. झूठे

आश्वासन व... में रहने वाले कुछ लोग अपनी महत्ता को बढ़ाचढ़ा कर प्रदर्शित करते हैं. उसी आकर्षण से खिंचे कुछ युवक सपनों का संसार लिए महानगरों की भूलभुलैया में आ कर भटक जाते हैं. और तंग जिंदगी जीने को विवश हो जाते हैं.

निकट संबंधों के पत्राचार में गिलेशिकवे भी होते हैं. लेकिन जहां तक हो सके गिलेशिकवे न करें. ऐसा करने से दुराव बजाए घटने के बढ़ेगा. संतुलित एवं नम्र शब्दों में शिकायत करें. यदि किसी ने आप से व्यर्थ के गिलेशिकवे किए हैं, क्षोभ दिया है, तो भी संयम न खोएं. धैर्यपूर्वक सहज हो कर स्पष्टीकरण दें.

गलतफहमी पैदा न होने दें

मुंह दर मुंह की बात और होती है, आप खंडन या समर्थन तुरंत कर देते हैं. किंतु पत्राचार से पैदा हुई गलतफहमी ज्यादा देर तक रहती है, क्योंकि स्पष्टीकरण देने में ... है. जरूरी नहीं कि स्पष्टीकरण मांगा ही जाए. तब गलतफहमी बनी ही रह जाती है. अच्छा हो कि आप उलझन या आवेश में पत्रोत्तर न लिखें.

किसी की पत्र का उत्तर देते समय पत्र इतना छोटा भी नहीं लिखना चाहिए कि पाने वाले को लगे कि आप ने बला टाली है. पत्रोत्तर भेजने से पहले पत्र एक बार पढ़ लें. कोई समस्या, जिज्ञासा हो तो उस का समुचित समाधान दें. कोई संवाद हों तो वह प्रेषक की मनः स्थिति के अनुसार हर्ष, सहानुभूति या विषाद की भावना को व्यक्त करे. प्रेषक की भावनाओं को नजरअंदाज न करें. अपने पत्र का समुचित उत्तर न पा कर उसे लगेगा कि आप के मन में आत्मीयता नहीं है. आवश्यक बातें छूटने न पाएं.

मेरी एक सहेली के पति कुछ दिनों के लिए बाहर गए थे. बेहतर नौकरी पाने के लिए उन्होंने कुछ जगह आवेदन कर रखा था. पत्नी को कह गए थे कि यदि कहीं से कोई संबंधित सूचना आए तो तुरंत ही पत्र के साथ

उन्हे... पत्र... या व... देर... मिल... आरे... या बी... हो, ... ठीक... दुर्घट... कर ... हो ज... की म... जैसे ... अंधवि... संबंधि... किसी

उन्हें भेज दें. संयोग से सूचना आई. पत्नी ने पत्र भी लिखा, किंतु सूचना का उल्लेख करना या कागज भेजना भूल गई. जब याद आया तो देर हो चुकी थी. अनुराग भरे पत्रों के बदले मिली पति की खीझ एवं दायित्वहीनता का आरोप.

बीमारी आदि की सूचना देने से बचें

दूर रह रहे संबंधियों को अपनी उलझन या बीमारी आदि की सूचना यदि आवश्यक न हो, तो न दें. समस्या सुलझ जाने या बीमारी ठीक हो जाने पर लिख दें. जरा सी चोट को दुर्घटना या सर्दीजुकाम को बीमारी का नाम दे कर न लिखें, क्योंकि यह पढ़ कर उन्हें चिंता हो जाएगी. साथ ही बीमारी की हालत में आप की मदद न कर पाने का दुख भी होगा.

अंधविश्वासों से प्रेरित पत्र न लिखें. जैसे सिर पर कौवा बैठना मृत्यु सूचक अंधविश्वास है. इस के निवारण के लिए संबंधित व्यक्ति की मृत्यु की झूठी सूचना किसी निकट संबंधी को दे दी जाती है. उन के रोने धोने से यह मान लिया जाता है कि अशुभ टल गया. किंतु ऐसी झूठी सूचना पाने वाले का अनायास ही हालबेहाल हो जाता है. कई बार तो भयंकर दुर्घटनाएं घट जाती हैं.

यदि आप खेल या कला, साहित्य में चर्चित हैं तो आप के प्रशंसकों के पत्र आते होंगे. ऐसे लोगों का मान रखना आप का कर्त्तव्य है. किंतु उन की भावनाओं के उत्तर में आप भूल कर भी ऐसे पत्र न लिखें कि वे अपने मन में कोई खुशफहमी या गलतफहमी पाल लें.

किसी को यदि आप के प्रोत्साहन या प्रेरणा की जरूरत है तो अवश्य दें, ताकि वह हताशा से बच सके.

इस प्रकार मैत्री के पत्र, रिश्तेदारी के पत्र, स्नेह संबंधों के पत्र और सामान्य संबंधों के पत्र, सब की अपनी अलग सीमा और गरिमा होती है. अतः स्वस्थ संतुलित पत्राचार बनाए रखें. जीवन के अन्य संतुलित आचरणों की तरह संतुलित पत्राचार भी आप के व्यक्तित्व में संतुलन एवं निखार लाएगा. ●
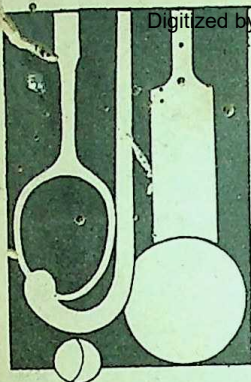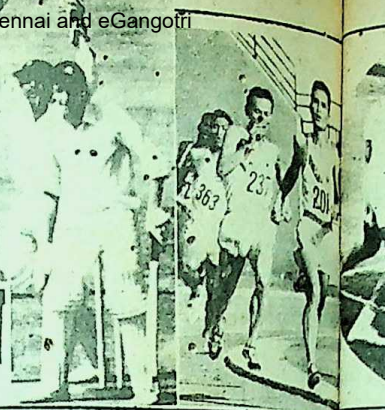
क्या खेलों में ईश्वर का दखल भी चलता है?

जून के मध्य में भारत की महिला हाकी टीम दिल्ली में थी, तीन टेस्ट मैचों की शृंखला खेलने के लिए उसे सोवियत संघ जाना था, इसलिए दिल्ली में उन के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविर लगाया गया था. परंतु इस शिविर में कायदे से प्रशिक्षण का कोई काम नहीं हो पा रहा था. कभी तो मैदान खेलने लायक नहीं मिलता, कभी सभी खिलाड़ी नहीं आतीं तो कभी प्रशिक्षक महोदय गोल हो जाते.

मास्को रवाना होने से एक दिन पहले निर्धारित समय पर सभी लोग जमा हुए और बारीबारी से मंदिर, गुरुद्वारा, गिरजाघर व मसजिद में गए, अपनी जीत की दुआ मांगने.

लेकिन अफसोस सही किस्म का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बजाएं अंतिम घड़ी में ईश्वर की यह आराधना सफल नहीं हो सकी. पहला टेस्ट मैच भारतीय टीम 1-2 से हारी और दूसरा 1-3 से. इसी के साथ शृंखला उस के हाथों से खिसक गई.

लगता है तैयारी करने व पूजा करने, दोनों ही मामलों में रूसी टीम भारतीय टीम से बाजी मार गई.

एशियाई खेलों की तैयारी

एशियाई खेलों की विशेष आयोजन समिति ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा था कि तमाम निर्माण कार्य जून के आखिर तक पूरे हो जाएंगे.

लेकिन, अब जब कि जून का महीना खत्म हो गया है, तसवीर का दूसरा ही रुख सामने आ रहा है. प्रायः सभी स्थानों पर निर्माण कार्य अभी जारी है, कब पूरा होगा, कोई भी बता सकने की स्थिति में नहीं है.

पदक की क्या अहमियत है?

यह बात तो अब काफी पुरानी हो गई कि भारत का नाम खेलों की दुनिया में ऊंचा करने वालों के साथ यहां क्या सलूक किया जाता है. लेकिन ऐसे समय में भी जब सारा
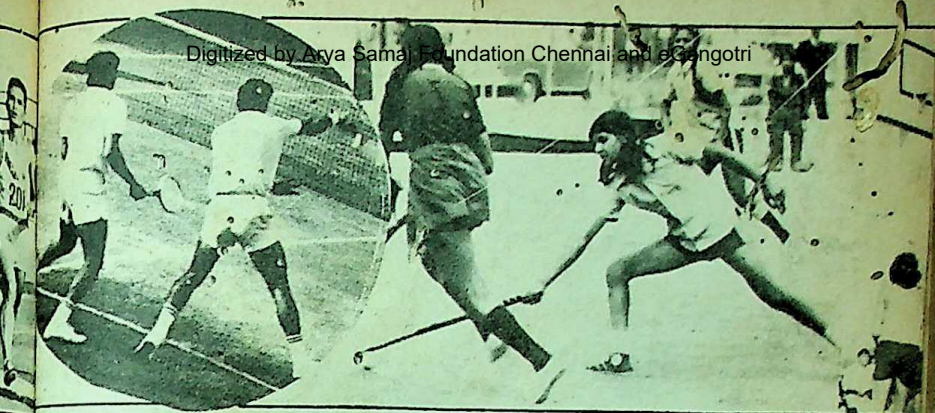
श एशियाई खेलों की तैयारियों में लगा हो, टे से छोटा नेता भी लोगों को ज्यादा से यादा खेल सुविधाएं जुटाने का आश्वासन दे हा हो, जालंधर के ओलिंपियन व एशियाई लों के रजत पदक विजेता सोहनसिंह की लत सब की आंख खोल देने वाली होनी हिए. उस गरीब पर रहम खाने की किसी ने रूरत तक नहीं समझी.

सोहनसिंह ने 800 मीटर की दौड़ में जो दक जीता था और जिसे देखदेख कर वह गर्व फूल उठता था, उसी पदक को उसे बुझे मन इसलिए कौड़ियों के मोल बेचना पड़ा, कि कुछ दिन तो उस के परिवार को भरपेट ना मिल सके.

सेना से अवकाश प्राप्त करने के बाद हनसिंह ने मजदूरी की, चौकीदारी की और क सिनेमाघर में गेटकीपरी भी की, लेकिन रीबी व भुखमरी की लड़ाई वह नहीं जीत या.

1979 में उसे लड़कियों के स्कूल में 00 रुपए मासिक वेतन पर प्रशिक्षक बनाया या था, लेकिन पिछले छः महीने से उसे जाब सरकार के खेल विभाग से यह वेतन नहीं मिल रहा था.

भूतपूर्व मुख्य मंत्री प्रकाशसिंह बादल ने स के पांचों बच्चों को हाई स्कूल तक त्रवृत्ति देने का वादा किया था, लेकिन इसे पूरा नहीं किया गया.

सोहनसिंह ने जिस समय अपना पदक

पंजाब के भूतपूर्व मुख्य मंत्री प्रकाशसिंह बादल : पद छोड़ते ही वादे भूल गए?

बेचा, उस की आय का एकमात्र साधन उस की 244 रुपए मासिक की पेंशन थी. गरीबी के साथ संघर्ष में उसे अपनी जमीन भी बेच देनी पड़ी.

1951 से 1958 तक वह लगातार आठ साल 800 मीटर की दौड़ का राष्ट्रीय विजेता रहा. 1952 के हेलसिंकी ओलिंपिक व 1956 के मैलबोर्न ओलिंपिक में उस ने हिस्सा लिया. 1954 व 1958 के एशियाई खेलों में भी वह इसी स्पर्द्धा में दौड़ा.

कम से कम 1982 में सोहनसिंह की मिसाल को देख कर किसी एथलीट में पदक जीतने का उत्साह रह पाएगा, इस में हमें संदेह है.
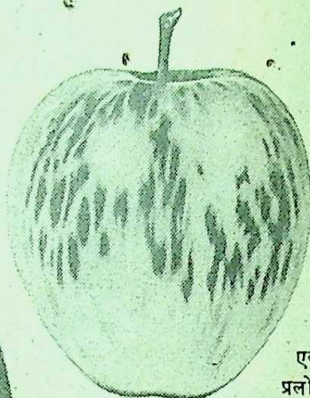
सेब

एक स्वादिष्ट प्रलोभन, प्राकृतिक विटामिनों, प्रोटीन एवं खनिज से भरपूर।

बढ़िया सौदा

एच.पी.एम.सी. 7 इन 1 सेब-रस सांद्र की 900 ग्राम की हर बोतल से आप शुद्ध सेब रस के 27 गिलास प्राप्त कर सकते हैं; अर्थात लगभग रु. 1/- प्रति गिलास!

शुद्ध, स्वादिष्ट सेब के रस का गिलास क्षण भर में तैयार।

कुदरती अच्छा

7in1

सेब-रस सांद्र

hpmc

हिमाचल प्रदेश हॉर्टिकल्चरल प्रोड्यूस मार्केटिंग एण्ड प्रोसेसिंग कारपोरेशन लिमिटेड (भारत सरकार का उपक्रम) मुख्यालय : शिमला-१७१००२

CAS-HMPC-2 HIN

उभरती प्रतिभा

रेनू यादव

हिमालय की बंदरपूंछ चोटी नंबर एक पर विजय प्राप्त करने वाली विश्व की सब से कम उम्र की यह किशोरी रेनू यादव आखिर ये साहसिक और जोखिम भरे काम कैसे कर पाती है?

लेख • मीरारानी निमिषा

"**पर्वतारोहण** अर्थात पर्वतों पर चढ़ना अत्यंत कठिन कार्य है. कोई भी पर्वतारोही अपने उद्देश्य में तभी सफल हो सकता है, जब उस के अंदर अपूर्व साहस, धैर्य, आत्मबल तथा सहनशक्ति हो."

यह कथन है हिमालय की 20,956 फुट ऊंची बंदरपूंछ चोटी नंबर एक पर विजय प्राप्त कर राष्ट्रीय ध्वज फहराने वाली 15 वर्षीया रेनू यादव का. शायद इतनी कम उम्र में इतनी ऊंची चोटी पर विजय प्राप्त करने वाली रेनू यादव विश्व की प्रथम किशोरी है.

बचपन से ही रेनू यादव की इच्छा पर्वतों और उन में बिखरे प्राकृतिक सौंदर्य को समीप से देखने की थी. जब वह पांचवीं कक्षा की छात्रा थी, उस समय उस के पिता भूटान में

पिछले गणतंत्र दिवस पर नई दिल्ली में प्रधान मंत्री रजत पदक प्राप्त करती रेनू.
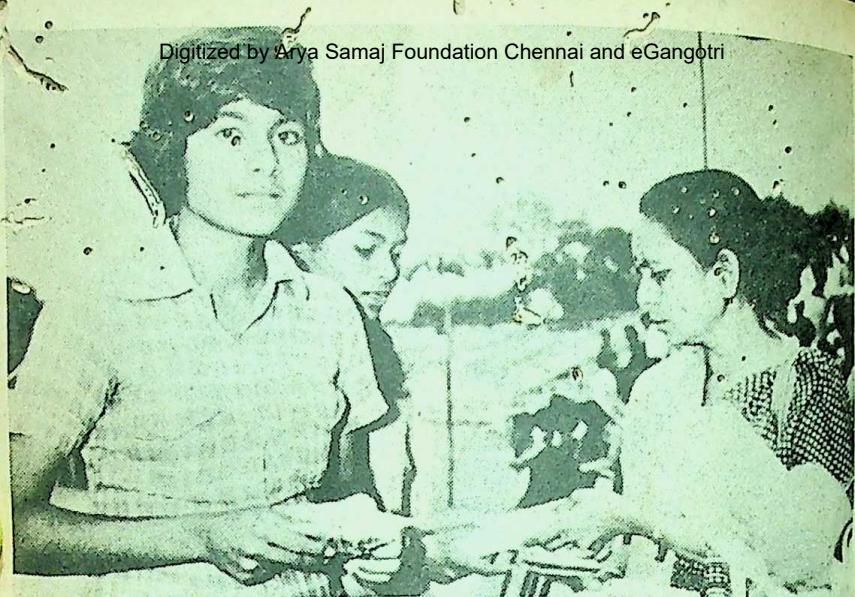
अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या से पुरस्कार लेने के बाद—अब तो रेनू खेलकूद की राष्ट्रीय व राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग ले कर उन में भी पुरस्कार जीत चुकी है.

सेना की डाक सेवा में कार्यरत थे. तभी गरमी की छुट्टियां बिताने के उद्देश्य से रेनू अपने पिता के साथ पहली बार भूटान गई. भूटान में ही उस ने पहली बार पर्वतों के सौंदर्य को पास से देखा. पर्वतों की अनुपम छटा, सिमटे बिखरे ... को अबोध रेनू के मासूम दिल ने महसूस किया. उस का मन हुआ कि वह दौड़ कर इन पर्वतों पर चढ़ जाए.

खेलकूद में रुचि

सन 1980 के आरंभ की बात है. उस समय रेनू राष्ट्रीय कैडट कोर की प्रथम वर्ष की छात्रा थी. एक दिन उस की बटालियन से इस आशय का पत्र आया कि उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से पर्वतारोहण के लिए छात्राओं का एक दल ले जाया जा रहा है, जिस का उद्देश्य हिमालय की बंदरपूंछ चोटी नंबर एक पर विजय प्राप्त करना है.

रेनू यादव की खेलकूद में शुरू से ही रुचि थी. वह कई बार राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग ले कर पुरस्कार जीत चुकी थी. रेनू ने अपनी

खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा रेनू यादव राष्ट्रीय केडट कोर की गतिविधियों में भी बहुत आगे है.

हिमालय की बंदरपूंछ चोटी नंबर एक पर विजय प्राप्त करने के अभियान के दौरान बेस कैंप पर अपने साथियों के साथ रेनू यादव (सब से दाएं).

बटालियन के प्रशिक्षक के सामने पर्वतारोही अभियान दल में शामिल होने की इच्छा जाहिर की. फलस्वरूप उसे पर्वतारोही दल के सदस्यों में चुन कर उत्तरकाशी के नेहरू पर्वतारोहण संस्थान में एक माह का प्रशिक्षण लेने के लिए भेज दिया गया. वहां पहुंचने पर संस्थान के प्रशिक्षक श्री राणा ने रेनू से पूछा,

"क्या तुम्हें पर्वतारोहण के संबंध में कुछ प्रारंभिक जानकारी है?" रेनू को तो पर्वतारोहण के विषय में क ख ग भी नहीं मालूम था, अतः उस ने साफसाफ कह दिया, "नहीं."

इस पर श्री राणा ने कहा, "तुम्हें न तो पर्वतारोहण के बारे में जानकारी है और फिर तुम्हारी उम्र भी 18 वर्ष से कम है, ऐसी स्थिति में तुम कैसे विजय प्राप्त कर सकोगी?"

पर्वतारोही दल में शामिल

किंतु प्रशिक्षण के दौरान रेनू के साहस, आत्मविश्वास को देख कर उन का मन बदल गया और वह उस से बोले, "देखना, रेनू बेटी, तुम ही सब से पहले बंदरपूंछ चोटी नंबर एक पर विजय प्राप्त करोगी." श्री राणा के इन शब्दों ने रेनू के साहस, धैर्य और आत्मबल को और बढ़ावा दिया. वह पहले से अधिक

रेनू यादव (बीच में, माइक के पीछे) : पिछले गणतंत्र दिवस के अवसर पर दिल्ली में कव्वाली का सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर शाबाशी पाई.

मन लगा कर प्रशिक्षण लेने लगी.

अंत में एक माह के प्रशिक्षण के बाद 5 जून, 1980 को पर्वतारोही दल ने यात्रा शुरू की. दुगर्म पहाड़ी रास्तों, सीधी चढ़ाई व अन्य मुसीबतों की परवाह किए बिना रुकते, चलते ?) जून, 1980 को यह दल बंदरपूंछ की सब से ऊंची चोटी पर पहुंच गया. रेनू इस दल में सब से आगे थी. उस ने वहां पहुंच कर राष्ट्रीय ध्वज व राष्ट्रीय कैडट कोर का झंडा फहराया और खुशी से चिल्ला कर अपने साथियों को शिखर पर विजय प्राप्त करने की सूचना दी.

11 अगस्त, 1980 को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल चंद्रेश्वरप्रसाद नारायणसिंह ने लखनऊ में एक विशेष समारोह में उस के साहस के लिए उसे स्वर्ण पदक प्रदान किया.

इस सफलता से पूर्व रेनू यादव विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग ले कर अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है. पिछले वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में उस ने अपना कव्वाली का कार्यक्रम प्रस्तुत किया था और उड़ीसा के मुख्य मंत्री से प्रधान मंत्री रजत पदक प्राप्त किया था.

इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आजकल वह मेरठ विश्वविद्यालय में बी.ए. की छात्रा है. खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उस की विशेष रुचि है. साथ ही वह अपनी पढ़ाई के प्रति भी हमेशा जागरूक रहती है.

निश्चय ही रेनू यादव एक मेधावी छात्रा है और उस का भविष्य उज्ज्वल है, इस बात में तनिक भी संदेह नहीं. •
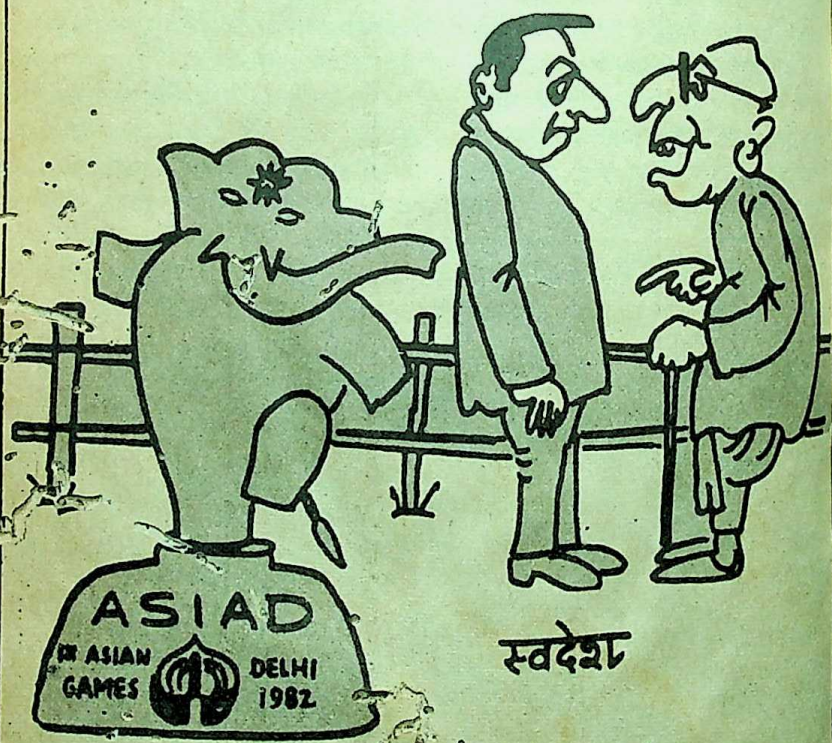
"भैया, इन एशियाई खेलों के संयोजकों की अकल पर पत्थर पड़ गए हैं क्या? अगर एक ही टांग पर किसी जानवर को खड़ा करना था तो बगुला भगत को करना चाहिए था."

लकड़ी के खिलौने आदि

इस उद्योग में न तो कच्चे माल की समस्या का सामना करना पड़ता है और न ही तैयार माल की बिक्री में कोई खास दिक्कत होती है.

लकड़ी के खिलौने सस्ते होने के साथ-साथ आकर्षक भी होते हैं. इन्हें बनाने के लिए बहुत अधिक पूंजी या तकनीकी ज्ञान की जरूरत भी नहीं पड़ती है. इस उद्योग में खिलौनों के साथ ब्रुश के हैंडल, शतरंज व कैरम बोर्ड की गोटें, ऐश ट्रे, पाउडर रखने के डब्बे भी बनाए जा सकते हैं. इस उद्योग में न तो कच्चे माल की समस्या का सामना करना पड़ता है और न ही तैयार माल की बिक्री में कोई खास दिक्कत होती है.

'सोनकर काष्ठ कला उद्योग' के नाम से यह उद्योग चलाने वाले श्री विनोदकुमार सोनकर के अनुसार यह काम 20,000 रुपए की लागत से शुरू किया जा सकता है. चूंकि इस में सभी काम बिजली से किया जाता है इसलिए पावर का होना जरूरी है.

इस उद्योग में बनने वाले सामान की मांग बराबर बनी रहने के बावजूद अकसर मालिक समय पर उस की आपूर्ति नहीं कर पाते हैं. इस के पीछे कारण यह है कि इस उद्योग में लगे अधिकांश कारीगर किसी न किसी तरह का नशा करने के आदी होते हैं. वे प्रतिदिन 50 रुपए तक कमा लेते हैं. पर यदि एक बार उन के हाथ में पूरा पैसा रख दिया तो वे अगले दिन काम से गायब हो जाते हैं. कारीगर एडवांस के रूप में काफी पैसा पहले ले लेते हैं. यह उद्योग 10X20 फुट के स्थान में चलाया जा सकता है.

इस उद्योग को चलाने के लिए नीचे लिखी मशीनों व औजारों की आवश्यकता पड़ती है :

बैंड सा (आरा मशीन)–1—3,000 रुपए,
सर्कुलर सा (आरा मशीन)–1—500 रुपए,
लकड़ी की खराद मशीन–4 2,000 रुपए,

लघु उद्योग
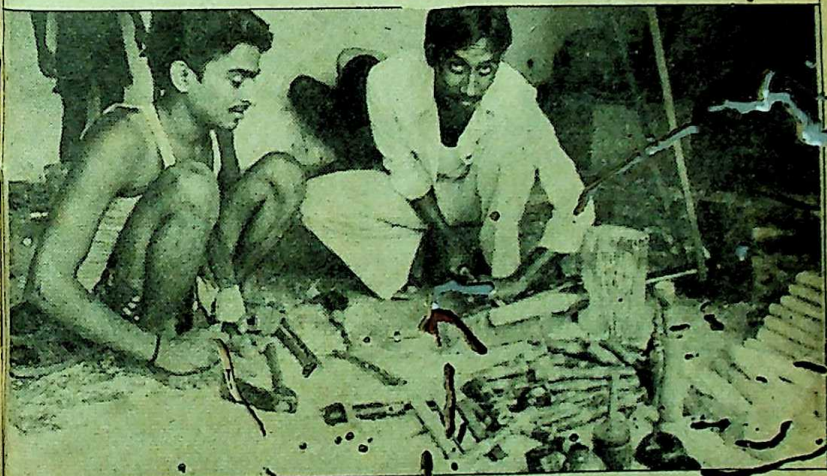
2 अश्व शक्ति (हार्स पावर) की मोटर–1

वास्तव में इस उद्योग में बहुत जटिल मशीनों का उपयोग नहीं किया जाता है. लकड़ी को खराद मशीनें खुद बनवानी पड़ती हैं. ये जमीन में स्टैंड में लगे हुए लोहे के पाइप जैसा होती हैं जो कि ऊपर मोटर की सहायता से घूमने वाली धुरी से पुली के जरिए जुड़ी होती हैं. इन में ही लकड़ी को फंसा कर उसे खरादा जाता है. इस उद्योग में रंदा, बसूली व विभिन्न प्रकार के लकड़ी छीलने वाले औजारों का प्रयोग भी किया जाता है. आम तौर पर दो अश्व शक्ति (हार्स पावर) की एक मोटर द्वारा 16 खराद मशीनें चलाई जा सकती हैं, पर कारीगरों की संख्या को देखते हुए इतनी अधिक खराद मशीनें लगा सकना प्रायः संभव नहीं होता है.

कच्चा माल

चूंकि यह सभी सामान लकड़ी से तैयार किया जाता है, अतः इस उद्योग में विशेष प्रकार की लकड़ी की खपत होती है. इस लकड़ी में रेशे नहीं होते हैं. आम तौर पर यह सामान कुरेचा, दुद्धी आदि की लकड़ी से तैयार किया जाता है. यह लकड़ी बिहार के जंगलों में होती है और विभिन्न शहरों में बिकती है. [illegible]णों के लिए वाराणसी के कशमीरी गंज इलाके में इस लकड़ी के छिलेछिलाए डंडे मिलते हैं. यह ढाई फुट, डेढ़ मीटर व दो मीटर की लंबाई के होते हैं. इन की मोटाई के अनुसार ही इन का मूल्य निर्धारित किया जाता है. जैसे पतले डंडे 25 से 32 रुपए प्रति सैकड़ा तक मिलते हैं, जब कि मोटी लकड़ी के डंडे 200 से 300 रुपए प्रति सैकड़े की दर से मिलते हैं.

लकड़ी से तैयार सामान पर जो रंग किया जाता है वह विशेष प्रकार का होता है. इस रंग में चपड़ा मिला हुआ होता है और यह छड़ों के रूप में बाजार में 24 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से बिकता है. खिलौना को रंगने के बाद उन पर चमक लाने के लिए केवड़े व बांस के सूखे पत्तों को पानी में भिगो कर खिलौनों पर रगड़ा जाता है. यह पत्ते 25 रुपए सैकड़े की दर से बाजार में बिकते हैं. खिलौनों को चिकना बनाने के लिए सैंड पेपर का इस्तेमाल किया जाता है.

खिलौने बनाने की विधि

जिस आकार का खिलौना तैयार करना होता है, उस से लगभग डेढ़ इंच लंबी लकड़ी खराद मशीन में ठोंक कर फ़ंसा दी जाती है. यह लकड़ी पट्टे की सहायता से तेजी से घूमने लगती है. कारीगर विभिन्न औजारों की सहायता से इसे मनचाहा आकार प्रदान कर देते हैं. इस के बाद लकड़ी पर कुछ सेकंड के लिए सैंड पेपर लगाया जाता है, जिस से वह चिकनी हो जाती है.

जिस रंग में खिलौनों को रंगना होता है, उसी रंग की छड़ खराद पर चढ़े खिलौने पर छुआ दी जाती है. और इस प्रकार रगड़ व गरमी के कारण चपड़ा पिघलने लगता है व खिलौनों पर रंग चढ़ जाता है. अब इस रंग को बराबर करने तथा उस में चमक लाने के लिए खिलौने को केवड़े व बांस के सुखा कर भिगोए गए पत्तों से रगड़ा जाता है और अब इस तरह से तैयार खिलौने को काट कर खराद से अलग कर दिया जाता है. आमतौर पर एक खिलौना तैयार करने में पांच मिनट का समय लगता है.

इस उद्योग में खराद मशीन में फंसे लकड़ी के टुकड़े भी बेकार नहीं जाते हैं. इन टुकड़ों से शतरंज और कैरम बोर्ड की गोटियां बना ली जाती हैं. इस सामान के आदेश खिलौने बेचने वाले व्यापारियों, ब्रुश कंपनियों, कैरम बोर्ड व शतरंज निर्माताओं से प्राप्त करने पड़ते हैं.

आमतौर पर इस उद्योग में लाभ पूरी तरह से कारीगर पर निर्भर करता है. जहां इस उद्योग की एक खूबी यह है कि इस में कारीगर पर नजर रखने की जरूरत नहीं पड़ती है वहीं दूसरी ओर कारीगर द्वारा मनमाना व्यवहार करने के कारण काफी नुकसान भी उठाना पड़ सकता है.

इस व्यापार में यदि चार कारीगर प्रतिदिन काम करें तो महीने में 1,500 रुपए तक आसानी से कमाए जा सकते हैं. ●

50 लाख बच्चों की प्यारी
रंगीन पत्रिका
चंपक
9 भाषाओं में
हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजन व शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां, चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए स्वरूप में ढालते हैं.
चंपक
चंपक, पंजाबी और बंगाली भाषा के अलावा अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु और मलयालम भाषाओं में भी प्रकाशित होता है
अपने बच्चों को चंपक लेकर दें — उन का मनोरंजन भी करें और भविष्य भी संवारें.
दिल्ली प्रेस प्रकाशन
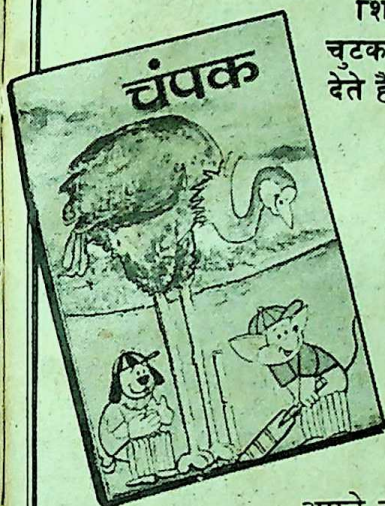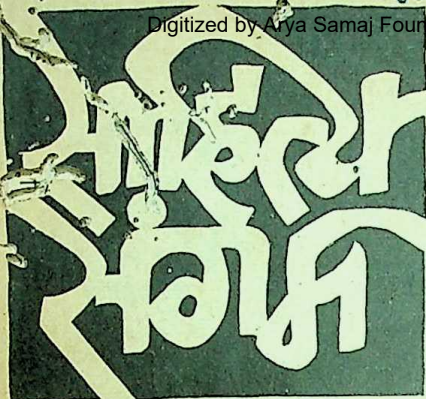
एक छात्र नेता का रोजनामचा

'एक छात्र नेता का रोजनामचा' 'विभूति नारायण राय के 14 व्यंग्य लेखों का संग्रह है. अपने पहले व्यंग्य 'एक छात्र नेता का रोजनामचा' में लेखक ने एक ऐसे छात्र नेता का चित्रण किया है, जो दिग्विजय के लिए पूरे विश्वविद्यालय में दिन भर घूमता [illegible] है और रात को नुक्कड़ वाली चाय की [illegible]न [illegible] क्रांति करने चल देता है. ठीक वैसी ही [illegible] वैसी राजनीतिबाज संसद या काफी हाउसों में करते हैं.

[illegible] अन्य व्यंग्य 'वाइस चांसलर के कमरे में ताला बंद है' में अध्यापकों और लड़कों से सुलटने के लिए उप कुलपति द्वारा अपनाई गई चालों पर प्रकाश डाला गया है. एक जगह लेखक उप कुलपति के कमरे के [illegible] की तुलना संयुक्त राष्ट्र संघ से करता [illegible] जहां केवल प्रस्ताव पारित होते हैं, उन पर अमल नहीं किया जाता.

जहां 'खुदाई विभाग का अध्यक्ष' में अध्यक्ष की कारगुजारियों का कुशलतापूर्वक चित्रण किया गया है, वहीं 'मंत्रीजी, कस्बा और कालिदास' में कालिदास पर आयोजित एक बृहत [illegible] का हास्य से भरपूर खाका [illegible] में भी लेखक सफल हुआ है.

'समाजवाद आ गया है' में लेखक देश में समाजवाद लाने के नाम पर चुनाव लड़ने [illegible] रंगढंग [illegible] कराता है.

[illegible] एक अन्य [illegible] हिंदी फिल्मों में बिजली की चमक का सांस्कृतिक महत्व' द्वारा फिल्मों पर करारा व्यंग्य किया गया है तथा 'चश्मदीद शहादत' समाज पर तीखे व्यंग्यवाण छोड़ता है. . .

व्यंग्यों की भाषा तीखी है जैसे पटरी पर बैठकर ताकत की दवाएं आदि बेचने वाले के बारे में लिखे व्यंग्य 'पांच हजार साल पुरानी असली दुकान' में लेखक एक जगह कहता है, "मुझे बार बार लगता है कि यह दुकानदार कम से कम उन दुकानदारों से तो बेहतर ही है जो पिछले पांच हजार सालों से संस्कृति और राजनीति की दुकान खोले बैठे हैं."

इस के अलावा इस व्यंग्य संग्रह में आज के जीवन के और भी बहुत से पहलुओं पर व्यंग्य और कटाक्ष किए गए हैं, जिन की सब से बड़ी खासियत यह है कि उन में शिष्टता की सीमा को कहीं भी पार नहीं किया गया है.

इस दृष्टि से यह व्यंग्य पुस्तक न केवल काबिले तारीफ है, बल्कि संग्रहणीय भी है. प्रकाशक : प्रतिमान प्रकाशन, इलाहाबाद, मूल्य : 12.50 रुपए, पृष्ठ : 88.

धूप का चश्मा

प्रारूप प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित संतोष खरे के 26 व्यंग्यों के संग्रह 'धूप का चश्मा' में लेखक ने व्यंग्यों द्वारा क्या कहना चाहा है, यह समझना आम पाठक के बस के बाहर है.

फिर भी संग्रह का एक व्यंग्य 'शनि ने मंगल को काट दिया' रोचक है. इसी प्रकार 'छापे और छेदीलालजी का अखबार' में आधुनिक लालची पत्रकार व 'मेरी यात्राओं के दुश्मन' में मांग कर पत्रिका पढ़ने वाले लोगों पर करारी चोट है. 'साहित्य में दसवां रस' शीर्षक से निंदा की सुंदर व्याख्या की गई है. 'आप ही बताइए क्या शीर्षक दूं' भी रोचक है. किंतु अधिकांश व्यंग्य नीरस व उबाऊ हैं और इसी कारण इस पुस्तक की उपयोगिता कम हो गई है. मूल्य : 20 रुपए, पृष्ठ : 104.